

राजस्थान पुरातन ग्रन्थालय

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

राजस्थान राज्य के पुरातन काल के (प्रियवतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
साहित्य, चित्रकला, शिल्पकला, सिन्धी, राजस्थानी आदि भाषासिद्ध
ग्रन्थों का संग्रहण करने वाली विशिष्ट-ग्रंथालय

प्रधान सचिव

राजस्थान, एम० ए०, सी० वि०

जयपुर, राजस्थान प्रांतपालिका प्रतिष्ठान, जयपुर.

संख्या १०३

देवीचरित

प्रथम भाग

राजस्थान

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

राजस्थान, राजस्थान प्रांतपालिका प्रतिष्ठान

जयपुर, राजस्थान

संख्या

राजस्थान

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

राजस्थान, राजस्थान प्रांतपालिका प्रतिष्ठान, जयपुर.

प्रधान - सम्पादकीय

हिन्दी और उसकी उपभाषाओं में राम तथा कृष्ण-चरित को आधार मानकर अनेक ग्रन्थों की रचना हुई है और इधर शिव-चरित्र पर आधारित महाकाव्य भी लिखे गये हैं, परन्तु देवी के चरित पर आश्रित कोई भी महाकाव्य अभी तक प्रकाश में नहीं आया था। इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य की अद्वितीय कृति मानी जायगी। यह ग्रन्थ मूलतः सस्कृत के देवीभागवत-पुराण पर आश्रित होकर भी अपनी पृथक् विशेषता रखता है। देवी द्वारा महिषासुरादि शत्रुओं का विनाश किये जाने के विविध वृत्तान्त तो इसमें दिये ही गये हैं, परन्तु इसके साथ ही लेखक ने उस दार्शनिक पृष्ठभूमि को भी दृष्टि में रखा है जिस पर उक्त कथानक अवलंबित है।

कवि-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता कविराजा ठाकुर श्री बुधसिंहजी राजस्थान के ही एक रत्न थे। उनका जन्म वि० सं० १८८६ में जोधपुर-राज्य के मोगड़ा-ग्राम में चारणों की सिंहढायच-शाखा में हुआ था। इनके पूर्वज मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़-राज्य में परमारवंशी शासकों के कृपापात्र रहे। उनको वहां महाराजाधिराज श्री हनवंतसिंहजी, श्री प्रतापसिंहजी एवं श्री महताबसिंहजी ने विविध प्रकार से सम्मानित किया और प्रथम श्रेणी के ताजीमी जागीरदारों में स्थान दिया। ठा० बुधसिंहजी को महाराजाधिराज श्री हनवंतसिंहजी ने कविराजा की उपाधि देकर उनकी कवित्व-शक्ति को सम्मान प्रदान किया।

विक्रमी सं० १९२९ में नरसिंहगढ़ नरेश महाराजा हनवंतसिंहजी की सुपुत्री विजयकुंवर दाईजी का विवाह जोधपुर के महाराजकुमार जसवन्तसिंहजी से, कविराजा ठा० बुधसिंहजी की मध्यस्थता में सम्पन्न हुआ। फलस्वरूप दाईजी ने अपने पिताश्री से निव्रेदन कर, कविराजा को नरसिंहगढ़ से मांग कर जोधपुर में, अपने कामदार के रूप में नियुक्त किया। यद्यपि ये इस पद पर उनके जीवनपर्यन्त रहे, फिर भी इनका नरसिंहगढ़ राज्य से निरन्तर संपर्क बना रहा।

विक्रमी सं० १९४६ में महाराजाधिराज जसवन्तसिंहजी ने जोधपुर रियोंसत की ओर से इन्हें ताजीम एवं पैर में स्वर्णभूषण प्रदान किया। नरसिंहगढ़ के महाराजा महताबसिंहजी के देवलोकवासी होने पर विक्रमी सं० १९५२ में ये 'रिजेन्सी' कौन्सिल के सदस्य रहे थे।

कवित्व

डा० नृसिंहजी ङिगल तथा ङिगल-काव्य के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इन्होंने संस्कृत-काव्यग्रन्थ 'देवीभागवत' का काव्यानुवाद ब्रजभाषा में किया जो काव्य-प्रेमियों के नमस्त्र है।

कविराजा की कवित्व-शक्ति इतनी प्रखर थी कि वे एक दिन में, ब्रजभाषा के लगभग दो सौ दोहे अथवा ङिगल के कई 'गीतों' की रचना कर देते थे। उनका प्रमुख विद्यालय ग्रन्थ 'देवीचरित' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन्होंने युद्ध-वर्णन की अवस्था में ही सर्वप्रथम ईश्वर-भक्ति-विषयक एक 'गीत' की रचना ब्रजभाषा में की थी जो इनके फुटकर काव्य के अन्तर्गत संकलित है। इनके फुटकर काव्य में कुछ रचनाएँ भक्तिरस की हैं तथा वीररस की कविताओं में महावीर राजा-महाराजाओं के शौर्य एवं श्रौदार्य के प्रसंग वर्णित हैं। नृसिंहजी-वरेण नृभाग्यसिंहजी के महाराजकुमार चैनसिंहजी, जो विक्रमी सं० १२२१ में (स्वातंत्र्य-संग्राम की प्रथम क्रान्ति सं० १९१४ के पूर्व) अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए थे, इसी प्रसंग को लेकर कविराजा ने वीररस की सुन्दर काव्य-रचना की जिसमें युद्ध-वर्णन एवं भारतीय जनमानस की स्वतंत्रता की भावना का भव्य चित्रण हुआ है। नृसिंहजी-वरेणन की यह काव्य-रचना निःसन्देह कवि के देश-प्रेम, राष्ट्रियता एवं निर्भीकता की परिचायक है।

साहित्य विशेषताएँ

डा० नृसिंहजी स्वयं प्रकृति के निर्भीक सत्यवक्ता, स्वामिभक्त तथा नृसिंहजी-वरेणन पुरुष थे। उनमें एक कविजनोचित दुर्लभ गुणों के अतिरिक्त साहित्यिक या विविध गुण भी विद्यमान था। फलस्वरूप विभिन्न अवसरों पर उनके राजा-महाराजाओं द्वारा उन्हें नमनानित किया गया, जिसके प्रमाण उनके अपने संदर्भों के पास उपलब्ध हैं। उनके रुचिर्वचित्र्य का यह एक प्रमाण है कि राज्य-शासना के शासनार्थ योगान्याय, वैद्यक एवं स्वरोदय के शासनार्थ योगान्याय में परिचित था। वे पातकाल ब्राह्मणधर्म में नृसिंहजी-वरेणन काव्य रचने के तथा उनके (रामने दोहे) घरेलू चिकित्सानायक के रूप में कार्य करने के अलावा साहित्यिक उपचार किया जाना चाहते थे। नृसिंहजी-वरेणन का यह प्रमाण है कि तीन-दुनियाँ के विभिन्न भोजन-व्यवस्थाओं को जानने के अलावा वे अपने जीवनकाल में चर्चा करते थे।

कविराजा ठा० बुधसिंहजी इस भौतिक संसार में रहते हुए भी इससे कितने निर्लिप्त थे, यह उनके जीवनकाल की एक प्रमुख घटना से स्वतः सिद्ध हो जाता है—‘एक बार इनके अपने गांव मदौरा के घर में भयंकर आग लग गई। ऐसी स्थिति में ये अपने इसी स्वरचित ग्रन्थ ‘देवीचरित’ की पाण्डुलिपि को लेकर घर से बाहर निकल पड़े तथा सीधे अपने ‘बाग’ में चले गये, जहाँ ‘करणीमाता’ के चबूतरे पर बैठ कर काव्य-रचना में तल्लीन हो गये।’ हजारों की सम्पत्ति को अपने समक्ष स्वाहा होते देखकर अनदेखी कर देना एवं उस ओर ध्यान तक नहीं देना, कविराजा की अद्भुत ‘ईश्वर इच्छा प्रबल’ की भावना, काव्यानुरागिता, धीरता एवं भौतिक निःस्वार्थता की द्योतक है जो वास्तव में स्तुत्य है।

देहावसान—

कविराजा ठा० बुधसिंहजी का देहावसान वि० सं० १९५८ में आश्विन शुक्ला नवमी को हुआ। इन्होंने अपने देहावसान का दिन एवं समय पहिले ही सूचित कर दिया था तथा ये अपने देहत्याग के एक मास पूर्व अन्नग्रहण करना छोड़ केवल गाय का दूध सेवन करने लगे थे। अन्त समय के पन्द्रह दिन पूर्व इन्होंने दूध भी त्याग दिया तथा केवल ‘गंगाजल’ ग्रहण करते हुए, योगाभ्यास एवं इष्ट (भक्ति) में लीन रहने लगे। अपने देहान्त के दस दिन पूर्व इन्होंने एक कठोर आदेश दिया कि उनके पास कोई स्वजन (पुत्र-पौत्र आदि तक) नहीं आवें।

इस अवधि में केवल एक अठारह वर्ष का स्वामिभक्त एवं विश्वसनीय सेवक—‘विरदा दरोगा’ उनकी इच्छानुसार निरन्तर उनकी सेवा में उपस्थित रहा। देहावसान से पूर्व ही इन्होंने अपने द्वादशकर्म का कार्यक्रम निश्चित कर दिया था, जिसमें हरिद्वार में अस्थि-विसर्जन तक का स्पष्ट उल्लेख है। वह लिपिबद्ध कार्यक्रम आज भी इनके पौत्र के पास सुरक्षित है। कविराजा के निर्देशानुसार ‘मातमपोशी’ का आयोजन नरसिंहगढ़-नगर के ‘रघुनाथजी के मन्दिर’ में किया गया, जिसमें तत्कालीन नरेश एवं राज्य के गण्य-मान्य व्यक्तियों ने परम्परानुसार भाग लिया।

वंश-परम्परा—

कविराजा के तीन पुत्र हुए थे, जिनमें से एक का देहान्त युवावस्था में ही हो गया था। इस घटना ने उनके हृदय पर चोट पहुँचाई, अतः वे सांसारिक मोह-माया से विरक्त होने लगे थे। इनके बड़े पुत्र पीरदानजी नरसिंहगढ़-नरेश

महाराजा अर्जुनसिंहजी एवं विक्रमसिंहजी के कृपापात्र रहे। इनके छोटे पुत्र शक्तिदानजी ग्राम में ही निवास करते थे। पीरदानजी के तीन पुत्र इस समय विद्यमान हैं जिनमें से सबसे बड़े नाथूसिंहजी तथा छोटे कुमेरसिंहजी (भू० पू० नरसिंहगढ़ राज्य) मध्यप्रदेश में अपने ग्राम मदौरा में निवास करते हैं तथा मध्य के पुत्र माथोसिंहजी राजस्थान-राज्य के जोधपुर-जिलान्तर्गत अपने मूल निवास स्थान-मोगड़ा ग्राम में ही रहते हैं। ये स्वयं विद्या-प्रेमी एवं अच्छे कवि हैं। शक्तिदानजी के पौत्र चैनसिंहजी हैं जो अपने (उक्त) ग्राम मदौरा में ही रहते हैं। आज भी इनके परिवार में प्रायः सभी व्यक्ति शिक्षित एवं विद्याप्रेमी हैं।

इन ग्रन्थ के संपादक पं० हुक्मचन्द चतुर्वेदी न केवल इस ग्रन्थ की भाषा में भली-भाँति परिचित हैं, अपितु संस्कृत के विद्वान् होने के कारण उनके लिये संस्कृत की देवोभागवत की परम्परा भी सुलभ रही है जिसको लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। श्री चतुर्वेदीजी स्वयं देवी के परमभक्त और साधना के रहस्यों में रुचि रखने वाले हैं। अतः उन्होंने बहुत ही सरल भाषा में देवीतत्व की जो व्याख्या अपनी भूमिका में प्रस्तुत की है, वह बड़े महत्व की है। आशा है विद्वान् संपादक इस विषय को और अधिक विस्तार के साथ दूसरे भाग में प्रस्तुत करेंगे। उन्होंने अनेक कठिनाइयों के होते हुये भी, जिस लगन और तत्परता के साथ इस ग्रन्थ का सम्पादन कर, ठीक समय पर प्रेस में भेज दिया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी और विनयसागर ने जो परिश्रम किया है, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। कवि के जीवन-परिचय देने के लिये जो सामग्री देवीचरितकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंह नायग ने हमें प्राप्त हुई है, उसके लिये उनके हम बहुत आभारी हैं। मोगड़ा-ग्राम निवासी श्री० माथोसिंहजी के हम विशेष रूप से कृतज्ञ हैं, जिन्होंने यह ग्रन्थ हमें उपलब्ध कराया और लेखक की फुटकर अन्य कृतियों से भी परिचय कराया। श्री माथोसिंहजी देवीचरितकार कविराजा श्री बुधसिंहजी के पौत्र हैं और स्वयं अपने निरादर और कवि हैं। मुझे वेद है कि वे अन्य कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इस ग्रन्थ के सम्पादन का भार स्वयं नहीं स्वीकार कर सके। आशा है, उनकी विद्वान्ता और समुत्सव ने प्रतिष्ठान को आगे लाभ प्राप्त होता रहेगा।



कविराजा ठा० बुधसिंहजी

प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना करते हुये

[ग्रन्थकार के प्रपौत्र श्री देवीसिंहजी चारण के सौजन्य से प्राप्त]



विषयानुक्रम

प्रथम-स्कंध

	छंद से छंद तक
वंदना	१—१०
अट्ठाईस व्यासों के नाम	११—१५
अठारह पुराणों के नाम	१६—१९
उपपुराणों के नाम	२०—२२
पुराणों के पाँच अंगों की व्याख्या	२२—२८
कृष्ण द्वैपायन व्यास की पुत्र-इच्छा-प्रसंग	३२—३९
व्यास का नारद से अपनी चिन्ता का कथन	४०—४३
नारद द्वारा ब्रह्मा-विष्णु संवाद कथन	४४—५८
विष्णु के सिर कटने और तुष्टा द्वारा जोड़े जाने का आख्यान	५९—११३
जिसमें—वेदों द्वारा देवी की स्तुति	
मधुकैटभ के वध का आख्यान	११४—१७२
शुकदेव के जन्म का आख्यान	१७३—१८६
शुकदेव को व्यास का उपदेश और इस हेतु जनक के पास भोजना	१८७—२०६
शुकदेव-जनक संवाद	२०७—२६२
शुकदेव का जीवन-वृत्त	२६३—२७१
शुकदेव के महाप्रयाण पर व्यास का मोह	२७२—२७७
व्यास का माता सत्यवती के दर्शनार्थ-गमन	२७८—२८०
शांतनु-मरण तथा उनके पुत्रों का निःसंतान निधन एवं व्यास द्वारा क्षेत्रज-उत्पत्ति जिससे धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर के जन्म	२८१—३०५

द्वितीय-स्कंध

शांतनु-सत्यवती के विवाह का आख्यान	१—१११
जिसमें—	
वसु-उपरचर से वासवी के जन्म का उपाख्यान	

पाराशर मुनि और वासवी से कृष्णद्वैपायन के जन्म का उपाख्यान	
महाभिल नरेश और गंगा के शाप का उपाख्यान	
श्रष्ट वसुओं के शाप का उपाख्यान	
वसुओं द्वारा शाप-मोचन हेतु गंगा से विनय	
शांतनु से गंगा के विवाह का उपाख्यान	
गांगेय का जन्म और गंगा का शांतनु को त्यागने का उपाख्यान	
सत्यवती के दोनों पुत्रों की निःसंतान-मृत्यु	११२—११३
धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर के जन्म का आख्यान	११४—११६
धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्रों की जन्म-कथा	११७—१७७
जिसमें—	
कुंती को दुर्वासा से मंत्र-प्राप्ति का उपाख्यान	
कर्ण के जन्म का उपाख्यान	
पांडु के शाप का उपाख्यान	
पांडु के निधन की कथा	१७८—१८४
पांडवों का द्रौपदी से विवाह	१८५—१८६
अभिमन्यु जन्म और उसके गर्भस्थ पुत्र की कृष्ण द्वारा रक्षा	१८७—१८८
महानारत के श्रृगारह वर्ष पश्चात् धृतराष्ट्र, गांधारी, कुंती आदि का वन में तप हेतु गमन	१९०—१९८
दुर्धरिष्ठ आदि का माता कुंती आदि के दर्शनार्थ वनगमन	१९९—२०६
विदुर का शरीर त्याग	२०७—२११
क्यास द्वारा कुंती, गांधारी आदि को मृत-पुत्रों का दिखाना	२१२—२१७
दुर्धरिष्ठ के लौट जाने पर आग लगना और उसमें धृतराष्ट्र, कुंती आदि का जलकर मरना	२१८—२२०
कारण-वैश-विनाश तथा कृष्ण, यत्नराम आदि का देह त्याग	२२१—२२६
अर्जुन का द्वारकागमन और लौटते समय नीलों द्वारा उनका मृत जाना	२२७—२३०
क्यास द्वारा अर्जुन का मनाभान	२३१—२३५
दुर्धरिष्ठ आदि का विनाश होना और राज्य का त्यागना	२३६—२४३
कर्ण-शपथ का शरणाभिप्रेष, गमन, मृत्यु	२४४—२७४

छंद से छंद तक

जिसमें—

पराक्षित के शाप का उपाख्यान

तक्षक द्वारा धन देकर कश्यपमुनि को लौटाने का उपाख्यान

तक्षक द्वारा अन्य सर्पों को आदेश संबंधी उपाख्यान

जनमेजय का राज्याभिषेक, उनके द्वारा नागयज्ञ और व्यास द्वारा देवी-

भागवत सुनने का उपदेश

२७५—३१५

जिसमें—

ऋतंक मुनि और तक्षक का उपाख्यान

ऋतंक मुनि द्वारा जनमेजय को पिता के वैर का तक्षक से प्रतिशोध

लेने की प्रेरणा

तृतीय-स्कंध

देवीमंडप का वर्णन

१—५

जनमेजय के प्रश्न

६—११

उत्तर में व्यास द्वारा उद्धृत नारद-व्यास-संवाद

१२—१५२

जिसके अंतर्गत—

नारद द्वारा उद्धृत नारद-ब्रह्मा-संवाद

ब्रह्मा-विष्णु-महेश का देवी के साथ विमान में भ्रमण

मणिद्वीप का वर्णन

विष्णु द्वारा जगदंबा की स्तुति

शिव द्वारा जगदंबा की स्तुति

ब्रह्मा द्वारा जगदंबा की स्तुति

देवी द्वारा उत्तर और आदेश

त्रिदेवों का लक्ष्मी, सरस्वती और गौरी का प्राप्त करना

त्रिदेवों का विमान द्वारा चापिस लौटना

ब्रह्मा द्वारा नारद से सृष्टि-रहस्य-वर्णन और निर्गुण का

रहस्य कथन

सत्यव्रत का आख्यान, विभिन्न प्रकार के यज्ञों सहित

१५३—१८६

विष्णु कथित देवी-यज्ञ का वर्णन

१८७—२३६

छंद से छंद तक

शत्रुजित और सुदर्शन का आख्यान

२३७—३५५

जिसके अंतर्गत—

अयोध्यानरेश ध्रुवसिंधु और उनकी मृत्यु का कथानक
 ध्रुवसिंधु की छोटी रानी लीलावती के पुत्र शत्रुजित की ओर से
 अवंतीनरेश जुधाजित द्वारा युद्ध और उसका राज्याभिषेक
 पराजित होकर बड़ी रानी मनोरमा और उसके पुत्र सुदर्शन का भारद्वाज
 आश्रम में निवास
 काशीनरेश की पुत्री शशिकला का स्वयंवर
 सुदर्शन को निमंत्रण
 शशिकला का सुदर्शन से विवाह
 शत्रुजित और जुधाजित द्वारा युद्ध
 स्तुति से प्रसन्न हो सिंहवाहिनी देवी का प्रकट होना
 देवी द्वारा शत्रुजित और जुधाजित का वध
 सुदर्शन का अयोध्या का राजा होना और उसके द्वारा
 देवी पूजा का प्रचार और विधि

सुशील नामक वैश्य का आख्यान

३५६—३६५

राम का संपूर्ण जीवन चरित्र

३६६—३४४१

जिसके अंतर्गत—

अयोध्यानरेश दशरथ के राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के जन्म और
 शैशव-जीवन-वृत्त
 राम-लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ गमन
 विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण का मिथिला को प्रस्थान और
 अहिल्या का उद्धार
 मिथिला वर्णन और सीता-स्वयंवर
 दशरथ को निमंत्रण, वरात का प्रस्थान. उसका मिथिला आगमन,
 स्वागत तथा राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का सीता तथा
 उनकी बहिनों से विवाह सम्पन्न होने पर वरात की विदा
 वरात का अयोध्या पहुँचना एवं वहाँ के आमोद-प्रमोद तथा

३६६—३७६

३७७—३८३

३८३—३८५

३८५—४०३

४०४—४५४

	छंद से छंद तक
उत्सवों का वर्णन	५५५—५७१
राम को युवराज बनाने का दशरथ का निर्णय और कंकेई द्वारा विघ्न डालना	५७२—५७६
राम, लक्ष्मण और सीता का वनवास के लिये प्रस्थान	५८०—५९२
राम के वनगमन के पश्चात् अयोध्या की स्थिति का वर्णन	५९३—५९८
भरत का शत्रुघ्न आदि के साथ राम को वापिस लाने के लिये वनगमन	५९९—६००
भरत का राम की चरणपादुका लेकर वापिस लौटना	६०१—६०५
पंचवटी में सूर्पनखा का आगमन और लक्ष्मण द्वारा उसके नाक-कान काटना	६०६—६१८
राम का खर-दूषण से युद्ध एवं उनका ससैन्य-संहार	६१९—६६२
सूर्पनखा का रावण के पास जाना, उससे दुःख-कथा कहना एवं मारीच की सहायता से रावण द्वारा सीता-हरण	६६३—७२६
रावण-जटायु-संघर्ष	७२७—७२८
राम और लक्ष्मण द्वारा सीता की खोज में प्रस्थान	७२९—७३४
राम-जटायु भेंट	७३४—७४१
राम-शबरी भेंट	७४२—७४५
राम-हनुमान भेंट	७४६—७५८
राम-सुग्रीव मंत्री	७५९—७६१
राम द्वारा वाली-वध	७६१—७६१
प्रवर्षण पर्वत पर राम के विह्वल होने पर लक्ष्मण द्वारा समाधान करना	७६२—८०५
नारद का आगमन और उनके द्वारा राम-लक्ष्मण को उपदेश तथा आशीर्वाद	८०६—८१५
राम द्वारा नवरात्रि-व्रत, भगवती का प्रकट होना और वर देना	८१५—८१८
राम द्वारा लक्ष्मण को सुग्रीव को सचेत करने के लिये भेजना	८१९—८२७
हनुमान का वानरी सेना एकत्रित करने के लिये प्रस्थान और विभिन्न स्थानों में भ्रमण	८२८—८६०
सुग्रीव, अंगद आदि का यूथपतियों के साथ राम के पास पहुँचना	८६१—८७०
सीता की खोज के लिये वानरों और रीछों का विभिन्न दिशाओं में प्रस्थान	८७१—८७७

	छंद से छंद तक
अंगद-हनुमान आदि की संपाती से भेंट	८७८—८८१
हनुमान का सीता की खोज के लिये लंका प्रस्थान, विभीषण से भेंट, अशोक-वाटिका में पहुँचना, सीता से मिलना और उनकी शंका का समाधान करना	८८२—९१५
हनुमान द्वारा क्षुधा-निवृत्ति के लिये फलों को तोड़ना, रक्षकों द्वारा रोकना, उनका संहार, अक्षयकुमार का वध, मेघनाद से युद्ध तथा हनुमान का नाग पाश में बंधना	९१६—९३५
हनुमान का रावण के सम्मुख उपस्थित होना, उसे अपना परिचय देना तथा रावण द्वारा हनुमान की पूँछ में आग लगाने का दंड देना—फलस्वरूप लंका दहन	९३६—९६२
सीता से विदा लेकर हनुमान का लंका से प्रस्थान तथा अंगद-जामवंत आदि के साथ राम के पास पहुँचना और उन्हें सीता का संदेश देना	९६३—९७७
राम-लक्ष्मण का सेना सहित लंका को कूच और समुद्र-तट पर पहुँचना	९७८—९८७
मंदोदरी द्वारा रावण को समझाना	९८८—९९६
विभीषण का रावण के पास जाना, उसकी विनय करना, उसके चरण स्पर्श करना, रावण का क्रोधित होकर चरण-प्रहार करना और विभीषण का राम की शरण जाना	९९७—१०१०
राम द्वारा विभीषण को लंका का राज-तिलक	१०११—१०१६
राम द्वारा समुद्र की प्रार्थना	१०२०—१०२१
रावण के दूतों का छद्मवेश में आना, उनका भेद खुलने पर वानर सेना द्वारा उन्हें पकड़ना, तंग करना, लक्ष्मण द्वारा उनकी मुक्ति एवं रावण को संदेश भेजना	१०२२—१०३७
रावण और उसके दूतों का संवाद	१०२८—१०३६
रावण द्वारा दूत के चरण-प्रहार और उसका राम से मिलना	१०३६—१०४०
राम द्वारा समुद्र पर क्रोध, वाण-प्रहार, घबड़ाकर समुद्र का आना, भट करना और पुल-निर्माण की विधि बतलाना	१०४०—१०५१
समुद्र पर सेतु-निर्माण	१०५२—१०६३
सेना सहित राम का समुद्र पार करना, पड़ाव डालना और रावण का विचलित होना	१०६४—१०७२

छंद से छंद तक

मंदोदरी का रावण को एक बार फिर समझाना	१०७३—१०८०
लंका को घेरकर आक्रमण और युद्ध	१०८१—१११३
अंगद को हूत बनाकर भेजने का निर्णय, अंगद का जाना और रावण को संदेश देकर संघर्ष करके वापिस लौटना	१११४—११५६
राम-रावण सेनाओं का प्रथम दिन का प्राचीर के निकट युद्ध	११५७—१२०६
रात्रि के समय का युद्ध जिसमें मेघनाद द्वारा आकाश में अट्ट रहकर राम-लक्ष्मण को सूच्छित करना एवं उनका नाग-पाश में बंधना	१२०६—१२६६
रावण की आज्ञा से त्रिजटा द्वारा सीता को पुष्पक विमान में बैठाकर युद्ध-स्थल दिखाना	१२६७—१३०२
शर-शय्या पर सूच्छित, मृतकवत् राम-लक्ष्मण को सीता द्वारा देखना और विलाप करना	१३०३—१३१६
त्रिजटा द्वारा सीता का समाधान	१३१७—१३२३
कुछ चेत होने पर तथा लक्ष्मणको देखकर राम का विह्वल होना और चिंता करना	१३२४—१३२८
विभीषण की चिंता करना, गरुड़ का आगमन, नाग-पाश को काटना और राम को स्वस्थ करके उनका प्रस्थान	१३२९—१३४३
प्रभात होने पर बानरी सेना का आक्रमण, लंका में आश्चर्य, संदेशवाहकों द्वारा रात्रि की घटनाओं का रावण को समाचार देना	१३४४—१३६६
रावण की चिंता और प्रलाप एवं अपना तथा अपनी सेना का बल-वर्णन	१४६७—१४३६
सेनापति प्रहस्त का उत्तर	१४३७—१४३९
दुर्मुख की गर्वोक्ति	१४४०—१४४४
वज्रदंष्ट्र की गर्वोक्ति	१४४५—१४४८
निकुंभ की गर्वोक्ति	१४४९—१४५०
बज्रहनु की गर्वोक्ति	१४५१—१४५४
अन्य योद्धाओं की गर्वोक्ति	१४५५—१४६१
माल्यवान की मंत्रणा	१४६२—१४६३
रावण द्वारा माल्यवान की भर्त्सना और युद्ध करने का हठ निश्चय प्रकट करना	१४६४—१५१४

छंद से छंद तक

रावण के आदेश से वृष्णाक्ष का युद्ध-क्षेत्र में प्रयाण, प्रबल युद्ध तथा हनुमान द्वारा उसका वध	१५१५—१५७२
वृष्णाक्ष, के मरण के पश्चात् रावण के आदेश से वज्रब्रंष्ट का युद्ध-क्षेत्र में प्रस्थान उसके द्वारा भीषण-संप्राम तथा अंगद-द्वारा अंत में उमकी मृत्यु	१५७३—१६१५
वज्रब्रंष्ट के वीरगति प्राप्त होने पर रावण द्वारा अकंपन को भेजना, उसके द्वारा विकट-युद्ध एवं अंत में हनुमान के प्रहार से उमकी मृत्यु	१६१६—१६५६
रावण द्वारा विकट पर चढ़कर मोर्चा देखना, प्रहस्त को समझाना, उसे पालय्यस्त करना और युद्ध-क्षेत्र में भेजना	१६५६—१६७१
प्रहस्त का युद्ध क्षेत्र को प्रस्थान, भीषण युद्ध तथा नील के घातक प्रहार द्वारा उमकी मृत्यु	१६७२—१७१८
समाप्त करने के लिये स्वयं रावण का मेघनाद, अंतकाय, महोदर, विभिन्न, एंन, निकुंन, नरांतक आदि के साथ युद्ध-क्षेत्र में प्रयाण, पमानान युद्ध, रावण और हनुमान की मुक्का-मार, रावण की अग्नि के प्रहार से लक्ष्मण का मूर्च्छित होना, राम द्वारा लक्ष्मण करना, राम-रावण युद्ध में रावण का धकना, रावण का मंदागुनी की पीटना	१७१८—१८५६
रावण द्वारा मनामरी में वैश्वती के शाप का वृत्तान्त कथन	१८६०—१८६७
रावण द्वारा कुंभरत्नों की जमाने की चेष्टा	१८६८—१८८०
रावण-कुंभरत्नों संवाद	१८८१—१९१२
कुंभरत्नों का कुंभरोष में प्रस्थान, भीषण-युद्ध और राम द्वारा उसका वध	१९१३—२०११
कुंभरत्नों की मृत्यु के पश्चात् रावण का विधिरा द्वारा मनाभान, वैश्वती का वध, अश्विनाय, महाशरणा एवं महोदर के साथ लक्ष्मण का युद्ध क्षेत्र में प्रयाण, अश्विन भीषण-युद्ध, अंत में वैश्वती और विधिरा का लक्ष्मण द्वारा, महाशरणा का लक्ष्मण द्वारा, महाशरणा का लक्ष्मण द्वारा, महाशरणा का लक्ष्मण द्वारा तथा अश्विनवती का लक्ष्मण द्वारा वध	२०१२—२०२१
वैश्वती का लक्ष्मण द्वारा वध	२०२२—२१४६

छंद से छंद तक

- उसका युद्ध क्षेत्र में प्रस्थान, अत्यंत भीषण-युद्ध जिसमें ब्रह्मास्त्र द्वारा राम, लक्ष्मण सहित सभी यूथपतियों का सूच्छित और घायल होना एवं सड़सठ करोड़ वानरी-सेना का संहार करना २१५०—२१६१
- जामवंत की प्रेरणा से जड़ी-बूटियाँ लेने के लिये हनुमान का कैलाश पर्वत को प्रस्थान, जड़ियों सहित पर्वतशृङ्ग को लाना तथा उनकी गंध के प्रभाव से समस्त वानरी-सेना का स्वस्थ और सबल होना २१६२—२२२८
- सुग्रीव की आज्ञा से वानरी-सेना द्वारा लंका में रात्रि के समय आग लगाना तथा विध्वंस कार्य में प्रवृत्त होना, रावण द्वारा कुंभ, निकुंभ को उत्पात-शान्त करने के लिये निर्देश देना, भयंकर युद्ध, अंत में कुंभकर्ण के दोनों पुत्रों—कुंभ और निकुंभ का क्रमशः सुग्रीव तथा हनुमान द्वारा संहार २२२९—२३०६
- खर के पुत्र मकराक्ष का रावण की आज्ञा लेकर रण-क्षेत्र में जाना, भीषण-युद्ध करना तथा अंत में राम द्वारा उसका संहार २३०७—२३५२
- घननाद द्वारा रावण को आश्वस्त करना, रावण द्वारा अपने हृदय की व्यथा का व्यक्त करना तथा अंत में मेघनाद का युद्धस्थल पर जाना—भीषण संग्राम करना तथा हनुमान के समक्ष कृत्रिम सीता का बध करना एवम् २३५३—२३८७
- हनुमान का हतोत्साह होकर भागना, हनुमान से सीता-बध का संदेश पाकर राम का विह्वल होकर सूच्छित होना तथा लक्ष्मण का समझाना २३८८—२३९७
- विभीषण द्वारा मायावी मेघनाद की माया मात्र बतलाकर राम को आश्वस्त करना और यह कहना कि सीता-बध करना मेघनाद के लिये असम्भव, जिस सीता का बध दृष्टिगोचर हुआ-वह कृत्रिम सीता का बध होगा— २३९८—२४०४
- विभीषण द्वारा राम को यह समाचार देना कि मेघनाद निकुंभला में देवी-होम कर रहा है तथा यह परामर्श देना कि यज्ञ में विघ्न डालकर मेघनाद का अविलंब बध किया जाय। २४०५—२४१५
- लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान आदि का ससैन्य निकुंभला को प्रस्थान, यज्ञ में विघ्न डालना, लक्ष्मण और मेघनाद का भीषण संग्राम तथा

	छंद से छंद तक
अन्त में इन्द्रास्त्र से लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का संहार	२४१६ — २५०४
मेघनाद के संहार पर रावण का दुःखी होकर सभा में सब संघर्ष की मूल सीता का बध करने का विचार व्यक्त करना तथा महापारस मंत्री द्वारा ऐसा अधर्म कार्य न करने की संव्रणा देना	२५०५ — २५१२
रावण द्वारा सेनापति महापारस को ससैन्य रण-स्थल पर भेजना, राक्षसी सेना द्वारा भयंकर युद्ध, राम का गंदर्भ-अस्त्र से उसका संहार करना एवं उसका पलायन	२५१३ — २५५५
लंकापुरी में घर-घर युद्ध सम्बन्धी चर्चा, वार्ता, आलोचना, रावण का ससैन्य युद्ध क्षेत्र में जाना, भीषण युद्ध और सुग्रीव द्वारा विरूपाक्ष का संहार	२५५६ — २५६२
महोदर की सुग्रीव से तथा महापारस की अंगद के प्रहारों से युद्ध में मृत्यु	२५६३ — २६१२
रावण द्वारा भीषण संग्राम, बानरी सेना का संहार तथा लक्ष्मण के त्रिदेव-अभिमंत्रित शक्ति का प्रहार, लक्ष्मण का मूर्च्छित होना	२६६६ — २७१०
राम का लक्ष्मण को संभालना, शक्ति को खींचना, यथा अवसर युद्ध भी करते रहना और भ्रातृ-मरण की आशंका से भावनाओं को व्यक्त करना	२७११ — २७२८
सुखेन द्वारा संजीवनी आदि जड़ी लाने के लिये हनुमान को भेजना, तथा हनुमान का पर्वत को शृङ्ग जड़ी सहित लाना और लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर होना	२७२९ — २७४५
इन्द्र द्वारा अपना रथ राम के पास भेजना, राम-रावण का भीषण युद्ध, रावण का श्रमित होना, मूर्च्छित होना तथा सारथी का रावण के रथ को युद्ध क्षेत्र से बाहर लेजाना	२७४६ — २८१३
मूर्च्छा दूर होने पर रावण का सारथी पर क्रोध करना एवम् सारथी की उक्ति से समाधान होने पर उसे पुरष्कृत करना तथा युद्ध करने के लिये फिर युद्ध क्षेत्र में आना	२८१४ — २८३६
युद्ध क्षेत्र में अगस्त्य मुनि का आगमन, राम को सूर्य-स्तोत्र बतलाना, राम द्वारा तीन बार युद्ध-स्थल पर ही सूर्य-स्तोत्र का जाप, अगस्त्य मुनि का प्रस्थान, सूर्य देव का वरदान	२८३७ — २८५५

	छंद से छंद तक
राम-रावण युद्ध—सात दिन तक भीषण संग्राम—अंत में ब्रह्मास्त्र से रावण की मृत्यु	२८५६—२८६८
रावण के शव को पड़ा देख विभीषण का विह्वल होना	२८६९—२८८०
राम का विभीषण को सांत्वना देना	२८८१—२८८९
विभीषण की प्रार्थना पर रावण की विधिवत अंत्येष्टि-क्रिया करने के लिये राम द्वारा आज्ञा देना, मंदोदरी आदि रानियों का युद्ध-स्थल में पहुँच कर विलाप करना, रावण की अंत्येष्टि-क्रिया का सम्पन्न होना	२८९०—३०४८
राम द्वारा समस्त यूथपतियों का सत्कार करना, उनसे मिलना और इंद्र के सारथी को विदा करके शिविर को लौटना	३०४९—३०५८
विभीषण को लंका का राज्यतिलक करना	३०५९—३०६५
सीता के पास राम द्वारा हनुमान को संदेश लेकर भेजना तथा हनुमान द्वारा सीता का राम को संदेश लाकर देना	३०६६—३०८०
सीता का वस्त्राभूषणों से सुराजित अशोकवाटिका से युद्ध क्षेत्र तक पालकी में श्री वहाँ से शिविर तक पैदल आना	३०८१—३०९८
राम-सीता का प्रेमयुक्त मिलन	३०९९—३१०३
राम द्वारा सीता से अपनी शंका को प्रकट करना तथा उन्हें त्यागने का निश्चय व्यक्त करना	३१०४—३११०
सीता द्वारा भाव व्यंजना तथा चिंता में पतिव्रत धारण के साक्षी स्वरूप प्रवेश करना, ब्रह्मा का आना, राम को सम्बोधन करना एवम् अग्नि द्वारा प्रकट होकर निष्कलंक सीता को राम को भेंट करना	३१११—३१४७
राम द्वारा सीता की प्रशंसा	३१४८—३१६२
दशरथ का स्वर्ग लोक से आना और सीता, राम, लक्ष्मण को आशीर्वाद देना	३१६३—३१६७
इंद्र द्वारा स्तुति करना तथा राम की इच्छा को पूर्ण करने के लिये वानरी सेना को जीवित करना	३१६७—३१७२
पुष्पक विमान द्वारा यूथपतियों सहित राम, लक्ष्मण, सीता का प्रस्थान	३१७३—३१९३
सीता को मार्ग के विभिन्न स्थलों को दिखाते हुए राम का पुष्पक	

	छंद से छंद तक
विमान त्रिवेणी पर पहुँचना और वहाँ उतरना	३१६३—३२३५
हनुमान को भरत के पास भेजना और यह संदेश भेजना कि राम, लक्ष्मण और सीता सकुशल कल पहुँचेंगे	३२३६ ३२३६
हनुमान का भरत को समाचार देना तथा भरत का प्रसन्न होकर बधाई देना	३२४० — ३२८४
अयोध्या में राम के शुभागमन पर स्वागत की तैयारियाँ एवं पुष्पक विमान द्वारा नंदिग्राम के निकट प्रभात के समय पहुँचना	३२८५—३३०६
राम का भरत, शत्रुघ्न, गुरु वशिष्ठ, माताओं आदि से मिलना, नंदिग्राम में ठहरना, भरत की प्रार्थना पर राजा बनने से लिये तैयार होना तथा अयोध्या पुरी में होकर राज-सवारी का निकलना तथा राजमहलों में जाना	३३१०—३३६७
राम का राज्य-तिलक	३३६८—३४२२
राम द्वारा भरत को युवराज बनाना तथा अन्य व्यवस्था करना	३४२३—३४३१
राम के राज्य का वर्णन	३४३२—३४४५

चतुर्थ स्कंध

	छंद से छंद तक
जनमेजय के प्रश्न	१—२४
उत्तर में व्यास द्वारा कर्म की गति की व्याख्या	२५—३८
ब्रह्मा द्वारा कश्यप को शाप का कथानक	३९—४३
दिति द्वारा अदिति को शाप का प्रसंग	४४—६२
जनमेजय के पूरक प्रश्न	६३—७०
व्यास द्वारा माया की प्रबलता की व्याख्या	७१—७७
नर-नारायण का जीवन-वृत्त, इन्द्र द्वारा उनके तप में विघ्न डालने का प्रयास, कामदेव और वसंत द्वारा उनको मोहित करने के प्रयत्न, अप्सराओं का विफल होना, नारायण द्वारा अपनी जंघा पर थाप देकर नई अप्सरारों उत्पन्न करना, उन अप्सराओं द्वारा पति बनने के लिये नारायण से प्रार्थना	७८—१३७

छंद से छंद तक

नारायण और प्रह्लाद के युद्ध का विवरण और इसी प्रसंग से च्यवन ऋषि का पाताल पहुँचना, प्रह्लाद से मिलना तथा उन्हें विभिन्न तीर्थों के माहात्म्य को बतलाना, प्रह्लाद का तीर्थ यात्रा के लिये प्रस्थान तथा बद्रिकाश्रम पर पहुँच कर बाणों की पेड़ पर बँधे हुए देखकर शंका करना, नारायण के साथ वाक्-युद्ध और तदनंतर शस्त्र-युद्ध करना विष्णु का प्रह्लाद को दर्शन देकर उसकी शंकाओं का निवारण करना और प्रह्लाद का प्रस्थान

१३८—१७७

१७८—१८३

व्यास द्वारा अहंकार की प्रबलता बतलाना और इसी प्रसंग में भृगु द्वारा विष्णु को शाप देने का प्रकरण—दैत्यों की देवताओं से युद्ध में पराजय होना, उनके द्वारा शुक्राचार्य से प्रार्थना करना, शुक्राचार्य का महादेवजी के पास कैलाश गमन, दैत्यों की रक्षार्थ मंत्र प्राप्ति के लिये महादेवजी द्वारा बतलाया हुआ तप करना—इस अंतरिम काल में देवों द्वारा दैत्यों से युद्ध करना—दैत्यों का भागकर शुक्र की माता की शरण में जाना, शुक्र की माता द्वारा सभी देवताओं को निद्रा-निमग्न कर देना, इन्द्र आदि देवताओं की विष्णु की शरण जाना—विष्णु द्वारा मंत्र प्रयोग से देवताओं की निद्रा भंग करना, शुक्र की माता का कुपित होकर भक्षण करने के लिये दौड़ना, विष्णु द्वारा उनका चक्र से बर्ध करना—भृगु को यह समाचार प्राप्त होना और उनके द्वारा इस अनाचार के लिये विष्णु को शाप देना तथा अपने पुण्य बल से अपनी पत्नी को पुनर्जीवित करना इन्द्र द्वारा अपनी पुत्री जयंती को तप-निरत शुक्राचार्य की सेवार्थ भेजना, सौ वर्ष के उग्र तप के पूर्ण होने पर महादेवजी द्वारा उन्हें वर देना, जयंती की सेवा से प्रसन्न हो शुक्राचार्य द्वारा उसके साथ दस वर्ष तक विहार करने का वर देना, और इस अवधि में अदृष्ट रहना—इन्द्र द्वारा वृहस्पति को दैत्यों को मार्ग-भ्रष्ट करने के लिये उनके पास भेजना, वृहस्पति का शुक्र के रूप में दैत्यों के गुरु बनकर रहना और उन्हें मोक्ष का उपदेश देना—दस वर्ष पूर्ण होने पर शुक्राचार्य का प्रकट होना, दैत्यों के पास जाना, वहाँ वृहस्पति को अपने रूप में देखना, दैत्यों को सावाधन करना, दैत्यों को उनका विश्वास न करने पर शाप देना

१८४—२२६

२३०—२४०

२४१—२७०

छंद से छंद तक

- वृहस्पति का दैत्यों को छोड़कर जाना, इन्द्र का दैत्यों पर आक्रमण, दैत्यों की पराजय, उनका शुक्राचार्य के पास जाकर क्षमा-याचना करना और अंत में शुक्राचार्यका शांत होकर प्रह्लाद को आश्वस्त करना
२७१—२८४
२८५—२८८
- प्रह्लाद का दैत्यों को युद्ध को छोड़कर पाताल में जाकर बसने की मंत्रणा देना, किन्तु प्रह्लाद के नेतृत्व में दैत्यों का देवों से युद्ध करना और उन्हें पराजित करना—देवताओं का जगदंबा की शरण में जाना, उसकी स्तुति करना और देवी का प्रकट होना—जगदंबा का दैत्यों के निकट जाना, प्रह्लाद द्वारा स्तुति करना, जगदंबा द्वारा प्रह्लाद को आश्वस्त करना और उसे पाताल में जाकर बसने की आज्ञा देना—प्रह्लाद द्वारा इस आज्ञा को मानना
२८९—२९८
- विष्णु के अवतारों का वर्णन
२९९—३०२
- जनमेजय के नर-नारायण तथा कृष्ण विषयक प्रश्न
३०३—३२०
- शिशुपाल, कंस आदि के अनाचारों से त्रस्त हो कर भूमि का गाय के रूप में इन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु से प्रार्थना करना, उन सब देवताओं द्वारा जगदंबा की स्तुति करना, उसका प्रसन्न होकर प्रकट होना, सभी देवताओं को अवतार लेने का आदेश देना—देवताओं और भूमि का प्रसन्न होना—भगवती का अंतर्ध्यान होना
३२१—३४९
- कृष्णावतार प्रसंग में माया के प्रेरक शक्ति के रूप में अनेक दृष्टान्तों का उल्लेख
३५०—३६२
- वसुदेव-देवकी के विवाह सम्पन्न होने पर कंस द्वारा प्रफुल्लता से विदा करना—उसी अवसर पर आकाशवाणी होना—कंस का अपनी बहिन देवकी को मारने के लिये उद्यत होना—वसुदेव द्वारा देवकी के गर्भ से उत्पन्न शिशुओं को उसे सोंप देने की प्रतिज्ञा करना—कंस द्वारा देवकी को जीवित छोड़ना
३६३—३७३
- देवकी के प्रथम पुत्र का प्रसव होना, प्रतिज्ञानुसार वसुदेव द्वारा कंस को उसे ले जाकर सोंपना, कंस द्वारा वसुदेव की सत्यनिष्ठा से मुग्ध हो उस शिशु को वापिस करना
३७४—३८२

छंद से छंद तक

नारद का कंस के पास आगमन, उसके हृदय में आकाशवाणी के संबंध में शंका उत्पन्न करना तथा उन नवजात शिशु को मारने की मंत्रणा देना	३८३—३८५
नारदजी के इस व्यवहार के संबंध में जनमेजय की शंका और व्यास द्वारा समाधान	३८६—३८८
देवकी के छह नवजात शिशुओं के पूर्व जन्म और शाप सम्बन्धी विवरण	३८८ ३९९
देवकी के सप्तम गर्भ का योगमाया द्वारा आकर्षित करके रोहिणी के गर्भ में स्थापित करना	४००—४०२
कृष्ण तथा उनके समकालीन अन्य प्रमुख पुरुषों के विभिन्न देवताओं तथा दैत्यों के अंशों से उत्पत्ति का विवरण	४०३—४२८
वलराम जन्म, कृष्ण जन्म, आकाशवाणी का होना, पूर्व-व्यवस्थानुसार वसुदेव का नवजात शिशु को लेकर गोकुल जाना	४२९—४३१
वहाँ उसे यशोदा की सौंपना, वहाँ से उसके उत्पन्न पुत्री को लेकर लौटना	४३२—४६४
कंस का सूतिकागृह में जाना, कन्या को हाथ में लेकर मारने का प्रयास करना, बिजली कड़कना, कन्या का हाथ से छूटकर आकाश में जाना और योग-माया रूपी कन्या द्वारा कंस से यह कहना कि तेरे मारने वाला अन्यत्र उत्पन्न हो गया।	४६५—४७२
कंस का चिंतित होना, क्रूरकर्मा अपने साथियों को नवजात शिशुओं को मारने की आज्ञा देना, पूतना बकासुर आदि की मृत्यु	४७३—४८७
केशी द्वारा धनुष यज्ञ, कृष्ण-वलराम को निमंत्रण, वहाँ चारणूर, कुवलय, कंस आदि का वध	४८८—४९४
कृष्ण-वलराम का मथुरा में वसुदेव-देवकी के साथ निवास, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों का होना, काशी में विद्याध्ययन, जरासंध से सत्रह बार युद्ध, यदुवंशियों के साथ द्वारिका में जाकर रहना	४९५—५०३
कृष्ण का मथुरा लौटना, काल-यवन का पीछा करना, उसे अयोध्या की एक गुफा में ले जाकर मुचकन्द द्वारा उसको भस्म कराना	५०४—५०८
कृष्ण की आठ पटरानियों का विवरण	५०९—५१४

छंद से छंद तक

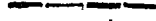
रुक्मिणी-पुत्र प्रद्युम्न का सूतिकागृह से हरण होजाना, कृष्ण का महामाया की स्तुति करना, देवी का प्रकट होना और शंकरासुर द्वारा उसके अपहरण की बात बतलाना तथा आश्वस्त करना कि सोलह वर्ष की आयु प्राप्त होने पर वह उनके पास आ जायगा ।

५१४—५२३

कृष्ण की अनभिज्ञता के सम्बंध में जनमेजय द्वारा शंका करना और व्यास द्वारा माया की प्रबलता बतलाकर अनेक दृष्टान्त देकर समाधान करना —

५२४—५५७

इसी प्रसंग में कृष्ण द्वारा महादेव की आराधना, शिव और गौरी का प्रकट होना, उन्हें पुत्र प्राप्ति का वर देना तथा उनसे यह कहना कि सौ वर्ष व्यतीत होने पर विप्र-शाप से यदुवंश का विनाश होगा माया की प्रबलता का वर्णन



भूमिका

स्वनामधन्य श्री बुद्धसिंहजी चारन द्वारा रचित 'देवीचरित' का आधार प्रधान-रूप से देवीभागवत है। प्रथम स्कंध के आरम्भ में ही कवि ने इस आधार को व्यक्त किया है :—

भाषा देवी भागवत, पावन कथा प्रवाय ।

कहत सोई विस्तार कर, छन्द बन्द चित चाय ॥

किन्तु तीसरे स्कंध के अंत में कवि की निम्नलिखित स्वीकारोक्ति यह स्पष्ट करती है कि इस देवीचरित का एक मात्र आधार देवीभागवत ही नहीं है :—

कछु उक्त तुलसी कही, व्यास उक्त कछु बात ।

जुद्ध कथा चरती जितौ, बालमीक बचनात ॥

इसका कारण भी स्पष्ट है। देवी-भागवत में राम का चरित संक्षेप में वर्णन किया गया है और वह भी इस प्रसंग में कि किष्किंधा में सीताहरण के पश्चात् नारदजी के उपदेश से श्री राम ने देवी-यज्ञ किया जिसके फल-स्वरूप वे समुद्र पर पुल बाँधने एवं रावण का वध करने में सफल हुए तथा अपहृत सीता को पुनः प्राप्त कर सके। किन्तु जन-जन में व्याप्त रामकथा का विस्तृत वर्णन देवीचरित के रचयिता को अभीष्ट था; अतएव बालमीकि-रामायण को आधार बनाने में कवि ने संकोच नहीं किया।

देवीचरित की शैली देवीभागवत तथा अन्य पुराणों के समान ही है। पुरातन प्रश्नोत्तर प्रणाली को ही अपनाया गया है। प्रश्नोत्तर प्रणाली आधुनिक शिक्षा-प्रणाली में भी यत्र-तत्र रूपान्तर के साथ चलती है। गूढ़तम रहस्यों के उद्घाटन एवं शंकाओं के समाधान का यह व्यापक, सरल और सर्वग्राह्य तरीका है।

देवीचरित में कवि ने सर्वसाधारण की भाषा का प्रयोग किया है। यहां यह भी स्पष्ट हो जाता है कि देवीचरित देवीभागवत का अक्षरशः अनुवाद मात्र नहीं है। हृदयंगम करने के उद्देश्य से जहां देवीभागवत का अनुक्रम अपनाया गया है, वहां कवि ने जहां आवश्यक समझा है और विशेषतया कथा-प्रवाह को

वनाये रखने के लिये काट-छाँट, हेर-फेर भी की है; किन्तु साथ ही कवि ने यह सावधानी दरती है कि ये न्यूनतम हों।

देवी-भागवत में 'देवीमाहात्म्य' के स्कंध के अतिरिक्त वारह स्कंध ही हैं। देवीचरित में भी वारह स्कंध ही हैं। 'देवीमाहात्म्य' का पृथक् स्कंध नहीं है। प्रथम स्कंध में ही कवि ने संक्षेप में गणपति, सरस्वती तथा अपनी इष्टदेवी 'करणी देवी' को स्तुति कर देवी-चरित का समारम्भ किया है।

देवी-भागवत के समान देवीचरित में भी व्यास-जनमेजय तथा सूत-सौनकादिक की प्रश्नोत्तरी-रूप में कथा चलती है। न देवी-भागवत किस्से कहानियों का संग्रह मात्र है और इसीलिये न देवी-चरित ही। जितने कथानक एवं आख्यान-उपाख्यान हैं उन सब को हृदय की उन गुत्थियों को सुलभाने के लिये लाया गया है जिनमें मनीषी और विचारक बुद्धि-प्रस्फुटन काल से उलभते आये हैं।

सूत-सौनकादिक-संवाद व्यास-जनमेजय-संवाद के उद्धरण मात्र हैं। केवल वे संवाद व्यास-जनमेजय-संवाद के उद्धरण रूप में दिखाई नहीं देते जो स्वयं व्यासजी के जन्म तथा उनके जीवन से सम्बन्धित हैं। तत्त्व-निरूपण, सृष्टि-उत्पत्ति एवं कतिपय अत्यंत पुरातन आख्यान-उपाख्यान ऐसे हैं जो देवर्षि नारद के माध्यम द्वारा स्वयं ब्रह्मा से प्राप्त हुए हैं। इन सबका यथास्थान उल्लेख किया जायेगा।

द्वादश स्कंधों में विभिन्न आख्यान और उपाख्यान जो जहाँ तहाँ बिखरे हुए हैं, उनके संबंध में कुछ लिखने से पूर्व देवी, उसके स्वरूप एवम् उसके विभिन्न चरित्रों का जहाँ जहाँ प्रत्यक्ष उल्लेख हुआ है, उसका विवरण देना समीचीन होगा।

प्रथम स्कंध की निम्नलिखित पंक्तियाँ मनन-योग्य हैं :—

अविनाशी दिभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप।

चेतन सत्ती चेतना, संज्ञा द्वै यक रूप ॥ छं० २. स्कं० १

जुगल नाम इक जानीये, मङ्गल रूप महीं।

भरम छांड जिय परम भज, नित्त लहहु निर्वाण ॥ छं० ३. स्कं० १

इसी स्कंध में व्यासजी द्वारा नारदजी से यह प्रश्न करने पर कि पुत्र-प्राप्ति के लिये मैं किस देवी या देवता की आराधना करूँ, उन्होंने जो ब्रह्मा-विष्णु

संवाद उद्धृत किया वह देवी की सर्वोच्च स्थिति के संबंध में अच्छा प्रकाश डालता है। विष्णु ने ब्रह्मा से कहा :

राजसी सक्ति तै तुम रचंत, सातुकि हम पालन अनुसरंत ।

मृत्युंजय सक्ती सृष्टि साहि, तामसी पाय संघरत ताहि ॥ छं० ४८. स्कं० १

बिन सक्ति तुमहु हम शिव विशेष, लोकेश काज पार्वहि न लेस । छं० ४९. स्कं० १

भगवती कृपा कौ पाय भाव, पुन भये पूज्य ताही पसाव । छं० ५२. स्कं० १

सुनियै अज नाहि न हम सुतंत्र, परियाय पिछानहु पारतंत्र । छं० ५४. स्कं० १

इसी स्कंध में एक प्रकरण और आया है जिसमें ब्रह्मा द्वारा प्रेरित वेदों ने आदिशक्ति देवी की स्तुति की जिससे ऐसा कुछ उपाय निकल आये कि विष्णु का कटा हुआ मस्तक फिर प्राप्त हो सके। कथा विवरण इस प्रकार है :—

एक बार ब्रह्मा, रुद्र आदि देवता यज्ञ अनुष्ठान करने के लिये विष्णु के पास मन्त्रणा के लिये गये। विष्णु कहीं अन्यत्र दैत्यों से दीर्घकालीन युद्ध से श्रांत हो धनुष का सहारा लेकर पद्मासन पर बैठे हुए निद्रा में निमग्न थे। सोये हुए व्यक्ति को जगाना अनाचार है अतएव उनकी निद्रा-भंग करने को कोई तैयार नहीं हुआ। अंत में ब्रह्मा ने वस्त्रियों (दीमकों) से यह कहा कि तुम धनुष की डोरी खा डालो। डोरी काटने पर जो भयंकर ध्वनि होगी उससे विष्णु जाग जायेंगे। इससे एक अप्रत्याशित घटना घट गई। रस्सी के कटने पर धनुष की नोक से जिसका विष्णु सहारा लिये हुए थे उनका मस्तक कट कर समुद्र में जा गिरा। उस समय किंकर्तव्यविमूढ़ ब्रह्मा आदि देवताओं ने वेदों द्वारा उस देवी की स्तुति कराई जो :

जग-जननी माया रूप जोत, इहि सबहि जक्त तातै उदोत । छं० ८५. स्कं० १

देवी स्तुति से प्रसन्न हुई और यह आकाशवाणी हुई :—

कव्यौ सीस कोऊ कारना, देवन नहि तुम दोख । छं० १०६. स्कं० १

त्वष्टा ह्य सिर ताहि तें, जोरहु विष्णु जगाय ।

सुफल होय कारज सकल, नीत रीत इहि न्याय ॥ छं० ११२. स्कं० १

इसी स्कंध में देवी के संबंध में स्पष्ट उल्लेख वहाँ आता है कि जब मधुकैटभ के तप से प्रसन्न हो आकाशवाणी हुई और उन दानवों को यह वाञ्छित वर मिला :—

‘वरदान देहु मोहि जक्त बीच, मुख मार्ग जब ही होय बीच’ । छं० १३३. स्कं० १

इन्हीं मधुकैटभ से युद्ध करते करते जब विष्णु श्रांत हुए तो यह सोचने लगे कि ये दानव पराजित क्यों नहीं होते । उन्हें योगदृष्टि से यह ज्ञात हुआ कि वे देवी के वरदान प्राप्त हैं । उन्होंने तब देवी की भावनायुक्त आराधना की । देवी प्रकट हुई और मधुकैटभ को मारने की यह युक्ति बतलाई :—

प्राज्ञान भुजा जुघ करहु ऊठ, अंगना बनहुँ मैं दुति अनूठ ।

वरदान लेहु तुम कहूँ बात, मति हरन करहु मैं अकसमात् ॥ छं० १५९. स्कं० १

मृग तें जब लैहै माग मीच, विन सीस करहु तुम जुद्ध बीच । छं० १६०. स्कं० १

श्रांत में देवी की बतलाई हुई युक्ति से विष्णु मधुकैटभ का सहार करने में सफल हुए ।

द्वितीय स्कंध में व्यास, कीरव-पांडव, परीक्षित, जनमेजय आदि संबंधी जीवन-वृत्त का विवरण है । वैशम्पायन से भारत के श्रवण के पश्चात् भी जब जनमेजय का चित्त शांत नहीं हुआ तो व्यासजी ने उन्हें देवीभागवत सुनने के लिये प्रेरणा दी जिससे उनके चित्त का भ्रम मिटे । उन्होंने कहा :—

सुनै भागवत कथा सयानं, जिय संका मिट है हिय जानं । छं० ३१५. स्कं० २

सब पुरान की सार सुधासम, आद अंत सो लखहु अनुक्रम । छं० ३१६. स्कं० २

द्वितीय स्कंध में देवी संबंधी केवल इतना ही उल्लेख है ।

तृतीय स्कंध में देवीचरित संबंधी निम्नलिखित आख्यान आये हैं :—

१. देवी के ब्रह्मा, विष्णु, महेश को दर्शन, उसके द्वारा आदेश एवं उनके द्वारा उसकी स्तुतियाँ ।
२. देवदत्त का आख्यान ।
३. मधुजित और मुद्गर्शन की कथा ।
४. एत वशिष्ठ की कथा ।
५. राम द्वारा कर्णिकथा में देवीव्रत जिसके फलस्वरूप रावण-वध एवं सीता की पुनः प्राप्ति हुई ।

इसका पञ्चासम संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

१. श्री कृष्ण की सभा में दुर्योधन द्वारा कर्मदान पर आश्चर्य-चकित हो शत्रु-पक्ष के लिये शोक विस्तार करने लगे कि मेरा आचार क्या है? वे

कमल-दंड के सहारे-सहारे चले और उन्हें विष्णु के दर्शन हुए। वहीं महेश भी आ गये। उस समय इन तीनों को एक उज्वल स्वरूप के दर्शन हुए जो विष्णु के शब्दों में 'मनोहर देवीय मूरत मूल, थिती जग-कारन सुक्षम थूल' (छंद० ३२. स्कं० ३) थी। उसने उन तीनों को सृष्टि के कार्य में अर्थात् यथाक्रम उत्पत्ति, पालन और संहार में प्रवृत्त होने का आदेश दिया। जब उन्होंने कुछ विस्तृत आदेश की प्रार्थना की तो देवी ने एक विमान मँगाया तथा ब्रह्मा, विष्णु और महेश सहित उस पर आरूढ़ होकर रवाना हुई। उस विमान पर विहार करते हुए जब जल पार होने पर थल आया तो नाना प्रकार के पशु-पक्षियों, देवों, गंधर्वों तथा ब्रह्मलोक, वैकुण्ठ, कैलाश, नन्दपुरी आदि के वैभव को देखते हुए वे ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ उन्हें आदि-शक्ति के दर्शन हुए। विष्णु ने कहा :—

'सनातन देवीय आद स्वरूप, इहै जग-कारन बीज अनूप। छं० ५२. स्कं० ३

उसने उन्हें संबोधन करते हुए कहा :—

कह्यौ हरि जेम करचौ जहाँ काँम, बिरंचन संकर छाँड़ विराम। छं० ५५. स्कं० ३

वहाँ इन तीनों की यह स्थिति हुई कि स्त्री-रूप में उसकी सेवा करते हुए वे सौ वर्ष तक वहाँ रहे।

भई ब्रह्म देवन की गत भाय, मिले हुय अंगना अंगना माहि।

रहे पग सेवन में अनुरत, समापत ह्वै गये बच्छर सत ॥ छं० ५८. स्कं० ३

दोहा—सुध भूल जहाँ हमहु सिव, नारिन मिल हुय नार।

कहाँ तै आये कौन हैं, नहीं जान्यी निरधार ॥ छं० ६१. स्कं० ३

उस समय तीनों ने उसका स्तवन किया और आदि-शक्ति देवी ने उत्तर दिया। इनके कुछ अंश नीचे उद्धृत किये जाते हैं :—

विष्णु की स्तुति से—

विधात्री तुहीं प्रकृती रूप वामां।

महा सच्चदारूपनी आद माता ॥ छं० ६३. स्कं० ३

स्थिती व्यापकं ब्रह्म की तूँ सथाई।

नही तूँ जहाँ ब्रह्म हूँ ना रहाई ॥ छं० ६७. स्कं० ३

हित्त येक तूँ स्वामिनी है हमारी।

महंमा कहाँ ली कहैगे तुमारी ॥ छं० ७३. स्कं० ३

महंमाय तू वेद की आदमाता। छं० ७७. स्कं० ३

शिव की स्तुति से—

तुही त्रगुनी तै रचे देव तीनों ।
 तूँ ज्ञान सौँ हूँ सब सु प्रवीनूँ ॥ छं० ८०. स्कं० ३
 लज पालना और तूँही सँघारै ।
 निमित्तं ब्रती मात्र आपौँ निहारै ॥ छं० ८१. स्कं० ३
 दसंद्री तुही तत्त्व पाँचूँ दिपावै ।
 अहंकार बुद्धी सुभावं उपावै ॥ छं० ८२. स्कं० ३
 हीयँ अग्रयता म्लान कौँ दूरहे री ।
 तरे आदमाया कृपा पाय तेरी ॥ छं० ८६. स्कं० ३

ब्रह्मा की स्तुति से —

करता जग हमकी कहै, पोखत सारंगपान ।
 सिभु ताहि कह संघरत, ये सब परम अयान ॥ छं० ९२. स्कं० ३०
 करता सब तेरी कला, संघरता पुन सोय ।
 जानहु पालन रीत जिहि, जीय जानी द्रग जोय ॥ छं० ९३. स्कं० ३

भुजंगप्रयात—फहँ अद्वती ब्रह्म हँ येक कोऊ ।
 स्वयं आपकी रूप हे दिव्य सोऊ ॥
 तथा और कोऊ जहाँ भिन्न तामें ।
 उपज्जै हृदं वीच संदेश यामें ॥ छं० ९५. स्कं० ३

देवी के उत्तर से—

परमात्मा येक हूँ श्रोत प्रोतं ।
 वहूँ अद्वती रूप जानी उदोतं ॥ छं० ९७. स्कं० ३
 अहं अद्वती ब्रह्म ना भेद यातं ।
 निहारै कछु भेद उत्पाद नातं ॥ छं० ९८. स्कं० ३
 गती थी घृती पीरती सुसृती हूँ ।
 छिमा और मेधा पिपासा छती हूँ ॥ छं० १०१. स्कं० ३
 गनी प्राणी रत्री सिखा और गौरी ।
 कुबेरी इंद्रानी कुमारी किसोरी ।
 धराही तथा वसुंधी वारनी हूँ ।
 नृसंधी कर्तसी सु नारायनी हूँ ॥ छं० १०४. स्कं० ३

शंकर में ब्राह्मदेवी कविका ने ब्रह्मा को नरस्वती, विष्णु को लक्ष्मी तथा शिव की गौरी प्रदान की और उन्हें त्रिगुणी मृष्टि रचने का आदेश दिया । परमात्म के सब उभौ विमान पर कानिन या गये तथा वीज-मंत्र का जप करते हुए शरीर-रामें में प्रवेश हुए ।

(२) अयोध्यापुरी में देवदत्त नामक ब्राह्मण रहता था। वह पुत्रहीन था। तमसा नदी के तट पर पुत्रप्राप्ति की इच्छा से एक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें याज्ञवल्क्य, गोभिल आदि सम्मिलित हुए। गोभिल ने सामवेद के मंत्र का उच्च स्वर से गायन प्रारम्भ किया। उसमें उनका स्वर भंग हो गया। देवदत्त ने ऋषि गोभिल से कहा कि आप यह कैसे पढ़ते हैं? इस पर क्रोधित होकर गोभिल ने शाप दिया कि तुम्हारे जो पुत्र होगा वह बहरा होगा। देवदत्त द्वारा अनुनय विनय करने पर ऋषि गोभिल द्रवीभूत हुए। उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में तो पुत्र मूर्ख ही होगा किन्तु बाद में पंडित होगा और देवी का कृपापात्र बनेगा।

कालान्तर में ऐसा ही हुआ। उस मूर्ख पुत्र से पीडित होकर देवदत्त ने उसे वन में छोड़ दिया। मूर्ख तो था किन्तु वह तपस्वी और सच्चा था। अतएव उसके नाम सत्यतपा और सत्यव्रत पड़ गये। इसी प्रकार सत्य आचरण और तप में वन में उसके चौदह वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन उसके आश्रम के निकट एक निषाद ने एक सूकर के तीर मारा। घायल और पीडित सूकर को देखकर उस मुनि के मुख से 'ऐं ऐं' शब्द निकले। सरस्वती के इस बीज मंत्र के मुख से निकलते ही वे मुनि तत्काल मेधावी हो गये। वे सत्यव्रत मुनि वाल्मीकि के समान कवि हुए। यह देवी की अनुकम्पा से हुआ। सत्यव्रत के माता पिता को जब ये समाचार प्राप्त हुए तो वे उसे घर ले गये।

(३) अयोध्या-नरेश ध्रुवसंध के दो पत्नियाँ थीं-मनोरमा तथा लीलावती। मनोरमा ज्येष्ठ थी। इन दोनों के एक-एक पुत्र था। सुदर्शन मनोरमा का पुत्र था और सत्रुजित लीलावती का। एक बार ध्रुवसंध आखेट के लिये गये। वहाँ सिंह से मुठभेड़ हो गई। राजा ने सिंह को मार दिया किन्तु स्वयं भी मारे गये। अब प्रश्न उपस्थित हुआ उत्तराधिकार का।

मनोरमा अपने पिता कलिग-नरेश के यहाँ पहुँची और लीलावती अपने पिता अवंती-नरेश के यहाँ। कलिग-नरेश वीरसेन और अवंती अथवा मालवा-नरेश जुधाजित में घोर संग्राम हुआ। अंत में मालवा-नरेश की विजय हुई और सत्रुजित का राज्याभिषेक हुआ। मनोरमा अपने पुत्र सुदर्शन के साथ भारद्वाज मुनि के आश्रम में चली गई। वहाँ मुनि-बालकों ने विनोद में सुदर्शन से क्लीब कहा। सुदर्शन की शैशव अवस्था थी। वह क्लीब शब्द का अर्थ न समझा किन्तु क्ली शब्द को रटता रहा। अनुस्वार रहित क्ली देवी का उत्तम मंत्र है और एक प्रकार

से उनका जाप होता रहा। सुदर्शन का भारद्वाज मुनि के आश्रम में यज्ञोपवीत मंस्कार हुआ तथा उसकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई। वहाँ उसे सरस्वती के दर्शन हुए और उसी के मंत्र के प्रताप से वह धनुर्विद्या में पारंगत हुआ।

कालान्तर में काशी-नरेश ने अपनी कन्या शशिकला का स्वयंवर रचा और विभिन्न राजाओं को निमंत्रण भेजा। स्वयंवर से बहुत पहले शशिकला को स्वप्न में सरस्वती के दर्शन हुए। उस कन्या ने सुदर्शन की चर्चा सुनी थी और उसे वरण करना चाहती थी। सरस्वती ने स्वप्न में यह वरदान दिया कि जिसे तू अपना पति बनाना चाहती है वह तुझे प्राप्त होगा।

उधर शशिकला ने एक ब्राह्मण को भेज कर सुदर्शन को स्वयंवर में अवश्य उपस्थित होने के लिये संदेश भेजा। भारद्वाज मुनि का आशीर्वाद लेकर तथा अंगना का ध्यान करके वह अपनी माता मनोरमा के साथ स्वयंवर में पहुँचा। वहाँ अनेकों राजा एकत्र हुए जिनमें मालवा नरेश जुधाजित भी था। उसने काशी-नरेश से स्पष्ट कह दिया कि यदि संघर्ष नहीं चाहते तो कन्या को यह परामर्श दो कि वह सत्रुजित को वरण करे। शशिकला इस पर तैयार नहीं हुई। अन्त में अपनी पुत्री के परामर्श को मानकर उन्होंने उसी रात्रि को शशिकला का सुदर्शन के साथ पाणिग्रहण संस्कार कर दिया। प्रभात होते ही वे वर-पशु को विदाकर गंगापार करने के लिए रवाना हुए। जब जुधाजित तथा अन्य राजाओं को इनका पता चला, तो वे अपनी सेनाएँ लेकर उनका मार्ग अन्धकार करके के लिये पहुँचे। छः दिन तक घोर युद्ध हुआ और अन्त में भारद्वाज ने काशी-नरेश सुबाहु तथा सुदर्शन को घेर लिया। तब उन्होंने देवी की स्तुति की --

इत्येव उवाच सौ अश्वतो, पाहि देवी पाहिके । छं० २६६. स्कं० ३

सुभारत विरद दिवार से, मजराज तारदी प्राह सी ।

अथ सो उवाच ह्यश्वतो, अजगाह विरद उवाह सी ॥ छं० ३००. स्कं० ३

सोचें मग के उवाचरत माध ने मिह-वादिनी देवी प्रकट हुई। उन्हें सुभारत मग के उवाच विरद और अजगाह का उवाच प्रसार करने रहे तो नंदी ने क्षण भर के लिये ही उवाच मग के उवाच मग के उवाच ।

काशी-नरेश सुबाहु की स्तुति से प्रसन्न हो याचना करने पर देवी ने उन्हें यह वर दिया कि दुर्गा-नाम से हम तुम्हारे द्वार पर निवास करेंगीं :

देवी कह्यौ बसत तुब द्वारहु, दुर्गा-नाम धाँम ध्रुब धारहु' । छं० ३१०. स्कं० ३

सुदर्शन को भी आश्वस्त कर तथा मार्ग-दर्शन करके देवी अंतर्धान हो गई और सुदर्शन अयोध्या आकर वहाँ का न्याय-नीति से शासन करने लगे ।

(४) अयोध्या में सुशील नाम का एक वैश्य था । उसका परिवार बड़ा था । अपने धर्म के अनूकूल आजीविका-उपार्जन करने का भरसक प्रयत्न करता किन्तु उसका दारिद्र्य दुःख मिटता न था । वह इस कारण चिन्ता-निमग्न रहता था । एक दिन कुछ ब्राह्मण उसके यहाँ आये । उसने उनसे दरिद्रता-निवारण का उपाय पूछा । तब ब्राह्मणों ने उसे बीज-मंत्र दिया और नवरात्रि-व्रत करने को कहा । नौ वर्ष तक विधिपूर्वक व्रत करने पर देवी ने उसे दर्शन दिये तथा भवानी की कृपा से वह सम्पन्न हो गया ।

(५) राम-कथा अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णित की गई है । इस कथा के विस्तृत वर्णन का कारण निम्नलिखित पंक्तियों में निहित है । जनमेजय ने पूछा :—

राँवन की रघुवीर पै, विपत परी कहा बात ।

किसकंधा कैसे करयो, राम-वरत नव-रात ॥ छं० ३६६. स्कं० ३

देवी जैसे वर दयो, मिल कपिपुरी मुकाम ।

पुल बाँधयो पाथोद पै, राँवन मारयो राम ॥ छं० ३६७. स्कं० ३

बंदेही पाई विजय, अरव पधारे ईस ।

व्यास देव इह बारता, बरनहु विसवा-बीस ॥ छं० ३६८. स्कं० ३

इक्ष्वाकु-वंशी अयोध्या-नरेश महाराज दशरथ के कौशल्या, कैकेई तथा सुमित्रा—ये तीन रानियाँ थीं । कौशल्या सबसे बड़ी थी । कौशल्या के राम, कैकेई के भरत तथा सुमित्रा के दो पुत्र हुए—लक्ष्मण और शत्रुघ्न । राम ईश्वर के अवतार थे ।

एक दिन विश्वामित्र जनके यहाँ आये तथा राम और लक्ष्मण को मारीच, सुबाहु आदि राक्षसों से यज्ञ की रक्षा के निमित्त उनके साथ भेजने की प्रार्थना की । दशरथ ने अपने दोनों पुत्रों को ऋषि विश्वामित्र को सौंप दिया । वन में राम ने सुबाहु का संहार किया तथा मारीच को उछाल कर दक्षिण दिशा में

दूर फेंक दिया। इस प्रकार विश्वामित्र तथा अन्य ऋषियों का यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हुआ।

मिथिला-नरेश जनक के यहाँ सीता-स्वयंवर के समाचार पाकर विश्वामित्र भी राम और लक्ष्मण के साथ स्वयंवर देखने गये। वहाँ एकत्रित सभी प्रत्याग्नी नरेश महादेवजी के धनुष को उठाने और उसे तोड़ने में असफल रहे। अन्त में विश्वामित्र की आज्ञा से राम उठे और उस धनुष को चढ़ाकर उसे तोड़ दिया। सीता ने वरमाला उनके गले में डाल दी।

जनकजी ने विश्वामित्र से परामर्श करके यह निश्चय किया कि अपने भाट्यों की अन्य पुत्रियों का विवाह भी अयोध्या-नरेश के अन्य पुत्रों के साथ कर दिया जाय तो कितना उत्तम रहे। अस्तु, उन्होंने इसी प्रकार का पत्र राजा दशरथ के पास भेजा। अतः दशरथ भी वरात लेकर आये और राम का सीता, भरत का माण्डवी, लक्ष्मण का उर्मिला तथा शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वरात वर-वधुओं के साथ अयोध्या लौट आई।

कुछ समय पश्चात् राजा दशरथ ने राम को युवराज बनाने का निश्चय किया। कैकेई ने जब यह सुना तो वह रुष्ट हो गई। उसने राजा दशरथ से दो वरदान जो उनके पास धरोहर थे, माँगे। उसने एक वर तो यह माँगा कि भरत युवराज बनें और दूसरा वर यह माँगा कि राम तपस्वी के वेश में चौदह वर्ष वन में निवास करें। दशरथ किर्तव्य-विमूढ़ हो गये।

अपने पिता के वचनों को सत्य करने के लिये राम सहर्ष वन को चले। साथ में लक्ष्मण और सीता भी गये। जब भरत अपनी ननिहाल से लौटकर आये तो उन्होंने देखा कि राम के वियोग में दशरथ स्वर्गवासी हो चुके थे। धर्मिण्य करने के पश्चात् भरत, शत्रुघ्न, गुरु वसिष्ठ आदि वन में गये। भरत ने राम से शस्योत्था लीटने का आग्रह किया किन्तु राम ने लौटना अस्वीकार कर दिया। उनकी चरण-पाशुका लेकर भरतजी अयोध्या लौट आये।

रामण और सीता के साथ राम निम्नकूट-पर्वत पर रहने लगे। वहाँ रामण-अभिर्भा सुनेश्या आटे और उनके नाँदय पर मुख हो उनके साथ विवाह करके भी प्रसन्न हुए। जब उमका प्रलय-प्रस्ताव टुकरा दिया गया तो रामण-अभिर्भा सीता से यह सीता को भक्षण करने के लिये बोली। अन्त में राम

की आज्ञा से लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक और कान काट दिये और इस प्रकार रावण को चुनौती दी ।

शूर्पणखा अपने भाई खर और दूषण के पास गई और उन्हें दल-बल-सहित ले आई । राम ने दल-बल-सहित खर और दूषण का संहार कर दिया । तदनंतर शूर्पणखा रावण के पास गई । रावण ने विचार कर मारीच की सहायता ली । मारीच स्वर्ण-मृग बनकर राम की कुटी के निकट पहुँचा । सीता के आग्रह पर राम उसे मारने के लिये चले । मारीच ने बाण लगने पर मरते समय लक्ष्मण को पुकारा कि मेरी रक्षा करो । सीता ने भयभीत हो कर लक्ष्मण से भाई की सहायता के लिये जाने को कहा । सीता का शासन मानकर लक्ष्मण राम की खोज में चले और इधर रावण पर्णकुटी से सीता का हरण कर ले गया ।

जटायु ने उसका मार्ग अवरोध किया किन्तु रावण ने उसे धायल किया और उसके पंख काट डाले तथा उसे वहीं पड़ा छोड़, वह सीता को लंका ले गया और उन्हें अशोक वाटिका में रखा । राम-लक्ष्मण जब वापिस लौटे तो पर्णकुटी में उन्हें सीता नहीं मिली । खोजते हुए वे दक्षिण दिशा की ओर चले । मार्ग में जटायु मिला । उससे यह समाचार मिला कि रावण बलपूर्वक सीता को ले गया और उसी ने उसकी वंदना की । आगे चलने पर सुग्रीव से भेंट हुई, हनुमान् के माध्यम से राम और सुग्रीव में अग्नि को साक्षी देकर मित्रता हुई । राम ने वाली को मार कर और सुग्रीव को राजा बनाकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की ।

वर्षा व्यतीत होने पर वानर और रीछ विभिन्न दिशाओं में सीता की खोज के लिये भेजे गये । हनुमान्, अंगद, जामवंत आदि दक्षिण दिशा में भेजे गये । किन्तु जब वर्षा प्रारम्भ हुई थी तो राम और लक्ष्मण प्रवर्षण-पर्वत पर रहने लगे थे । वहाँ एक दिन देवर्षि नारद उनके पास आये और कहा कि आपका जन्म ही आततायी रावण के संहार के लिये हुआ है । उन्होंने उनसे नवरात्रि-व्रत करने के लिये अनुरोध किया जिससे वे कृतकार्य हों और रावण का संहार कर सकें । आश्विन-मास निकट होने के कारण नवरात्रि-व्रत करने का स्वर्ण अवसर भी उपस्थित हो गया है । जब अष्टमी की रात्रि आई तो राम ने आदिशक्ति की आराधना की । सिंह पर आरूढ़ हो चंडी स्वयं प्रकट हुई और कहा—

केऊ वार भक्त सहाय कीनी अरुनी भार उतारने ।

अब ग्रेह दतरथ अरुवतरे महाराज रावण मारने ॥ छ० ८१७. स्क० ३

चढ़ जाहु लंक निलंक चत्वर धंख रन की धारीये ।

संधार छल सीय संग लं प्रभु फेर अदध पधारीये ॥ छं० ८१८. स्कं० ३

देवी भी वरदान देकर वहां से अपने स्थान को चली गई ।

सीता की खोज में हनुमान्, अंगद आदि जो दक्षिण दिशा में गये, उनकी समुद्र-तट पर पहुँचने पर जटायु के भाई संपाती से भेंट हुई । संपाती ने कहा कि जो समुद्र को लांघ कर लंका पहुँच सके वह सीता की खोज ला सकेगा । अंत में हनुमान् को यह काम सौंपा गया । वे छोटा रूप धारण कर लंका में पहुँचे । खोज करते-करते उनकी वहां विभीषण से भेंट हुई । उनसे ज्ञात होने पर कि सीता अशोक वाटिका में हैं, हनुमान्जी वहां पहुँचे और जिस वृक्ष के नीचे वे बैठी थीं उसके ऊपर बैठ गये । जब रावण तथा अन्य राक्षसियाँ वहां से चली गईं तो अवसर पाकर हनुमान् ने राम की मुद्रिका नीचे डाल दी । सीता को पहले तो आशंका हुई किन्तु अन्त में विश्वास होने पर राम के समाचार प्राप्त करके उन्हें प्रसन्नता हुई ।

हनुमान्, सीता से आज्ञा ले उद्यान में लगे फलों को खाने के लिये गये । रक्षकों ने उन्हें रोका इस पर संघर्ष छिड़ गया । जब रावण के पास समाचार पहुँचे तो उसने अपने पुत्र अक्षयकुमार को भेजा गया । जब उसका भी वध हो गया तो मेघनाद को भेजा गया । अंत में मेघनाद हनुमान् को नागपाश में बाँध लाया । रावण ने हनुमान् को यह दंड दिया कि कपड़ा लपेट कर उसकी पूँछ में आग लगा दी जाय । दूत होने के कारण उन्हें प्राणदंड नहीं दिया गया । इस का परिणाम यह हुआ कि हनुमान् लंका-दहन करने में सफल हुए । अंत में समुद्र में कूद तथा अपनी पूँछ बुझाकर वे सीता के सम्मुख उपस्थित हुए । चिह्नस्वरूप कंगन लेकर और सीता से विदा लेकर हनुमान् ने वहाँ से प्रस्थान किया ।

हनुमान् से समाचार प्राप्त होने पर राम-लक्ष्मण, सुग्रीव तथा वानर और रीछों की विशाल सेना लेकर रवाना हुए और शीघ्रातिशीघ्र समुद्र तट पर पहुँचे । वहाँ रावण से तिरस्कृत उसका अनुज विभीषण उनकी शरण में आया जिसे राम ने लंकेश के रूप में स्वीकार किया । तदुपरान्त नल और नील की सहायता से समुद्र पर पुल बाँधा गया और सेना सहित राम समुद्र-पार हुए ।

अंगद को दूत बनाकर रावण के पास भेजा गया किन्तु व्यर्थ । अंत में भयंकर संग्राम छिड़ गया । कई दिनों तक घमासान युद्ध हुआ जिसमें रावण के

अनेकानेक योद्धा, भाई और पुत्र सब रणकौशल दिखाकर एक-एक कर मृत्यु को प्राप्त हुए। इस युद्ध का अत्यंत विशद वर्णन किया गया है। कुछ अवसर ऐसे भी आये जब राम की विजय अत्यन्त संदिग्ध दिखाई देने लगी। मेघनाद ने अदृश्य रूप से युद्ध करते हुए राम और लक्ष्मण दोनों को नागबाणों से वेधकर मूर्च्छित कर दिया। इस स्थिति में पड़े हुए राम और लक्ष्मण को जब पुष्पक विमान में बैठाकर सीता को दिखाया गया तो सीता ने सहज रूप से जो करुणा-क्रंदन किया उसका वर्णन अत्यंत मनोवैज्ञानिक है। इसी प्रकार हतोत्साहित हनुमान् द्वारा यह समाचार मिलने पर कि जब युद्ध हो रहा था मेघनाद ने सीता को उनकी आंखों के सामने वध कर के फेंक दिया, राम अत्यंत विह्वल होकर मूर्च्छित हो गये। विभीषण ने अन्त में यह कह कर शंका का समाधान किया कि मायावी मेघनाद की यह माया-लीला है। जब तक रावण जीवित है वह सीता का वध कर नहीं सकता, इसी प्रकार ब्रह्मास्त्र-प्रहारों से जब सभी वानरी सेना, जामवंत आदि यूथपति तथा स्वयं राम और लक्ष्मण भी निर्जीव से हो गये तो जामवंत की प्रेरणा से कैलाश-पर्वत के निकटवर्ती औषध सहित पर्वतशृंग को हनुमान् उखाड़ लाये। उन औषधियों की गंधमात्र से सब सजीव और सबल हो गये। जब मेघनाद की ब्रह्मशक्ति से लक्ष्मण निष्प्राणप्राय हो गये तो सुखेन की प्रेरणा से पुनः हनुमान् संजीवनी जड़ी-सहित नील-गिरि से पर्वतशृंग उखाड़ कर लाये और लक्ष्मण को पुनर्जीवन प्राप्त हुआ। इस अवसर का बंधु-वियोग की आशंका से राम का विकलता-जनित भावावेश-प्रसूत प्रलाप पठनीय है। अन्त में रावण का वध होने पर राम की विजय हुई और विभीषण लंका के राजा बने। जब सीता को ससम्मान लाया गया तो राम ने उन्हें अग्नि-परीक्षा के पश्चात् ही स्वीकार किया।

लक्ष्मण, सीता तथा अन्य यूथपतियों सहित राम पुष्पक-विमान पर आरूढ़ होकर अयोध्या के लिये रवाना हुए। मार्ग में सीता को सभी महत्व-पूर्ण स्थलों को दिखाते हुए वे अयोध्या पहुंचे। अयोध्या में अत्यंत उत्फुल्लता से उनका स्वागत हुआ। इन सभी का विशद वर्णन किया गया है। शुभ मुहूर्त में राम का राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने एक सहस्र ग्यारह वर्ष न्यायनीति से शासन किया।

इसी स्कंध में विष्णु द्वारा आयोजित देवी-यज्ञ का विशद वर्णन आया है जिसमें अन्यान्य देवता सम्मिलित हुए।

चतुर्थ स्कंध में विशिष्ट रूप से कृष्णावतार की कथा है किन्तु तीन प्रकरण ऐसे आये हैं जिनमें देवी ने प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर मार्ग-दर्शन किया ।

प्रथम प्रकरण उस समय का है जब दैत्यराज भगवद्भक्त प्रह्लाद के नेतृत्व में दैत्यों ने देवताओं को परास्त कर दिया तो इंद्र आदि देवताओं ने शक्ति की स्तुति की । वह प्रकट हुई और देवताओं की अग्रणी बनकर दैत्यों की सेना के सम्मुख चली । जब दैत्यों ने शक्ति को आते देखा तो भयभीत हुए किन्तु प्रह्लाद ने उनका स्तवन करते हुए आदेश मांगा । आदि शक्ति प्रसन्न हुई और दैत्यों से कहा कि तुम निर्भय होकर पाताल में जाकर बसो । इस प्रकार देव और दैत्यों में शांति हुई ।

दूसरा प्रकरण उस समय का है जब द्वापर-युग की समाप्ति के पूर्व मदांध क्रूर राजाओं से पीड़ित पृथ्वी ने ब्रह्मा आदि देवताओं से अपने भार को दूर करने के लिये प्रार्थना की । ब्रह्मादिक देवता विष्णु के पास गये । विष्णु ने उनसे स्पष्ट कहा कि हम स्वतंत्र नहीं हैं । जैसी आदिदेवी की आज्ञा होती है वैसा करते हैं । अंत में आदिशक्ति की आराधना की गई और उसने प्रकट होकर कहा—

मगधाधिप आदक मंद मती, जिह भार दयो अतसे जगती ।
तिह मारन कारन देव तित्तं, अवतार लही तुम जाय ईत्तं ॥ छं० ३२८. स्कं० ४
सगती हम जुक्त चली सवही, मिल भार उतारहि जाय मही ।
अदती छुत कस्यप जाय वहाँ, जदुवंस लहे अवतार जहाँ ॥ छं० ३२९. स्कं० ४
तगुदेव न देवकी होय दसं. दिती थाप निवारन त्याँ दरसं ।
हृय हे भृगु थाप सौ पुत्र हरी, पुन होवहु में जमुदा पुतरी ॥ छं० ३३०. स्कं० ४
महिमाय कही जब वात मुली, सव देव चले सुन होय सुखी ।

तीसरा प्रकरण उस समय का है जब श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न को सूतिका-गृह में खनकर पातर शशांगुर उठा ले गया । कृष्ण ने व्याकुल होकर महामाया का स्मरण किया । जब देवी ने दर्शन दिये तो स्तुति करने के पश्चात् अपने पुत्र प्रद्युम्न के सम्बन्ध में पूछा कि वह कहाँ अदृष्ट हो गया तो अम्बिका ने कहा—

सुत रावरी मुद-दान, मत करहु सोच सुरार । छं० ५०९. स्कं० ४
कह पाँस ही अवतार, हर संवरासुर हाय ।
सद रोत हुमन मुभाय, सो सुता हित सरसाय ॥ छं० ५१०. स्कं० ४
सोई दरर सोगू संग यह बरहि व्याह अनंग । छं० ५११. स्कं० ४
सद्विषय है तुम पात, उर नहिन होहु उदात । छं० ५१२. स्कं० ४

पंचम स्कंध में जनमेजय द्वारा यह प्रार्थना करने पर :

‘कछ्छ चरित्र देवी कही, सुभ गुन ज्ञान समथ्य’ ।

व्यासजी ने निम्न लिखित चरित्रों का वर्णन किया :

(१) महिषासुर, उसकी उत्पत्ति और देवी द्वारा उसका वध ।

(२) शुभ-निशुंभ-उनके तप तथा उनके एवम् रक्तबीज आदि उनके सहायकों का देवी द्वारा वध ।

(१) पुत्रेच्छा से यज्ञ तथा मंत्र जप में निरत रंभक और रंभ नामक दो दैत्य बंधुओं में से रंभक को इन्द्र ने ग्राह बनकर भक्षण कर लिया । इससे रंभ को महान् दुःख हुआ और वह खड्ग लेकर अपना सिर काटने तथा उसे अग्नि में होमने के लिये उद्यत हुआ । उस समय अग्नि देव ने प्रकट होकर आत्म हत्या के जघन्य पाप से उसे रोक उससे वर मांगने को कहा । रंभ ने यह वर मांगा कि मेरा पुत्र इतना बली हो कि वह त्रिलोकी को विजय करे तथा सुर अथवा असुर उसे कोई भी न मार सके । अग्निदेव से उसे वाञ्छित वर प्राप्त हुआ ।

रंभ पुत्र-कामना से घूमता रहा किन्तु कोई स्त्री उसे उपयुक्त नहीं जची । एक दिन उसने एक पुष्ट प्रचंड पराक्रम मतवाली महिषी को देखा । उसके साथ रंभ ने सहवास किया और वह महिषी गर्भवती होगई । एक महिष ने उसे देखा और उस पर झपटा । रंभ ने उसे रोका और इस प्रयास में वह महिष द्वारा मारा गया । भयभीत महिषी ने यक्षों की शरण ली । जब यक्ष रंभ का दाह-संस्कार करने लगे तो वह महिषी भी स्नेह वश अग्नि में कूद कर जल गई । उस महिषी के गर्भ से तत्काल अतुल पराक्रमी महिषासुर प्रकट हुआ । साथ ही रंभ से रक्तबीज उत्पन्न हुआ ।

महिषासुर ने एक लाख वर्ष तक घोर तप किया । हंस पर आरूढ़ हो ब्रह्मा वहाँ पहुँचे और उस से वर मांगने को कहा । उसने यह वर मांगा कि मैं अमर हो जाऊँ, किन्तु ब्रह्मा के यह कहने पर कि ऐसा तो संभव ही नहीं है, महिषासुर ने यह वर मांगा कि मुझे सुर, असुर और नर कोई न मार सके, स्त्रियाँ अबलाएँ होती हैं उनका मुझे भय नहीं है । ब्रह्मा ने उसे वाञ्छित वर दिया ।

असुरों को जब यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसे अपना राजा बना दिया । शनैः शनैः दैत्यों का बल बढ़ने लगा तथा देवों की स्थिति गिरती गई । दैत्यों

के हृदय में देवताओं की विजय करने और स्वर्ग के सुख भोगने की इच्छा प्रबल हुई। महिषासुर ने अपना दूत इन्द्र के पास भेजा और उसके द्वारा संदेश कहलाया कि या तो वह वन में चला जाय अथवा दासत्व स्वीकार करे। परिणाम यह हुआ कि देवों और दानवों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। देवताओं की ओर से इन्द्र के अतिरिक्त वरुण, कुबेर, पवन आदि तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी सम्मिलित हुए। अंत में ब्रह्मा, विष्णु, और महेश के युद्ध-स्थल से चले जाने के पश्चात् विजयश्री दैत्यों को मिली। समस्त देवता पर्वत-कंदराओं में जाकर रहने लगे। देवपुरी में महिषासुर का राज्य हो गया। देवता जब यज्ञभाग से भी वञ्चित हुए तो पुनः उन्होंने अपनी रक्षा के लिये ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा महेश के पास गये तथा वे दोनों वैकुण्ठ-पुरी में विष्णु के पास पहुँचे। विष्णु ने कहा—

मरं न पुरसह मात्र तं विध दीनों वरदान ।
 जानत हौ सब देवजन, महिष बली अप्रमान ॥ छं० २८६ स्कं० ५
 ऐसी कौन त्रीया अवर, जिह सारं तहाँ जाय ।
 तेज अस्त सब देवतन, प्रगटे करहु उपाय ॥ छं० २८७ स्कं० ५
 तातं वनहे एक त्रीय, संकट मिटहै सोय ।
 याद करौ सुरराय कौं, करुणा कर सब कोय ॥ छं० २८८ स्कं० ५

विष्णु द्वारा बतलाई हुई विधि से कार्य करने पर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम वरुण और इन्द्र आदि सभी देवताओं के ईश्वरीय अंश से एक देवी प्रकट हुई।

सब देवन तेज ही की समुदा, प्रगटी इक देवीय ह्वं प्रमुदा ।
 दस आठ भुजा दनु कौं दहनी, विकराल मनौ प्रलया बहनी ॥ छं० २९४ स्कं० ५
 महा लघीय श्वच्छीय रूप महा, कहीयं तिनकी उपमा जु कहा ।
 तिह के प्रतिअंग र अंग तथा, जिह जानहु देवीय रूप जथा ॥ छं० २९५ स्कं० ५

सभी देवों ने उसे वस्त्र और आयुध भी अर्पण किये।

महिषासुर ने जब ये समाचार सुने तो उसने अपने दूतों को उसकी खोज में भेजा। दूतों ने यह समाचार दिया कि अष्टादश भुजाओं वाली एक अनुपम सुन्दरी ली है जो आकाश में स्थित है। वह न सुरी है न दानवी, न किन्नरी है शीत न नरी। देवतागण घेरे हुए उसका जयकार कर रहे हैं। महिषासुर ने जब उनके पास यह संदेश भेजा कि वह दैत्यराज के साथ विवाह करने की कृपा करें। किन्तु उनका जन्म तो दैत्यों के विनाश के लिये हुआ था, उनके साथ प्रथम सम्बन्ध स्थापित करने के लिये नहीं।

अंत में उस महाशक्ति को कामिनी-मात्र समझ कर उसे बल से प्राप्त करने के लिये दैत्यगण तत्पर हो गये। अत्यन्त भयंकर संग्राम हुआ जिसमें महिषासुर के अनेकानेक प्रचंड पराक्रमी योद्धा एक-एक कर मारे गये। अंत में महिषासुर स्वयं आया और उसने भी वही प्रस्ताव रखा जिसकी आवृत्ति अनेकों बार की जा चुकी थी, तो उस सिंहवाहिनी महाशक्ति ने उत्तर दिया—

नही तुम मोर पिछानत नाह, रचें सोई लषट चलावत राह । छं० ५१८. स्कं० ५
वही पुरसोतम ऊत्तम् अंग, सदां सुख पाय रहें तिह संग ॥

मजू नहि और कहें भरतार, निरंजन संग रहें निरधार । छं० ५१९. स्कं० ५
अचेतन रूप सदा मुहि अंग, सचेतन होय ग्रहें तिह संग । छं० ५२०. स्कं० ५
रमा मोहि नाम तथा सुरराय, सदां सुर आरुव ताहि सिहाय । छं० ५२१. स्कं० ५
होयें तुम जीवन की कछु हांम, बसौ अधलोकही लै बिसराम । छं० ५२२. स्कं० ५
अरूपा जान अजन्मां ऊह, वनू कोई कारन कायक व्यूह । छं० ५२४. स्कं० ५

अन्त में अत्यंत भीषण युद्ध हुआ और उस महाशक्ति ने महिषासुर का वध कर डाला। अवशिष्ट दानव पाताल-लोक को भाग गये। देवों की रक्षा हुई और उन्हें देव-लोक प्राप्त हुआ।

(२) शुम्भ निशुम्भ दो दैत्य बंधुओं ने पुष्कर में दशसहस्र वर्ष तक उग्र तप किया। ब्रह्मा उनके तप से प्रसन्न हुए और उनसे वर मांगने को कहा। उन्होंने भी प्रथम तो अमर होने का वर मांगा। किन्तु ऐसा होना तो असंभव था, अतएव उन्होंने यह वर मांगा कि सुर, असुर, मनुष्य, पशु कोई भी हमें न मार सके। स्त्रियाँ अबला होती हैं, उनका हमें भय नहीं है। ब्रह्मा ने 'तथास्तु' कहकर वहाँ से प्रस्थान किया।

भृगु ने शुभ मुहूर्त में शुभ का राज्याभिषेक किया। दशों दिशाओं में दैत्यों का प्रभुत्व बढ़ने लगा। दैत्य योद्धा चंड और मुंड भी अपनी सेना सहित उससे आ मिले। वहाँ रक्तबीज भी आगया।

दानवों ने मदोन्मत्त हो अपने राज्य का विस्तार करना प्रारम्भ किया और पुराने वर का स्मरण कर देवताओं से युद्ध किया और उन्हें परास्त कर दिया। देवेन्द्र इन्द्र भी भाग गये। और देवगण ज्यो-त्यो अपना समय-यापन करने लगे। देवगुरु वृहस्पति से जब उन्होंने परामर्श किया तो उनकी मंत्रणा से उन्होंने महिषासुर को वध करने वाली महाशक्ति का आराधन किया। महाशक्ति प्रकट हुई और देवताओं को आश्वस्त करके वहाँ से रवाना हुई।

चढ़ सिध चली ईक रंग छटा, घट कालका सोहत स्याम घटा । छं० ६५४. स्कं० ५
 भजमान विचारत दर्प-भरी, पहुँची जुगरूपा य संभुपुरी ।
 गहरँ स्वर गावत राग गरँ, वर वाटका पुष्प जहाँ विहरँ ॥ छं० ६५५. स्कं० ५

जब शुंभ को यह ज्ञात हुआ तो उसने अपना प्रणय-संदेश उसके पास भिजवाया । तब —

मुस्फाय कहुँ सुरराय मूखा, सब जानतह मति की समूखा । छं० ६६७. स्कं० ५
 वर-दायक सुंभ निसुंभ बली, अित खोस करी जिह देवथली ।
 सुभ लछ्छन की गुन-रास सही, जग जानत सूर उदार सही । छं० ६६८. स्कं० ५
 सुर जीत लये भिर संगर में, भूपक पल ना गिर भंगर में ।
 अपन बल ऊन्नत जान अहो, करहै वर तो कह जाय कही । छं० ६७१. स्कं० ५
 हीय हेर ईहै मम दर्प हरी, कर मंगल फेर विवाह करौ ॥ छं० ६७४. स्कं० ५

दूत ने यह संदेश शंभु को दिया । पहले तो शुंभ ने इसे दूत की वाचालता-मात्र समझा किन्तु जब दूत ने बल देकर कहा तो उसकी बात का विश्वास करना ही पड़ा ।

वच कहत व्याज विधान, सोई सुनहु नृपत मुजान ।
 विच कही सखियन वात, बलवंत वीर विख्यात ॥ छं० ६६५. स्कं० ५
 जिह संग करहु जुद्ध अवलोक पौरुख ऊद्ध ।
 पश्चात् करक प्यार, भजहु सोई भरतार ॥ छं० ६६६. स्कं० ५
 मिष्या न घाथम मोर, कर लेहु जतन करोर । छं० ६६८. स्कं० ५

एक अबला की चुनौती स्वीकार न करके क्या हँसी करायेंगे, यह विचार कर शुंभ ने धूम्रलोचन, चंड और मुंड आदि महापराक्रमी योद्धाओं को क्रम-क्रम से भेजा किन्तु वे सभी उस कालिका देवी के हाथों मारे गये । फिर उसने रक्तवीज को भेजा जिसकी विशेषता यह थी कि उसके रक्त की जितनी बूँदें भूमि पर गिरतीं उतने ही रक्तवीज उत्पन्न होजाते थे । ऐसी स्थिति में—

जब रक्तवीज तं भयो जंग, सुर मिली सक्तीयां आय संग । छं० ६१६. स्कं० ५
 फोज हंम पड़ी फोज धीर कंध, चढ़ गरुड वनुज कहि चिध चिध ।
 साईं मु फोजक फेकी अरोह, संट पं चढी फोज मंड छोह ॥ छं० ६२०. स्कं० ५
 यह पूर पीठ बंधी गजिद्र, देसी हम सुनीय दानविद्र ।
 नर-प्रष्ट पटी फोज लगी नार, प्रेत की प्रष्ट फोज बल प्रचार ॥ छं० ६२१. स्कं० ५
 छह-खानम खानम शोजक ख्यार, नव-दून भुजा नीक निहार । छं० ६२२. स्कं० ५
 रज शीष देवता तितो जात, देवीयां तितो संगर दिषात ।
 नामे इह शायो एनु अवंत, दाईं न पराक्रम आद अंत ॥ छं० ६२५. स्कं० ५

साथ ही उस कालिका देवी ने अपने मुख का विस्तार करके कृत्रिम रक्त-बीजों का भक्षण कर लिया। रक्तबीज का रक्त भूमि पर गिरने ही न दिया गया। कालिका देवी उसे उदरस्थ कर उस सब को पचा गई। इस प्रकार रक्तबीज का भी वध हुआ। तदनंतर निशुंभ युद्ध-क्षेत्र में गया किन्तु वह भी वीर-गति को प्राप्त हुआ। दैत्यराज शुंभ भी यह सोचकर युद्ध में गया कि :

नास्यौ खेत निसुंभ कौ, मम भ्राता कुल-मौर।

बिसरं ऐसं वर कौ, वह कातर कोई और ॥ छं० १०६२. स्कं० ५

जहै धन तन जायगौ, रहे न आसुर राज।

जस तोह नह जायगौ, आखर इही इलाज ॥ छं० १०६३. स्कं० ५

अत्यंत भयंकर युद्ध हुआ किन्तु अन्त में शुंभ भी मारा गया। अवशिष्ट दानव पाताल-लोक को चले गये।

इसी स्कंध में कतिपय ऐसे व्यक्तियों का भी वृत्तान्त आया है जिन्हें मधु-कैटभ आदि से संबन्धित कथाओं के श्रवण, पाठ एवम् देवी की आराधना से महत् फल प्राप्त हुआ। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

(१) स्वारीचिष मन्वतर में एक अत्यंत धर्म-परायण राजा थे जिनका नाम सुरथ था। पर्वत-प्रदेशीय म्लेच्छ राजा ने उन पर आक्रमण किया। राजा को ऐसा आभास हुआ कि उनके मन्त्रिगण भी शत्रु से मिल गये हैं। चिन्तित और व्यथित सुरथ वहाँ से चल दिये और सुमेधा ऋषि के आश्रम में पहुँच, वन में रहने लगे। वहाँ पुत्र-कलत्र द्वारा निष्कासित समाधि-नामक एक वैश्य भी आ गया। दोनों ने उस ऋषिवर से अपनी-अपनी दुःख-कथाएँ कहीं। ऋषि-श्रेष्ठ ने उन्हें देवी की आराधना-विधि बतलाकर उन्हें नवाक्षर-मन्त्र भी दिया। तीन वर्ष तक उन दोनों ने तपस्या की। अन्त में महादेवी ने प्रकट होकर उनसे वर माँगने को कहा। राजा ने यह इच्छा व्यक्त की कि मेरा राज्य पुनः प्राप्त हो जाय। देवी ने मनोवाञ्छित वर दिया और यह कहा कि तुम दस हजार वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् सूर्य से जन्म लेकर सावर्णि-नामक मनु होंगे। वैश्य ने केवल ज्ञान-प्राप्ति का वर माँगा, वह उसे प्राप्त हुआ।

छठे स्कंध में निम्नलिखित आख्यान आये हैं जो देवी के प्रत्यक्ष प्रकट होने, उसके द्वारा वरदान देने एवं संकटों के निवारण से संबन्धित हैं।

पहला प्रकरण वृत्रासुर के वध का है। वृत्रासुर को विश्वकर्मा ने तप करके यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न किया था। वृत्रासुर ने वरुण, कुबेर, देवताओं सहित इन्द्र को पराजित कर उसे भगा दिया। वृत्रासुर ने तप करके ब्रह्मा से वर भी प्राप्त किया और देवपुरी का शासन करने लगा। विष्णु से जब देवताओं ने प्रार्थना की तो उन्होंने देवी की आराधना करने का परामर्श दिया। साथ ही विष्णु ने यह भी कहा कि इन्द्र के वज्र में प्रवेश करके मैं वृत्रासुर के वध में सहायक हो जाऊंगा।

जब देवताओं ने महाशक्ति की आराधना की तो उन्होंने प्रकट होकर उन्हें सफल होने का वर दिया। साथ ही उन्होंने यह भी वचन दिया कि मैं वृत्रासुर की बुद्धि को मोहित कर दूंगा।

इधर देवलोक-वासी ऋषियों और मुनियों की मध्यस्थता से वृत्रासुर और इन्द्र में संधि हुई जिसके अनुसार इन्द्र ने यह प्रतिज्ञा की कि गीले या सूखे किसी अस्त्र-शस्त्र या वज्र से मैं वृत्रासुर पर आघात नहीं करूंगा।

किन्तु यह संधि तो काल-यापन का एक तरीका था। एक दिन जब वृत्रासुर अकेला समुद्र तट पर गया हुआ था तो इन्द्र ने अवसर देखकर समुद्र के फेन में डूबे हुए वज्र से उसे मार डाला। विष्णु ने वज्र में प्रवेश करके और देवी ने वृत्रासुर को इन्द्र का विश्वास करने के लिए प्रेरित करके तथा सागर को फेन-प्लावित करके सहायता की। तदनंतर इन्द्र देवपुरी के शासक हुए।

दूसरा प्रकरण उस समय का है जब इन्द्र ब्रह्महत्या के पाप और निन्दा से निस्तेज हो गये और प्रायश्चित्त करने के लिये मान-सगेवर के निकट अज्ञात वास करने लगे। इन्द्र की अनुपस्थिति में नहुष को इन्द्रासन प्राप्त हुआ। इन्द्रासन पर बैठ, नहुष इन्द्रपत्नी शची की इच्छा करने लगे। पतिव्रता शची ने देवी की आराधना की। देवी ने दर्शन दिये और उसे इन्द्र के अज्ञातवास का स्थान भी बतलाया। साथ ही देवी ने यह भी आश्वासन दिया कि उसके पाति-श्रवण-धर्म के पालन में वह सहायक होंगी। देवी की अनुकम्पा से शची अज्ञात स्थान में काल-यापन करने वाले अपने पति के दर्शन कर सकी। अश्वमेध यज्ञ द्वारा इन्द्र की अज्ञातवास के पाप से मुक्ति हुई किन्तु शची का संकट तब भी दूर नहीं हुआ।

शची नहुष विचार के पश्चात् अन्त में नहुष के पास गई और उनसे यह विचार बोली कि यदि वे सप्त-ऋषियों द्वारा वद्वन की हुई पालकी में आरुढ़ होकर

आयें तो वे उन्हें ग्रहण करेंगी। कामांध नहुष ने ऋषियों की अनुनय-विनय की तथा उन्हें पालकी ले चलने के लिये मना लिया। जाते समय नहुष ने ऋषियों से शीघ्र चलने के लिये 'सर्प-सर्प' कहा। ऋषियों ने क्रोधित होकर उसे शाप दिया कि तू सर्प हो जा। नहुष इन्द्रासन से च्युत हो गये और तदनंतर इन्द्र के वापिस आने पर शची के कष्ट की निवृत्ति हुई।

तीसरा प्रकरण हैहय-वंशीय क्षत्रिय राजाओं से संबधित है, जिन्होंने भृगु-वंशी सभी ब्राह्मणों को पीड़ित कर दिया। सभी ब्राह्मण-स्त्रियाँ दुःखी हो, हिमाचल पर जाकर, गौरी की एकान्त आराधना करने लगीं। तब देवी ने प्रकट होकर उन्हें यह वर दिया कि तुममें से किसी एक के उरःस्थल से मेरे अंश से संतति होगी, वह तुम्हारे संकट दूर करेगी। कालान्तर में उन ब्राह्मण-स्त्रियों को देख, हैहय-वंशीय क्षत्रिय उनके पीछे भागे। उस समय उस कातर स्त्री के उरःस्थल से एक अत्यंत तेजस्वी पुत्र निकला जिसके देखते ही वे सब क्षत्रिय अंधे हो गये। अंत में अनुनय-विनय करने पर उस तेजस्वी ऊर्व ऋषि ने उन क्षत्रियों को दृष्टि प्रदान तो की किन्तु साथ ही उनसे यह प्रतिज्ञा कराई कि भविष्य में वे ऐसा अनाचार नहीं करेंगे।

सप्तम स्कंध में सूर्य और सोम-वंशों का विवरण है। त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र आदि के आख्यान आये हैं। एक प्रकरण ऐसा भी आया है जिसमें देवी को शताक्षी के रूप में प्रकट होकर रक्षा करती पड़ी। कथानक इस प्रकार है—

हिरण्याक्ष के वंश में दुर्गम नाम का दैत्य उत्पन्न हुआ। उस ने यह विचार किया कि देवों का बल ब्राह्मण हैं और ब्राह्मणों का बल वेद है। यदि ब्रह्मा की आराधना करके मैं उनसे वेद प्राप्त कर लूँ तो ब्राह्मण वेद-ज्ञान-विहीन हो जायेंगे, यज्ञादि न कर सकेंगे तथा देवता इस प्रकार यज्ञ-भाग से वञ्चित होकर क्षीणबल हो जायेंगे। यह विचार कर एकसहस्र वर्ष तक उसने कठोर तप किया। ब्रह्मा प्रकट हुए और उस दैत्य ने यही वर माँगा :—

हमकीं हु दीर्ज वेद हंसग विप्र जानत जिह विधी ।

जग बीच जेतक मंत्र जप सुर असुर साधत जिह सिधी ।

सब जीत कै हम ह्वै सुखी विस्तारहूँ जस वसुमती ।

रचि भक्ति करहूँ रावरी सतघृती दाता सुकती ॥ छ० ८३३. स्क० ७

वाञ्छित वर उस दैत्य को मिला किन्तु ब्राह्मण स्नान, संध्या, वेद, स्मृति आदि मन्त्र को भूल गये तो दानवों ने देवपुरी को घेर लिया। देवता-गण वहाँ में भाग कर पर्वत-कंदराओं में समय-यापन करने लगे। यज्ञ के अभाव में त्राहि-त्राहि करने लगे। जब ब्राह्मणों ने विचार कर आदिशक्ति की आराधना की तब प्रसन्न होकर आदिशक्ति ने पार्वती के रूप में उन्हें दर्शन दिये—

मनि नील-सम जिह नैन निर्मल नील रंग निरंजनी ।

कन्दत उरोज प्रनूप आकत भूष जन-गन भंजनी ॥ छं० ८३६. स्कं० ७

नय रात लीं जल नयन सीं वरसाय चहु दिस विद्युरची ।

प्रप्राद कसत श्रीसर्षी घप्ती भई दुरभिल टरची ॥ छं० ८४०. स्कं० ७

तब देवता और ब्राह्मण सभी ने उस महाशक्ति का स्तवन किया जिसका कुछ अंश इन प्रकार है :

कृदस्य सनचित-रव कारन नित्य तू निर्दोषनी ।

भुषनेश्वरी तू भगवती परमात्मनी जग-पोषनी ।

हेम शुषा-सागुर हेर हीय द्रग दिध्य रूप दिषाय कै ।

गत-सङ्ग नैनन धार संघर वार दीय वरसाय कै ॥ छं० ८४२. स्कं० ७

माता सताशी भूम-मडल नाम कल्पत सुर-नरा । छं० ८४३. स्कं० ७

जब दैत्याभिषेक दुर्गम को यह समाचार मिला तो वह सेना-सहित यहाँ पहुँचा। देवता और मुनियों में भगदड़ मच गई। उस समय—

मंशोध देवी सुरन सीं अयलंब देन उतावरी ।

पुन घात तम शीय अगन परगट समुभ माया सावरी ।

एई छोर फेरी चकर ई विस देवजात बचाय कै ।

अपकारनं पाहुर एही रमनीक रूप रनाय कै ॥ छं० ८४८. स्कं० ७

दानवों ने युद्ध करने के लिये इस निरंजनी देवी ने अनेकों रूप प्रकट किये। उदासी, जामा, त्रिशूला, कानिका, मातंगी, भैरवी, वगलामुखी, रमा, शकटा, विषमना, कामाक्षी, मोहिनी, बुम्भिणी आदि उत्पन्न हो गई।

इस तीर अक्षय भई अशरं सस्य अग्न संभार कै ।

रूप अगन माती उही गरी विरतात धर विचार कै ॥ छं० ८५२. स्कं० ७

इस दिने अक्षय संभार दुषा जिसमें सभी दानव-सेना नष्ट हो गई। दानवों का अगन उही गरी विरतात धर विचार कै। उस समय कामाक्षी ने तीर्थम दानवों में उनका

सुर और ब्राह्मणों की स्तुति से संतुष्ट होकर शताक्षी ने श्रीमुख से कहा—
 चिद वेद है मोहि अंग च्यारहु, ध्यान धारहु धारना । छं० ८५७. स्कं० ७
 वंधेय भये सब वेद बिन, निज हृदय में निरधारीय ।
 दुरगम संधारची खेत दानव मोह दुर्गा मानीय ॥ छं० ८५८. स्कं० ७
 दुर्गा कहौगे साहा दुख में आय करहुँ ऊ बेल कौ ।
 साकंभरी कहि करहु सुमरन अन्न देहुँ ऊ भेल कौ ।
 सुमरन सताक्षी करहु साधन वृष्ट करहुँ वारकी ॥ छं० ८५९. स्कं० ७

अष्टम स्कंध में देवी की आराधना-विधि के साथ सृष्टि-वर्णन आया है । साथ ही ब्रह्मा-पुत्र स्वायंभुव मनु की सृष्टि-रचना के उद्देश्य से महाशक्ति की आराधना का उल्लेख है । आराधना से प्रसन्न हो देवी प्रकट हुई और उन्हें यह वर दिया कि उनका सृष्टि-रचना-कार्य निर्विघ्न समाप्त होगा ।

नवम स्कंध में दान-धर्म-फल, नरक, कुंडों और पातकों आदि का विवरण है । साथ ही उस महाशक्ति के एकांगी स्वरूपों से संबंधित जैसे दक्षिणा देवी, षष्ठी देवी, मंगलचंडी, मानसी देवी, सुरभि देवी आदि के महत्व का विवरण है ।

दशम स्कंध में मन्वंतरो का विवरण है । इन मन्वंतरो में स्वायंभुव मनु, स्वरोचिष मनु, चाक्षुष मनु तथा सावर्णि मनु का विवरण कुछ अधिक विस्तार के साथ दिया गया है । इसी स्कंध में भ्रामरी देवी का चरित्र भी दिया गया है जो इस प्रकार है :—

अरुण नामक एक दैत्य पाताल-लोक से आगया । उसने गंगा-तट पर प्राणायाम एवं गायत्री-मंत्र के द्वारा अत्यंत उग्र तप किया । यहाँ तक कि उसके शरीर से भीषण ज्वाला निकलने लगी जिससे सभी दग्ध होने लगे । देवगण ब्रह्मा की शरण गये । ब्रह्मा ने आकर अरुण को मनोवाञ्छित वर दिया । उसने मांगा—

जुध मरुँ न मैं सस्त्र जोग सौँ, रत ह्वै आधी व्याध रोग सौँ । छं० १६६. स्कं० १०
 सुर नर नारी घात न साधै, बपु चौपद द्वीपद नही वाधै । छं० १५०. स्कं० १०

वर प्राप्त करके जब वह दैत्य विख्यात हुआ तो सभी दैत्यों ने एकमत से उसे अपना राजा बना दिया । देवगण वस्तु ही शिव की शरण गये । उनके पीछे पीछे दैत्यगण भी गये । किकर्तव्यविमूढ़ हो जब वे सोचने लगे तो आकाश-वाणी हुई कि आप भवानी की आराधना करें । आकाश-वाणी यह भी हुई—

विवुधन गिरा कहीं फिर वाचा, सुत दिती इहै भक्त है साँचा ।

जप गायत्री करत है जौलों, तुम सौं इहै मरं नहीं तौलों ॥ छं० १५४. स्कं० १०

देवगण तव गुरु बृहस्पति के पास गये । उन्होंने उन से कोई ऐसा उपाय करने की प्रार्थना की कि जिससे अरुण दैत्य गायत्री-जप को त्याग दे । गुरु बृहस्पति दैत्यराज के पास गये और उससे कहा—

गायत्री जप करचौ गोय कै, जान्यौ नहीं जजमान जोय कै ।

आयो में करने उपदेसा, रह्यौ न राग द्वेष कौ रेसा ॥ छं० १५७. स्कं० १०

स्वर्ग भोग भोगहु सुखदाई, बसहु होय निर्भय वरदाई । छं० १५८. स्कं० १०

इतना कहकर गुरु बृहस्पति तो चले गये किन्तु दैत्यराज के मन में भ्रम उत्पन्न हो गया तथा उसने गायत्री-जप छोड़ दिया ।

इधर देवगणों ने देवी भवानी की आराधना करना प्रारम्भ कर दिया । देवी प्रसन्न हुई और प्रकट हुई । देवताओं ने स्तुति के पश्चात् यही इच्छा प्रकट की कि आप अरुण दैत्य से हमें मुक्ति दिलाइये जिससे हम निर्भय हों । भवानी ने प्रकट होकर अपनी मुट्ठी खोली । मुट्ठी के खुलते ही असंख्य विषैले भ्रमर निकल पड़े । उन्होंने चुन-चुन कर सभी दैत्यों का विनाश कर दिया । वह देवी भ्रामरी देवी के नाम से प्रसिद्ध है ।

एकादश स्कंध में शौच स्नान, संध्योपासन, गायत्री-पुरश्चरण आदि का वर्णन है ।

द्वादश स्कंध में गायत्री, उसके ऋषि, उसके हृदय आदि के साथ अन्त में जनमेजय के देवी-यज्ञ का वर्णन है ।

देवीचरित्र-सम्बन्धी आख्यानों के अतिरिक्त देवीचरित के विभिन्न स्कंध में अन्य आख्यान, उपाख्यान भी प्रसंगवश आये हैं

देवीभागवत और इसी कारण देवीचरित के वक्ता और श्रोता के रूप में दो प्रमुख पात्र द्वैपायन व्यास तथा जनमेजय हैं । उनके जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में विवरण आना स्वाभाविक है । इसके अतिरिक्त सत्-असत्, पाप, पुण्य, सत्तन्व्य-अकत्तन्व्य-सम्बन्धी जनमेजय की शंकाओं का आधार भी तो प्रमुखतया वे जीवन वृत्त थे जिनमें उनकी अभिरुचि थी । उनका विवरण आना भी स्वाभाविक है । इनका संक्षिप्त कथा-वृत्त देवीचरित के आधार पर निम्नलिखित है—

द्वैपायन व्यास

द्वैपायन व्यास के पिता पाराशर मुनि तथा उनकी माता सत्यवती थी। पाराशर मुनि को एक दिन गंगा-पार जाना था। केवट की कन्या वासवी अथवा मत्स्यगंधा उन्हें अपने पिता की आज्ञा से नाव द्वारा पार करने गई। संयोग से पाराशर मुनि काम-पीडित होगये। उस कन्या ने कतिपय आपत्तियाँ उपस्थित कीं। पहली आपत्ति तो यह थी कि उसके शरीर से मछली की गंध आती है और दूसरी आपत्ति-यह थी कि दिन का समय है। अपने तप के प्रभाव से पाराशर मुनि ने उसकी दुर्गंध ही दूर नहीं की, उसे योजनगंधा बना दिया। दिन के प्रकाश को कृत्रिम कुहरा उत्पन्न करके दूर कर दिया। सहवास के पश्चात् वासवी ने जब यह पूछा कि अब मेरा क्या होगा तो उन्होंने कहा कि तेरा कन्यात्व यथावत् बना रहेगा और जो पुत्र होगा वह विष्णु का अवतार अत्यंत यशस्वी होगा। उस दिन से वासवी अथवा मत्स्यगंधा सत्यवती हुई। उसके जो पुत्र हुआ वह जन्म के पश्चात् ही तप करने चला गया और कालान्तर में द्वैपायन व्यास के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शंका यह रह जाती है कि वासवी के शरीर से मछली की गंध क्यों आती थी। इसका विवरण इस प्रकार दिया गया है। महाराज उपरचर जो वसु-उपरचर के नाम से प्रसिद्ध हैं, एक बार आखेट खेलने गये। घर पर उनकी पत्नी ऋतुमती थी। वन में पहुँच कर उनका वीर्य-स्खलन हुआ। उन्होंने उस वीर्य को अपनी पत्नी के पास श्येन पक्षी द्वारा भेजा। मार्ग में दूसरा श्येन मिल गया जिससे उसका युद्ध हुआ। वह वीर्य घृताची नाम की अप्सरा जो शापवश मछली के रूप में रहती थी, निगल गई। कालान्तर में मछलहारे ने उसे पकड़ा और जब उसके पेट को चीरा तो दो शिशु उसमें से निकले—एक पुत्र और दूसरी पुत्री। पुत्र को राजा ले गया किन्तु पुत्री उसी केवट के पास रही। मछली के गर्भ से जन्म लेने के कारण उसके शरीर में मछली की गंध आती थी और इसी कारण इसे वासवी अथवा मत्स्यगंधा कहते थे।

कालान्तर में इसी सत्यवती का विवाह महाराज शांतनु से हुआ।

जनमेजय

जनमेजय प्रसिद्ध पांडव अर्जुन के प्रपौत्र, वीर अभिमन्यु के पौत्र, तथा परीक्षित के पुत्र थे। उन्होंने उत्तंक मुनि द्वारा प्रेरित होकर नागयज्ञ किया।

इस यज्ञ को करने का उनका उद्देश्य यह था कि उनके पिता परीक्षित को इसने वाले तक्षक से प्रतिशोध लिया जा सके। तक्षक का अपराध यह नहीं था कि उसने परीक्षित को डसा किन्तु उसका अपराध यह था कि उसने कश्यप ऋषि को जो तक्षक द्वारा डसे जाने के पश्चात् परीक्षित को पुनर्जीवित करने को जा रहे थे, द्रव्य देकर अर्धमार्ग से ही वापस लौटा दिया। इस घटना से शाप की घटना गौण होगई और तक्षक की कुप्रवृत्ति प्रमुखरूप से सम्मुख आगई।

शान्तनु

भरतवंशी नरेशों में शान्तनु का स्थान अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। कौरव और जनमेजय के पूर्वज पांडव जिनके मध्य महाभारत युद्ध हुआ—उन दोनों के ये प्रपितामह थे। यदि वे सत्यवती के साथ विवाह करने के लिये अत्यंत इच्छुक न होते तो महाभारत जैसे महायुद्ध की संभवतः बुनियाद ही न पड़ती और न गांगेय को आजन्म अविवाहित रहने तथा राजसिंहासन के त्याग की प्रतिज्ञा करने का अवसर ही आता और न संभवतः ययाति के वंश की रक्षा के लिये नियोग द्वारा संतति-उत्पन्न करने की आवश्यकता पड़ती। शान्तनु एवं जनमेजय के अन्य पूर्वजों का संक्षिप्त विवरण निम्न लिखित है—

इक्ष्वाकुवंशी महाभिख नरेश को तपस्वी जीवन तथा वाजपेय यज्ञ करने के कारण स्वर्ग की प्राप्ति हुई। एक बार ये ब्रह्मा के यहाँ गंगा तथा अन्य देवताओं के साथ बैठे हुए थे। वायु के वेग से गंगा का वस्त्र खुल गया। अन्य देवताओं ने अपनी आँखें नीची कर लीं। महाभिख नरेश गंगा को यथापूर्व देखते रहे। गंगा की आँखों में भी प्रेम की झलक थी। ब्रह्मा ने यह देखकर दोनों को शाप दिया कि तुम दोनों मृत्युलोक में जन्म लेकर सुख-दुःख भोगो। ये महाभिख नरेश ययातिवंशी प्रतीप के पुत्र शान्तनु हुए।

गंगा को भी शाप के कारण स्त्रीरूप धारण करके भार्या बनना पड़ा। किन्तु स्वयं शापित होते हुए भी गंगा ने अष्टवसुओं की उनके शाप-परिपालन में सहायता की।

वसिष्ठ मुनि ने आठों वसुओं को पृथ्वी पर जन्म लेने का इस कारण शाप दिया कि उन्होंने उनकी नंदिनी-नामक गाय को चुरा लिया था। इन अष्ट-वसुओं में छोटे नाम के वसु प्रधान अपराधी या अनएव वसिष्ठजी ने अनुनय-विनय

करने पर अन्य सात वसुओं का दंड घटा दिया और कहा कि वे एक-एक वर्ष में ही शापमुक्त हो जायेंगे किन्तु प्रधान अपराधी द्यौसु की शाप की अवधि-यथावत् रहेगी ।

गंगा ने शाप को सत्य करने के लिये स्त्रीरूप-धारण किया । शांतनु ने उसे देखा, मोहित हुए और विवाह की इच्छा व्यक्त की । गंगा ने इस शर्त पर विवाह करने की स्वीकृति दी कि जिस समय वे उसके इच्छापूर्वक काम करने में बाधा डालेंगे, वह उन्हें छोड़ कर चली जायगी ।

गंगा के शांतनु से आठ पुत्र हुए जो अष्टवसु थे । जन्म होते ही गंगा उन्हें गंगा नदी में प्रवाहित कर देती थी । जब अष्टम पुत्र का जन्म हुआ तो शांतनु ने बाधा उपस्थित की । गंगा पूर्वप्रतिज्ञा के अनुसार शांतनु को छोड़कर चली गई । यह अष्टम पुत्र ही गांगेय अथवा भीष्मपितामह थे ।

कुछ समय पश्चात् योजनगंवा सत्यवती को शांतनु ने देखा और उस पर मोहित होगये । सत्यवती के पिता ने यह शर्त रखी कि यदि उसका दौहित्र राज-गद्दी को प्राप्त करे तो वह विवाह करने को तय्यार है । शांतनु तो किकर्तव्य-विमूढ होगये किन्तु जब गांगेय को यह ज्ञात हुआ तो वह आजन्म अविवाहित रहने एवं सत्यवती के पुत्र को ही राजा बनाने की प्रतिज्ञा करके उसे ले आये और उन्होंने अपने पिता की इच्छापूर्ति की ।

कौरव और पांडव

शांतनु के सत्यवती से दो पुत्र हुए—चित्रांगद और विचित्रवीर्य । एक दिन चित्रांगद आखेट के लिये गया । वन में गंधर्वपति से उसका संघर्ष होगया जिसमें वह मृत्यु को प्राप्त हुआ । विचित्रवीर्य की दो पत्नियाँ थीं—अंबा और अंबालिका । नौ वर्ष वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के पश्चात् भी उसके कोई संतति नहीं हुई तथा उसकी क्षयरोग से मृत्यु होगई ।

स्थिति विचित्र होगई । अंत में गांगेय के अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहने के कारण यही उपाय सोचा गया कि वंश-रक्षा के लिये नियोग द्वारा संतति की उत्पत्ति की जाय । द्रुपयन व्यास अपनी माता की आज्ञा से इस कार्य के लिये तैयार हुए । विचित्रवीर्य की पत्नियों से धृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ । धृतराष्ट्र जन्म से अन्वे थे और पांडु पीतवर्ण के थे । तीसरी बार जब प्रयत्न

किया गया तो विचित्रवीर्य की कोई भी पत्नी व्यास के पास नहीं गई। उन्होंने एक दासी को भेज दिया जिससे विदुर का जन्म हुआ।

धृतराष्ट्र के गांधारी से सौ पुत्र हुए। पांडु को एक मुनि ने, जब वह आखेट को गये हुए थे तब यह शाप दे दिया कि जब तुम विषय-भोग करोगे तो तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। पांडु के दो पत्नियां थीं-कौंती और माद्री; किन्तु शाप के कारण संतति की सम्भावना ही समाप्त होगई। ऐसी स्थिति में देव-आह्वान के उस मंत्र का जो कौंती को दुर्वासा ऋषि की कृपा से प्राप्त हुआ था, उपयोग किया गया। पांडु की अनुमति से कौंती ने क्रम से यम, पवन और इन्द्र का आह्वान किया और उसके युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन हुए। इसी प्रकार माद्री के अश्विनीकुमारों से नकुल और सहदेव हुए।

जब महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु तथा पांडवों के अन्य पुत्र भी मारे गये तो कृष्ण ने अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ में स्थित शिशु की रक्षा की। यह पुत्र परीक्षित हुआ। राज्यपद प्राप्त करने के कुछ वर्षों के पश्चात् एक दिन संयोगवश उन्होंने एक तपस्वी के गले में मरा हुआ सर्प डाल दिया। उस तपस्वी के पुत्र ने यह शाप दिया कि जिस व्यक्ति ने यह अनाचार किया है, उसे एक सप्ताह में तक्षक डस लेगा।

इन परीक्षित नरेश के पुत्र ही जनमेजय थे जो देवीभागवत और इसलिये देवीचरित्र के प्रधान श्रोता हैं। यह संपूर्ण विवरण प्रथम तथा द्वितीय स्कंध में आया है।

कृष्ण

कृष्ण नारायण अथवा विष्णु के अंशावतार थे। उनके जीवन की अनेक घटनाओं के सम्बन्ध में जनमेजय के हृदय में अनेकों शंकाएं थीं। कृष्ण अवतारी पुरुष तो थे ही, साथ ही उसके प्रपितामह अर्जुन के सखा और मार्गदर्शक थे। उनके जीवनवृत्त में जनमेजय की अभिरुचि का होना स्वाभाविक थी। चतुर्थ स्कंध में उनका जीवनवृत्त विस्तार से चित्रित किया गया है। अत्यन्त संक्षेप में उनके जीवनवृत्त निम्नलिखित हैं।

कृष्ण वसुदेव और देवकी के पुत्र थे। देवकी का भाई कंस मथुरा-नरेश था। विवाह सम्पन्न होने पर जब वसुदेव-देवकी की विदा हो रही थी तो

आकाश-वाणी हुई कि देवकी के गर्भ से उत्पन्न आठवां पुत्र कंस का हनन करेगा । रंग में भंग होगया । देवकी और वसुदेव के संकटपूर्ण जीवन का श्रीगणेश होगया । कंस ने देवकी को इस शर्त पर जीवित रहने दिया कि देवकी की प्रत्येक संतति को वसुदेव अविलंब उसे सौंप देंगे । आशंकावश उन्हें कारागार में भी डाल दिया गया ।

कृष्ण का जन्म मध्यरात्रि को हुआ । मायावश सभी द्वारपाल सो गये और कारागार के द्वार भी खुल गये । वसुदेव कृष्ण को लेकर मथुरा से गोकुल गये । वहां से पूर्वयोजना के अनुसार नन्द-यशोदा की नवजात पुत्री को ले आये । वसुदेव के वापिस आने पर ही द्वारपाल जागे । कंस को जब पुत्री के जन्म का समाचार मिला तो वह तत्काल आया और जब उसका बध करने को था तो वह उसके हाथ से छूटकर आकाश में विलीन होगई । उस समय यह आकाश-वाणी भी हुई कि तेरा मारने वाला उत्पन्न होगया ।

कंस ने विकल हो यह व्यवस्था की कि जितने भी उसके राज्य में नवजात शिशु हैं उनका संहार कर दिया जाय । इस अभियान में पूतना मारी गई । अंत में कृष्ण और उनके भाई बलदेव को कंस ने मथुरा बुलवाया । कृष्ण ने कंस का संहार करके उसका राज्य उसके पिता उग्रसैन को दे दिया ।

कृष्ण द्वारिका-पुरी चले गये । वहां उन्होंने राज्य स्थापित किया । उनके सोलह हजार रानियां थीं । ये वे अप्सराएं थीं जिन्हें अपनी पत्नी बनाने का नारायण ने वर दिया था ।

कृष्ण ने अपनी पत्नी जामवती द्वारा अनुनय-विनय करने पर उसके पुत्र होने की कामना से शिवजी की आराधना की । पार्वती ने उन्हें यह वर दिया कि केवल जामवती के ही नहीं, उनकी प्रत्येक पत्नी के दश-दश पुत्र होंगे । किन्तु साथ ही उनसे यह भी कहा कि अहंकार और परस्पर द्वेष के कारण वे सभी बड़े होने पर नष्ट हो जायेंगे, उस समय वे दुःखी न हों ।

कृष्ण का अवतार जिस उद्देश्य से हुआ था (अर्थात् अनाचारी उदंड राजाओं के विनाश के लिये) उसके पूर्ण होने पर तथा यादववंश के जिस विनाश का पूर्वसंकेत पार्वती ने उन्हें दिया था, उसका आभास होने पर कृष्ण ने अपना शरीर-त्याग दिया ।

वंश-वर्णन आदि की संगति

देवीचरित का प्रधान आधार देवीभागवत है जो एक महापुराण है। प्रत्येक पुराण के पांच अंग होते हैं—सर्ग, उपसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित। इन पांचों की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार है।

निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा ।
 योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता ॥ १६, स्कं० १
 तस्यास्तु सात्त्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा ।
 महालक्ष्मीसरस्वतीमहाकालीति ताः स्त्रियः ॥ २०, स्कं० १
 तासां तिसृणां शक्तीनां देहांगीकारलक्षणः ।
 सृष्ट्यर्थं च समाख्यातः सर्गः शास्त्रविशारदः ॥ २१, स्कं० १
 हरिव्रुह्णिणरुद्राणां समुत्पत्तिस्ततः स्मृता ।
 पालनोत्पत्तिनाशार्थं प्रतिसर्गः स्मृतो हि सः ॥ २२, स्कं० १
 सोमसूर्योद्भवानां च राज्ञां वंशप्रकीर्तनम् ।
 हिरण्यकशिप्वादीनां वंशास्ते परिकीर्तिताः ॥ २३, स्कं० १
 स्वायंभुवमुखानां च मनूनां परिवर्णनम् ।
 कालसंख्या तथा तेषां तत्तन्मन्वन्तराणि च ॥ २४, स्कं० १
 तेषां वंशानुकथनं वंशानुचरितं स्मृतम् ॥ २५, स्कं० १

देवीचरित के प्रथम स्कंध के छंद २३ से छंद २८ तक इन्हीं पांच अंगों की व्याख्या की गई है जो इस प्रकार है—

शक्ती निर्गुण त्रिगुणस्वरूपा, रुचिर देह धारिक सुचरूपा ॥ छं० २३, स्कं० १
 यह पुराण महि सर्ग उचारै, विदुष भेद बहुरूप विचारै ।
 विद्व्य करत उत्पत्ति विरंचन, पुन हरि करत ताहि कौ पालन ॥ छं० २४, स्कं० १
 शिव सृष्टी ताही संघारै, यह प्रतिसर्ग विचार उचारै ।
 वंस सोम अरु सूरजवंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन अंसी ॥ छं० २५, स्कं० १
 इहि वंसहु कौ कथा अनेकहु, इही वंस कहियत अवरेखहु ।
 मनवंतर स्वायंभुव मानहु, दृग आदक औरं अनमानहु ॥ छं० २६, स्कं० १
 इहि मनवंतर नाम उचारै, विवध भांत गन समय विचारै ।
 तिन मनुष्यन कौ वंस तहांही, किय बरनन इहि कथा फहांही ॥ छं० २७, स्कं० १
 इहि वंशानुचरित अनूपहु, लस पुराण इहि तत्पद्यु लेखहु ॥ छं० २८, स्कं० १

देवीचरित में भी देवी के चरित्र के अतिरिक्त उपरोक्त सभी का वर्णन देवीभागवत के अनुसार आया है जिसका उल्लेख मंदोप में ऊपर किया जा चुका है।

मूल प्रश्न

जनमेजय के सम्मुख एक बड़ी समस्या यह थी कि वह किसे आप्त पुरुष माने जिसके वाक्यों और चरित्रों को जीवन के लिये प्रमाण एवं प्रकाशस्तंभ माना जा सके। देवाधिदेवों के चरित्रों में भी जब छिद्र दिखाई देते हैं तो कौन ऐसा है जिसे आप्त माना जा सके। यदि लब्धज्ञान ऋषियों, मुनियों तथा देवाधिदेव इन्द्र, विष्णु आदि के जीवन में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं तो ऐसा क्यों है?

ये दोनों प्रश्न संग्रहित हैं। सृष्टि के चक्र में आने पर कोई भी देव हो, मनुष्य हो या तिर्यक् योनि में हो, ब्रह्मा हो, विष्णु हो, इन्द्र हो अथवा कोई ऋषि, मुनि हो—सब त्रिगुणात्मक प्रकृति के अधीन हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि सत्, रज अथवा तम सदैव ही मिश्रित रूप में उपलब्ध होते हैं। जिस गुण की प्रधानता होती है उसी के आधार पर सुविधा की दृष्टि से वर्गीकरण कर लिया जाता है। यही कारण है कि श्रेष्ठतम व्यक्तियों, देवताओं तथा देवाधिदेवों के चरित्र में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं।

सृष्टि का मूल ही कर्म है। इसके बंधन में पड़कर जन्म लेने पड़ते हैं और भोग भोगने पड़ते हैं। इन्द्र, कश्यप और विष्णु जब सत्पथ से गिरे तो उन्हें भी उसका फल भोगना पड़ा। कर्म का फल तो सभी को भोगना पड़ता है—छोटा हो अथवा बड़ा। इन्द्र ने जब अकारण ब्रह्माहत्या की तो वे निस्तेज हो गये। विष्णु ने जब बलि को छला तो वामन तो हुए ही, उन्हें द्वारपाल का काम भी करना पड़ा। कर्म की सार्वभौम प्रधानता के स्पष्टीकरण के लिये इन विभिन्न दृष्टान्तों का समावेश किया गया है।

त्रिगुणात्मक होने के कारण इस सृष्टि का आधार ही अहंकार है जिससे मोह उत्पन्न होता है और जब जो अहंकार के कारण इस त्रिगुणात्मक माया में ग्रसित हो जाता है, चाहे अल्प काल के लिये ही हो, वह सत्पथ से विचलित हो जाता है। महानतम व्यक्तियों और देवाधिदेवों के चरित्र के दुर्बल स्थलों का यही कारण है। जैसा ब्रह्माजी ने नारद से धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म, सृष्टि आदि के संबंध में प्रश्न करने पर उत्तर दिया है—

इहां नहीं रागीय की अधिकार।

विरागीय जानत जाहि धिचार ॥ छं० २२, स्कं० ३

वंश-वर्णन आदि की संगति

देवीचरित का प्रधान आधार देवीभागवत है जो एक महापुराण है। प्रत्येक पुराण के पांच अंग होते हैं—सर्ग, उपसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित। इन पांचों की व्याख्या देवीभागवत में इस प्रकार है।

निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा ।
 योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता ॥ १६, स्कं० १
 तस्यास्तु सात्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा ।
 महालक्ष्मीसरस्वतीमहाकालीति ताः स्त्रियः ॥ २०, स्कं० १
 तासां तिसृणां शक्तीनां देहांगीकारलक्षणः ।
 सृष्ट्यर्थं च समाख्यातः सर्गः शास्त्रविशारदः ॥ २१, स्कं० १
 हरिद्रुहिणरुद्राणां समुत्पत्तिस्ततः स्मृता ।
 पालनोत्पत्तिनाशार्थं प्रतिसर्गः स्मृतो हि सः ॥ २२, स्कं० १
 सोमसूर्योद्भवानां च राज्ञां वंशप्रकीर्तनम् ।
 हिरण्यकशिप्वादीनां वंशास्ते परिकीर्तिताः ॥ २३, स्कं० १
 स्वायंभुवमुखानां च मनूनां परिवर्णनम् ।
 कालसंख्या तथा तेषां तत्तन्मन्वंतराणि च ॥ २४, स्कं० १
 तेषां वंशानुकथनं वंशानुचरितं स्मृतम् ॥ २५, स्कं० १

देवीचरित के प्रथम स्कंध के छंद २३ से छंद २८ तक इन्हीं पांच अंगों की व्याख्या की गई है जो इस प्रकार है—

सक्ती निर्गुण त्रिगुणस्वरूपा, रुचिर देह धारिक सुचरूपा ॥ छं० २३, स्कं० १
 यह पुराण महि सर्ग उचारै, विदुष भेद बहुरूप विचारै ।
 विश्व करत उत्पत्ति विरंचन, पुन हरि करत ताहि की पालन ॥ छं० २४, स्कं० १
 शिव सृष्टी ताही संघारै, यह प्रतिसर्ग विचार उचारै ।
 बंस सोम अरु सूरजवंसी, अरु हरनाक्षहु वईतन अंसी ॥ छं० २५, स्कं० १
 इहि वंसहु की कथा अनेकहु, इही बंस कहियत अवरेखहु ।
 मनवंतर स्वायंभुव मानहु, दृग आदक और अनमानहु ॥ छं० २६, स्कं० १
 इहि मनवंतर नाम उचारै, विवध भांत गन समय विचारै ।
 तिन मनुष्यन की बंस तहांही, किय वरनन इहि कथा कहांही ॥ छं० २७, स्कं० १
 इहि वंशानुचरित अनूपहु, लक्ष पुराण इहि तत्यहु लेखहु ॥ छं० २८, स्कं० १

देवीचरित में भी देवी के चरित्र के अतिरिक्त उपरोक्त सभी का वर्णन देवीभागवत के अनुसार आया है जिसका उल्लेख मंदोप में ऊपर किया जा चुका है।

मूल प्रश्न

जनमेजय के सम्मुख एक बड़ी समस्या यह थी कि वह किसे आप्त पुरुष माने जिसके वाक्यों और चरित्रों को जीवन के लिये प्रमाण एवं प्रकाशस्तंभ माना जा सके। देवाधिदेवों के चरित्रों में भी जब छिद्र दिखाई देते हैं तो कौन ऐसा है जिसे आप्त माना जा सके। यदि लब्धज्ञान ऋषियों, मुनियों तथा देवाधिदेव इन्द्र, विष्णु आदि के जीवन में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं तो ऐसा क्यों है ?

ये दोनों प्रश्न संग्रथित हैं। सृष्टि के चक्र में आने पर कोई भी देव हो, मनुष्य हो या तिर्यक् योनि में हो, ब्रह्मा हो, विष्णु हो, इन्द्र हो अथवा कोई ऋषि, मुनि हो—सब त्रिगुणात्मक प्रकृति के अधीन हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि सत्, रज अथवा तम सदैव ही मिश्रित रूप में उपलब्ध होते हैं। जिस गुण की प्रधानता होती है उसी के आधार पर सुविधा की दृष्टि से वर्गीकरण कर लिया जाता है। यही कारण है कि श्रेष्ठतम व्यक्तियों, देवताओं तथा देवाधिदेवों के चरित्र में दुर्बल स्थल दिखाई देते हैं।

सृष्टि का मूल ही कर्म है। इसके बंधन में पड़कर जन्म लेने पड़ते हैं और भोग भोगने पड़ते हैं। इन्द्र, कश्यप और विष्णु जब सत्पथ से गिरे तो उन्हें भी उसका फल भोगना पड़ा। कर्म का फल तो सभी को भोगना पड़ता है—छोटा हो अथवा बड़ा। इन्द्र ने जब अकारण ब्रह्महत्या की तो वे निस्तेज हो गये। विष्णु ने जब बलि को छला तो वामन तो हुए ही, उन्हें द्वारपाल का काम भी करना पड़ा। कर्म की सार्वभौम प्रधानता के स्पष्टीकरण के लिये इन विभिन्न दृष्टान्तों का समावेश किया गया है।

त्रिगुणात्मक होने के कारण इस सृष्टि का आधार ही अहंकार है जिससे मोह उत्पन्न होता है और जब जो अहंकार के कारण इस त्रिगुणात्मक माया में ग्रसित हो जाता है, चाहे अल्प काल के लिये ही हो, वह सत्पथ से विचलित हो जाता है। महानतम व्यक्तियों और देवाधिदेवों के चरित्र के दुर्बल स्थलों का यही कारण है। जैसा ब्रह्माजी ने नारद से धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म, सृष्टि आदि के संबंध में प्रश्न करने पर उत्तर दिया है—

इहाँ नहीं रागीय की अधिकार।

विरागीय जानत जाहि धिचार ॥ छं० २२; स्कं० ३

इसलिये राग और द्वेषरहित स्थिति होने पर ही आप्त-वाक्य की प्रामाणिकता आती है और दुर्बलताओं से मुक्ति होती है। कवि की वाणी में ये भाव इस प्रकार व्यक्त हुए हैं :—

सब माया अधीन गनी सुर कौं, अरु मानवहू फिर आसुर कौं ।

ऋतपत्त करै ब्रह्मंड अजा, पुन पालन नासन आज प्रजा ॥ छं० १६ स्कं० ५.

जग में जड़ जंगम जीव जिते, रचना प्रकृती ऋत कर्म रते ।

प्रकृती अहंकार ऊपावत है, जड़ जंगम जीव जनावत है ॥ छं० १७ स्कं० ५.

विष और हरी हर देव बने, गुन तीनहु सौं उतकण्ठ गने ।

अहंकार विना त्रहु होत इहै, गुनहू कौ सुभाव सु कैसे गहै ॥ छं० १८ स्कं० ५

अहंकार तँ मोहहु होत उदै, विच बंधन कै कहि जीव बँधै ।

जग पालक सोय जनार्दनहू, गुन और अहंकार जुतँ गनहू ॥ छं० २२ स्कं० ५.

अहंकार की धार में विस्तु इही, ममता बस बूढत मोह मँही । छं० २३ स्कं० ५.

प्रश्न यह है कि सृष्टि का आधार ही जब अहंकार है और बहुधा अहंकार से जब मोह उत्पन्न होता है तो इससे मुक्ति कैसे संभव है? एक बात जो इस संबंध में विचारणीय है वह यह है कि गुणों के क्रम से अहंकार भी सात्विक, राजस और तामस होता है।

..... गुनहू कम सौं अहंकार गनी । छं० २४, स्कं० ५

स्पष्ट है कि शनैः शनैः तामस और राजस अहंकार का शमन करके सात्विक अहंकार को प्रबल बनाने में साधक को साधना है। किन्तु सात्विक अहंकार से भी तो मोह उत्पन्न हो सकता है जिसके लिये महामाया की आराधना अपेक्षित है।

आधुनिक शब्दावली का प्रयोग करें तो कहा जा सकता है कि व्यष्टि की सत्ता का आधार ही 'अहं' अथवा 'मैं' है। जब तक व्यष्टि की सत्ता है 'मैं' रहेगा। 'मैं' अहंकार का पर्यायवाची है। अहंकार शुभभावना-प्रेरित भी हो सकता है और अनुभवावना-प्रेरित भी, संकीर्ण भी हो सकता है और व्यापक भी, लोकहित-साधक भी हो सकता है और लोकहित-वाधक भी। लोकहित-साधक, व्यापक और शुभभावना-प्रेरित अहं को उत्तरोत्तर प्रबल बनाना तथा लोकहित-वाधक, संकीर्ण और अनुभवावना-प्रेरित अहं के शमन करने का अभ्यास करना ही साधना है। शुभ कार्य में भी अधिक वासना होने पर उस कार्य की सम्पत्तयान्ते अनुभवावना का अनुसरण करने की प्रवृत्ति हो जाती है—यही

सात्त्विक अहंकारजनित मोह है । विष्णुसंबंधी आख्यानों में जिन दुर्बल स्थलों का उल्लेख है वे इसी मोह के प्रतीक हैं ।

महामाया

माया, मैया, माता, अंबा—ये सभी शब्द पर्यायवाची प्रतीत होते हैं और इस दृष्टि से मायाशब्द की व्युत्पत्ति माँ, मैया अथवा माता से मानना युक्ति-संगत है । अधिक प्रचलित अर्थ में माया शब्द भ्रम, मिथ्या, 'जो नहीं है' का पर्याय है । इस प्रचलित अर्थ के मूल में वह द्वंद्व प्रतीत होता है जिसके आधार पर पुरातन काल में समाजों का गठन मातृ-प्रधान अथवा पितृ-प्रधान हुआ था । इस विचार के मूल में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष धारणाएँ हैं । प्रत्येक जीवधारी की उत्पत्ति माँ के गर्भ से होती है । प्रत्यक्ष रूप से किसी जीवधारी की माँ को ही जाना जा सकता है । जहाँ तक पिता का संबंध है वह अप्रत्यक्ष है और उसके पिता होने की प्रामाणिकता का आधार भी माँ ही है । वीर्य को प्रधानता देने वाले व्यक्ति माँ के गर्भ को भूमि के सदृश मान कर यह कह सकते हैं कि संतति को माँ की मानना एक भ्रम है और इसी कारण जो प्रत्यक्ष है वह भ्रम है, उत्पत्ति का वास्तविक कारण तो पुरुष का वीर्य है । संभवतः इसी कारण माया का अर्थ भ्रम, मिथ्या आदि समय के प्रवाह के साथ हो गया ।

इसी व्यष्टि-प्रधान विचार को जब समष्टिरूप प्राप्त हुआ तो जगत् की सृष्टि के विवेचन में प्रकृति और पुरुष का प्रादुर्भाव हुआ । मूल कारण की कल्पना में ब्रह्म और परा-प्रकृति की कल्पना हुई । निम्नलिखित पंक्तियाँ उस समन्वय की प्रतीक हैं जिसके बिना सृष्टि-संबंधी कोई भी विवेचन अपूर्ण था—

अविनाशी विभु अलख अज, आतम ब्रह्म अनूप ।

चेतन-सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यकरूप ॥ छं० २. स्कं० १

जगत्-जननी महामाया जगदंबा है, सब की माता है, शक्तिस्वरूपिणी है । उन्हीं की आराधना से संसार में सब कुछ संभव है ।

सत्, रज, तम की साम्य-स्थिति में सृष्टि का मूल कारण महामाया है एवं इन गुणों की विषमता में ही सृष्टि की उत्पत्ति निहित है । ब्रह्मा, विष्णु और महेश, सरस्वती, लक्ष्मी और भवानी-रूपिणी शक्तियों से युक्त होने पर ही शक्ति-सम्पन्न होते हैं ।

बीजमन्त्र

देवीचरित के विभिन्न आख्यानों में बीजमन्त्रों का उल्लेख हुआ है। उदाहरण के लिये तृतीय स्कंध में यह आख्यान आया है कि सत्यव्रत तपस्वी और मन्त्रा तो था, किन्तु था मूर्ख। उसके मुख से 'ऐ ऐ' इस सरस्वती के बीजमन्त्र के उच्चारित होते ही उसके मेधावी बनने का श्रीगणेश हो गया। इसी स्कंध में यह आख्यान भी आया है कि राजकुमार सुदर्शन शैशव-अवस्था में 'ह्रीं' अक्षर का जप करता रहा। अनुस्वाररहित 'ह्रीं' देवी का उत्तम बीजमन्त्र है इसके प्रभाव से उसके सभी कार्य सिद्ध हुए। देवी ने प्रत्यक्ष सहायता भी की इसी प्रकार और भी बीजमन्त्र हैं।

इन बीजमन्त्रों के संबंध में अधिक लिख सकना संभव नहीं है किन्तु इतना स्पष्ट है कि विशिष्ट ध्वनियां मस्तिष्क के शिराजाल में विभिन्न प्रकार के स्पंदन उत्पन्न करती हैं। यदि कोई शिशु मूढ़ हो, अस्थिर चित्त हो अथवा उसमें किसी अन्य प्रकार की मानसिक या बौद्धिक त्रुटि हो और यदि धभीष्ट प्रकार का स्पंदन शिराक्षेत्र में उत्पन्न किया जाय तो संभव है कि जिस प्रकार की उपलब्धियों का आख्यानों में उल्लेख है—उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु यह प्रयोग से संबंधित है। प्रयोग द्वारा ही किसी निश्चित परिणाम पर पहुंचा जा सकता है कि किस आयु में, कितने समय तक और किस प्रकार इन बीजमन्त्रों का जप करने पर कितनी सफलता प्राप्त हो सकती है।

फाव्यसंबंधी साधारण विवेचन

देवीचरित के रचयिता चारण थे, अतएव उनकी रचना में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप आजाना स्वाभाविक है। जहाँ-जहाँ युद्धों, मनोरम स्थानों तथा प्रेम-आदि का वर्णन आया है कवि की मुक्त लेखनी विचित्र चित्रण करने में सफल हुई है।

देवीचरित एक विशाल ग्रंथ है जिसमें बारह हजार से अधिक विभिन्न पद्यों का संग्रह है। देवी-भागवत के अनुक्रम को अपना कर इतनी बड़ी रचना संभव ही इस वर की मांगी है कि श्री कृष्णनिहारी उच्च कोटि के कवि थे।

देवीचरित को भाषा प्रज्ञा और विद्वान्मिश्रित है, जिनमें स्थानीय भाषा का भी कुछ भी अभाव नहीं है। उसमें दोहा, गोरटा, हरिगांतिका,

त्रोटक, नाराच, कवित्त, उधोर, मुक्तादाम, द्वै अखरी, भुजंगप्रयात, पद्धरी आदि विभिन्न प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है । विषयविवेचन के प्रसंग में जो उद्धरण दिये गये हैं उनसे काव्य-शैली एवं भाषा की कुछ झलक प्राप्त हो जायगी । यदि रस और भाषा-संबंधी सोदाहरण विशद विवेचन किया जाय तो भूमिका का कलेवर बहुत अधिक बढ़ जायगा । इस आशंका से हम इतना लिख कर ही संतोष कर लेते हैं ।

संपादन-संबंधी संकेत

संपादन करने में मूल प्रति के पाठ को अपनाया गया है । अर्थ की संगति बैठाने की दृष्टि से पदच्छेद करने में आवश्यक सावधानी बरती गई है । प्रति-लिपि में निम्नलिखित न्यूनतम संशोधन किये गये हैं—

१. अनुस्वार में आवश्यकतानुसार ^० का चिह्न लगा दिया गया है ।
२. कहीं कहीं गति-भंग दोष को दूर करने के लिये 'ई' की मात्रा के स्थान पर 'इ' की मात्रा करदी गई है ।
३. जहां मूल प्रति में अक्षर स्पष्ट नहीं हैं अथवा अक्षर मिटे हुए हैं वहां [] का चिह्न लगा दिया गया है ।
४. मूल प्रति से जहां पाठ-भेद किया गया है वहां पाद-टिप्पणी में इसका स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है ।
५. प्रत्येक पृष्ठ के अन्त में पाठकों की सुविधा के लिये कुछ पाद-टिप्पणियाँ दी गई हैं ।

इसी प्रसंग में देवीचरित की मूल प्रति के विषय में भी कुछ निवेदन करना आवश्यक है । यह मूल प्रति लेखक के वंशजों ने बड़ी अच्छी तरह से सुरक्षित करके रखी, परन्तु फिर भी प्रारंभ के कुछ पृष्ठ किसी कारणवश क्षत-विक्षत हो गये, अतः उनको उन्होंने पुनः लिखवाकर मूल प्रति में जोड़ दिया । प्रति में लिपिकार ने कुछ वर्तनी की अशुद्धियाँ अवश्य करदी हैं, परन्तु कुल मिलाकर प्रति शुद्ध और सुन्दर है । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ने इस प्रति को संगृहीत करके हिन्दी के लिये बहुत उपयोगी कार्य किया है, क्योंकि यही एक मात्र ग्रन्थ है जो कि देवी के चरित्र को आधार बनाकर लिखा गया है ।

परिचय

यह पुस्तक भारतीय संस्कृति के विकास और प्रसार के विषय में है। इसमें हम देखेंगे कि कैसे प्राचीन भारत में विभिन्न जातियों और भाषाओं के लोगों ने मिलकर एक समृद्ध संस्कृति का निर्माण किया। हम इस संस्कृति के अनेक पहलुओं को समझेंगे, जैसे कि कला, साहित्य, धर्म और शासन। हम देखेंगे कि यह संस्कृति कैसे अपने आसपास के लोगों को प्रभावित करती रही और कैसे यह दुनिया भर में फैली।

—प्रस्तावना



बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

प्रथम स्कंध

श्रीगणेशाय नमः । श्रीसरस्वती नमः । श्रीगुरुदेवाय नमः ।

अथ श्रीदेवीचरित ग्रंथ राजश्री जागीरदार बुद्धसिंहजी चारण सँडायच-
मोंजा मदौरा स्थित नरसिंहगढ़ सो० आ० कृत प्रारंभ—

बोहा— श्रीसरस्वति गणपति सुमिर, बरजत विघन^१ विशाद^२ ।
मङ्गल - हित बन्दत मुनी, यह परिपाटी आद^३ ॥१
अविनाशी विभु अलख अज, आतम- ब्रह्म अनूप ।
चेतन - सक्ती चेतना, संज्ञा द्वै यक^४ रूप ॥२
युगल नाम इक जानिये, मङ्गलरूप महान ।
भरम छाँड़ जिय परम भज, नित्त^५ लहहु निर्वान ॥३

कवित्त— करनी तें इन्द्र सुरवृन्द हू सुधारचौ स्वर्ग,
करनी तें शेष^६ सीस धार राखी धरनी ।
करनी-प्रभावहू से रंक ही तें राव होत,
करनी की कर्मकथा बेद-हू नें बरनी ।
द्रव्य^७ देह धार सोई करनी प्रगट भई,
चारन के वंश आय तारन-हू तरनी ।
ताहि की उचारं नाम बिघन विलाय जाय,
मङ्गल को करन अमङ्गल की हरनी ॥४

बोहा— इही समय बिच अवतरी, करनी नाम कहाहि ।
जङ्गलधर गङ्गाजु ही, जग कीरति है जाहि ॥५
देवल देवी दूसरी, प्रगटी देस पछाहि^८ ।
देवल करनी द्रव्य दुति^९, जग पुञ्जत^{१०} है जाहि ॥६

१ विघ्न । २ विषाद । ३ आदि । ४ एक । ५ नित्य । ६ शेष । ७ दिव्य ।
८ पश्चिम में । ९ द्युति । १० पूज्यत ।

हिगलाज अवतार हुय^१, सकव^२ भल्ल-गृह सोय ।
 इष्ट^३देव मानत यहै, सङ्गल - दायक सोय ॥७
 करनी बन्दन चरण कर, ध्यान सुदेवल धार ।
 आद्या देवी ईश्वरी, वरनत कथा विचार ॥८
 निमसारन^४ में आन निध, सूत कही समुभाय ।
 सोनकादह श्रुत सुनी, सबहि रिषन समुदाय ॥९
 भ.षा देवी-भागवत, पाँवन कथा प्रवाय ।
 कहंत सोई विस्तार कर, छन्द-बन्द चित चाय ॥१०

छन्द द्वैपायन श्रीव्यास विमल द्रुति, बिय^५ कर जोर चरन तिह बन्दति ।
 द्वैपयनी—प्रथम व्यास संख्या कहि पाछे, रुचिर कथा देवी चित राचे ॥११
 प्रथम व्यास ब्रह्मा परजापति^६, शुक्र व्यास अरु व्यास बृहस्पति ।
 सविता मृत^७ मघवा वासिष्ठहु^८, सुनहु सारसुत^९ व्यास सपस्ठहु ॥१२
 [ता पाछे]^{१०} भये व्यास ब्रधासा^{११}, ब्रबृख^{१२} व्यास किय काज तमाम्भ ।
 भरद्वाज अरु अंतरिक्ष भय, धर्म त्रयाण^{१३} व्यास धनंजय ॥१३
 मेधातिथ वृत्ती अत्री गोतम, उत्तम हरियातना^{१४} अति उत्तम ।
 देवी वाजश्रवा^{१५} किये वरनन, पुन सुन लेउ सोस पुस्पायन^{१६} ॥१४
 अनहि विन्दु^{१७} भार्गव अरु सक्ती, जात करन^{१८} किय पावन जगती ।
 सत्ताईस व्यास उत्तर सुन, द्रड मति भये व्यास द्वैपायन^{१९} ॥१५
 रात्तवती पारासर संभद, भये अवतार विष्णु तारन भव ।
 अस्टादसहु पुराँन उचारे, सुभग ज्ञान विज्ञान सुधारे ॥१६
 जिनके नाम अनुक्रम जानहु, मच्छे^{२०} मारकानडेय^{२१} प्रमानहु ।
 विमल भागवत कथा बखानी, सुधा समान श्रवन सुखदानी ॥१७
 अरु भवस्य^{२२} ब्रह्मंड अखंडत, मुदित ब्रह्म-बैवृत किय मंडत ।
 कृष्ण और वामन वाराहा, विष्णु वायु अग्नी निरवाहा ॥१८

१ हुमा । २ मुकवि । ३ इष्ट । ४ नैमिशारण्य । ५ बिय = दोनी । ि-विह्वान्तगत २८
 व्यासनाम । ६ प्रजापति । ७ मृत्यु । ८ वसिष्ठ । ९ सारस्वत । १० प्रति में नहीं है
 ११ विद्याना । १२ विद्वय । १३ प्रव्याण । १४ हर्षिता । १५ वेन वाजश्रवा
 १६ योग प्राप्तापण । १७ वृणविन्दु । १८ जातुकण । १९ कृष्ण द्वैपायन
 २० १७ में १६ तक प्रहारह पुराणों के नाम । २० मत्स्य । २१ मार्कण्डेय
 २२ मत्स्य ।

नारद पद्म लिङ्ग जिह नामा, गरुड पुराँन कथा गुणग्रामा ।
 क्रूरम^१ और सकन्धह^२ कीना, परम अरथ हित जान प्रवीना ॥१९
 †उपरानन बरनै जिन येते, सनतकुम्हार^३ नृसंघ^४ सहेते ।
 नारदीय शिव^५ जान निर्धाना, पुन दुरवासा^६ कपिल पुराँना ॥२०
 मानव और ओसनस^७ मानहु, बारुन काली साम्ब बखानहु ।
 नन्दीश्वर सूरज कों जानी, पारासर आदत्त^८ प्रमानौ ॥२१
 माहेश्वर भागवत महाना, पुन वासिष्ठ पुराँन प्रमाना ।
 सर्व पुराँन सर्ग प्रति - सर्गा, बंस कथा मनवंतर बरगा ॥२२
 चर वंसानु-चरित जुत^९ बरनत, पुन पंचहु लक्षण सोइ परनित ।
 सक्ती निरगुण त्रिगुण-स्वरूपा रुचिर देह धारिक सुच-रूपा ॥२३
 यह पुराँन महि^{१०} सर्ग उचारै, विदुष भेद बहु रीत विचारै ।
 विश्व करत उतपत्ति बिरचन, पुन हरि करत ताहि कौ पालन ॥२४
 शिव सृष्टी ताही संघारै, यह प्रति-सर्ग विचार उचारै ।
 बंस सौम अरु सूरज वंसी, अरु हरनाक्षहु दईतन^{११} अंसी ॥२५
 इति बंसहु की कथा अनेकहु, इही बंस कहियत अबरेखहु ।
 मनवंतर स्वायंभुव मानहु, इन आदक औरै अनमानहु ॥२६
 [इहि मन]^{१२} वंतर नाम उचारै, विवध भाँत गन समय विचारै ।
 तिन मनुअन कौ वंस तहां ही, किय बरनन [इहि क]^{१३} था कहां हीं ॥२७
 इहि वंसानुचरित^{१४} अनूपहु, लख पुरान इहि तत्व सुलेखहु ।
 स्याम^{१५} अथरबन^{१६} रघु^{१७} जजुसारा^{१८}, चार वेद खट आय विचारा ॥२८
 अक्षर अंक सिखावन शिक्षा, पुननिन^{१९} मिलवन कल्प प्रतक्षा ।
 सब्द अर्थ पहचान सु कीजै, कवि-मति सौ व्याकर्न^{२०} कहीजै ॥२९
 सब्द चाल जुत छन्द सकोई, जोतिस^{२१} तिथि नक्षत्र गृह जोई ।
 आवै बोलन जुक्ति अभंगा, इहि निरुक्त जानहु खट अंगा ॥३०
 वेद च्यार कौ सार विचारहु, उपनिसदन^{२२} सारहु ओंकारहु (ॐ) ।
 वेदव्यास के वचन विचारा, अमृत-पाँन ते सरस अपारा ॥३१

१ क्रूर । २ स्कन्ध । ३ सनतकुमार । ४ नारसिंघ । ५ शिव । ६ दुर्वासा ।
 ७ ओसन । ८ आदित्य । ९ जुत । †पद्य २० से २२ तक उपपुराण-नाम । १० में ।
 ११ दैत्य । १२-१३ प्रति में नहीं है । १४ चरित्र । १५ साम । १६ अथर्व । १७ ऋग् ।
 १८ यजु । १९ पृथ्वी । २० व्याकरण । २१ ज्योतिष । २२ उपनिषद् ।

विहृत कर्म सुनिवर विज्ञानी, धरम-धुरंधर परम धियानी ।
 अमित उदार विष्णु अवतारा, विविध रीत नय नीत विचारा ॥३२
 सरसति^१ तटनी तीर सुहावन, परम पुनीत महाथल पावन ।
 बैठेजह मुनिवर विज्ञानी, निज आत्मम जीवन निर्वाणी ॥३३
 सुभग सुहावनी पावनि सूरत, मनहु सांत रस माधुर सूरत ।
 जहां वरती इक बात जबै ही, ताकह देखी व्यास तबै ही ॥३४
 दुइ छिटिका पक्षी पति दारा, चांचन तनय चुगावत चारा ।
 चुम्बुन करत पुत्र मुख चितवत, रहत सदाँ सोइ प्रीत रीत रत ॥३५
 व्यास देख इहि चरित विहंगम, भये मोहबस छाये हृदय भ्रम ।
 घर मन ध्यान धीर्य तब घरहू, करत विचार हृदय कछु करहू ॥३६
 स्वारथ^२ विगत विहंगम सुत सों, माया मोह लख्यौ जिह मतिसों ।
 उपजी व्यास हिये इहां आई, विना पुत्र जग सुख^३ वसाई ॥३७
 पालन लालन सुत सुख प्रीती, पूरी लखी न रीत प्रतीती ।
 वेद पुरान अनेक बखाना, सार सबन कौ एक समाना ॥३८
 पावै गत^४ एकहु नहि प्राणी, पिंड-दान दीनै विन पानी ।
 जीवत सुख सुत कौ नहि जान्यौ, मृतक अदेसी^५ सोउ उर मान्यौ ॥३९
 विकल भई मति व्यास वशेशा^६, इहि उपजी मन क्षोभ अशेशा^७ ।
 व्यास विकल हुय तनय विचारा, नारद आये व्यास निहारा ॥४०
 पाँव अरघ^८ बंदन कर प्रीती, नारद व्यास सनातन नीती ।
 नारद कही व्यास सों^९ नीकी, जानि विविध घबराहट जी की^{१०} ॥४१
 किहि फारन मुनि विकल कहीजें, लाभ सकल मन वांछत^{११} लीजें ।
 व्यास कही नारद सुन वानी^{१२}, सुनिये मेरी बात सुज्ञानी ॥४२
 चिन्तातुर हम इही विचारा, सुत विन सकल सुन्य^{१३} संसारा ।
 कौन देव समरथ^{१४} इहि कहिये, लाभ पुत्र को तासैं लहिये ॥४३
 नारद कही व्यास सुन लीजें, कर विचार साधन पुन^{१५} कीजें ।
 यह दिन की इक कथा बखानत, सावधान होय सुनहु सोय श्रुत ॥४४

१ सरसती । २ स्वारथ । ३ सुख । ४ गति । ५ अशेषता = भासंका ।
 ६ विवेक । ७ अशेष । ८ अर्घ । ९ प्रति में ताहि । १० हृदय की । ११ वांछित ।
 १२ वानी । १३ सुन्य । १४ समर्थ । १५ पुनि ।

छन्द विष जुक्त कही नारद विचार, सुन लेहु व्यास इहि समाचार ।
 पदरी विष^१ गये विष्णु के लोक बीच, मधुसूदन बंठे आँख मीच ॥४५
 विधि-पूर्वक पूंछी ध्यान बात, तुम नाभ^२ कमल तें प्रगट तात ।
 हम रचत जगत कों सहित हेत, दृढ़ ज्ञान सोइ तुम सदाँ देत ॥४६
 आप तें बड़ो को देव आन^३, घर बैठे ताकी हृदय ध्यान ।
 बंकुठ^४ कही सुनिये विरंच, राखहुँ नहि हिय में व्याज^५ रंच^६ ॥४७
 राजसी सक्ति ले तुम रचंत, सातुकि हम पालन अनुसरत ।
 मृत्युंजय सक्ती सृष्ट माहि, तामसी पाय संघरत^७ ताहि ॥४८
 बिन सक्ति^८ तुमहु हम शिव विशेष^९, लोकेश काज पावाहि न लेस^{१०} ।
 सोवत हम सेज्या शेष^{११} सोय, हिय विगत ज्ञान तें विवस होय ॥४९
 कबहुँ पुन^{१२} सूकर घरत काय^{१३}, कहुँ कच्छ मच्छ वामन कहाय ।
 तिरियक योनी लहि हमहु तात, बध करत दनुज सोइ जग विख्यात ॥५०
 इन्दरा सयन सुख छाँड ऐम^{१४} नित भ्रमत रहत क्यों सहित नेम^{१५} ।
 मनिद्वीप त्रिया इक प्रथम मित्त^{१६}, विष्णु हम हूँ गये सहित बित्त ॥५१
 भगवती - कृपा कौ पाय भाव, पुन भये पुज्य^{१७} ताही पसाव ।
 मधु कयटभ दानव सोइ मदंध, काटचौ हम ताकी तबहि कंध ॥५२
 बस माया कीन्है तिही बेर, जब दुष्टन कों हम किये जेर ।
 तुम द्रगन^{१८} लखी सब सुरन तथ्य^{१९}, सुर्वी धनु कटचौ हमहि मथ्य ॥५३
 सिर तुष्टा जोरचौ जबहि सोय, हम उठे हयानन-रूप होय ।
 सुनिये अज नाहिन हम सुतंत्र^{२०}, परियाय पिछानहु^{२१} पारतंत्र ॥५४
 विधि सन इमि भाखी विष्णु बात, महिमा इहि जानहु आद मात^{२२} ।
 आराधन देवी करहु आप, जिग होंम तथा तप मंत्र जाप ॥५५
 नारद सुनाय आख्यान नीत, पुन व्यास हृदय आनी प्रतीत ।
 इहि सुनी वादरायन^{२३} उदंत^{२४}, सिर परबत^{२५} पहुचे महाँ संत ॥५६
 सोनकादिकन सों कही सूत, उर बाढ्यो विस्मय अत अभूत ।
 दामोदर सुनियत आद देव, भल रीत पिछानहु जास भेव^{२६} ॥५७

१ विषि—ब्रह्मा । २ नाभि । ३ अग्र्य । ४ बंकुठ में रहने वाले विष्णु । ५ कपट ।
 ६ किञ्चित् । ७ संहार करते हैं । ८ शक्ति । ९ विशेष । १० लेश । ११ शेष । १२ पुनि ।
 १३ काया-शरीर । १४ इमि—इस प्रकार । १५ नियम । १६ मित्र । १७ पुज्य ।
 १८ दृगों से । १९ तथ्य । २० स्वतंत्र । २१ पहिचानों । २२ आविमाता । २३ वृषासन
 व्यास । २४ वृत्तांत । २५ पर्वत । २६ भेद ।

सिर कट्यौ प्रतंचा^१ तिहि सधीर, पुन देवन कॅ उर भई पीर ।
 सब कहह कथा समुभाय सोय, हमहू विसमय तें विगत होय ॥५८
 कहि तबहि सूत दे सुनहु कान, श्रोता सब होवउ सावधान ।
 बीती कोउ वासर प्रथम वात, संग्राम कियो हरि दनुज साथ ॥५९
 अनुबच्छर^२ बीते अयुत येक^३, बपु श्रमत भये तातें विसेक^४ ।
 अति भये प्रमीला लीन अंग, सुभ सांत रूप तम श्रम प्रसंग ॥६०
 थिर चित्त देख सांमान थान^५, सुखपूर्वक कीनै समाधान ।
 मन मुदित पद्य आसन मुरार, धनुकोटी बैठे कंठ-धार ॥६१
 सब देव रुद्र विध सुर समाज, कछु सप्ततंतु कौ करन काज ।
 बयकुंठ^६ गये पूंछन विचार, मध^७ ग्रह मिले नाहिन मुरार ॥६२
 सुर ध्यान-जोग तें लख्यौ साथ, निर्भय होय पोंडे रसानाथ ।
 जह^८ पहुचे आतुर सबहि जाय, निद्रागत देखे सुर-निकाय ॥६३
 इहि अवसर कछु कीन्हौ उपोह, मन विभ्रम छायाँ अधिक मोह ।
 पुरहूत^९ कही तब मन उपंग, भव^{१०} करहु जतन ह्वै नीद भंग ॥ ६४
 दीनी इहि उत्तरु महादेव, भल सोचहु हिय में धर्मभेव^{११} ।
 पुन निद्रा मेंटन महापाप, कछु हम तौ नहि बोलहै कदाप^{१२} ॥६५
 सुन सक^{१३} कियो विध^{१४} सां सबाल, कछु और जतन^{१५} कीजे कपाल^{१६} ।
 बिध सोचे हिय तें जुत बिबेक, कीनी उपनिद्रा प्रगट केक ॥६६
 कहि देवन कौ तुम करहु काज, मुरवी^{१७} धनु काटहु महाराज ।
 ज्याघात-सब्द ह्वै है जरूर, दामोदर^{१८} निद्रा^{१९} होय दूर ॥६७
 बन्नी^{२०} तब बोली हिय^{२१} बिचार, यसौ न करहु हम अनाचार ।
 सुप्तक जगाय कर कथा छेद, भरतार नार^{२२} डारें सुभेद ॥६८
 पितु मात पुत्र कौ हथन^{२३} प्यार, येते सब कहियत अनाचार ।
 कह लाभ हमहि इहि करहि काम, सुनकें हिय बोले लोक स्याम^{२४} ॥६९
 भुव^{२५} होय पतित सोइ लेहु भक्ष, पावसा आद जानहु प्रतक्ष ।
 जिग^{२६} करन काज देवन जरूर, द्रुत करहु हमारी दुख्य^{२७} दूर ॥७०

१ प्रतंचा । २ अनुयत्तर । ३ एक । ४ विशेष । ५ स्थान । ६ बकुंठ । ७ मध्य ।
 ८ जहाँ । ९ इंद्र । १० महादेव । ११ भेद । १२ कदापि । १३ इन्द्र । १४ विधि-
 ब्रह्मा । १५ यत्न । १६ कपालु । १७ मोर्वा । १८ विष्णु । १९ निद्रा । २० बन्नी = दीमक ।
 २१ हृदय । २२ पति-पत्नी । २३ हत करना-नष्ट करना । २४ स्वामी ।
 २५ भूमि । २६ यज्ञ । २७ दुःख ।

बलमीक^१ पितामह लहि विचार, धनु-अग्रभाग कौ चित्त धार ।
 सिज्या दिये भक्षन लारा साथ, निहसंक^२ होव को रमानाथ ॥७१
 घन प्रलय जेम^३ हुय प्रबल घोर, भइ दूर प्रतंचा प्रबल घोर ।
 छित होय चतुर्दस चहू छोभ^४, उलकान पात बाढी असोभ ॥७२
 चल चंड प्रभंजन दिसा चार, डगमगत भूमि गिर पर दरार ।
 खलभलिय^५ सात सामुद्र खीर, भइ अंधकार जग अधिक भीर ॥७३
 मकराकृत कुंडल सहित मथ्य, उड गयी सुरन पायी न अथ्य^६ ।
 उतमंग^७ हीन हरि देख अंग, भयभीय भये सब चित्त भंग ॥७४
 कर रोदन हाहा रव करंत, सब रमानाथ के परम संत ।
 अच्छेद अधोक्षज तनि अभेद, भवतव्य कछू पायी न भेद ॥७५
 हरि कौ धनु तूठ्यौ पतन्चहूत, बिधि रुद्र आदि जान्यौ न व्यूत^८ ।
 कहाँ जाँय करें कीसौ पुकारे, निरबल^९ हुय बैठे निराधार ॥७६
 लख सके पलादन^{१०} असुर लाग, इहि देवन मिल कीनौ अभाग^{११} ।
 कासीन कऊ भुनकीन फाँक, आपकी अँगुरिया फुटी^{१२} श्राँख ॥७७
 सुर येक^{१३} विष्णु तें ह्वै सनाथ, इक^{१४} नाथ बिना सब ही अनाथ ।
 बिलपत सब मिल-मिल देव वृंद, द्रग^{१५} देख कह्यौ गरु^{१६} छाड़ द्वंद ॥७८
 दहु जानहु सम पौरुष दईब^{१७}, जु^{१८} जतन करहु थिर^{१९} राख जीव ।
 सुन चित्र^{२०} सिखंजक कही श्रान, मघवान^{२१} दियो उत्तर महान ॥७९
 निरसंसय पौरुष उर निहार, ध्रक^{२२} क्रिया प्रतज्ञा कहत धार ।
 हरि करन^{२३} त्रान तें भये हीन, द्रग लखत देव सब भये दीन ॥८०
 बिध युक्त बात बोलत विचार, है ईस अधीनहि हौनहार ।
 बोले बिरंच बाचा बहोर, माहेश विडार्यौ सीस मोर ॥८१
 दुर^{२४} बंठ्यौ पंकज मध्य देस^{२५}, श्रीचिन्ह सहित सोही सुरेस ।
 अपुरारि बुद्धि बिपरीत तौर, मेहन बिन बैठे सुरन सौर^{२६} ॥८२
 सब उमानाथ जानहु सुभाय, पुन लौन-उद्ध में परचौ पाय ।
 बन आबे जैसी तज विराम, कीजिये समय अनुसार काम ॥८३

१ दीमक । २ निःशंक । ३ जिमि । ४ क्षोभ । ५ खलबली । ६ अर्थ, आदि । ७ उत्तम-
 भंग—मस्तक । ८ व्योत-उपाय । ९ निबल । १० दैत्य । ११ अभाग्य—भाग्यहीनता ।
 १२ फूट गई । १३, १४ एक । १५ द्रग । १६ गरुड, वृहस्पति । १७ देव । १८ मिलकर ।
 १९ स्थिर । २० चित्त । २१ इन्द्र । २२ पिक्कार । २३ कर्ण । २४ छिपकर ।
 २५ मानसरोवर प्रदेश में । २६ शौर ।

जग में शंकर धर^१ जिते जीव, सुख दुख्य^२ उभय होवत सदीव^३ ।
 वेदन साँ^४ बोले पुन विरंच, इहि अमर काज जानहु उदंच^५ ॥८४
 जग जननी माया रूप-जोत^६, इहि सबहि जक्त^७ तात उदोत ।
 सुर^८ करहु ध्यान साधन समाध, बहु वेद करहु तुम अर्थवाद ॥८५
 प्रत छन्द धार तहाँ छन्द पेख, वर्तना^९ करन लागे विशेष ।

सोरठा—

हाथ जोड़[कर]ध्यान(त्र),आद सक्ति निरंजनी ।

आता करहु सहाय, सर्वाहि देव आधीन तव ॥८७

छन्दवद्ध तारास

नमो नमो निरंजनी सनस्त त्रिस्व स्वामनी,

वेद स्तोत्र

अदभू दभू जीव जे जनेसु जक्त जाँमनी ।

समष्टि व्यष्टि रूप तूँ अद्रष्टि की अभावनी,

रचे मलष्ट मष्ट के प्रविष्ट द्रष्ट पावनी ॥८८

त्वमेव भूत भूमका प्रमेय प्राँनदा^{१०} तुहो,क्षिमाँ^{११} उमाँ रमाँ क्षती शशक्ति सक्ति^{१२} तूँ सही ।समाध ध्यान साधना स्थिती^{१३} तुहीं अतिस्थरी,प्रथग्विधी प्रकाम^{१४} पुञ्ज^{१५} मातु तूँ महेस्वरी^{१६} ॥८९

अलिष्ट में अलिष्ट तूँ बलिष्ट में बलिष्टता,

सपष्ट^{१७} में सपष्ट तूँ अधिष्ट में अधिष्टता ।

अकार औ उकार पै मकार अर्ध मात्रका,

विरंच विष्णु बाँमदेव अद्वती^{१८} अमात्रका ॥९०

सपक्ष दक्ष तूँ सदा प्रतक्ष पिंड पोषनी,

अलक्ष लक्ष आक्रती समक्ष ताप सोखनी ।

हृदय अखंड हेय ज्ञान गृ(गे)य सृ(श्रे)य सिद्धदा ।

अजेय अप्रमेय तूँ विधेय मंत्र वृद्धिदा ॥९१

अनेक रूप एक तूँ अनेक नाम आवली,

अनेक देव शैव में भृमें मनो भृमावली ।

१ शरीरधारी, पृथ्वी पर विचरने वाले । २ दुःख । ३ सर्वव । ४ से । ५ उदंत ।
 ६ ज्योति । ७ जगत् । ८ सुर । ९ वर्तन । १० प्राणदा । ११ क्षमा । १२ सशक्ति ।
 १३ स्थिति । १४ प्रकाश । १५ पुञ्ज । १६ महेस्वरी । १७ स्पष्ट । १८ अद्वितीय ।

प्रकाश ज्ञान आसपास बनास कौं बिनासनी,
 अगाध तूँ अबाध तूँ प्रमाद कौं प्रनासनी ॥६२
 स्वच्छन्द मात तूँ सदाँ अनन्द कौं उपावनी^१,
 बिनोद के बिकास सौं सदाँ तुहीं सुहावनी ।
 असाध^२ आध^३ व्याध कौं समाध हेत साधनी ।
 अभेद तूँ अछेद तूँ अखेद तूँ अराधनी ॥६३॥
 घटाह के मठाह के कटाह इंड केकरी ।
 प्रवाह पंच तत्व में सुभाव होय संचरी ।
 अनेक भेक^४ आकृती अनेक जीव ऐरकं ।
 रमाय तूँ रही रमा घुमाय घेर घेर कं ॥६४॥
 अचिन्त चित्त आपने रचंत केक^५ रूप कौं,
 अनंत संत उद्धरे सुचिंत कं स्वरूप कौं ।
 पवित्रहू चरित्र कौं विचित्रहू विचार कं,
 गहैन ज्ञान गर्भता^६ पहुँ^७ न वार-पार कं ॥६५॥
 त्वमेव पाय तर्पणा समर्पणा सुधार कौं,
 करे न कर्पणा^८ कहूं विसर्पणा बिकार कौं ।
 सुसप्त^९ जागृ^{१०} स्वप्न वस्थ^{११} सक्त रूप सावरी,
 अलोक लोक एकसी विभाँत^{१२} हू बिभावरी ॥६६॥
 बनाय चार खान वानि पंच प्राँन पालनी,
 दसिंद्री देवहू दृधा करे सदाँ क्रपालनी ।
 बिजोग^{१३} औ शँजोग^{१४} बीच भोग जोग भ्यासनी,
 सुधर्म कर्म सत्य परम^{१५} प्राँन को प्रकाशनी ॥६७॥
 सदस्क^{१६} जोवना सदाँ सदस्क देह सुन्दरी,
 रचाय स्टष्ट में रमें उपाय कं अन्दरी ।
 अनंग मेखला अलो अली अनग आतुरी,
 अनेक शैव देवियाँ चित्त प्रशाद चातुरी ॥६८॥

१ उत्पन्न करने वाली । २ असाध्य । ३ आधि । ४ वेध । ५ अनेक ।
 ६ गंभीरता । ७ प्राप्त करे । ८ कृपणता । ९ सुसुप्ति । १० जागृति ।
 ११ अवस्था । १२ अनेक भाँति या प्रकार से । १३ वियोग । १४ संयोग ।
 १५ परम । १६ सदा ।

श्रुती पुराँन संमृती उदार नीत उद्धरी,
 मृजाद सौं अजादि लौं प्रजाद रीत पद्धरी ।
 अभाव भाव ईक्षणा^१ प्रदाह पुन्य पद्म सौं,
 वंदे अनेक वन्ध में उपाय जीव आप सौं ॥६६
 त्वमेव मात पुष्टि तुष्टि मङ्गला मनोहरी,
 सुधा श्रधा^२ दया सुसांति उगृ(प्र) कांति ईश्वरी ।
 सती सती धृती महानं प्रकृती उरा पुरा,
 सुभा अनूप सोहनी विमोहनी विसंभरा ॥१००
 विलंभ वित्त विस्व की वितीत दंभ विक्रिया,
 पसाव^३ पाव पायकें धरंन ध्यान धि क्रिया ।
 करं प्रपूर्णा कांसना ललाम कञ्ज लोचनी,
 प्रकास पुञ्ज तेज की मलीन अंध मोचनी ॥१०६
 जनायह जनाय ना गनाय के त्रह गुनी,
 अनाद अंबका अछेह त्रंबका तिलोचनी ।
 सहाय काज शंकरै सुख सर्व संजुरं,
 वरात^४ हीन देख विष्णु भोत चित्त में भरे ॥१०८
 लखं तऊ लखी न जाय अशु कस्त^५ आदकों,
 चरन^६ की सरन^७ चाह वीसरै^८ विवाद कौं ।
 सुधा समुद्र वोच साल नित्त तूं निवासिनी,
 विलास वेश विस्तरै हुलास चार हासिनी ॥१०३

शेहा—

वेद करी असतुत^९ तवै, आराधन पुर आँन ।
 श्रीपति करन सहाय कौं, विमल भई नभ-वाँन^{१०} ॥१०४
 इहि स्तोत्र मम उच्चरहि, पुन करहे कोउ पाट^{११} ।
 महानं ताप संकट मिटहि, उतपाटन उच्छाट^{१२} ॥१०५
 आद-देव है विष्णु यह, पालत सृस्टी पोख ।
 कटवौं सीत कोउ कारना, देवन नहि तुम दोख ॥१०६

१ इक्षणा । २ भदा । ३ कृपा । ४ मस्तक । ५ क्विचित् । ६ चरण ।
 ७ सरण । ८ वितरना = मूनना । ९ श्रुति । १० प्राक्तानशाली । ११ पाठ ३
 १२ उच्छाटन ।

रमाँ देख सुख रहस^१ सौ, हरी हँसे कहूँ हेर ।
 प्रकृत^२ तामसी पाय पुन, बिकल भई तिहि बेर ॥१०७
 अच्युत सिर धरतें अलग, हौनहार बस होय ।
 कहै इन्दरा^३ कौ कटचौ, आप प्रतापहि सोय ॥१०८
 बासर कछु बीतें जब, त्वहै अर्थ^४ तुम्हार ।
 विवुध सुनहु इहि हेत से, भये हयग्रीव भुवार^५ ॥१०९
 दरसन हम ताको दियो, वह माग्यो वर एहु^६ ।
 हम सद्रस^७ मोकह हने, देवी वाचा देहु ॥११०
 तथा अस्तुता कह तहाँ, गयो कही सोइ गेह ।
 काल पाय विग्रह करहि, सुरन नाहि सदेह ॥१११
 त्वष्टा^८ हय सिर ताहितें, जोरहु विष्णु जगाय ।
 सुफल होय कारज सकल, नीत रीत इहि न्याय ॥११२
 कही गिरा तँसी कियो, समुझ सब सुर साथ ।
 जागे श्रीपति नौद जिम, सबही करन सनाथ ॥११३
 जब मारचौ हरि जाय कें, हयग्रीवा हयग्रीव ।
 देवी के वरदान तें, सुरन सिसायस^९ दीव^{१०} ॥११४
 सौनकाद सुन सूत सौं, सबही परम सयान ।
 मधु कैटभ के मरन कौ, अरु^{११} पूछ्यौ आख्यान ॥११५
 सौनकाद साँ^{१२} सूत कहि, सुनहु चित्त दै सौय ।
 कथा विविध विध कहत हूँ, जुक्त उक्त हिय जोय^{१३} ॥११६
 पाँच ज्ञान इन्द्री प्रगट, उत्तम दाय अनूप^{१४} ।
 सुने श्रवन लोचन सुलभ, रुचर लहै सोइ रूप ॥११७
 श्रवनहु तीन प्रकार सौं, सातुक^{१५} राजस सोय ।
 तामस जानहु तीसरो, कह कोविद सब कोय ॥११८
 वेद सास्त्र आपत^{१६} बचन, इहि सातुकि अभिराम ।
 राजस साहित^{१७} श्रीरमन, ता हित कथा तामस ॥११९

१ रहस्य । २ प्रकृति । ३ लक्ष्मी = शक्ति । ४ अर्थ = कार्य । ५ सुमि पर ।
 ६ यह । ७ सहस्र । ८ एक देवता । ९ साँस । १० दी । ११ प्रीति । १२ साँस =
 से । १३ देखकर । १४ अनुपम । १५ सात्विक । १६ आप्त । १७ साहित्य ।

तामस जुद्ध कथा तिती. परदोखाद^१ प्रकास ।
 उत्तम मध्यम^२ अधम ये, अनुक्रम इतिहास ॥१२०
 साहित तीन प्रकार सौं, सुक्रिया उत्तम संग ।
 गनका मध्यम अधम गन, सदाँ परक्रिया^३ संग ॥१२१
 तामस पुन जानहु त्रधा, उत्तम उत्तम आय ।
 मधम^४ सुनहु वैरी [सौं]^५ अधम कह मुनिवरन निकाम^६ ॥१२२
 सोक्षदाय उत्तम मधम, स्वर्गदाय फल संग ।
 भोगदाय मध्यम^७ भनत, समुभहु त्रधा प्रसंग ॥१२३
 इहि पुराँन इतिहास कौ, उत्तम गनहु उदत^८ ।
 सौनकाद सुनिये समुग^९, सबहि सयाने संत ॥१२४

एव इहि सूत कहन लागे उदंत, सौनकादिकहु तुम सुनहु संत ।
 द्वे शधरी- वीती सोइ जानहु प्रथम वात, त्रय लोक भये जलमगन तात ॥१२५
 जगदीस जनार्दन समय जान, नागाधिप^{१०} संस्तर^{११} थिर निदाँन ।
 निद्रांगत पोंडे रमाँनाथ, तहा गिरुचौ पिजूलाँ^{१२} श्रवन ताथ ॥१२६
 मधु कैटभ दानव अत मदंध, सो भये प्रगट ताही समंध^{१३} ।
 वीते दिन केतक जल निहार, पुन लह्यौ नाहि कछु वार-पार ॥१२७
 सोचे उर अंतर दनुज सोय, कहतैं हम आये हमहि कोय^{१४} ।
 उतपत्त^{१५} भूम का कौन आहि, जब नीय कहाँ लग पार जाहि ॥१२८
 उर उपज्यौ त्रिस्मय जवहि आय, विल्लभ^{१६} भयो कछु सक्ति भाय ।
 विद्वत^{१७} तव चमको दुति^{१८} विसैस, द्रढ रूप ग्रहन किये हृदय देस ॥१२९
 तिहि सव्व मंत्र कौ लह्यौ तंत^{१९}, उरमेंय प्रीत वाढी अतंत^{२०} ।
 जब लागे ताकी करन जाप, तन तैं जब नासन भयो ताप^{२१} ॥१३०
 विरवास बढ्यौ [तव तव]^{२२} विसैस, दरसी इक मूरत दिव्य देस ।
 पासाँकुत पुस्तक घरैं पाँन^{२३}, सरस्वती-रूप विद्या सुजाँन ॥१३१

१ परदोष घाति । २ मध्यम । ३ पर-स्त्री । ४ सूत प्रति में अधम है । ५ सू. प्र. में
 संत अधिक्त होने से प्रति भंग होती है । ६ सू. प्र. निकाम = धर्म का युद्ध । ७ सू. प्र.
 मध्यम । ८ शक्ति । ९ समीप । १० शेष । ११ शय्या । १२ मल । १३ संबंध =
 प्रसंग । १४ शीत । १५ उत्पत्ति । १६ विद्यास । १७ विद्युत् । १८ द्युति ।
 १९ शक्ति । २० शय्यत । २१ कुत्त । २२ सूत प्रति में मध्यम है । २३ पाणि = हाथ ।

हिरदै विचार भये निराहार, धर ध्यान प्रतज्ञा रहे धार ।
 बच्छर^१ सहस्र तप करत बीत, आकाशबाँन^२ तब भइ अर्भोत ॥१३२
 बंचत^३ वर मागहु उभय बीर, पुन जो कछु तुम्हरे^४ हृदय पीर^५ ।
 वरदान देहु मोह जक्त^६ बीच, मुख मागे जब हीं होय मीच^७ ॥१३३
 कहि तथा-अस्तु देवी क्रपाल, तहां दनुज प्रबल भये तातकाल ।
 मधु कैटभ बिचरत जल मभार, चितवन प्रसिद्ध लख बदन च्यार^८ ॥१३४
 थित पदमांसन थित पद्मथान, गुन सांत रूप उर उदित ज्ञान ।
 बैठे निहार दनु कही बात, तुम लायक आसन नहिन^९ तात ॥१३५
 हम भुजा खुजावत इहीं हेत, संगर उठ कीजे बल सहंत ।
 समता न लरन की परम संत, तज देहु पद्म-आसन तुरंत ॥१३६
 बिध सोचे उर अंतर विसेक, ऊदम^{१०} उपाय नहिं फुरचौ एक ।
 हरि करी सलाघा^{११} विध सहेत, अत पाय प्रमोला सोइ अचेत ॥१३७
 जागे न रमांपति हृदय जाँन, बस भये जोग निद्रा विधान ।
 जाचंन्या^{१२} कीनी जोगमाय, मारिये दनुज कौं जुद्ध माय ॥१३८
 अथवां कि जगांवहु सुरन-ईस, सोइ करहे ताकौ दूर सीस ।
 विध विकल देख निद्रा बिहाय, उपदेस बिरंचहु दियीं आय ॥१३९
 जब जाचे हरि साँ करन जोर, ठिक^{१३} आय दरस दिय तिहीं ठौर ।
 बिनये बिध हरि साँ कही बात, मधु कैटभ दानव अकसमात^{१४} ॥१४०
 आयकै इहाँ हम कही ऐहु^{१५}, दुति धाम ग्रेह छुटकाय देहु ।
 संगर नत कीजे उभय सथ्य^{१६}, मिल के दल काटहि च्यार^{१७} सथ्य^{१८} ॥१४१
 हम बिकल भये इहि देख हाल, कीजिये स्याय जल-सय^{१९} क्रपाल ।
 विध बात करन लागी न बार, यिक संगर की उर बीच धार ॥१४२
 दनु^{२०} उभय आय पहुचे दुरंत, हाकार पुकारत हंत-हंत ।
 बिध साँ सोइ बोले उभय बीर, और की सरन ताकत अधीर ॥१४३
 हन प्रथम तोहि स्याहिक^{२१} हकार, उभय के हाथ लैहूँ उखार ।
 चतुरानन दूसर भुजा च्यार, बिप्रोत^{२२} रीत देख्यौ विचार ॥१४४

१ बत्सर । २ बाणी । ३ वाञ्छित । ४ तुम्हारे । ५ पीड़ा । ६ जगत् ।
 ७ मृत्यु । ८ ब्रह्मा । ९ नहीं है । १० उद्यम । ११ मंत्रणा । १२ याचना ।
 १३ ठीक । १४ अकस्मात् । १५ यह । १६ साथ । १७ चार । १८ मस्तक ।
 १९ जलाशय अथवा जलशायी विष्णु । २० दनुज । २१ सहायक । २२ विपरीत ।

नहिं डरत तुम्हारे साँग देख, द्रग लख तुमहीं हम बन्ध्यों द्वेस ।

बिध विष्णु उभय हम उभय बीर, सभ करहु जुद्ध आतुर सधीर ॥१४५

विष्णु तब बोले उर विचार, तुम उभय एक हमहू तयार ।

सिर पद्म जहाँ अंतर समंद, मधु आय भिरचौ दानव मदध ॥१४६

जाजुल्य^२ लग्यौ तहां हौन जुद्ध, बनमाली मधु बाढ्यौ विरुद्ध ।

इक थकत येक भिर परत आय, सरसावत पौरुस ज्यू सिवाय^३ ॥१४७

देवी बिध देखत धाव दाव, भये अतुल जुद्ध दारुन भ्रमाव ।

घन प्रलय जेभ रच होत घोर, हलचलत सिधु बाढत हिलोर ॥१४८

अकुलाय भिरत पौरुस उदग^४, उठी जल अंतर मनहु अग^५ ।

सलभलत जनु बहु आयु खुट्ट, अत मच्छ कच्छ खावत उलट्ट ॥१४९

जल उछल अद्ध आकास जात, अधगिरत मनहु वरखत अघात ।

उठ चले नु बुद-बुद अनंत, गर-गरी मनहु दधि छुटी गंथ^६ ॥१५०

मधुसूदन मधु जूटत महान, मिल खीर^७ उदध मड्यौ मथान ।

बिध लखत हिये बाढचौ बिरोग, जल-प्रलय बीच हुव प्रलय जोग^८ ॥१५१

परवच्छर बीते सहस पंच, अत भिरत करत आहव उदंच ।

दनु उभय एक हरि समर दाव, उर विजय हेत उपज्यौ अभाव ॥१५२

इहि कारन कछु कीनौ उपोह^९, मन विसमय छायौ अधिक मोह ।

मधु कैटभ बोले लख मुरार, हम सौनि युद्ध तुम गये हार ॥१५३

दासोसिम^{१०} कहु हम छाँड़ देत, खंभ कौ होर नत^{११} लरहु खेत ।

हरि कह्यौ नाहि कछु जीत हार, बिधयुक्त हृदय में लहि विचार ॥१५४

जुग तुमहि येक हम करत जुद्ध, इहि ते हम पौरुस गनहु उद्ध^{१२} ।

बहु काल भये संगर बहाल, करहैं बिलंब कछु अल्प काल ॥१५५

संगर^{१३} फिर करहैं उभय साथ, वर जानहु विसवा बीस वात ।

विलभ^{१४} पाय तब उभय बीर, स्वस्ताय रहे दानव सधीर ॥१५६

उर ध्यान जोग हरि लखी ऐह, इहि देवी वर तें दनुज ऐह ।

देवी की अस्तुत देव-देव, भल रीत करन लागे सभेव^{१५} ॥१५७

१ द्वेष । २ जाज्वल्य । ३ सवाया । ४ मू. प्र. उदग । ५ अग्नि । ६ गति ।
७ खीर । ८ अवसर । ९ विचार । १० दासोसिम = दास हूँ । ११ नहीं तो ।
१२ प्रथिक । १३ संग्राम । १४ विश्राम । १५ नाव सहित, अनेक प्रकार से ।

तब दियौ दरस देवी तुरंत, कल बिथत^१ देख तब रमां-कंथ^२ ।
 विष्णु सौं आद माया विचार, सुख पाय कहे इहि समांचार ॥१५८
 आजाँन भुजा जुध करहु ऊठ, अंगना^३ बनहु मैं दुति अनूठ ।
 बरदान लेहु तुम कहहु बात, मति हरन करहु मैं अकसमात ॥१५९
 मुख तें जब लैहै माग मीच, बिन सीस करहु तुम जुद्ध बीच ।
 उपदेस दियौ देवी उदत, किय काज ज्युही^४ पुन रमांकंत ॥१६०
 कछु काल कियौ हरि जुध करु, पुन देखत देवी प्रेमपूर ।
 मति हरन लखे दानव मदंध, किल मृतु^५ आय बैठी सुकंध ॥१६१
 मधु कैटभ सौं बोले मुरार, सब भांत जुद्ध लायक मुरार ।
 जुध बीच करे हम कौऊ जेर, बलवान लखे तुम इहीं वेर ॥१६२
 मागहु बर देहैं तुम महान, करहै हम तातें जुद्ध कान ।
 सुन श्रवन दनुज संगर सधीर, बाचा तब बोले महावीर ॥१६३
 हम कहा वनायक गनै हेर, जुध बीच किये हम तुमहि जेर ।
 चितबहु हमहीं कब होव चाह, आश्रव^६ जुत बोले हरि उछाह ॥१६४
 इहि सुनत रमांपति कहि उचार, मम हाथन सें तुम सहहु मार ।
 वांनी सुन विष्णु उभय बीर, अकुलाय चित्त बोले अधीर ॥१६५
 नहि बंचक जानै प्रथम न्याय, हम छले गये कहा कहैं हाय ।
 बर मागत तुमसां उभय बीर, निभ देस होय तहां विगत नीर ॥१६६
 तुम करहु निरूदन हमहि तात, बरदान देहु हमसौं बिख्यात ।
 जीव तैं अधिक हम बचन जान, प्रन तजैं ताहि इहि जाहु प्राण ॥१६७
 इहि सुदर्शन कियौ याद, अत चंड तेज मंडत अगाध ।
 बिस्तारी जंघा हरि बिसाल, मस्तक जल मानहु सयल^७ माल ॥१६८
 निरजल^८ थल आवहु इहि निहार, करतन सिर करहु जुत करार ।
 सुन ऐह^९ दनुज जोजन^{१०} सहंस^{११}, पुन देव दिद्ध^{१२} कीती प्रसंस ॥१६९
 जब द्वै सहस्र हरि जंघ देस, बिस्तार करी दुइ गुन बिसेस ।
 मायक^{१३} हरि जानै दनु महान, उतमंग^{१४} जंघ पर द्यौ आन ॥१७०

१ व्यथित । २ कंत । ३ अग्रणी । ४ उसी प्रकार । ५ मृत्यु । ६ प्रतिज्ञा, विश्वास ।
 ७ शैल । ८ निर्जल । ९ यह । १० योजन । ११ सहस्र । १२ बोध ।
 १३ मायिक = मायावी । १४ उत्तम अंग = मस्तक ।

मधु कैंडभ भ्राता अत मदंध, किप्र कल्पन ताहो समय कंध ।
 भय पूर अघुधी^१ मेद भाग, थित भई उरवरा थित अथाग ॥१७१
 मेदनी नाम तातें महंत, उच्चार करहि जग आद अंत ।
 मृत्यका^२ भक्ष सम भक्ष मेद, नय रीत बिदुख^३ मानत निसेद^४ ॥१७२
 सुकदेव जन्म आख्यान सोय, सब आद अंत जानहु सकोय ।
 परवत शुमेर^५ कै जाय पास, हित पुत्र बिचारहु जुत हुलास ॥१७३
 उर ध्यान धरचौ देवी अखड, मुनि एकाक्षर जप मंत्र मंड ।
 हट^६ जोग करत भये निराहार, बीते सत बक्षर तप बिचार ॥१७४
 सिर जटाजूट पावक समान, भये तेज-पुञ्ज तप उदित भान^७ ।
 अकुलाय सिंभु सौं कही इंद्र, मन पुरीन लैहै इहि मुनिद्र ॥१७५
 कर इंद्र सबोधन शिव क्रमाल, हित व्यास देवकौ जान हाल ।
 पुन आये शङ्कर व्यास पास, वरदान दियो व्यासहि बिसास^८ ॥१-६
 तुम पुत्र हेत इहि करत जाप, सोइ पैहौ पुन पूरन^९ प्रताप ।
 वरदान पाय शिव चरन-वन्द, मन मुदित धाम आये मुनिद ॥१७७
 बीते कैऊ वासर धाम व्यास, अग्नी हित अरनी किय अभ्यास ।
 सोचे उर अंतर तँह सभाग, अरुनी तें परगट होत आग ॥१७८
 इम^{१०} होय पुत्र उतपत्त^{११} अंग, पुन त्रिया हमारै कहा^{१२} प्रसंग ।
 इहि उपजत ईक्षा^{१३} मुनि अधीस, अपछरा घृताची सुरन ईस ॥१७९
 अत रूप मनोहर अंग अंग, ऊरध नव जोवन^{१४} जुत अनंग ।
 दुइपायन^{१५} देवी ताहि द्रष्ट, बपु काम-कला वाढी बलिष्ट ॥१८०
 संगम नहि वाच्यौ मुनि सधीर, पुन सहन करी तन समर पीर ।
 वन सुकी घृताची निकट वास, नभ तें थल आई तिहि निवास ॥१८१
 रोदयो न रुदयो मुनिराज-रेत, निज गिरचौ लोई अरनी निकेत ।
 सुकदेव पुत्र व्यासहि समान, गुन प्रगट रूप उर उदित ज्ञान ॥१८२
 गंगाजल मज्जन सुद्ध गात, जिहि वेद रीत किय कर्मजात ।
 वृंदारक जय जय करत वांन, गंधूव(घर्व)मिल किन्नर मधुर गांन ॥१८३

१ घंभुनि = समुद्र । २ मिट्टी । ३ बिदुष्य = विद्वान् । ४ निषेध । ५ सुमेरु । ६ हठ ।
 ७ भानु = सूर्य । ८ विश्वास । ९ पूर्ण । १० इमि । ११ उत्पन्न । १२ कहा ।
 १३ इक्ष्वा । १४ जीवन । १५ दुइपायन ।

अत बोलत जन बिध बिध असीस, सुभ सुमन-वृष्ट ह्वे डिभ^१ सीस ।
 आनक बढ़ ऐहट की अबाज, बर बांनक केउ बादित्र बाज ॥१८४
 विस्वाबसु नारद रिसी बृन्द, आवत सब पावत अनन्द ।
 विद्याधर तुम्सर-गन बशेस^२, आये व्यासुर्म^३ सुख असेस ॥१८५
 सुत सौ घृताची सुकी संध^४, सुकदेव नाम दिय इहि समंध ।
 नभ सौ कृष्णाजन^५ गिरे निच, अरु दंड कमंडल चिब^६ उदंच ॥१८६
 सुकदेव अरंनज . व्यास अंस, परकास^६ तपोबल हिय प्रशंस ।
 लन पीन भयौ तातें तुरंत, सुभ रूप मनोहर परम संत ॥१८७
 जग्योपवीत किय कर्म-जुक्त, भगवती चरन जुत प्रेम भक्त ।
 गुरु चित्र सिखंडज^७ किय गंभीर, धर बृह्यचरिय^८ बृत महांधीर ॥१८८
 पढ़ वेद धरम अरु नीत-पंथ, गत हृदय अविद्या छुटी ग्रं(गुं)थ ।
 दक्षना गुरु कां भेंट दीन, पुन पिता ग्रेह आये प्रवीन ॥१८९
 पद बंद व्यास कौं कर प्रनाम, जुत प्रेम नेम सिर सूघ जाँम ।
 बिद्याँ पढ़वें की सुनत बात, आनन्द पाय नाहिन अघात ॥१९०
 सुत पिता बढ़त नित-नित सनेह, दुति^९ अमित पुत्र-मुख उदित देह ।
 पितु कहत एक दिन सहित प्यार, निगम की रीत जुत करहु नार ॥१९१
 संततहि बढ़हि तातें सदीव^{१०}, जब पित्रन मुक्तिय होय जीव ।
 ऊरन^{१२} जब रन तें होय ऐम, पेंहें गत हमहू सहित प्रेम ॥१९२
 तिहि हेत कियो हम उग्र ताप, सुत अबस मोहि मेटहु संताप ।
 सुत कथा व्यास दीनी सुनाय, जिह रीत तपस्या करी जाय ॥१९३
 अनुकंपा देबी बरहु ईस, रचना वृतंत नारद रिषीस ।
 सुख पाय सुनी सुकदेव आन, गुन रीत प्रकास्यौ हृदय जाँन ॥१९४
 संसार सुख्य^{१३} जेतक सपष्ट, दुख गर्बत^{१४} देखहु हृदय द्रष्ट ।
 परतंत तिया कौं कंठ पास^{१५}, रहि तौ नहिं फांसत तजहु आस ॥१९५
 हतकरिया वैरी बन्द होय, सोइ छूट जात जानत^{१६} सकोय ।
 प्रिय पुत्र त्रिया की बिखम^{१७} पास, नहिं बंध सुगम होवत विनास ॥१९६

१ शिशु । २ विशेष । ३ व्यास-आश्रम । ४ संयोग । ५ छवि=सुन्दर । ६ प्रकाश ।
 ७ कृष्णाजिन=काले मृग की चर्म । ८ बृहस्पति । ९ अह्यचर्य । १० दुति=कांति,शोभा
 ११ सदैव । १२ उन्नत । १३ सुख । १४ गर्भित=युक्त । १५ पास=फांसी ।
 १६ मू. प्र. में जानत है । १७ विषम=कठोर ।

हृष आर अजोनी^१ रूप होय, जौनीं^२ किम भजहै भाव जोय ।
 कंड पिस्नोतर^३ पिनु पुत्र कीन, पर पुत्र न मानी ज्ञान पीन^४ ॥१६७
 पुन व्यास पुत्र सौं लाय प्रेम, नइ रीत कहत हम सहित नैम ।
 वैदोवत विहृत^५ कर्महि विधान, मन तनय वीच हिय विगत मान ॥१६८
 नित वित्त करत उतपत्त न्याय, सुर पित्र आस पुज्जत सुभाय ।
 ऐनि ग्रहस्थ सय नाहि और, करहु तिय धारन वय किशौर ॥१६९
 संतत हित साधहु सुत सयान जुत जुवा अवस्था धर्म जान ।
 तप कीनहु कौसरु मुनिह तेम, पर वधे मैनका पास प्रेम ॥२००
 कन्या सकुन्तला प्रगट कीन, खट अर्ध अर्ध तप भयो खीन^६ ।
 भये पारासर मुनि वृत भंग, पुन छले दास कन्या प्रशंग ॥२०१
 निज कन्या जोवन दुति निहार, चित विकल भये सोइ वदनच्यार^७ ।
 सुत कर्णी हमारी सुनहु श्रान, गृह-आश्रम साधहु परम ज्ञान ॥२०२
 पुत्र जुवा अवस्था करत त्याज^८, मम तजहु ग्रहस्थाश्रम समाज ।
 हिप लोचन तैं हम कहत हेर, बोलैं कहा तातैं वेर-वेर ॥२०३
 प्रत पटहु भागवत सुन पुराँन, नव धर्म रीत लैहो सुजाँन ।
 पुन पढ़े भागवत सुक^९ पुनीत, चाह्यो न प्रेह आश्रमहु चीत^{१०} ॥२०४
 जब व्यास कही मुक मुनी जान, मेरी निदेस इहि लेहु मान ।
 सुत जावहु मियला-पुर सकाज, राजा विदेह तहा करत राज ॥२०५
 जीवन-मुक्ती सोड सतहु जाय, पैही प्रतीत जाके पसाय^{११} ।
 सिप जुग व्यास सौं सुनी बात, पुन ऊठ चाले^{१२} ताही प्रभात ॥२०६
 देगत कोट अंतर पंच देस, वन पर्वत आदिक पुर विसेस ।
 खीन में लगी मुनि मुकहि वेर, सोइ दीय बर्ष लंबत सुमेर ॥२०७
 एक बर्ष हिन-गिर चले उद, पुर मियला पहुँचे मुक प्रबुद्ध ।
 गजचार पास आसर सहैत, नृप व्यास दधी उपवन निकेत ॥२०८
 मय प्रोहित मंगी सिधे मंग, आये मुनि-दर्शन-हित उमंग ।
 विश्राम अवगत वै सुमाद, पुन दग्धन कोन परस^{१३} पाय ॥२०९

१. अजोनी । २. जौनीं । ३. पिस्नोतर । ४. पीन = पीन । ५. विहृत । ६. खीन
 ७. चार । ८. त्याज । ९. मुक । १०. चीत । ११. पसाय । १२. चाले । १३. परस ।

बजुला^१ इक तंबा तिहीं बेर कीनी सुभेंट सुकदेव केर ।
 कुसलात पूँछ अरु विनय कोन, धिन^२ भाग^३ पधारे गिन अधीन ॥२१०
 घर धीरज कहिये सुमत धाम, कछु लायक जो मम होय काम ।
 बोले मुनि तासौं बिमल बाँन, मम पिता व्यास जानत महान ॥२११
 हित व्याह चहत कारन हमेस, उर उपज्यौ मेरे कछु अंदेश^४ ।
 भेज्यौ सोइ मेंटन काच भूप, सुध पाय लख्यौ तेरौ स्वरूप ॥२१२
 तुम जीवन मुक्ती^५ सुनै तात, विप्रीत^६ यहै नृप समुझ बात ।
 हम आगम जानहु इही हेत, निरससय^७ कीजे मति-निकेत ॥२१३
 समुझाव कहहु नृप तुमहु सोय, हिय संसय सौं हम विगत होय ।
 तप तीरथ वृत अरु जिज्ञ^८ तात, स्वाध्याय आन बिज्ञान साथ ॥२१४
 हित साधन मुक्ती जुवत होय, समुझाय कहहु नृप हमहु सोय ।
 जब बोले राजा जनक जान, सुनियं मुनि ह्वै कैं सावधान ॥२१५
 मोक्ष के मार्ग आश्रतहु^९ मित्त, चाहियें विप्र कां इहै चित्त ।
 जग्योपवीत कर प्रथम जाय, पुन विद्या गुरु के शेष पाय ॥२१६
 अध्ययन^{१०} वेद करकें उधार, दक्षना समर्पन कर सुधार ।
 निज प्रेह आय कुल सुद्ध नार, व्याहिये वेद-रीतहु बिचार ॥२१७
 वृत्ति संतोखहु^{११} ग्रह साथ बित्त, थिर चित्त करै अगनोत्र^{१२} थित्र^{१३} ।
 सत बचन प्रकाशत रहै सुद्ध, अविरोध होय अघ - रहित उद्ध ॥२१८
 उत्तपत्त पुत्र पोत्राद^{१४} आद. खी सौंप अष्ट धारे समाध ।
 अथवा कि लहै संगहु उदास, बन बीच करै सोइ जाय वास ॥२१९
 जहाँ काम क्रोध रिपु लोभ जीत, मद मक्षर^{१५} आदक सुनहु मीत ।
 इंद्रि सुख साँतहु होय ऐम, निज होय बिरागी सहित नेम ॥२२०
 सन्यास धरम थित^{१६} होय सत्त, अभलाख^{१७} काँम कौ तजै अत्त ।
 सन्यास ग्रहन अघकार^{१८} सोय, जानहु विरक्त कौ निगम जोय ॥२२२
 सुभ निस्सेकादिक^{१९} संसकार, चालीस अष्ट जानहु विचार ।
 जिहि प्रथम ग्रहस्थहु हेत जान, चालीस प्रमुख लोजै पिछान ॥२२३

१ पात्र । २ धन्य । ३ भाग्य । ४ अंदेशा = आशंका । ५ मुक्त । ६ विपरीत ।
 ७ निःसंसय । ८ यज्ञ । ९ आश्रित । १० मूल प्रति में अध्ययन है । ११ संतोष ।
 १२ अग्निहोत्र । १३ स्थित होकर । १४ पोत्रादि । १५ मत्सर = ईर्ष्या । १६ स्थित ।
 १७ अभिलाषा । १८ अधिकार । १९ निषेकादिक ।

लस दमहु आद है अष्ट सोय, सोइ मुक्ति निमत^१ जानहु सकोय ।
 आश्रम सौं आश्रम गवन अग्र, सुख-पूर्वक जानहु मुनि समग्र ॥२२४
 दोले विदेह प्रति सुक विचार, दीजै हम उत्तर मति-अधार ।
 बैराग ज्ञान विज्ञान वास, नित करत हियै जाकै निवास ॥२२५
 ग्रह वास गहै किन विपन गौन, समुझाय करावहु नृपति श्रौन ।
 दोले विचार कर तहाँ विदेह, उत्तर हम ताकौ कहत एह ॥२२६
 वपु इन्द्रिय ग्रामहु है बलिष्ठ, करत है विक्रिया^२ अमित कष्ट ।
 आपन्न^३ जती कै तन अनेक, विघ्न कौं करत मधृत^४ विवेक ॥२२७
 सुख संयन पेख समियानुसार^५, पुन पुत्र नार सौं उपज प्यार ।
 वृत भंग करै हुय जती बेष, वृत भंग भये हानी विशेष ॥२२८
 भय पाय करै जौलों न भोग, रुच भोग बढ़ावत जाल रोग ।
 वासना नास कै हित विचार, नित क्रम क्रम सौं त्यागै निहार ॥२२९
 सयनीय^६ उद्ध सुख चहै सोय, हिय पतित हौन सौं दुखत हाय ।
 अधसाई^७ नाहिन भीत येक, बिध जुक्त विचारहु लहि विवेक ॥२३०
 सन्यास तजै जो समाधान, है उभय लोक की अभय हान ।
 हीनांगी तरवर साख हेर, फल सनै-सनै सुख लहै फेर ॥२३१
 आतुर हुव^८ पंखी लहि उडान, थक वैठत देखहु थान^९-थान ।
 क्रम-क्रम सौं जो कोउ करै काज, सुभ दायक जाँनुहु सुख समाज ॥२३२
 मनकौं अजेय जाँनुहु महान, आस्रम क्रम-क्रम तै आस्रमान ।
 मद काम जीत कै जीत मोह, दुख दुंद^{१०} छाँडकै छाँड द्रोह ॥२३३
 चित सांत सुमत गत हृदय चाह, हान में सोक लाभ न उछाह^{११} ।
 क्रम वेद-विहत चितत करत, उतपत्त न्याय-पथ अनुसरत ॥२३४
 संतुष्ट रहै लहि समाधान, सोइ आत्मवान जानहु सुज्ञान ।
 आस्रम ग्रह गेही सोइ अनूप, सर्वथा मुक्त जाँनुहु स्वरूप ॥२३५
 तज काम क्रोध गहि नीत-तत्व, महि प्रजा आद पालन महत्व ।
 निरपक्ष^{१२} होय कै करत न्याय, सखुपा दंड लायक सुभाय ॥२३६

१ निर्मित । २ विपरीत क्रिया । ३ अपरिपक्व । ४ मध्य में । ५ समयानुसार ।
 ६ भोग । ७ अर्थात्समाधी = अपरिपक्व । ८ होकर । ९ स्थान । १० दृष्ट ।
 ११ उछाह । १२ निष्पक्ष ।

विभवाद्^१राज की नहिं बाध, उरमी^२ न करत कोउ हिय उपाध ।
 बित बिलसत इद्री करत भोग, अनुसार समय जोगहु अजोग ॥२३७
 अविचरत जहाँ तहाँ छाँड़ आस, फाँसै न चित्त काँ^३ बंध फाँस ।
 कछु ग्रहन कियो नहिं तज्यौ कोय, हम ग्रही न त्यागी रहे होय ॥२३८
 जीवन-मुक्ती तउ^४ कहत जक्त बितराज^५ गहै मानत विरक्त ।
 हमरौ जिह विध साँ लिख्यौ हाल, कीजियै ग्रहन मुनिवर कपाल ॥२३९
 संसार पदारथ द्रस्य^६ सोय, किय करै अद्रस्य^७ हि बस्य^८ कोय ।
 संसार अचेतन द्रव्य साथ, इति जीव सचेतन बंध आथ^९ ॥२४०
 नभ मुष्टी जाँनहु ग्रहन न्याव, आतमा बंध मानहु अभाव ।
 नित मुक्त निरंजन निराकार, पुन आद अंत नहिं बार-पार ॥२४१
 जड़ पंच तत्त^{१०} बाँधे न जाहि, अनबद्ध अखंडत गनहु आहि ।
 परकास करत दीपक पतंग, ढक सकै पदारथ कबन ढंग ॥२४२
 सुख दुखः प्रांन सूक्ष्म^{११} सथूल^{१२}, मन तरबर साखा सोइ मूल ।
 मन निर्मल निर्मल सकल मान, ह्वै उदय आय सुकृत महान ॥२४३
 मन जौलौ निर्मल नहीं मित्त, विध जुक्त फल तीरथ न व्रत्त ।
 जीव कौ मोक्ष कारन न जाँन, इन्द्रीगन देहन लखहु आँन ॥२४४
 ब्रह्म अरु जीव में भेद बुद्धि, यह लखहु अविद्या बल असिद्धि ।
 ब्रह्म अरु जीव जाँनै अभेद, विद्या सो गावत च्यार वेद ॥२४५
 जानबै जोग^{१३} इहिं उभय जाँन, छाया रु धूप सुख दुख समान ।
 जौलौ न अविद्या लखी जाय, विद्याजुत आदर नहिं बसाय ॥२४६
 पथ वेद सदाँ ऊतम प्रयाँन^{१४}, कीजै नहिं तातै कबहु काँन^{१५} ।
 बोले तहाँ सुकमुनि हिय विचार, तुम कहत वेद-पथ तत्वसार ॥२४७
 तामै बहु हिंसा गनहु तात, बाढ़ै अधर्म हिंसा बसात ।
 जाँनहु अधर्म कौ बढै जोर, मुक्त कौ लहै नही^{१६} सुनहु मोर ॥२४८
 विध जुक्त दयौ ऊतर निदेह इहि, वेद-रीत सिद्धांत एह ।
 हिंस्या^{१७} हू अहिंस्या जग्य हेत, उपजत नहिं जातै कछु अहेत ॥२४९

१ वैभव आदि । २ राग द्वेष आदि । ३ को । ४ तो भी । ५ वीतराग ।
 ६ दृश्य । ७ अदृश्य । ८ वश्य = वश में । ९ अथ = प्रारम्भ में । १० तत्व ।
 ११ सूक्ष्म । १२ स्थूल । १३ जानने योग्य । १४ प्रमाण । १५ उपेक्षा । १६ नहीं ।
 १७ हिंसा ।

जव मुक मुनि बोले समय जान, संदेह हमारी सुनहु लान ।
 अविद्या विदेह जो सुनत श्राव, वंसानुरीत परिश्राय-बाद^१ ॥२५०
 त्रपु तार्थक निर्मत गुन विलेस, अथवा क नाम-मात्र ही असेस ।
 श्रवलोक राज-व्रंभव अनेक, आपनी परायी गिनत एक ॥२५१
 कटु मिष्ट राज-काजहु अकाज, तन सुख दुख श्रादिक ग्रहन त्याज ।
 सब ह्य गय वित सेना सँभार, निज रूपवती ग्रह वसत नार ॥२५२
 हिय जुद्ध पराजय हित अहेत, लो रकै व्रीह बट प्रजा-लेत ।
 इहि राज-काज कारन उपाध, सुख होय ग्रहन कैसै समाध ॥२५३
 चिन्तातुर जीनों रहै चित्त, तव लाँ^२ नहि पावै तुरिय तत्त ।
 भल जीवनमुक्ती लह्यो भेव, इहि वात असंभव त्रप अजेव^३ ॥२५४
 मुनि बाँनी सुनकै अथ महान, संका की कीनी समाधान ।
 तुमरे पितु हमरे गुरु तात, व्यास की कही सोइ सत्य वात ॥२५५
 बन गवन करहु पितु छाँड वास, घर माँडहु पत्रन^४ तथां घास ।
 बल अग्नि चाह हँहै जरूर, पुन ऊपल^५ ईंधन समय पूर ॥२५६
 तद-बन्नी छाया घूप तेज, पुन ग्रहन करन अथवा परेज ।
 सुग सुगः देह कँ सदां संग, पुन तजे न मन ताही प्रसंग ॥२५७
 बन में ह^६ संग तग सुग निवास, सुभ असुभ रूप बाँनी विलास ।
 आशर कंद फल फूल श्राव, इह लाँवन^७ की चित्त में उपाध ॥२५८
 गुन अथगुन पांचन केड गरिष्ठ, मन माँवत ताकी कटुक मिष्ट ।
 सुगयमं देठ शरनी मगान, जल-पात्र कमंडल श्राव जान ॥२५९
 चिता है तुमरं इहाँ चित्त, विध इहाँ हमारे राज वित्त ।
 संयतन दिक्कामष्ट ग्रहन संग, श्राये इहाँ जात्रा मुनि असंग ॥२६०
 तम गत प्रजा पावन हमेस, दुविधा नहीं राबत हृदय देस ।
 माही दुविधा ले रूप उदास, विच रह्यो श्रेह किन बिपन^८ बाग ॥२६१
 मन दुविधा संयत परजौ जीय, कारण पद धारन सदां कृीव ।
 विहु मार मार परदार पूत, श्राये न संग जँहै अहूत^९ ॥२६२

१. वंश-परिवार । २. लाँ-लान । ३. अजेव-नहीं । ४. पत्रों-पत्रों । ५. तौपर के उरयो ।
 ६. ह-हो । ७. लाँवन-लान । ८. बिपन-दुख । ९. अहूत-अहूत ।

हम चिंता त्यागी देख हाल, करिये नहि चिंता मुनि क्रपाल ।
चिंता अभाव तै इही चित्त, निर्बान लहै पद जीब नित्त ॥२६२
सब सुनी व्यास बितु कही स्रान, उपदेश जनक नृप दयौ श्रान ।
गबने सुक-मुनहू पिता ग्रेह, सुक लह्यौ निवारन उर सँदेह^२ ॥२६३
पितु हुकम जनक उपदेस पाय, 'पीवरी' पित्र कन्या पसाय ।
विध वेद कियौ सोउ मुन बिवाह पुन संतति कौ बाढ्यौ प्रबाह ॥२६४
रत जोग जुक्त अरु भक्त रीत, पावन पद ध्यावन परम प्रीत ।
दुति क्रस्न गौर प्रभ भूर देव, स्तुती पुत्र च्यार जानहुँ सभेव ॥२६५
कीर्ति इक कन्या सुभग काय, सुक संतति जानहु ईह सुभाय ।
कन्या का बिबांही भ्राज केर, अंगज^१ अनूह के संग एर ॥२६६
बर बीर प्रतापी राजवंस, पुन ब्रह्मदत्त सुत तिह प्रसंस ।
राजा प्रनीत^२ सब नीत रीत, बहु काल किये सुखमय बितीत ॥२६७
उपदेस पाय नारद अनूह, भुय^३ राज पुत्र कौ संप^४ भूप ।
सो गयो बद्रकालम सिधाय भगवती भक्त जानहु सुभाय ॥२६८
जहाँ बीज-मंत्र कौ करत जाप, पद सोई पायो तप प्रताप ।
सुकदेवहू त्यागन कियौ संग, अष्टापद^५ पहुचे गिर उतंग ॥२६९
धर हृदय अखंडत जोग ध्यान, सब रीत परम पद साबधान ।
अष्टहू सिद्ध^६ अनिमाद^७ आद, पाये मुनिद्र माया प्रसाद ॥२७०
मुन नभग्रह होबत ब्राजमान^८, भ्राजत प्रदीप्त मनु दुतिय भाँत, ।
उठुके^९ जब जावन लगे उद्ध^{१०}, मुनिराज भये केउ मोह मुद्ध^{११} ॥२७१
भये सब्द असंभव महा भूर, डगमगिय अद्र हुंय संध दूर^{१२} ।
पोहमी प्रसिद्ध उलकान पात, पितु व्यास हिये बाढी प्रबात ॥२७२
हित पुत्र पुकारत कहत हाय, अबलंब न पावत कहु उपाय ।
बनजंतु आद खग मृग त्रियोग, सबहिन सुक पायो महा सोग^{१३} ॥२७३
बस सोक अनास्रय^{१४} देख व्यास बहु रीत सदाँसिव दिय बिसास^{१५} ।
समभाय व्यास नहि सोत्र नाय, जस लायक जानहु पुत्र जाय ॥२७४

१ पुत्र । २ प्रणीत । ३ भूमि । ४ संप । ५ पर्वत के शिखर का नाम ।
६ सिद्धियाँ । ७ अणिमा आदि । ८ विराजमान । ९ उठ कर । १० ऊद्धव = ऊपर ।
११ मुग्ध । १२ संधि = जोड़ । १३ शोक । १४ आश्रयरहित । १५ विश्वास ।

विनती सिव कीनी बेदव्यास, आँनत विन देखे मन उदास ।
 कर कृपा सिभु जोले कपाल, हिय बेदव्यास की जान हाल ॥२७५
 चित होय पुत्र की दरस चाह, छाया सुक देखहु जुत उछाह ।
 बिलपत कछु पायौ उर बिसास, वर पाय सिभु सौं चले व्यास ॥२७६
 मुनिवर तब आये निज निकेत, हिय सोक-ग्रस्त श्रति पुत्र-हेत ।
 सिख बैसंपायन असित सोय, जैननि सुमंत देवल सु जोय ॥२७७
 बहु किश्रौ संबोधन तिन बहोर, ठहरे न व्यास निज भवन ठौर ।
 माता के दरसन हित मिलाप, उठ चले भूम का जन्म आप ॥२७८
 दासन नै भासन करचौ देख बय-वृद्ध हमहि जननी विसेख ।
 हित दरसन आये इहाँ हाल, तुम हमहि दिखाबहु तातकाल ॥२७९
 तब कह्यौ दास जातन तुरंत, सांतन नृप व्याही सुनहू संत ।
 तब गये सरस्वति नदी तीर, साधन तप लागे मुनि सधीर ॥२८०
 चित्रांगद वीरज विचत्र^३ चाहि, माँने निज भ्राता चित्त माहि ।
 सांतन जब कीनी बास सग^४, बर पाछै तीनहु बंधु-वर्ग ॥२८१
 गगेव^५ पुत्र गंगा गरिष्ट^६, तिह लह्यौ राज पद नाँहि तिष्ट ।
 सुत सत्यवती रहि उभय सेख^७, भय चित्रांगद राज्याभिसेख ॥२८२
 सब राज काज पूरन समथ्य, उतपत्त न्यायसीलहु अरथ्य ।
 अघिया^८ हित चित्रांगद महीप, सो पहुँचे कुरक्षेत्र हि समीप ॥२८३
 चित्रांगद गंधर्व^९ पत च छोह दहु कैकिह कारन बढ्यौ द्रोह ।
 भिर परे जहां संगर भयान, मुर^{१०} शब्द^{११} तहाँ बीते महान ॥२८४
 पाछै नहि दीनै नैक पाँव, भूपन तन त्यागी वीर भाव ।
 भीसम विचत्रवीरज हि भूप, सिंघासन दीनी तिही सूप ॥२८५
 भज गंधर्व-पत सौं वयरभाव^{१२} चित चाह करन लागे चढाव ।
 मंत्रीगन भीसम कह्यौ माँन, जाकौं रन दीनै नहीं जाँन ॥२८६
 कछु श्रौध^{१३} वतीतत राज-काज, राच्यौ सु सुयंवर कासिराज ।
 जहाँ देस-देस के नृपत जाय, भये जमा स्वयंवर वीच भाय ॥२८७
 कन्यत्रय भीसम हरन कीन, पीहल प्रभाव जहां भुजा पीन ॥२८८

१ तत्काल । २ शान्तनु । ३ विचित्रवीर्य । ४ स्वर्ग । ५ गांगेय = भीष्म । ६ कठोर
 वृत्ति । ७ शेष । ८ मृगया । ९ गंधर्व । १० तीन । ११ वर्ष । १२ वैर-भाव ।
 १३ भवधि ।

दोहा—

इक अंबा अंबालका, अबर अंबका एहु ।
 व्याहन लगे विचित्र काँ, सब लघुभ्रात सनेहु ॥२८६
 बोली अंबा विनय कर, मैं चाह्यौ पति मोर ।
 साँलु^१ स्वयंबर के समय, बरहं ताहि बहोर ॥२९०
 पन^२ मेरी पालहु प्रथम; परम धुरंधर धोर ।
 समज भीस्म ताही समय, बिदा करी बर बीर ॥२९१
 ब्याही है लघु बीर कौँ, बिध-बत वेद - बिधान ।
 पहुँची अंबा साल्व पहुँ, मन साँ निज पति मान ॥२९२
 साल्व नदूयौ ताही समय, आई चित उपराँम ।
 पत जाचे गंगेब पुन, नटे ब्याह के नाम ॥२९३
 पितु कै गेह गई न पुन, अंबा परम उदास ।
 तप बपु साधन हेत तिह, बिपन कियौ निज बास ॥२९४
 राजयच्छमा^३ रोग तै, मरचौ बेस सुकमार ॥२९५
 बोते संगहि नब बरस, संतत भई न सोय ।
 सत्यवती कहि भीस्म सीँ, करहु राज सहकोय ॥२९६
 तेरे लघु भ्राता त्रियन, ग्रहन करहु निज ग्रेह ।
 संतति-उतपत हित समुझ, यामें कारन येह ॥२९७
 जेहै बंस जजात^४ कौ, तुमहि छत^५ इह तात ।
 पन बीते पछताहुगे, बिध जुत मानहु बात ॥२९८
 सत्यवती की बात सुन, बोले भीसम बाँन ।
 अनुचित काम न आदरु, निरनय कहत निदान ॥२९९
 पितु के सनमुख कीन पन, सो गये स्वर्ग सिधाय ।
 पितु आबहि तौ तजहु पन, निज जननी यह न्याय ॥३००
 बिप्र कुलीन बुलाय कौँ, सौँपहु त्रिया समाज ।
 तातें ह्वैहै संतती, अब तौ इंही इलाज ॥३०१
 सत्यवती सुत समुझ कौँ, ब्यास बुलाय बिचार ।
 हित संतति कीनौ हुकम, नटे न ब्यास निहार ॥३०२

१ शालु, शाल्व । २ प्रण=प्रतिज्ञा । ३ राजयक्ष्मा=सर्व रोग । ४ ययाति । ५ क्षत होने पर, रहते हुए ।

अंध जन्म भये अंधका, सुत धृतराष्ट्र तधीर ।
 येक जन्यी अंधालका, सुवर्ण^१ पद्म सरीर ॥३०३॥
 व्यास बुलाये विपन तै, गये सु सैनागार ।
 रानी गई न रमन कौं, उभयन किय अनुकार^२ ॥३०४॥
 दासी मिल भेजी दहुन^३, सुत भये विदुर सुजांन ।
 जात वंस जजात की, हुई न नेकहू हान^४ ॥३०५॥

—

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

द्वितीय स्कंध

बोहा—

सुनी सौनकादिकन स्तुत^१, देहु सूत उपदेस ।
जिह विध सत्यवती जने, व्यास कुमारी वैस^२ ॥१
सोई सत्यवती सती, सांतनु राजा संग ।
कियौ ब्याह पूरन कथा, पुन इह कहऊ प्रसंग ॥२

छंद उधोर—

सुन कहन लागे सूत, ईतिहास परम अभूत ।
ध्रुव चेदपुर तिह धाम, नृप सो ऊपरचर^३ नाम ॥३
द्विज^४ भक्त परम दयाल, सुभ कर्म धर्म सुचाल ।
सोई सत्य बाबा सूर, दुरबिस्न^५ तै चित दूर ॥४
तप बृद्ध जानति नूह, सब भांत सुखद समूह ।
परहूत^६ प्रीत पछाँन, मनि फटिक दीघ^७ बिमान ॥५
बिच अंतरीक्ष बिराज, बिचरंत सोइ निर्व्याज ।
निज त्रिया गिरकाँ नाम, अनुराग जुत अभिराम ॥६
सुत पांच तिह समरथ्य, अनदेस सोपे अथ्य ।
भइ रितुमती सोइ भाँम, हित खाध^८ पितु कर हाँम ॥७
अघ^९ कह्यौ लाबहु मंस^{१०}, पापार्ध जाँउ प्रसंस ।
निज रितुमती तज नार, आखेट गयेउ उजार^{११} ॥८
उर काँम की अभिलास, तिय रह्यौ सुमरन तास ।
जिह गिरचौ ताही जोग, आनन्द प्रभव अमोघ ॥९
बहु पत्र - पत्र बिचार, नलका घरचौ हित नार ।
संग सैन काज सिकार, सौँध्यौ सु ताहि सभार ॥१०

१ धृति = कान । २ वयस = प्रवस्था । ३ राजा का नाम—वसु उपरचर । ४ द्विज ।
५ दुर्गमसन । ६ पुरुहूत = इन्द्र । ७ विषय, दिया । ८ धाढ़ । ९ मृग ।
१० मांस । ११ उजाड़ = वन ।

गिरका सिजाबहु^१ ग्रेह. द्रुत ताहि काँ तुम देह ।
 सुन भूप वायक^२ तैन, गहि उड्यौ नलका गैन ॥११
 लाग्यौ सुँ तिह इक लार, सीर्चान पलल सुमार ।
 आकास भारग उद्ध, जस^३ भयी दारुन जुद्ध ॥१२
 निम्नगा जमुना नीर, पुन पतित ह्वै रन पीर ।
 अद्रका अछ्छर^४ एक, बस विप्र - स्नाप बसेख ॥१३
 भई श्वेत कोलक-भेस, निगल्यौ सु रेत नरेस ।
 जोइ परो धीवर जाल, बस काल होय बिहाल ॥१४
 जिह सुद्धि कारन जास, तिह उदर फारयो तास ।
 सिसु दोग एकहि संग, पुन निकर ताहि प्रसंग ॥१५
 सब रीत दास सु जाँन, लै गये नृप निजराँन^५ ।
 नृप उपर-चर सुत लीन, द्रढमछ्छ संभ्रा दीन ॥१६
 दिय कंनका सोइ दास, हिय दास पाय हुलास ।
 आयौ सु निज ग्रह येह, लरकी सु सुंदर नेह ॥१७
 निज सुता लालन नेम. पालन करी जुत प्रेम ।
 कन्या सुलोचन कंज, मन - मोहनी चिब^६ मंजु ॥१८
 अत उदित जोवन अंग, सोइ रहत पितु के संग ।
 कालिंद्री नद की कूल, क्रम जीवका अनुकूल ॥१९
 भर पथक-जन की भीर, नवका^७ उतारन नीर ।
 मुनि परासुर महाराज, कर तीर्थ जात्रा काज ॥२०
 तिह आय तटनी तीर, कही पार करहु कीर ।
 तिह कह्यौ भोजन त्यार, इहि काज रहउ अवार ॥२१
 कही वासवी^८ काँ कीर, तटनीहु जानत तीर ।
 रय^९ कन्यका मुनिराज, जल पार करहुं जहाज ॥२२
 जब वासवी मुनि जाँन, प्रेरी सु नाव प्रयाँन ।
 जल बीच नवका जात, ह्वै काम आतुर हाथ ॥२३

१ सिपाबहु, सजायो । २ वाक्य । ३ यम, युग = दोनों । ४ अक्षरा । ५ रनिवास ।
 ६ संज्ञा । ७ छवि । ८ नौका । ९ मत्स्यगंधा । १० रय = शीघ्र ।

पकरचौ जहाँ मुनि पेख, द्रग प्रेमजुत तिह देख ।
 कन्या कह्यौ मुसकाय, निरधार^१ सोचहु न्घाय ॥२४
 दासेर^२ हम तौ दीन, कृत कर्म आप कुलीन ।
 अनव्याहता^३ दिन और, मोह लखत है पितु मोर ॥२५
 दुरगंध जुत इह देह, अरदास^४ दासी येह ।
 पुन कह्यौ मुनि हित पूर, दुरगंध ह्वै है दूर ॥२६
 सो गंध तन सरसाय, जोजन प्रमानहि जाय ।
 इह लख्यौ अचरज अंग, पुन विनय कीन प्रसंग ॥२७
 दिन रत निषेध^५ दयाल, कीजै विभावरी काल ।
 किय प्रगट तप करतूत, अत कुहर छाँह अभूत ॥२८
 सुख पाय कीनौ संग, अकुलाय बाँन अनंग ।
 मुनि भये लज्यामान^६, हित बासबी लख हान ॥२९
 बिनती करी तिह बेर, कर जोर मुनिवर केर ।
 हम कहा ह्वै है हाल, कर कृपा कहहु कृपाल ॥३०
 जब कह्यौ मुनिवर जाहि, सतमती^७ सुनहु सुभाय ।
 पन कन्यका जुत पेम, नहि होय खंडित नेम ॥३१
 सुत होय मोहि समान, विद्या विवेक विधान ।
 अरु विस्तु कौ अवतार, सब कहहि ताहि संसार ॥३२
 बरदान दे तपवृद्ध, सुख पाय बाचा सिद्ध ।
 कर सलल^८ मंजन काय, सो गयउ पार सिधाय ॥३३
 गुरबनी^९ आई गेह, उर बनी चित अछेह ।
 दस मास बीतत देर, वै जनन समुभी बेर ॥३४
 सुत जन्यौ कुंज समीप, दुर^{१०} बैठ जमुना दीप^{११} ।
 सुत जनम तै ही साथ, मुख बोल कै कहि बात ॥३५
 हम जात बनमें हाल, तप करन हेत त्रकाल ।
 कछु होय हमसौं काँम, तुम याद करहु ताम ॥३६

१ निर्धार = निश्चय । २ दासपुत्री । ३ अविवाहिता । ४ अर्ज, प्रार्थना । ५ निषेध =
 मनाही । ६ लज्जावान् । ७ सत्यवती = मत्स्यगंधा । ८ सलिल = जल । ९ गुर्विणी =
 गर्भिणी । १० दुरि—छिप कर । ११ द्वीप ।

मैं श्राय कैं निज माय, पग बंदहूं सुख पाय ।
 गई वासवी पितु गेह, दक^१ धोय कैं निज देह ॥३७
 अवतार विरनु अनूप, स्वच्छंद व्यास - स्वरूप ।
 वासष्ट^२ मुनि के बंस, अबदात मति अबतंस ॥३८
 जिह रचे कलजुग जान, पुन अष्टदसहु पुरान ।
 बहु वेद भेद विचार, चिद भाग किय जिह च्यार ॥३९
 अनुसार मति के उद्ध, जस पांडुवन - कुरु जुद्ध ।
 तिन कीन भारत^३ त्यार सब वेद कौ लहि सार ॥४०
 इह व्यास की उतपत्त, सुखरूप जानहु सत्त ।

बोहा—

सत्यवती सांतन सुनहु, बिधवत कीनौ ब्याह ।
 कहत कथा विसतार कर, अनुभव सहित उछाय^४ ॥४१
 उपजे कुल ईख्याक^५ में, महाभिख^६ ब्रपत महान ।
 अश्वमेध किय सहस इक, सुनहु परम सयान ॥४२
 बाजपेय इक सत्त बहुर, जग्य किये नृप जास ।
 इन्द्रपुरी अमरावती, बसे जाय सोइ बास ॥४३
 दरस पितामह^७ देवता, सोउ नृप पहुचे संग ।
 सेब करत ताही समय, गेह प्रमेष्ठी^८ गंग ॥४४
 पवन लाग उछ^९ द्योसु^{१०} पट, उघरचौ गंगा अंग ।
 दृगन नमाये देख कैं, सब देवन इक संग ॥४५
 राजा सोइ देखत रह्यौ, गवर^{११} अंग चिब गंग ।
 दृगन गंगहू देख कैं, पायौ प्रीत प्रसंग ॥४६
 दीनौ उभयन देख कैं, सरोरुहासन^{१२} लाप^{१३} ।
 मृत्यु - लोक में मृत्यु ह्वै, सुख दूख सहहु सँताप ॥४७
 चाह्यौ गंगा चित्तवन, पितू हित नृपत प्रतीप ।
 बीच मिले अष्टहु बसू, लाप बसिष्ट समीप ॥४८
 अष्ट बसहु उद्यान में, बिचरत करत बिलास ।
 दोउ बसु तिय उपदेस तैं, नंदनि लई निकास ॥४९

१ उदक = जल । २ वसिष्ठ । ३ महाभारत । ४ उत्साह = उछाह । ५ इक्ष्वाकु ।
 ६ राजा का नाम । ७ ब्रह्मा । ८ परमेष्ठी । ९ उछल कर, ऊपर उठ कर । १० दिवस ।
 ११ गौर । १२ ब्रह्मा । १३ लाप ।

दियौ स्त्राप वासिष्ठ द्रुत, अष्ट बसु अवरेख ।
 परपंथ के रत पाप पथ, द्रगन लेय हम देख ॥५०॥
 द्यौं आदक मृत देह कै, सुख दुख भोगहु संग ।
 परासकंधी^१ पाप कौ, इह फल लेहु अभंग ॥५१॥
 बसु बोले वासिष्ठ सौं, द्यौउ पर मोखी^२ देख ।
 पसितोहर^३ हम सात पुन, बिधबत न्याय बितेख ॥५२॥
 दंडनीत लख दीजियै, करहै अंगीकार ।
 मुनिवर आप महान मति, न्याव करहु निरधार ॥५३॥
 बोले मुनहुं बिचार कै, सातहु कौं मम स्त्राप ।
 अल्प काल में उद्धरहु, प्रत दोउ^४ दीरग पाप ॥५४॥
 जैसी करनी जाहि की, भुगतै जैसोइ भोग ।
 इही न्याव घर ईस कै, जनहु सुख दुःख जोग ॥५५॥
 पापहु में वसु पुन्य तैं, भई गंग सौं भेंट ।
 अरज करी हम उधरहु, पोषहु तोषहु पेट ॥५६॥
 कह्यौ वसुन मंदाकनी^५, करहु न सोक कदाप ।
 इक इक बच्छर उद्धरहु, सात पुत्र कौ स्त्राप ॥५७॥
 विस्नुपदी^६ महमा बड़ी, निज प्रभाव रत न्याय ।
 आप स्त्राप बस अनुसरत, जीव उधारत जाय ॥५८॥
 भूंकौ तौ पांनी भलौ, करता आतिथ^७ काज ।
 स्त्रापत गंगा वसुन कौं, किय पन तारन काज ॥५९॥
 पुन महांभिसहु प्रतीप कै, भये सुत सांतन भूप ।
 पितु गमन्यौ बन हेत तप, सबहि राज कां सूप ॥६०॥
 सांतनु नृपत सिकार कौं, गये बिपन लहि गैल ।
 खोजन लागे मृगन खग, सैवलनी^८ तट सैल ॥६१॥

छंद हीयै जब गंग उमंगीय हेत, कीयौ नृप अंग अनंग निकेत ।
 मुक्तादाम प्रभाव सु पुन्य पराक्रम-पुंज, मनो मकरध्वज दूसर मंजु ॥६२॥
 बनी तब गंगहु अंगना^९ बेस, अलंकृत धारन कीन असेस ।
 अनूपम भीन टंबर आंन, मनोहर आंनन की मुसकान ॥६३॥

१ चोरी । २ मुक्ति । ३ पश्यतोहर = चोर । ४ द्यौसु नामक वसु । ५-६ गङ्गा ।
 ७ आतिथ्य । ८ शैबालिनी = नदी । ९ स्त्री ।

रहो अत सोभन जोवन रंग, उहासत^१ चंद्रमनी वृत्ति अंग ।
 तिया लोह गंग तरंगनी^२ तीर, धरी नृप आवत देखत धीर ॥६४
 पहुँचीय आय कै ताहि सखीप, पुकारीय ता कह नंद प्रतीप ।
 कही तुम मानुखी देविय कौन, जु पै तुम किन्नरी गंधवी जौन ॥६५
 लियौ मन सोह कै संग लगाय, जगाय कै काम कहाँ तुम जाय ।
 कह्यौ तब नार सुनौ नृप कान, भये तुम वंस जजात के भाँन^३ ॥६६
 कहै हिय प्रांजल होय कै कथ्य, सब बिध नीतहु रीत समथ्य ।
 कियौ कछु आसव^४ चाहत कोय, सुनौ हिय प्रांजल ह्वै तुम सोय ॥६७
 करै हम जोय सुभा-सुभ काम, निसेध न कीजिय लीजिय नाम ।
 सुनै लुत अप्रिय बानीय सोर, चली हम जावँहगी तुम छोर ॥६८
 करयो पन भूपहू अंगिकार^५, बिसारद हारद^६ चित्त बिचार ।
 लियै अवरोधन^७ बीच ललाँभ, बसाइय चंदमुखी निज बाँम ॥६९
 बिधोबिध राचत भोग बिलास, हियै नित वाढ़त प्रेम हुलास ।
 सजे तन अंबर भूखन सैन, रमै सुख पाय रहै दिन रैन ॥७०
 इतै बिच धारिय गर्भ-अर्धान^८, जम्यौ हिय अनंद अंकुर जान ।
 बिसर्जन औध^९ के मास बसाय, ऊपजिय अंगज^{१०} गंगहु आय ॥७१
 वही सुत बार की धार बहाय, अनंदत ही अवरोधन आय ।
 जन सुत सातहु अब्द जितेक, इहीं किय सातन की गत एक ॥७२
 रह्यौ नृप देखत रानिय राह, प्रनासत पुत्रन तोय^{११} प्रवाह ।
 भयौ सुत अष्टम दंडसु भेस निहार कै बोलेयु गंग नरेस ॥७३
 जन सुत नीर में बोरत जाय, अहै कुल वृद्धिय कौन उपाय ।
 बिनासन देहुँ न सो सुत बाँम, करौ मन मानत जो कछु काम ॥७४
 निहार कै गंग कही नृप नीक, कियौ तुम आसव सोर अलीक ।
 हम नहि जानिय ना कछु हाल, भई बस स्याप कै गंग भुवाल ॥७५

१ खिलना, प्रकाशमान होना । २ नदी । ३ मानु, भुवन = सूर्य, भुवन । ४ आसव =
 साइबासन । ५ अंगिकार = स्वीकार । ६ हारद = हृदय का, प्रेम । ७ अवरोध =
 तट, रुकावट, बन्धन । ८ आधान = रहना, धारण । ९ अवधि = सीमा । १० पुत्र ६
 ११ जल ।

बसी तुव ग्रेह विचारहु बांम, महा अघ सैटन कीन सुकांम ।
 बसू भये मो सुत अष्टहु वीर, त्रभैपद^१ हेत बहावत नीर ॥७६
 भये अघ मोचन सात भुआल, लहौ इह अष्टम मो सुत लाल ।
 पलै नहि मात बिनां कोउ पूत. इहं परपाटिय आद अभूत ॥७७
 विचार कै सौंपहु मोर बरिष्ट, इहै लहि सिद्ध करौ तुम इष्ट ।
 जबै सुत होदहै बेस जवान, इहै तुम सौंपहुगी फिर आन ॥७८
 नरेश्वर तोरहु^२ के पन न्याय, बसू पन मोरहु जेम बसाय ।
 तज्यौ तुम त्यांनहि^३ त्यागत तौन, भली बिध जानत जाबत मौन ॥७९
 इहै कहि गंग गई निज ऐन^४ बिसास न पावत आबत बैन ।
 विचारत रानीय पुत्र बिजोग, सोइ हिय भूप बड्यौ अत सोग ॥८०
 हृदै लख आश्रव की फिर हांन, विमासत सासत सांज^५ बिहांन ।
 समै इक भूपत काज सिकार, नदी तट गंगा गये निरधार ॥८१
 तही बन हात(थ) गहै धनु तीर, बिलोकिय डिभ महा बरबीर ।
 निहारिहु आकृत^६ ताहि निदान, इहै सम पुत्रन है अनुमान ॥८२
 कहुँ नृप कौन के राजकुमार, महातनु दीसत^७ के सुकमार ।
 नहीं तिह उत्तर दीन नरेस, पयोनद अंतर कीन प्रबैस ॥८३
 जबै सुत आपुन जानिय जान, सलाघाय^८ गंग करी सुखदान ।
 मिली धर संचर^९ गंग उमंग, इहै सुत रावरी लेहु अभंग ॥८४
 नृभै इह बिस्नुप्रदीदत नाम, धराबहु मो सुत कौ चिब धाम ।
 संबोधन दै गइ गंग सिधाय, लयौ सुत भूप ही कंठ लगाय ॥८५
 पिता सुत बाहुत नेह परीख^{१०}, सिखावत नीत तन-धय^{११} सोख ।
 भये कैंउ काल बितीत भुबाल, अहेरन हेरन चाल उताल ॥८६
 जोई रविनंदनी के तट जाय, सिकार कौ खेल खिल सुख पाय ।
 जहाँ इक द्यौस भयो इह जोग, उपज्जय आय सुगंधीय ओघ ॥८७
 धरचौ नृप ध्यान सुगंधिय धोर, बहीं हित चाह चलयौ जिह ओर ।
 जहाँ तहाँ भूपत देखत जाय, अहै कहुं मालती चंपक आय ॥८८

१ निर्भयपद । २ तुम्हारे । ३ उन्हें । ४ अयन = स्थान । ५ साथ । ६ आकृति ।
 ७ देखने में । ८ श्लाघा = प्रशंसा । ९ शरीर । १० परख कर = देखकर । ११ स्तनधय =
 बालक, पुत्र ।

लई दख हेर प्रभजन लार, निरखीय [स]^१ सुंदर संचर नार ।
 मलीनस शंवर शंग मभार, सुसोभत^२ नाहिन कोय लंगार^३ ॥८६
 प्रकासत जोवन की दुति पिंड, महा रमनीय पयोधर मंड ।
 निहारिय कंजन^४ गंजन नैन, अनूपम इंदुमुखी चिब श्रैन ॥८७
 कही तिह भूप अही तिय कौन, तलासत जात पिता हम तौन ।
 कुहारिय दीसत वेस किसोर, छल्यी हय देख लयी चित चोर ॥८८
 चली सम तीय गई कर छंद^५, अही पटरानीय होहु अनंद ।
 कही तव सत्यवती सुन कान, नरेश्वर आप तौ नीत निधान ॥८९
 कही तुम छत्रीय जात कुलीन, अही हम धीवर जात अलीन ।
 दन हमरी तुमरी किन व्याह, सपेखहु नीक विचार सलाह ॥९०
 हई कछु चाह तुमें हिय हेर, विचारहु सो पितुतै इह वेर ।
 चले नृप दास के पास विचार, अघेतन^६ कारन कथ्य उचार ॥९१
 दहूँ कर जोर कही तव दास, अही नृप लेहु न होहु उदास ।
 तपाँ इक वीनती यामह तौन, जिहीं विध आखव^७ जानहु जौन ॥९२
 सुता-सुत^८ होय कहूँ सुख साज, रहै सोइ पट्टप^९ पावहि राज ।
 सुने नृप दास के वायक श्रौन, भये मन भंग गये निज भीन ॥९३
 उपज्जिय आयकं चित अछेह, दही निस वासर हीं दुख देह ।
 प्रका^{१०} उदयान भयो मन ताहि, विरावत नाँहि न पावत थाह ॥९४
 बिना जल ज्यां सितकोलक^{११} वृंद, रहै अकुलावत चित नरिंद ।
 निहारिय निरनुपवीदत नैन, उपज्जिय भूपत कौन अचैन ॥९५
 जमानतन^{१२} बोल कही अकुलाय, कहा बुख मो पितु कै इह काय ।
 न आवन नैनन नौद निसाह^{१३}, लहा तन खाद न श्रोदन लाह ॥९६
 नदं गिन पंडहु भूपत सव्य, कही सम श्राय कही सोइ कथ्य ।
 अभायकू उठ चले अकुलाय, जुहारिय भूपत के डिग जाय ॥१००
 कही नव प्रवृत्त^{१४} राजकुमार, संबोवन धीनल^{१५} बुद्ध सुमार ।
 कही नृप संवित तौ निज काज, सुनी श्रुत मंत्रीय शोर समाज ॥१०१

१ सुन्दर । २ सुसोभित । ३ अङ्गार । ४ गंजन । ५ छन्द ।
 ६ निघण्टु । ७ आखव — आशङ्कन, प्रतिष्ठा । ८ बोद्धि । ९ तिहासन पर ।
 १० विरावत । ११ एक प्रकार की मण्डली । १२ जमानत = संशय । १३ निसा =
 शक्ति । १४ प्रवृत्त, प्रवृत्ति = प्रवृत्त, आदि । १५ मंत्री ।

नही इक पूत सें पूत निदान, ज्युही इक आँख में आँख न जाँन ।
 उपज्जिय मो चित येह अँदेस, निरंतर बात प्रकास नरेस ॥१०२
 निरखीय बिस्तुपदी सस नार, कुमारीय वेस नई सुकमार ।
 मनोरथ सिद्ध करौ मिल मोहि, सुता तुम दास की लाबहु सोय ॥१०३
 दीयें वह कथका सुंदर दान, विचारहु जायकै ताहि बिधान ।
 गये सब मंत्रीय पास गंगेव, भली बिध भूप क्यूँ इह भेव ॥१०४
 मिले तब मंत्रीय राजकुमार, गये सोइ दास के पास अगार^१ ।
 अहो तुम पुत्रीय माँगत आय, मनोरथ पुज्ज बनाबहि माय ॥१०५
 निहार कै उत्तर दीन निखाध^२ उपज्जीय जो कछु बित्त उपाध ।
 सबै मिल मेठहु मोर संदेह, अमातन बात सुनौ श्रुत एह ॥१०६
 जिही घर जानबी-पुत्र^३ जवान, नरेश्वर यंभन^४ राज निदान ।
 दीयें कछु भाग न दास दुहित्र, परामुख होवहै पुत्रीय-पुत्र ॥१०७
 कछु इह जतन प्रकासहु कोय, ततौ^५ हम पुत्रीय देवह तोहि ।
 कही सुन मंत्रीहु राजकुमार, बिसासीय^६ धीवर बात विघार ॥१०८
 सुता तुहि होबहिगे सुत सोय, समापहि^७ ताकह राज स कोय ।
 करै पन^८ दूसरहु सुन काँन, बढ़ावहि संतति नाहि बिधान ॥१०९
 सबैसन^९ नारन तै तज सुद्ध, इहै हम आश्रब धारेउ उद्ध ।
 सधै कहु स्वप्नहु नारीय संग, लहै असि-पुत्रीय^{१०} छेदन लिंग ॥११०
 क्रियौ पन भीसम येह करूर^{११}, सराहन लागीय स्वांतक सूर ।
 सुकन्याय दास दई तिह सूप, बिबाहन कारन सांतनु भूप ॥१११
 बिबाह कै सत्यवती तिह बेर, करी पटरानीय राजन केर ।
 उभै^{१२} सुत सत्यवती नृप अस, बड़े नहि ताहीय तै कछु बंस ॥११२
 भयौ सोइ सत्यवती सुत भूप, स को रजधानीय भीसम सूप ।
 मरचौ रुज^{१३} एक मरचौ रन मंड, रही नृप एक कै द्वै तिय रंड^{१४} ॥११३
 तबै सुत ब्यास कौं बासबी टेर, बिचार कै भीसमहु तिह बेर ।
 तहाँ कहि सत्यवती तुम तात, जजात के बंस कौं राखहु जात ॥११४

१ अगार=गृह । २ निषाद = धीवर । ३ जाह्नवीपुत्र = गाँगीय, मोक्ष । ४ यमराज
 ५ तब तो । ६ विश्वासार्थ । ७ समर्पित कर । ८ प्रण । ९ संवेशन = सम्बन्ध । १० तलवार,
 कटार । ११ क्रूर = कठोर । १२ उभय = दोनों । १३ रोग । १४ रंडा = विधवा ।

करी सुन व्यासहु मात की काँन^१, दीयै त्रहुँ भ्रात तीया सुत दान ।
विचित्रहुवीरज^२ की कुल वृद्ध, सोई सुत क्षेत्रज तं भई सिद्ध ॥११५
भयी धृतराष्ट्रहु जेष्टन भूप, सोई निज अक्षमिताक्ष^३ स्वरूप ।
तिघासन साँतनु राज समस्त, हुपौ सोइ पंडु नरेशुर हस्त ॥११६

दोहा — भीसस की सति सौं भवौ^४, पांडुय-राज प्रतिष्ठ ।
बिमल राजमंत्री बिदुर, कीन भ्रात कनिष्ठ ॥११७
रमनी द्वै धृतराष्ट्र कं, गंधारी निज ग्रेह ।
वैस्या^५ दुती^६ बखानियै, निपुन तीया जुत नेह ॥११८
कुंती माद्री पांडु कं, रूपवती रमनीय ।
राजा मन रंजन रहस, कंज-नयन कमनीय ॥११९
सुत गंधारी येक सत, सुत वैसी सति सुद्ध ।
नाम जुजूळ^७ जानियै, पितु धृतराष्ट्र प्रसिद्ध ॥१२०
सूरसंन कन्या सुधर^८, कुंती तन सुकमार ।
कुंतभोजनिह कन्यका, पुत्रीय लीय जुत प्यार ॥१२१
अग्नहोत्र थित उद्धवैह, सूरसंन कीय सूप ।
अवसर दुरवासा वहीं, आये परम अनूप ॥१२२
कुंती मुनि सेवा करी, च्यार मास रहि छाया ।
कुंती कां करकै क्रपा, मंत्र दीयो समुभाय ॥१२३
जिह देवन कौं जाचहै^९, ऐहै करत ही याद ।
सिद्ध मनोरथ फलहि सब, विघ्न न करह विखाद^{१०} ॥१२४
मुनि दुरवासा महत गति, सोइ पुन गये सिधाय ।
कुंती आवाहन कियो, परख^{११} अरक^{१२} सुख पाय ॥१२५

पं३ कुमारीय कुंतीय वेस किसोर, जगै तन जोवन की दुति जोर ।
मुक्तादांस-करै मन रंजन मंजन काय, दीयै चख^{१३} खंजन गंजन दाय ॥१२६
छुटे कच साईय वस सरीर, भ्रमै भू(भ्र)मरावल मानहु भीर ।
दमंकत दीपसिखा सम देह, ठमंकत लागत पायल ठेह ॥१२७

१ पचन, माता । २ विचित्रभोयं । ३ अन्व । ४ हुआ । ५ वैश्या = वैश्यकन्या ।
६ द्विभोय । ७ पुपुसु । ८ सुपट—सुंदर । ९ याचता करेगी । १० विषाद । ११ परीक्षा ।
१२ अरक = मूर्ख । १३ चख = घात ।

उरोजन बाढत सोभ अहीन, जगै चिब पाट पटंबर भीन ।
 उहांसत आनन पूरन इंडु, बनी तिह भाल में रंजन बिदु ॥१२८
 भली विध सोध करी सुच भूम, धुकाय कै गंधपिसोचका-धूम ।
 सुधारीय सिंदल^१ तेल सुगंध, धरे कहूँ कुंकम धूलीय गंध ॥१२९
 पसारीय गुफत माल प्रसून, करी निरहारीय च्यारहु फून ।
 प्रचारीय ठौरई कंत प्रयोग, जपे रवि-मंत्र निमंत्रन जोग ॥१३०
 बने नर संचर^२ सुंदर बेस, दयौ दरसाबहु आय दिनेस ।
 भई अबलांचत^३ कुंतीय भेख, दहूं द्रग सूरज कौ तप देख ॥१३१
 कियौ अभिबंदनहु कर जोर, नमाय कै सीस प्रसंग निहोर ।
 करी तुम पावन दासीय केर, विभावर^४ आय मिले इह बेर ॥१३२
 कियौ मन-बंच उदंचत काम, सिधावहु मंडल कौ जगसांम ।
 दियौ तब सूरज देव निदेस, बिचारहु आस्तिक नास्तिक बेस ॥१३३
 निमंत्रण बेमुख^५ देत निकार, इहीं मम नीक कियौ अपकार ।
 उपज्जीय मो तन आय अनंग^६, सु भामनि पाय लहौ सुखसंग ॥१३४
 भयौ मन बंचत^७ तोरहु भांम, करौ मन बंचत मोरहु काम ।
 कह्यौ तब कुंतीय बेस कंबार^८, दिनेसम जानत मोहि उदार ॥१३५
 इहै तुम सासन^९ देत अजोग, भये वृत-भंग कहा सुख भोग ।
 दयौ तिह ऊत्तर सूरज देव, भली विध कन्यका जानत भेब ॥१३६
 लगै वृत-भंग न पाप लगार, करौ मन-बंचत राजकुमार ।
 पराक्रम मो सम दांतीय पूत, उपज्जहै तोहि पिचंड^{१०} असूत ॥१३७
 न तौ तुम मंत्र बतावन-हार, सराप कै जावहै गेह सिधार ।
 सुनी इह कुंतीय बात दिनेस, नमाय कै नैनन मान निदेस^{११} ॥१३८
 दयौ रतिदान सु सूरज देव, उदारनी कुंतीय होय अभेव ।
 गये रवि मंडलहूँ निज ग्रेह, इहाँ गत कुंतीय की भई एह ॥१३९
 बसी सोई जाय इकंत में बास, अनूपम देख कै गुप्त अवास ।
 लखे नहीं मात पिता अरु लोय,^{१२} सिवाय न दासीय कै इक सोय ॥१४०

१ चन्दन । २ शरीर । ३ अबलोचित, अभिलाञ्छित, अमिलापित । ४ सूर्य । ५ विमुख ।

६ कामदेव । ७ वाञ्छित । ८ कुमारी । ९ सासन = आज्ञा । १० प्रचण्ड ।

११ निवेश = आज्ञा । १२ लोक, लोग ।

अर्धवम कुंडल कंकट अंग, उपज्जीय संग ही धार अभंग ।
 लक्ष्मी सुत आनन मात ललाम, अनूयम सूर ज्युही अभिराम ॥१४१
 भगी मन व्याकुल तागनी भाय, उचारीय दासीय साँ अकुलाय ।
 ब्रह्मायुष्ट पेटोय कँ धर बीच, नहावहु मोहि अभागनि नीच ॥१४२
 कोयी तव दासीय जेम कहाय, जहाँ तट गंग तरंगनि जाय ।
 वहाय कँ पूत नहाय कँ वार^१, सबै तन आईय गेह सँवार ॥१४३
 लखी जोई पेटोय जावत नीर, तिही अधरथ्य^२ गहो नृप तीर ।
 वरि निज रानीय कोँ सोई वत्त, अपुत्रहु पुत्र लह्यो अधरथ्य ॥१४४
 तिहीं तिहु राघका रानीय जोय, कोये सुत मंगलहु सह कोय ।
 अर्धवत पालन लालन आद, विसंभर^३ मंटीय मोर विषाद ॥ १४५
 विचार कँ या विध नूप विचित्र, महामुद पोपीय अंगज मित्र ।
 करन^४ ह नाम धरयो तिहु केर, वदै जस ताहि विभात की बेर ॥१४६
 अर्धवद सुंतीय पंडुय^५ साथ, विवाहत कीनीय वीर विद्यात ।
 रानीय तिहु दूसर मद्र नरेत्त, विचच्छन रूपयती नथ वेत्त ॥१४७
 जोई नूर कांतर^६ बीच सिजार, आयांतर आंतर देत्त उजार ।
 मयो नहो गहू भई गति गूढ, महा कन जोग लई नति मूढ ॥१४८
 जहाँ मुनि एक सोयान् जमीन, क्रिया पसूतादि प्रसारत कीन ।
 तिहीं मुग जानकँ मान कोँ तान, हन्यो जिहु प्राँन कोँ फारक हान ॥१४९
 मयो तिहु भूय मयो बहूनाय, घटी मुनि देग कँ ज्वाल बलाय ।
 मयो मयो मयो तिही मुनि देग, दहो गत नेवहुगे अवरैय^७ ॥१५०
 मयो मयो मयो मयो तव तान, नृसंग सौँ जावहुगे कम साथ ।
 मयो मुनि मयो मयो निज भौन, गह्यो मन सोक लयो बन गीन^८ ॥१५१
 मयो निज राज तिहे मग सोय, मतोपुन-साधन नेम मुकीय ।
 मयो मयो मयो मयो मयो, घटी तव मया लयो चित्त प्रीन^९ ॥१५२
 मयो मयो मयो मयो मयो, वने जिन पंचघटी रतयोर ।
 मयो मयो मयो मयो मयो, जहे सुत तीरय जोग विमान ॥१५३

१. वार । २. अधर । ३. संभर । ४. कर । ५. पंडु । ६. कांतर । ७. अवरैय । ८. गीन । ९. प्रीन ।
 १०. मयो । ११. मयो । १२. मयो । १३. मयो । १४. मयो । १५. मयो । १६. मयो । १७. मयो । १८. मयो । १९. मयो । २०. मयो । २१. मयो ।

सुनै कहु वेद पुराँनन श्रॉन, धरै कहु ईस - बिसंभर ध्यान ।
सुन्यौ कहु सुमृती^१ कौ तत सार, बिना सुत मुक्त न होय बिहार ॥१५४

बोहा-

सुन कै नृप पांडू श्रवन, अति चित भयौ उदास ।
तियन^२ कह्यौ समुभाय कै, परम मंत्र परकास ॥१५५
तज्यौ राज बपु करत तप, जप साधन अरु जोग ।
बिना पुत्र सब ही बिफल, पद निर्वाँन प्रियोग^३ ॥१५६
तिह उतपत सुनहू तीया, दस प्रकार कहि देत ।
वेद सुमृति आपत^४-बचन, सब कोई कहंत सहेन ॥१५७
आप तीया के उदर में, उपजत अपनै अंस ।
जाकौ अंगज जानीयै, बिबध बढ़ावत बंस ॥१५८
जाव^५ करै जाभात तं, सुता बिवाहत साथ ।
सुत लावै हित सतती, बिदुष बिचारत बात ॥१५९
पत^६ ह्वै रोगी पिड सौं, और बीज उपजाय ।
जाकौ क्षेत्रज जानीयै, सबहि कहंत समुभाय ॥१६०
पत जावत परलोक कौ, त्रिय बिधवा ह्वै तत्र ।
उपजै ऊतम अंस सौ, पुन वह गोलक पुत्र ॥१६१
पति जीवत जाकी प्रीया, पुरुष और परसंग ।
सोई पुत्र कुंडज समुभू, बिदुष बखानत व्यंग ॥१६२
गरभ कंवारी तीय गहै, परनै जनै सपूत ।
सो सहोढ़ समुभूहु सकल, सूत तथौ अनसूत ॥१६३
पिता गेह कन्यापनहि, उपजत जार अधीन ।
जनै सु सुत एकांत जिह, कहत बिदुष कानीन ॥१६४
उचत गरथ दै अपुन कौं, विकीय अरथ बसाय ।
क्रीत पुत्र ताकौ कहंत, विधवत^७ रीत बसाय ॥१६५
बन में परचौ सुभाग बस, ग्रहि कै लावै ग्रह ।
प्रापत ताहि प्रमानीये, अनुक्रम जानहु एह ॥१६६

१ स्मृति । २ सू० प्र० में = श्रीयन हैं । ३ प्रयोग = अनुष्ठान । ४ आपत = विश्वस्त ।
५ याचना । ६ पति । ७ विधिवत् ।

मात पिता असमर्थं ह्यै, पत्नं न जासां पुत्र ।
 श्रीरत्न कीं देवे अरप^१, दसम सोय सुत वत्त ॥१६७
 इह विष पांडू त्रीयन सां, कही न्याय जुत कथ्य ।
 तपसी दृज तै अचस^२ तुम, पुत्र करहु उतपत्त ॥१६८

नव कही कुंतीय तीय, दृढ़ मुनि कुसारनि^३ दीय ।
 धीर— पुन करत मंत्र प्रीयोग, जिह सुर निमंत्रन जोग ॥१६९
 तोई आय करहे सिद्ध, उर कांमना अविच्छ ।
 तव कही पांडू तीय, कृत काज है करनीय ॥१७०
 कीय गाप मंत्र कृतंत^४, तिह आय साध्यी तत ।
 तिह जोग ही राँ ताप, उवज्जी जुजुष्टर^५ आय ॥१७१
 तिनू भयी पुष्ट सरीर, धर श्रीव केतक धीर ।
 पुन कियोहु मंत्र प्रयोग, जिय जानकै रितु जोग ॥१७२
 वंहे ठौर वंहे विष आय, वपु धार कै पुन वाय^६ ।
 भय तही अंगज भीम, सुत पवन तै बल सीम ॥१७३
 पुन कुनी सुत भय पुष्ट, अरु मंत्र साधेउ इष्ट ।
 पुन आय इंद्र पुनीत, पहचान कुंती प्रीत ॥१७४
 सुत भयी अर्जुन गूर, कलि विजय की अंकूर^७ ।
 सुत भये तीन समान, विष्णुत जग बलवान ॥१७५
 जोग हेत कुंतीय ज्ञान, दीय मंत्र माद्रीय दान ।
 सुतदेव पाप प्रसंग, एक जीव जिह दुई अंग ॥१७६
 रई महान धर महादेव, सुत भएउ पदू तभेव ।
 सुत तीन शोभत मात, उवपनि कीय समीलाय ॥१७७
 विष जोग इत दिन योग, कंठु गई कुंतीय काम ।
 पुन पदू मारी निहार, शीघ्र तही नत बचकार ॥१७८
 जग प्रीत व्यास मुपात, जग हीनहार विहात ।
 मारी गई वस मोत, सुत तीन कुंतीय गोय ॥१७९

१ अरप— अरपण । २ अचस— अचस्य । ३ कुसारनि— कुसारनि । ४ कृतंत— कृतंत । ५ जुजुष्टर— जुजुष्टर । ६ वाय— वाय । ७ अंकूर— अंकूर ।

पति संग गई जुत प्यार, बपु जार कै तिह बार ।
 निज पुत्र कुंतीय लेह, गई हस्तनापुर गेह ॥१८०
 जब भीस्म बिदुर सुजांन, पुर बासीयन परधांन ।
 कुंती सु कियेउ कहाय, भय पुत्र इह किह भाय ॥१८१
 बस खाप पंडू बितेस, सुत भये किह बिध सेस ।
 सुर बोल बोलीय सोय, सुन लेह बात स कोय ॥१८२
 भल कहाँ देवन भेव, सुत पांच हमकौ सेव ।
 इह पुत्र लीय उपजाय, नृप पांडू सासन न्याय ॥१८३
 ध्रुव धार कै हीय धीर, गंगेव बिदुर गँभीर ।
 थिर राख लीनै थॉन, इहि जान बाहु आजांन^१, ॥१८४
 द्रोपद स्वयंबर दाय, जहां पांच बंधव जाय ।
 जहां द्रोपदी लीय जोय, सामांन तीय कीय सोय ॥१८५
 नव जोबना तिह नार, लघु जेष्ट अनुक्रम लार ।
 सुत जने पांच समांन, पति पांचह परवान ॥१८६
 श्रीकृस्न भगनी साथ, पुन व्याह कीनौ पाथ^२ ।
 अभमन्यु^३ कुवर उदार, महारथिनि लीय तिह मार ॥१८७
 सुत द्रोपदी के सुद्ध, जो मरे बीच ही जुद्ध ।
 अभमन्यु तीय उतराहि^४, तिह उदरमें सुत ताहि ॥१८८
 जिह अस्वथांमा जोग, पर अस्त्र कीन प्रयोग ।
 श्रीकृस्नचद सिहाय^५, तिह चक्र तै कीय ताय^६ ॥१८९
 सुत अंधनृप^७ सत संग, जे मरे ताहो जंग ।
 धृतराष्ट्र डुहु कर धोय, बैठे रहे कुल बोय ॥१९०
 गंधारी जा तिह गेह, इह अंध नृप तीय एह ।
 जिह पितु जुजुष्टर^८ जान, सोई करन सेव सुग्यान ॥१९१
 लघु भ्रात बिदुर ही लार, सो करत अंध सँभार ।
 कदु बाद भीम कहंत, सुन अंध भूप सहंत ॥१९२
 इहि अब्द दस अरु अष्ट, कीय टेर घोर कलिष्ट ।
 कहनी जुजुष्टर कीन, हित क्रीया पुत्रन हीन ॥१९३

१ आजांन—घुटनों तक । २ पाथ—अर्जुन । ३ अभिमन्यु । ४ उतरा । ५ सहाय
 ६ ताहि । ७ धृतराष्ट्र । ८ डुवाकर । ९ युधिष्ठिर ।

क्रीय वृकोदर^१ जुत कोह^२, मन मोह उपजत मोह ।
 कछु द्रव्य ह्म इह काज, तुम देहु नृप सिरताज ॥१६४
 सुत क्रीया करकै स्वाध, वन बसहिगे निरबाध^३ ।
 जब जुजुष्टर पितु जाँन, दीय द्रिव्य कारन दौन ॥१६५
 गये अंध नृप कर गाँन, सँग विदुर आत सयान ।
 संजय गयो फिर साथ, अरु सुबलजा^४ तीय आय ॥१६६
 अरु गई कुंती आप, तिह संग में हित ताप^५ ।
 नद गंग पावन नीर, अन^६-कुटी कर-कर तीर ॥१६७
 बस रहे वन में वास, अत होय जक्त उदास ।
 रहे बरख पट तज राग, परलोक हित हीय पाग ॥१६८
 नृप जुजुष्टर जुत नेम, इक स्वप्न देख्यो ऐम ।
 कुंती सु दुर्बल काय, वन रही वास वसाय ॥१६९
 जब कही बंधुन जोय, हीय मोहि विस्मय होय ।
 तुम चलहुगे वन तात, सुख देखहौं पितु मात ॥२००
 सुभद्राहु द्रोपदी संग, अभमन्यु की अरधंग^७ ।
 निज पंच बंधु नरिद, वहाँ गये जहाँ नृप अंध ॥२०१
 पितु-मात परसे पाय, सुखरूप सवन सुहाय ।
 धतराष्ट्र नृप सौ धर्म^८, पूँछ्यो वृतंत सु पर्म ॥२०२
 पित्रव्य^९ विदुर पवित्र, तिह दरस चाहत तत्र ।
 धतराष्ट्र बोले धीर, वन इहीं विचरत वीर ॥२०३
 नही ताही है यित नेम, तपसी विरक्तही तेम^{१०} ।
 कहुं ब्रैठ ठौर इकंत, आराध भक्ति अनंत ॥२०४
 नून प्रथम दिन इह जाँन, दिन दूसरं सुख-दाँन ।
 गंगा सु जावत गेल, मन तनहि घोवन मेल ॥२०५
 मिल गये विदुर महान, जिह वरस दोनी जाँन ।
 कर जोर बंदन कीन, पुन धर्म नृप प्रवीन^{११} ॥२०६

१ मोह । २ कोप । ३ निवृत्ति=निवृत्त । ४ धतराष्ट्र की पत्नी सीवली,
 पारधारी । ५ तपस्या । ६ वृत्त । ७ अर्धजाती=क्षत्री । ८ युधिष्ठिर ।
 ९ पित्रव्य=बाबा । १० बह । ११ प्रवीण=वेद्य, चतुर ।

जहाँ बिदुर 'निकसी जोत^१, द्रग लखत सबही उदोत^२ ।
 मिल जुजुष्टर तन माँहि, सो गई बदन समाय ॥२०७
 जिह दाह^४ कारन जाँन, उपलाद^३ ईधन आँन ।
 जब भई जिह लख जेम, आकास-बानी ऐम ॥२०८
 नही देहु दाघ^५ नरेस, इह पर्म हंस असेस ।
 जब जिय जुजुष्टर जान, सुरनदी करकै स्नान ॥२०९
 तत आय आत्म ताम, पितु मात कीय परनाँम ।
 अतराष्ट्र धर धीर, सुन बिदुर त्याग सरीर ॥२१०
 पूछी सु नृप जुत प्रेम, जिह कही देखी जेम ।
 जब व्यास अवसर जाँन, मुनि कालकर्म^६ महान ॥२११
 आये सुजन केऊ और, ठिक जहाँ आत्म ठौर ।
 जब बादरायन^७ जाँन, कुंती कह्यौ तज काँन ॥२१२
 सुत जन्यौ रवि सँ सोय, हथ भयौ परबस होय ।
 तिह मुख दिखावहु तात, मन मोद मानहूँ मात ॥२१३
 जब सुबलजा कहि जाहि, मैं सुजोधत^८ की माय ।
 निज पुत्र आनन नेह, अभिलाष नैनन एह ॥२१४
 तब कहि सुभद्रा तात, मैं कुँवर अभमन-मात ।
 सिसु हन्यौ दुज्जन सोय, मुख तिह दिखावहु मोहि ॥२१५
 सुन बादरायन स्नान, धर जोग माया ध्यान ।
 सब को दिखाये संग, जो मरे बीचहि जंग ॥२१६
 पुन कीय बिसर्जन पेल, अभिलाष पूर असेख ।
 सब करत व्यास सराह, उर जोगबल अवगाह ॥२१७
 गये व्यासहूँ बन ग्रह, द्रग मोद सबकाँ देह ।
 पितु मात अग्या पाय, सब भवन चलेउ सिधाय ॥२१८
 गये जुजुष्टर कर गाँन, अह^९ तीन पाछै आँन ।
 बिकराल आग बलाय, तागी सु तिह थल लाय ॥२१९
 अतराष्ट्र जुत अरधंग, अरु जरचौ कुंती अंग ।
 इहि बच्यौ संजय एक, लाचार बिध कै लेख ॥२२०

१ ज्योति=प्रकाश । २ उद्योत, उदित । ३ उपलादि=गोबर के उपले आदि ।
 ४ दाह । ५ कालकर्मा=नारद (?) । ६ ध्यास । ७ सुजोधन=दुर्योधन । ८ दिन ।

जो गयौ तीरथ जात, अत देख कं उतपात ।
 इह कही नारद आय, सुत धर्म कौ समुभाय ॥२२१
 कीय सोक सुनकं कथ्य, सुख दुखः भावी सथ्य ।
 भये जब ही कुरु भारथ्य, छतीस हायन^१ छत्त^२ ॥२२२
 मदरा पीयै बस मोह, दल बन्धौ जादव द्रोह ।
 ह्वै^३ सूढ अपने हाथ, सब ही कटे इक साथ ॥२२३
 पुन क्रस्न बारुनी-पेय^३, दुख इही त्यागी देह ।
 बसुदेव सुन इह बात, तन त्याग कीनौ तात ॥२२४
 अरजुन गयौ अकुलाय, परभास क्षेत्र पलाय^४ ।
 समपराबिक^५ इह सुद्ध अंतहुँ क्रोया कर उद्ध ॥२२५
 अठ रांनीयै-पट अंग, सो जरी क्रस्नहीं संग ।
 रेवत-सुता^६ बलराम, लै जरी सग ललाँम ॥२२६
 पुन द्वारका गये पाथ, सब जननि कारन साथ ।
 अबरोध^७ सहित उदास, बिद्य जुक्त दै विसवास ॥२२७
 सब काँ निकासत साथ, पाथोद^८ उभले पाथ^९ ।
 लीय पुरी ताही लील, इहि भयौ तहाँ असलील ॥२२८
 लै चलयौ सब कौ लार, मग इंद्रपस्थ मभार ।
 पुन मिले बीच पुलंद^{१०}, द्रढ घेर कीनौ द्रद ॥२२९
 लीय लूट कं संग लाग, उर सोक बाढी आग ।
 नर^{११} इंद्रपस्थ निकेत, हीय हेर कं कर हेत ॥२३०
 अनरुद्ध सुवन^{१२} अनूप, भल बज्र^{१३} कीनौ भूप ।
 पुर हस्थना गये पाथ, इहि कह्यौ सब उतपात ॥२३१

दोहा—

व्यास कही बहु बारता, मेटन लोक महान ।
 व्यास किरौटी^{१४} बचन सुन, पुन कीय प्रस्न प्रमान ॥२३२
 मग आवत तसकर^{१५} मिले, करी लूट तज काँन ।
 कहा कहूँ मेरी कथा, हुई सकल बल हाँन ॥२३३

१ वर्ष । २ द्यतीत । ३ मदिरा पीने वाले = बलराम । ४ पलायन कर = भाग
 कर । ५ अन्त क्रिया । ६ रोहिणी । ७ जनाना, रनिबास । ८ समुद्र ।
 ९ जल । १० पुलिन्द = मील । ११ अर्जुन । १२ सुत, पुत्र । १३ नाम (१) ।
 १४ अर्जुन । १५ तस्कर = चोर, डाकू ।

उत्तर दीनों व्यास इहि, नर सुनहु निरधार ।

गये नारायन संग गयो, उर सज को आधार ॥२३४

जब नारायन जनमहै, अवतरहै नर आय ।

कहै तोर पराक्रमहु, निसचय जाँनु न्याय ॥२३५

छंद हयनापुर पथ्य गयो हलकै, महाराज जुजुष्टर साँ मिलकै ।

ओटक- कर जोर हकीकत क्रस्रन कही, सुन लीन जुजुष्टर बात सही ॥२३६

जिस देह रही जीय जावत पै, पिछतावत थाह न पावत पै ।

सिसि^१ जोत सरोज समाजहु कौ, जिम राह गह्यो दुजराजहो^२ कौ ॥२३७

बहुरै रितु दीसत है बरसा, निरबद्धर बिद्धत^३ जाँन निसा ।

अरु आवत बूड़ीय ज्यौं अध में, नवका कहु साह पयोनिध में ॥२३८

मनु सेस^४ गई फन तें मन^५ ज्यौं, धनवत कौ चोर लयो धन ज्यौं ।

सुकीया मनु सीलवतो सतिही, परदेस में छाँड़ चलयौ पति हो ॥२३९

रनवास सबै सुन रोवत है, निज नैनन नीर निचोवत है ।

उमड़े द्रुपदी अत आँसुरबा, धुर के मनु आय भुके धुरबा^६ ॥२४०

रसना इक क्रस्रनही क्रस्रन रटै, कहौ क्रस्रन बिना दुख कौन कटै ।

खवनाँ सुभद्रा ईह बात सुनी, बिललावत सोक बड़ी बँहनी^७ ॥२४१

बनधार मनौ सफरी^८ बिछुरी, धन के रस^९ तैरत डूबी घरी ।

महाराज जुजुष्टर कौन मतौ, चित तै बहजाय कै सोक छतौ ॥२४२

सब मंत्रिन बोल समाजन कौं, लीय कुंकुम थारीय लाजन^{१०} कौं ।

हीय माभु बिचार घनै हित कै, कोय चर्वक^{११} भाल परोछत कै ॥२४४

अनु बछर सो छब-तीसई^{१२} तै, छितराज कोयौ ध्रमराज छतै ।

जोई छोड़ चलयौ हरि जावत ही, गुन क्रस्रनही के पुन गावत हो ॥२४५

तत भ्रात गये द्रुपदा तरुनी, धर ध्यान हिमाचल की घरनी ।

तहाँ जाय कै त्याग कीयौ तन कौं, क्रम क्रस्रन लगाय जिहीं मन कौं ॥२४६

छित^{१३} में भयो राज परोछत कौ, बिध नीत लहै परजा^{१४} बित^{१५} कौं ।

परबछ्छर साठ बित्तौत परै, धर भूप रह्यौ सोइ छत्र धरै ॥२४७

१ शशि = चन्द्र । २ द्विजराज = चन्द्र । ३ बिद्धत = बिजली । ४ शेषनाग ।
५ मणि । ६ छोटे बावल । ७ भगिनी = बहिन । ८ शफरी = मछली । ९ जल ।
१० लाजा = अमृत, चावल । ११ तिलक । १२ छत्तीस । १३ क्षिति = पृथ्वी ।
१४ प्रजा । १५ विस = धन ।

तट गग चिता रच ताहिय कौ, अगनी कीय दाहन वाहीय कौ ।
 जनमेजय बालक जाँन जीया, कुल प्रोहित भूपत कोन कीया ॥२७४
 तदनंतर देख महरत कौं, सुभ काल परीछत के सुत कौं ।
 जन मंत्रि मिले जनमेजय कौं, उर साभ विचार कै आसय^१ कौं ॥२७५
 थिर राज-सिंहासन थर्य दीयो, क्रत कुंकुम चर्चक भाल कीयो ।
 हथनापुर देस सबै हरषा, वरषे अत्रद्राह मनी वरषा ॥२७६
 घनुबेद क्रपा क्रपधारन तै, कुल रीत पढ्यौ नृप कारन तै ।
 जिह कै सतसोल जुजुष्टर ज्यौं, वपु जाँन बरिष्ट बक्रोदर ज्यौं ॥२७७
 गुरुकर्म विसारद वीर गनौ, मृघ बाँन सरासन जिस्तु^२ मनी ।
 सहदेव प्रबुद्ध-पनै^३ सरसै, दुत-रूप ज्युहीं नाकुल दरसै ॥२७८
 दुहिता पुन कासीधराज दई, नयनी-अघ नारीय बेस नई ।
 ब्रिहरै नृप मंदर वागन कौ, रुचि पाय सुनै कहूँ रागन कौं ॥२७९
 परजा नय-रीत सौं पालन में, लहि कै सुख संपत लालन में ।
 गन मंत्रीय सूर विदग्ध गुनी, निज कारज राज बड़े निमुनी ॥२८०
 नृप मंत्रन सीख लहै नित ही, जन मंत्रीय सासन लेत जिही ।
 परजा बड़ वैभव नीति पखै, सठ धूरत चोर न बोल सकै ॥२८१
 जनमेजय राज बढ्यौ जगती, पितु ज्यौं नयनीत सहाँ प्रभुती ।

बोहा— येक कथा यैसी भई, वही समय बिच आय ।
 महिला गुरु ऊतंक मुनि, हुकम दीयो हरकाय ॥२८२
 कुंडल इक रानी अमुक, सोहि आँन दै मित्त ।
 मुनि चाले रानी मिली, वह दाय कुंडल अथ ॥२८३
 आवत लै कुंडल उलट, मग सरवर तट मेल ।
 मंजन हित ऊतंक मुनि, करत रहे जल-केल^४ ॥२८४

छंद इह अवसर तक्षक जहाँ आयीं, पहन आप कुंडल सुख पायो ।
 द्वेषक्षरी- मुनि ऊतंक आये इतने में, तसकर करम कीयो तितने में ॥२८५
 वहु प्रकार कोनी मुनि विनती, गने कहासग ताको गिनती ।
 जव दीने मुसकल ते जाकां, सरसे मुनि मन में लख ता कां ॥२८६

१ आशय = रहस्य । २ जिष्णु = प्रज्वल । ३ पाण्डित्य । ४ जलकेल = जलक्रीडा ।

अन्न अपराध करी उपहांसी, उपजी हिय मुनि अमित उदासी ।
 बैर-भाव तिह दिन तें बाढ्यौ, देखौ छली परीछत दाढ्यौ ॥२८७
 इह जनमेजय बाल अग्यानी, जब तें अब तौ लई जवानी ।
 किंहे कारन भए ऐसे कातर^२, पितु कौ बैर गयो सो पांतर^३ ॥२८८
 मिल नृप बैर लेंहुंगौ में हूँ, दोष जताय जायक दैहूँ ।
 इह कर मतीं नृपत ढिग आयौ, जनमेजय कौ सुवत जगायौ ॥२८९
 कह्यौ नृपत तुम बैठे कैसे, जागतहू सोवत पुन जसैं ।
 काज अकाज गिनतही एक, प्रीय अप्रीय हीय समहीं परेखै ॥२९०
 सज्जन दुज्जन येक समाना, जानत कैसे भये अजाना ।
 जब बोले मुनि सौं जनमेजय, रहस कहूँ भूले सोई रय ॥२९१
 पूछहु मंत्रिन काज पधारौ, महाराज तोह पितु कौ मारौ ।
 जनमेजय सां कही मंत्रिजन, या मैं कहा तक्षक कौ श्रीगुन ॥२९२
 द्वजवर श्राप भूप कौ दोनौं, कारन पाय हथन^४ तिह कीनौ ।
 बोले मुनि उतंक जन बांनीं, राज सुनहु मंत्रिन रजधानी ॥२९३
 कस्यप चले जिवावन कारन, इह नह कीनौ कहा अकारन ।
 बित दैकै ताही बगदायौ^५, आप छली हथनापुर आयौ ॥२९४
 क्रतंम द्वज ताके हित कीनै, छल ताकें तुमने नही चीनै ।
 दंड मिलै बिन दोरघ द्रोही, कहा सअथपन कहहु सकोही ॥२९५
 इह सुन भई सकल मति ऊनी, मंत्री साध रहे नृप मूनी^६ ।
 मुनि उतंक मतिवान महाना, धरम-साख कौ कीय हीय ध्याना ॥२९६
 समुझहु राजा बात सयानी, है यामें तुमरी बहु हानी ।
 पुत्र लहै नहि बैर पिता कौ, जीवन निसफल जानहु जा कौ ॥२९७
 इह कारन देखत पितु अटके, भूप फिरौ कहा भटके भटके ।
 जिग अंबा कीजै जाही में, अहि तक्षक होंमहु याही में ॥२९८
 बैर करहुगे जवही निबेरी, तब मुक्ति पैहै पितु तेरी ।
 इह सुन राजा लीन उदासी, पुन मंत्रिन कौं बात प्रकासी ॥२९९
 सामग्री तुम जिग्य सुधारौ, बैर पिता कौ लैन विचारौ ।
 राजा हुकम दीयौ जिह रीती, पुन मंत्री लाये परतीती^७ ॥३००

१ डस लिखा । २ भयभीत, विह्वल । ३ भूल । ४ हनन = मारना । ५ वापस कर
 दिया । ६ मोन । ७. प्रतीति = विश्वास ।

मृगीया हित भूप गयो वन में, सति मूढ़ भयो उपजी मन में ।
 मुनि ध्यानीय देख कै कंठ मही, अरुभाय दीयो इक मृत्यु अही^१ ॥२४८
 मुनि की तँऊ नाहीं समाध मिटी, गव जात लख्यौ सुत ताहि घटी ।
 अति क्रोध भयो तिह तँ उर में, कहि कै जल अंजुली लै कर में ॥२४९
 कुमती पितु सो अपमान करचौ धमनो^२ पवनासन^३ ताहि धरचौ ।
 वह दुष्ट सही जमलोक बसै, दिन सप्त तक्षक प्राय डसै ॥२५०
 सोइ श्राप उदंत^४ नरिद्र सुनी, घट ताहि उपज्जीय पीर घनी ।
 तिह धीसख बोल लीये तबही, कहा कीजीयै ताहि उपाय कही ॥२५१
 मिल मंत्रिन मंत्र बिचार महां, कर संमत कै मुख गौर कहा ।
 मुन श्राप क्षमापन मागन कौं, गविजात के जाबहु आंगन कौं ॥२५२
 मुन कौं उत भेज कही मिल कै, हितगार रु आय किते हल कै ।
 खत जालीय मूढ़ सँकेतन में, नृप बैठ निकेत इकतन में ॥२५३
 श्रवना इह कस्यप बात सुनी, मिखहारक^५ मंत्र अभंग्य^६ सुनी ।
 चित में बित की कर चाह बले, मग में तिह तक्षक आय मिले ॥२५४
 कर विप्र कौ रूप तिहीं कपटी, छलि कस्यप पूँछ उदंत छटी ।
 जुत आतुरता कँहाँ जावत है, कछु कारज सोहि कहावत है ॥२५५
 कहुँ मित्र सुन्यौ नृप काटन कौं, द्रुत तक्षक के विष दाटन^७ कौं ।
 हम जात परीक्षत के हित कौं, बहुरै बहु लावहिगे बित कौं ॥२५६
 इन तँ दुज बोलहु होय अही, निसचै सिध कारज तोहि नहीं ।
 हम काँ तुम जानोय तक्षकहू, सुन लीजीयै बात सपक्षकहू ॥२५७
 जिह काटहिगे सोऊ फेर जीयै, कोउ कोटक मंत्र इलाज करं ।
 कहि कै वट वृक्ष कौं काटतहीं, इह भस्म भयो उतपाटत हीं ॥२५८
 इस वृक्ष कौ फेर उगावहिगे, जब तौ समहू^८ विष जावहिगे ।
 जब कस्यप हात^९ लयी जल कौं, थित सौंचत हीं वट के थल कौं ॥२५९
 वट पल्लव पत्र सहेत वन्यौ, गरुआई^{१०} में तक्षक विप्र गन्यौ ।
 अहि विप्र कह्यौ सुनोयं अरजी, मनवंचत है धन सौं मुरजी ॥२६०

१ अहि = सर्प । २ गदंन । ३ पवनाशन = सर्प । ४ वृत्तान्त । ५ स्रोत = मार्ग ।
 ६ विषहारक । ७ अभंग्य = प्रमोघ, प्रचूक । ८ मिटाने, उतारने । ९ उतपाटित =
 उतार कर । १० मेरा ही । ११ गौरव ।

हम सौं तुम लै अभिलाष हरौ, करकै सिध कारज गौन करौ ।
 मुनिराज लख्यौ तब ध्यान मंही, नृप की कछु आयु सेस नही ॥२६१
 बित लै द्वज ग्रेहहु काँ बहुरचौ^१, क्रम तक्षक अग्र प्रयाँन करचौ ।
 जब और भुजंग म्वजातन कौं, भट जोर कह्यौ निज भ्रातन कौं ॥२६२
 मुनि स्नाप दीयौ अत क्रूर तै, चिर आयु अजौं^२ नृप मूढ चितै ।
 कर बंध प्रबेसन^३ संध^४ कुटी, करकै बहु जःन दुरचौ^५ कपटी ॥२६३
 अपराध बिना अपकार कीयौ, द्वज ताहितै दाहन स्नाप दीयौ ।
 द्वज दोषीय कौं निसचँ डसहँ, कछु और उपाय करौं सु कहँ ॥२६४
 तुम बिप्र कौ भेष करौ तन मै, पहुचौ सब राज-प्रबेसन में ।
 हम होय क्रमी तनके हख्वा, पहचान सकै नाहिं पाहख्वा^६ ॥२६५
 फल बीच तथा कहु फूलन में, दुर बैठुहुगौ अथवा दल में ।
 अहिजात बिचार कै मंत्र इही, मति मान सुतंत्रहु चित्त नही ॥३६६
 कहि तक्षक औरन व्याज कीयौ, महाराज के धाम कौ मग लियो ।
 पहुचे द्वज ते हथनापुर में, पुन राज गये चल गोपुर में ॥२६७
 तहाँ राज प्रबेसन-पाल^७ तही, कहि कै अटके द्वज क्रत्तम^८ ही ।
 द्वज वृंद कही दरबारिन सौं, कुल रीत तजी किह कारन सौं ॥२६८
 तपसी द्वज द्वार खरे तरसै, सनमानहु दाँन नहीं सरसै ।
 बिन आदर जाय विरादर में, कहा बात कहै चित कादर में ॥२६९
 अरजी तुझ जाय करौ अब हीं, समुभाय कै राजन कौं सब ही ।
 अवकासही दै कहँ आवन कौं, मुरजी कहु भेंट मगावन कौं ॥२७०
 कहै भूप सोई हम आय कहौ, अन आदर होत उदास अहौ ।
 सुन कै इह बिप्रन बात सही, कहु जाय हकीकत भूप कही ॥२७१
 जीय जाँनतै भेंट चही जिन तै, वहँ आय कही तिह बिप्रन तै ।
 द्वज भेंट जबै फल फूल दये, निज आदरतंसोई भूप लये ॥२७२
 फल बीच क्रमी^९ सोई होय फनी^{१०}, नृप कौ वपु काट चल्यौ निगुनी ।
 हथनापुर हा-रव^{११} घोर हुयो, गहिकै अहिराजन गैल गयो ॥२७३

१ वापस गया । २ अद्यापि = अब भी । ३ प्रवेशन = घुसना । ४ संधि = जोड़, छिद्र ।
 ५ छुप गया । ६ पहरेदार । ७ द्वारपाल । ८ कुत्रिम = बनावटी । ९ कुमि = लट ।
 १० फणी = सर्क । ११ हारव = हाहाकार ।

सुच गंगा-तट भूम सँवारी, मंडिप छायाँ ताहि मझारी ।
 सत सतंभ^१ कीनी जिगसाला^२, वेदी कुंड बनाय विसाला ॥३०१
 होता मुनि उतंक जहाँ होई, जारन लये नाग-कुल जोई ।
 भए कुलाहल^३ जहाँ भयंकर, कुल नागन सह कोय खयंकर^४ ॥३०२
 तक्षक भाग जल्यौ सुन ताही, सरन इंद्र तज सकल सिधाई ।
 सक्र ताहि कौँ अभय सुनायौ, उर विसास कर नही अकुलायौ ॥३०३
 सुन उतंक जनमेजय साँनी, इंद्र सहित जारहु अभिमानी ।
 इह प्रयोग सुन भागौ श्रातुर, कौंसक^५ सरन छाँड़ कै कातर ॥३०४
 सरन लयौ अस्तिक मुनि सोई, दुरच्यौ जाय सोई नरपत द्रोही ।
 मुनि ढिग आय अरथना^६ मंगी, इह सुन भूप करी क्रत अंगी ॥३०५
 कीजँ जग्य बंध मुनि कहिऊ, रिष बानी सुन नृप चुप रहिऊ ।
 है यामें तुसरी नही हाँनी, बात विचार लेहु विग्याँनी ॥३०६
 श्रौगुन पै गुन कौँ उपकारा, सब कोई जानत संसारा ।
 मुनि की बात नृपत सुन माँनी, जिग्य बंध कीनी जीय जाँनी ॥३०७
 पुन आये मुनि बैसंपायन, भारथ श्रवन कराय सुभायन ।
 तउ मन नृपत विकल्प न त्याग्यौ, अरु दरसन व्यास ही अनुराग्यौ ॥३०८
 विनती कर नृप व्यास बुलाये, अनुकंपा^७ करकै तहाँ आये ।
 कर पूजा वंदन पद कीनी, दरसन कहौ परम हित कीनी ॥३०९
 मै कछु पूँछ्यौ चहत महाँना, दीजँ तिह उत्तर कह दाँना ।
 भासन सुन्यौ भली विष भारथ, पुन छत्रिन जान्यौ पुरसारथ ॥३१०
 पितु मो मृतु अकाल ही पाई, इह संका मेरे मन आई ।
 रन में मृतक होत तौ रुरौ, पद मुकुती भेटत भरपूरौ ॥३११
 विषवत मुकती हेत बतावँ, जीय संका मेरी मिट जावँ ।
 पारासरीय जान पितु-प्रीती, निगम पंथ जानी नृप नीती ॥३१२
 उत्तर दीयी व्यास सुन ऐसौ, इमृतरस ही भागवत ऐसौ ।
 प्रीय पुरान सुकदेव पढ़ायौ, मन कौँ तातँ भरम मिटायौ ॥३१३
 भारथ स्ववन कीयी तुम भूपहि, अरु दीनँ बहु दान अनूपहि ।
 तुम कीनी पूजा बहुतेरी, कर कर भाव बहुत मुनिकेरी ॥३१४

१ स्तंभ । २ यज्ञशाला । ३ कीलाहल = शोरगुल, हाहाकार । ४ खयंकर = नाश करने वाले । ५ कौंसिक, इंद्र । ६ अरथना = प्रायश्चित्त । ७ दया ।

येक पिता कहा तरे अनता, माता पिता पक्ष धीमंता^१ ।
 सुनै भागवत कथा सयानै, जोय संका मिटहै हीय जानै ॥३१५॥
 सब पुरान की सार सुधासम^२, आद अंत सो लखहु अनूकम^३ ।
 मडप येक बनावहु तामहि, सुनहु भागवत बैठ सभा सहि ॥३१६॥

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

तृतीय स्कंध

छंद मुक्तादाम

सुने नृप व्यास के वायक स्रान, बनायहु मंडप तान बितान ।
खरे कीय तासहि केलीय खंभ, अनूपम चंदन पल्लव अंब ॥१
मिलाय कै लायकै पूलन माल, मढी बहु द्वारन वंदनमाल ।
नहायकै अंगन गग के नीर, बसू^१ सुच कीन सहा बरवीर ॥२
रची तिह ऊपरहू फिर रेख, बिचित्रहु चित्र अबीर विसेख ।
कहूँ मृग-चर्म कुसासन कीन, जुपै कहु तल्प^२ पटांबर भीन ॥३
जथा जिह आसन जाँनेउ जोग, लहे नृप सासन ज्ञानीय लोग ।
ठये सब आपनी आपनी ठौर, आमात्यहु आतहु जातहु और ॥४
मिले कैऊ चाहिकै आय मुनिद्र, बिचछन छाया रहे जनबृंद ।
जमाय के ऊरध आसन जास, बिराजेऊ जाही के ऊपर व्यास ॥५
जहाँ नृप प्रसन्न करचौ कर जोर, निहार कै व्यास की ओर निहोर ।
जथा कछु भाखहु देवीय जग्य, अनंदत होय सब सुन अग्य ॥६
प्रकासहु देवीय भेव पुरान, कहो यहँ देवीय है पुन कौन ।
भई ऊतपति कहा गुन भेस, प्रकासहु रूप जिहीं परबेस^३ ॥७
वही फिर जग्य कौ कौन बिधान, निरंतर जाँनहूँ काज निदान ।
मँडी बृहमंड^४ की जा बिच मंड, उपज्जीय कारन तै किह अंड ॥८
त्रहँ गुन^५ देव भये पुन तीन, इही जग राचत कौन अधीन ।
चिरायुस है किधु आयुस छेह, दहै सुख दुःखन ता कहँ देह ६ ॥९
बिभूतीय है कहाँ देवन वास, इहै ऊर जाँनन की अभीलास ।
दसिद्रीय द्रव्यन की समुदाय, बने तन सप्तक धातु बसाय ॥१०
बिलछन है इन तँ कहूँ वेष, विचार कै कारन आदं विसेष ।
जिते हम प्रसन्न कीये सुन जास, विचार कै ऊतर देवहु व्यास ॥११

कहे दुईपायन भूप कथंन, सुने हम प्रस्न भये सुप्रसंन ।
 जजात के वंस की रीत कौं जाँन, भये तुम आय उदै जनु भाँन ॥११
 ईहै ऊर संक उपज्जोय आय, तबै मुनि नारद पूछीय ताहि ।
 कही हमहुँ प्रत^१ नारद कथ्य, सुनावत ताहीय कौं इक सथ्य ॥१३
 समै^२ ईक नारद आय मुनेस, बिसारद बुद्ध बिचार बिसेस ।
 जिहीं हम पूछीय [एक]^३ जबाब, सुनावहु उत्तर माहि सताब ॥१४
 इहीं बृहमंड भई उतपत्य, निरंतर नित्य इहै क अनत्य^४ ।
 इहै करता बिध^५ श्रीधर^६ ईस^७, सुभाखत केक^८ सहस्रक सीस ॥१५
 कहै कोऊ सूरज कौं सिसी केक, बिनायक^९ स्याहिक पाय बिबेक ।
 बृखा^{१०} इक-पिग^{११} परंजन^{१२} वाय, सवारत स्रष्ट ही काल सुभाय ॥१६
 कहै कोऊ कर्मही कौं करतार, निरंजन केक कहै निरधार ।
 कोऊ कह प्रकृति ही करनीय, जोई परपत्र उपाजत जोय ॥१७
 सदाँ उर अंतर पाय सँदेह, दहै दुःख ताप हृदै^{१३} मम देह ।
 थिरावत नाहन^{१४} एकहु ठौर, भयो मन पोत^{१५} समुद्रहु भौर ॥१८
 अधर्महु धर्म न जानत एक, अकर्महु कर्मन कौं अवरेख ।
 हटै इंह भर्म^{१६} जितै नही हीय, करै कहा पम तितै करनीय ॥१९
 भयो उदयान त्रकामन भाव, निकेतन केतन के पट न्याव ।
 करौ ऊर संसय-हीन कपाल, बिचार कै आरत बुद्ध विसाल ॥२०
 सुनी मम नारद कथ्य सुजाँन, प्रकासीय उत्तर एह प्रधान ।
 पिता बिध मोरहु तैं तिह प्रस्न, ईहीं गत जाँन कीयौ मति ऊस्न^{१७} ॥२१
 जबै समुझाय कही पितु जाहि, तिहीं सुत सोव बिचारहु ताहि ।
 ईहां नही रागीय कौ अधिकार, बिरागीय जाँनत जाहि बिचार ॥२२
 कह्यौ इतीहास तिहीं सुन काँन, धरचौ ऊर अंतर ताही कौ ध्यान ।
 भयो जग पूरब-काल में भंग, सोई जललीन भयो ईकसंग ॥२३
 नहीं रहे सूरज ईदु^{१८} नछत्र, तहाँ कोऊ बिबन देखेऊ तत्र ।
 बढी चित चितन चित्त बिसेष, अघारह^{१९} पंकज दीसत एक ॥२४

१ प्रति । २ समय । ३ मूल प्रति में अस्पष्ट है । ४ अनित्य । ५ बिधि = ब्रह्मा । ६ विष्णु ।
 ७ महेश । ८ कोई । ९ गणेश । १० इन्द्र । ११ कुबेर । १२ वरुण । १३ हृदय ।
 १४ नहीं । १५ जहाज । १६ भ्रम । १७ उज्ज्वल—उप बुद्धिमान । १८ इन्दु = चन्द्र । १९ आधार ।

विचार कै देख चहुँ दिस बार^१, इहै मम आसन कोन अघार ।
 रहे हीय सोचत एहु रहस^२, समापत ह्वै गये अब्द^३ सहस^४ ॥२५
 अई नभ वाँनीय साँनन भाँन, गहौ तप देह लही हीय ग्याँन ।
 कीयो तप अब्द सहस करूर, प्रकासत फेर गिरा भई पूर ॥२६
 ऊपावहु^५ खष्ट सपष्ट अबेर^६, विचार कै उद्यत ह्वै तिह बेर ।
 ईतै मधु कैंडभ दाँनव आय, कीये भयभीत महाबल काय ॥२७
 चले हम पंकज-नालीय चाह, अभितर^७ बुद्धि हीयै अवगाह ।
 लखे तब लोचन कंज ललाँम, सुवासित पीत जहाँ घनस्याँम ॥२८
 ऊजागर सागर के अयनीय, सोई हरि सेख^८ रजे^९ सयनीय ।
 सुदसन चक्र गदा अरु संख, निरंतर पद्य सुधार निसंक ॥२९
 लहै सुख जोग-प्रमीलाय^{१०} लीन, प्रभू सोइ पौँढ रहे भुज पीन ।
 जुहारीय जोग सु नींद^{११} जगाय, भई थित अंबर गेहि सुभाय ॥३०
 तहाँ हरि जाग कै ऊठ तुरंत, विचार कै मोहीय सौं विस्तंत^{१२} ।
 अरे मधु कैंडभ सौं अवगाहि, करचौ सिर चक्र सौं दारत काय ॥३१
 महेसहु आय मिले सुरमौर, ऊजागर^{१३} रूप लख्यौ इक और ।
 मनोहर देवीय सूरत मूल, थिती जग कारन सूक्ष्म थूल ॥३२
 जिही सु प्रसन करी कर जोर, बिलोक कै बायक बोल बहोर^{१४} ।
 करी अहु देव^{१५} विचार कै काँम, तिहीं फिर उत्पत पालन ताँम ॥३३
 तथा लय आद अनुक्रम तीन, प्रकासहुँ आय तँ आप प्रवीन ।
 कही हम तीनहुँ नै फिर कथ्य, थिर गुन-मात्रन इंद्रीय थित ॥३४
 विभूतीय भूतन कौ कहु भेद, विचारन भाव कहै निरबेद ।
 मगाय कै अतम एक विमान, अरौह कै^{१६} संग चढी असमान ॥३५
 लीयै हम तीनहुँ देवन लार, विमान में देखत जात बहार ।
 भये जल पार लही थल भूम, लखे तरु फूलनहू फल लूम ॥३६
 विहंगम कुँजत संजुल वृंद, मधुकर फूल गहै मकरंद ।
 अनुक्रम कांतर^{१७} स्रग उतंग, तरंगनी तोय तड़ाग तरंग ॥३७

१ बारि = बल । २ रहस्य । ३ वर्ष । ४ सहस्र = हजार । ५ उत्पन्न करो ।
 ६ प्रविलम्ब । ७ अभ्यन्तर = मन्व्य । ८ शेषनाग । ९ सुशोभित । १० योगप्रमीला =
 योगनिद्रा । ११ निद्रा । १२ वृत्तान्त । १३ ऊजागर = ऊज्वल । १४ फिर ।
 १५ विदेव — ब्रह्मा, विष्णु, महेश । १६ आरोह कर = चढ़कर । १७ फान्तर = वन ।

बने उदपा(या)न^१ सु बापीय^२ बेस, पसू नर नार सु पुञ्जत पेस ।
निहारीय नैनन एक नरिद, बिमान पै संग त्रीयाजन वृंद ॥३८
निहारेऊ देवीय संग नरेस, बिमान में ताही कै जाँन बिसेस ।
चलावत जावत यान चछोह, मही चित देख उपज्जीय मोहि ॥३९
चले कछू अग्र बढी उर चाह, तितै बन नंदन देखीय ताहि ।
विलोकीय फूल जितै कलवृक्ष^३, सरोजहु नीर नदी सर स्वच्छ ॥४०
अपछर गंध्रव किन्नर आँन, मनोहर सामुँज औ मधवाँन^४ ।
परंजन और लखे इकपिंग, प्रकाशत पावक सोम पतंग^५ ॥४१
घनास्रय^६ बीच रहे हम घूम, भई द्रग गोचर उत्तम भूम ।
जहाँ विधलोक परचौ द्रिग जाय, लखे चतुरानन चित्त लगाय ॥४२
बढे फिर ताहि तै अग्र बिमान, पंचानन सिंभु लखे दस-पान^७ ।
सिलोचय^८ दिव्य लख्यौ कईलास^९, प्रभा चहूँ और रही परकास ॥४३
अवाजन बाजन की चहु और, सुनें जय-सब्द नमो मम सोर ।
चले फिर आन^{१०} चछोह चलाय, लखो बघकंठ पुरी चित लाय ॥४४
फबै तन स्याँम उमा^{११} रंग फूल, दिपै पर चाहीय पीत दुकूल^{१२} ।
भुजा चहु दिव्य अलंकृत भेस, विराजत बिस्तु सनातन बेस ॥४५
गये तिह देखत देखत गेल, सुधादध द्रष्ट परे बने सैल ।
रमै जल जंतु किते रमनीय, करे रब^{१३} कोकलहू कमनीय ॥४६
मिले ध्वन चातक हंस मयूर, रटै चलचंच^{१४} फलादन रुर ।
मनोहर तल्प रही इक मंड, अमोलख अंबर भीन अखंड ॥४७
तहाँ इक ऊतम बैठीय तीय, कीयै पट धारनहू कमनीय ।
मजिष्ठहु^{१५} रंगत फूलन माल, विराजत रंजन बैदीय भाल ॥४८
सुलोचन रोहित^{१६} संघ सरोज, उदंचत उन्नत पीन^{१७} ऊरोज^{१८} ।
रजै तल हाथ ऊदंबर रंग, सुहावन अंग्रीय^{१९} मूल सुचंग ॥४९
दमंकत विद्वत^{२०} ज्यौँ दृति^{२१} देह, चमंकत भूषन भार अछेह ।
प्रभा परकासत पूरन चंद, मुखा मुसकावत मंदही मंद ॥५०

१ उद्यान=बाग । २ बापी—बावड़ी । ३ कल्पवृक्ष । ४ इन्द्र । ५ सूर्य । ६ आकाश ।
७ पाणि=हाथ । ८ शिलोचय—पर्वत । ९ कलाश । १० यान=जहाज । ११ पावती ।
१२ दुपट्टा, वस्त्र । १३ रब=शब्द । १४ चकोर । १५-१६ लाल । १७ स्थूल ।
१८ उरोज:=स्तन । १९ अंग्रि=चरण । २० विद्युत्=बिजली । २१ दृति ।

ह्यीयंजय पछनि^१ को रद होत, करापता बोलत कीर कपोत ।
 सहस्रक अनन सीरख^२ साँन, प्रकासत नैन सहस्रन पाँन ॥५१
 भये विध ईस सु अद्भुत भाव, कीयी तव श्रीपत एह कहाव ।
 सनातन देवीय आद स्वरूप, इहै जग कारन बोज अनूप ॥५२
 हुई परपंच^३ जब जग हाँन, प्रलै निस पौढ रहे बट पाँन ।
 भई भगवंतीय साँ सम भेंट, अंगुष्ठ कौ पावन काज अमेठ ॥५३
 महा सुद पाय दीयी सुख माँहि, ईहीं हम घावत^४ पोख पसाय ।
 भये अबलंचित^५ नाँहिन भेस, विसास कौ पाय कै ताहि विसेस ॥५४
 करौ अभिबंदन पायक ईस, समाय कै हस्त नमाय कै सीस ।
 कह्यौ हरि जेस करचौ जिहाँ काँम, विरंचन^६ संकर छांड विराम ॥५५
 लहै वरदान ईडा^७ चित लाय, ऊचारत पाय गए ऊमगाय ।
 पलोढत दासि खवासनि पग, सुसीमत सुन्दर रूप समग^८ ॥५६
 निधोनिध^९ बाँनक वेस विचित्र, प्रकासत नैनन बैन पवित्र ।
 फवै रंग अंसुक^{१०} किसुक^{११} फूल, भूकै नव जोबना भूलन भूल ॥५७
 भई त्रहुँ देवन की गत भाय, मिले हुय अँगना^{१२} अँगना माहि ।
 रहे पग सेवन में अनुरत, समापत ह्वं गये बह्छर सत ॥५८
 पलोढत पावन पाव पसाय, लखे नख दर्पनहुँ चित लाय ।
 जहा विध आदक देव जितेक, तहाँ प्रतविब्रत बीच तितेक ॥५९

दोहा—

केतक देखे चमतकृत^{१३}, वरनै कहा विसतार ।
 ऊतपत वित आसन अमल, कमल लख्यौ करतार ॥६०
 सुध भूले जहाँ हमहु सिव, नारिन मिल हुय नार ।
 कहाँ तै आये कौन है, नहीं जाँन्यौ निरधार ॥६१
 रमानाय अस्तुत रची, आराधन अवगाह ।
 प्रेम भक्ति जुत पालनी, नित्य सक्ति निरगाह ॥६२

१ पक्षिगण । २ शीपं = शिर । ३ प्रपंच = जगत् । ४ घ्यावत । ५ प्रमिलाच्छित ।
 ६ प्रदा । ७ स्तुति । ८ समग्र । ९ विविध । १० वस्त्र । ११ पलाश ।
 १२ अङ्गना = स्त्री । १३ चमतकृत = चमत्कार ।

छंद भुजंग प्रयात

बिधात्री तुहीं प्रकृती-रूप बांमा, कल्यांनी सदाँ पूरना चित्तकांमा ।
 तूहीं बृद्ध सिद्धी समृद्धी बसाता, महँ सञ्जदारूपनी^१ आदमाता ॥६३
 सही नित्य संसार-जोनी-स्वरूपा, रचै स्रष्ट कौँ पालना लीन-रूपा ।
 तुहीं स्यांमनी^२ है त्रहँ लोक ता-की, जिही कारनाहू अधिष्ठान जाकी ॥६४
 सदाँ चेतना अर्धमात्रा समाई, हीयंकार ऊँकार ऊर्द्ध रहाई ।
 लख्यौ रूप तेरौ प्रत्यक्ष^३ ललाँमं, धरै रावरी सक्ति संसार धामं ॥६५
 सबै जक्त की जुक्त बिस्तार जाँनी, प्रकासै तुही पिंड कौँ पोष प्राँनी ।
 परा-प्रकृती^४ पौरुषं भोग पासै, कला काँम ते ईस तत्वं प्रकासं ॥६६
 स्थती व्यापकं बृह्म की तूँ सथाई, नहीं तूँ जहाँ ब्रह्म हूँ ना रहाई ।
 रमा रूप तूँब्रह्म ही काँ रमाँबै सता^५ सक्त^६ ह्वै जक्त माही समाबै ॥६७
 प्रभावं सदाँ बिस्व काँ पालना की, छती^७ तूँ रती द्रष्टु लेखै छिमा^८ की ।
 समै-कल्प^९ के तू जबै तल्प सोबै, गती गूढ़ साँ जीव लै अंक^{१०} गोबै^{११} ॥६८
 मधू कँटभं दैते^{१२} कौँ भीत मारे, परे आपदा में असाता पुकारे ।
 छलै तै भयौ चक्र साँ कंठ छेदं, भली भाँत जान्यौ सोई तोर भेदं ॥६९
 दिखायौ मनीदीपहृदिय देसं, बिभौ^{१३} रावरौ जाँन लीनौ बसेसं ।
 त्रीहूँ देव जान्यौ नमै भेव ताकौँ, पिछाँनै कहा और तेरी प्रभा कौँ ॥७०
 दिखाए त्रहूँ देव तै दिव्य द्रष्टी, पिनाकी^{१४} रिषीकेस^{१५} औरै प्रमेष्ठी^{१६} ।
 छते^{१७} हँ तऊ आज लाँ नाहि छीनै^{१८}, किते इंद्र-के-जाल^{१९} ज्यौँ ख्यालं कीनै ॥७१
 करै बंदना जाचना^{२०} केर काजा, चहैचरन की सनहँ^{२१} काँ समाजा ।
 हियै ध्यान तेरौ प्रकासै हमारै, अजा^{२२} आनन^{२३} नाँम तेरौ ऊचारै ॥७२
 चित्तै भावना पुत्र ज्यौँ छत्र छाँही^{२४}, निबाजै हमै पास के दासि नाँही^{२५} ।
 हितू येक तूँ स्वामिनी है हमारी, महंमा कँहाँ लौ कहैगे तुमारी ॥७३
 जनै जक्त कौँ जीव तै सक्त जोई, सुता रावरी साँ करै काँम सोई ।
 जही रीत साँ भूधराधार^{२६} जक्ती^{२७} सुधारी ज्युही भूम-प्राधार सक्ती ॥७४

१ सच्चिद्रूपिणी । २ स्वामिनी । ३ प्रत्यक्ष । ४ परा प्रकृति । ५ सत्ता । ६ शक्ति
 ७ क्षिति । ८ क्षमा । ९ प्रलयकाल । १० गोव, हृदय । ११ गोपन करती है, छुपा
 लेती है । १२ दैत्य । १३ वैभव । १४ शिव । १५ हृषीकेश = विष्णु । १६ परमेष्ठी =
 ब्रह्मा । १७ क्षत । १८ क्षीण । १९ इंद्रजाल = कौतुक । २० याचना ।
 २१ शरण । २२ अजन्मा । २३ आनन = मुख । २४ छत्रछाया । २५ नाई = समान ।
 २६ पर्वताश्रय २७ जगती = पृथ्वी ।

भिरें अंतरीक्षं^१ जिते बिंब^२ भासं, प्रभा चंद्र ध्वांतार^३ में तू प्रकासै ।
 कला चंचला^४ रूप नित्या कुमारी, निलै जोत नौ-जोवना बेस नारी ॥७५
 विभू^५ ब्रह्म कौ तू अदोषं बसावै, अविद्या असौमं ससीमं न आवै ।
 वसै आप्ररूपं हियै होय बिद्या, दिखावै प्रतीभानं^६ तं सक्त दद्या ॥७६
 तुही कीरती काँति लक्ष्मी^७ तु लज्या, लखावै छिमा-रूप तू रूप लज्या ।
 महंमाय तू बेद की आद माता, गनै दक्ष चिद्रूपहू छंद-गाथा ॥७७
 सुधा बुद्धि तू खंवरारूप^८ स्वाहा, प्रमा अद्ध^९ तू ऊद्ध^{१०} वृद्धी प्रबाहा ।
 महानं मन ह्वै मोह पाथोद^{११} मांही, अमै आपै रूप ही कौ भुलां ही ॥७८
 दया देख कं मो अभैदान दीजै, लगू पाय मातेस्वरी सर्न लीजै ।
 सिवा रूपनी भूपनी तू सर्वां ही, हृदये ध्यान तेरो अखंडं रहां हो ॥७९
 प्रसंसा करी बिस्तु त्योंही कपाली, बनै मात ब्रह्मा तुही बेस वाली ।
 तु ही त्रिगुनी तै रचे देव तीनों, पखै ग्यान सौं ह्वै सबहु प्रवीनूं ॥८०
 लजै पालना और तू ही सँघारै, निमंतं ब्रती मात्र आपौं निहारै ।
 कला काम तेरी करै नाम काँकी, रमाँ^{१२} अस्मिता दोष तै दूर राखौ ॥८१
 दसिद्री तुही तत्व पाँचु दिपावै, अहंकार बुद्धी सुभात्र ऊपावै ।
 जनै थावरं जंगम जीव जेतै, तिहारै सबै ख्याल है मात तेते ॥८२
 महानं पंच हू भूत^{१३} की पंचमत्ता^{१४}, सँघारै तु ही एक साँ एक सत्ता ।
 करै पाय तेरी रजा^{१५} काँम केते, अहं बिस्तु लोकेसहू देव एते ॥८३
 तमं-रूप में हूँ सतं-रूपु तसै, उपाये रमाँनाथहू फेर ऐसै ।
 रजो-रूप तै वेद-गर्भ^{१६} रचाये, नटै पुत्तरी^{१७} नाच तेरे नचाये ॥८४
 वतायौ हमहू बिदाँनं बिहारं, लखे लोक अन^{१८} लोकहू केक लारं^{१९} ।
 बृहंमा हरी सिंभु औरै वनाये, नहीं ख्याल तेरे बिना ये निपाये ॥८५
 नियंत्रि^{२०} इदंभाव साँ जाँन लीनी, अली भाँत साँ मात तू प्रेम भीनी ।
 हीयै-अग्यता म्लान कौ दूर हेरी, तरै आद-माया क्रपा पाय तेरी ॥८६

१ आकाश । २ मूर्ध, चन्द्र आदि । ३ ध्वान्तरि=सूर्य । ४ विजली । ५ विभु=व्यापक । ६ प्रतिमा, सामर्थ्ययुक्त । ७ लक्ष्मी । ८ अष्टारूपा । ९ अघः । १० ऊर्ध्व । ११ मोहसागर । १२ अहंभाव । १३ महापञ्चभूत-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश । १४ पंचमता, पञ्चमात्रा । १५ आज्ञा । १६ ब्रह्मा । १७ पुत्रिका=कठ पुतली । १८ अन्ध । १९ कई एक समूह । २० नियंत्रण करने वाली, प्रेरक ।

त्रीया-भाव कौं पाय कौं सोक त्यागे, लखी मात कौं नैन साँ पाय लागे ।
सदाँ सेव तेरी करे नेम सेती, अधारै हीय बोनती जाँन येती ॥८७
जपे जाप त्रैताप^१ इंद्रिीन जीते, कहा जग्य औ दौनहू ध्यान कीते ।
बसै चित्त तेरे न पादारविंदं, ऊपज्जै न निर्वाण^२ जौलौं अनंदं ॥८८

दोहा

करी स्तुती हरी जोर कर, बाँमदेव^३ पद बंद ।
मात नवाक्षर-मंत्र कौं, देहु मेंट दुख-द्वंद^४ ॥८९
दीयो सिंभु कौं भक्ति द्रढ, मंत्र नवाक्षर मात ।
जिही पाय लागे जजन^५, ऊर धर मति अबदात^६ ॥९०
बिनती करी बिरंचहू, मात कीये हिय मोख ।
अस्मिदाद^७ कौं आद लं, दूर गये सब दोख ॥९१
करता जग हमको कहै, पोषत सारंग-पाँन^८ ।
सिंभु ताहि कह संघरत, ये सब परम अर्थाँन^९ ॥९२
करता^{१०} सब तेरी कला, संघरता^{११} पुन सोय ।
जाँनहु पालन रीत जिहि, जीय जाँनी द्रग जीय^{१२} ॥९३
अहंमत मैटी ईश्वरी, किय मीटी ऊपकार ।
हिय कौं हरहु विषाद हम, निगम^{१३} न्यय निरधार ॥९४

छंद भुजंग-प्रयात

कहै अद्वती^{१४} ब्रह्म है येक कोऊ, स्वयं आपकी रूप है दिव्य सोऊ ।
तथाँ और कोऊ जथाँ भिन्नता में, ऊपज्जै हृदं बीच संदेह यामें ॥९५
सुखी हूँ परं धाम नाँही समाबे, घटी-जंत्र^{१५} ज्यौं चित्त-वृत्ती घुमावै ।
बिचारै करी दूर मेरो विषादं, अटी^{१६} हीय अर्थाँनहीं की ऊपाधं ॥९६
दीयो अंबका ऊतरं एह दानं, प्रमेष्टी सुनौ सिद्धता^{१७} की प्रमानं ।
परंमातमा येकहूँ अत-प्रोतं, दहूँ अद्वती-रूप जानौ उदोतं ॥९७

१ त्रिताप—दैहिक, दैविक तथा, भौतिक कष्ट । २ निर्वाण—मोक्ष । ३ शिव । ४ दुःख-द्वन्द्व—जन्म-मरण रूप । ५ यजन—पूजा, याग । ६ उज्वल । ७ अस्मिदादि—अहंभाव । ८ शाङ्गपाणि—विष्णु । ९ अज्ञान—अबोध । १० कर्ता । ११ संहर्ता । १२ देख कर । १३ वेद । १४ अद्वैत । १५ घटीयंत्र—घड़ी, रहट । १६ अटी हुई है, फँली हुई । १७ सिद्धावस्था ।

जतावै कछू भेद अल्पीय जामें, पिछानं सोई धाम निर्वान पामें ।
 अहूँ अद्वती ब्रह्म ना भेद यातें, निहारै कछू भेद उत्पादना तै^१ ॥६८
 ऊजासै सह जोयकै दीप एकौ, उपाधी कहूँ जोग भासै अनेकौ ।
 फुटे एक आदर्श^२ के अंस फेरा, वही एक में बिब दीसै अनेरा^३ ॥६९
 प्रवर्ती^४-ससै भेद एही पिछानौ, जिही कल्प के काल में येक जानौ ।
 प्रवर्ती-ससै रूप बिष्टी^५ प्रकासै, भये एक तै जीव अन्नके भासै ॥१००
 सख्ठी^६ मिलै कल्प सें सृष्ट सारी, नहीं पोरस^७ रूपहू षड^८ नारी ।
 सती श्री धृती कीरती सुमृती हूँ, छिमा और मेधा पिपासा छती^९ हूँ ॥१०१
 दया और क्षुधा लाज्या औ राग तंद्रा, नृतं^{१०} अनृतं^{११} बंचना मोह निद्रा ।
 जरा^{१२} निर्जरा सांती कांती जतावै, बिसेसं अविद्या सुबिद्या बतावै ॥१०२
 असक्ती ससक्ती विचारं अनेका, लहै सप्रहा^{१३} निप्रहा^{१४} कौन लेखा ।
 बसा प्रष्टी^{१५} मज्जा तुचा^{१६} बाक बाँती, कहीं मैं नही सो न मानौ कहाँती ॥१०३
 गनी ब्राह्मी रुद्रो सिवा और गौरी, कुबेरी इंद्रानी कुमारी किसोरी ।
 बराही तथा^{१७} बैस्नवी बारनी हूँ, नृसंधी क्रतंती^{१८} सु नारायनीहूँ ॥१०४
 घरा धारना सीलता बार (रि) धारा, अरू ऊस्नता आग धारै अंगारा ।
 ज्युहीं पांन^{१९} में गौन^{२०} की सक्ति जानौ, महाकास में पोल ज्युहीं प्रमाँनी ॥१०५
 ज्युहीं चंद्र में सूर^{२१} में जोत जागै, इहीं रीत साँ जानीयै भेद आगै ।
 प्रकासै सबै स्रष्टि मेरी प्रभा तं, कलाहीन कोऊ करैगे कहाँ तै ॥१०६
 ब्रह्म देव कौ बोध दीनौ तबै हीं, सुन्यौ अ-द-माया कह्यौ सो सबै ही ।
 रह्यौ नाहि अग्याँन कौ अंस रेहा^{२२}, विचारची कपर्दी^{२३} हीयै विस्तु बेहा ॥१०७
 प्रसनं भये देव देवी-प्रसादं, विसारची जबै ही बिषादं बिबादं ।
 विधाता दई सरसुती दिव्य बाँमा, लई लक्ष्मी तीय विस्तु ललाँमा ॥१०८
 गही सूलपाँनी^{२४} महासक्त गौरी, जुरी तीन हूँ सक्ति की दिव्य जोरी ।
 कहीं अंबका त्रैगुनी त्रष्ट कीजै, रजा पाय कैं दिव्य धामं रचीजै ॥१०९

१ उत्पत्ति । २ प्रादशं = दर्पण । ३ अनेक । ४ प्रवृत्ति । ५ व्यष्टि । ६ समष्टि ।
 ७ पुष्प । ८ षड = नपुंसक । ९ क्षति । १० ऋतं = सत्य । ११ असत्य । १२ वृद्धा-
 वस्था । १३ स्पृहा = इच्छा । १४ निस्पृहा = प्रतिच्छा । १५ पृच्छी । १६ त्वचा =
 चर्म । १७ सू० प्र० में—त्यां हैं । १८ कृतान्त = यमशक्ति । १९ पवन । २० गसन ।
 २१ सूर्य । २२ लेश, रेखा । २३ शिव । २४ शूलपाणि = शिव ।

वहाँ तै बिदा ह्वै चले याँनही पै, मधु-कैटभं आयगे मेदनी^१ पै ।
सबै बीजमंत्रं जप्यौ भक्ति सेती, ऊपाई सबै स्रष्टृ श्वाभाव एतो ॥११०
जगै थावरं जंगमं जीव जेते, त्रहुँ मूरती आद सौं देव तेते ।
प्रकृता बहु त्रैगुनी कौ पसारौ,^२ नहीं जानीयै सक्ति सौं जक्त न्यारौ ॥१११

दोहा

अष्ट-स्रबन^३ उपदेस दीय, नारद प्रतौ निहार ।
प्रस्न कीयौ कर जोर पुन, विध नारद तिह बार ॥११२
सगुन रूप जानौ सुखद, पितु वर राज-प्रसाद ।
निगुन पुरष माया निगुन, अबहि बखानहु आद ॥११४

छंद भुजंग-प्रयात

बिधाता कह्यौ देखकै ब्रह्म-देवा, भली भाँत कैसे लहौ ताहि भेवा ।
नही निर्गुनं रूप कौ पुसं नारी, बिभू रंग रेखा बिना निर्वकारी^४ ॥११४
अरूपं अलेखं कहाँ द्रष्टि आवै, धरै धारना ग्याँन जोगिद्र ध्यावै ।
पिछाँनै कहूँ जाहि विस्वास पा कै, वहीं आखतं जाँन लीजै अजा कै ॥११५
परंमातमाँ सक्ति ही कौ पसारौ, नहीं जानीयै आतमा सक्ति न्यारौ ।
पढै बेद कौ साख बांचै पुराँनं, धरै धारना ग्यान बिग्यान ध्यान ॥११६
समाँधान पायौ नहीं मेट संका, इहीं भर्म की भूल भूल असंखा ।
जुरे थावरं जंगमं जीव जेते, अहंकार सौं हीन जाँनौ न एते ॥११७
असंकार कौ हीय जौलौ अंधारौ, नही निर्गुनं देख सकै जु न्यारौ ।
ईहै मौह की पुत्र मेटौ ऊपाधी, सदाँ सदगुना ध्याँन लावौ समाधी ॥११८
सुन्यौ ब्रह्मदेवं कह्यौ अष्ट-खाँनी, पिता रावरे बाक्य माने प्रमाँनी ।
गुनं रूप कौ बोध दीजै गिरा तै, जधाँ जुक्त की ऊक्त ह्वै मुक्त जातै ॥११९
प्रमेष्टी मुनी कौ सुन्यौ प्रस्न पूरौ, अनूपं गन्यौ ग्यान ही की अँकुरौ^५ ।
गुनूं मै त्रहुँ सक्तिहौ की गुराई^६, क्रीया ग्याँनहू द्रव्य सत्ता कहाई ॥१२०
सुनौ सातुकी^७ है सोई ग्यान-सक्तौ, विचारौ क्रीया राजसी की बिभुक्ती^८ ।
त्युँहीं तामसी द्रव्य की सक्ति तीजी, कतं काज में मुख्य सोई कही जी ॥१२१

१ मेदिनी = पृथ्वी । २ प्रसार । ३ अष्ट-श्रवण = ब्रह्मा । ४ निर्विकारी = विकाररहित ।
५ अंकुर । ६ गुह्यता, बडाई । ७ सात्त्विक । ८ विभुक्ति = विभोग, वैभव ।

उपज्जी तिही पंच-मात्रा ऊधर^१ सं, सुजाँनौ सबदं^२ दिही तै सपर्स^३ ।
 रसं रूप गंधं ऊपज्जी रसा तै, ऊपज्जौ रसं तोय तै श्राय यातै ॥१२२
 ऊदर्वी^४ ऊपज्जे लखौ रूप ऐसै, ऊपज्जै सिपर्स अहीकांत^५ वंसे ।
 सबदं भयौ अंतरीक्षं समानं, बिसै^६ होय उतपन्न इंद्रो विधानं ॥१२३
 अहंकार है ताँससी काँस याकौ, दसूँ कौ नियंता बिचारै दसा कौ ।
 निहारौ सदाँ स्रष्टिहू कौ नियंता, इहीं येकही जानीयै श्राद अंता ॥१२४
 लखी राजसी में क्रीया-सक्त नीकै, समीचीन स्रष्टी बिचारौ सही कै ।
 अधिष्टानं सबदं तुचाहू ऊपाई, रसज्ञा^७ तथाँ चक्षु नासा रचाई ॥१२५
 इहीं जानीयै पाँचहु जाँन इंद्रो, पिछाँनौ ज्युहीं कर्मही की पंचिंद्री ।
 गिरा हस्त श्रौ पाद लिंग गुदा ही, सरीरस्त^८ हैं वायु पांचुँ सदा ही ॥१२६
 ऊपज्जै ज्युहीं प्राँन श्रौरै अप्राँनं, ज्युहीं व्यान उद्या^९ साँमानं^{१०} जानं ।
 इहीं रीत सौँ स्रष्टि एती ऊपज्जै, कछू भेद कौ भाव जामे न किज्जै ॥१२७
 इहै सात्वकी स्रष्ट ज्ञाता उचारै, बनै ज्ञानसक्ती जु तैही बिचारै ।
 दिसा वायु है श्रौर देव दिनेसं, प्रचेता^{११} रिभूवद^{१२} पावै प्रवेसं ॥१२८
 सु है देवता जाँन-इंद्रो समाँनौ, मनं बुद्ध श्रौ चित्त हंकार साँनौ ।
 गनौ चंद्र ब्रह्मा तथा रुद्र ज्ञाता, सुनौ श्रौर क्षेत्रज्ञ ताही सुहाता ॥१२९
 ऊभै स्थूल श्रौ सुक्ष्मं है अर्नाद, परंमातमा नाँहि जामे प्रमादं ।
 वहै है जु थूल सोई ध्यान आव, नहीं सुक्ष्मं जाँन-इंद्रो लखाव ॥१३०
 प्रथमं कह्यौ पंचमत्ता^{१३} प्रवाहं, नियंता जिहीं स्रष्ट पुज्जै निवाहं ।
 पखै पंचहूँ कर्न कै भूत पंचं, प्रकासै सदाँ ईस जा सौँ प्रपंचं ॥१३१

दोहा

तनमात्रा रस कल्पतह, मन में जाहि मिलाय ।
 जब ही जाको रूप जल, थूल तत्व सोई थाय ॥१३२
 प्रथक प्रथक है अंस पुन, जल में कर कै जाहि ।
 मिलै सबही ह्वै रसमई^{१४}, जबही जानहु जाहि ॥१३३

१ ऊदर । २ शब्द । ३ स्पर्श । ४ अग्नि । ५ पवन । ६ विषय । ७ जीम
 ८ सरीरस्थ । ९ उदान । १० समान । ११ वरुण । १२ ऋभुवद्य—देवचिकित्सक,
 पश्चिमीकुमार । १३ पंचमात्रा । १४ रसमयी, पृथ्वी ।

भूतनही के भाग में, चेतन की प्रतिछाँहि ।
अहंकार पुन ऊपजे, मिल के ताही माहि ॥१३४
जाही सौं विसतार जग, नीयंता जु जगनाथ ।
जीवन की उतपत जितो, है ताही के हाथ ॥१३५

छंद द्वंद्वखरी

बोले विध नारद साँ बाँनो, विधवत उतपत स्रष्टि बखाँनी ।
जग चौरासी लक्ष जौन^१ की, है प्रकार जिम क्रम ही होन की ॥१३६
रूप गुनन के कहत रहंसा, सुन नारद मैटहु हीय-संसा ।
सत्व प्रीयात्मक है जासाँ सुख, रुचर होत जासाँ आर्जव^२ रुख ॥१३७
सत्य सौच स्रद्धा संतोषं, दया क्षमा लज्या निरदोषं ।
सांती धारन वरन^३ स्वेत है, द्रढ सुधर्म साँ प्रीत देत है ॥१३८
स्रधा राजसी सक्तव सोई, सदाँ धर्म अप्रीत कर सोई ।
द्वेष दंभ मछुछर^४ मद दंभी, उतकंठा^५ अरु माँन असंभी^६ ॥१३९
गव द्रोह ताही सौं गनीयै, संख्या अब तमगुन की सुनीयै ।
क्रसन वरन जामे कुटलाई^७, रोष विसम परदोष रचाई ॥१४०
मोह बिषाद नीद भय मानत, बाद बिषादहु फेर बखाँनत ।
नास्तिक भाव और क्रपनाई^८, आलस जुत दीनता ऊपाई ॥१४१
अपनौ हित जो चाहै ऊर में, महाँ खेष्ट सतगुन है मुर में^९ ।
तम रज सने-सने द्वै त्यागै, अधिक जाँन सतगुन अनुरागै ॥१४२
पर तीनों गुन मिलित पैखी, अलग एक तै नाँहिन एकी ।
बिमल पितामह^{१०} सुन के बाँनी, पिसुन^{११} जोर बोले जुग पाँनी ॥१४३
गुन लछन भाखी गरुआई^{१२}, जाँन्यौ सकल अनूक्रम जाही ।
विधवत ताको करौ बखाँना, मैटौ हीय अजाँन महाँना ॥१४४
बोले विध नारद साँ बाँनी, जिन गुन रीत हमहु नहीं जाँनी ।
कहाँ सपुष्ट^{१३} तोहि सौं कैसे, उर उनमान जानीयै ऐसे ॥१४५

१ योनि । २ कोमल, सरल । ३ वण—रंग । ४ मत्सर । ५ इच्छा ।
६ असम्भव । ७ कौटिल्य=दुष्टता । ८ कृपणता । ९ तीनों में । १० ब्रह्मा ।
११ पिसुन=चुगलखोर, नारद । १२ गुरुता, गौरव । १३ स्पष्ट ।

तन सुंदर जोवन जुत तरुनी, हाव-भाव साँ पत^१-चित-हरनी ।
 सौ तनकौ दुख दायन सोई, समझहु मिस्रत^२ भाव सकोई ॥१४६
 सब कौ है सतगुन सुखदाई, दीखत कही कही दुखदाई ।
 राजस गुन कै सुनीयै रीती, न्याय-परायन है जुत नीती ॥१४७
 सैन्यधिक्ष^३ अरु दक्ष^४ सुमंत्री, कलपत देखै चोर कुमंत्रो ।
 तम-गुनहू हितकारी तैसे, अहितकार पुन जानहु ऐसै ॥१४८
 घन घुसंड आवत जब घटा, चमकत दुर दुर जायै छटा ।
 संजोगन^५ नारिन सुख सरसै, तिय प्रोखत-पतका^६ हीय तरसै ॥१४९
 पुन नारद पूँछैहु बिध पाँही, आप आप तै गुन अलगाँही ।
 भाव विरोधी सो ऋहु भासै, पर कैसेँ मिस्रत परकासै ॥१५०
 जिही बिध अगन दाह कर जैसै, तूलहु^७ तेल-विरोधी तैसे ।
 पुन दीपक मिल करत प्रकासा, जाँनहु दीप-वृती^८ गुन जासा ॥१५१
 नारद सुन ऊपदेस निदाँनं ऊर अन्तर मैथ्यौ अज्ञानं ।
 अज^९ दीनौ नारद ऊपदेसा, नारद व्यास सुनाय निदेसा ॥१५२
 व्यास कहे जनमेजय बाँनी, भजवे लायक आद भवाँनी ।
 तजीयै भ्रम भजीयै ईक ताही, सुख-दायक है मात सदाई ॥१५३
 ऐ ऐ मंत्र कहत अज्ञाँनी, ब्रह्मदत्त भये द्वज विज्ञाँनी ।
 सुनहु नृपत ईतिहाँस सुहाँवन, परप पुनीत सोई अत पावन ॥१५४
 सब लायक भूपत धर्मसेतू^{१०}, हृष गये तीरथ-जात्रा-हेतू ।
 अत पवित्र थल अधम ऊधारन^{११}, आये तबही नीमष-आरँन^{१२} ॥१५५
 वंदन कर मुनि वृंद विसेसा, पुन बंठे जहाँ पाय प्रवेसा ।
 जाँमदग्न^{१३} कीय प्रस्न जहाँई सुर हरी हर आदक समुझाँई ॥१५६
 अत ऊदार हित सीध्र आँमना^{१४}, काँमी पूरन करै काँमना ।
 ईहीं विचार मति के अनुसारा, विवध भाँति मुनि कहहु विचारा ॥१५७
 बोले सुन लोमस^{१५} मुनि बाँनी, महाँसक्ती आराधन माँनी ।
 देत सीध्र फल सो सुखदाई, सुनहु कहत ईतिहाँस^{१६} सुहाई ॥१५८

१ पति । २ मिस्रित । ३ सेनाध्यक्ष । ४ चतुर । ५ संयोगिनी । ६ प्रोषितपतिका =
 वियोगिनी । ७ रुई । ८ वीपवर्ती = बत्ती । ९ ब्रह्मा । १० धर्मसेतु = धर्मप्राण ।
 ११ उदारण = उदारकर्ता । १२ नैमिषारण्य । १३ जमदग्नि ऋषि । १४ आम्नाय =
 मार्ग । १५ लोमशऋषि । १६ इतिहास ।

पुरी अजोध्या तामह पाँवन, बसत देवदत्तहि जहाँ ब्रामन^१ ।
 सो अग्रुत्र हित पुत्र सुधारी, बिधवत वेद जिज्ञ बिसतारी ॥१५६
 मुनि सु होत्र^२ गुरु जागबल्क^३ मिल, भये येकठे पैलहु गोभिल^४ ।
 तमसा नद की तीर तहाँ ही, जिग-रचना द्वज करी जहाँ ही ॥१६०
 सिवनाई मुनि-वृंद सुधारे, ध्रुव सुत हित आलव^५-ऊरधारे ।
 ऊदगाता गोभिल्ल ऊचारचौ, स्याँसवेद कौ गाँन सँवारचौ ॥१६१
 भयौ ताहि माँहीं स्वर-भंगा, सुन्यौ देवदत्तही मुनि-संगा ।
 रिष सौँ कह्यौ बिप्र रिस-रंगे^६, कहा ऐसै तुम पढ़त कुढंगे ॥१६२
 रिस-बाँनी सुन मुनहुँ रिसाए पै अपनी करनी फल पाये ।
 कहे बचन गोभिल्ल करारे, महाँमुनिद्र रीस के मारे ॥१६३
 जिज्ञ करत जाके हित जोई, सुत बहरौ त्व^७ है सुत सोई ।
 देवदत्त बोले दुखद ई, भयै पुत्र तौ कहा भलाई ॥१६४
 जप तप पूजा दाँन न जोगं, सुत कौ पाय लहै हम सोगं^८ ।
 सत्यव्रत कंसे त्व^७ संभव, अरुप दोष पै स्त्राप असंभव ॥१६५
 द्वज मुनि सौँ बिनती बहु दाखो, भाँत-भाँत आरत^९ बहु भाखी ।
 कर साँ चरन गए मुनि केरा, मेटहु स्त्राप दीन द्वज मेरा ॥१६६
 तब मुनि भये क्रपाल तिहीं तै, सोच करहु जन बिप्र सही तै ।
 प्रथम होय मूरख फिर पंडित, अंबा करहै कृपा अखंडत ॥१६७
 श्राप करहि उद्धार तोर सुत, मोर बचन सुन इहीं महाँतम ।
 देवदत्त हुय प्रसन्न^६ जब ही द्वज, जग्य संपूरन कोन रीत जुज^{१०} ॥१६८
 कोऊ दिन बीते श्राप कहा कै, तूनीसील^{११} भयौ सुत ताकं ।
 जात-करम कीनौ कुल जैसी, आह्वय धरचौ ऊतथ्यहु वैसी ॥१६९
 पालन लालन मात पिता की, पै कछू दिनन अवस्था पाकी ।
 लायक जाँन पढ़ावन लागे, अक्षर बोलत नहिन अभागे ॥१७०
 मात-पिता भये क्षोभत मन में, वह ऊथत छुटकाय बिपन में ।
 आये मात-पिता घर अपने, सुत कीं याद करं नह सुपने ॥१७१

१ ब्राह्मण । २ होता = हवनकर्ता । ३ याज्ञवल्क्य । ४ गोमिल मुनि । ५ आवब = वत, प्रतिज्ञा । ६ क्रुद्ध होकर । ७ शोक । ८ आर्त्त = दुःखित वचन । ९ प्रसन्न । १० यजुर्वेद, पुत । ११ बहरा, गुंगा । १२ नाम ।

विचरै तट गंगा बनबासी, एकाकी वृत्त रहै ऊदासी ।
 ऊदर फूल फल करै अहारा^१, भूख लगे जब हो दै भारा ॥१७२
 सिम्प्याँ बात धरै नहि मन में, तपत ताप सहजै निज उन में ।
 सत्यतपा तिह नाम महाँना, जाकौ सबही कहत जहाना ॥१७३
 पावन बन में रहत पुनीता, बंरख^२ चतुरदंस ताकह बीता ।
 सत्य आचरन देख सबही, दूसर नाम सत्य इन दैही ॥१७४
 ढिग आखम तिह बन में डेटा, येक निषाद^३ फिरत आखेटा^४ ।
 कंकपत्र^५ को खैत्र करारा, मत्त आसलिंगल^६ तन मारा ॥१७५
 सोई भागौ तिह लगत समाना, घाय पसाय पीड़ धवराँना ।
 वमत्त^७ रुधिर लख दया विचारा, ऐ-ऐ^८ मुनिवर सबद उचारा ॥१७६
 मंत्र सरस्वती निकरत मुख तै, सो मुनि भए मेघावी^९ सुख तै ।
 आगै षष्ठी बराह^{१०}-अहेरी^{११}, फिरत खोज आयो तिह फेरो ॥१७७
 धनुस वान कीने कर धारन, मन अकुलावत कारन मारन ।
 ताहि अहेरी कहाँ तहाँ ही, सत्यवृत्त तुम नाम सुहाँही ॥१७८
 घायल सूर गयो किह घाटे^{१२}, देहु बताय जाय हम दाटे ।
 बात अहेरी सुन बहुरंतर, ऐ-ऐ जपत रहे ऊर अंतर ॥१७९
 मुनि की सुनकै भई ऐसे मत, गही छचुँदर-अही^{१३} जिहीं गत ।
 हिंस्या^{१४} सत्य कहे तै होबै^{१५}, खोटी भूठ कहै वृत्त खोवै ॥१८०
 दीनी मति ताकौ श्रुत-देवो, कछू समझ्यो नहि सूकर केवी ।
 बोले मुनिवर हृदं विचारी, सुनहु अहेरी मति अनुसारी ॥१८१
 जो देखत नही बोलत जानै, बोलत सो नहीं देख बखानै ।
 घातक जाहु तुमारे घर कौ, सोधन करहुं तथाँ सूकर कौ ॥१८२
 हाल कहाँ जानत हम जैसी, तुम विचार देखहु ऊर तैसी ।
 मुनि कौ पन राख्यो महाँमाया, सुन निषाद श्रुत पंथ सिधायी ॥१८३
 सो सतवृत्त कवि भये सिरोमन^{१६}, मानहु दूसर बालमीक^{१७} मुन ।
 ऐ-ऐ इंदु मंत्र आराधै, सिध साधना जुत कोऊ साधै ॥१८४

१ आहार=भोजन । २ वर्ष । ३ मील, शिकारी । ४ आखेट=शिकार ।
 ५ बाण । ६ सूकर, सूअर । ७ उपजता हुआ । ८ ऐ-ऐ । ९ मेघावी=बुद्धिमान् ।
 १० सूअर । ११ आहारी=शिकारी । १२ मार्ग । १३ सापछंद्गन्धर । १४ हिंसा ।
 १५ सरस्वती । १६ सिरोमणि । १७ कल्मीक ।

सत्यवृत ज्यों होय सुखारी, अति मतिवाँत ज्ञान अधकारी ।
भटे जात भ्रातजन भलकै, मात-पिता लाए घर मिल कै ॥१८५॥
ईह लोमस भाख्यो ईतिहासा, पुन तो सनमै^१ कीन प्रकासा ।
पूजनीय महांमाया पूजौ, देव नहो देवीसम दूजौ ॥१८६॥

दीहा

कही व्यास नृप साँ कथा, सुन कै परम सयौन ।
पूछ्यौ पावन प्रीत जुत, अंबा - जिग - आख्यौन ॥१८७॥
पूजा-विध कहीयै प्रथम, साधनहू सह कीय ।
करकै सरधा-जुत कहँ, हमहु क्रतारथ^२ होय ॥१८८॥

छव भुजंग-प्रयात

सुने व्यास नै भूप के वैन खान^३, बखान तहां जग्य लागे विधानं ।
त्रह सातुकी राजसी तामसी कै, निहारौ विचारै त्रह भेद नीकै ॥१८९॥
मुदे सातुकी जग्यकारी मुनिंद्रं, नियंता ज्युहीं राजसी है निरंद्रं ।
नृचक्षा^४ मखं^५ तामसी है निराला, बिरागी भई ग्यान जाँनै बिसाला ॥१९०॥
अजोध्या पुरी सिभु-माया^६ ऊजेनी^७, सुखेत्रं मधुपद्म^८ लाँ उच्च खनी ।
नदी गंग गोदावरी नर्बदा पै, सुता अर्क^९ ब्राह्मी^{१०} सुची सर्वदा पै ॥१९१॥
ऊजेतं^{११} सुबेला गिरी अर्बलीहू, थितं पुस्करं ताल आदं थलो हू ।
भली भाँत थप्ये जहाँ सुद्ध भोमी, गहै उत्तरा मग^{१३} ध्यावं खगोमी^{१४} ॥१९२॥
बसावं पखे न्याय साँ ब्रीह^{१५} बित्तं, स्रधापूर्वकं वेद के मंत्र-सहितं ।
ईही सातुकी जग्य जाँनौ अनूपं, भली नीत सोई फलोभूत भूप ॥१९३॥
गहै द्रव्य अन्यायही कौ लगावै, कछू लाभ तातै न हाथौ करावै ।
कीये रावरे^{१६} पूर्वजं जग्य कसे, जहाँ पुष्य-ग्राही भये क्रस्त जैसे ॥१९४॥
मनीसी^{१७} भरद्वाज जैसे महत्वं, बनोबास आदं ग्रीही पै द्विपतं(त्त) ।
मरे राज पुत्रं अरथं मिलाँही, अलिष्टं^{१८} कहू दोष जातै ऊपाई ॥१९५॥
कहँ होत है दोषहू जग्यकर्ता, भले दोष जाँनौ कहँ संत्रभर्ता ।
कहँ द्रव्य के द कमाई, लगावै अदोषं मखं बित्त लाई ॥१९६॥

१ सम्मुख । २ कृतार्थ = सिद्धमनोरथ । ३ अवरण = कान । ४ राजसी । ५ यज्ञ ।
६ शम्भुमाया = काशी, हरद्वार । ७ उज्जयिनी । ८ मयूरा । ९ अर्क-सुता = यमुना ।
१० सरस्वती । ११ गिरनार । १२ त्रिकूटाद्रि । १३ मार्ग । १४ सूर्य । १५ ब्रीहि =
सामग्री । १६ आपके । १७ मनीषी = विद्वान् । १८ किंचित् ।

रच्यौ जिग्य निर्दोष ज्यौ दासरथ^१ (थ्यं), ऊपायौ सुनीती लगायौ अरथं (थ्यं) ।
 जहाँ च्यार पुत्र भये राख जंसे, कीये जुद्ध आदं जिही काँम कंसे ॥१६७
 द्विती-मंडलं जाहि सौभाग्य छायाँ, पिता मातहू वास बैकुंठ पायौ ।
 करं अंबका-जिग्य निर्दोषकारी, बनावै स्थिती मंडपं घोय बारी ॥१६८
 विधी-पूर्वकं कूड बेदी बनाव, जिहीं कुंड में थग बन्ही^२ जगावै ।
 जहाँ आद ब्रह्म करे पुज्य जाकी, अधारे हीये प्रीत आद्या-अजा की ॥१६९
 सब सातु की वृत्त सौ तोष सम्यं, इहीं अंबका-जिग्य जानौ अलभ्यं ।
 जिहीं अंबका ब्रह्मविद्या सुजाँनौ, मती निर्गुनी सर्गुना एक माँनी ॥२००
 सोई जग्य-कर्ता गती कौ समावै, पिता मातहू वास निर्वाँन^३ पानै ।
 हुयो ताँमसो जग्य दिःकर्न^४ होमे, जथाँ सातुकी जाँन भाख्यौ सु जो में ॥२०१
 कहूँ सातुको जिय राजा करौगे, इही वंस के लूनके^५ ऊद्धरौगे ।
 बखान्यौ अजा-जग्य कौ बेदव्यासं, विचारचौ तिही भूप पायौ बिसासं^६ ॥२०२
 रमाँनाथ के जग्य की तग्य रीती, प्रकासौ हीये व्यास वाढ़े प्रतीती^७ ।
 नृपं जीय की जाँन के हीय नीकी, बखानी कथा व्यास बिस्तार ही की ॥२०३
 दई तीन सक्ती जबे तीन देव, भवनेश्वरी^८ दीद्य(ध) अज्ञा^९ समेव ।
 करौ स्रष्ट कौ जाय कै पुष्टकारो, हितू स्रष्ट है बात माँनी हमारी ॥२०४
 मिले देव आए ब्रह्म मेदनी पे, ब्रह्म सक्ति के संग बैठे तही पे ।
 सुधारी महंमाय^{१०} आधार सक्तो, भई तोयधारी^{११} थिरीभूत^{१२} व्यक्ति ॥२०५
 जरे कीज ज्यौ सैल ताकों जसाँई, सुमेरु रह्यौ मध्य ताकै समाई ।
 जन विश्वरेता^{१३} जहाँ पुत्र जेता, मरीची पुलह^{१४} अत्री ताही समेता ॥२०६
 पुलस्तं क्रतू दक्ष बासिष्ट पूरे, रिषी नारदं आदकं नाम रुरे^{१५} ।
 मरीची सुतं कस्यपं से महाँना, दई दक्ष तेरे सुता ताहि दाँना ॥२०७
 जने दक्षजा देवहु दैत जेते, मनृस्यं पसू पछ चक्री^{१६} समेते ।
 क्रतं कास्यपी स्रष्ट ताते कहाई, सोई आज लौ वृद्धि वाढ़े सबाई ॥२०८
 स्वयंभू^{१७} स्वयंभूमनू अंग सेती, जिही जानीयै दक्षनं संग जेती ।
 भई सत्तरुपा^{१८} सु ता वाँसभागी^{१९}, स्वयंभूमनू दीन ताही सुभागो ॥२०९

१ दासरथ । २ वह्नि = अग्नि । ३ निर्वाण = मोक्ष । ४ दिक्कर्ण = सर्प ।
 ५ रौतक । ६-७ विश्वास, प्रतीति । ८ भुवनेश्वरी । ९ अज्ञा । १० महामाया ।
 ११ जलधारा । १२ थिरीभूत । १३ विश्वरेता = विश्ववीर्य, ब्रह्मा । १४ पुलस्त्य ।
 १५ सुन्दर, प्रसिद्ध । १६ सर्प । १७ ब्रह्मा । १८ शवहवा । १९ स्त्री ।

प्रीयंवृत्त^१ को पुत्र उत्तानपादं, मही आद पाथोद^२ बांधी मृजाव^३ ।
 उपज्जी सुता तीन ताते अकूती, पिछानी जथां देवहूतो प्रसूतो ॥२१०
 रची सष्ट एतो जबे विस्वरेता, निकार्ई जु तैलोक राचे निकेता ।
 सवाँरी तबे मेरु कं खंगही पे, दृती स्वर्न की भर्न के द्रंग धीपे ॥२११
 रमानाथ बैकुंठ तापे रचायो, सबे स्वर्न औ रत्न भूँ में सचायो ।
 रची सिभु कैलास जापे रहाए, सबे भूत भेरुं तिही पै समाए ॥२१२
 रचयो स्वर्ग तापे जहाँ इंद्र राजा, सबे देव को संघ लीने समाँजा ।
 मथ्यो देव दैतं समुद्रं महानं, थितं पारजाती^४ मिल्यो थपथानं ॥२१३
 द्विपी^५ ताहिमाँही मिल्यो च्यार दंता, वही पाय कै सोह बाढी अनंता ।
 हुई प्राप्त औरे तहाँ काम हंभा,^६ रतन मिले अछरी^७ आद रंभा ॥२१४
 भई च्यार खानी मई सष्ट भरती, पसारे जरा ईडुजं^८ लौं प्रवर्ती ।
 ज्युहीं ऊदभिजं स्वेदजं जीव जानौ, प्रमेष्टी पिता सष्ट नीकं प्रमानौ ॥२१५
 तिहीं जक्त के ईस है देव तीनूं, पिछाने जिही भेद नीके प्रवीनूं ।
 बिराजे त्रहूँ देवहू कीन वासा, प्रभापत्तनं^९ सक्ति भ्यासं प्रकासा ॥२१६
 पुरी विस्तु ब्रह्माँ कपर्दी प्रभावा, परं दिव्य धामं प्रकर्ती पसावा ।
 ऊपज्जी हृदे विस्तु कै आय ईच्छया, प्रभावं मनीदीप देख्यो प्रतच्छा ॥ २१७
 अनांदी महंमाय की याद आई, बिचारी तिहीं भाँत भाँत बधाई ।
 क्रतू^{१०} कारजं अंबका हेत कीजै, रुची पाय कै जाहि साँ माय रीभै ॥२१८
 निमंत्रं दीयो जिय काजै निकार्ई, मिले आय के देव बैकुंठ माहीं ।
 गिरीसं^{११} गजाननं^{१२} औ वेदगर्भा,^{१३} सुनासीर^{१४} हू संग लीने सुपर्वा^{१५} ॥२१९
 प्रचेता^{१६} जहाँ दक्षनासापती^{१७} हू, थए आय इच्छयावसू^{१८} लौं थिती हू ।
 उतथ्यानुजं^{१९} सप्त आदं रिखीसा, धरे चाहिकै आय के जोग धोसा ॥२२०
 उदारं वृती सातुकी सोम-याजी, मुनो अध्वरो यग्यहोता समाजी ।
 गुनी दक्ष मंत्रं मिले ऊद्-गाता^{२०}, विथारी बिधी सप्ततंतु बिख्याता ॥२२१
 अकारं करं दच्छनं चंद्र अद्यं (धं), बनाये जहाँ कुंड नीके प्रबधं ।
 खिती^{२१} कुंड कीनीं दृती च्यार खूँटा, अरु वृत्^{२२} आकार तीजौ अखूँटा ॥२२२

१ प्रियव्रत । २ पाथोधि = समुद्र । ३ मर्यादा । ४ पारिजातवृक्ष । ५ द्विप = हाथी,
 ऐरावत । ६ कामाग्ना = कामधेनु । ७ अप्सरा । ८ अण्डज । ९-पत्तन = शहर ।
 १० क्रतु = यज्ञ । ११ गिरीश = शिव । १२ गणेश । १३ ब्रह्मा । १४ सुनासीर =
 इंद्र । १५ देव । १६ वरुण । १७ दक्षिणाशापति = यम । १८ इच्छावसु
 कुबेर । १९ गुह । २० उद्गाता = सामवेदी । २१ क्षिति । २२ वृत्त = गोल ।

धरे अग्न तापे रचा साखवेनी^१, तह सुस्कहू डार तामे त्रपनी^२ ।
 हवी^३ आद सत्राज^४ पै अरनहोत्रं, गहै देवता आपनै दाय गोत्रं ॥२२३
 ज्युंही और दर्वी^५ गहै दर्व^६ जेते, सनेहं^७ पनारा परं धार सेते ।
 मधुपर्क^८ भुंजे वहाँ ज्वालभाला, असकै चिनंगी मनी बिज्जु-चा(ज्वा)ला ॥२२४
 धुकै ऊढहू जाय कै छाया धूमै^९, घनासं घटा सामनी जान धूमै ।
 सबदं गरज्जे मनी बिप्र स्वाहा, पुनीतं बरखै अनंदं प्रवाहा ॥२२५
 जथां जोग बिप्रावली देव जेवै^{१०}, बिराजे मनो हंस सारंस बे बै ।
 गंडोलं^{११} पिंडोलं मचे भूस गारी, प्रभा पुन्य अंकूर ऊर्गो पसारौ ॥२२६
 विकुर्वा आख्यांन बाख्यान बांचे, रवं दादुरं^{१२} जान सारंग राचे ।
 गुनी गंधवं मेघ मल्लार गाबे, बिपंची^{१३} सृदंगा अनूपं वजाबे ॥२२७
 कहूं सारका^{१४}-दुंदभी लाग डक्का, ढकै व्यौम कौ भोम आवाज ढक्का^{१५} ।
 नचै मोरनी ज्यौ अहरी नाच नीकै, कहूं जानोये तांहि काहू कमी कै ॥२२८
 रहै इंदरा^{१६}-गेह में राज-रांनी, बखानौ कहा जग्य ताही बिधानी ।
 अनेकं चतुर-जात के देव आए, परं देवीयां संगही पुज्ज पाए ॥२२९
 गिरा आद लौ पुज्ज कै गंग गौरी, समाधान कै इंदु की सक्ति सौरी ।
 मुनिद्रं जु तें बिप्र जामें महांना, दये दक्षना भक्षना आद दाना ॥२३०
 रमानायकं जग्य कौ काम करौ, प्रथा पाय सोई भयो ताम पूरौ ।
 बिसालं भई एह आकास-वांनी, अहौ विस्तु त्व है सुरां अग्रवांनी^{१७} ॥२३१
 पदं हंस-गं रुद्र इंद्राद पूजे, सबे ज्ञान बिज्ञान के भेद सूभै ।
 पदार्थ लहै च्यारहू सेव पाखै, रसां आद नौहूं नीधो ग्रेह राखै ॥२३२
 हरी जिग्य कं भाग में पुज्ज त्वहौ, द्रुतं कामना आंमना दान दहौ ।
 धलं दानवा देव कां दुःख घेरी, तबे चाहिके आयहै सन तेरी ॥२३३
 मिटाये महादुख ओघं^{१८} मिटैगे, रसज्ञा^{२०} सबे नाम तेरी रटैगे ।
 परं काम जसौ जहाँ रूप पंहौ, निमंतं चहै जेम आंतर लहौ ॥२३४
 गहै वेद के पंथ में धर्म ग्लानी, मिटैही सोई चाहि कै ताहि म्लानी^{२१} ।
 हमारी सबे सक्तीयां संग त्वहै, द्रढं चित्त की चाह ज्यौं काम देहै ॥२३५

१ तामध्वनि । २ तर्पणीय = समिधा । ३ घी, घृतपात्र । ४ हवनसामग्री ।
 ५ द्रव्यपात्र. दर्म । ६ द्रव्य । ७ स्नेह = घृतादि । ८ दूध-दही आदि । ९ धूम =
 धूप । १० नोदन करते है । ११ घास । १२ ददुर = मंडक । १३ वीणा ।
 १४ सारिका = मना । १५ डमरू । १६ इन्दिरा = लक्ष्मी । १७ सूर्यशक्ति ।
 १८ अघणी । १९ ओष = समूह । २० जिह्वा । २१ मलीनता ।

अरूपा अजा दीन बरदान ऐसी, करे याद आख्याँन बाँचे कहै सौ ।
मनो-वंचना^१ कामना कौ मनावे, परामाय माहेश्वरी भक्ति पावे ॥२३६

दोहा

बिस्तु-जिग्य की वारता, सुनी व्यास सौं स्नान ।
जनमेजय बौल्यौ जबही, पूर्वक विनय प्रमान ॥२३७
कही जिहि विध मख कथा, महिमा तिह विध मात ।
व्यास सुनावहु वारता, सबही हौय सुनाथ^२ ॥२३८

छंद हरिभोतका

सुन भूप सौं इह व्यास स्नान कहन लागे पुन कथा ।
नगरी अजोध्या पुस्पनामक तरून बसी नृपत थां ।
ध्रुवसंध नामक तनय अधपत^३ जाही पट्ट सुजांनीये ।
भुवपाल विरद^४ बिसाल निर्भय प्रजापाल प्रमांनीये ॥२३९
रानीं जु ताहि मनोरमा लीलावती दूसर लहै ।
सुखसहित परम सुधर्म में नित राज काजन निर्वहै ।
रानीं सु जेष्ट मनोरमां सुत तिह सुदर्सन सित सभा ।
लीलावती-सुत सत्रु-जित लघु पेखीये सुंदर प्रभा ॥२४०
सम प्रीत नृप की दहूँ सुत सौं पाल लालन प्रेम सौं ।
नव निद्ध रिद्ध समृद्ध निर्मत खत्रीया-धूम^५ खेम^६ सौं ।
आखेट गए नृप येक अवसर मृगहु खग कहां मारनै ।
हठ कुंज में जहां केहरी^७ हर विफुर निकस्यौ बारनै ॥२४१
तब ढाल कर तरवार लै हठ भूप समुह कां हल्यौ ।
समरथ्य सथ्यह हथ्य सौं भुक लुथ्य बुथ्यन ह्वै भिल्यौ ।
मृगराज कौं गहि राज मारचौ राज कौं मृघराज कं ।
सब सोच राज-सजाज में अनचित पाय अकाज कं ॥२४२

१ मनोवाञ्छा । २ सनाय । ३ अधिपति । ४ यश । ५ क्षत्रियधर्म ।

६ क्षेम । ७ सिंह ।

व्याप्रत असातन वृंद मिल कै क्रोया प्रेतही जिहू करी ।
 विवहार^१ सार बिचार कै अनुसार वेद ही ऊढरी ।
 रांती पिता सु मनोरमा कढ आप देस कलिग सौं ।
 लीलावती पितु आय लारही द्रुत अवंती-द्रग^२ सौं ॥२४३॥
 पुन जुंघाजत^३ लीलावती पितु सत्रुजित अंगज सुता ।
 गुनवंत थपिही राजगादी कही सबसां इह कथा ।
 नृप बीरसैन कलिग निर्भय रहि पिता सु मनोरमा ।
 सुत सुता मेरे सुद्रसन पै छत्र धारहु सिर छिमा ॥२४४॥
 मानी न एकहु एक की शक्ति एक एकन ऊपरा ।
 धिक धेक नाहि विवेक धारचौ तेख रन में तत्परा ।
 विरदैत भूप कलिग बासी इतहु नाथ ऊजैन कौं ।
 रन-खेत आय जुरै उभै समुदाय लै संग सेन कौं ॥२४५॥
 पर सब अख प्रहार पै रव मार-मार ऊचार कै ।
 सुर असुर मानहु संजुरै सम बैर आद बिचार कै ।
 धरनी सु धक्कन तै धुकी सररक्क नासा सेस की ।
 मुररक्क पिठहु कामठी कररक्क दृढ़ किरैस^४ की ॥२४६॥
 दररक्क दिग्गज अठु डिग फररक्क लै फँन ने टोयै ।
 खररक्क ज्जुगन^५ खपरा^६ भररक्क भुगन भेटीयै ।
 केऊ जुद्ध बानन तै करै किरबान^७ धारन के कटै ।
 केऊ खंजरन तै पिजरन के फिफरन^८ बुक्कन कटै ॥२४७॥
 केऊ काढ़ कै जमदाढ़ कौं गहि गाढ़ मारत गत में ।
 घसजात बार विसार^९ ज्यौं बहि वाढ़हू बरसात में ।
 सिरस्त्रान^{१०} कंकट सोस पै केऊ देत मार कुठार की ।
 खननंक रव ताकी खुलै घननंक ज्यौं घरीपार को ॥२४८॥
 आवाज वाज अडंबरा^{११} घुररात धुन घनघोर ज्यौं ।
 हर-बल्ल वाढ़ तहां कहुँ हुररात सिंधु हिलोर ज्यौं ।

१ व्यवहार । २ हुं । ३ युवाजित । ४ वाराह । ५ योगिनी । ६ सप्पर ।
 ७ कुपाण = तसवार । ८ फेफड़े । ९ मछली । १० शिरस्त्राण = टोप, पघड़ी ।
 ११ जुन्नाऊ बाजे ।

भटकाँन तैं बटकाँन^१ ह्वै खटकाँन खगन^२ खुपरी^३ ।
 जगदीस के अटकाँन ज्यों बटकाँन भेजा विखरी ॥२४६
 गजराज पै मृगराज^४ त्यों जिम बाज तितर जानीयै ।
 ईम ईक्क ईक्कन तै अरै बल काय निबल बखानीयै ।
 बाजद^५ और गजद^६ बिह जहां अरै सिदन^७ जाल का ।
 चमकात आयुध त्यों चलै बरसात में जल बालका^८ ॥२५०
 भुक केक भुँड कबंध भुंमत घनै घूमत घायला ।
 ईक ईक तै जुह कौन आहव^९ बकै ज्यों मतवायुला^{१०} ।
 कट कीन^{११} बुथन-बुथ्य के कहूँ कालखंज^{१२} परे कटे ।
 फररक्क फिफर^{१३} फौल कै अरु बुक्क बुक्कन तैं अटै ॥२५१
 धमचक्क हक्कन धूम धक्कन अक्क बक्कन ह्वै ईला^{१४} ।
 लर फौज लख्खन सूर सख्खन चोह चख्खन तैं छिला ।
 आग्नेय हय गय अग सौं पांनी पनारन ज्यों परै ।
 कट भृकुट सुभटन कंधरा^{१५} चलचिच ऊरध संचरै ॥२५२
 असमान में रुक भांन ईछत तुग^{१६} बगन तांन कै ।
 गम पायनी तम द्रत गही बढ छयो खेह^{१७} बितान कै ।
 हल बीर-संमुह हुँकरै ऊर धंक धार ऊतावरै ।
 बिललात कातर^{१८} के चलै बिललात ज्यों मत बावरे ॥२५३
 बरमाल पांन बिवांत में असमान गांन ऊतावली ।
 बर स्वछ सूर समान बैठत अछरन की आवली ।
 कलहाक^{१९} हाकन के कजाकन बीर बाकन में बमें ।
 इहकात डाकन धंमधाकन रास साकनहू^{२०} रमें ॥२५४
 असवार अछ्छे तछ्छ ऊलटत पुन परेवा पछ्छ त्यों ।
 मारे बरछ्छन लोट मंडत तुछ्छ जल के मछ्छ त्यों ।
 गज जुथ्य जुथ्य कट गिरे तट भये केक तुखार^{२१} का ।
 जल-नाल जूं रस^{२२} तेज जावत गूद माच्यो गार का ॥२५५

१ टुकड़े । २ खड्ग । ३ खोपड़ी । ४ सिंह । ५ वाजीन्द्र = घोड़े । ६ गजेन्द्र = हाथी ।
 ७ स्पन्दन = रथ । ८ बालुका = रेखकरा । ९ आहव = युद्ध । १० मतवाले, पागल ।
 ११ मांस । १२ कलेजे । फेफड़े । १४ इला = पृथ्वी । १५ गर्दन । १६ तुग = घोड़े ।
 १७ घुल । १८ कायर । १९ कलह = युद्ध । २० शाकिनी । २१ घोड़ा । २२ रक्त ।

कट कालखंज लहै कहूं घरीयार कछुप घाट का ।
 पग पिंडुरी जामै पहै पाठीन^१ ज्यों बिब पाट का ।
 बपु खंड-खंड बिहंड ह्वैं मिल चले तुंबा मुंड ज्यों ।
 कहूं कटी सुंड बितुंड की दिखरात बिष्टर^३ डुंड ज्यों ॥२५६॥
 कारंड हंस वकोट कागा, भुंड गिद्धन के भुके ।
 चहकात चंड चपेट किल्लह, लेत आमष लकल कैं ।
 जिस अंत तंतन जाल का, किल^४ कोक ऐंचत कीर से ।
 बहु त्रप्त बैठे घोरवासी^५, भरे पथकन भीर से ॥२५७॥
 मालव नरेस कलिग महिपति, जग भौ अति जोर सां ।
 चल चले च्यारहु चक्र पै, सकपक आलम^६ सोर सां ।
 नृप जुधाजित की सेन कां, खगन प्रहारे खेत पै ।
 बहु सत्रु मार कलिगवासी, मरचौ सेन समेत पै ॥२५८॥
 ऊजुवाल कैं कुल आपनौ, ऊर माल धारै अछ्छरी ।
 वरवीर बैठ विमान में, पहुँच्यौ सु अमरावति-पुरी ।
 जब जुधाजित नृप सत्रुजित दै राज निज दोहित्र कौं ।
 द्रुत^७ देस पहुँच्यौ द्रंग कां, जुर सैन आयौ जत्रकां^८ ॥२५९॥
 रानी सु जेष्ट मनोरमां, सुत जेष्ट कौं लै संग पै ।
 मिल संत्रि मंत्र विचारकैं, गवनी सोई तट गंग पै ।
 जहां सरन भारद्वज की, ब्रह्म रहि जाय मनोरमां ।
 बिसवास दै मुनिवर बसाई, सुत सुदर्सन तिह समा ॥२६०॥
 मुनिवरन कुवर कुमांर मिल, खुश खेल खेलत ख्याल हीं ।
 कहि क्लीव^९ पै ताही पुकारा, वह न समुझ्यौं बाल ह्वी^{१०} ।
 वह छोर बरन वकार कौं, क्ली सब्द अनुजानै कहा ।
 अनुश्वार - रहित वकार ऊतैंम, मंत्र-देवी है महां ॥२६१॥
 पुन जपत ही बिसवास पामौ, वेख पंचहु वरख में ।
 गहि सुदर्सन भौ वरस ग्यारह, हीयै जप जुत हर्ष में ।

१ मद्यती । २ हापी । ३ हुंडा । ४ लोमड़ी । सियार । ६ संसार । ७ शीघ्र ।
 ८ महां । ९ नपुंसक, कापर । १० होने के कारण ।

जग्यौपवीत कीयौ जिहीं, मुनिराज जापै कर मया^१ ।
 धनु-बेद-नीत पढाय धार्मिक, तीव्र जप बल मति तथा ॥२६२
 सिद्धु दरस दीनी सरस्वती, तिह संत्र के परताप साँ ।
 धनुवान कंकट^२ धारनै, जुत क्रपा ताही जाय साँ ।
 अम्यास विद्या करत ऊँचत, खेल खुरली ख्याल कै ।
 चित चरन वंचल चाल तै, करबाल^३ हूँ कर ढाल कै ॥२६३
 कासी-नरिन्द्र-कुमार का, सिसकला सुन्दर सुंदरी ।
 सुन श्रवन चरचा सुद्रसन की, ऊपज प्रीत अमंदरी^४ ।
 सो रात सूती स्वप्न में, सुभ दरस दीनी सरस्वती ।
 वर मांग कन्या कहौ वांचत, देहुगी मै अद्वती ॥२६४
 कन्या कह्यौ वर सुद्रसन कौ, मात दीज मोहिकै ।
 दीय तथा-अस्तु कह्यौ देवी, सयन जागी सोयके ।
 जुत हरख देखी ताहि जननी, पूँछ कन्या प्यार साँ ।
 कछू कह्यौ नाहिन सिसकला^५, ब्रीडा^६ प्रभाव बिचार साँ ॥२६५
 सो कही कछू सखियान साँ, निस स्वप्न बात निदाँन की ।
 सन सिसकला पित-मातह सुन, वाक्य के वरदाँन की ।
 सिसकला क्लीन्त^७ सनेह साँ, अत विरह व्याकुल अंग में ।
 बन और उपवन बीच बिहरत, सहचरी-गन संग में ॥२६६
 ईक बिप्र आयौ वही अवसर, मुनी आत्म तै मिल्यौ ।
 कछू भेद तातै लह्यौ कंवरी, राज-सुत हित चित रल्यौ ।
 विरहाग्न बाढी हीय बिखै, तिह सीच कै घृत तेल कौ ।
 प्रज्वलत कीनी बिप्र पुन, मुरभात निसदिन मेल कौ ॥२६७
 अकुलाय वाँन अनंग साँ, ऊर अंग भंग ऊतावरो ।
 तलपात पै लोटत तहीं, बिल्पात ज्यौँ मति वावरी ।
 सम सूल लागत फूल सिंदल, विस्फुलंग^८ विकार से ।
 अत सीत मंद सुघंघ आसुग^९, तिछ्छ^{१०} तन तरवार से ॥२६८

१ बया = ममता । २ बहतर । ३ तलवार । ४ अधिक । ५ कलिकला । ६ सज्जा ।

७ बसान्त = ध्याप्त । ८ विस्फुलिङ्ग = प्राग की चिनगारी । ९ आसुग = धारा ।

१० तीक्ष्ण = तीक्ष्ण ।

आकार गोपन^१ करत ऊर सांकार होत सखीन कौं ।
 निद्रान आवत नैन में, पत पाय विरहा पीन^२ कौं ।
 नृप कासीराज सुबाहु निर्भय, देख तन कन्या दसा ।
 राच्छौ स्वयंबर राज-कंवरी, रुच निमंत्रन पति रसा^३ ॥२६६
 संचान और द्वितान मंडप, वनै केक विधान के ।
 भडार रिद्ध समृद्ध भर-भर, श्रीद^४ कीध समांत के ।
 द्रुत भयौ अन-अन^५ देस तै, अन राज आरंभ आवनी ।
 पितु-गेह उल्लख्य होत पत्तन, गीत मंगल गावनी ॥२७०
 जब सिसकला निज जंननि सौं, संदेह^६ दीनी प्रति सखी ।
 पत सुद्रसन परनाय कै, धुर^७ व्याह सेटहु धकधको^८ ।
 रानी बुलाय नरेस कौ, कन्या हकीकत सब कही ।
 दुरभाग कां नही देहगै, सिसकला गुन-संपन्नई ॥२७१
 राजा कह्यौ सोई सुन रही, सिसकला हीय में सोच कै ।
 इक बिप्र कां बुलवाय कै, संदेह दीनी सुद्रसन कै ।
 जिह कह्यौ तिह जाय कै^{१०},
 मुनिराज कां निज मात कां, भाख्यौ सुदरतन भेव कौं ।
 मुनिराज कहेऊ मनोरम कौं, सुभ फल्यौ मुनि-सेव कौ ।
 मुन कह्यौ जबहो मनोरमां, सुत जाहुंगी मैं संग में ।
 जहाँ जुघाजित अरु सत्रुजित, रस-भंग करहै रंग में ॥२७२
 पुर-खंगवेर^{११} निषादा-पतु कोऊ, प्रथम दीनी दिन कहू ।
 तिह बैठ रथ पै चह्यौ तत्पर, संग जननी लै सहू ।
 कस टोप कंकट बीर-बंकट, धनुस बांनन धार कै ।
 उर ध्यान ध्यायौ अंबका, लीय पथ हय ललकार के ॥२७३
 नगरी बिसाला^{१२} लखी नैनन, भुंड-भुंडन नृप जुरे ।
 मद्रेस सिधु-नरेस मागध, देस केरल द्रावरे^{१३} ।
 नय-पाल^{१४} चोलहु देस के नृप, कांमरूपहु पत कहूँ ।
 वर बीर धीर विदर्भवासी, सूर नृप मालव सहू ॥२७४

१ गुप्त । २ पीन = पुष्ट, प्रबल । ३ रसापनि = भूमिपति, राजा । ४ कुवेर ।
 ५ अन्याय । ६ संदेश । ७ धुर = सब से दहले, भार । ८ चिन्ता । ९ दुर्भाग्य, नाश-
 हीन । १० मूलप्रति में आगे का एक वरण नहीं है । ११ शृङ्गिवेर । १२ विशाल =
 काशी । १३ द्राविड । १४ नीतिरक्षक ।

इन आद औरहु भूप आये, करै गिनती कौन की ।
 छतोस अक्षोहन^१ सई, चतुरंगनी^२ मिल छोन की ।
 पहुंच्यौ सुदर्सन सिवपुरी^३, माता सु संग मनोरम्भा ।
 अरु सत्रुजित आयौ वहाँ, जिह वाँहनी^४ अत कीय जमाँ ॥२७५
 वृतांत कन्या सुन्यौ बिस्मय, हीय नृप सब हेर कै ।
 जब जुधजित बोल्यौ जहाँ, ऊर घुमंड छाथ अंभेर कै ।
 हम भार डारै प्रथम ही, सिसकला पावही सुत-सुता ।
 जब भूप कैरल कह्यौ जासौ, कहत हो कैसी कथा ॥२७६
 इहाँ स्वल्क^५ नाँहि स्वयंबरं, इछ्या स्वयंवर है इहीं ।
 कमनीय राजकँवार कौ, मन-बंच करहै पति मही^६ ।
 लर अनय^७ करकै राज लीनौ, त्रिया लेवहुगे तिहीं ।
 बिच बैठ कै नृप ऐँठ बोलत, लाज तुम आवत नहीं ॥२७७
 कछु बचन संकुल^८ परसपर कहि, बोल भूप सुबाँहु कौ ।
 सिद्धान्त पूछ्यौ नृपन सब, वृतांत कन्या व्याह कौ ।
 जब कही कन्या कहत जैसे, नृप सुबाँहु निर्दान कै ।
 सब भूप बोले सुद्रसन तै, जिह अकेलौ जाँन कै ॥२७८
 ह्य नाँहि हथ्यी सूर सथ्यी रथ्य रथ्यी और हौ ।
 इह स्वयंबर में आप आये कौन के बल से कहौ ।
 बोलौ सुदरसन नृपन के बिच सुजन काज सुधारनौ ।
 अनवद्य^९ रूप अखंड आद्या विस्व काँ बिसतारनी ॥२७९
 जग जननि कौ बल सब ही जग कौ, हमहु कौ बल है वही ।
 द्रग स्वयंबर कौ देखनै, अवगाह हित आये इहीं ।
 सुरस्वती देबी स्वप्न में, दरसाव हमकौ तिह दीयो ।
 द्रुत स्वयंबर कौ देखनै, तुम कासौ जाव इहीं कह्यौ ॥२८०
 पुन इहाँ आये दरस पाये, सब ही राजन के सुतै ।
 अरु जाँयगे फिर रिषी-आश्रम, मात जुत आप ही मतै ।

१. अक्षोहिणी सेना । २. चतुरंगिणी = सेना । ३. शिवपुरी = काशी । ४. वाहिनी-सेना ।

५. युद्ध । ६. मही = पृथ्वी । ७. अनयति । ८. समुदाय में । ९. अनवद्य = निर्दोष ।

जब सुद्रसन ईह जाब^१ दीनों, सुन्यो भूपत सवन ही ।
 वय-डिभ^२ देख विस्रंभ^३ कै, सुससुंभ^४ बोले मिल सही ॥२८१
 नृप जुधाजित उज्जैन—पत्तन, सत्रुजित अवधेसहु ।
 तुम सत्रुगन की नीत यारी, कदन^५ करवे कौं कहूं ।
 सुन सावधान रह्यो सदां जो कुसल चाहत जीव की ।
 हित चाह कै हम कहत है, कीजै विसास न क्लीव^६ की ॥२८२
 जब सुद्रसन बोल्थो जहां, सब नृपन कां समुभाय कै ।
 बातै विचार विवेक की, सुन लेहु श्रवन सुभाय कै ।
 जिह कीयो निर्मत^७ सवही जग कौं कीये निर्मत हमहुं कौं ।
 अरु सत्रु मित्रन सौं उदासी, कहत सांची तुमहु कौं ॥२८३
 कहु ईतैही पै सत्रुता कर, भाव भजहै तौ भलै ।
 वसू^८ बीज जैसो बोय है, वह फूल तरु जैसो फलै ।
 सब सुद्रसन की बात सुन, नृप सिवर-सिवर^९ सिधायगे ।
 ग्रह राज-भवन सुवाँहु गवने, अंत पै अकुलायगे ॥२८४
 कन्या बुलाय ईही कही, विच गोद कै बहिठार कै ।
 पुन माल लेय मधूक^{१०} पुस्पन, बरहु नृपत विचार कै ।
 सुन पिता बोली सिसकला, करहौ न ऐसे काम कौं ।
 कह नृपत आये कुट(टि) ल काँमी, धूम कर कर धाँम कौं ॥२८५
 मैं एक कन्या जाहि मन तैं, त्रिया हित सब ताकहै ।
 बरमाले डारै हम वही ऊर चाह कै अभिलाष है ।
 सिसकला वारवधू^{११} न सौं सिसकला नाहिन स्वैरनी^{१२} ।
 सिसकला अंस सुवाँहु संभव, वंस की नहीं वैरनी^{१३} ॥२८६
 पत सुद्रसन परनाय^{१४} कै, कासीहू सीम^{१५} निकास में ।
 सब राज कौं सुनवाय कै बस रहौ अपने वास में ।
 कासी-नरेस सब कही, विष-बेल नहि आंगी बढै ।
 गढ़पती जाबहु ग्रेह कौं, कन्या न बाहर कौं कढै ॥२८७

१. जबाय । २. बालक । ३. विश्वास । ४. स्वीकार करके कि टोक है--शुभ है ।
 ५. मारना । ६. कायर । ७. निर्मित = रचना, सृष्टि । ८. पृथ्वी । ९. शिविर = डेरे,
 स्थान । १०. महृषा । ११. वेड्या । १२. स्वैरिणी = स्वतन्त्र । १३. वैरिणी = शत्रु ।
 १४. विवाह, प्रणय करके । १५. सीमा ।

कछू नांहि बोले अनकहू, जर^१ जुधाजित बोले जिही ।
 वैधेय^२ भूप बनारसी, अनजान कीनीं क्रतु ईही ।
 इहीं दूर देस नरेश आये, बलैस कीय किह कारनै ।
 दुहिता सुदरसन देहूगे, बुलवाय लीनीं बारनै^३ ॥२८८
 कछू क्षमा करहै नृपत कोऊ, हम न जैहै हार कै ।
 अब सुदरसन कौं भार अरु, सकुटंब तोहि संधार^४ कै ।
 परनाय देहू तोर पुत्री, जोर सत्रुहजीत कौं ।
 सठ^५ कहत हौं समुभाय कै, दुहिता न दै दोहीत^६ कौं ॥२८९
 अथवा क राज-समाज में, ईह निरख नैनन तेम सौं ।
 बर-माल डाल बिचार कै, पति करै धारन प्रेम सौं ।
 समुभाय कन्या कहौं साँची, हम कहै जिह हाल कौं ।
 अत होयगी नहि तौ ऊपद्रव, चाहि छोरहु^७ चाल कौं ॥२९०
 सुन आय भूप सुबाहु नै, सिसकला कहि समुभाय कै ।
 पितु-वारता सुन श्रवत पुत्री, मन रही मुरभाय कै ।
 तज लाज कै पितुराज कौं, कँवरी हकीकत यौं कही ।
 परनाय कै निस^८ आज प्रथमही, सीख देवहु हम सही ॥२९१
 जब जीत कै लै जाँयगे, निरबैर रहिहै नृप न तै ।
 पत सुदरसन के संग पथ, पुन करहु बाहर पतन तै ।
 कासी-नरेश सुबाहु कन्या, कह्यौ तैसे हीं कीयौ ।
 बिप्रन बुलाये वेद-बिध सौं, चाहि चित मंडप छ्यौ ॥२९२
 परनाय हरन पसाव^९ दै, गजराज हय दासी गऊ ।
 सब अख सख सँभार कै, सुच वख वित^{१०} दीने सहू ।
 राजा सुबाहु मनोरमाँ, कर जोर समघन^{११} सौं कही ।
 रुच पाय दासी रावरी^{१२} सिसकला नित जाँनहु सही ॥२९३
 परमोद^{१३} कर ईम परसपर, ऊर मोद बाढ़ उछाह कै ।
 सनमाँन भूप सुबाँहु नै, जामात^{१४} पुज्जे जाहि कै ।

१. जर=जलकर । २. वैधेय=मूर्ख, शत्रु । ३. वरण के लिए । ४. संधार । ५. सठ=मूर्ख । ६. दोहित्र=पुत्री का पुत्र । ७. छोड़ो । ८. निशा=रात्रि । ९. प्रसाद, बहेज । १०. वित्त=धन । ११. सम्बन्धिनी, समघिन । १२. आपकी । १३. प्रमोद=हृष । १४. जामाता=जवाई ।

सब रात-बीती बात चुन कै, प्रात होवत महिपती ।
 निल साय कै सब हाथ मीजत, घात रच जुत घ्रीनती^१ ॥२६४॥
 वज जुद्ध वाँनक वंश श्रानक^२, अत अचानक ऊपटे ।
 भारी भयानक रोष राँनक, थान-थानक तै थटे ।
 बढ़ बाट^३ - बाटन घेर घाटन, फौज ठाटन फैल कै ।
 पत पार राज-कँवार परन्धी, गहहु ताकां गल में ॥२६५॥
 जम-जोर सिंधु-हिलोर ज्यों, कर सोर च्यारहु कूनतै^४ ।
 अकुलाय अरवर वीर बरवर, धेक धर खग धून तै ।
 सज सेन भूप सुबाहु सुद्रसन, रोष रन जूझत रहै ।
 छह दिवस बीते तीर छूटत, खग खूटत वह खहै^५ ॥२६६॥
 दलमलत कासी ब्रंगपै, खलभल छतीसू खोहनी^६ ।
 कलकलत रीढक^७ कमठ^८ की, मलचलत नागाधिप^९ मनी ।
 गह केक स्यंदन हय गयंदन, आरकंदन^{१०} आहुरे ।
 ध्रुवसंघ-तंदन द्वेष द्वंदन, छोर छंदन चाहुरे ॥२६७॥
 कहि वचन करकस^{११} वीरवर कस, तान तरकस तीर काँ ।
 हीय धेक धारत मिल प्रहारत, विजय हित वर वीर काँ ।
 तहां जुधाजित कर तेख^{१२} काँ, अवरेख वेर अनाद काँ ।
 मरनाद छोर मरोर मुछ्छन, बढत तीर विषाद काँ ॥२६८॥
 रथ घेर लीनी सञ्जित, पथ संग भूप सुबाहु काँ ।
 बढ खेत चत्वर^{१३} सूर सत्वर^{१४}, रोक लीनी राह काँ ।
 जामात सुसर^{१५} घिरे जहां, अत परची संकट आयक ।
 इतके न उतके तहे अवती, पाहि देवी पाहि कै ॥२६९॥
 वृजराज विरद विचार कै, गजराज तारची ग्राह सौं ।
 अथ तो ऊवारहु ईश्वरी, अवगाह विरद उछाह सौं ।
 जप बीज-संग कष्टो जितै, भगवती आई भीर काँ ।
 मुद्रमनहू बोली सुसर सौं, ध्रुव^{१६} धरी नैकहु धीर काँ ॥३००॥

१. मलिन । २. डोर, मनाड़े । ३. बाट—मार्ग । ४. कोल । ५. उग नृपि पट ।
 ६. लोहनी । ७. कुट । ८. ककठन, कटुवा । ९. सर्वदाक, गजराज । १०. आकन्दन
 कुट, हीलना । ११. कसत—कठोर । १२. जोष । १३. धावन, चतुर्धाट । १४. शीघ्र ।
 १५. अश्व । १६. विरघन, विरता ।

इह सिंघ की असवार कौं, निज दरस कीजै नेम सौं ।
 ईह पास अंकुस लियै आई, परख आरत प्रेम सौं ।
 जब जुधाजित अरु सत्रुजित, देखी तऊ रननां दटे ।
 पुन कासीराजहु सुद्रसन पै, मार बाँनन अटमटे ॥३०१
 तब चंडका तरवार लै, कर कोप क्रौं-रव^१ किलक में ।
 जहाँ जुधाजित अरु सत्रुजित कौं, मार डारे पलक में ।
 कर क्रपा सुद्रसन स्याहि^२ कीनी, सहित भूप सुबाहु की ।
 सुन करहु देवी स्याह सबकी, जोऊ सुमरै जाहु की ॥३०२
 अरु सुमन बरखे इहीं अबसर, देवता सब देख कै ।
 जय - जयत बोले सब्द जु र कै, भक्त - भाव विसेख कै ।
 जय सुद्रसन पाई जहाँ, खल^३ मार कै रन-खेत कै ।
 कासी-नरेस सुबाहु की, हीय भई सिद्धी हेत कै ॥३०३

दोहा

समर^४ सहोदर सत्रुजित, मातामह जुत मार ।
 भक्त सुदर्शन भक्त की, सब विध करचौ सुधार ॥३०४
 राव^५ करै वह रंक^६ कौ, रंक करै सोई राव ।
 संकट भेटे सुद्रसन, कीनी साच कहाव ॥३०५

छंद द्वंद्व-प्रसारी

मात सुदरसन संकट भेट्यौ, भय कौं छोर अभय पद भेट्यौ ।
 कासी-भूप वरनना^७ कीनी, असरन-सरन भक्त - आधीनी ॥३०६
 विध हरि हर तुहि विरद बखानै, जीव तुच्छ मति हम कहा जानै ।
 दुहिता अरु जामात दुहूँ कौं, अधम उधारे मात अहूँ कौं ॥३०७
 तारे हम जैसे जग तारहु, आरत भक्तन देख उधारहु ।
 असतुत सुनी सुबाहु ऊचारी, सुन देवी हीय भई सुखारी ॥३०८
 बोली सुन देवी तिह बारा, माँग - माँग बर बचन हमारा ।
 सुन कै देवी बचन सुबाहु, जोर दहूँ कर अवसर जाहु ॥३०९

१. शब्द । २. साहाय्य, रक्षा । ३. दुष्ट । ४. युद्ध । ५. राजा । ६. वरिष्ठ ।
 ७. वर्णना = स्तुति ।

परम भक्त-हीय मोद प्रकासीय, करहु निवास सदाँ बिच कासीय ।
 देवी कह्यौ बसत तुव द्वारहु, दुरगा - नाम धाम ध्रुव धारहु ॥३१०
 दीय बरदान इहै जगदंबा, ऊपज प्रतीत सुबाहु अचंबा^१ ।
 जग पुञ्जत जाकौं जग-जननी, गत जाकी महमा अन-गननी ॥३११
 सुद्रसन भेंटे चरन सुभागी, लख सिसकला चरन पुन लागी ।
 देवी अरज सुनहु समदं^२ यत, कहै कहा हमरौ हीय कंपत ॥३१२
 कँहां बैठ तुम सुमरन करै^३, ईह भव सागर पार ऊद्धरै ।
 भूप कह्यौ देवी भज भावन, पुरी अजोध्या तुमरी पावन ॥३१३
 अवर भूप तै भई ऊदासौ, बसहु अबध के हुय तुम बासी ।
 प्रजा भाग सुख लेहु-प्रतीती, न्याय-रीत सौं पारहु नीती ॥३१४
 दंपति प्रीत सहित सुखदायक, बसहु जाय निर्भय बर-दायक ।
 जननी ऊभय येक सम जाँनहु, मनोरमाँ लीलावती माँनहु ॥३१५
 परै भीर^४ तौ हपही पुकारहु, तेरे सकल दरिद्र-दुख टारहु ।
 आठम और नवम तिथ आवै, चतुरदसी हम पुञ्ज चढावै ॥३१६
 आश्विन प्रथम मास अधकारी, सेवहु नित तुम रहहु सुखारी ।
 सुचि मधुमास^५ निसा नव सेवहु, लाभ भूप मन-बंचत लेवहु ॥३१७
 अतरध्यान भई कह एती, सुन्यौ सुदरसन श्रवनन सेती ।
 सब राजा आये सुद्रसन पै, जुर धाये मंत्री जन जन पै ॥३१८
 सबही कहन लगे तुम स्वाँमीं, गनहु हमँ अपनै पदगामी ।
 अंबा-चरन-भक्त अनुरागी, भूप-सिरोमन^६ तुम बड़भागी ॥३१९
 करी बालपन में कहा करनी, ता तै बस^७ भई तारन-तरनी ।
 कछु हमकौं ऊपदेसही कीजै, रमाँ जक्त - जननी लख रीजै^८ ॥३२०
 बोले नृपत सुदरसन वाँनी, कहै कहा ईह अकथ कहाँनी ।
 जग के जीव हमहु कहा जाने, ब्रह्माँ बिसन महेश बखानै ॥३२१
 सब ऊत्पत पालन संघरनी, सेव करै सौं असरन - सरनी ।
 निरगुन ध्यान-जोग मुनि नीकै, सरगुन तुमहु हमहु सबही कै ॥३२२

१. आश्चर्य । २. मेरी । ३. नावना से । ४. कष्ट । ५. चंद्र । ६. शिरोमणि ।
 ७. यग । ८. रीजै — प्रसन्न हो ।

काँम-बीज-मंत्र ही जिह करौ, उर में तिह जप मेट अँधेरौ ।
 प्रांजल^१ हृद करी पद प्रीती, जातै विषम काँमना जीती ॥३२३
 दया करी तातै जगदंबा, सेवक अपनों जाँन ससुंसा^२ ।
 सुद्रसन कही नृपत सब सुनी, गावत देवी कीरत गुनी ॥३२४
 सबही राजा देस सिधाये, अरू सुबाहु नृप कासी आये ।
 सुद्रसन गयौ अवध-पुर सोई, संग लीनै त्रीय मात सकोई ॥३२५
 परजा मंत्री मिल सुख पाये, बिधवत मंगल-कलस बधाये ।
 राज-भवन में जाय नरेस्वर, पुन देख्यौ सभही अंतह-पुर^३ ॥३२६
 लीलावती माता पग लागै, ऊभय जोर कर तिनके आगै ।
 मात सुनहु बिनती ईक मेरी, बिधवत बात कहत इह बेरी ॥३२७
 मनीरमाँ तै ईधकी माता, करकै क्रपा कहहुँ कुसलाता ।
 सत्रुजीत मम भ्रात सनातन, जुधाजीत विग्रह कीय जातन ॥३२८
 कर बिपरीत बन्यौ मम केबी,^४ दंड दीयौ ता काँरन देवी ।
 सुत में तोर करहु सिवकाई,^५ मो पर क्रपा कीजिये माई ॥३२९
 सुद्रसन के सुन बोल सयाँना, लीलावती चित्त ललचाँना ।
 कही पुत्र तै सत्य कहाँनी, धारहुँ धरा ईहै रजधाँनी ॥३३०
 कर सर तंत राज तुम कीजै, परजा मंत्री देख पतीजै ।
 जीवन मरन सुजस अपजसहू, बिधना हाथ कहा किह बसहू ॥३३१
 कीय प्रनाम मातहि कर जोरी, बिनती बहुबिध करी बहोरी ।
 सुनि बसिष्ठ-आदक मिल मंत्री, तब सुद्रसन कीय तिलक सुतंत्री ॥३३२
 श्रीदेवी ? मंदिर कर सुंदर, कमृ^६ मनहु दूसर गिर-कंदर^७ ।
 प्रतकाया^८ देवी रच पावन, संस्क्रीया^९ खंगार सुहावन ॥३३३
 थित रचना कर करीजु थापन, तब नृप भये बिगत त्रहुँ तापन ।
 पुर-पत्तन प्रति हुकँम प्रचारा, सिखरी मँडप बनाबहु सारा ॥३३४
 पूजा देवी प्रजा प्रचारहु, निगम^{१०}-पंथ-जुत जन निरधारहु ।
 रघुराजा जिम रघुवर-रीती, पूजा देवी बढी प्रतीती ॥३३५

१ सरस, सरल, निष्कपट । २ अंगीकृत कर । ३ अंतःपुर = रनिवास । ४ बेरी ।
 ५ सेवकत्व । ६ कमर = सुन्दर, कमनीय । ७ पर्वत-गुफा । ८ प्रतिकाया = मूर्ति ।
 ९ संस्क्रिया = संस्कार । १० वेद ।

देवी-भक्ति ससक्त ब्रह्मावत, ग्रह-ग्रह ग्राम-ग्राम जस गावत ।
 पुनि श्रीपावन कहत महात्म^१, जनमेजय प्रति ईह बृत संजम^२ ॥३३६
 पुनकाल^३ रिनु सरद प्रमाँनों, जमद्रष्टा^४ रज^५-कारक जानों ।
 नवरात्री-द्वत तामहू नीकी, जो सुखदायक है निज जीकी ॥३३६
 ईश^६ भाग मधु पाव^७ उजीयारा^८, क्रमपाटी^९ पक्षति^{१०} सुभकारा ।
 सोन^{११} हाथ रीप कं खंवा, ऊतम मंडप रचै जु अंवा ॥३३७
 न्याय हाथ जाके द्विच चोरी^{१२}, ऊरध येक हाथ कर श्रीरी ।
 देवी ऊतम नव बनायै, मंडप बंदन-माल मढ़ावै ॥३३८
 मंडोदर^{१३} ऊरध कर छाया, मंगल रूप हेत महमाया ।
 येद-धिपाँन जानवेकारे दुजन बुलावै मंडप द्वारे ॥३४०
 प्रान-पाल प्रतिपदा पुनीता, पुन जल-मंजन करै प्रचीता ।
 समये वित^{१४} सरथा^{१५}-दुत नूकै, पाय अरध बंदन कर पूजै ॥३४१
 सोन नयाँ नव तीन एक पैह, सुमरन पाठ करावै जा सँह ।
 निर देवी थारै तिपासन, प्रतमा देवी करै प्रकासन ॥३४२
 धर्मद्वार मैपथ^{१६}-सधारै, च्यार भुजा प्रायुध फिर च्यारै ।
 पदा पदा पर साँप महावै, पुस्पमाल ऊतम पहरावै ॥३४३
 प्रथमा कर्तुं एवरन नहीं पाई, मंत्र नवाधर जंत्र मढ़ाई ।
 बाही की पूजा अनुष्ठान तै, कही पुति की जाही क्रम तै ॥३४४
 पूज साँप रहन पुन वंसद, मंगलधाम्य^{१७} बीजे तहाँ मंत्रग ।
 हवन मारण परिचो दिन होयै, मानहू यत ऊतम दिन जीवै ॥३४५
 जावना^{१८} अथवा प्रथामन^{१९}, वृत्त देवी दिन अनुष्ठान गावन ।
 पद-पदीय मनीशर मरै यम मानंद निद्रु श्रेष्ठ पुमडै ॥३४६
 पदा पुमड कर्तुं क्षुभीरै, विपण-पुण निद्र-मन-अनुमाये ।
 देव-पद-... के अर्थ... देवी-भक्त-... जिनके... ॥३४७

१. महात्मन् २. जनमेजय ३. काल ४. जमद्रष्टा ५. रज ६. ईश ७. मधुपाव ८. उजीयारा ९. क्रमपाटी १०. पक्षति ११. सोन १२. चोरी १३. मंडोदर १४. वित १५. सरथा १६. मैपथ १७. मंगलधाम्य १८. जावना १९. प्रथामन

पूजै ईक अथवा दुय पेखै, वृद्धमान अथवा क विसेखै ।
 संख्या जाकी देत सुनाई, लखहु जाहि नीकै चित लाई ॥३४८
 बरस जु जुगल कंवारी बेस, हायन त्रय त्रय-मूर्ती^१ हमेस ।
 कल्यानी चव^२ बरस कहीजै, पंच रोहनी^३ लहि पूजीजै ॥३४९
 काली षट्-आयन^४ को कहीयै, सात बरस चंडका^५ सुनवईयै ।
 सांभवी^६ आठ बरस की सोऊ, कहि दुरगा नव बरस सकोऊ ॥३५०
 जाँनहु सदा पूजबे जोगू, लक्षण कहत सुनौ जिह लोगू ।
 हीनांगी तन की नहीं होवै, कुष्ट^७ घाव-जुत अंध न को ऐ ॥३५१
 बहु रोमाकुल दुष्ट बचावै, काँनो और कुरूप कहावै ।
 पुस्पवती^८ रुज-सहित परेखौ, लछन^९-हीन अपुज्यही लेखौ ॥३५२
 कन्या च्यार बरन अधिकारी, है परन्तु दृज की हितकारी ।
 नव निस पूजा बनै न नीकी, हितकारी तिथ अष्टमही की ॥३५३
 ता पाछै कर हवन तहाँ ही, जौमाबै पुन बिप्र जहाँ ही ।
 दाँन दक्षना बिधवत दैकै, बहुर बिसरजन^{१०}-रोत बिसेखै ॥३५४
 दारद-दोख मिटावन दायक, लछि धाँन धन वृद्धि लायक ।
 च्यार पदारथ करै चाँवना, भजै भवानी सहित भावना ॥३५५
 यामे ईक ईतीहास अनूपा, भली रीत साँ सुनीयै भूपा ।
 मंडल पुरी अयोध्या माँही, बनक^{११} सुसील जु नाम बसाँहीं ॥३५६
 पुत्र बढ़े ताके परचारा^{१२}, दारद जैसौई बढ्यौ दिवारा ।
 कहूँ मजुरी लाबै करकै, भोजन ऊदर मिलै नहीं भरकै ॥३५७
 करम करत निज धूम-अनुकूला, दारद-दोष भ्रमै मन-डूला ।
 बंठा सोच करत ईक बारा, दृज आये केऊ ताके द्वारा ॥३५८
 बिप्रन पूछ्यौ बनक बिख्यारी^{१३}, निज सुत सुता तथाँ हम नारी ।
 धन चाहत नहीं अधिक धरौहर, भोजन चाहत लखौ उदर भर ॥३५९
 बिनती करत ऊपाव वतावौ, दारद करै ईतौ निरदावौ ।
 जब बिप्रन ईह दयौ जनाई, वृत नव रात्री रीत बताई ॥३६०
 बीजमंत्र दीनौ जित बिप्रन, महामोद-जुत जपहु मनो-मन ।
 राँवन हरी तीया रघुवर की, परी विपत लंकेसुर^{१४} पर कौ ॥३६१

१ त्रिमूर्ति । २ चार । ३ रोहिणी । ४ आयन=वर्ष । ५ चण्डिका । ६ शांभवी ।
 ७ कुष्ठ । ८ पुष्पवती=रजस्वला । ९ लक्षण, चिह्न । १० विसर्जन=छोड़ने की ।
 ११ वणिक=बनिया । १२ परिवार । १३ विपत्तिप्रस्त । १४ लंकेश्वर ।

कीयों वरत देवी किसकंधा^१, वह प्रवाहु जलनिध^२-पुल बंधा ।
 जुत परवार हथ्यो^३ खल जेही, विजय पाय पाई वैदेही^४ ॥३६२
 वैस्य करहु तुम वरत विधाना, नव-रात्री हीय हेर निर्दाना ।
 जपहु वीजमंत्रहु की जापा, पैहौ नवहौ निध ताहि प्रतापा ॥३६३
 द्वज ऊपदेस दीयो वृत देवी, सुन वह वैस्य जिहीं विध सेवी ।
 जपत रह्यो नव बछ्छर जाहू, तिह परताप दरस दीय ताहू ॥३६४
 भेट्यो संपत क्रपा भवानी, जाकी कथा सकल जग जानी ।
 ईह इतीहास पढै अरु गावै, वैस सुसील ज्युहीं सुख पावै ॥३६५

दोहा

राँवन की रघुवीर पै, बिपत परी कहा बात ।
 किसकंधा कैसें करच्यो, राँम वरत नवरात ॥३६६
 देवी जैसै वर दयो, मिल कपि-पुरी^५ मुकाँम ।
 पुल वाँध्यो पाथोद^६ पै राँवन मारच्यो राँम ॥३६७
 वैदेही पाई विजय, अवध पधारे ईस ।
 व्यास-देव ईह वारता, वरनहु विसवा-वीत ॥३६८
 जनमेजय रुच पाय जब, वरनन लागे व्यास ।
 सुनन लगे सब जन सभा, अत ऊतम ईतीहास ॥३६९

छंद भुजंगी-प्रयात

अज्ञोष्या-पूरी राजधानी अनंदं, मनु-आद^७ इत्याक^८ वाँधी मृजादं^९ ।
 रघुराज ताही धिती^{१०} रीत राखी, सब ही प्रजा देत है नीत साखी^{११} ॥३७०
 तिहीं वंस में श्रीतरच्यो अंत त्रेता, जिहीं नाम दसरथहू जंग-जेता ।
 मतो सुमृती^{१२} परम धर्म महांना, जिहीं उन्नती क्रीत (क्रीति) जानै जहांना ॥३७१
 बड़े सूर वानी सोई हंस-वंसी^{१३}, धरां धीर-धारी प्रजा-ताप-ध्वंसो^{१४} ।
 रजै रानीयां केक अनंद नामी^{१५}, रम सुंदरी मिदरं^{१६} इंद्ररा^{१७} सी ॥३७२
 कसी पट्टी^{१८} कौतलाधीस^{१९}-कन्या. अरु केकई त्यों सुमित्राहू अंन्या ।
 सब प्रीत की रीत एकै समानी, करै एकहू सौं नहौं अान-कानी^{२०} ॥३७३

१ विविधायाः । २ जलनिधि = समुद्र । ३ मारा । ४ जनकपुत्री, जानकी ।
 ५ कपिल-पुरी = विविधायाः । ६ पाथोपि = समुद्र । ७ मनु आदि । ८ इत्याक ।
 ९ मृजादः । १० धिपति । ११ नामक = पदाती । १२ मृति । १३ सूर्यवंशी ।
 १४ हुसकायाः । १५ राति = समुद्र । १६ मिदिरा = मृद, मृत्तम । १७ इन्द्रिरा =
 मरुती । १८ पट्टाणी । १९ कौतला देव के राजा । २० अन्वयाय, पार्थिव्य ।

जिहीं बल्लभा^१ कौंसला^२ राँम जाये, अजं ईस औतार^३ कौं धार आये ।
 भरथं^४ जनै कैकई भारजा नै, जनै त्यों सुमंत्रा^५ ऊभै पुत्र जानै ॥३७४
 भये सेस^६ औतारहू राँम भाई, जिहीं लच्छंन नाम दीनौ जनाई ।
 लघू नाम सत्रुघ्न^७हु और लेखौ बढी भर्त तै प्रीत ताकी बिसेखौ ॥३७५
 भये दासरथी^८ जहाँ च्यार भ्राता, गुरू-कर्म^९ लावण्य^{१०} दाता सुजाता ।
 करे वेद की रीत साँ संसकारा, पढ़े भेद बाँनावली^{११} वार-पारा^{१२} ॥३७६
 सदाँ यातु^{१३} मारीच औरै सुबाहू, रिषी काँ सतावै मनौ चंद राहू ।
 अजोध्या पुरी चाहि गाधेय^{१४} आये, जिहीं वेदना दासरथं जनाये ॥३७७
 क्रतू-काज में चाहियँ स्याहि-कारी, बली राँम राँमानुज^{१५} की बिचारी ।
 दहू बरि काँ भीर मैं संग दीजै, क्रपाल^{१६} मुनो-काज कौं सिद्ध कीजै ॥३७८
 ऊभै पुत्र कौं साथ त्रसांकु-याजी^{१७}, रिषी सौंप दीने चले होय राजी ।
 महाँखंड कोडंड^{१८} लोनै कुमारा, लगे पंथ कौं जात गाधेय लारा ॥३७९
 ईते ताड़का राखसी द्रष्ट आई, रिषी देख बोले हनौ राँम राई ।
 महाँबाहु ज्याँ ऐचके बाँन मारचौ, परी पापनी प्राँन ताकौ प्रहारचौ ॥३८०
 चढे द्रष्ट पै कष्टकारी नृचक्षा^{१९}, प्रहारे रिषी जग्य के जे निपक्षा^{२०} ।
 सुबाहू महाँपातकी^{२१} कौं संघारचौ, महाँदुष्ट मारीच कै बाँन मारचौ ॥३८१
 ऊडचौ सुद्ध काँ भूल कै ऊद्ध ऐसै, तचै तप्त के बेग सौ तूल तैसे ।
 मती नीच मारीच कै बीचिमाली^{२२}, अपाची^{२३} दिसा बीच गेरचौ उछाली ॥३८२
 क्रतू-कर्म गाधेय संपूर्न कीनौ, हुयो अट्टवी राक्षसी जात हीनौ ।
 करी बीनती राँम गाधेय काजा, रच्यौ जग्य आरंभ बैदेह राजा ॥३८३
 दिखावौ तिहीं चाहि कै जाय देसा, निहारै तहाँ नीक नाना नरेसा ।
 मुनी जानकै राँमचंद्र मती^{२४} कौं, परे मैथला^{२५} पंथ धारै प्रथा कौं ॥३८४
 सिला होय सोई परी मग्न सारी, अहिल्या गोवतम^{२६} नारी ऊधारो ।
 प्रभू मैथला मग्न आगै पहुँचे, अटारी लखी द्रंग^{२७} मे लग^{२८} ऊँचे ॥३८५

१ प्रिया, स्त्री । २ कौसल्या । ३ अत्रार । ४ भरत । ५ सुमित्रा । ६ शेष । ७ शत्रुघ्न ।
 ८ दासरथि = दशरथ के पुत्र । ९ गुरुकर्म = विद्या । १० लावण्य = सुन्दर, सलोने ।
 ११ धनुर्वेद । १२ पारावार । १३ यातुघान = राक्षस । १४ गाधिपुत्र, विश्वामित्र ।
 १५ रामानुज = लक्ष्मण । १६ क्रपाल । १७ विश्वामित्र । १८ कोदण्ड = धनुष ।
 १९ राक्षस । २० विपक्षी = विरोधी, शत्रु । २१ पापी, दुष्ट । २२ नदी । २३ अवाची
 दक्षिण । २४ इच्छा । २५ मार्ग । २६ गोतम । २७ दुर्ग । २८ शृङ्ग ।

बंधी धर्म-धर्म पताका^१ विराजे, बड़े आँनकं थानकं ध्वानं^२ बाजें ।
 गिरा^३ कोकला^४ गायनी^५ गीत गावें, निकाई जुते वारनारी^६ नचावें ॥३८६
 गहै संग गायिष चाले गली फौं, थितं जिग्य वैदेह^७ राच्यी थली कौ ।
 मुनीराजहू सग लीनं कुमारा, पती-श्रीध कैं जोध^८ जेता पवांरा ॥३८७
 बटे देस के देस के राजवंसी, परामंच श्राव्ह वैठे प्रसंसी ।
 मुनीराल आराध के दीघ^९-मंचा, ऊभं वीरहू साथ वैठे ऊदचा^{१०} ॥३८८
 प्रतज्ञा करी चाप^{११} की सुलपानी^{१२}, सभा बीच राजान थप्पी सु आनी ।
 बली तिष्ठ कैं लस्तकं मुष्ट बंधं नमादें अघो^{१३} श्रट्टनीकौ निमंधें ॥३८९
 चट्टे^{१४} ग्रहै एंव^{१५} सिजा^{१६} चढ़ावें, पती भूम सोई सुता भोर पावें ।
 गितीनाथ^{१७} वैदेह ने मर्म खोल्थी, बड़े आगन्या^{१८} ले तहाँ सूत बोल्थी ॥३९०
 राजा पाव उठे जबें राज रांनं, तटी बंध क लीनि^{१९} के संध तांनं ।
 भुजा-उंट कोउंट कां जाय भेंट, मरौरें गहै मुष्टका मांन मेंटे ॥३९१
 गिरीके हंसके बंस चक खावें, फसं अंगुलीहू अंगुष्टा फसावें ।
 हलें नां चलं नां चलं हाथही कैं, पुलके डुलंके रुलं पाथही कैं ॥३९२
 गुलं सीत^{२०} ऊसनीक^{२१} कोटीर^{२२} लूटें, चले केस-कक्षा^{२३} कहुं बंध छूटें ।
 कटी-विश^{२४} लूटें सटी^{२५} संध केने, तुटे हार मुक्ता-वलीमाल तेने ॥३९३
 हसं देव कैं एक को एक हांसो, तजें तेज के तालतंडे^{२६} तमासी^{२७} ।
 गहै मेव^{२८} के जेव नां राव राजा, सही टेक कैं सूत भाइयो समाजा ॥३९४
 हटे राजवंसी भये बंस-हीता^{२९}, सजें चाहि कैं द्याह कां कौन सीता ।
 जावानी रही मंचनाधीस-कन्या, निष्ठयो^{३०} भई नूम एती निधंन्या ॥३९५
 नमारे मुने देव कां नैन नीचे, पारी होय फेरु नही मुष्ट्य खींचे ।
 मुने मुत के बोल गायिष सोळ, दर्हि नैन की संत^{३१} पं वीर दोऊ ॥३९६

१ पताका । २ ध्वानं = ध्वनि । ३ बाजी, स्वर । ४ कोकिला = कोयल । ५ गायत्री
 ललाटे बाजी । ६ वारनारी = देवता । ७ विदेह = प्रजक । ८ योद्धा । ९ दीघं =
 बड़े । १० उदचा = उधे, ऊपर । ११ चाप = वायुय । १२ सुलपानि = निय ।
 १३ अघो = शीघ्र । १४ चट्टे = उधे । १५ एंव = अथवा । १६ सिजा = शीघ्र । १७ शिखिनाथ
 का मुनि । १८ अग्न्या = अग्नि । १९ लीनि = लीन । २० सीत = शिखि । २१ अघनीय
 का शीघ्र । २२ मुष्टका । २३ कक्षा = कक्षा । २४ विश = शिखि । २५ सटी = शिखि ।
 २६ तालतंडे = तालतंडे । २७ तमासी = तमासी । २८ मेव = मेव । २९ बंस-हीता = बंस-हीता । ३० निष्ठयो = निष्ठयो । ३१ संत = संत ।

ऊठे राम विक्रांत बाहु-अर्जांना^१, दीये चाँप की श्रोर कां सिधडाना ।
 गहै लस्तकं^२ भाग को मुष्ट^३ गाढी, चिला ऐंच कँ सिजनी^४ सीस चाढी ॥३६७
 तुट्यौ सिभु-कोडंड भौ तीन टुक्के, धरा धुज्जकँ सेस के सीस धुक्के ।
 परचौ जोर सौँ सोर कौँ घोर पुरौ, हल्यौ ठौर सां सिधु सांतूँ हिलोरी ॥३६८
 मुरै दिक्करी^५ चिक्करै चीस मारे, अटे ध्यान कँ ईस नैना उधारै ।
 रही गाँन रुक्कँ चुकी ताल रंभा, उठे चौंक सूत्राँन^६ बाढचौँ अचंभा ॥३६९
 डुलै सैल के श्रंग लीनी दरारै, परचौ लंक कौ नाथ वाँहै पसारै ।
 दसूँ—अननं^७ म्लान ह्वै लाग धूरी^८, इहीं बेर कौँ आद ऊगौँ अँकुरौ ॥४००
 खिसे और राजाँन कँ पाँन खूटे, ऊठे मंच तँ खंच चाले अकूटे ।
 सबे धिक्कती^९ निक्कती^{१०} कँ सिधाये, बिकुर्बान^{११} राघौ^{१२} करीरं^{१३} बधाये ॥४०१
 दसूँ हीँ दिसा सुंदरी पुस्प डारै, अली रानीयाँ सीस मुक्ता ऊवारै ।
 करै सव्य जै लुब्ध^{१४} आनंदकारी, बरखखे अवग्राह में जान वारी ॥४०२
 प्रीया पान लैकँ सिया पुस्पमाला, बली राँम के कंठ डारी बिसाला ।
 नमे भूप गाधेय के पाय लागौँ, रिषी-राज लाये भले संग राघौ ॥४०३
 प्रतज्ञा रही मोर तोही पसावँ, भली रीत जान्यौ क्रपा चीत-भाबँ ।
 पती-श्रीध कौँ कुंकम-लेख-पत्री^{१५}, मुनीराज सौँ मंत्र लै बोल मंत्री ॥४०४
 लिखाई सोई दूत दोनी सु लीनी, भली रीत बातँ कही स्नेह-भीनी ।
 बड़े बाज^{१६} कँ राज देही बधाई, पिनाकी धनुर्तोरि कँ जीत पाई ॥४०५
 प्रतज्ञा रही मोर कीनौ पवारौ, सुनैहौँ सीया व्याह कौँ तत्व सारौ ।
 कनीयात है ग्रेह सो तीन कन्या, वही रावरे पुत्र कौँ दैह अंग्या ॥४०६
 क्रतू-काज में रावरे द्वै कुमारा, इहीं कारनै थंभ रखे अवारा ।
 बने दीय कँ संग सज्जै बराती, पधारै कहै देहगे एह पाती^{१७} ॥४०७
 सतानंद कौँ पूँछ बैदेह सारी, बिदा दूत कीनों सुबेला^{१८} बिचारी ।
 बिदा दूत ह्वैकँ चलौँ श्रीध बाढी, घनै बेग साँ लाँध कँ नाल घाटी ॥४०८

१ आजानबाहु = घुटनों तक भुजाओं वाले । २ धनुष का मुट्टी का भाग । ३ मुष्टि = मुट्टी । ४ प्रत्यंचा, डोरी । ५ दिग्गज, दिक्पाल । ६ शौचामणि इन्द्र, देव । ७ दशानन = रावण । ८ घूलि = मिट्टी । ९ धिक्कति = धिक्कार । १० निष्कृति = असफल, बदला । ११ हर्षध्वनि । १२ राघव = राम । १३ बांस, कलश । १४ लुब्ध = लुभावने । १५ आमंत्रणपत्रिका । १६ शीघ्र । १७ पत्री । १८ सुबेला = शुभमुहूर्त ।

अजोध्यापुरी जाय देखी अनूपं, भजे दासरथं प्रजा श्रेष्ठ भूपं ।
 गयीं राज के द्वार पै दूत ज्ञाता, समं जाँत राजाँत ऊधर्स^१ साता ॥४०६
 सदै रीत साँ राँम दीनों संदेसा, बधाई दई भेज दंडी विसेसा ।
 मुखी मैथलाधीस कौ दूत मैं हूँ, पती-श्रीध अज्ञा मिलै दर्स पैहूँ ॥४१०
 सु-यीं राँम के नाँम कौं भूप खाँनं, थितं आप बोलाय लीने सुथानं ।
 करी भेट नौछावरै भूप केरी, बधाई दई राँम की ताहि बेरी ॥४११
 द्रुतं मैथलाधीस कौ पत्र दीनी, ललामं^२ लखे भूपनै हात लीनी ।
 वड़े भूप श्रीछाह^३ के ताहि बाँच्यौ, हृदं मैथलाधीस साँ नेह राच्यौ ॥४१२
 सपुत्रं^४ सुनी राँम की कीत सारी, बह्यौ नैन साँ ऐन^५ आनंद-वारी ।
 वृती देस सुद्धांत^६ भेजी बधाई, सुनी राँम की मात सोभा सवाई ॥४१३
 महाँमोद साँ बोल कै राज-मंत्री, पढ़ाई सब मैथलाधीस पत्री ।
 प्रभा श्रीध के ईस की याँ प्रकासी, रजे पूर्नमाँ^७ चंद ज्यौं तोय-रासी^८ ॥४१४
 विजोगी सुतं राँम भागौ^९ बखेरी, ऊदं^{१०} भाँन ज्यौं नैन त्याग्यौ अंधेरी ।
 सुथानं तव दूत डेरा सिधायौ, छितीनाथ कौ ग्रेह आनंद छायाँ ॥४१५
 तिहीं जाँन^{११} की हीन लागी तयारी, सजी हैदलं^{१२} पैदलं सैन सारी ।
 तसै सारका तूर^{१३} बोले त्रहक्का, ढमकं वड़ी नौबतै वाज ढक्का^{१४} ॥४१६
 फलै फील^{१५} पै ढील नेजा^{१६} फरक्कै, धुजा श्री पताका मिलै व्योम^{१७} ढक्कै ।
 बने दुल्लहा भर्थ^{१८} सत्रुघ्न वेसा, निकासी करी जाँन की याँ नरेसा ॥४१७
 गली मैथली भूप बाढची सुगर्वा, सजे वाहु दंतेय^{१९} मानों सुपर्वा^{२०} ।
 पिले दासरथी वराती प्रयाँतौ, मिले ऊभरले सात साँमंद्र माँनौ ॥४१८
 मँडे मग में लग केते मुकाँवा, धमके धरा घूज पाताल धाँमाँ ।
 पती-श्रीधकी मैथला द्रंग^{२१} पूगी, ऊदं-अद्र^{२२} पै जाँन कं भाँन ऊगी ॥४१९
 ईतं भूप वंदेह आयी अगोनी, छिती तोषधारा मनी बाढ छोन्ही^{२३} ।
 अजोध्यापती साज आगंतु^{२४} आये, धकं चाल कै लोग ग्रामीन धाये ॥४२०

१ उधर्स = अधिक हर्ष । २ ललाम = सुन्दर । ३ असाह । ४ सपुत्र = सपूत । ५ कीर्ति ।
 ६ रनिदास । ७ द्रुसिमा । ८ सपुत्र । ९ नाग्य । १० उदय । ११ वारात ।
 १२ अपरम = अद्वयसमूह । १३ तूप = सहनई । १४ डोल, टमक । १५ हाथी ।
 १६ निदान, ध्वजा । १७ आशास । १८ नरत । १९ इन्द्र, ऐरावत । २० देव ।
 २१ नगर । २२ उदयाद्रि, उदयावन । २३ ओली = पृथ्वी । २४ आगन्तुक = अतिथि,
 मेहमान ।

सुपंथा^१ दुबाजू^२ सपेखं सवारी, पुरी मंथला जाँन बाँहै पसारी ।
 ऊभै ओर तै भेंट काजँ ऊँमाहे^३, ऊभै ओर हूतँ उभै भूप आये ॥४२१
 पहुँ बाँह सौ पंचसाखा^४ पलेटै, भलो भांत सौ अंक^५ तै अंक भेंटै ।
 कथा पूँछ कै सूचक^६ क्षेमकारी, ऊभै भूप नौँछावरै हूँ ऊतारी ॥४२२
 ऊभै पुत्र गाधेय कै संग आये, पितू औध-के-ईस के लाग पाये ।
 ऊभै पुत्र देखे नृपं आस्य^७ ओरा, चितै पूर्नमा-चंद जैसे चकोरा ॥४२३
 लला बोलकै बोल छाती लगाये, लुट्यौ द्रव्य ज्याँ द्रभ्य^८ के हाथ लाये ।
 नरेन्दं भलो भांत भेंटै सुनिद्रं, महामोद के बंद पादारविंद्रं^९ ॥४२४
 कह्यौ अंजुली^{१०} जोर कै सिद्ध काजा, रिषी-राज ही लाज बंदेह-राजा ।
 तुट्यौ ईस-कोडंड कारुण्य^{११} तेरी, क्रतु-काज बाढ़ी प्रभा राँम केरी ॥४२५
 मुनीराज बंदेह सौँ नेह मंड्यौ, खत्रीश्रानं कौ जाँन कै माँन खंड्यौ ।
 रिखी बाँन ऐसी सुनी दासरथं, सुनी पुन्य है रावरौ पुत्र सथं ॥४२६
 महालक्ष्मी मंथली^{१२} जोग-माया, रँमाँनाथ औतार है राँम-राया ।
 जुरी दंपती^{१३} जाहि तै चाहि जोरी, महाबाहु जाँनी कही सत्य भोरी ॥४२७
 ईहै बोल गाधेय दीनी असीसै, तितै चाल आये सवारी तसी सै ।
 दिवाये पती-औध कै बाग डेरा, घनी रीत औँछाह कीनी घनेरा ॥४२८
 बराती केऊ आय प्रासाद^{१४} बीचै, निरे अँन^{१५} का केन^{१६} का छाय नीचै ।
 पसारी कहूँ ऐच कै कंड-पट्टी^{१७}, ऊरधं तनी बीच ऊल्लोच^{१८} अट्टी ॥४२९
 बुकूलं दरी रेसमी के दुलीचा^{१९}, बिछे रल्लकं पल्लक^{२०} तल्प^{२१} बीचा ।
 बने केक बेत्रासनं^{२२} बेस वाँना, तने रेसमी डोर कै जोर ताँना ॥४३०
 जयाँ-जोग के आसनं दीध जाँनी, धनी बिण्दुरी^{२३} आद नीकं घराँनी ।
 निरे निर्मलं नीर-बंधे निपाँना^{२४}, थटे स्वछ आधार कं वृछ-थाँना ॥४३१
 बसाई सुथाँनं अनूपं बराता, हले सोख लै हेत सौँ जोर हाथा ।
 पधारे तबै मैयलाधीस पीरी, करै व्याह को चाहि च्याहूँ किसोरी ॥४३२

१ मार्ग, सड़क । २ दोनों ओर । ३ उमङ्ग = उत्साह । ४ पञ्चशाख = हाथ । ५ छाती ।
 ६ सूचक, चिह्न । ७ आस्य = मुख । ८ द्रव्यी = घनी । ९ पादारविन्द = चरणकमल ।
 १० अञ्जलि = कर । ११ कारुण्य = दयालुता । १२ जानकी । १३ पति-पत्नी ।
 १४ राजमहल । १५ अयन = स्थान । १६ तम्बू । १७ कनात । १८ चाँदनी ।
 १९ गलीचा । २० पल्लक = पलङ्ग । २१ बिछायत । २२ गैत के आसन । २३ बाजीवी ।
 २४ निपान = कुण्ड, प्याऊ ।

पुरोधाम^१ सतानंद मंत्री प्रवीणा, कृपा-पातहू^२ एकठे भूप कीना ।
 सुता मोर च्पाहूँ चहूँ दासरथी, पुजैहौं सबै जायकै लगन-पती^३ ॥४३३
 जुरे विप्र कै बेदीये^४ बृंद जोसी, चितै कै छतै चाह आयाचितोसी^५ ।
 सोयाराम कै नाम कै लेख सौनौ, ज्युहीं ऊर्मला^६ लछन नाम जानौ ॥४३४
 कुसंध्वज्ज-भ्राता लघु मोर कन्या, ईह भर्थ कौ मांडवी^७ देहु अन्या ।
 लुतीकीरती^८ व्याह सत्रुघन संघा, पिछाँनी भली रीत लेखौ प्रसंगा ॥४३५
 कह्यौ भूप त्यूहीं सतानंद कीनौ, लिखै कुंकमी-पत्रका तंत्र लीनौ ।
 समालंभन^९ साथ साँमान सज्जे, जरीतार पाटंबर^{१०} रंम्य रज्जे ॥४३६
 अलंकार चाँमीकर^{११} रत्न आला^{१२}, मनी-गूफ मुक्ता-लता पुस्पमाला ।
 धरे श्वर्न दुबर्न^{१३} नोके घनेरा, करे त्यार पुंगीफल^{१४} नालकेरा^{१५} ॥४३७
 दुकूल^{१६} जरी भूल कै प्रष्ट^{१७} डारे, सजे बाज^{१८} सातंग^{१९} आभन^{२०} सारे ।
 सड़े थार श्रौछार मेवा मिठाई, लये लाजन^{२१} चून श्रौबर्न लाई ॥४३८
 सतानंद चाले सब लै समाजा, बजे दुंदभी ढोल आनंद-बाजा ।
 नचै गीत गावै सखी बारनारी, थितं सोस लोनै घने स्वर्न थारो ॥४३९
 बड़े राज के द्वार बाजार बाटी^{२२}, पुरोधाम प्रबोनुं सबै बेद-पाटी^{२३} ।
 ललामं गये पतनं पार लंघे, ऊछाहं जुतै जान डेरा ऊमंगे ॥४४०
 धुरा^{२४} के त्वरा^{२५} चाल जंघाल^{२६} धाये, जथा दासरथं अमात्यं^{२७} जनाये ।
 समालंभनं लेय साथे समाँना, पुरोधाम सतानंद आबे प्रघाँना ॥४४१
 बोहा

मिल मंत्री बासष्ट मिल, बाँमदेव जावाल ।

मुनी पुन विस्वामित्र मिल, भाखी कथा भुवाल^{२८} ॥४४२

जनकराज जामात कौं, करित तिलक-सतकार ।

सतानंद प्रोहित सचिव^{२९}, आवत राज ऊदार ॥४४३

जब राजा वासिष्ट जुत, मंत्री आद मिलाय ।

कहौ लेहु सतकार कर, विघ-वत वेद बुलाय ॥४४४

१ पुरोहित । २ कृपापात्र । ३ पत्नी । ४ वैदिक । ५ नेगदार । ६ उर्मिला ।
 ७ माण्डवी । ८ धृतकीर्ति । ९ समारम्भण = तिलक । १० रेणुमीवस्त्र । ११ स्वर्ण ।
 १२ श्रेष्ठ । १३ चाँदी । १४ सुपारी । १५ नारियल । १६ दुपट्टे । १७ पृष्ठ =
 पीठ । १८ वाजि = घोड़े । १९ हाथी । २० अमारण = गहने । २१ लाजा = चावल ।
 २२ बाट = मार्ग । २३ पाठी । २४ आगे । २५ जल्दी । २६ हलकारे । २७ मंत्री ।
 २८ सुवाल । २९ मंत्री ।

द्वज गुरु प्रोहित हुकम दिय, कीय मिल सचवन कार ।
 च्यारहु दुलहा ग्रेह चिव^१, बैठाये दरवार ॥४४५
 जानी मांठी प्रीत-जुत, मिले परसपर मोद ।
 लेख-लगन सतकार लीय, बिधवत बेद बिनोद ॥४४६
 सतानंद सनमान कर, संत्रिन कर सनमान ।
 नेगी बिप्रन आद निज, दीय वर अगनत^२ दान ॥४४७
 सतानंद बासष्ट सुभ, दिवस महरत^३ देख ।
 कीय निसचय भाँमरिकरन,^४ बेला आद बिसेख ॥४४८
 सतानंद लै सीख कौं, गये जनासय^५ ग्रेह ।
 दुहु दिस बाजै दुंदभी, उछछव व्याह अछेह ॥४४९

छंद नाराच

बसिष्ट बाँमदेव बेद भाव काँ बिचारकै ।
 चढाय बींद^६ चीकसाँ चढाय तेल चारुकै ।
 गह्वक गेय गायनी अह्वक डवक त्रंबका ।
 मृदंग अंक मडकै ठंमक सारका ढका ॥४५०
 नहाय लाय नीर के मिलाय यक्ष कर्दम^७ ।
 अँगोच पाँच ऊतमं कराय कै परोक्रमं ।
 जनाय चक्रजीवक^८ बनायकै बिनायक^९ ।
 मनाय माय मोद सौं सिवाय देव साहिकं ॥४५१
 बसष्ट वाँमदेव आद पुज्य कै पुरोहितं ।
 असीस लै नमाय सीस बिप्र दान दै बितं ।
 कनेष्ट^{१०} जेष्ट^{११} बै किसोर नंद औधनाथ के ।
 कला चडोर कंकना^{१२} सुधार कै सुहात के ॥४५२
 जराय मौर^{१३} जोर कै ऊतार वार आरती ।
 बघाय इवस्ति-बाचनं ऊचार कै अनारती^{१४} ।
 चले ऊमंग रामचंद्र तीन भ्रात संजुतं ।
 पदांबुजं नमे पिता सुधार भेट संमतं ॥४५३

१ छवि, सुन्दर । २ अपणित । ३ मुहूर्तं । ४ भ्रमरीनख = विवाह । ५ जनासय
 = जनवासा, मण्डप । ६ बर, दूल्हा । ७ छारछबीला आदि सुगन्धित वस्तुएं, धूप ।
 ८ राजकुमारों । ९ गणपति । १० कनिष्ठ = छोटा । ११ ज्येष्ठ = बड़ा ।
 १२ कंकणडोरा । १३ मोड़, मुकुट । १४ निरन्तर ।

बरांग^१ सूँघ बारवार लाय अंक नंद कौं ।
 अनंद पाय औधपं चितं चकोर चंद कौं ।
 बिलोक च्यार बाँधवं दुती-निकेत^२ दुल्लहा ।
 पिता प्रसंग पेस सौं ऊसंग मोद उल्लहा ॥४५४
 ठई सु ठौर-ठौर पै तई बरात त्यारोयें ।
 सहेत भूप सथ्य कै अनूप आसवारीयें ।
 सतंभ^३ बंध छोरकै विश्रंभ कै महाबतं ।
 कपोल कुंभ बात कुंभ रंग हस्त^४-संजुतं ॥४५५
 रचाय रेख नागरक्त^५ आल^६ कौर-बिंदु की ।
 जंगल घोर जत्र पै विचित्र चित्र बिंदुकी ।
 बरांग स्यांस बीच पै सुरंग पीत सोहनी ।
 मरीच^७ भाँन मान अन्न संघ ज्यौं अरोहनी ॥४५६
 ऊछाल-दंत^८ ऊजरे जराव बंगरी जरी ।
 सँवार तार सोवनी^९ सुधार मंड कै सिरी^{१०} ।
 सरीर रंज मंज संभ अंजन गिरंद से ।
 असीस बोल ऊच्चकै^{११} कसीस बंधने^{१२} कसे ॥४५७
 ऊरभ्र^{१३} प्रष्ट अंबर^{१४} लसंत पीत लालरी ।
 जरी सुतंत^{१५} जालका^{१६} भुलाय रत्न-भालरी^{१७} ।
 विचित्र अंब-वारीयें^{१८} हबंद चित्र^{१९} हेम^{२०} के ।
 प्रकास-पुंजज पेखीयें खुले निसाँन खेमके ॥४५८
 मयंद^{२१} मंद मंद मिश्र मंजु जात के मृगा^{२२} ।
 दलं दलंद कालदेय^{२३} ध्वानं कै धगा-धगा ।
 प्रभिन्न^{२४} वाल पीत^{२५} केक^{२६} वक्क कल्भ^{२७} वेसके ।
 ऊताल चाल उग्र के दंताल^{२८} देस-देस के ॥४५९

१ बराङ्ग = शिर । २ द्युतिनिकेत = शोभा के धाम, प्रतिमुन्दर । ३ स्तम्भ = खम्भा ।
 ४ शुण्डा, सूँड । ५ सिन्धूर । ६ हरताल । ७ मरीचि = किरण । ८ ऊँचे दांत ।
 ९ सोवणी । १० धी = शोभा, श्रीचिह्न । ११ उच्चकै = ऊँचे । १२ शीषबंध ।
 १३ घनात, उरपर्यन्त । १४ यन्त्र । १५ सुतन्तु = तागे । १६ जालिका = जाली ।
 १७ भालरी । १८ अम्बाली । १९ हवदा । २० सोना, स्वर्ण । २१ मातङ्ग = हाथी ।
 २२ मृग । २३ मृत्पुत्र । २४ विचित्र । २५ वक्का । २६ मयूर = मोर ।
 २७ कल्भ = हाथी का वक्का । २८ दन्ती = हाथी ।

सिलैट स्याम सिधली गड़ा चिड़ा सुरंग के ।
 बटोल मल्लवार के मतंगहू मृधांग के ।
 समंदहू समीप के मदध मंदरास के ।
 प्रचंड पिंड पूरबी धनासरी धरासुके ॥४६०
 खतग विप्र खत्रीयं वयस्य सुद्र वर्न के ।
 कलाष्क^१ बंध कंध सौं करीन मूल कर्न^२ के ।
 बिसास वप्प बोलकै कुलाँट अप्प लै कपं ।
 कपोल कुंभ थप्पकै हले सु बैठ हस्तपं ॥४६१
 बिछोर वार बंध के सुसैल सार^३-श्रंखलां ।
 उतंग^४ श्रंग ऊठके चले मनौ हिगांचलं ।
 घमंक घोर घंट की भमंक अंक भल्लरा ।
 खनक चंद्र-अंडुक^५ धमंक पाय के धरा ॥४६२
 डमक डाक देत पे चमंक आप छाँह कौं ।
 ससंक^६ जात अंकुसं रमंक निठ^७ राह कौं ।
 भरंत अट्ट भटीयं भरंत डान निभर^८ ।
 भनंक पंख आमरं भरंत भीर सभभरं ॥४६३
 पलक्क^९ ईख^{१०} मल्लकं^{११} खडग^{१२} रूप खडनं^{१३} ।
 चरंत गोल लोलचाल^{१४} मंदहाल^{१५} मंडनं ।
 गुलाब फूल गेद से ललांस कज-जोचनं^{१६} ।
 करन चारु^{१७} कप्र^{१८} साग-पत्र से सुरोचनं ॥४६४
 अनूप राज-बाभ^{१९} आद हेर भूप हाजरी ।
 घुमंड सांमनी^{२०} घटा ऊमंड जाँन ऊल्लरी ।
 अन्नंद कौं ऊपायकं तरद्र पाय सासनं^{२१} ।
 त्रुघन भर्थ लछनं अरोह^{२२} राज-आसनं ॥४६५
 चढे गजिद्र रामचंद्र स्याम रूप सुंदरं ।
 मुनिद्र-विन्द्र^{२३} मेल कै अरोह औध इंदर^{२४} ।

१ कलाष्क = कलाया । २ कर्न = कान । ३ लोहा । ४ उतुङ्ग = ऊँचे । ५ सोने की सकल । ६ मयभीत । ७ कठिनाई से । ८ निभर = भरना । ९ पलकदंता । १० इक्षु = सांठा । ११ दांत । १२ खड्गदंता । १३ मुसलदंता । १४ तेज चलने वाला । १५ धीरे चलने वाला । १६ कमल के समान नेत्र । १७ सुन्दर । १८ कच = कोमल । १९ राजा की सवारी के योग्य । २० भावणी । २१ शासन = आज्ञा । २२ आरोह = चढ़कर । २३ वृन्द । २४ अवधेन्द्र ।

सुभट्ट ठट्ट संजुरे गरट्ट मंजु गात के ।
 सुहीद^१ फूल केसरं सजे बरात साथ के ॥४६६
 तुरंग तंग ताँन कै सुरंग रंग सो सनी ।
 हरी-ऊरभ्र रोहितं^२ सुवर्न तारहू सनी ।
 पिसंग^३ ऐत^४ पीत के जराव जुक्त जीन तै ।
 ऊमंग अश्ववारहू^५ अपार त्यार ह्वै ईतै ॥४६७
 कुसा^६ कसीत बग्ग^७ के उदग्ग आव जाव कै ।
 प्रचंड मंड पिंड के बयंड वेग बायु कै ।
 कुरंग^८ डौन कूदते उडौन लै छिकं अटा ।
 ऊलट्ट औ पलट्ट आद बाद के नटा-वटा^९ ॥४६८
 लसै अयाल लाल माल जाल ग्रंथनी जुटी ।
 फलंग फेर फाल में मनौ गुलाल की मुठी ।
 विसाल भाल पुच्छ बाल रोम-गुच्छ से रजै ।
 धरै सुचाल धोरतं^{१०} धरा पताल लाँ धुजं ॥४६९
 पहै न थाह पाँनपं ऊछाह साँ बहै ऊड़ी ।
 लहै सुराह लाह कै गहै सुडोर ज्यों गुड़ी^{११} ।
 बजंत जेम बांसुरी रबत प्रोथ-रंधरं ।
 करंज फाँक केतकी कवाँन जाँन कंधरं^{१२} ॥४७०
 फिराव चक्र ज्यों फिरै बलोत सूत्र-वेष्टनं ।
 धुरा सु पंच धारहू त्वरा तुखार तिष्टनं ।
 विसार^{१३} धार धार ज्यों गहंत राह गाह कै ।
 चलंत वार घेर में चलंत चित्त चाह कै ॥४७१
 करंत रोम कोमलं तुला^{१४} सरोज-पात^{१५} कै ।
 मंडूक^{१६} नैन टिटभं^{१७} गहूर पुर गात के ।
 बिसाल वत्म^{१८} विष्टरं नली सुघाट निस्तुला^{१९} ।
 भिरंत सुँम्म भुँम्म साँ भरंत दुँग की भला ॥४७२

१ कसला । २ लाल । ३ पिशाङ्ग = नारङ्गी रङ्ग । ४ मिश्रित । ५ अश्वारोही ।
 ६ कुश । ७ बलग = लगाम । ८ हरिण । ९ नटपुत्र । १० धोरत चाल । ११ पलंग
 १२ प्रीवा, गर्दन । १३ मछली । १४ समान । १५ कमलपत्र । १६ मेंढक ।
 १७ टिट्ठिभु = टोंटोटी । १८ वत्म, वक्ष = मार्ग, छाती । १९ गोल ।

बिसुद्ध सुंम्म लुंम्म बाल आंनन^१ ह्निदावली ।
 सुजोज्ञ-दाय सर्वदा मनोज्ञ^२ अष्ट संगली ।
 सरीर श्वेत सोभनं कितेक अश्व कर्करं ।
 ललाम पीत पिड लाल पिगलं^३ परापरं ॥४७३
 सुपेत पिग संग के खुंगाह रंग खँगहू^४ ।
 सिराह दुग्ध-वर्न^५ स्याम रंग के सुंगाहह ।
 कीयाह लाल वर्न के निकाय नील नीलकं ।
 त्रनाह वर्न^६ के त्रपूह है हरी जु पीलकं ॥४७४
 सपेत बाल हस्तकंध^७ बाल के सुपेत के ।
 त्रपूह अंग ताहि कौ बुलाह रंग केव के ।
 बलक्ष [जास] बिग्रहं^८ मुकांम जंघ मेचकं^९ ।
 ऊराह अंग के अनूप अश्वहू असेसकं^{१०} ॥४७५
 बिचार संकुकर्न^{११} वर्न केसरूह कंक है ।
 सपेत लाल मित्तं^{१२} पिछांन पाटलं पहे ।
 अतल्प^{१३} पीत अंग के बिसेस स्याम बक्षनं ।
 कुलाह रंग घोटकं^{१४} लखाय जाहि लक्षनं ॥४७६
 त्रनाह लाल पीत के कहंत ऊवकनाहकं ।
 निगर्न^{१५} कर्न^{१६} स्याम वर्न^{१७} लाल एह लायकं ।
 सरीर रक्त-सधकं^{१८} सुचंग रंग सोनकं ।
 हरीत^{१९} पीत हालकं गहंत पौन गौनकं ॥४७७
 सपेत काच वर्न^{२०} सो पिछांन पिगुलं पखे ।
 हलाहलं सुरंग हेर एत रंग के अखे ।
 कबोज देस कासमीर बापु^{२१} के बना पुजा ।
 बियंड^{२२} केक बाहलीक पारसीक नीपजा ॥४७८
 प्रचंड गंग-पार के बिसाल अंग बंग के ।
 मुरंड मारवार के सुबीर सिधु दंग के ।

१ मुख । २ सुन्दर । ३ पीला । ४ घोड़ा । ५ श्वेत । ६ मू० प्र० वर्न । ७ अगला पेश ।
 ८ मू० प्र० अस्पष्ट है । ९ शरीर । १० स्याम । ११ अनेक । १२ गधा । १३ मिश्रित ।
 १४ अत्यल्प = किंचित् । १५ घोड़ा । १६ गरदन । १७ कान । १८ वर्ण । १९ लाल-
 कमल । २० हरा । २१ श्वेत । २२ नपु = शरीर । २३ घोड़ा ।

खतंग खेत खाखरं अगतहू तिलंग के ।
 केकान साल कछछ के फवंत के फिरंग के ॥४७६
 हरचान कंधहार के डहाल अंड्र द्रावरे ।
 जुरे सु जन्य जिन्नती उछाह साँ अतावरे ।
 धमक डंक ध्वानक अनेक श्रानक^१ अगै ।
 तनक तंत्र^२ तानक भनक सिजत^३ भगै ॥४८०
 सहान मंगलीक गान तान की तरंग में ।
 रचंत रास वारनार^४ रीज^५ राग रंग में ।
 चली बरात रामचन्द्र भेल भ्रात मंडपं ।
 सतंग बैठ सोद साँ अमंग संग श्रौधपं^६ ॥४८१
 अरोह कै बिमान आसमान देव आयकै ।
 अवाज कै अनंद वाज दुंदभी^७ बजाय कै ।
 गिरा^८ सवाँर^९ गायनी अचार गान अछछरी^{१०} ।
 सीया विवाह संचरी चवंत राँम चंचरी^{११} ॥४८२
 बरात के अतार साँ पधार नग्र गोपुर^{१२} ।
 बजार की बहार चार^{१३} वार पार चत्वरं^{१४} ।
 बिसाल लाल लीलमं बँधी सुमाल बंधनं ।
 कपूर कासमीर कीज चीज घोर चंदनं ॥४८३
 सुरंग येत^{१५} पीतनं निकेत^{१६} पै निकेतनं^{१७} ।
 जरी सु तार जोर पौर पौर के प्रवेशनं^{१८} ।
 कपाट^{१९} आट^{२०} ठाट के सुघाट तोरनं^{२१} सबै ।
 पिसंग^{२२} रंग पीत फूल मालका सुही^{२३} फवै ॥४८४
 बिनर्द^{२४} पै बिनर्द साल जंभिघा घनी सनी ।
 पवित्र चित्र पुत्तरी ठवंत के बनी ठनी ।
 अलंद^{२५}हु अनूप श्रोप अग्र में ऊदंबरं^{२६} ।
 करै विचित्र कोरनी सवार कं सतभरं^{२७} ॥४८५

१ नगाड़े । २ तांत्रिक । ३ आभूषणों का बाजा । ४ वैश्या । ५ रीझ = लीन ।
 ६ राजा दशरथ । ७ नगाड़े । ८ बोली = स्वर । ९ संभालकर । १० अप्सरा ।
 ११ स्तुति । १२ द्वार । १३ सुंदर = श्रेष्ठ । १४ चौक । १५ मिश्रित । १६ घर ।
 १७ खज्जा । १८ प्रवेश-द्वार । १९ किवाड़ । २० अट्ट = दालान । २१ मुख्य-द्वार ।
 २२ नारंगी रंग । २३ लाल । २४ चौकी । २५ बँठक । २६ देहली । २७ स्तंभ ।

पुनीत धर्म परमहूँ समान हर्म^१ सुंदरं ।
 अर्ध-खंड^२ ऊद्धरे मनी सुपर्व^३ मंदिरं^४ ।
 बिसाल सैल-माल बेत सोह चद्र-सालका^५ ।
 पुरंध्र पट्टल^६ समीप जाल-रंध्र^७ जालका ॥४८६
 सुहाग धाम सुभ्र चंद्र चंद्रका^८ किधौ छुटी^९ ।
 ऊतंग खंग अद्रिराट^{१०} आस्वनी^{११} घटा उठी ।
 सुगंध तेल सीच अद्ध ऊद्ध पै अटालका ।
 जंगी सुजोत जोनसी मनी दीपमालका ॥४८७
 बिदेह नग्र बीच ग्रेह ग्रेह में गली गली ।
 प्रपंच हूँ प्रकास पुंज, मंजुल भलामली ।
 जहां तहां महाजनं सरीर दिव्य संजुरे ।
 ऊमाहूँ एक एक कै भरंत भीर उम्भरे ॥४८८
 सुकज-आंख^{१२} सुंदरी गिरा सुगान गायकै ।
 भरोख भाँक भाँक मंजु घोष^{१३} हूँ मिलायकै ।
 सीया बिबाह राम संग राग-रंग की रली ।
 लली कुरंग-लोचना^{१४} ऊमंग अंग उज्जली^{१५} ॥४८९
 बिलोक च्यार बंधवं बिचित्र अंग बेख सौं ।
 सरूप गौर स्यामलं अनूप एक एक सौं ।
 प्रवेक रामचंद्र पेख लेख जन्म-लाह^{१६} कौं ।
 ऊमाहूँ कै अनंतरं बड़े ऊछाह ब्याह कौं ॥४९०
 सँवार-मौर सोरख^{१७} जराव सुक्त^{१८} जंजरचौ ।
 सरोज नील सीस जाँन अब्ज-बंधु^{१९} ऊतरचौ ।
 बिसाल माल बीच लाल बिदु मुक्त लाजनं^{२०} ।
 ऊदोत अष्टमी सबक्रभ^{२१} समाजनं ।

१ रत्नवास । २ छोटे-बड़े । ३ देवगण । ४ मू० प्र० मंदिर । ५ अनेक मंजिलों वाले मकान ।
 ६ छज्जे । ७ छेद । ८ चाँदनी । ९ छिटकी हुई है । १० पर्वतराज हिमालय ।
 ११ कार की, आश्विन मास की । १२ कमल-नयनी । १३ स्वर । १४ हिरन की आंखों
 के समान नेत्रवाली = मृगनयनी । १५ उज्वल । १६ जन्म-लाम । १७ शीर्ष = मस्तक ।
 १८ मोती । १९ सूर्य । २० अक्षत । २१ मंगल ।

रंचंत बाल रम्प(भ्य)कर्क-राल^१ स्याम रंग के ।
 सुगंध आस संग में भ्रमंत भीर भृंग के ॥४६१^२
 अनुप बूँह^३ आवली करंत ऊभ्र कोयनी ।
 अली सँवार ऊपरा पसार पंख पोयनी ।
 ऊधार च्यार अंबकं सरोज रक्त संधकं ।
 अनदकंद ईछ्छनं^४ सीया प्रीया समंधकं ॥४६२
 निकाय रूप नासका प्रकास पुंज दीपकं ।
 बिलोक नैन विश्व के बने घने बनीपकं ।
 सुरंग रंग सुंदरम प्रबाल^५ ओठ पेखीयै ।
 कठोर वज्र की कनी दमंक दंत देखीयै ॥४६३
 मुखारविंद मंद-हास चंद्रका सुचंद्र की ।
 प्रकास आसपास पुंज साँभ भोर संध^६ की ।
 कपोल गोल बीच कर्न लाल छाँह कुंडलं ।
 जलं जमी जनाय ज्यां मरीच^७ चंद्र मंडलं ॥४६४
 कपोत^८ कंठ इद्रचंद^९ पेखीयै प्रलंबका^{१०} ।
 जराव जुक्त सुक्तजं^{११}, लघू कित्तीक लंबका ।
 सकंध संघ केसरी भुजा अजाँन^{१२} सम्भरं^{१३} ।
 अमोल बंध अंगदं अनूप रत्न ऊम्भरं ॥४६५
 सुवर्न रत्न संजुरे कला चकासु^{१४} कंकनं ।
 मृनाल^{१५} घेर मंडलं प्रभा मनीं प्रदोतनं^{१६} ।
 विसाल लाल वेस पंचसाख^{१७} जाँन कपंजं ।
 अनूप रूप अंगुली कली सु हेम-पुस्पजं^{१८} ॥४६६
 अमोल गोल ऊर्मका^{१९} सुवर्ण ह मनी मनी ।
 ऊजास काम-अकुसं^{२०} किधुं वरारका^{२१} कनी ।

१ केज-गटी । २ सू० प्र०—यह छंद छः चरणों का है । ३ बौहे । ४ देखना । ५ भृंग ।
 ६ मंध्या । ७ किरण । ८ कबूतर । ९ लम्बा हार । १० कंठियाँ । ११ मोती ।
 १२ पाजानु = घुटनों तक । १३ भुजबंद । १४ चमकते हुए, चक्रवत् । १५ कमल-
 जार । १६ सूर्य । १७ हाथ । १८ चंपक पुष्प । १९ अंगूठी । २० कामांकुश =
 मन्मथ । २१ शीरा ।

सपुष्ट रिष्ट^१ मुष्टका^२ बलिष्ट श्रोपमा बढी ।
 सुवर्न कोस^३ संजुतं मनोज^४ रत्ननं मढी ॥४६७
 वकस्थलं^५ बिसाल दीप्त माल की दुगादुगी ।
 लसंत लाल लीलमं जराव की जगा-जगी ।
 गंभीर गर्भगार^६ तुंद-कूपका^७ अनूप त्यौं ।
 जमी-प्रवाह^८ भौर ज्युं सुभां निपांन रूप त्यौं ॥४६८
 कटी^९ सुच्याह केसरी^{१०} नितंब-भार निस्तुलं^{११} ।
 करी-सुहस्त^{१२} कल्भ केल संनिभा जु सस्थलं ।
 समान धर्म सुंदरं प्रभा अनूप पिडुरी ।
 गंगेय^{१३} चर्न ग्रंथ^{१४} पै जराव खखला जरी ॥४६९
 सरोज पांव सुंदरं सकीमलं सुवाहनै ।
 त्रिरंघ वांमदेव परम ध्यान पूज्य पावनै ।
 रचाय बाहलीक^{१५} रंग अंग भीन अंबरं ।
 जने-जने जुहार लें बने-बने बिसंभरं ॥५००
 प्रसिद्ध सिद्ध तां पहै न श्रोपमा अनंग^{१६} तै ।
 लखे बिबर्न लोचनं प्रीया सीया प्रसंग तै ।
 निहार कै निबेसनं प्रवेसनं^{१७} पधार कै ।
 प्रकार^{१८} क्षीम^{१९} पूरनं बने सकंध-बारकै^{२०} ॥५०१
 बलक्ष^{२१} कंगुरावली सपक्ष^{२२} रक्षसं जुरी ।
 अंगार पीर सोवनं भ्रंगार^{२३} दीप्त कंभरी ।
 घनास्रयं^{२४} घटा घुमंड मंड जांत मिदरं ।
 मढी सुभाल मंगलीक सोह द्वार सुंदरं ॥५०२
 विदेहराज बिस्तरं अमात्य^{२५} बीर आद कै ।
 अनेक-पाट-अंबरं^{२६} पंडे कमं मृजाद^{२७} कै ।

१ तलवार । २ मूठ । ३ म्यान । ४ मनोहर । ५ छाती । ६ पेट । ७ नामि । ८ यमुना ।
 ९ कमर । १० सिंह । ११ गोल । १२ सूंड । १३ सोना । १४ चरणग्रंथि = टकना ।
 १५ केसर । १६ कामदेव । १७ प्रवेश-द्वार । १८ प्राकार = कोट । १९ रेसमी वस्त्र ।
 २० रनिवास के कमरे । २१ उज्वल, सफेद । २२ बराबर = समान । २३ कलश ।
 २४ आकाश । २५ मंत्री = कर्मचारी । २६ पग-मंडा । २७ मर्यादा ।

विदेह भूप बेल कैं अनूप भूप श्रीधरं ।
 अमात्य बीर भीर आय ऊतरे अनेकपं^१ ॥५०३
 हिले मिले पसार हाथ अंक भेट अंक सों ।
 निछावरै^२ पसाव^३ नेग^४ राव होत रंक सों ।
 अनंद कां अधार कैं अरोह सिध-प्रासनं ।
 अनूप थान-इंद्रकं^५ सभा प्रचार सासनं ॥५०४
 ठये सु ठौर-ठौर पै सुभट्ट-ठट्ट धीसखं^६ ।
 सुधा-पयोद^७ के समान मोद ऊभल्यौ मखं^८ ।
 विदेह अंतबास^९ सिध-द्वार^{१०} रांम संचरे ।
 तहां सुबंद तोरनं अनेकपं सु ऊतरे ॥५०५
 अनंद कंद ईछना^{११} बिलोक च्यार बंधवं ।
 महान ध्वानं^{१२} संगलीक गांन होत गंधवं ।
 विदेह अंतबास में विचार कैं विनोद सों ।
 बढ्यौ ऊछाह व्याह कौ महान चाह मोद सों ॥५०६

दोहा

जिह घर जनमी ज्यांनकी, माया बेद मृजाद ।
 जनक द्वार ठाढ़े जहाँ, अज अविनासी आद ॥५०७
 जिह ध्यावत जोगिंद्र जन, सिव सनकादिक सेस ।
 कुंभकार^{१३} बंधत कलस, महिमा धिन^{१४} मिथलेस ॥५०८
 सुरग^{१५} निवासी देव सब, बन पुरबासी बेल ।
 सगन भये मिथला मिलन, द्रगंन रांम छिब^{१६} देख ॥५०९
 सुर-तीय जेती संचरी, अंतहपुर आंगार ।
 मिली जनक रनवास-मह, सांग^{१७} सुधार-सुधार ॥५१०
 निरख-निरख दंपति नयन, परख रांम सीय प्रीत ।
 साबंत्री गावत सकल, गिरा^{१८} गौर^{१९} मिल गीत ॥५११

१ हाथी । २ न्योछावर । ३ अनुग्रह । ४ नेगियों का प्रतिकल । ५ सभास्थल ।
 ६ मंत्री, सलाहकार । ७ अमृत = सागर । ८ यज्ञ । ९ रनिवास । १० मुख्यद्वार ।
 ११ देखकर । १२ शब्द । १३ कुम्हार । १४ धन्य । १५ स्वर्ग । १६ छवि = शोभा ।
 १७ वेश । १८ सरस्वती । १९ गौरी = पार्वती ।

छंद श्लोक

सहनाई मेल सजैश्वर कै, घन बाँक आँकहू घुरकै ।
 महला^१ केऊ भुंडन भुंड मिलै, भुक्क कोकल बँनीय राग झिलै ॥५१२
 भर कुंकुम मंगल-भाजन की, लीय कंचन-थारीय लाजन की ।
 ध्रुव केतक पूरन कुंभ^२ धरै, मृदु पल्लव^३ भौरन मौर भरै ॥५१३
 ललना बहुरै दध^४ दूब लीयै, अजुवाल झलामल आरतीयै ।
 जनकाधिप की महिषी^५ जहवाँ, सकुटंबनी^६ आय मिली सहवाँ ॥५१४
 गुन-गाँन ऊचारत द्वार गली, चहूँ बीद^७ बधावँन काज चली ।
 इक तै इक देखत कौँ ऊभकै, भ्रमकात अलंकृत-भार भुकै ॥५१५
 ऊछटै पट धूँघट-अंचर की, सुध भूल रही केऊ संचर^८ की ।
 अवलोकन काज सीयावर कौँ, अवलं चत^९ चाह चढ़ी ऊर कौँ ॥५१६
 ऊमगी मन मंगल-गाँन अली, रघुनाथ संबंधन राग-रली ।
 दुति सोहत माँग सिद्धर दीयै, कुरु-बिंदु^{१०} की भाल में बिंदु कीयै ॥५१७
 लँहगा सुही^{११} पीतन सारी लगी, जर तारि किनारीय जोत जगी ।
 दमकै दुति बिग्रह^{१२} दाँसन^{१३} सो, कमनीय मनोभव-^{१४} काँसन^{१५} सी ॥५१८
 जनु पूरन चंद्र-मयूख^{१६} जगी, ऊरमी^{१७} सरता-पति^{१८} की ऊमगी ।
 कमनीय प्रभा कर-कंकन की, अनीयारीय^{१९} भंखन^{२०} अंखन की ॥५१९
 मुसकानन आस्प^{२१} अमोलन की, तिन में छिव देत तमोलन^{२२} की ।
 कर कै परहास मिलै किलकै, मधुरी अधुराँन^{२३} चले मुलकै ॥५२०
 कुमकै धर पाव चलै ठटकै, ईक की ईक ओट लहै अटकै ।
 पनुहीं खग काँम मनौँ परवा, भ्रमकै पग जेहर जाँभरवा ॥५२१
 मृदु चाल चलै तरवा मुरकै, धर माट मजीठ मनौँ डुरकै ।
 राय अंगन साँ बढकै रमनी^{२४}, थित तोरन पौरन जाय ठनी ॥५२२

१ महिला = स्त्रियाँ । २ कलश । ३ पत्तों । ४ दही । ५ पटरानी । ६ उसी परिवार की स्त्रियाँ । ७ वर = दूल्हा । ८ शरीर । ९ चित्त । १० हिगूल । ११ कसूमल रंग । १२ शरीर । १३ बिजली । १४ कामदेव । १५ कामिनी = रति, स्त्री । १६ चंद्र-किरण । १७ ऊमि = लहर । १८ समुद्र । १९ अनोखी । २० भाँकना । २१ आस्य = मुख । २२ ताँबूल-पान । २३ अधरों । २४ रमणी = स्त्री ।

बपु स्यामल गौर चहूँ बनरे^१, खितोनाथ विदेह के द्वार खरे ।
 लख आनन नैनन लाह^२ लयी, भर आनंद सौं हीय हर्ष भयी ॥५२३॥
 तव भद्र-करोर^३ बधायत हो, सुभ सल्लुका^४ आरती कीन सही ।
 मिल आरती कीन भलामल की, भर मोतन थाल भलाभल की ॥५२४॥
 जहाँ लोकिक वेदक नीत जिती, कर भद्र ही कारक रीत किली ।
 सतकार लह्यौ सुसरार सबै, कहनी कहि जावत ताहि कबै ॥५२५॥
 गुरु प्रोहित सासन^५ लै गवनै, द्विच अंगन मंडप छाय बनै ।
 थिर कंचन मानक थभ^६ थपै, जगमग जराय की जोत जुपै ॥५२६॥
 कलसा तिह ऊपर कंचन के, सुभ घाट ढरे सोई संचन के ।
 लघु केक बिसाल लगी लहरै, चिद^७ चंद्र नछत्रन की चहरै ॥५२७॥
 मृदु पल्लव अंब कदंब मढे, छद^८ चंदन जामुन चाह चढे ।
 बहु पंकज फूलन जालि बनी, तिह ऊपर बंदन-माल तनी ॥५२८॥
 तुचसार^९ हरी रंग ताहीय में, अत कीन खरे अंगनाईय^{१०} में ।
 केऊ मंड^{११} प्रकंडहु केलीय के, बर पत्रन वेलीय^{१२} वेलीय के ॥५२९॥
 सुभ सूचक रूप घने सरसै, द्रग कौं सुख दायक जे दरसै ।
 मिल पत्रनहु दुत मंजरीया, पुहपाबलि लाल सु पिजरीया^{१३} ॥५३०॥
 रचना कीय तामह रत्नन की, जुर दीप साँ दीप जगी जिनकी ।
 कहूँ लीलम^{१४} लाल रु हीर-कनी, बहु विद्रुम^{१५} मोतीय-माल बनी ॥५३१॥
 जरी अंबर मध्य^{१६} बितान जुरै, बढ ग्रथनि जाल जहाँ विधुरै ।
 कुरु-विद रु चंदन घोर करी, तल कुंकम कदम कीन तरी ॥५३२॥
 सब सिंदल^{१७} तेल फुलेल सिंची, रमनीय विचत्रन चित्र रची ।
 बिच बार अनूप विराजत है, लख काँम के मंदर लाजत है ॥५३३॥
 ईम च्यारहु मंडप कीन ऊदै, जिन के प्रति द्वार पगार जु दै ।
 पुन सासन लै गुरु प्रोहित सौं, मध जाय ठये दुलहा भीत सौं ॥५३४॥
 सिनगार कै दुल्लहनीं सबहीं, जुर संप्रति दंपत जोरि जिहीं ।
 समधी तरु सुस्क^{१८} सँजोय सबै, जहाँ विप्रन होंम प्रकास जवै ॥५३५॥

१ वर । २ लाम । ३ कलश । ४ सास । ५ आजा । ६ मंडप के स्तंभ । ७ सुन्दरता ।
 ८ पत्र = पत्त । ९ वांस । १० आंगन । ११ मंडप । १२ वेली । १३ पीला ।
 १४ नीलम । १५ मूंगा । १६ मू० प्र० मध । १७ इत्र । १८ शुष्क = सूखा ।

विध वेद के मंत्रन साँ बहुरै, रव-मंगल-दायक जाहि ररै ।
 गहरै श्वर गायनि^१ गावत है, बहु दंपत नेह बढावत है ॥५३६
 दुलहा छिव^२ देखत दुल्लहनी, घुमँड़ी सखीयाँ सरसात घनी ।
 सकुटंबनी देखत होय सुखी, मन मोद विदेह लहै महिषी^३ ॥५३७
 ऊदवाह^४ अनंत ऊछाहन सौं, निज वेद स्तुती निरबाहन सौं ।
 कर भाँवरै जाय विदेह कह्यौ, गुरु प्रोहित भूपहु संग गह्यौ ॥५३८
 दुहिता दुहिता पति दोवन कैं तग पुञ्जन कीन लहै पन कैं ।
 अविनासीया रूप अनंत अखी, रज बंदत है अज^५ रुद्र रिखी ॥५३९
 अवगाहत ध्यान न आवत है, पग ग्रेह विदेह पुजावत है ।
 अज ईस ज्युहीं सीय रूप अजा^६, गुन सारद^७ गावत है गिरजा ॥५४०
 जोई ग्रेह विदेह-सुता जननी, रुचता बय बालक ख्याल रमी ।
 सीय कौ परभाव गिनौ सगरौ कुल मात-पिता जु पबित्र करौ ॥५४१
 सुत औध-के-नाथ के च्यार सही, दुहिता मिथलेसहु च्यार दही ।
 मुद मंगल गाँन कैं यान^८ सही, दुहिता दुहिता पत सोख दही ॥५४२
 मिथलेस के भ्रात अमातन में, बढ आयेऊ साथ बरातन में ।
 लख नैनन सौं सुख-लाभ लीयौ, हरख्यौ अबधेस कौ देख हीयौ ॥५४३
 वज आँक भेर अबाज बढी, चँहुँ दुल्लह की असवारी चढी ।
 सुभ-बेलाय^९ होत सबेरन में, दुलहा ऊतरे चँहुँ डेरन में ॥५४४
 पद बंद बसिष्ठ पुरोहित के, अरु कौंसक^{१०} आद ऋषी ईतके ।
 संग लै दुज^{११} वृंद सखा सिगरे, पती औध-पती सुत पाय परे ॥५४५
 ऊर भेट ईतै सिर सँघ अभै^{१२}, सुत दोनीय भूप असोस सबै ।
 बहु विप्रन कौं बगसे बित कौं, अरु मागध सूत अयाचित^{१३} कौं ॥५४६
 गुनवंतैन गंधर्व गाँयन कौं, निज दासि खवासन नायन कौं ।
 मन बंच^{१४} ऊदंचत दान मिल्यौ, भर भाद्रव मास ज्याँ द्रव्य भित्यौ ॥५४७

१ गानेवाली । २ छवि । ३ पटरानी । ४ उद्वाह = विवाह । ५ ब्रह्मा । ६ अजन्मा ।
 ७ शारदा = सरस्वती । ८ यान = सवारी, डोला । ९ शुभवेला = शुभमुहूर्त ।
 १० कौशिक = विश्वामित्र । ११ द्विज = ब्राह्मण । १२ अभय । १३ नेगियों को ।
 १४ वाञ्छित ।

सब आय के साथ जनास्य सौं, निज पुत्रीय लोकक लै नय सौं ।
 मिथलेस के आय के अंदर कौं असवारि उतारीय अंदर कौं ॥५४८
 मन-मोदमई सब मात मिली, रुचता-जुत गावत राग-रली ।
 मिथलेस प्रचारीय मोद महाँ, रुच इवादन रिद्ध समृद्ध रहाँ ॥५४९
 मनुंहार बरातिन मोदमई, निबहै अत पुज्जत नित्य नई ।
 अबरोध^१ में दुल्लह आवत है, जनवासहु कौं चढ़ जावत है ॥५५०
 बिहरै बन बाग बजारन में, सहलै कहूँ सैल सिकारन में ।
 बितए दिन केक बधाईय में पति औध रहे पहुँनाँइय में ॥५५१
 पति-औध के मंत्रिन नै पहिलै, मिथलाधिप माग्गीय सीख मिलै ।
 सब भाँत अलंकृत^२ साथीय कौं, बगसे बहु बित्त बरातीय कौं ॥५५२
 दुलहा दुलहींन दहेज दयो, करकै गनती^३ नहीं जात कह्यौ ।
 बर बख जिते जर-तहर बने, गजराज गऊ रथ घोरे घने ॥५५३
 दीय दासन दासी सु दायज^४ में, जिनकाँ दुहिता^५ हित कोन जुम^६ ।
 मिथलाधिप सौं हिल कै मिल कै, दसरथ्य चले संग लै दल कै ॥५५४
 पहुँचे सोई जाय के औध-पुरी, घन नौबत भेर^७ अवाज घुरी ।
 वहि कै^८ जन आय बधाँवन कौ, सुख संगतिह सरसाँवन कौं ॥५५५
 कलसा लीय भेंट निछावर कै, भल मोतिन-थार घने भर कै ।
 घनस्याँम लखे जन जाहि घरि, कलधौत^९ रु हाटक^{१०} वृष्ट करो ॥५५६
 पहुँचे जबहीं दरवाजन पै, बड़ एटह दुंदभी^{११} वाजन पै ।
 ललना वसु^{१२} सीस करीर^{१३} लीयं, कमनीय सपल्लव गुच्छु कीयं ॥५५७
 गुन-गान बधाईय गावत है, सुखं नैनन कौं सरसावत है ।
 नृप देन बधाईय नारन कौं, भर द्रव्य करीरन भारन कौं ॥५५८
 विथुरै^{१४} बहु रत्न बजारन में, नवछावर के निरधारन में ।
 पहुँचे निज जाय के गोपुर^{१५} कै, घन बाँनक आनकहू घुर कै ॥५५९
 महिलाँ सब राँनीय संग मिली, ऊछरंग सौं गावत राग अली^{१६} ।
 अबरोधन-द्वार अगारन में, पहुँची कँऊं पार अगारन में ॥५६०

१ रनिवास । २ अलंकृति = गहने । ३ गणना = गिनती । ४ दहेज । ५ लड़की ।
 ६ जिन्नेदारी । ७ भेरी = ढोल । ८ चलकर । ९ चाँदी । १० सीना, वाजार ।
 ११ दुन्दुनि = टोल, नगाड़े । १२ मिट्टी । १३ कलश, वाँस की डार । १४ विखेरे ।
 १५ द्वार । १६ सत्तियाँ ।

सुभ सूचक लै दध दूब सखी, सबही सु सथाँन रही सुमुखी ।
 दुलहा दुलही दरवाजन सौं, सब बेख^१ सुधार समाँजन सौं ॥५६१
 जुत भ्रात लखे रघुनाथ जबै, सिवका^२ दुलही संग जाँहि सबै ।
 अत आँनद मात गह्यौं ऊर कौं, पुलकावली आय चढी पुर^३ कौं ॥५६२
 अबग्राह में जाँन घटा ऊमगी, भुव भीर मनौ दुरभक्ष भगी ।
 बहुरै सुख सौं मन बंचन कै, अत कंचन^४ पाय अकिंचन^५ कै ॥५६३
 बिछुरी सफरी^६ जिम बारही^७ में, धस जावत बाढ की धारही में ।
 विरहा सुत मरँतन दूर बह्यौं, लख नैनन आँनद पाय लखौं ॥५६४
 अपढी^८ कर आड ऊतार अली, लीय दुल्लहनी केऊ संग लली ।
 गहि अंचर ग्रंथनी जोर गुही, रखवारीय कारन संग रही ॥५६५
 सुत दंपत देख कै होय सुखो, सब ही तहाँ मात भई समुखी ।
 सुध-अंत^९ बधाय कै लीन सबै, जुवतीगन संगल गाय जबै ॥५६६
 जुर दंपत^{१०} जोरीय^{११} चाह जहाँ, अँगनाईय कारन कीन ईहाँ ।
 कुल-मात^{१२} के बंदन पाय करे, धुर^{१३} प्रोहित नारीय भेट धरे ॥५६७
 पुन पुञ्जक नारीय के पग कै, लीय ताहि असीस अभै लगकै ।
 निज मात के पाय लगे नम कै, सबही रनबाँस गने सम कै ॥५६८
 बगसीस दई बनरा-बनरी^{१४}, घन-मोल^{१५} अलंकृत जाहि घरी ।
 सुच हर्म^{१६} बसाय चहू सुतकौं, रमनीय घने खट^{१७}-ही-रित कौं ५६९
 बिच काच के अंगन जाहि बने, छत और दिवाल सुबनै चुने ।
 दुत रत्न-जरे तिनकी दमकै, चकचाँधीय^{१८} नैनन में चरकै ॥५७०
 द्रग देखत सास जबै दुलही, अत प्रेम होय भर कै ऊलही ।
 सुन राजनहू सुत के सुख सौं रत-आँनद में रचता रख सौं ॥५७१
 रघुनाथ सपूतीय देख रहै, गरुक्कर्म^{१९} बिसारद नीत गहै ।
 ध्रम छत्रीय बंस कौं धारन में, अत संमृथ^{२०} दीन ऊवारन में ॥५७२
 खल धूरत के छल खंडन में, मरजाद सनातन मंडन में ।
 सब रीत सराह प्रजा सुन कै, गरुआई में राँस बड़े गन कै ॥५७३

१ वेश = पोशाक । २ शिविका = पालकी । ३ शरीर । ४ स्वर्ण । ५ दरिद्र ।
 ६ मछली । ७ वारि = जल । ८ कनात । ९ रनिवास । १० वर-वधू । ११ जोड़ी ।
 १२ कुलमाता = कुलदेवी । १३ पहले । १४ वर-वधू । १५ अमूल्य । १६ हर्म्य =
 प्रासाद, महल । १७ षट् = छह । १८ चकाचौंध । १९ गरुक्कर्म = विद्या । २० समर्थ ।

सुधराई^१ में राज के सेवन कौं, दसरथ्य विचारीय देवन कौं ।
 पदवी जुवराज प्रचारन कौं, कीय रिद्ध जमाँ तिहि कारन कौं ॥५७४
 सुन कॅकई वात बड़े सुत की, ममता-बस सुद्ध^२ गई मत कौं ।
 नृप कौं बुलवाय तहाँ निगुनी, कलहंतर ता कीय या कहनी^३ ॥५७५
 पति मो वरदाँन दीर्य पहिलै, मुख माँगतहूँ अब मोहि मिलै ।
 मम पुत्र काँ राज की देहु मता, बन राँम बसै गहि कै बिपता ॥५७६
 जोई अरुद^४ चतुर्दस जाय जितै, चित साँ सुपनै नहीं ओध चितै ।
 कहनी नहीं राज वृथाँ करीयै, अपनी मति आप ही ऊद्धरीयै ॥५७७

सोरठा

सुन दसरथ नृप खान, कही जथा जो कॅकई ।
 मुख रुक लोनौ मौन, हीयो^५ गयो^६ सत टुक ह्वै ॥५७८
 कँवसल्या सुन काँन, सोमित्रा सोऊ सुनी ।
 ग्रह-ग्रह मंगल-गाँन, बंध भये दुँदभी वजत ॥५७९
 बोले रघुवर बाँन, लघु आता सुनीयै लखन ।
 है मंगल-मह^७ हाँन, जाँन परत मम जीव में ॥५८०
 ईतनै ही में आँन, कही कथा कहूँ कॅकई ।
 श्रीरघुवीर सुजाँन, सोचे मन में जिह समय ॥५८१
 होय पिता की हाँन, वचन गयै जीवन वृथाँ ।
 करहुँ राज-सुख काँन^८, लखन कही रघुनाथ लख ॥५८२॥

छंद भुजंगीप्रयात

सुनी राँम की वात सोमित्र^९ सोऊ, द्रढं जायगे बीच आरंन्य दोऊ ।
 लगे खान^{१०} भूतान^{११} कोडंड^{१२} लीने, दहूँ जाय कै मात काँ बोध दोने ॥५८३
 पिता की करै जो वृथाँ कौल^{१३} पुत्र, वही तँ भनी जाँनीयै जो अपुत्रं ।
 कपुत्रं सोई पुत्र लोकं कहाँनौ, जोई जीवतौ मृत्यु के तुल्य जाँनौ ॥५८४
 हमारं ज्युही तौर कं पुत्र हेतू, सब रीत सौं अर्थ^{१४} हे धर्म-सेतू^{१५} ।
 चिताये सब ओध कॅ ओधवाटी^{१६}, पिता-मात के दस पैहौं प्रपाटी^{१७} ॥५८५

१ सुधराई । २ सुद्धि । ३ कहनी = वात । ४ अर्थ । ५ मृ०प्र० हीय्यौं । ६ मृ०प्र० गयो । ७ लोके । ८ कान । ९ सोमित्र = लक्ष्मण । १० श्रोता = कनक । ११ तरकस । १२ कोडंड । १३ कौल । १४ धर्म । १५ धर्म-सेतू । १६ अर्थवादी । १७ परम्परा ।

सुनं राम के बैन माता सबे हीं, जकी^१ चित्त की पुत्तरी ह्वै जबे हीं ।
 द्रुतं औरहू भेट के भ्रात दोऊ, सीया के गये हर्म में संग सोऊ ॥५८६
 प्रीया^२ प्राँन सीया सुनौ छाँड़ प्रीती, निभायौं सबे धर्म कौं न्याय नीती ।
 अहो सा सरै की तजौ चित्त आसा, बसौ चाहि के मायक जाय बासा ॥५८७
 बनौबास कौं जायगे जुगम बीरं, धरौ बल्लभा^३ चित्त में नैक धीरं ।
 विजोगं समा^४ अष्ट-सष्ट^५ बिताई, भलं आय है भौन कौं जुगम भाई ॥५८८
 बिदेही सुनी राम की एह बाँनी, कही स्याँम साँ ताम साँची कहाँनी ।
 प्रभू रावरे संग सारंग-पाँनी^६, धरा धाम जानौं वहीं राजधानी ॥५८९
 सु पै प्राँन की हान बाजी सभूँगी, तऊ रावरी साथ नाही तजूँगी ।
 कही ज्याँनकी बाँन ऐसी करारी, खिती-आत्मजा^७ संग लीनी खरारी^८ ॥५९०
 पिता-दर्स लीनौं त्रहूँ लाग पाँऊ. रहो कँकई चंद्र ज्याँ घेर राहूँ ।
 तहाँ कँकई ऊठ के बारताई, लता बल्कला^९ आजनं^{१०} दौर लाई ॥५९१
 सुमंत्रेय^{११} दीने अरू राम सीता, सबे अंग में धार लीने सुभीता ।
 पिता-मात के बंद पादारविंदं, चले अटवी^{१२} बास कौं रामचंद्रं ॥५९२
 बढी राज के ग्रेह हा-हंत^{१३}-बाँनी, घुकी धूम ज्यूँहीं सबे राजधानी ।
 अजोध्या पुरी ताहि छापी अँधेरी, तहाँ तेज कौ नाँहि दासे तरेरी ॥५९३
 गये भर्थहू मातुलं^{१४} दूर गेहा सत्रूँ भए ताहि संगी सनेहा ।
 बनौबास दीनौ पिता दोष बीरा. सिधाये सुमंत्रेय राम सधीरा ॥५९४
 अनैसी प्रजा बात देखी अनंता, सबे धीसखं राज के परम संता ।
 मिले राज-द्वारं मही और मत्री, ऊदासीनता पाय आये अनंत्री ॥५९५
 दसा राज के ग्रेह की एह देखी, बिधू लेखीयै दीह^{१५} में ज्याँ बिसेखी ।
 गये राज के पासहू सारग्राही^{१६}, तहाँ जाय देख्यौ प्रभाध्वंस ताही ॥५९६
 सुनी कँकई की तिहीं घात सारी, इहीं राज में रैन^{१७} कोनी अँधारी ।
 कही धिक्रती^{१८} बात मंत्री अँनेका, बिचारचौ नही नैक राँनी बिबेका ॥५९७

१ सूच्छित्त, दुःखित हुई । २ मू०प्र० प्रीय्या । ३ प्रिया । ४ वर्ष । ५ चौदह ।
 ६ शाङ्गपाणि = धनुर्धर । ७ क्षित्यात्मजा = जानकी = राम । ८ बल्कल = भोजपत्र,
 पेड़ की छाल । १० अजिन = मृगचर्म । ११ सौमित्रेय = लक्ष्मण । १२ अटवी =
 जंगल । १३ हाहाकार । १४ मामा के । १५ दिन में । १६ बुद्धिमान् । १७ रजनी =
 रात्रि । १८ धिक्कृति = धिक्कार ।

कछू दीह वीते तजी भूप काया, मही राजधाँनी सबै छोर^१ माया ।
 सबै राज सुँनी लख्यौ मंत्रि साथा, समाँचार भेजे भर्थ सुजाता ॥५६८
 अजोध्यापुरी भर्थ-सत्रू^२ आये प्रजा औ सुमंत्री सबै धीर पाये ।
 कछू दीह वीते जब-भर्थ काजा, सबै जोर कं राजमंत्री समाजा ॥५६९
 जुत मात आता लये संग जाहा, अरनं गये राँम लैनै ऊमाँही ।
 रहे चित्रकूटं गिरी सीस राँमं, तहाँ जाय भँटे सुमत्री तमामं ॥६००
 मिले भर्थ सत्रू^३ घनहू और माँता, सबै राजधाँनी लखी हीन साता^३ ।
 कीयो भूपहू बास बैकुंठ केरौ, घनै दुःख कौ छाय कं चित्त घेरौ ॥६०१
 करचौ राँमहू तीय^४ दै संसकारा, बिलापं बढे मोह साँ नैन बारा ।
 पुरोधा^५ वसष्टं दयौ बोध पेखै, भई जो कछू बात भाबी बिसेखै ॥६०२
 भरथं कह्यौ चालीयै राँम आता, अजोध्यापुरी रावरी है अनाथा ।
 सबै राजसंत्री प्रजा आद सुँनी, ईकै नाथ राँम बिना वात ऊँनी ॥६०३
 जबै राँम बोले बनोबास जैहू, पिता की प्रतज्ञा जबै पार पैहू ।
 अजोध्यापुरी देखहू नैन आई, भली औ बुरी लेखीयं वात भाई ॥६०४
 भरथं सुनी राँम नै एह भाखी, रजा^६ लै तहाँ पादुका सीस राखी ।
 अजोध्यापुरी चाल कं भर्थ आये, सुमंत्रेयहू राँम आगं सिधाये ॥६०५
 वसे डंडकारनं^७ में जाय वासा, कुटी बाँध कं पंचवटी^८ प्रकासा ।
 रिखी-राज भँटे घने राँम-राई, जहां वेदना^९ जातु-भानं^{१०} जनाई ॥६०६
 सबे ही सुँनी-वृंद ह्वं ही सुखारी, अभैदान दीनी ईहीं आसुरारी^{११} ।
 सुखी ह्वं रिखी धाम-धामं सिधाये, विचारे तहाँ राँम वासी वसाये ॥६०७
 सुपन्खा^{१२} पती-लंक की बहन सोऊ, द्रगं देख लीने कहू वीर दोऊ ।
 भूमौ बुद्धि कामांतुरा होय भेटी मनोजं रच्यौ रूप औ लाज मेटी ॥६०८
 कह्यौ राम ताँ चाहि कं व्याह कीजै, पती पाय कं चित्त मेरी पतीजै ।
 अहं एक-पत्नी सोया संग एकै, वृनं राँम में धार लीनी बिसेखै ॥६०९
 सुपनया जबै जाय कं सेस^{१३} जांच्यौ, हृदं काम साँ छाय कं प्रेम राच्यौ ।
 सुमंत्रेय बोले जतो-वृत्त^{१४} सार्थं, उदज्जं नही काम की मो ऊपाधू^{१५} ॥६१०

१ छोर इर । २ मरग, मरुघन । ३ सात = कल्याण, सुख । = जल ।

४ पुरोहित । ५ आग । ७ डण्डकारण्य । ८ पंचवटी । ९ कट । १० वातुधान =

राज्य । ११ अशुभारि = शत्रु । १२ सुपन्खा । १३ सेषावतार लक्ष्मण ।

१४ अशुभारि । १५ उदरार्थ ।

मदंधा^१ तहाँ क्रुद्ध^२ कीनौ सहाँना धरचौ मंथली भक्षन काज ध्याँना ।
 भयंकार कीनौ जब रूप भारी, डरी देख सीता भई सो दुखारी ॥६११
 ईतै दौर कै आय सेसावतारं, बने आततासी^३ प्रहारं बिचारं ।
 गही केस-गाँसी^४ जिहीं हाँथ गाढो, ठगारी तही ह्वै रहो भूम ठाढो ॥६१२
 सुमंत्रेय बोले जब राम सेती, अनाचार में रूष्ट है पुष्ट येती ।
 सुनी बिप्र भेदोज^५ आरंन माँही, दये सो रिखी आय नैनौं दिखाई ॥६१३
 महाराज रात्रीचरा^६ मारनै की, प्रतज्ञा करी सो सही पारने की ।
 नहीं राक्षसी जात साँ येहु न्यारी, सीया भक्षनै काज दौरी सुरारी^७ ॥६१४
 राजा होय सो दंड याकौं रचोजं, कछु नाँहि कारुँन^८ यामें करीजै ।
 सुनी राम भाखी सुमंत्रेय सोऊं, कही राम यामें नहीं संक कोऊ ॥६१५
 तऊ नार-जाती ईहै आतताई, नहीं प्राँन कौ दंड दीनै निकार्ई ।
 ईतौ जान कै कीजीयै हीन अंगी, प्रभावंस देखै तिहीं के प्रसंगी ॥६१६
 सोई क्रुद्ध ह्वै आय है एक साथी, नृचक्षा^९ कळुँ अट्टवी के निपाता ।
 कह्यौ राम त्योंहीं सुमंत्रेय कीनौ, द्रढं प्राँन कौ दंड ताकाँ न दीनौ ॥६१७
 कुरूपा करी काँन औ नाक कट्टी, चले सो गई राह की पाय छुट्टी ।
 सीया कौ करचौ बोधहु प्रेम सीचै बिराजे तबै रामहु धाम बीचै ॥६१८

दोहा सोरठ(ठा)

कटे नासका काँन, सुरपनखा लोह स्रवत ।
 जाय जुहारी जाँन, दूखन खर बंधव दुहन ॥६१९
 खर दूखन जय खंभ, सबही पूँछी सुपनखा ।
 बोली पाय विश्रंभ, कहं सकल सुनीयै कथा ॥६२०
 कोऊक राज-कुमार, कर कै पंचबटी-कुटी ।
 बासी करचौ बिचार, नहीं आँवन दे नार-नर ॥६२१
 त्रीया संग ईक ताहि, सुभग सलौंती सुंदरी ।
 देखन कौ सुखदाय, मैं हूँ गई मुँकाम मंह ॥६२२
 काटे मेरे काँन, काटी फेर बिकूनका^{१०} ।
 नहीं अपराध निदाँन, अल्प दोष अरु दंड अत ॥६२३

मदंधा । २ क्रोध । ३ आततायी = दुष्ट, पापी । ४ केशपाश = चौटी । ५ हाड ।
 ६ राक्षस । ७ राक्षसी । ८ कारुण्य । ९ राक्षस । १० नासिका ।

कही सुपनखाँ काज, खर दूखन अरु त्रसर खल ।
ईह मम भुज-बल आज, देख लेहु तेरे द्रगंन ॥६२४

छंद मुक्तादाम

सजे खर दूखनहूँ निज साथ, पलादँन^१ पौरुष पूर प्रपात ।
सजे सब आयुध अंग सनाँह^२, तुरंगन^३ पख्खर^४ डारोय ताहि ॥६२५
कसै कोऊ बीच हृद अघिकंग, जटै सिर-स्त्रान^५ हूँ रक्षन-जंघ ।
तुलै तुदत्रान^६ र बाहुल^७ तेम, निचोलक केक सजे रन नेम ॥६२६
कसीसत कम्मर खग^८ कुठार, धरै जमदाद^९ हु तिछ्छन^{१०} धार ।
गहै परघातन^{११} मंड गरूर, सजे केऊ संकु^{१२} सकृतीय^{१३} सूर ॥६२७
तहाँ ग्रह केतक हाथ त्रसूल, मिले सब यातु उपाध के मूल ।
चठठत सिंजनि^{१४} चाँप^{१५} चढाय, सरास्त्रय^{१६} बंध करै सरसाय ॥६२८
बढै तहाँ आँनक भेर अवाज, सबै खर दूखँन जोर समाँज ।
पताकन^{१७} फीलन^{१८} पै फहरात, ऊदायुध जुद्ध चले अकुलात ॥६२९
भुके सिर गिद्धँन चिल्लन भुंड, फलंगत सगत लाग फिरंड^{१९} ।
चली रज डंमर अंबर छाया, दिनंकर^{२०} धुंधरौ नैन दिखाय ॥६३०
चढी चकढोल धरा धँमचक्क, रह्यौ तिह वेर प्रभंजन^{२१} रूक्क ।
मचक्कीय सेसहु की फँन-माँल^{२२}, कसक्कीय काँमठी-पिटु^{२३} कराल ॥६३१
करक्कीय दहु तहाँ भर कोल^{२४}, ललक्कत फीज बढी गत लौक ।
करै घुँन मारहुँ राजकुमार, सँभारहु आयुध ह्वै हुसयार ॥६३२
बकै कौऊ जीवत कं कर बंध, करै सोई हाजर लै दसकंध^{२५} ।
कहै कोऊ नाँर महाँ कँमनीय, जिहीं लहि छोरहु जीव तजीय ॥६३३
ऊचरत दूखन के अरदास, विपत्त में डोलत है बनबास ।
दिखाबहि जो कछु पावही दाव, घलै घट बूझ कै ताकँह घाव ॥६३४

१ राक्षस । २ सत्राह = कवच, बस्तर । ३ घोड़े । ४ पाखर = काठी । ५ शिरस्त्राण
= पघडी, टोप । ६ उदररक्षक । ७ भुजारक्षक । ८ खड्ग । ९ यमदंड = कटारी ।
१० तीक्ष्ण । ११ जुहांगी । १२ खूँटे, साल । १३ शक्ति । १४ प्रत्यंचा, डोर ।
१५ चाप = धनुष । १६ शराशय = तरकस । १७ पताका = ध्वजा । १८ हाथी ।
१९ सियार । २० दिनकर = सूर्य । २१ वायु । २२ फण माला । २३ कमठपृष्ठ = कच्छप
की पीठ । २४ सूकर, सूअर । २५ रावण ।

बिचारत वात चले खल-वृंद, दसूँ दिस दौर मचावत दुंद^१ ।
 बकै बहु हल्ल सुगल्ल बजाय, ऊभल्लत सिंधु मनों ऊफर्नाय^२ ॥६३५
 अडंबर^३ बाजंत होत अवाज, छटा चॅमकावत आयुध साज ।
 पलादैन मेचक^४ रंग पलाय, सजै मनु बहंर^५ की समुं बाय ॥६३६
 पताकैन सेत जुरी बुग-पंत^६, करै रव भेख सिवा^७ किलकंत ।
 मँडो जिम चाप पुरंदर^८ मंड, दियै ईम चाप गहै भुज-दंड ॥६३७
 सुनै बहु सिधव-राग^९ कें सोर, मिलै रव चातक^{१०} बोलत मोर ।
 घटा घँत अवात फौज घुमंड, असारन^{११} धारन बाँन ऊमंड ॥६३८
 कही लघु बंधव साँ ईह कथ्य महाँ खल मार कल्लँ बिन मथ्य ।
 सीया गिर-कंदर^{१२} में लहि संग अहो तुँम जावहु बोर अभंग ॥६३९
 कह्यौ रघुबीर करचौ सो जई काज, बिचछछन^{१३} लछछनहूँ^{१४} निरव्याज^{१५} ।
 ईतै बिच आसर^{१६} आय अनीन^{१७}, प्रचारीय राँम जहाँ भुज पीन ॥६४०
 तहाँ रघुबीर रहे धनुं ताँन, सँवारीय सिजनी बाँन सँधान ।
 अरीदल मारन माँनहु ऊद्ध, क्रततहूँ^{१८} दंड गह्यौ कर क्रुद्ध ॥६४१
 नमूँचीय^{१९} माँरन काज निदाँन, मनों कर बज्र गह्यौ मघवाँन^{२०} ।
 मनी मधु-कंटम काटन मथ्य, सँभारीय चक्र हरी समरथ्य ॥६४२
 मनौ त्रपुरासुर मेटन भूँल, तक्क्यौ त्रिपुरारि^{२१} गहै तिरसूल ।
 बिडारक तारक-दाँनव^{२२} वार, किधौँ कर सक्त गही कऊमार^{२३} ६४३
 चमूँ-दन^{२४} भक्षन काँ चल चाल, बढी जनु कालीय^{२५} जीह^{२६} बिसाल ।
 करीरज^{२७} सागर पीवन काज, सभयौँ मुनोराजन कौ सिरताज ॥६४४
 मनौ दुरभक्ष कौँ मेटन माँन, ऊमडीय जाँन घँना घँन आँन ।
 बँधे जट-जूट^{२८} जहाँ रघुबीर, घरी खल अवात देख कं घोर ॥६४५
 ईतै खर दूखँन आसर आय, रहे सब घेर जहाँ रघुराज ।
 लखे खर दूखँन रूप ललाँम, सरोरुह आँनन^{२९} संचर^{३०} स्याम ॥६४६

१ द्वन्द्व । २ उद्भूत कर । ३ जुभाऊ वाजे । ४ काले । ५ वादल । ६ बकपंक्ति =
 बगुलों की कतार । ७ शिवा = शृंगाली । ८ इन्द्र । ९ सिन्धु नामक राग । १० पपीहा ।
 ११ राक्षस । १२ पर्वतगुफा । १३ दिचक्षण = चतुर । १४ लक्ष्मण । १५ निर्व्याजि
 = निष्कपट । १६ असुर । १७ अनीकनी = सेना । १८ कृतान्त = यमराज । १९ नमुचि-
 नामक दैत्य । २० इन्द्र । २१ महादेव । २२ तारकासुर । २३ कौमार = स्वामी
 कार्तिकेय । २४ वनुजचमू = दैत्यसेना । २५ कालीदेवी । २६ जिह्वा । २७ कुम्भज
 = अगस्त्यऋषि । २८ जटाजूट । २९ कमल-मुख । ३० शरीर ।

गहै धनुँवाँन गुमानि गरुर, प्रभा मधुदीप^१ प्रकासत पूर ।
 बिमाँसत आसय बात बिचार, फोऊ ईह छत्रीय-राजकुमाँर ॥६४७
 जुरै जुष नाँहिन माँरन-जोग, बसे वनवास कौँ पाय बिजोग ।
 करी भगनी^२ बिन नाँक रुँ कान, जिवावत बालक ख्याल क जान ॥६४८
 बिचार कै दूत कही ईह बात, सबे फिरजावँहिगे हम साथ ।
 श्रीय निज बैर में देबहु ताहि, मिटै दुख छाँय रही वन माँहि ॥६४९
 तबै चल दूत गयो सोई तथ्य^३, कही रघुनाँथ सौँ या बिध कथ्य ।
 सुनी रघुनाथ सबे बिध खाँन, बिचार कै दूत कही ईह बात ॥६५०
 अहो सुन दूत सहाँ हीय अंध, मिलौ निज इवामीय सौँ मतिमंद ।
 फहै हम जाय कहीँ सोई कथ्य, अरे तुम जान लये असमथ्य ॥६५१
 अंगजित^४ छत्रीय जात अभीह^५, दहै हँम आसर कौँ निस दीह ।
 महाँमुनि दुख्यत कीन मदंध, क्रव्यातन^६ जातन काट है कंध ॥६५२
 अँगाल के भुँड मिलै कहँ सथ्य, कहै मृघराजहु^७ काँ कीऊ कथ्य ।
 अयाँनप^८ जान परचौ हम एहु, गहै किन माँरग जाबहु गेह ॥६५३
 ईत पर पौरुख है कहँ अंग, जुरै धनुँ बाँनन ताँनहो जँग ।
 दया कर सत्रुन कौँ तज देत, सोई कदराईय^९ जान सहेत ॥६५४
 सुनी कथ्य दूत कही ततसार, बदी^{१०} खर दूखन कौँ तिह बार ।
 लगी खर दूखन कै सुन लाय^{११}, बढी ऊर क्रोध की ज्वुवाल बलाय ॥६५५
 गहै जीय गात कहै कोऊ गल्ल, हकार कै मार लहै कर हल्ल ।
 बकै दुरबाद^{१२} प्रहारत बाँन, पलावन बाद करै अप्रमाँन ॥६५६
 करै कोऊ तोमर मार बुठार, तहाँ कर तिछछाँ लँ तरवार ।
 घने रघुबीर बचाय कै घाँव, दयो धनुँ बाँनन आपन दाव ॥६५७
 परं रन-मंडल बीच परेख, ईलात के चक्र ज्यु हीँ धनुँ येक ।
 छुटे सर भाँन मनी कर^{१३} संग, मिटै तम तौर^{१४} फटे ऊतमंग^{१५} ॥६५८
 बढे विसफार^{१६} अवाजन बाज, दरार न पढव्य^{१७} लेत दराज ।
 घनी रघुनाथ करी सर घात, हटी खल फौज हीये हहरात ॥६५९

१ कामदेव । २ वहिन । ३ तथ्य = सत्य । ४ पुत्र । ५ अमय = निर्भय । ६ क्रव्यादन
 = राक्षस । ७ मृगराज = सिंह । ८ मूर्खता । ९ कदर्य = कायरता । १० कही ।
 ११ आग । १२ दुर्वाद = दुर्वचन । १३ किरण । १४ उसी प्रकार । १५ उत्तमाङ्ग
 पर्वत ।

निरालय दीसत औध-नरिद, छुट्यो तम-फंदी सी मानहु चंद ।
घने घट लाग पलादन घाव, श्रवं जिह अंगन लोह ऐ श्राव ॥६६०
परे रन तूट घने पग पाँत, कटे भुज नासका पाटीय काँत ।
गिरे कहूँ दंत भरे रत गात, हले सब राखस मीजत हात ॥६६१
पिता केऊ आत पुकारत पूत, रच्यो रन घोर लखी रजपूत ।
अनेक के तुल्य लख्यो तर येक, बलाय की लाय लई अत्रवेक ॥६६२
परे मुह काल के जाय पलाय^३, भई गत सर्प-चचुँदर^४ भाय ।
सती कर फेर भये मुहमेज^५, तपे खल प्रीखेंस-भाँन सतेज ॥६६३
प्रहारत तोमरहु घन प्राप्त, तहाँ रघुनाथ ऊड़ावत तास ।
अपेटेन बाँनन लाग भरंत, किते खल घायल त्राहि करंत ॥६६४
हटै भट केक जुटे हरबल्ल, ऊठे घठ धूमत क्रोध ऊभल्ल ।
सिंटेरन आय कटे तन सूर, रटै मुख हाय सिंटे मगरूर^६ ॥६६५
भृमै मति जुथ्यन-जुथ्य भिरंत, पलादैन लुथ्य पे लुथ्य परंत ।
बहै सर लिप्तहु दीप्त बढ़ाय, भुजंगम^७ भीम मनी भहराय ॥६६६
हले रघुनाथ की बाँन हिलोर, बहे केऊ धार रहै जलबोर ।
बरंगन अंगन करे बहु बीर, परै गिर-श्रंग ज्युहोँ लहि पीर ॥६६७
कहै कोऊ मूढ़ कहा खर कीन, पिछाँनिऊ बाँहिन पौरुख पीन^८ ।
सबे छट आय गये ईक सथ्य, बिचारीय नाँहिन ये कहु वत्त ॥६६८
मरे बिन भाग गये डर मीच^९, लहै किस कातर तापद नीच ।
विमांसक^{१०} आय जुटे रघुबीर, तहाँ गहि चांप चलावत तीर ॥६६९
तिने रघुनाथ करे सत दूक, ऊठी मनुँ ज्वाल की माल अचूक ।
महाँ क्रत-हस्त^{११} भये मन मुद्ध^{१२}, जहाँ रघु पीर की देखत जुद्ध । ६७०
तकै रन दाव रहे धनुँ ताँत, पलादन पुत्तरी चित्त पलाँत ।
भये रन संकुल व्याकुल भेस, प्रकंपत गातन पुज्जत पेस ॥६७१
तजी तन आस कटे तन-त्राँन^{१४}, ऊभडिय जुद्ध भये अगवाँन ।
हँमल्लैन फौज ऊभल्लन हाथ, घुमंडीय राघव घल्लन घात ॥६७२

१ राहु । २ रक्त । ३ दीड़कर । ४ सांप-छंछंदर । ५ सन्मुख । ६ घमण्ड ।
७ सर्प । ८ मूर्ख । ९ पुष्ट, प्रवल । १० मृत्यु । ११ विमनस्क = दुःखी होकर ।
१२ सिद्धहस्त । १३ मुग्ध । १४ तनुत्राण = कवच ।

तहां रघुनाथ गहै धनुं तीर, बिड़ारत नैरत^१ हेरत वीर ।
 सहै बन-बीच बहै गजराज, मरोरत कंध ज्युहीं मृघराज ॥६७३
 मिली रन एक अनेकन मंड, भरं खल बाँनन भुँडन-भुँड ।
 पतांगहू दीप लखी परकास^२, परै जर आय के ताहि के पास ॥६७४
 ईहै गत होय पलादन-अंग, जुरै रघुवीर करै जिह जंग ।
 मँड़े नट खेल मलंगन मार, ऊलटत घोरन तै असवार ॥६७५
 रहे रघुनाथ जहाँ रन रूठ^३, बढे भर बाँनन की घँन बूठ^४ ।
 खरे कँऊ धूमत मुँडन खंड दिखावत मानहु बिष्टर डंड^५ ॥६७६
 परे ऊतमंग कटे धर^६ पाव, प्रहारन राधव बाँन पसाव ।
 तुरंगन तूटत तंग-समेत, परै तहाँ जीन कटे पखरेत ॥६७७
 ऊड़े गज-पिठन केतु^७ ऊचूल^८, हुलै बिच अंबर सेत^९ दकूल^{१०} ।
 प्रभा तिह दीसत पाँन^{११} प्रसंग, चढी मनुं डोर बढी केऊ चंग^{१२} ॥६७८
 लटं ईभ^{१३} बाँनन टक्कर लाग, भ्रमै पग चिक्कर^{१४} जावत भाग ।
 भजै खर^{१५} विस्वर हू कर भूख, अनी^{१६} निसचारन^{१७} बाढीय ऊक ॥६७९
 भयातुर डोलत चित्त भ्रमांत बिहूहबल^{१८} कातर^{१९} के बिललात ।
 ईतं रन राधव जूभत एक, ऊतं खल दौरत आय अनेक ॥६८०
 परै सर लागत ह्वै गत-प्रान^{२०}, मही सब छाव रही मुरदाँन ।
 भुके तिह ऊपर गिद्धन-भुँड, पलादन लाँचत चाँचन पिड^{२१} ॥६८१
 विबुल्लत चिल्लन काक बहोर, करै सोई भक्षन कालज^{२२} कोर ।
 मृघावन^{२३} जंबुक^{२४} खावत मंस, दजावत चावत के मृघदंस^{२५} ॥६८२
 तहाँ भर खप्पर लै रसतेज^{२६}, पीयै बहू जुगान^{२७} के गँन पेज ।
 नचं बहु भूत बितालन नाच रहे रश्म ख्यालन ताल नराच ॥६८३
 महानट लेत है मुँडन-माल, खिले जहाँ गोरीय देखत ख्याल ।
 भधौ रन पेख अचंभत भाँन, तुरंगन वगन लीनीय तान ॥६८४
 घटी अत फौज कटी सर घाव, दयौ खर दूखन आयुध दाव ।
 गहै फरसा कर मंड गहर, सँभार के आय जुरै रन-सूर ॥६८५

१ नैरत = राक्षस । २ प्रकाश । ३ लठ । ४ समूह । ५ डूँड = सिरकटे वृक्ष । ६ धड़ = शरीर । ७ ध्वजा । ८ अलग होकर । ९ श्वेत । १० डुकूल = वस्त्र । ११ पवन । १२ पतङ्ग । १३ घन = हाथी । १४ चीत्कार = चिंघाड़ते हुए । १५ गधे । १६ अनीक = सेना । १७ निसाचर = राक्षस । १८ विह्वल । १९ कायर । २० प्राणहीन । २१ शरीर । २२ कलेजा । २३ मृगधन = जराग । २४ सिंघार । २५ जंगली बिलाव । २६ रक्त = खून । २७ योगिनी ।

कहे रघुनाथक सौं कर क्रुद्ध, जुहारीय आय पलावन जुद्ध ।
 गने हम कोमल बालक गात, घली नह ताहीयत तन घात ॥६८६
 रही पग मांड अरे रजपूत, करे कछु बोरन की की करतूत ।
 ततौ हम जाँनहिगे कछु तोहि, महाँ बलमाँन तहै नहि मोहि ॥६८७
 सुन्यौ रघुनाथक बाँनीय-सोर, विचार कै बोलैऊ कथ्य बहोर ।
 न जाँनत छत्रीय जात निसंक, सुनावत बाच मनावत संक ॥६८८
 लई भट ओट रह्यौ बलतार, मिली नह बाँनन की तन मार ।
 गरज्जत मूढ बजावत गाल, सहै किन बाँनन के नटसाल ॥६८९
 टँका-रव^१ कीन तहाँ धनुँ ताँन, बकार कै^२ राघव मारेऊ बाँन ।
 कटे कर आसर के कर-क्रुद्ध, बढ्यौ मुँह फार कै धर बिहृद्ध ॥६९०
 कटे सर मारक दंत कुदार, चढ्यौ तऊ आय हीयै निसचार ।
 भरथौ मुख बाँनन दिग्धन^३ भार, परचौ अरराय भयो भव^४ पार ॥६९१
 मरे खर दूखँन देख मदंध, बरखत फूल जहाँ सुर-ब्रन्द ।
 सुखी मन मोद लह्यौ रिखि संग, पराक्रम राघव पाय प्रसंग ॥६९२

दीहा

जय पाई रघुवर जहाँ. खर दूखँन बल खंड ।
 संग निसचर चवदा सहस^५, बीर परे बल बंड ॥६९३
 करबर^६ सर मारचौ कटक^७, भूम ऊतारचौ भार ।
 सुर नर मुँनि जाँने सकल, ईह हरि कौ अवतार ॥६९४
 आये सीय लछमन ईतै, रोखाहन^८ लख राँन ।
 पग-बंदन कीने परम, सुभग ह्य घनस्याँन ॥६९५
 के कुँजर पिंजर कटे, अश्य और असवार ।
 बन नारा ज्युँही बहत, धरा रुधर की धार ॥६९६
 महाँमोदमय सैथली, बिहसत लछमन बीर ।
 सब बात पूँछत समर^९, धर ऊर में कछु धीर ॥६९७
 सोया लखँन बतरात सम, रोख मिथ्यौ रघुनाथ ।
 दहुन दिखावत खेत^{१०} दृढ़, हाथन सौं गहि हाथ ॥६९८

१ धनुष की आवाज । २ चुनौती देकर । ३ तीक्ष्ण । ४ संसारसागर । ५ सहस्र = हजार । ६ राक्षस । ७ सेना । ८ रोषारुण = क्रोध से रक्तवर्ण । ९-१० युद्ध ।

समर-भूम का देख सब, आये रघुवर आप ।
 मेल्यो धनुष मुकाम-मह, कट-पट^१ छोर कलाप ॥६६६
 भाग सुपनखां जमत^२ भय, गई लंकपत-ग्रेह ।
 खर दूखन दीनो खँवर, निसचर मरे निरेह ॥७००
 नर निसचर मारे निरख, प्रहरन ग्रहन पिनांक^३ ।
 श्रवन^४ काट नारी समुझ, निरभय काट्यो नाक ॥७०१
 दसकंधर^५ तेरी दई, कोट^६ दुहाई क्रूर ।
 येकहु नहि मानीं ऊनहि, गहै गुमान गरूर ॥७०२
 सुरपनखां को तिह समय, बूझी रावन बात ।
 आये वन में कौन ईह, असह करत उतपात ॥७०३

छंद भुजंगी श्यात

सुपनख सुनी रावन बात सारी अजोध्यापती कथ्य साँची उवारी ।
 वह वीर है दासरथ्यो^७ दुलारे, सुब हू जिहीं ताड़का काँ सँघारे ॥ ७०४
 ईखू^८ मार मारीचहू काँ ऊड़ायो, छुटं चंग ज्यौं वेग ताही चढायी ।
 अपाचो^९ दिसा आय छायो अजाँ ही, निहारै उदोची^{१०} दिसा नैन नाँही ॥ ७०५
 पिताकी^{११} धनुतोर कँ जीत पाई, वरांगी^{१२} जिहीं ज्यानकी कौं विवाही ।
 पिता पाय अज्ञा बनोवास पाये, ऊभं भ्रात नारी त्रहूँ संग आये ॥ ७०६
 प्रतज्ञा रिखीवृंद कौं या प्रचारी, सर्व मारहूँ भार भूमै सुरारी ।
 विहपा करी मोहि कौं राँम वीर, पुकारी खर-दूखनं पाय पीरं ॥ ७०७
 बड़े सो कड़े बँ लैन विचारा, सोई हूँ गये काल के ग्रास सारा ।
 सुपनखा विज्ञाती^{१३} कह्यो ताहि सेती अही चित्त ना कीजोयै चित एती ॥ ७०८
 लगी हीं सब ताहि साँ बँर लेहूँ, महाँवाहूँ जानी पती लंक में हूँ ।
 विहपा गहँ गेहूँ कौं ताहि बेरी घली हीय लंकैस चिता घनेरी ॥ ७०९
 कमे विदने^{१४} जोर कँ संकुकर^{१५}, बड़े वेगवारे जिहीं धुँन्न-यन^{१६} ।
 पती लंक की सिधु चाल्यो प्रतीरा^{१७}, प्रज्ञासो तहाँ चाय मारीच पीरा ॥ ७१०
 लखं बीन मारीच लंक-पती कौं जनाई कथा साँच की जान जीकी ।
 गार दूखन मार भूमै पायाए, जती-कप तौहूँ पती श्रीय जाये ॥ ७११

१ कटपट = कटपट । २ पतंग । ३ धनुष । ४ कान । ५ रावण ।

६ कोट = कोट । ७ दासरथ्यो = दासरथ्य के । ८ ईखू = खू । ९ अपाचो = दक्षिण ।

१० उदोची । ११ पिता । १२ सुरारी । १३ मानस्यता से । १४ मयवद = यव ।

१५ संकुकर । १६ धुँन्न-यन = धुँन्न-यन । १७ प्रतीरा ।

कहूँ मूल के बर जासां न कीजै, सु बीती कथा मोहि सेती सुनीजै ।
 वही बाँन के बेग मारै अछारचौ, सु पे आज लौ चित्त नाँही सँभारचौ ॥ ७१२
 सुनी राँवन बात मारीच सारी, अजै भीरुकं^१ भाव कौ तू सुरारी ।
 सु पे बीर कौ भाव ह्वै सावधानं हलै संग मेरी कहा लाभ हानं ॥ ७१३
 जबै राँवनं हीय सिद्धांत जाँन्यौ, तबै नीच मारीच हु संग ताँन्यौ ।
 कह्यौ लंक के राज ज्याँ व्याज^२ कीनी भये श्वन के बर्न कौ ऐन^३ भोनी ॥ ७१४
 पहुँच्यौ सोई राँम के धाम^४ पासै, प्रभा अंत सी क्रंत^५ माँही प्रकासै ।
 बिलोद्यौ तँही अट्टवी में बदेही, ऊचारी तहाँ राम साँ कथ्य ऐही ॥ ७१५
 ईही ऐन कौ मार के क्रंत आँनै, महाँबाहू मेरौ हीयौ साँच मानै ।
 सीया की सुनी बात राँम सनेही, चले चाँप लै बाँन लीने चुने ही ॥ ७१६
 जहाँ लछ्छनं राँम दीनी जताई, ईहाँ जातुधानं फिरै आतताई ।
 सीया ही प्रीया की जुतै सावधानी, रुखारी करौगे थिरा^६ है बिराँनी^७ ॥ ७१७
 चले अट्टवी कौ जयै रामचंद्रं कहूँ नाल^८ हेरै कहूँ रंघ्र किंद्र^९ ।
 अगँ सौँ अगँ हू भगँ जाय ऐनं, दगँ दाव नाँही जगँ बाँन देनं ॥ ७१८
 गये दूर लै अट्टवी कौ गहीरा धरी अंत कौ चाहि के जंतु धीरा ।
 अबै राम आगँ नही ऊबरूँगौ, मुगत्ती^{१०} मिलेगी सुमत्ती मरूँगौ ॥ ७१९
 धरे ध्यान जोगिंद्र रुद्राद ध्यावै, वही दौर के मोर के पिट्टु आवै ।
 लखूँ नैन साँ रूप स्याँम ललाँमाँ, धरे आँमना काँमना दिव्य धाँमा^{११} ॥ ७२०
 मती सोच मारीच नै पाँव मंडे, चठटे चिला चाप सी बाँन छंडे ।
 घल्यौ घात मारीच के गात गाढी, बिथा^{१२} प्राँन के हान की ताहि बाढी ॥ ७२१
 सुमत्रेय हा लछ्छनं स्याहिकारी^{१३}, हितू होय के भीर ऐहौ हमारी ।
 परे नीच माँरीच ऐसौ पुकारचौ, सबै काँम लकेस की ताहि सारचौ ॥ ७२२
 लग्यौ घाव साँचौ परचौ भूम लेटे, सोई राँम नै बंध कोनी समेट ।
 बहे^{१४} ऐन लै राँमहू धाँम बाँटी, केसे पिट्टु कौ निट्टु^{१५} भेले क्रकाटी^{१६} ॥ ७२३
 सुनी वाँन ताँही समै आँन सीता, भई सोक में मग्न बोली सभोता^{१७} ।
 सुमत्रेय मेरी सुनौ बात आँन, परचौ राँम के सकट आय प्राँन ॥ ७२४

१ कायरपन । २ बहाना, कपट । ३ एण = हरिण । ४ स्थान । ५ कृत्ति = चड़ी ।
 ६ स्थिरा = पृथ्वी । ७ दूसरे की । ८ नाले । ९ कन्दरा रंघ्र = गुफाछिद्र । १० मुक्ति
 ११ स्वर्ग, बँकुण्ठ । १२ व्यथा = पीड़ा । १३ सहायक । १४ चले । १५ नीठ,
 कठिनाई से । १६ गरदन । १७ भयसहित ।

असाता^१ पुकारे जबै नाथ ऐसे, करौ स्याहि^२नाहीं जबै भ्रात जकैसे ।
 सीया सासन^३ पाय सोमिन्न सोऊ, गयौ राम कौं जोवनै^४ सो अगेऊ ॥७२५
 पती-लंक कैं सीय कौं घाँम पाई, अकेली लखी ताहि समीप^५ आई ।
 कीयौ पन-की-साल^६ सौं हन^७ काजा, सोया राँम राँमा-लोर्य संग साजा ॥७२६
 मिल्यौ गिद्ध-राजा जटायू महाना. ठट्यौ जुद्ध लंकैस सौं बेर ठाना ।
 वये घाव पैंने घनै राँम-द्रोही, छनी पंख काटी जहाँ यं चछोही । ७२७
 गिरचौ भूम साँही जबै गिद्ध गाता, बह्यौ रथ्य काँ हाँक कैं सो बिख्याता ।
 बिलोके जहाँ बृंद साखा-बिलासी^८, रटै राँम को नाँम आँनंद-रासी ॥७२८
 सुन्यौ ध्वान^९ कौं आँन कैं कोस-सर्वा, ईहै दोन बाँनी पिछाँनी अगर्वा^{१०} ।
 द्रुतं ज्याँनकी अंसुक^{११} देख डारचौ, सोई लँ बनोका^{१२} भलै ही संभारचौ ॥७२९
 पती-लंक लंका गयो लँ पलाई, बिचै बाग कंकैल^{१३} छाया बसाई ।
 ईहाँ ऐँन काँ मारकै राँम आयै, नदी-तीर गोदावरी नीर न्हाए ॥७३०
 सपेखी तबै आय कैं पनसाला, बदे लछछनं बैन बाहू बिसाला ।
 सीया है कहाँ पै प्रीया प्राँन-प्यारी, दुरो^{१४} मैथलाधीस देखौ दुलारी ॥७३१
 सुमं त्रेय खोजी सबै पनसाला, बिलोकी नहीं सीय नंनाँ बिसाला ।
 सुके दंत वरत्रं रुकै हीय स्वासा, वहै नेत्र बारो न पावै बिसासा ॥७३२
 बढचौ राँम कैं हीयहू में बिखादं^{१५}, परी वज्र सी आय गाढी प्रमादं ।
 क्रपानाथ चाले जबै हेर-काजै^{१६} सबै काननं^{१७} थाँन-थाँनै समाजै ॥७३३
 गिरी-किंदरा^{१८} खाल नाली गहीरा, तरु अट्टवी कुंज ही ताल तीरा ।
 अपाची^{१९} दिसा चाल कैं जाय आगै लख्यौ गिद्ध-राजा परचौ घाय लागै ॥७३४
 जहाँ राँम पूँछचौ जथाँ-जोग जाही, करे अंग कौं भंग कौनै कसाई ।
 जटायू फ-ना राँम भाखी जथा सौं, महौं जुद्ध लंकैस कीनी म तासौं ॥७३५
 हरो ज्याँनकी लँ चलयौ ताहि हेरी, मती आतताई परचौ द्रष्ट मेरी ।
 करचौ जुद्ध तोहू सरचौ नाहि काजा, घरा मं परचौ तूट राजाधिराजा ॥७३६
 सुनी राम बाँनी ईहै गिद्ध सेती, रची घाव में पौँच कैं^{२०} ताहि रेती ।
 घरे सीस पं हाथ बोले अधीसा, खरौं भक्त मेरी तुही है खगीसा ॥७३७

१ दुखी । २ सहायता । ३ आज्ञा । ४ देखने, खोजने के लिये । ५ समीप्य = नजदीक ।
 ६ परांगाला = कुटी । ७ हरण । ८ वानर । ९ शब्द, ध्वनि । १० गर्वरहित ।
 ११ वस्त्र । १२ पराङ्कुटी । १३ अशोक वृक्ष । १४ छिप गई । १५ विषाद = दुःख ।
 १६ खोजने के लिये । १७ वन । १८ गिरिकन्दरा = पर्वतगुफा । १९ अवाची ।
 २० पीछ कर ।

लखावें तुम नोक सो दाँन लीजें, कछू कामना होय सो सिद्ध कीजें ।
 जटायू तहाँ येहु बोल्यौ जबाँनी, धरै ध्यान जोगिद्र बृह्माद ध्यानी ॥७३६
 वहै अंत कै तंत में नाम आबै, पस ब^१ जिहीं बास निर्बान^२ पाबै ।
 वहीं देह धारै खरे मोहि आगें, महाराज और कहा दाँन मागें ॥७३६
 निहारै तिहारौ ईहै रूपनांथा, सब रीत सां ह्वै चलयौ हूं सँनांथा ।
 तहाँ गिद्धराजा बहै देह त्यागी, सिषायौ परं धाम सभागी ॥७४०
 कीया बाह कीनी तहाँ गिद्ध केरी, ऊभै भ्रातहू जान कीनी अबेरी ।
 सीया की जहाँ जान पाई सबे ही, तहाँ तै चले राम आगें तबे ही ॥७४१
 करै हाथ लवे धसे सीस कंधा, कहूँ अट्टवी बीच भेटयौ कबंधा ।
 तिही मारकें बाँन मारयौ तहाँ हीं, मिल्यौ सदगती जाय तातें महाँ ही ॥७४२
 बड़े कानन^३ अग्र में राम बाटी^४, सीया सोज कै काज बाँधे सपाटी^५ ।
 मिल्यौ भिल्लनी आश्रमं बीच मागा, रही प्रेम भक्ती मही सानुरागा ॥७४३
 महाँ कंद-मूलं फलं मिष्ट मेवा; सु धारे सब भेट में श्रेष्ठ सेवा ।
 लये रीभूकें भोग लीने लगाई, भये अग्र जासौं जहाँ जुगम भाई ॥७४४
 दया पाय कै भिल्लनी बोध दीनौ परा-भक्ति कौ ताय पीयूख^६ पीनौ ।
 भई चित्त में मग्न जोगाग्न^७ भाही, द्रगं देखतै स्याम कै देह दाही ॥७४५
 जहाँ कानन में बड़े राम जातें, वतावें सुमत्रेय कौं ज्ञान-बातें ।
 परेह्यौ अगें एक कासार^८ पंपा. चमेली लता केतकी राय चंपा ॥७४६
 बिराजे जहाँ राम छाया बिलोके, ऊपायौ अनंद हीया में अनोखें ।
 कीयौ मंजनं रंजनं घोय काया^९, रजें कोट-कंदर्प-भा^{१०} राम-राया ॥७४७
 मुनंद्रं जहाँ रामचंद्रं मिलाई, प्रसन्न भये आय कै दर्स पाई ।
 तहाँ वृंदवृंदारका^{११} आय तैत, करे बंदना अर्थ-हू-बाद केत ॥७४८
 धृती^{१२} धारकें सो गये धाम-धामं, रहे जोय सीता गये अग्र रामं ।
 सँमीपं गये ता समं मूक सैलं, गहीरं घने दूढते घाट गैलं ॥७४९
 बसे ताहि कै सीस सुग्रीव बासा, खरे संग माँहीं भरें भीच^{१३} खासा ।
 दुहूँ बीर काँ आवते मग्न देखै, बड़ी चित्त में आय चिता बितेखै ॥७५०

१ प्रसाद । २ निर्वाण = मोक्ष । ३ जंगल । ४ वाट = मार्ग । ५ तेजी से ।
 ६ पीयूष = अमृत । ७ योगाग्नि । ८ तालाब, पम्पासरोवर । ९ शरीर । १० करोड़ों
 कामदेव की शोभा वाले । ११ देवता । १२ धृति = धैर्य, धीरज । १३ योद्धा ।

हनुमानकी दक्ष^१ सुग्रीव हेरं, निहारौ तिहीं जाय कै नीक नेर^२ ।
 मत्त बाल सेजे नहीं मारन कौं, धनुर्वान भूतानहूँ^३ धारनै को ॥७५१
 चलै औरहूँ सैल की मेल चेटी^४, सबै वीर कौं साथ लहौ समेटी ।
 हनुमान बोल्थी जोर हाथा, मिले राम सां जाय कै नाय माथा ॥७५२
 वृत्तंत^५ प्रकाश्यी हनुमान वीरा, सुनी कोन ही स्याम गौरं सरीरा ।
 जब राम बोले पती श्रौघ जाये, ऊभ^६ भूप अज्ञा बनोवास आये ॥७५३
 वदे राम है नाम जानौ बीसेरव^७ लघू नाम है लच्छन ताम लेखौ ।
 रही संग में सुंदरी इंदरा-सौ^८, अरण्यो फिरं ढूँढते हूँ ऊदासी ॥७५४
 सब बात बोली कही सो सुनी तै, प्रकासौ हमं बिप्र आयौ पुनी तै ।
 यिनोके ऊभ आत सौं प्रीत बाढी, गही राम के बनं की सनं गाढी ॥७५५
 रजो पाय वंदे कह्यौ राम-राई, सु पं दास तेरी बिचारौ सदाई ।
 हनुमान मेरी कहं नाम हेरी, कीयो संग अरण्य सुग्रीव केरी ॥७५६
 मिली चाहिके जाहि कीजं मिताई^९, सबे रावरे कीस हूँ है सहाई ।
 करेने सब लीजना सीय केरी महाराज सांची सुनी बात मेरी ॥७५७
 पिठानी कपी घात बिरांभ^{१०} पायो, कियो अंजनी-पूत हूँ को कहायो ।
 घटाणै कपी^{११} पीठ लंकं चलाई, भई नेट सुग्रीव सौं जुगम भाई ॥७५८
 ऊभे ओर सौं जोर प्रीती अनंता, महाराज सुग्रीव के होय मितानी ।
 सिनं अमन-साणो^{१२} करे मूर-घंदा, प्रचारयो हनुमान ऐसी प्रबंधा ॥७५९
 कह्यौ राम कौं मित जानै कपीसा, अहो बात मेरी सुनी श्रौघ-ईसा ।
 मिटै नेवना^{१३} जानकीहूँ मिलेगी, घनी आसरा-अंग घातं चलंगी ॥७६०
 तयो मोह कौं होय रहौ नचीता^{१४}, समाचार मोसौं सुनी येह सीता ।
 ईके सेर छेडे ईरीं अट ऊढे, सुनी राम नामं सुनी जान मुटं ॥७६१
 निहारयो रडे बंजरौदां निराला, पडे राम यानी गिरा जान बाला^{१५} ।
 सोम मयम में जान हो मांग मंका, सोई जान दोलमन^{१६} लीजे निगंका ॥७६२
 इत देखयो नार में पौर दारयो, मोई विदवा में परयो है सौंवारयो ।
 अतिश्रौघ आतं सुनी माय दुनी, तिरौं की मयां हे मगायो उदरौ ॥७६३

१ कर्ण । २ सुग्रीव । ३ बालक । ४ कर्ण । ५ वृत्तंत । ६ उभय = दोनों

७ हीरोवत कपी । ८ इन्द्राणी । ९ मित्राण । १० अश्रुण । ११ कपी = कपी । १२ मित्र ।

१३ अतिश्रौघ । १४ मोह । १५ बाल । १६ अश्रुण । १७ अश्रुण, अश्रुण ।

१८ कपी । १९ अश्रुण । २० अश्रुण ।

जबै आँन सुग्रीव नै चीर भीनौ, दया-सिधु के हाथ में ताहि दीनौ ।
 लयौ राँम नै ताहि छातो लगाई, भरे नीर नैना लखे जुगम भाई ॥७६४
 दसा देख सुग्रीव नै बोध दीनौ, पती-श्रीघ का सेव^१ काजै प्रवीनौ^२ ।
 दसही दिसा भेजहूँ देखबे कौं, अनूप बली दूत है एक-एकौं, ॥७६५
 घरा^३ श्वर्ग पालाल के धाम-धामं, अनेकं लखै अट्टवी औ अरामं^४ ।
 करे सोधना^५ आय मोकी कहैगे, बली फौज लैकं तहीं कां बहैगे ॥७६६
 पदं पंकज रावरे ही पसावा, अरी^६ जीत हाँ दाव-धाव ऊपावा ।
 हूई एह मेरी गती हौनहारी, रहै बाल भ्राता हमारौ खरारी ॥७६७
 ऊमै भ्रात की देह द्वै प्राँन एकौं, बढी दीह पै दीह^७ प्रीती बिसेकौ ।
 ईकं बेर के दुंदभी देत आयी, जिहीं बाल^८ कौं अर्ध-रात्रो जगायो ॥७६८
 कपी बाल मोसौं भुजा जुद्ध कीजे, पिछाँनू बली कौं होयौ सो पतीजे ।
 महाँबाहू ऊठ्यौ गयो संग में ही, तहां तै भग्यौ बाल कौं देखत ही ॥७६९
 घस्यौ दुंदभी किदरा हू घरा कै, तिहीं पिटु कौं बाल लाग्यो तराकै ।
 महाँबाहू जान्यौ हित् अहत-मोकै, रह्यौ द्वार ठाढौ जहाँ घाट रोक ॥७७०
 ईकं पक्ष^९ में दुंदभी मार ऐहौ, जबै भ्रात दौनू पुरी संग जैहौ ।
 ईती श्रीघ कौ होय जो कोय अता, मरचौ बाल कौं जान लेहौ सुमिता ॥७७१
 गयो बाल ठाढौ रह्यौ मैं गली पै, बितै मास कहू जित्यौ ना बली पै ।
 वंहीं द्वार में रक्त की धार आई, भली भाँत जान्यौ मरचौ मोर भाई ॥७७२
 सिला द्वार दैकं चल्यौ मैं सभिता, रही राज-हीनी^{१०} पुरी स्याम-रीता^{११} ।
 मिले दक्ष मंत्री दयौ राज मोही, द्रुतं बाल आयौ भयो भ्रात-द्रोही ॥७७३
 सबे लूट लीनी मता नार संगी, भग्यौ द्वार मैं हू गई बुद्ध-भंगी ।
 ईहै आप के ताप बाली न आवै, दुरचौ मैं रहूँ सैल पै बेर दाबै ॥७७४
 कह्यौ राँम बाली भयो आप कैसै, जथा-जोग भाखौ लगी नैन जँदै ।
 कही बात सुग्रीवहूँ राँम-काजा, सबे ही तहां कीस^{१२} ठे समाँजा ॥७७५

१ सेवा । २ प्रवीण = चतुर । ३ पृथ्वी । ४ आराम = बाग । ५ शोध = खोज ।

६ अरि = शत्रु । ७ दिनों-दिन । ८ बाली । ९ पखवाड़ा, पन्द्रह दिन । १० राजा-
 से रहित । ११ स्वामिरिक्ता = स्वामी से रहित । १२ वानर ।

बली दंडुभी देत वारा न पारा^१, पती कीस बाली नियुद्धं प्रचारा ।
 जुरे बीर दोऊ चतुर्जाम^२ बीते, जिही तै कपी बालहू जुद्ध जीते ॥७७६
 पद्धारथौ ईहीं सैल पै भू पटक्कौ, जिहीं मुष्टका मार सौं देत जक्कौ^३ ।
 सुनीं की कुटी सैल जाही बभारा, घसी ताहि में आय अग्नेय^४-धारा ॥७७७
 सुनींसा गये अंग के संजने^५ कूँ, भले नीर सौं म्लानता^६ भंजने कूँ ।
 सुनदं सुरे^७ देख कै पर्नसाला, बढी आय कै क्रोध-ज्वाला बिसाला ॥७७८
 कह्यौ ता गिरी देखहै जो कपिद्रा, नसै छार^८ हूँकै बध दीर्घ-निद्रा^९ ।
 ईही भीत सौं बाल आवै न यापै, जुतै मंत्रि-बर्गा रह्यौ आय जापै ॥७७९
 सुन्यौ दुख्य सुग्रीव की रांम स्रानं, प्रतज्ञा करी तांम सारंगपांन^{१०} ।
 ईहीं बाल कौ मारहूँ बांन येकै, बचै रुद्र की सन नांहीं विसैकै ॥७८०
 कही रांम सां तांम सुग्रीव कथ्यं, सबे भांत सौं बाल जानौं समथ्यं ।
 ईहीं ताड़ है अद्ध-चंद्र-अकार^{११}, सोई बाल रोपे कहीं ले सु मारं ॥ ७८१
 बली एक ही बांन सां सप्त बेधै, खरो बीर सोऊ कपी बाल खेधै^{१२} ।
 महाबाहू श्रीरांम लै बांन मार्यौ, ईकै बेध सां-मूल^{१३} सातूँ ऊखार्यौ ॥७८२

दोहा

ईहां साहंस देख्यौ अतुल, निज भुज-बल रघुनाथ ।
 कीय अस्तुत सुग्रीव कपि, हरख जोर जुग हाथ ॥७८३
 बार-बार कर बीनती, करी अरज कपी-राज ।
 बाल बली कौ काल-बस^{१४} अब हम जान्यौ आज ॥७८४
 हुकम होय सो करहि हम, नांय गरीब-नवांज^{१५} ।
 बाल बली कौ होय बध, ऐसी करहु ईलाज^{१६} ॥७८५

छंद हरगीतका

पत कीस की सुन श्रान रघुपत धनुस बांनन कर धरे ।
 ऊरजश्व^{१७} धारन कीयै ऊर में सरन पंपा संचरे^{१८} ॥

१ न पारावार = अपरिमित । २ चतुर्जाम = चार प्रहर । ३ मरा । ४ आग्नेय = रक्तधारा । ५ मंजन = स्नान, शुद्धि । ६ मेल । ७ लोटे । ८ क्षार । ९ मृत्यु । १० शार्ंगपाणि = धनुर्धर, राम । ११ अद्धचंद्राकार । १२ मारे । १३ समूल = जड़सहित । १४ काल के वश में । १५ दीनबन्धु । १६ उपाय । १७ ऊर्जस्व = उत्साह प्रताप । १८ चले ।

सुग्रीव श्रीरघुबीर की सुन बोल बाल बकार कै ।
 ऊठ बाल आय अरघौ ईतै धुर धेख संगर^१ धार कै ॥७८६
 भिर परे रन की भूम में भट भूम-भूम भूषेट कै ।
 धमचक्र धक्कन धूम बाढी भ्रात हाथन भेट कै ।
 बल तिष्ठ कै सुग्रीव बाली मुष्ट मारी हीय-मही ।
 तज तुरत भागी खेत तह सुग्रीव पीरा नह सही ॥७८७
 ईक रूप रघुवर लखे ऊभयन भए बिस्मय-भाव^२ कै ।
 धनुं बाँन पाँन^३ धरे रहे घाल्यौ न रन में घाल कै ।
 सुग्रीव भागी चरन सरन देख रघुवर कर दया ।
 तिह पाँन परसत^४ बज्र सम-तन तुरत कीनों वह तया ॥७८८
 सुम-माल^५ कंठ सुकंठ^६ के पहिराय हित पहिचान कै ।
 परचाय कर रन तत्परा जीय मित्र अपनी जान कै ।
 सुग्रीव बाली भिरे संगर उभय भट^७ अकुलाय कै ।
 कट-कटत विकट सु दाव कर-कर लपट-भूषटन लाय कै ॥७८९
 पहिचान रघुवर परसपर बल सरस बाढत बाज कौ ।
 लं बिटप^८ श्रोत ही सर लगायो करन ताके काल कौ ।
 होय बीच लागत बिकल ह्वै धर गिरघौ बाली धूज कै ।
 पत अर्बध के लीय बरस कपिपत पर्भ मनसा पूज कै ॥७९०
 गहि मुक्त-पद बाली गयो परलोक-हित पहिचान कै ।
 प्रभू-दरस दै कर सरस पावन^९ जन निरंतर जान कै ।
 सुग्रीव कौ वीय राज सबही सहत तारा सुंदरी ।
 जुगराज^{१०} अंगद बाल-अंगज^{११} करघौ हित करना करी ॥७९१
 सब राज-मंत्रि-समांज सौं निज काज निरभय निब्वहै ।
 बरसात-कालही पाय रघुवर गिर प्रवर्खन^{१२} कौ गहै ।
 ईक फटक-मन^{१३} की गुहा अद्भुत नीक राची निर्जरा ।
 जुग भ्रात बंठे जाय जामह पाय सुख ख्व तत्परा ॥७९२

१ युद्ध । २ आश्चर्यभाव । ३ पाणि = हाथ । ४ स्पर्श करते ही । ५ पुष्पमाला ।
 ६ सुग्रीव । ७ योद्धा । ८ वृक्ष । ९ पवित्र । १० युवराज । ११ बाली के पुत्र ।
 १२ निर्वाह करता है । १३ स्फटिकमणि ।

प्रत संसृती रू पुराँन की वर वेद भेद विचार की ।
 बातें अनेकन विस्तरें छित^१ छत्रीया-धूम-चर^२ की ।
 लघु भ्रात ईक दिन लक्ष्मन कौं कही अर्नुभव की कथा ।
 वैदेह-नन्दनि^३ विरह वाहत जल तरंगनि बल जथा ॥७६३
 कंकई ऊर की काँमना भई सिद्ध सहज सुभाव सौं ।
 पितु मरन हम बँनवास पायौ पुन तिहीं परभाव सौं ।
 बिन ज्याँनकी नहि अवध बस है हौनहार सु होय है ।
 अह कर्म की गत परम अद्भुत धर्म सौं अध^४ धोय है ॥७६४
 निर्भाग^५ मनुँके बंस निर्मत^६ हुयौ नाँहिन होयगौ ।
 मम संग आये तुमहुँ लछमन प्रीत-बस सौं चित पगौ ।
 अबहुँ सिधावहु अवधपुर कौं विपत तज बनवास की ।
 चित हमहु लागी रहस चिंता तुमहु तन के त्रास की ॥७६५
 अब नहिन दीसत सुख उजागर वेदना-सागर विचै ।
 मन भयौ नवका^७ भँवर मेरी नाच पुतरी^८ नट रचै ।
 बस दुष्ट राँवन रहि विदेही विपत लहि विस्तार कौं ।
 पति-सरित^९ बिच लंकापुरी पावै सु किह बिच पारकौं ॥७६६
 श्रोराँम की कर बात श्रवनन बोल लछमन बीर कैं ।
 विपता कहा तुम मति विपश्चत^{१०} धरहु हीय-मह धोर कैं ।
 भय-चकत^{११} ह्वै तुम बचन भाखत है प्रगल्भ^{१२} हमेस सौं ।
 विद्वेस^{१३} अपनौ सबही बिध सौं लहैगे लंकेस सौं ॥७६७
 बस सोक हुय कहुँ अल्पबुद्धी विपत करहि बिलाप कैं ।
 देखी न यैसी देखहै अनधीरता मन आप कैं ।
 पितु-मरन बिहरन बिपन पुन जिम सीया-हरन सु जाँतियै ।
 ईह काल की गत करन-अकरन-ऊद्धरन अर्नुमाँनीयै ७६८
 जिम जोग मनहु विजोग संजुत भोग रोगहु गर्भता ।
 ईक एक पाछै होय अबस ही सुखहु दुखहु सर्वथा ।

१ क्षिति = पृथ्वी । २ क्षत्रिय-धर्माचरण । ३ वैदेह-नन्दिनी जनकपुत्री सीता । ४ पाप
 ५ भाग्यहीन । ६ निर्मित = रचित । ७ नौका । ८ पुत्तली । ९ सरित्पति =
 सागर । १० विपश्चित् = विद्वान् । ११ भयचकित = भयकातर । १२ तीक्ष्ण ।
 १३ = विद्वेष = वैर । १४ विपिन = वन ।

जिह रीत बिछुरी जाँनकी पुन मिलहि अवसर पायकै ।
 नहि सोक कीजै नाथ निर्भय बिपत चित्त बसायकै ॥७६६
 बरसात बीतत दिसा विदसन^१ करहि सुध कपिराजहू ।
 हँनमंत अंगद बीर हरबल सकल जोर समाँजहू ।
 चढ़ जायगे रन खेत चत्वर^२ घने सत्वर^३ धेर कै ।
 पति-लंक कौ कर-जेर^४ प्रहरन^५ बिढ परै जिह बेर कै ॥८००
 अथवाँ क भरथहु आत अपनौ अवधपुर सौँ आन कै ।
 मिथला-नरेस मिलाय कै मिल धेर दल घमसाँन कै ।
 जु र लंक कौ चढ़ जाँयगे जुत चँमू^६ जोर जनाय कै ।
 कछु सोच नाँहि कपाल कीजै अधिक ऊर अकुलायकै ॥८०१
 ईष्वाक कुल^७ की रीत ना ईह पेख लेहु परंपरा ।
 रघुराज प्रपितामह रह्यौ धर छत्र भुजबल सहि धरा ॥
 चढ़ आप ही रथ बढ चले दस दिसन देस-बिदेस कै ।
 वसुमती^८ विजय बसायकै खल बिपुल दल-बल खेसकै ॥८०२
 प्रभू-चरन के परतान सौँ हम सरन रहत हमेस ही ।
 सुर-असुर-जेता समुभोय कछु आप मुख जात न कही ।
 पति लंक रावन कौ प्रचारहू जुद्ध करहै जायकै ।
 भुज आपनै ही भरोस सौँ सीय आँनहै सरसायकै ॥८०३
 बस काल की रात बज्रधर^९ नालीक^{१०} छिप रहे नाल में ।
 पद लह्यौ सुरपति नहुक^{११} नरपति कंत्रमी^{१२} बस काल में ।
 पुन आप दृज सौँ पतित ह्वै धर परचौ अहमति धार कै ।
 पद लह्यौ फिर प्राचीनबरही^{१३} काल पाय करार कै ॥८०४
 कहुँ काल की रात कर्म सौँ बिपता लही रघुबीरजू ।
 सामर्थ्य काँ कहा सोक है ऊर तजहु पीर अवीरजू ।
 सोमित्र बतीयाँ सुनत हीँ रघुबीर छतीयाँ सीयरई^{१४} ।
 ह्वै गई ताही बेर हेरत जाँन बंधव रन-जई^{१५} ॥८०५

१. विदिशा । २. आंगन । ३. शीघ्र । ४. नीचा दिखाकर । ५. आयुध. युद्ध ।
 ६. सेना । ७. इक्ष्वाकुकुल । ८. पृथ्वी । ९. इन्द्र । १०. कमल । ११. नहुषराजा ।
 १२. कृत्रिम = वनावटी, अवास्तविक । १३. प्राचीनबाँहि = इन्द्र । १४. शीतल हुई ।
 १५. रणजयी ।

वर मुनी नारद बुध बिसारद इहीं अवसर आयकें ।
 दहु भ्रात साथहीं दरस दीय नभ-पंथ^१ सौ नीयराय कें ।
 कर जोर प्रभू बंदन करी पूजा सरी हीय प्रेम सौं ।
 घट^२ भयी भ्रान्त तिह घरी निज रीत प्रीत सुनेम सौं ॥८०६॥
 दिव भ्रात अरु मुनिराज बँठे परम हीय सुख पायकें ।
 ईतीहास नाना रीत अद्भुत सुमृत-नय^३ सरसाय कें ।
 वच कहै रघुवर देव ब्रह्मा आय हम अमरावती ।
 किय हरन राँवन दुष्ट कहँ संग पंचवटि सीता सती ॥८०७॥
 सब बिध उदंत जहाँ मुनी ईह जाँत आये आपहू ।
 अबलोक^४ विपता बेर ईह करीयै न सोच कदापहू ।
 ईक कथा फीजै श्रवन ईह जाँतकी पूरब-जनम की ।
 मुनि-कन्यका तप करत बन में ताहि तीव्र करने तकी^५ ॥८०८॥
 कर हेत तिह राँवन कह्यौ कन्या न मानी तिह कही ।
 भुज आप बल-अभिमान सौं गन अबल-जात^६ तहीं गही ।
 कन्या सु बोली कोप कें उतपत्त ह्वै है मघ ईला ।
 तब नास-हित लँजाहु तुम कहँ हमहुँ चलहै जुत कला^७ ॥८०९॥
 ईह अस पध्मा^{१०} अवतरी पन आपही परभाव सौं ।
 ले गयो ताकों लंकपत निज नास-हित निरबाह सौं ।
 अज ईस नाथ अनाँद आपही अरज देवन अनुसरी ।
 महाराज राँवन मारने अवतार लीनो हित अरी^{११} ॥८१०॥
 सोई ईश्वरी सीता सती अज ईस आप आनाँद के ।
 अरु वेद च्यारहू ऊद्धरन मही मंडता मरजाव के ।
 कर आतताई लंकपत को मारहौ रन खेत में ।
 कछु अरथ शाहत जो कीयो है सब घोरज हेत में ॥८११॥
 पतिवृत धारै सीया परबस रटत राँमही राँम कें ।
 घर घ्याँन राँमही चरन घ्यावत बसत संग ही बाँम कें ।

१ आशु-मानं । २ शरीर । ३ दोनों । ४ स्मृति-जाति । ५ बेलकर । ६ कदापि = कभी ।
 ७ दुष्टि ने देखा । ८ अयत-जाति = की जाति । ९ इला = पृथ्वी । १० पद्मा =
 यमी । ११ अरि = शत्रु ।

पय कर्महंभा^१ पान कर निरवाह अपने नेम कौं ।
 सोई इंद्र पठवत है सदाँ पन^२ आप गन निज प्रेम कौं ॥८१२
 हम निजर--देखी कहत है ईह रांम निश्चय राखीयै ।
 कुल-नास रांवन कौ करन ऊर समुझ रन अभिलाखीयै ।
 ताको ऊपाय करै तथा जिह जथाँ-जोगही जानीयै ।
 अब मास अश्विन^३ आयगौ बृत नउँ-रात्र^४ विधाँनीयै ॥८१३
 विध पूर्व रीत बिचार कै करनीय काज करायहूँ ।
 विध^५ बिस्तु हर जिह जिस्तु^६ विध सौं जांमदग्न जुतें जही ।
 श्रीअंबका के हेत सुमरन कीयौ कौंसक-मुन कही ॥८१४
 सुन रांम नारद सीख कौं विध-जुक्त पूंछी बात कौं ।
 नारद कह्यौ सुविचार निज भगवती-वृत जुग भ्रात कौं ।
 आराधना कीय सक्ती-आद्या अष्टमी निस आय कै ।
 चढ सिध ऊपर चंडका बर लेहु कही बतराय कै ॥८१५
 जग-ईस रूप अनाद जलसय^७ आय रघुबर अवतरे ।
 लीय सेषह अवतार लछमन बिपन-लीला बिस्तरे ।
 मुरजाद^८ च्यारहु वेद -मंडन खल-बिहंडन खेत में ।
 अरु देव सब कपि अवतरे रिपु-वंश मेलहि रेत में । ८१६
 बाराह कछ्छ रु मछ्छ बांमन बार केऊ नर-हर^९ बने ।
 हरनंख^{१०} हंता हरन कस्यप गहे दानव अनगने ।
 केऊ बार भक्त सहाय कोनी अबनी-भार उतारने ।
 अब ग्रेह दसरथ अवतरे महाराज रांवन मारने ॥८१७
 चढ जाहु लक निसंक चत्वर धंख रन की धारियै ।
 संधार खल सीय संग लै प्रभू फेर अवध पधारीयै ।
 बरदान दे रघुबीर कौं सुस्थान देवी संचरी ।
 ऊपदेस नारद पाय कै ईह अवध-पत मारे अरी ॥८१८

दोहा

लघु-बंधव सिद्धांत लख, नारद सीख निहार ।

बर देवी रघुबीर लै तज्यौ सोक तिह बार ॥८१९

१ कामधेनु । २ प्रण । ३ आश्विन = असोज । ४ नवरात्र । ५ विधि = ब्रह्मा ।

६ जिष्णु = इन्द्र । ७ जलशायी = नारायण । ८ मर्यादा । ९ वृत्तिह । १० हिरण्याक्ष

लखन सीया नहि सुध लई, बरखा गई बिहाय^१ ।
 कपि-पत केंऊ बातें कही, वही बधू रै बाय ॥८२०
 प्रथम जाहु सुग्रीवपह, बात कही सुबिवेक ।
 येते पै नहीं आयहै, औरै करहु ऊपाय ॥८२१
 पवन-सुतन सुग्रीव प्रत, बात कही सुबिवेक ।
 मेघागम^२ बीती समय, बरती सरद^३ बिसेख ॥८२२
 बाल हन्यौ ईक बान सौ, जैसे संमृथ ईस ।
 तोहि भरोसे रहे तेऊ, गहवर^४ सीस^५ गिरीस ॥८२३
 कछु विलंब नहि कीजीयै, काज राम कपिराज ।
 मंत्र बिचारहु सकल मिल, ईह अवसर है आज ॥८२४
 बोले हनमत सौं बिहँस, समय देख सुग्रीव ।
 सरस धिक्रीया^६ बिसय-सुख^७, जाहि लुभायौ जीव ॥८२५
 भूले रघुवर भाव कौं, रहे ग्रेह सुख राच ।
 पवन-सुतन हम कीयेऊ पन, सो तुम करहु साच ॥८२६
 दूत भेज दिस-वि-दस कौं, बंदर लेहु बुलाय ।
 सैल समंदर बिपन सौं, आवहिगे अकुलाय ॥८२७
 सुन अंगद बोल्यौ संभुक्त, दक्ष समय-गत देख ।
 औरन को नहि कांम ईह, बिन हनमत बिसेख ॥८२८

छंदा मुक्तादाम

सुने जुगराज के बायक श्रान, हल्यौ^८ कपि लेवन कौं हनुमान ।
 गयो सोई पूरव को लहि गल^९, सब बन किंदर बासीय सैल ॥८२९
 मिल्यौ गव जाय जहाँ हनुमत, बड़े दल संग लीयै चलबंत ।
 कही हनुमान सुनी कथ श्रान, प्रचारीय ताहीय वार प्रयांन ॥८३०
 पठाय कै ताहि चल्यौ नभ-पंथ, समै तिहु राघव की निज संत ।
 गयो गिर रोहिन है गमगीर, वसैं जहाँ दुर्वरहु कपि वीर ॥८३१
 कही रघुवीर सुग्रीव की कथ्य, सब भट लें चले वीर समथ्य ।
 चल्यौ पदती बन कौं कर चाहि, मिल्यौ गज जाय तही पल मांहि ॥८३२

१ सीतलई । २ वर्षा ऋतु । ३ शरद ऋतु । ४ गहवर । ५ शीर्ष = शिर, शिखर ॥
 ६ विभ्रिजा = विष्णु । ७ नौल-विनास । ८ चला । ९ रागना ।

हकार कैं बीर कही हँनुमाँन, सुप्रींव कौं भीर परी सुसथाँन ।
 मुलाईय बंदर लैं ईह बेर, हले तुम जाबहु पाबहु हेर ॥८३३
 चलयौ गज फौज लीयै कपि चंड, मचक्कीय सेस हल्यौ बृहमंड^१ ।
 गही पब-कंकटहू वृज गैल, सभारत बीच घने बन सैल ॥८३४
 बली सत पाठर सौं बल बंड, भिले संग केक मिले कपि-भुंड ।
 बिदा कर ताहि चलयौ तिह बार, बिचच्छन राम को काँम विचार ॥८३५
 चलयौ सुत-पाँन-कौ^३पाँन की चाल, निरखीय पब्वय^४धुंधर नाल ।
 मिल्यौ कपि जाय सिखंडीय मित्त, तहीं समुभाय कह्यौ बरतंत ॥८३६
 कराय कैं कूच चलयौ तिह केर, हल्यौ मग अंजनी पब्वय हेर ।
 मिल्यौ तहां चाहि कैं जाय कुमंद, ऊचारीय कथ्य बली-मुख-इंद^५ ॥८३७
 चलयौ दल लैं संग बीर चछोह, किलक्कत रावन पै कर कोह^६ ।
 बढ्यौ हनुमंत जबै बरबंड, पहुँचिय नीलगिरी परचंड ॥८३८
 कही सब कथ्य कसाँनु-कुमार^७, बली-मुख नील कौं ताम बकार ।
 गरज्जत बीर चलयौ कर गाँन, हरखत^८ होय बढ्यौ हनुमाँन ॥८३९
 मिल्यौ अपरादिस^९ जाय मुकाँम, गिरी गिर कीस चले गुन-ग्राम ।
 ऊठे कपि बासीय के अरबदद^{१०}, सबै रघुवीर करै-जय सद्^{११} ॥८४०
 गयो हनुमंत गिरी गिरनार, पनंस कौं कोन बिदा परचार ।
 सही दिस तैं चल ऊत्तर और, जबै हनुमंत चलयौ बरजोर ॥८४१
 धरचौ चित बद्दीयनाथ कौ धाँम, लख्यौ गंध-मादन अद्र ललाँम ।
 गवाक्षहू और कीयो गव गौन, हकीकत काँन सुने हनुमाँन ॥८४२
 बिलोकीय अंजनि पब्वय बास, जुहारिय ताराय बंधव जास ।
 सुप्रींव की कथ्य सुनंत सुखैन, सबै भट बोल लीयै सज सैन ॥८४३
 चहै सोई राम के काँम कौं चित, हल्यौ कनकाचल कौं हनुमंत ।
 लंगूलन^{१२} लैं संग केसरीनंद, गहै चिब^{१३}सोवृँन^{१४}मान गयंद^{१५} ॥८४४
 करोरन ऊठ चले अकुलाय, बढे तन पोरुख बीर बलाय ।
 घने बन पब्वय लंघत घट, बढ्यौ किवलास^{१६}की मारुत^{१७} बाट ॥८४५

१ ब्रह्माण्ड । २ हनुमान् । ३ पवनसुत हनुमान् । ४ पर्वत । ५ कपिराज । ६ क्रोध
 ७ कृशानुकुमार = अग्निपुत्र, नील । ८ हर्षित । ९ पश्चिमदिशा । १० अर्बुद = आवू
 ११ जयशब्द । १२ लंगूल = लंगूर । १३ छवि = शोभा । १४ सौवर्ण, सौना ।
 १५ गजेन्द्र = हाथी । १६ कैलाश । १७ मारुति = हनुमान् ।

पुलन्द सौं बात कही पहिचान, बिजै संग भ्रात लयौ बलवान ।
 सुग्रीव सौं राँम की जान सनेह, चलयौ निज धाँमही सौं कर छेह ॥८४६
 तवै मयनागिर^१ की हनमंत, पयानय^२ कीन गहै नभ-पंथ ।
 मिल्यौ कपि अंडक साँ हँनुमान, विदा कर अग्र गयौ बलवान ॥८४७
 जहाँ जल-बालक^३ ऊपर जाय, सुकंठहू राँम की बात सुनाय ।
 विदा कीय ताहिय बेर बसंत, ऊसंडीय मर्कट^४ संग अनंत ॥८४८
 विजै-गिर ऊपर साखत बीर, मिल्यौ दुरमुख^५ सौं ह्वै हमगीर ।
 कही कपिराज सुनी सोई कथ्य, सँभारीय पौनप गौंन समथ्य ॥८४९
 विवेक कौं केसरिनंद विचार, पहुँचीय कस्यप सीस पहार ।
 मयंदही बंदर सौं कर मंत, तिही ऊठ चालेऊ बीर तुरंत ॥८५०
 गयै गज सग मयद गयंद, निहार कै कारज श्रौध-नरिंद ।
 हल्यौ पुर कासीय कौं हँनुमान, मिल्यौ सोई रिच्छपती जँमुवान^६ ॥८५१
 सुकठ की पत्र दयी सरसाय, चलयौ सोई सासन^७ सीस चढाय ।
 अनेकन भाल^८ मिले संग और, चले सीई सादर खादर छोर ॥८५२
 निसारन^९ देखकै भल्लुक-नाह, ईतै हनुमंत चलयौ श्रवगाह ।
 गयौ धवला-गिर पै कर गाँन, मिल्यौ कपि दुग्ध सौं ह्वै मिजमान ॥८५३
 विदा कीय ताहीय कौं बतराय, ऊदै-गिर जाय चढची अकुलाय ।
 कही कपि जायकै कूख कुमंद, सभौ दर कूच सु जुद्ध समध ॥८५४
 सुकंठ के मित भये घँनस्याम^{१०}, रघूपति जाहि की नाम है राँम ।
 पिता किहु कारन दीन पठाय, ईहाँ वन-वास रहे सोऊ आय ॥८५५
 सीया अत रूपवती तीय संग, पती-गढ-लक सुन्यौ परसंग^{११} ।
 अकेलीय देख हरी तिह आय, जिही फिर खोजहिगे सब जाय ॥८५६
 सुग्रीव की मित्र करची सुविचार, हन्यौ तिह वैरिय बाल हकार ।
 रहे गिर छाया प्रवर्धन राँम, करै मिल कै कपि ताहो की काम ॥८५७
 गये सब बंदरहू कर गाँन, घने दल मेल कीयै धमसान ।
 हकीकत जाहि सुनी हनमंत, चले सब वानरहू कर चित ॥८५८

१ मयनागिरि । २ प्रयाण = प्रस्थान । ३ विन्ध्याचल । ४ वानर । ५ दुर्मुख ।
 ६ जामवन्त । ७ सासा । ८ मातृ, रौद्र । ९ निस्तारन = प्रस्थान । १० राम ।
 ११ प्रसङ्ग ।

सजे तर आयुध मूसल सैल, गरज्जत सोय गये लहि गैल ।
 पहुँचिय आय सुप्रीव के पास, जुते हनुमंत जुहारीय जास ॥८५६
 कीयौ ईम राँम कौ काँम कपीस, किते दल लाय बुलाय कै कीस ।
 पराकम पौन-के-पूत कौ पेख, अचंभत होय सब अवरेख ॥८६०

दोहा

ईह अवसर आये ईहाँ, राँमानुज^१ कर रोस ।
 जुथप^२ जुथ मिले जिते, सबन नमाँये सीस ॥८६१
 कपि देख्यौ चहु दिस कटक^३, अगनत नैन अनंत ।
 राजा अरु जुगराज की, मँहमाँ सुन हँनमंत ॥८६२
 साँत भई ऊर संमुभकै, राँमानुज की रोस ।
 अंगद कौँ कर अग्र ईत, परसे^४ पाय कपीस ॥८६३
 पुन तारा परसे पगन, लगन काँम सीय लेख ।
 मगन भये लछमन समुभ, द्रगन कटक कपि देख ॥८६४
 कोऊ अठारा पदंम कपि, संख्या कहत सयान ।
 कोऊ कहत अगनत कटक, हाजर^५ कीय हँनुमान ॥८६५

छंद हरगीतका

सोमित्र देखेऊ कटक सब चहुँ ओर किसकंधा^६ छयी ।
 अगनत जुथप-जुथ आये लेख परकर ऊर लयी ।
 बहुभेख-भेखन के बनोका^७ अधक येकहु येक के ।
 कोऊ सुकल-बरन^८ रुहरन^९ करबुर^{१०} रुचर^{११} स्याँमल रेख के ॥८६६
 पुन सैत रंजन पिजरु^{१२} कपि येत धुँमर^{१३} काय के ।
 सिल मुसल तरवर लीयें साखा बेग चालत बाय^{१४} के ।
 कर जोर लछमन सौँ कही जुगराज अवसर जान कै ।
 दीय आप द्रग^{१५} अनूप दरसन परम हेत पिछाँन कै ॥८६७
 अभलाख^{१६} सब कै दरस की ऊर राँम साँसल रंग कै ।
 रहि रावरे बस नैन-राजिव^{१७} और करहु ऊमग कै ।

१ लक्ष्मण । २ युथपति । ३ सेना । ४ स्पर्श किये, छूए । ५ उपस्थित । ६ किष्किन्धा ।
 ७ वानर । ८ शुभलवर्ण । ९ हिरण्य, सोने । १० कर्बुर = कवरे, विचित्र । ११ रुचिर
 = सुन्दर । १२ पिअर = पीले । १३ धूम्र । १४ वायु । १५ दुर्गनगर । १६ अमिलाषा =
 इच्छा । १७ नयनराजीव = नेत्रकमल ।

सुन लखन वांती समुझ के कपिराज साँ यैसी कही ।
 सब जुथ्य-जुथ्यप संग लै आगै सो चालीयै आप ही ॥८६८
 सोमित्र वांती ईह सुनी सुग्रीवहं सरसाय कै ।
 कपिराज औ जुगराज परकर^१ सैन-जुत सुख पाय कै ।
 सब लहै लछमन संग सुभटन गिर प्रवषन कौ गये ।
 कोय दरस रघुवर-चरन-कमलन ठौर-ठौरन कपि ठये ॥८६९
 कर जोर लघु भ्राता कहीं राजीव-लोचन राम कौं ।
 कपि-पत बुलाये कँऊ कपि कौं करन अपनै काँम कौं ।
 कपिराज सौं पूछी कथा कपिराज कहि हँनमंत कौं ।
 निज जुथ्य-जुथ्यप नाम लै कहि देस धाँम दिगंत कौं ॥८७०
 परचंड पिंड अगाध पौरुष वपु^२ वयंड^३ विधान के ।
 भुज-दंड मंडत सुंड^४ सर भर चंड रुख चहरान के ।
 लै नाम परकर लारही हँनमंत कीनी हाजरी ।
 दसरथ्य-नंदन देख कै घन भयो आँनद तिह घरी ॥८७१
 सुग्रीव कौं कहि कै सखा^५ पुन प्रेम-द्रिष्ट पसाव कौं ।
 सीता कही सुध लैन को ईह करहु प्रथम ऊपाव कौं ।
 सुग्रीव सिर पर धरचौ सासन करी भासन ईह कथा ।
 गज दूत और गवाक्ष कौं जानै सुदक्षहि मति जथा ॥८७२
 प्रेरे सु द्वे दिस पूर्व कौं सो सहित सैन समाज कौं ।
 कपि चले जिह संग सप्त-कोटक करन-सीय सुध काज कौं ।
 अरु कपि सुखेन मयंद ऊत्तर चूने सत्वर चाहि कौं ।
 सुग्रीव कौ धर हुकम सिर पर अमित धार उछाह कौं ॥८७३
 ईक पदम संग अनीकनी^६ वनचर^७ विचक्षण की वही ।
 धर धूज धवकन सौं धुकी सकरुपक्क नागाधिप^८ सही ।
 पुन कपि बसत पठाय पछम येक पदम अनीकनी ।
 सासन दयो कपिराज कौं सुन ध्यान धर कवसल-धनी^९ ॥८७४

१ परिकर=समुदाय । २ वपु=शरीर । ३ हाथी । ४ शुण्डा=सूंड । ५ मित्र ।
 ६ सात करोड़ । ७ सेना । ८ वानर । ९ शेषनाग । १० कौशल्यापुत्र राम ।

कषि नील अंगद वज्र-कंकट जाँमवत सु जाँन कौं ।
 बोलाय कै कपिराज बोलेऊ बिमल तिह प्रत बाँन^१ कौं ।
 मैथली हेर निहोर मोरहु काँम है श्रीराम कौ ।
 ऊद्धार कारन ऊभय ओरन धाँम अरु परधाँम कौं ॥८७५
 तन और मन सौं होय तत्पर करहु याही काज कौं ।
 ईक मास की है अवध^२ यामह सबही कपन-समाँज कौं ।
 सब जाहुं देखैँन दिसा समिलत^३ धाँम रावन धाय कै ।
 जहाँ देख द्रगनन होय जैसी ईहा कहीयै आय कै ॥८७६
 सुग्रीव कौ सासन सुन्यौ ऊर राम-गुन अवगाह कै ।
 परसे जुगल-पद पाँन सौं ऊर धार सरस ऊछाह कै ।
 कर मुद्रका^४ दीय वज्र-कंकट लयेऊ सीस नमाय कै ।
 ह्वै बिदा चाले होय हरबल^५ अधिक ऊर अकुलाय कै ॥८७७
 मिल कीस बीस करोर सम्मत गहन गहबर गिर गुहा ।
 बढ चले खोजत बन रु ऊपवन भाँत-भाँतन भुअरुहा^६ ।
 ईक बज्रदंड प्रचंड आसर^७ यहां खंडही मे मिल्यौं- ।
 भुजदंड अंगद भेंट भय दीय फेट दुष्टही दलमल्यौ ॥८७८
 केऊ लखत मिदर^८ किदरा पहुँचे समंदर पास कौं ।
 बिन-पंख ग्रीध जटायु बंधव ताहि लख भय त्रास कौं ।
 पुन परसपर पहिचाँन ह्वै कषि जाँन रघुवर-किकरा^९ ।
 बिसवास दीय संपात बहुबिध कपिन ऊपदेसही करा ॥८७९
 बिच रहत सोय असोक उपवन मोहि दीसत मैथली ।
 तुम जाहु गढ लका तही बरबीर धीर महाँबलो ।
 परताप रघुवर सरत-पत कौं लाँघ सत-जोजन^{१०} लहौं ।
 सीय-दरस सौं सुख पायहौ सु विचार कर जाँनहु सही ॥८८०
 कहि कथा खग^{११} रघुबीर की सहि-गहत होय सिधायगौ ।
 कर दरस श्रीरघुबीर के पुन परम पद कौं पायगौ ।

१ वाणी । २ अवधि = समय । ३ सम्मिलित । ४ दुद्रिका = अंगूठी । ५ अग्रणी ।
 ६ भूरुह = वृक्ष । ७ असुर = राक्षस । ८ मारडाला । ९ मन्दिर । १० किङ्कर =
 सेवक, अनुचर । ११ शतयोजन = चार सौ कोस । १२ पक्षी ।

वारीस^१ के तट गये कपिवर गहर लहर गंभीर कै ।
 डिंडीर^२ अरु बुदबुद^३ दिखावत भूमर जल-कन भीर कै ॥८८१
 तिर रहे कुंभी अरु तिमगल^४ कछुछ मछुछ भयंकरा ।
 जुगराज मिल पहुँचे जहां कपिवीर रघुवर-किंकरा ।
 गज और नील गवाक्षहू नल पनस दधिमुख सवनहीं ।
 पुन कहि पराक्रम परसपर जुत जाँमवंत रहे जिहीं ॥ ८८२
 साँमर्थ लंघन नहि समंदर और बंदर की ईहाँ ।
 हँनमत दिन नहि काज होवँह जोर दल बोले जहां ।
 सिद्धांत सब कौ श्रवन सुन जब रिच्छुछपत^५ जुगराजहू^६ ।
 हँनमंत सौं बोले हरख कपि सरहु रघुवर काजहू ॥८८३
 पय अंजनी गून करहु परगट सुत-प्रभंजन^७ ईह समै ।
 मन वेग ज्यूं तन वेग मंडत लाँघ जैहौं पलक में ।
 विरदाय^८ बोले जहाँ बनौका श्रवन घुन हनमंत सुनी ।
 रस रौद्र अरु तन वीर रस की चंडता^९ बढ चौगुनी ॥८८४
 कोसीदता^{१०} मन छेह^{११} कीनौ अरत^{१२}-गरत हीयै अटी ।
 दृढ भाव सौं सीय करन दरसन चित्त बाढी चटपटी ।
 इंद्रायतन^{१३} आभा बढी अत बन श्वन बिसेखीयै ।
 कुल राखसी लंका खयंकर दृग भयंकर देखीयै ॥८८५
 यय-वृद्ध अरु घीय^{१४} वृद्ध कपिवर रिच्छुछपति जुगराज सौं ।
 कर जोर कैं तहाँ कीय नमसकृत सकल समिल समाज सौं ।
 गिर शंग देख ऊतंग^{१५} गहबर अंग धार ऊमंग कै ।
 ऊतमंग चढ तज सग औरन छेक-पाँव^{१६} छलंग कै ॥८८६
 रघुवीर के रुच रंग सौं जनुं पंख कनकाचल^{१७} जुटी^{१८} ।
 वजरंग चाल्यो वीर कैं चढ चंग डोरी कर छुटी :

१ वारीस = समुद्र । २ भाग । ३ बबूले ४ तिमिङ्गल = मगर, मत्स्य । ५ ऋक्षपति
 = कामयन्त । ६ युवराज = अंगद । ७ वायुपुत्र । ८ प्रशंसा करके । ९ उग्रता ।
 १० शान्त्य । ११ क्षय = दूर । १२ आतुरता । १३ इन्द्रियायतन = क्षरीर ।
 १४ कुटिल । १५ उलूङ्ग = ऊँचे । १६ शोघ्रगामी । १७ मुसेरपर्वत, सोने का पर्वत ।
 १८ बुदबुद ।

मारी सु हक मलंग कै अकवक आसर-आवली ।
 तररक नैन तरेर त्यों गोलक नालीय लीय गली ॥८८७
 आलुक^१ धुकीय सीस अरु कररक पिठु ह कूरमी^२ ।
 मद मुक धकीय दिक्करी क्रम^३ जेम चक भृमी जमी ।
 चुकीय सैमांध महेस चित सुन स्वांस रुक्कीय निश्चर- ।
 नभ-पंथ दछछन दिस ललक्कीय तक लंका तत्परा ॥८८८
 परबत ऊदंबर^४ पक ज्या घमचक धरनी मह घस्यौ ।
 पायोद खलभल चल परी सरसुक सलता जल^५ सुस्यौ ।
 दुस्तर ऊलंध महां नदध कौ विवध विघन बचायकै ।
 कर गवन नंदन-केसरी नभ-पंथ सौ नीयराप्र कै ॥८८९
 ईक बिकट गिर पर चढेऊ ऊत्तर चित चातुर वनचरा ।
 पुन कनक कोट विसल पत्तन भूम खाई जल भरा ।
 लंका अनूपैम रूप लालित भूप रावन आजही ।
 ईकपिग^६ द्रंग बिलोक आकृत जास आंगे लाजही ॥८९०
 सोवर्न-मिदर सुभग सुन्दर द्रग ईकंदर देखीये ।
 जगमगत धीपक जोत सौ ऊद्योत मनि अवरेखीये ।
 पुर आसपास ही पहरघ्रा^७ कऊ बीर रखबारी करै ।
 कांडीर^८ प्रासक^९ खड्ग-धर कऊ फरस-धर चौकी फिरै ॥८९१
 हनमंत रक्षक हेरके तन मक्षका लघु कीय तहां ।
 सब घाँम घाँमन सोध कै सोई जाय रावन ग्रह जहां ।
 सब हर्म^{१०} सोधेऊ परम सुंदर सयन सुख दससीस कौ ।
 सुर आसुरी रानी सबे बहु देख विसवा-बोस कौ ॥८९२
 अवरोध^{११} सोध बिचार ऊर में बज्र कंकट पय बह्यौ ।
 ईक बभीखन कौ लह्यौ आलय राँम अंकत ह्वै रह्यौ ।
 पुन पवन सुत पहिचान कै गवने सु ताही गेह कौ ।
 तिह बेर तंद्रा ताहि तन सौ छांड कीनी छेह कौ ॥८९३

१ शेषनाग । २ कमठ । ३ पंर । ४ गुलर का फल । ५ समुद्र । ६ कुबेर । ७ पहरेदार
 ८ धनुषधारी । ९ माले रखने वाले । १० रानियों के महल । ११ रनिवास ।

रट राँम राँम ही नाँम रसना हेर हीय हनुमान् कैं ।
 विश्रंभ^१ पाय विवेक बस जीय माँहि लीनी जाँन कैं ।
 कर विप्र रूप ही बज्र कंकट मिल बभीखन कर मतौ ।
 संदेह-हारक राँम कौ सुन प्रीत कर दीनी पतौ ॥८६४
 वंदेह-तनयाँ वसत है अतदुखी बाग असोक में ।
 अरु भीर जहुँ दिस आसुरी ऊन रहत तिन की रोक में ।
 गहि वीर चाल्यौ तिह गली मैथली दरसन मेल कौं ।
 जहाँ देख तर-तर^२ जोय कैं ऊर हेत जाहि ऊबेल कौं ॥८६५
 जब लखी नैनन ज्याँनकी वह बिटप ऊपर आय कैं ।
 पल्लवत साखा देख पत्रन सुभट तन सकुचाय कैं ।
 विच ताहि देखत बैठ कैं रसना सु सुमरत राँम कौं ।
 आयौ सु राँवन जिहीं अवसर कलहि किकर काँम कौं ॥८६६
 सब विध कह्यौ समुभाय कैं माँनी न बाते मैथली ।
 तब दुष्ट कर तरवार लें चल निकट आयौ तब छली ।
 मंदोदरी समुभाय पति-मन सदन लै गई संग कैं ।
 देखी वसा हनमंत निज द्रग असह^३ लागी अंग कैं ॥८६७
 जान्यौ न अवसर जाहि सौं जब कछू पराक्रम नहि करघौ ।
 रघुबीर किकर देख रुख सौं बलन तरवार बिच दुरघौ^४ ।
 तनया बभीखन नाम अजटा जाहि सौं कहि जानकी ।
 ईक भास की कीनी अवध पति-लंक मोहि वधे प्राँन की ॥८६८
 ईह वार अनलहि^५ प्राँन दे तन तजें वच हूँ त्रास^६ सौं ।
 अव तो हीये अकुलायगो बस राँवसी ईह वास सौं ।
 अजटा विचक्षण भक्ति तत्पर कही सुग्न सही कथा ।
 कबहूँ न मिथ्याँ होय कारन जानीये साँची जया ॥८६९
 ईक आय मकट^७ बिकट आकृत लंक दीनी लायकैं ।
 तपनीय^८ नगरी ताप सौं तप पाप राँवन पाय कैं ।

१ चित्तवाग । २ वृक्ष-वृक्ष । ३ अमह्य । ४ द्विधा रत्न । ५ अग्नि काँ । ६ नय कष्ट
 ७ बानर । ८ मोत्रे कौ ।

अरु बाँनरी फिर सैन आई, रोख जुत रघुराय की ।
 मिल पीया देवर संग में सोई सीया करन सहाय की ॥६००
 भुज बीस काटेऊ सीस दस भय रथाहूढ भयंकरा ।
 पुन दिसा दखन कोय प्रयानो पती लंक वहै परा ।
 पुन बभीखेन लंकापती रघुबीर कीनो रीभ कैं ।
 सकुटंब राँवन को सघारची खरारी कर खोज कैं ॥६०१
 सब राखसी बाँनी सुनो ब्रजटा कही सीय ताहि कौं ।
 सीता नमाये सीस सादर परी तिह छिन पाय कौं ।
 उपदेश कर सीय देख अरु गँवनी सु ब्रजटा गेह कौं ।
 सोय रही बैठी समट संचरै सुपर राँम सनेह कौं ॥६०२
 ईह देख अवसर पवन-अंगज मुद्रका डारी मही ।
 ईत मैथली अवलोक कैं गनकै अँगारी कर गही ।
 लख तेजमय सीयरी^३ लगी हीय होय विस्मय हेरकैं ।
 अभिराम रघुवर नाँम अंकित ऊर्मका^४ लीय एर कैं ॥६०३
 कंकल^५ ऊद्ध लखी कपी सीय भई विस्मय साथ कैं ।
 भुव उतर कैं हाजर भयो हनमंत जोरे हाथ कैं ।
 बरबीर कीनी बिनती घर घोर सीता ऊर धरी ।
 सदेह-हारक राँम की सुन स्वर्न दिन भय सरवरी^६ ॥६०४
 सब रीत सौ धरनी-सुता बरनी कथा रघुबीर की ।
 कुसलात पूँछी बज्र कंकट स्याँम राँम सरीर की ।
 बिनती करी तिह बेर में बीती सु पाछै बात की ।
 सुनके अँनंदत भई सीय रुच जाँन श्री रघुबीर की ॥६०५
 जब कह्यो कपि सौ प्रीत जुत हथभाग मो कह हेरीयै ।
 पत^७ हु बिसारी दीन पतनी घनै संकठ घेरीयै ।
 दंतावली बिच देखीयै सोमाल रसना सौ करै ।
 में रहत निस दिन दुख मही विरदैत सुनीयै बाँकरे ॥६०६

१-मार डाला । २-शरीर समेटकर । ३-शीतल । ४-अँगूठी । ५-अशोक । ६-उपर ।

७ शबरी = रात्रि । ८ सीता । ९ पत्नी ।

कंपाक-सुत^१ सीय सौं कही निज हृदय सोक निवारीयै ।
 रघुवीर बंदर रीछ की सज सैन सस्त्र सँभारीयै ।
 ईह लंक गढ कौं आयके दसकंठ के दल कौं दलै ।
 परवार जुत हन लंकपत कौं मोदमय रघुपत मिलै ॥६०७

दोहा

जब बिसमय जुत जानकी, हनुमत बोली हेर ।
 कपि की नर सौं प्रीत कह^२, बनी कहा ईह बेर ॥६०८
 सब विध बाल सुग्रीव कौं, सिय सौं कहि संवाद ।
 हनुमत सौं सुन हरख हुय; बिसमय टरी बिषाद ॥६०९
 मात सीया हनुमान सौं, समुझ कह्यौ संदेह ।
 हँ तुम जैसे और हू, दुरबल बंदर देह ॥६१०
 ए आसर^३ परचंड अत, बपु बल बंड बसेख ।
 मंड सकँहि कैसे समर, दंड भाव कर द्वेख ॥६११

छंद नाराच

सीया सँदेह जान श्रेय आंजनेय ऊकन्यौ ।
 करंत^४ रोम कंधरा बिसाल आकती बन्यौ ।
 प्रचंड मंड पौरुखं घुमंड चंडता घनी ।
 प्रभा ऊमंड पिड^५ की बिसाल सैल सी बनी ॥६१२
 भुजान डंड भार कौं बितुंड^६ सुंड वेखीयै ।
 अखंड बक्रतुंड^७ ओप वीरता विसेखीयै ।
 सीया लख्यौ सरूप सीय आंजनेय अंग कं ।
 विश्रम्भ पाय वात कौं ससुंभ घोर संग कं ॥६१३
 असीस दीन आंजनेय कीस^८ राम काम के ।
 बिले बसाय दूर विघ्न जाय जाम-जाम^९ के ।

१ पतञ्जल हनुमान । २ मू. प्र. कहा । ३ अशुर । ४ कृत = चमड़ी । ५ शरीर ।
 ६ लखी । ७ घुम । ८ वावर । ९ प्रहर ।

असीस ले नमाय सीस आय पाय कौ परचौ ।
 जुहार पंचसाख^१ जोर येहु बाक ऊचचरचौ ॥६१४
 फली बिलोक बाग फूल-गर्भ^२ रोचकं गह्यौ ।
 कटं सु कालखंज^३ कौ कछू न जात है कह्यौ ।
 मिलै जु मात मोहि कौ सखेप मात्र सासनं ।
 लखाय लेह^४ लेह सो ग्रहै कछुक प्रासनं ॥६१५
 सीया कह्यौ बिलोक संक रक्षकं समाँज कौ ।
 विचार कै बचाय वीर खेम लेहु खाज^५ कौ ।
 उठ्यौ उमाँह अंजनेय मात घात माँन कै ।
 क्रकाट काँ नमाय कंध जोर पाँन जाँन कै ॥६१६
 बिलोक रक्ष बाटका सुघाटका फलीन सौ ।
 मुकाय दै भपाट का मुकाय^६ मंजरीन सौ ।
 ऊँडे फलंग छेक येक येक सौ ऊतावरौ ।
 गहै सिखा ऊखार गोढ दूठ पाँन-डावरौ ॥६१७
 ऊठे अनेक आसपास रूठ बाग-रक्षका ।
 गिलोल मार गोफना डहंत डंड दक्षका ।
 अठाय संकु^७ अंजनेय जुद्ध क्रुद्ध सौं जुरचौ ।
 पचार कै^८ प्रहार दै भुजंग भीम ज्याँ भिरचौ ॥६१८
 किते मरे गिरे किते जरे सुरोख ज्वाल का ।
 परे कितेक राजपंथ आय कैऊ तालका ।
 जगाय पाँन जोर कै कही सुकीस की कथा ।
 सुनी सु पाँन-बीस^९ अँन रोख रंग ह्वै रता ॥६१९
 अखै-कुमार अंगजं बकार कै कही बली ।
 बिगार राज बाट का छिपै नहीं कही छली ।
 बिलोक जाय बाग कौ कीये सुबंध कंधरा ।
 हमै दिखाहु हाजरी चछोह कांतराचरा^{१०} ॥६२०

१ हाथ । २ फल । ३ कलेजा । ४ लेने योग्य । ५ भोजन—खाने योग्य फलों को ।

६ अलग—पृथक् करके । ७ खूँटा—वृक्ष । ८ ललकार कर । ९ रावण । १० कान्तराचर

=वानर । ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

सुन्यौ सु राज सासनं बिचार जाय बाग में ।
 अखै कुमार आय कै उसार हाथ आग में ।
 सुभट्ट ठट्टे संग लै गरट्ट बाग घेर कौ ।
 समट्ट^१ बीर सालुरे बिकट्ट जाहि बेर कै ॥६२१
 अखैकुमार आंजनेय एह बाँन ऊचरचौ ।
 अरे अजाँन कीस आय पास काल क्यौ परचौ ।
 लिगार^२ वारना लगी करचौ महौ कुलाहलं ।
 सुन्यौ सु आंजनेय सोर जोर होय जाजुलं ॥६२२
 ऊखार वृक्ष आचसौ^३ पुलाय लाग पिट्ट कौ ।
 गिराय कै दये गरार^४ चाय मार रिट्ट^५ कौ ।
 अखै कुमार आय कै जुरचौ सु जंग जोर साँ ।
 क्रव्यात^६ घात केकरी मुरचौ न सो मरोर साँ ॥६२३
 अभाग आंजनेय की लगी सुअंग लात की ।
 जबचौ ईतै वही जहीं हठी चपेट हाथ की ।
 पसार पाँनकौ परयो प्लबंग^७ मार पाय कै ।
 अखैकुमार अंतक^८ जुहार कीन जायकै ॥६२४
 महौ बिखाद मेटकै गँभीर नाँद गज्जयो ।
 अग्रज^९ आंजनेय पाय भीरु साथ भज्जयो ।
 करी पुकार जायकै सुनाय बीस- आँन कौ ।
 प्रचार^{१०} इंद्रजीत पूत पीस दंत पाँन कौ ॥६२५
 अधीस-लंक आननं कही सु कीस की कथा ।
 बलाय एहु कौन वीर जानीये जिहाँ जथा ।
 अखै-कुमार मार और वाग कौ बिगार कौ ।
 गलार^{११} कौ करे गहीर ध्वेख^{१२} हीय धार कौ ॥६२६
 सुनी न जाय धाँन सौ कया अयान^{१३} कीस की ।
 बिसेख दंड दे बिना रुकै न आँच रोस की ।

१ समान । २ उत्साहकर । ३ हाथ । ४ समूह = भुण्ड । ५ रोड । ६ राक्षस । ७ बंदर ।
 ८ समराज । ९ अग्रिमप्रवत । १० बुलाकर । ११ शोर । १२ द्वेष । १३ अमानि ।

कराय जेर^१ बंध कंध दुष्ट कौ दिखाईयै ।
 असोक वाग इंद्रजीत जाहि बीच जाईयै ॥६२७
 कही पिता सुनी कथा निहार मेघनाद कौ ।
 चलयौ नमाय सीस कौ बिचार कीस बाद^२ कौ ।
 गयी असोक वाग में घुमंड फाज घेर में ।
 अरचौ सु आंजनेय सौ बकार^३ जाहि बेर में ॥६२८
 बिचार बैर बंधवं लगी सु हीय लाय^४ कौ ।
 धिक्चौ मरचौ परचौ घरा जक्यौ^५ लख्यौ सु जायकौ ।
 बिसार सोक बीर कौ मरोर मुछ्छ मान सौ ।
 कपी सुनंद-केसरी प्रहार कीन पांन सौ ॥६२९
 बिसाल आंजनेय बृक्ष आच^६ लै ऊखार कौ ।
 छक्यौ ऊमग छोह सौ धिक्चौ सु धेल धार कौ ।
 प्रपात कौ प्रचार कौ दई सु मार दंड की ।
 लपेट फेट लाग कौ भूपेट और भुंड^७ की ॥६३०
 परी सु कूक आसपास मूक प्रांन लै मही ।
 फिर ईलात चक्र फेर बांहनी बही बही ।
 जुरचौ बकार इंद्रजीत सज्जक सतांग कौ ।
 भुजान के भरोस भाग सैन त्याग संग कौ ॥६३१
 मलग आंजनेय मंड दंड मार कौ दई ।
 तुट्यौ सतांग टूक टूक पार ह्वै परे पई ।
 ईत हूँ बीर बज्र अंग इंद्रजीत ज्याँ ऊतै ।
 दई^८ दई दुहूँन कौ सुभाव बीरता सुतै ॥६३२
 भिरे नियुद्ध भीम भेस क्रुद्ध होय काल ज्याँ ।
 हठी हमल्ल हुंकर खिलत बीर ख्याल ज्याँ ।
 भुजान-कंट दंत भेट भेन कौ भटापटी ।
 फलग फेट फेर कौ चपेट दै चटापटी ॥६३३

१ नीचा दिखाकर । २ झगड़ा । ३ ललकार कर । ४ अग्नि । ५ पराजित हुआ ।
 ६ हाथ । ७ दैव ।

अलंग मार मुष्टका हिये दई हकार कै ।
 गिरचौ सु इंद्रजीत गात धूज मोह धारकै ।
 पछार कै अरी पलवंग वृक्ष पै चढ्यौ बली ।
 बिसेख धेख भाव सौं छिनेक में जग्यौ छली ॥६३४
 सँभार ब्रह्म अख साध सक्रजीत सालुरे ।
 प्रहार बाँन पाँन-पूत^१ गात भंग ह्वै गिरे ।
 निहाँर खेघनाँद हू फसाय नाँग फाँस में ।
 जुरे सु साथ जातुधाँन पैख आस पास में ॥६३५
 भग्यौ सु राज-भौन कौं दसाँननं दिखावनै ।
 लगे अनेक लार लोग जोवनै जनै जनै ।
 बिलोक^२ कीस हाथ-बीस आयरीस ऊचरचौ ।
 अरे अजानि आप सौं पलाय बंध वचौ परचौ ॥६३६
 गहर^३ गात ना गिने सु जातुधाँनु जात कौं ।
 विलोक दाल बिफुरचौ प्रहार के प्रपात कौं ।
 तऊ वृत्तंत पूछताछ दंड फेर देहगे ।
 निदाँन काँ निहार नैक लेख बैर लंहगे ॥६३७
 ऊचारह विचार आच कौन राज किकरा ।
 निसंक आय लंक में भरचौ करचौ भयंकरा ।
 सुनंत दात बीस-भ्रानि कीस हू कथा कही ।
 प्रलोक-नाँथ^४ ताहि कौं निहार कै लखै नहीं ॥६३८
 अजन्म ईस औतरे भले सुभक्त भाव सौं ।
 अनेक जीव ऊद्धरे पसाव रेनु-पाव सौं ।
 चढाय सिभु-चाप कौं तिहीं सुतिष्ट तौर कै ।
 समेत तोहि भूप सर्व मानि कौं मरोर^५ कै ॥६३९
 विवाह मंथली वरी अनूप चंद-आननी^६ ।
 रहे सदीव संग राम मोद जुक्त मानिनी^७ ।

१ पवनपुत्र हनुमान् । २ देखकर । ३ घमंड । ४ तीनों लरकों का स्वामी । ५ मर्वन-
 परदे । ६ चंद्रमुखी । ७ मानिनी ।

कीयौ सु बास काँननं पिता निदेस पायकं ।
 हरी लंकेस हेर कं अघर्म कौ ऊपाय कं ॥६४०
 खरार बाल खंड कं सुकंठ पाय स्याहिकं ।
 वसाय राँम कौ बन्यौ निकाय^१ कीस-नायकं ।
 बिलोकनै सीया वह्यौ^२ प्रीया सु राँम प्राँन की ।
 ऊलंघ वार पार कं जुहार काज ज्याँनकी ॥६४१
 लखी सुआय लाडली जिही सु दूत जाँनीयै ।
 फस्यौ सु नाँग-फाँस^३ में ईहीं गनौ अयाँनीयै^४ ।
 धिख्यौ लंकेस धार धेख देख धूत^५ दूत कौ ।
 बिचार ना गह्यौ बिबेक सूत ओ कुसूत कौ ॥६४२
 लख्यौ प्रमोत-लायकं^६ कह्यौ सु यातुधाँनु का ।
 करयौ सु जाय कीस कौ प्रहार दंड-प्राँन का ।
 कही तही बभीखनं जुहार हाथ जोर कं ।
 रजा सु सीस राज की सभा^७ ईती सजोर कं ॥६४३
 अबद्ध^८ दूत आद सौँ मृजाद सोय माँनीयै ।
 सबै प्रकार सावधानं जुक्त ऊक्त जानीयै ।
 सदा प्रनीत साखसिद्ध राजनीत रावरी ।
 बिचार दंड दै बिसेस कीस हाँन जो करी ॥६४४
 हस्यौ सु कीस हेरकै निहार बीस-नैनहू^९ ।
 बभीखनं कह्यौ बिचार साथ मित्रि सैन हूँ ।
 बिसेस हेत बालधी^{१०} प्लवंग जात पेखीयै ।
 लपेट तूल तेल लाय बख हू बिसेखीयै ॥६४५
 जुराय आग जाहि काँ द्रुतं छुराय दीजियै ।
 गरीब दूत जाय गैल काम येहु कीजीयै ।
 बिलोक राँम स्याँम वृंद कीसहू कपीसरा ।
 बिसार सीय बासना निहार जोर निश्चरा^{११} ॥६४६

१ स्थान । २ चला । ३ नागपाश । ४ अज्ञानता । ५ घूर्त्त । ६ मारने योग्य ।
 ७ दण्ड । ८ अवध्य = न मारने योग्य । ९ विशनयन = रावण । १० पंछ ।
 ११ निशाचर = राक्षस ।

कदाच जोर कीसकों ईहाँ बिचार आँय है ।
 निहार के कलं निपात^१ जो न भाग जाय है ।
 कही सुरक्ष ईस कीस लूमकों^२ लगाय के ।
 छुराय दीन चौहटै क्रतंत^३ कौं कुपाय के ॥६४७
 वजाय ढोल बावरे बधाय के बलाय कौं ।
 गली सु ग्रेह-ग्रेह में लई बुलाय लाय कौं ।
 ऊढ्यौ अचित आंजनेय^४ गाज नाद गल्ल कौं ।
 बढ्यौ प्रवाह लंक बीच आग की ऊभल्ल^५ कौं ॥६४८
 चढ्यौ चछोह हर्म^६ स्वनं भार भर्न भुंजई^७ ।
 भरी सुभीर भाँमनी^८ डरी करे दई-दई^९ ।
 लपटु औ भपटु लाग पटु हटु प्राभलै ।
 ऊठी विसाल काल आल ज्वाल माल जाजुलै ॥६४९
 तवै कितेक तोय-तोय^{१०} ओय-ओय ऊचवरै ।
 उवलंत जोय-जोय^{११} के निचोय नैन निभरै ।
 पगार औ अगार^{१२} पै अंगार धार औसरै ।
 गिरै गरार गैन^{१३} ज्याँ प्रहार ताव पासरै ॥६५०
 ऊबार देख ऊल्लका करंत बुंबकार के ।
 सँभार ना सरौर की भुलै ऊचचंड भार के ।
 अकास छाया अंभसू^{१४} घटा असंभ ज्युं घुरै ।
 विचाल नंद वाय हू^{१५} फिरावहू छटा फिरै ॥६५१
 गहंत लोल^{१६} तोल गैन नाल गोल नाग ज्युं ।
 चलंत वक्र चाल में ईलात चक्र आग ज्युं ।
 छलंग के अलंग छेक विस्फुलंग^{१७} विखरै ।
 कुलंग पछ्छ^{१८} त्याँ कहूँ मलंग लेत महरै ॥६५२
 सुधंत^{१९} भार सौंध-सौंध^{२०} द्वार-द्वार देखीयं ।
 कुचाट^{२१} पक्ष द्वार केर अगला^{२२} असेखीयं ।

१ मानस । २ पूँछ की । ३ कृतान्त = यमराज । ४ हनुमान् । ५ लपट ।
 ६ हर्म्य = महल । ७ जल कर नष्ट हो गई । ८ भामिनी = स्त्री । ९ देव-देव ।
 १० जन-जन । ११ देस कर । १२ आगार = घर । १३ गगन = आकाश ।
 १४ घुंघा । १५ वायुनन्दन = हनुमान् । १६ चंचल । १७ विस्फुलङ्ग =
 विनमरिणी । १८ पक्षी । १९ स्त्रियों के रहने के स्थान । २० महल ।
 २१ शिवाङ्ग । २२ आगम ।

भंडार गर्भगार^१ कुप्पसाल^२ चंद्र-सालका^३ ।
 बितान श्री बिछावने पसार भाल पालका^४ ॥६५३
 अनेक रंग अंसुक^५ प्रछादन^६ जरै परै ।
 अन्नूप कंड-पट्ट^७ ओट आंच लाग अस्तरै ।
 बिसेस तालवृंतहू^८ असेख केक आसन ।
 कपूर कासमीरहू सनेह^९ त्यां सुबासन^{१०} ॥६५४
 भूमक पाय जांभरं गयंद-मत्त-गांमनी ।
 ऊसास^{१२} लै ऊदास ह्वै भुमंत राज-भांमनी ।
 खिसाय^{१३} खीज-खीज मीज हाथ कौ मदीदरी ।
 कहै पीषा कीयौ कहा सीया हरी जु सुंदरी ॥६५५
 असख आग-भाल^{१४} सौ जरंत लंक जोयकै ।
 अहो बिना ऊपाय कै करै न स्याहि कोय कै ।
 दसानन लखी दसा ज्युंहीं मदीदरी जपी ।
 बलाय के बधूल-सौ कराल देख कै कपी ॥६५६
 अनेक कांडवान^{१५} कौ बकार कै कीये बिदा ।
 कोडंड^{१६} तांत कान कौ जुरे घनै जुदा-जुदा ।
 तरेर नैन ज्युं तिनूह चंचला^{१७} चला-चल ।
 दिखात नां दिखात भीर आग की भला-भल ॥६५७
 जके थके रहे जितेक पुत्तरी-पखान^{१८} ज्युं ।
 अंगार आंच आग सौ गहै न चित्त ज्ञान ज्युं ।
 पयोद^{१९} कौ कह्यौ पुकार जुथ अमृ^{२०} जोर कै ।
 ऊमंड वार^{२१} औसरै घुमंड मंड घोर कै ॥६५८
 सनेह के संजोग सौ सिवाय लाय सौगुनी ।
 बढी बलाय बायु बेग घूम कै घनी-घीनी ।
 मुरे सु मेघ मान मेट आग फेट सौ ऊड़े ।
 पुलाय कै धुलाय पाथ^{२२} व्योम मग्ग कौ बढे ॥६५९

१ गर्भगार = मण्डारगृह । २ कोठे । ३ बहुत मंजिलवाली हवेली । ४ पलङ्ग ।
 ५ वस्त्र । ६ ओढने का वस्त्र । ७ कनात । ८ पंखे । ९ केशर । १० स्नेह =
 तेल । ११ सुगन्धित । १२ उच्छ्रवस । १३ लज्जित होकर । १४ अग्नि ज्वाला ।
 १५ धनुर्धर । १६ कोदण्ड = धनुष । १७ बिजली । १८ पाषाण पुत्तली = पत्थर
 की मूर्ति । १९ बादल । २० पानी । २१ वारि = जल । २२ पानी ।

सतंभ बंध सासता प्रलंब साल पायगा ।
 जली अपूर्व ज्वालका जरै अनेक जायगा ।
 खुले गयंद सखला^१ जुलै पुलै डरे-डरे ।
 ज्युंही तुरंग जांनीयै ज्वला फिरै जरे-जरे ॥६६०
 कितेक संकुकर्न^२ बर्न-बर्न के बिसेखीयै ।
 भूसत भूंक भूंक-ऊक^३ देख कै असेखीयै ।
 बरंत^४ भार बार हौ जितेक धान^५ जांनीयै ।
 निकाय^६ व्यंजनावली^७ पयस्य वे-प्रमांनीयै ॥६६१
 धुकै धुंआंर धार में अपार गंज आजुनी^८ ।
 जुरै न छार^९ भारनै सुधार कौं संमार्जनी^{१०} ।
 जराय लंक ज्वाल सौं बचाय कै बभीखनं ।
 परचौ सु कूंद पारवार^{११} बालधी बुभोवनं ॥६६२
 सुधार अंग सावधान ह्वै लघूक^{१२} हाल कै ।
 सीया हजूर समुहै^{१३} जप्यौ सु लंक ज्वाल कै ।
 कछूक रांम-कारनै दिखाव चीज दीजीयै ।
 रजा अधीन रावरौ कपी विदा करीजीयै ॥६६३
 असीस दै सीया दई मनोज्ञ^{१४} वृडका-मनी^{१५} ।
 जुहार पांन^{१६} जोर कै संदेह^{१७} बारता सुनी ।
 पसाव मात पाय कै वसेस कीन बंदनं ।
 हल्यौ सु वायु-वेग होय नोक वायु-नंदनं ॥६६४
 ऊड़चौ सु सिंधु तीर आय तीर^{१८} रांम ज्युं तरचौ ।
 ऊतार ठौर आयकै ईभारि-नाद^{१९} ऊच्चरचौ ।
 सुन्यौ कपी सबै समूह पाय कै प्रमोद कौं ।
 भई प्रतीत भाव सौं विसास सोध^{२०} बोध कौं ॥६६५
 ईतेक बीच आंजनेय वार-पार^{२१} ऊतरचौ ।
 ऊमाह अंगदाद आद भेंट अंक^{२२} सौं भरचौ ।

१ शृङ्खला = जंजीर । २ गधे । ३ ओक = स्थान, आकाश । ४ जलने लगै ।
 ५ धान्य = चावल, अन्न । ६ स्थान, केन्द्र । ७ शाक-सब्जी आदि । ८ घास ।
 ९ क्षार = राख । १० भाड़ । ११ पारावार = समुद्र । १२ छोटा रूप बनाकर ।
 १३ सम्मुख । १४ सुन्दर । १५ वृडामणि । १६ पाणि = हाथ । १७ सन्देश ।
 १८ वार । १९ इभारिनाद = सिंहनाद । २० शोध = खोजकर । २१ पारावार =
 समुद्र । २२ गोद ।

सीया कथा कही सुनाय धाय-धाय धीमता ।
 ऊछाह आय-आय कै जुहार पाय कं जथा ॥६६६
 बिसाल ताल-वृंत सौं करंत पांन^१ केकहू ।
 फली कोऊक मिष्ट फूल देत देख-देखहू ।
 हिले मिले चले हकार गैल सैल^२ गाहि कैं ।
 कपीस कौंसलेस सौं मिले रजा मनाय कैं ॥६६७

दोहा

जामवंत कर जोर कैं, बिनय कीन रघुबीर ।
 पत राखी हम जुत प्रवल, हनमत है हमगीर^३ ॥६६८
 लांघ उदध^४ लंका गयो, सीया मिल्यौ सुख पाय ।
 मारचौ अखय-कुमार कौं, लंक दई फिर लाय ॥६६९
 आयौ उदध ऊलंघ कैं, गयो ज्युंहीं नभ-गौल ।
 हरखत धाये सबही हम, सरता^५ लांघत सैल ॥६७०
 दरसन कीनै हमहुं द्रग, राजिव-लोचन रांम ।
 पूंछ लेहु हँनमंत प्रत, सीया खबर घँनस्यांम ॥६७१
 जग-त्राता रघुबीर जब, संजुत भ्राता सेख^६ ।
 पाय परचौ हनमंत प्रभु, द्रष्ट पसारी देख ॥६७२
 बार-बार पद बंद कैं, हँनुमाँन हीय हेर ।
 निजर करी चूड़ामनी, सहनांनीं^७ सीय केर ॥६७३
 लै कर सौं रघुनाथ लख, हीय भेटी हरखाय ।
 लघु भ्राता दीनी लखन, सो लख सीस चढाय ॥६७४
 कह्यौ फेर संदेह कछु, सब रघुवर सुन श्रांत ।
 कर सिर धरचौ सराह कर, हरख भयो हँनुमाँन ॥६७५
 सबहिन कह्यौ सुनाय कैं, दुख राँवन कौ दीह ।
 रहत ज्याँनकी रात दिन, ज्युं दंतन में जीह^८ ॥६७६

१ पवन । २ गैल—पर्वत । ३ अग्रणी । ४ उदधि=समुद्र । ५ सरिता=नदी ।
 ६ शेष=लक्ष्मण । ७ निशानी । ८ जिह्वा=जीभ ।

एक मास दीनी श्रवध,^१ सीता काज लँभार ।
ता पाछे तन त्यागहै, ज्वाल अगँन में जार ॥६७७

छंद भुजंगीप्रयात

सुनी राँमहू बात सुग्रीव सोऊ, जुतै जुथ्यपं जुथ्यहू आद जोऊ ।
जगी हीय में क्रोध को ज्वाल-माला, कपी काल ज्युं कल्प^२ रुठे कराला ॥६७८
मिलै ईवक सौं ईवक पूँछे मता कै, प्रयाँनं खरी कीन साखै पताकै ।
गरै गल्ल सौं केहरी-नाद गाजै, बड़े आँनकं भेर माँनी अवाजै ॥६७९
जुतै सेस सुग्रीवहू राँम जाँनी, पती औध कं लंक कीनी प्रयानौ ।
घनै जुथ्यपं जुथ्य साथै घुमंडे, ऊडीची^३ मनौ मेवमाला ऊमंडे ॥६८०
सुरंगे-मुखा कीस फूली सुसंभा,^४ भुकै हैं मनौ लंक पै होय जंभा^५ ।
धरै रिछछ रिछछी ज्युंही लौर ध्यावै, चितं वेग ऊद्योग बायू चलाव ॥६८१
निचं राँम सोहै प्रभा मेघ-वर्न, दियै चाँप^६ बाँमी भुजा यातुदर^७ ।
विड़ोजा^८ ज्युंहीं चाप आभा विराजै, भुजा दल्लछनं दीप्त नाँराच^९ भ्राजै ॥६८२
फिरावै तिहीं अद्ध श्री ऊद्ध फेरा, तपे चंचला अभृ^{१०} माँनी तरेरा ।
महाँ-कांतर^{११} चतवरं होय मगँ, लगूलं^{१२} बनोका वहै आभ लगँ ॥६८३
गिरी गाहटं पाँव आराव^{१३} गज्जै, धरा धाँमहू सात पाताल धुज्जै ।
डरै दिक्करी^{१४} अट्टहू पाँव डोलै, फनाली^{१५} पती-नाग^{१६} ऊठं फफोलै ॥६८४
चढी भोम^{१७} सौं रेनुका^{१८} व्योम छाई, बढी लंक लौ जाँन दैन बधाई ।
बली एक सौं एक साखा-बिलासी^{१९}, रुके आयकै तीर पै तोयरासी^{२०} ॥६८५
मिले चोट मोटे जहाँ पाँव मंडे, थिरा थानकं-थानकं सैन थंडे ।
तितै राँम राँमानुजं आय तीरा, गरज्जै अकूपार^{२१} देखे गहीरा ॥६८६
सबै कीस कीं संग लीनै समाँजा, रहे छाय कं राँम राजाधिराजा ।
कही हेरकं राँम सेना कहाँनी, धुखी लंक आतंक सौं राजघाँनी ॥६८७
सुनी अत मै तंत की बात सारी, पती-लंक मंडोदरी प्राँन-प्यारी ।
सही नीत की रीत सौं सो सयाँनी, पखं वीनती जाय कीनी प्रमाँनी ॥६८८

१ श्रवधि । २ प्रलय । ३ उत्तरदिशा । सुसन्ध्या । ५ संभा = वृकान ।
६ पशुध । ७ यातुदसन = रीक्षसों को मारने वाले । ८ इन्द्र । ९ वाण ।
१० अश्रु = बादल । ११ महाकान्तर = महान् वन । १२ लाट्टगू = लंगूर ।
१३ आन = प्वनि । १४ दिग्गज । १५ फणवारी । १६ नागपति = शेष ।
१७ घृनि । १८ घृनि । १९ वानर । २० समुद्र । २१ समुद्र ।

सदां राज के काज में सावधानं, धराधोस पुज्जै सबै जातुधानं ।
 अनीती करी मैथली ग्रेह आनी, बसाई बिचै बाग नारी बिरानी^१ ॥६८६
 जपै रांम रांम करै ध्यान जाकौ, हुयै हेत ना सिद्ध तेरे हिया कौ ।
 अज्युं सौपीयै रांम की अर्द्धअंगी^२, पती होय निर्व्याधि^३ बंसी प्रसंगी ॥६८७
 कही मै नहीं मानहौ जो कहाँनी, धरा धाम जै है सबै राजधानी ।
 ऊलंघे ऊदधं तिहीं दूत आयौ, जिहीं पत्तनं^४ ज्वाल-माला जरायौ ॥६८८
 बनोका अनेकं जिहीं संग बैसे, कही लंक के होंगो हाल कैसे ।
 सुग्यौ रांम के बांन कौ बेग खानं, पती मोर धुज्जै हीयौ और प्रानं ॥६८९
 पती-लंक संदोदरी बात पाई, तहां बोल ऊठ्यौ महां आतताई ।
 अहो नार मेरी भरी-भीत ऐसी, ईहै बात कंसी कही है अनैसी ॥६९०
 हीयै सोच आवै नहीं आय हांसी, बिचारे जती कौ न साखाबिलासी ।
 सबै मृतु घेरै चले आंय संग, परै ज्वाल की माल जैसे पतंगा ॥६९१
 तिहीं हाल कौ देखहै नैन तूहीं, जुरंगे जती आयकं जुद्ध ज्युंहीं ।
 बसांऊं सबै खाल साखाबिलासी, त्रीया मोर ह्वै कं कहा बुद्ध त्रासी ॥६९२
 महां-निकृती^५ बात रांनी न मांनी, सिधाई जबै ग्रेह सोई सयांनी ।
 सभा जाय बंठी जबै पांन-बीसा, धरै छत्र माथे जहाँ लंकधीसा ॥६९३
 ईतै आय बातायनं^६ बोल ऐसै, जलाधीस पारा लखी सैन जैसे ।
 ईतै बोव वभीखनं भ्रात आयौ, नृचक्षापती पाय सीसं नमायौ ॥६९४
 करी बीनती ऊठकै-राज काजा, अनीती जहाँ जांन लीजै अकाजा ।
 बिदेही हरी बीच लंका बसाई, ईहीं काम कीनौ महां आतताई ॥६९५
 सीया दै बिना नांहि ह्वै है सुधारौ, हितू जांनकै सांच मांनौ हमारौ ।
 सुनी मालवानं जिहीं बात सारी, ईहीं बीनती नीत ऐसी ऊचारी ॥६९६
 जहां क्रुद्ध कीनौ फछू भूप जापै, ऊठ्यौ मालवानं गयो ग्रेह आपै ।
 लघू-भ्रात तोहू हीयै हेत लाई, सबै रीत सौ नीत बातें सुनाई ॥१०००
 सुनी सो बहाई ब धूरै समीरा^७, न भेदै ज्युंहीं चीकनै कुंभनीरा ।
 भुकाया तऊ सीस कौ पांच भेलै, ऊचारी तहां बीनती कां अकेलै ॥१००१

१ परनारी । २ अर्द्धाङ्गिनी = स्त्री । ३ व्याधि रहित । ४ नगर । ५ निष्कृति = बदला । ६ भरोसे । ७ समीर = वायु ।

प्रहारं करयो पाँव की भ्रात पायो, यिति लोयऊ भी भयो आप थापो ।
 वर्यो फेर वरमीवनं एहु वानी, ऊवारं कहा ह्रीव^१ वानी अयानी ॥१००२
 मुजा मोहि की तोहि नाहीं भरोसो, क्तू काज दोस वरो सो करो सो ।
 मित्यो जाय वेरो कपो सन माहीं, नरा वानरा सो कहु भीत नाहीं ॥१००३
 मुनो लंकर्यास ईहो वात आनं, गही वाट वरमीवनं कीन गानं ।
 नकी राँन की सन ऊठन ताहीं, महां भक्त चितं लयो वन माहीं ॥१००४
 पहुँच्यो सोई पारसा वार पायो, लखं मकटी-सन सवेह लायो ।
 अटोवयो नही आवनं दोन अगो, कपोसं कहुो येम जोरं करगो ॥१००५
 जानं ईहो भ्रात हे राँवना की, किर्या दूत हे नेद के कामना की ।
 कपोसं कही राँन सो जाय कथ्यं, सब रीत सो जान लीनी समथ्यं ॥१००६
 ईने व्याज^२ सो सन आयो ऊवारं, हिनू जान लीजं प्रतजा हमारं ।
 कहे सन आयो तज जो कहो की, विसेसं कृतप्री^३ विचारो वही की ॥१००७
 लगं कोट विप्रं वयं पाय लारी, हीये साच की जान माँनी हमारी ।
 करं व्याज तीऊ नहीं हान कीऊ, समीचीन आयं लखं है स कोऊ ॥१००८

बोहा

श्रीरघुवर वानी मुनी, हरख होय हनुमान ।
 मुन्न-वायक असरन-सरन, जगपति लीने जान ॥१००९
 कंगद आदक कूस अह, हनुमंतहू हीय हेर ।
 लन वरमीवन की चले, विहस विहस जिहू वेर ॥१०१०

छंद मुक्तावली

हिनू रघुवीर गयो हीय हेर, वरमीवन जाय मित्यो जिहू वेर ।
 पनी-गड-नंक की भ्रात पिछान, सब विष कीन जयो सनमान ॥१०११
 कीये प्रगथान लीये संग कौस, ऊमगीय देख के आव-अधीस ।
 मयंयव स्थानन गोर सरीर, वरमीवन पाय गये रघुवीर ॥१०१२

ऊभै कर भेल कै जाहि ऊठाय, लीयौ जन जान कै अंक^१ लगाय ।
 खुसी पत-लंक सबै विध खेम^२, निहारकै राँम कह्यौ जुत नेम ॥१०१३
 सुनी कपि बाँनीय राँम की सोय, जया जय सह^३ कीयौ जँह जोय ।
 नमो रघुनायक भूप निसंक, लीयै बिन दास दीयौ गढ़ लंक ॥१०१४
 कहौ रघुनायक बात कपीस, अहो रघुवंसीय में अवनीस^४ ।
 कहै सोई सत्य निभावन काँम, बिचारत नाँहिन फेर बिराँम ॥१०१५
 इते दिन काज छतौ तुम येक, सीया कहँ लाँवन कौ सववेक^५ ।
 बभीखँन थप्पन कारन वीय, कहौ सोई कारज है करनीय ॥१०१६
 कपीसहू बोल जहाँ कर जोर, महाँ प्रभू धन्य रघुकूल-मीर ।
 सबै सरनाँगत रावरे साथ, निभावहु वृद^६ अनथन नाँथ ॥१०१७
 सुन्यौ कपि बाँनीय औरहु सोर, जुहारत राँम तहाँ कर जोर ।
 सुनाय कै आपनी राँम सिधंत,^७ सबै विध जाँन बभीखन संत ॥१०१८
 क्रपा^८ कर भाल में चर्चक कोन, दयौ पद लंक पती पति-दीन ।
 जलाश्रय राँवन दुःख सौँ जाहु, बभीखँन राख लीयौ गह बाहु ॥१०१९
 सराहन लागीय^९ औरहु साथ, बढी दल मर्कट में ईह बात ।
 तहाँ रघुनायक सिधु के तीर, बभीखँन कीस-पती जुग बीर ॥१०२०
 जुहारीय नीर-पती^{१०} जहाँ जाय, बिराजेऊ आसन-दर्भ^{११} बिछाय ।
 सबै संग जुथ्यप-जुथ्य सघान, हरोलीय^{१२} अंगद औ हनुँमान ॥१०२१
 कीये हीय व्याज^{१३} बने कपि-काय ईतै बिच राँवन दूतहू आय ।
 बिचार कै ताहि लख्यौ बरतंत^{१४}, सदाँ रघुबीर ऊवारन संत ॥१०२२
 बिलोक कै बंचक^{१५} कौँ कपि बेल, परे कपि गैल ग्रहै सु परेख ।
 मरोर कै थापन लातन मार, बिचार कै बंध कीयौ तिह बार ॥१०२३
 कहै कोऊ काटहु नासका काँन, प्रहारहु केक कहै पग पाँन ।
 ऊचारत यौँ रघुबीर कौँ आय, बनोकन दीनेऊ दूत बताय ॥१०२४
 बिचच्छँन लछ्छन राँम के बीर, परेख कै कीन निराकृत पीर ।
 कोयौ तिह लछ्छन येह कहाव, लिखै हम पत्र बिचार कै न्याव ॥१०२५

१ गोद, छाती । २ क्षेम । ३ शब्द । ४ नृपति । ५ सविवेक । ६ विरद = यश ।
 ७ सिद्धान्त । ८ तिलक । ९ मू० प्र० लगीय । १० समुद्र । ११ डाम, कुश ।
 १२ अग्रणी । १३ कपट, बहाना । १४ वृत्तांत । १५ घूर्त्त, छली । १६ निरा-
 कृत = छुड़ा दिया ।

दिखावहु लंकपती कहू दूत, करै सोई जान कै सूत कुसूत ।
 जितै हम आवत है दल जोर, ऊलंघ कै बारहु-पारु^१ अथोर ॥१०२६
 चले सुख-सारन^२ सीस चढाय, कपी दल बीच सौं खेम कढाय ।
 गयो सोई राँवन पै कर गाँन^३, सदेशन-हारक^४ बुद्धि सयाँन ॥१०२७
 विचार कै राँवन पूँछीय बात, कहौ लघु-भ्रातहू^५ की कुसलात ।
 महाँ दुरबुद्ध गह्यौ तन मीच^६, विरोधीय सोध गयो दल बीच ॥१०२८
 कहौ फिर कथ्य कितौ दल कीस, निरंतर बैठेऊ पार नदीस ।
 कहौ जुग तापस की गत कोन, जुहारत सगर^७ मोपहूँ जौन ॥१०२९
 जहाँ कहि दूत ऊभै कर जोर, मुलाहिज बीनती कीजहु सोर ।
 वभीखन जाय मिल्यौ जिहं वेर, करचौ गढ़ लंकपती तिह केर ॥१०३०
 निर्हारीय भल्लुक बंदर नैन, सबै निरसंक^८ असंखन^९ सैन ।
 सुकंठहु भूप जही सिरताज, जुरे हनमंत वली जुवराज ॥१०३१
 जहाँ कुमदादिक केसरी जोर, मयंदहु नील किते दल मोर ।
 विचछ्छन रिच्छपती वय-वृद्ध^{१०}, सबै अवसासँन जाँनन सिद्ध ॥१०३२
 विलोकत दछ्छन^{११} शोर विसेख, धुखै हीय बीच हूतासन^{१२} धेख ।
 भयंकर दीसत है भुज-डंड, खयंकर^{१३} लंक सबै खल-खंड ॥१०३३
 भरे ऊर क्रुद्ध जुरे जुग भ्रात, प्रचारत धीर धरै निध-पाथ^{१४} ।
 मिलै कछु काल मही नहि मग, अंगजित चाप कौं लेय ऊदग^{१५} ॥१०३४
 सबै जल सोखाहि दान कौं संघ, कहै हम नैन लखी दसकंध ।
 दई ईक पातीय लछ्छन देव, भली विध जाँन लहौ ईह भेव ॥१०३५
 लई कर वाम सोई पत-लंक, निर्हार कै धीसख दीय निसंक ।
 जिहीं विच लछ्छन लेखेऊ जाव, सीया कहू साँपहु^{१६} आँन सताव ॥१०३६
 वभीखन साँपहु राज विचार, वचं कुसलातहु सौं परवार ।
 मिलै जीय दान तुमँ मतिमंद, समँ ईह आय करी जव संघ^{१७} ॥१०३७
 कहै कहा राँम भये प्रतकूल^{१८}, संघारहि तो कहू वंस सँमूल ।
 चहै हम न्याव विचार कै चित्त, अहो तुम जानहु ना असमथ्य ॥१०३८

१ पागदार = समुद्र । २ सुपदारण = सुखप्रद । ३ गमन । ४ सन्देशहारक = दूत ।
 ५ विभीषण । ६ मृत्तु । ७ पुद्ध । = निर्याद्धु । ८ असंख्य । ९ वयोवृद्ध ।
 १० शक्ति । ११ हृत्वागन = अग्नि । १२ सयङ्कर । १३ पार्थीनिधि = समुद्र ।
 १४ उदय । १५ लौकिकी । १६ मंधि । १७ प्रतिकूल = विरुद्ध ।

सुनी लिख बाँनीय श्रानन सेख^१, दसाँनन हाँस रच्यौ तिह देख ।
 कीयौ सुक-सारन दूत कहाव, बिना सोय दीनेऊ नाहि वचाव ॥१०३६
 लई सुत ताहि प्रहारीय लात, निरादर होय मित्यौ रघुनाथ ।
 तँहाँ जलरासीय की निज तीर, बिते दिन तीन रहे रघुबीर ॥१०४०
 कही लघु-भ्रात ही सौं कर क्रुद्ध, ईहै सठ^२ माँनत नाहि ऊदद्ध^३ ।
 सरासन^४ लावहुँ मोर सताब, जब कछु देवहै आय जबाब ॥१०४१
 दये धनुं-बाँनन लछ्छन देख, पतो-पुर-कौसल लीन परेख ।
 चढाय कै सिंजनी^५ ताँन चछोह, कीयौ जलरासीय पै अतकोह^६ ॥१०४२
 सँभारीय पाँनन^७ बाँन सँधान, असँभव गाज ऊठ्यौ असमाँन ।
 धरा अकुलाय रही तज धीर, निरंतर धूपित ह्वै दध-नीर ॥१०४३
 तिमंगल^८ कछ्छप नक^९ तपाय, भयंकर पीर ऊठे भहराय ।
 भरे तव कंचन^{१०} थारीय भेट, मनोहर रत्नन लीन सँभेट ॥१०४४
 बन्धौ नर ऊतँम रूप विसैस, नम्यौ पद आय कै औध-नरेस ।
 छिमाँकर^{११} नाथ न कीजीयै छोह^{१२}, मँहाँ जड़ जाँन दई सिख मोह ॥१०४५
 जबै रघुनाथ कही कथ जास, अहो जलरासि न होहु ऊदास ।
 तथा^{१३} मम सँन ऊलंघहि तोहि, बिचार कै मंत्र बताबहु मोहि ॥१०४६
 कह्यौ तब सिधु ऊभँकर जोर, कपी नल नील है बेस किसोर ।
 दप्यौ यौ रिखीराजनहू बरदान, बिचछ्छन-बुद्ध बडे बलवाँन ॥१०४७
 परवृही मोहि के ऊपर पाज^{१४}, मिलाय कै सूत सुनौ सहाँराज ।
 समै ईह बाँन कौं कीन सधान, तजौ ऊतराध दिसा-मह ताँन ॥१०४८
 बसै जँहाँ दुज्जन^{१५} मोर बसेख, प्रहारहु ताकह प्राँन परेख ।
 जबै रघुनाथ तज्यौ सर जाँन, मित्यौ जलरासीय कौ भयमाँन ॥१०४९
 महाँप्रभु सायक^{१६} कौं कीय मोख, रजा दीय सागर काँ तज रोख ।
 निरंतर मानव-रूप निवार, मित्यौ जलरासीय तोय-मँभार ॥१०५०
 दिसा उत्तराध मही ईक देस, बसै मम दुज्जन तोय-मँभार ।
 निरंतर मानव रूप निवार, मित्यौ जलरासीय तोय-मँभार ॥१०५१
 महाप्रभु सायक कीनेऊ मोख, रजा दीय ताहि निवारेऊ रोख ।

१ शेष = लक्ष्मण । २ शठ = मूर्ख । ३ उदधि = समुद्र । ४ शरासन = धनुष ।
 ५ प्रत्यंचा = डोर । ६ अतिक्रोध । ७ पाणि = हाथों से । ८ तिमिङ्गल = मत्स्य ।
 ९ मगर । १० कान्चन = सोना । ११ क्षमाकर । १२ क्षोभ = क्रोध । १३ मू-
 प्र० त्यां० । १४ सेतु = पुल । १५ दुर्जन । १६ वाण ।

दोहा

रजा पाय रघुनाथ की, सिंधु गयी सुसथाँन ।
 सेत बाँधनें की समुझ, ऊदित भये कपि आँन ॥१०५२
 राँम कही राँमाँनुजहि, बाँधहु सेत विचार ।
 जाँमबंत बोल्यौ जबहि, वेस-वृद्ध^१ जिह वार ॥१०५३
 नाँथ तिहाँरे नाँम सौं, रची सेत जग रेख ।
 निर्गम^२ कहत खग नाँग नर, ऊतरत पार अँनेक ॥१०५४

छंद ऊद्धोर

कीय अरज पवन-कुमार, विज्ञाँन हृदय विचार ।
 नृप अवध कृद्ध निदाँन, समि-गर्भ^३--ऊर्व समाँन ॥१०५५
 नद-ईस सोखेऊ नीर, पुन बढी दँनुँजन^४ पीर ।
 द्रग नार कंदत^५ देख, बढ गयेऊ फेर विसेख ॥१०५६
 है नीर कटु ईह हेत, सब लखहु सँन समेत ।
 हीय ऊकत^६ सुन हनुमंत, कपि केँऊ विनोद करंत ॥१०५७
 जब जाँमबंत सुजाँन, कीय नील नलहि कहाँन ।
 तुम सेत बाँधहु तात, निज राख हीय रघुनाँथ ॥१०५८
 नल नील चतुर निदाँन, सुन ऊदित भेऊ सुजाँन ।
 सोई रचन लागेऊ सेत, हीय राँम काँम सहेत ॥१०५९
 सब सभेऊ मर्कट-सँन, द्रढ ऊपल^७ लागेऊ दैन ।
 कपि देत विष्टर^८ केक, अत तरल सरल अनेक ॥१०६०
 अरु कोऊक अंग ऊतंग, समुदाय तरवर संग ।
 नल नील लेत तिहाँर, अतदक्ष परम अपार ॥१०६१
 जहाँ चहत जिह बिध जोर, तहाँ देत ताकँह तोर ।
 मिल दिवस तीन मभार, तिह सेत कीन तयार ॥१०६२

१ वयोवृद्ध । २ वेद । ३ बडवानल । ४ राक्षस । ५ रोती हैं । ६ उक्ति ।

७ उपल=पत्थर । ८ वृक्षों के डूँड ।

द्रग ताहि रघुचर देख, ऊर मुदित भयेऊ असेख ।
 बसु^१ परम रंभ्य बिचार, तहां पूजकै त्रपुरार^२ ॥१०६३
 ध्रुव जोग थप्पेऊ^३ धाम, अघ-हरन जग अभिराम ।
 कर बंदना सिव-केर, घन सुभट मर्कट घेर ॥१०६४
 पुन करेऊ लंक प्रयाँन, जुग भ्रात भुज-आजाँन^४ ।
 कर धरै सर कोडंड, घन घेर फौज घुमंड ॥१०६५
 कपि भुँड कर किलकार, पहुँचे सु जलनिध पार ।
 प्रभू तरेऊ नाँम पखाँन^५, पुन कहा बिलंब प्रयाँन ॥१०६६
 विरचेऊ सकंधा-बार^६, अभिराम ठौर ऊदार ।
 आराम^७ लखेऊ अनेक, बहुफलद फलन बिसेख ॥१०६७
 बंदरी फौज बुलाय, रूच पाय कहि रघुराय ।
 फल करहु भक्षन फौज, मुद पायकै मन मौज ॥१०६८
 हटकै^८ जु तुमकाँ हेर, जिह करहु भटकै जेर^९ ।
 निज नाँथ सीस नमाँय, ऊठ चलेऊ ऊर ऊमगाय ॥१०६९
 कपि चढेऊ सिखरी केक, तहां करत रक्षक तेक ।
 तिह पकर-पकर तुरंत, द्रग फोर तोरत दंत ॥१०७०
 कोऊ नासका श्रुति^{१०} काट, घट करत दनुज कुघाट ।
 राँवन पुकारे रोय, खल वात अपनी खोय ॥१०७१
 पति लंक द्रष्ट पसार, निज नैन बीस निहार ।
 फटचौ सु हीय जिम फूट^{११}, अवरोध^{१२} चालेऊ ऊठ ॥१०७२
 मय-नंदनी^{१३} तज माँन, पुन कहेऊ नय पहचाँन ।
 सुन बंदरन कौ सोर, बोली सुवाच वहोर ॥१०७३
 अकुलाय कहत ऊदंत, वयौ नहीं माँनत कथ^{१४} ।
 श्रीराम सैन-सहेत, सोऊ ऊतर आये सेत ॥१०७४
 सीय देहु पीय कर संघ, पहिलं विचार प्रबन्ध ।
 वाढचौ न अबहु विरोध, कोजे न अनहित क्रोध ॥१०७५

१ पृथ्वी । २ त्रिपुरारि = महादेव । ३ स्थापित किया । ४ आजानुभुज = घुटनों तक भुजाओं वाले । ५ पापाण । ६ पड़व । ७ वाग । ८ मना करे । ९ नीचा दिखाओ । १० कान । ११ ककड़ी के समान फल । १२ रनिवास । १३ मन्दोदरी । १४ कान्त = स्वामी ।

सुन सीख बोलेऊ सोय, मंदोदरी सुन सोहि ।
 मैं दंतुज-गँन महाराज, सुर-मनुज-जेता साज ॥१०७६
 कर जीत बरून कुवेर, जम पवन कीनेऊ जेर ।
 भुज तोहि नाहि भरोस, अनजान-पन अफसोस ॥१०७७
 सब भाँत त्रिय समुझाय, ऊठ सभा बैठेऊ आय ।
 तहाँ देख पूँछेऊ तंत्र, मिल साँम-बायक^१ मंत्र^२ ॥१०७८
 बोलेऊ प्रहस्त विचार, नय नीत रीत निहार ।
 बल प्रबल जुत रघुबीर, तर सिंधु आये तीर ॥१०७९
 जो दीये सीय फिर जाय, ईह संध नीक ऊपाय ।
 कीय सुनत राँवन क्रुद्ध, सुरभाय गये मन-मुद्ध ॥१०८०
 बिच हृदय राँम विचार, बोले सु ताही बार ।
 कीजै सु आतुर^३ काज, सब सुनहु सुभट-समाँज ॥१०८१
 सुन सुकन^४ देवै साख^५, ऊर जुद्ध की अभिलाख^६ ।
 परचंड पवन-प्रवाह, दिस-बिदिस ऊठत दाह^७ ॥१०८२
 भूकंप होत भयाँन^८, थरहरत पर्वय^९-थाँन ।
 बिन वृष्ट बादर बीज^{१०}, कर-करत सब्द करीज ॥१०८३
 पल-भक्ष^{११} पक्षी-पुँज्ज, गहराय कै कर गुँज्ज ।
 जल रुधर-जुक्त भरंत, आरक्त^{१२} मेघ ऊठंत ॥१०८४
 मंडल सु सूरज-माँहि, छूटै सु ज्वाला छाँहि ।
 जाही सु मृग-गँन जोय, रव करत भय सी रोय ॥१०८५
 रवि कबहु सीतल रूप, धर हरत चंदा धूप ।
 नभ जोत-हीन^{१३} नछत्र, तम गिरे दीसत तत्र ॥१०८६
 जान्यौ सु निसचय-जात, अब होयगी ऊतपात ।
 जान्यौ सु लंका जोग, भुव रुधर लैहै भोग ॥१०८७
 लै कीस लसकर^{१४} लार, तुम होऊ लखँन तयार ।
 परमाहु^{१५} जलनिघ पाट, घेरीयें लंका घाट ॥१०८८

१ मंत्रियों से । २ सजाह । ३ गोत्र । ४ मकुन । ५ साक्षी । ६ अभिलाषा = इच्छा । ७ ज्वाला । ८ नयानक । ९ पर्वत । १० विजली । ११ मांसाहारी । १२ साज । १३ ज्योतिर्हीन = प्रकाशरहित । १४ सेना । १५ परिखा = खाई ।

सुन लखँन बांनी छाँन, ऊठ भये दल-अगवाँन ।
 बंदरी-सँन बुलाय, सासना^१ दीन सुनाय ॥१०८६
 सुग्रीव रघुवर संग, ऊठ कवच पहरे अंग ।
 वेला^२ सु विजय बिचार, तँहां कीन धँनु-टँकार ॥ १०६०
 अनभीत^३ लंका और, चाले सु डेरा छोर ।
 सभ बिभीखँन सुग्रीव, नल नील दीय रन नीव ॥१०६१
 सुत-पवन लछमन संग, अरु जांमवंत अभंग ।
 ये राँम पीछें आय, संदोह^४ करत सहाय ॥१०६२
 चाले सु रन कर चाह, अनभीत जीत ऊमाँह ।
 कपि रिछ्छ कीय किलकार, हमगीर-दल^५ हलकार ॥१०६३
 धर ढकत ऊठत धुँध, रज आभ मारग रंध ।
 कोऊ गहत सैल कठोर, त्रन^६ जेम तरवर तोर ॥१०६४
 बढ चले कपि तिह बेर, गढ लंक लीनी घेर ।
 केऊ पतन^७ पहुँचे कोट^८, अर रहे राखस ओट ॥१०६५
 खाई सु ऊँचे खोम^९, धरहरत जामह धोम ।
 वँह उत्तर-द्वार ऊतंग, श्रीराँम लछमन संग ॥१०६६
 पहुँचे सु ताही पौर^{१०}, थित लंकपति की ठौर ।
 दल नील पूरब-द्वार, लै दुबिद मैद^{११} ही लार ॥१०६७
 पहुँचे सु अत परचंड, अत साथ फौज ऊमंड ।
 अंगद सु दछछन और, पहुँचे सु ताही पौर ॥१०६८
 गज रिखभ संग गवाख^{१२}, लै गये लसकर लाख ।
 अर-रहे^{१३} कीस अँनेक, हुंकार करत हरेक ॥१०६९
 पर जंघ तरस पलाय^{१४}, ए संग हँनमत आय ।
 पहुँचे सु पछ्छम पौर, अनगँनत कपि-दल और ॥११००
 मढ के गुल्म-मभार, सुग्रीव करत सभार ।
 लै चपल बंदर लार, प्रेरत प्रचार-प्रचार ॥११०१

१ शासन = आज्ञा । २ वेला = समय । ३ निर्भय । ४ समूह । ५ अग्रणी ।
 ६ तृण । ७ पत्तन = नगर । ८ किला । ९ गुरज । १० द्वार । ११ मयन्द ।
 १२ गवाक्ष । १३ अड़ रहे । १४ दौड़कर, शीघ्र ।

सुत खबर करत सहाय, जहाँ-तहाँ जिह ढिग जाय ।
 छतीस कोट चलाक, कपि संग ले यक जाक ॥११०२
 कपि-ईस कौ ईह काँम, जिह करत आठौ जाँम ।
 लछमन बभीखँन लार, दल भेज-भेज दवार^१ ॥११०३
 जँहाँ देख जैसौ जोग, पुन हुकँम करत प्रयोग ।
 संग जाँमबंत सुखँन, समरथ्य नै संग सैन ॥११०४
 पति-श्रवध राखत पीठ, देखत सु चहुँ दिस दीठ ।
 बंदरी-सैना बीर, पुर लँक दीनी पीर ॥११०५
 वपु^२ सिंध-सम^३ बिकराल, कट-कटत दंत कराल ।
 कर भृकुटि बंक करूर, जम-अंख वदन जरूर ॥११०६
 पुन कोऊ नचावत पूँछ, अम्भार बारन अँच ।
 ऊरजस्त हस्थि अथाह, बल बंदरन बेवाह ॥११०७
 ऊमड़े सु लंका शोर, जिम टिड़ीयन-दल जोर ।
 चालंत मिल पदचार, कूदंत कर किलकार ॥११०८
 आकास-मग्न अछेह, खित ऊठी माँनहु खेह^४ ।
 गढ लंक दुस्तर गौन, पंछी न पावत पौन ॥११०९
 ईम घेर कं चँहुँ शोर, घहराय कपि घनघोर ।
 लुठे सु बंदर रीछ, बढ त्राह^५ लंका-बीच ॥१११०
 बिकराल राँम-वरुथ^६, जम-जाल जूथप जूथ ।
 घेरघौ सु पत्तन घूम, भर श्रोघ चँहुँ दिस भूम ॥११११
 परखा सु पाटत पूर, कर चूर कोट कँगूर ।
 केऊ तोर फोर कपाट^७, घल घेर वाटन^८ घात ॥१११२
 जह खड़े रघुवर जाय, जाजुत्य^९ फौज जमाय ।
 मंत्री विचर्खन मेल, बोले बभीखँन बेल ॥१११३
 करतव्य है कहा काज, सो कहहु कीस-समाँज ।
 जँहाँ खरे सब कर जोर, अवलोक रघुवर-शोर ॥१११४

१ शर । २ वपु = शरीर । ३ सिंधुसम । ४ यमराज, दोनों । ५ किति = पृथ्वी ।
 ६ पुनि । ७ आस = नय । ८ राम-सेना । ९ कित्याड़ । १० वाट = मार्ग ।
 ११ जागृत्य ।

त्रिभीत तुम रघुनाथ, सब नीत में समराथ ।
 अरजी सु हमरी येहु, दल जुद्ध सासन देहु ॥१११५
 ईह लक थाल ऊथाल, जल-रासि करहैं जंबाल ।
 रांवना रोपै रार, कांमना मंड करार ॥१११६
 भेजीयै अंगद भींच^१, निज राखसिद्र नगीच^२ ।
 कहि ऊचित बात करूर, जुध काज होय जरूर ॥१११७
 आवै सु बाहिर ऐन^३, सब घेर लैहै सैन ।
 सकुटंब करहि संघार, पति-लंक खेत^४ प्रचार^५ ॥१११८
 सुन मंत्र मंत्री साथ, रुच पाय कै रघुनाथ ।
 बढ चलयौ अंगद वीर, ह्वै लंक दिस हमगीर ॥१११९
 जब नमस्कृत^६ कर जोर, रघुनाथ कीय तज रोर ।
 बोले सुरांम बिचार, द्रुत जाहु रांवन-द्वार ॥११२०
 हम कहत जैसे हाल, कह देहु सोई ततकाल ।
 खल अबहु चाहत खेम, तन जीयत मुरदा तेम ॥११२१
 ऐस्वर्ज^७-हीन अज्ञान, सिर चढी मीच^८ समांन ।
 रिखी देवता गंधर्व, सर्पादि अफछर^९ सर्व ॥११२२
 कीय बैर कर्मा-क्रूर^{१०}, जिह लग्यौ पाप जरूर ।
 मुहमेज^{११} धोबहु मल, गहि लेहु जँम-पुर-गैल ॥११२३
 बोये सु जैसे बीज, तरु फलयौ ग्रेह तुमीज^{१२} ।
 भोगहु सु बैठे भौन^{१३}, ईह समय पहुँच्यौ आंन ॥११२४
 अह^{१४} हरी त्रीय अरधंग, अत मोहि दुर्बल अंग ।
 तोहि दंड दैन तपाय, ऊभे सु फाटक आय ॥११२५
 मतिमंद त्यागहु मोह, कल-बेर^{१५} भूखन कोह ।
 सो सभहु आप सरीर, प्रसमनन^{१६} ह्वैहै पीर ॥११२६
 महरिखी मँनुजन मार, पद दयौ ऊचत प्रचार ।
 पद लेहु वँह हम पास, ऊर राज की तज आस ॥११२७

१ राक्षस । २ पास । ३ अयन = घर, स्थान । ४ युद्धक्षेत्र । ५ ललकार कर ।
 ६ नमस्कृति । ७ ऐश्वर्य । ८ मृत्यु । ९ अप्सरा । १० क्रूरकर्मा = दुष्ट ।
 ११ सम्मुख । १२ तुम्हारे । १३ भुवन । १४ हमारी । १५ युद्ध ।

बिन स्याहि^१ मेरी बाँम, कीय हरन अनुचित काँम ।
 बलवाँन बन पुर बीच निज ग्रेह बैठो नीच ॥११२८
 बल वँही देखन बीर, आये सु होय अधीर ।
 बल बीसभुज बतलाय, अतताई^२ सनमुख आय ॥११२९
 तेरो सुभ्राता त्याग, लीय सरन सो पद लाग ।
 सुख राज भोगहि सोय, खल मरहु भुज-बल खोय ॥११३०
 लै सीया सरनों लेत, दत जीव तुम हम देत ।
 अब होहु सनमुख आय, बाँनक^३ सु बीर बनाय ॥११३१
 लै पाँख अंग लगाय, जो कँहँ दिस ऊड़जाय ।
 तऊ ढूँढ माँरहि तोहि, हम द्रष्ट-गोचर होय ॥११३२
 परलोक-हेत प्रयोग^४, जो करहु अवसर-जोग ।
 ईह लंक-पुर फिर आय, नही देखहौ नीयराय ॥११३३
 बिध दयो सो बरदान, ह्वै गई ताकी हान ।
 कीय चोर-कर्म कुभाय^५, तीय-हरन की अत-ताय ॥११३४
 सुन राँम अंगद सीख, ऊड़ चले मग अंतरीख^६ ।
 बहु राँम कर विश्वास, पहुँचे सु राँवन पास ॥११३५
 सब मंत्रीयन संजुक्त, अंगद प्रकासी उक्त ।
 सुन राखसिद्र सधीर, बिख्यात अंगद बीर ॥११३६
 पितू बाल^७ मोहि प्रसिद्ध, सुत ताहि लखहु सनिद्ध^८ ।
 जाँन्यौ न ह्वै तौ जाँन, पति-अवध-दूत प्रमाँन ॥११३७
 प्रेरचौ सु तेरे पास, सुन लेहु मम सम जास ।
 तै हरी रघुबर-तीय, पतिवृता जाके पोय ॥११३८
 दल लेय पत्तन-द्वार, रघुनाथ जाचत रार^९ ।
 निज भवन तज निर्लाज, कल करहु जमपुर काज ॥११३९
 वंभव सु लंक वसात, भोगहि वभीखन भ्रात ।
 रुठे सु रघुबर रार, सकुटंब करहि संघार ॥११४०

१ सहायता । २ आततायी । ३ वेप । ४ प्रयोग । ५ कुभाव=बुरी भावनासे ।

६ अन्तरिक्ष=आकाश ; ७ वाली ; ८ सन्निधि=समीप ; ९ युद्ध ।

ईह कही अंगद उक्त सुन मंत्रीयन संजुक्त ।
 जब कहे राम जबाब, सोऊ कहे ताहि सताब ॥११४१
 सो सुनत ही दससीस, पर जरचौ दंतन पीस ।
 बोल्थौ सु सुभटन बीच, नहि जाय बंदर नीच ॥११४२
 गहि लेहु येह गवांर, बरजोर याही बार ।
 सुन बचन रांवन सौंन, ऊठ सुभट भुज-आजांन ॥११४३
 भूमै सु अंगद भेल, परचंड पौरुख पेल ।
 ईत भिरचौ अंगद येक, ऊत च्यार भट अबिबेक ॥१०४४
 पद गहत कोऊक पांन, भिर परे जुद्ध भयांन ।
 भकभोर पिड^१ भूपेट, चल चंड मार चपेट ॥११४५
 धसमसत धरनी धूज, ऊर स्वांस भरत श्रमूंज ।
 चैमकंत अंगद छांह, बजुला सु वारी बांह ॥११४६
 राखसन कारे रंग, अंगद सु पीतन अंग ।
 घन दामनी^२ जिह घेर, बढ चली दुत^३ तिह बेर ॥१०४७
 बपु तेज नंदन-बाल^४ जनुं धूम घेरै ज्वाल ।
 भुज-जुद्ध भिरेऊ भयंद, ईह रीत बीच अलंद^५ ॥११४८
 बहु सभासद तिह बेर, ह्वै गये चकत^६ हेर ।
 फिर लगी केतन फेट, हहराय पर गये हेट ॥११४९
 अंगद लख्यौ बल ऊढ, मन भयौ रांवन मुद्ध^७ ।
 जुवराज बल जम जेम, आपौ दिखावौ ऐम ॥११५०
 ऊछल्यौ सु मग-अकास, पर सुंभट रांवन पास ।
 चढ महल सिखर चछोह, कीय महां दारुन कोह ॥११५१
 जिह राज-मन्दर जात, लागी सु ऊपर लात ।
 फट गयौ जैसे फूट, तर परे गुंमज तूट ॥११५२
 बपु बाल-सुत बलकार, कूँध्यौ^८ सु कर किलकार ।
 पुन आय रघुबर पास, बल लंकधीस बिनास ॥११५३

१ शरीर । २ दामिनी = बिजली । द्युति = कांति, चमक । ४ वालि-नंदन = अंगद ।
 ५ राजसभा । ६ चकित । ७ मुग्ध, मूढ । ८ कूदा ।

कहि आपनी कुसलात, बीती सु कीनी बात ।
 सुन मंत्रीयन सबैत, श्रीरामचंद्र-सहेत ॥११५४
 लंका सु पत्तन लूम, भर रीछ बंदर भूम ।
 साँमुंद्र सैन समिट, बीटचौ^१ सु जैसै बिट ॥११५५
 चित चाह आपौ^२ छोर^३, हद^४ लोप लैन हिलोर ।
 निश्चर ढबोवन नीर, बढ लहर ज्यूं कपि बीर ॥११५६

दोहा

जमी सैन रघुनाथ जब, लंका चहुँ दिस लूँढ ।
 श्रौंन-बीस राँवन सुनी, वाढी निसचर बूँब ॥११५७
 गिरचौ राज-मंदर-गुंमज, कोलाहल कीय कीस ।
 परी बूँब लका-पतन, सुन श्रौंनन दस-सीस ॥११५८
 कपि सुखैन दुर्धर्ष कपि, दुपि-सम^५ जिनकी देह ।
 घेर लंक धूमन लगे, चारु दिसा अछेह ॥११५९
 गर्जत तर्जत लंक गढ, भूप राँम के भींच ।
 सोभा लसत सुग्रींव की विधु^६ जिम तारन^७-बीच ॥११६०
 परखा सहर पनाह^८ की, तोय-रास की तीर ।
 गिर किंदर ऊपवन गहन, भई वंदरन भीर ॥११६१
 पुर-रक्षक राँवन प्रतै, कही लखी जिम कथ्य ।
 कपि-दल सौं घेरचौ करचौ, श्रौरघुबीर समथ्य ॥११६२

छंद हरगीतका

सुन कीस घेरचौ बीस-श्रौंनन, पीस दंतन पाँन कौं ।
 फर रीस कोप्यो काल-सम कर-बीस रूप क्रसाँन^९ कौं ।
 चढ धवरहर^{१०} पं होय चक्रत दीठ वक्रत देखने ।
 वैन श्रौर ऊपवन बीच वंदर लग समंदर लेखने ॥११६३

१ चेटित शिवा, घेर लिया । २ अपनापन । ३ छोड़ कर । ४ सीमा । ५ द्विपसम =
 हाथी के समान । ६ चंद्र । ७ नक्षत्रों के । ८ रक्षा, शरण । ९ कृशानु = अग्नि ।
 १० मरुत ।

अरवगाह जुद्ध उछाह^१ सौं बेबाह^१ फौज करी बिदा ।
 वंहि जाहु गहि कै वेग-बल कहि कीस नहि पहुँचै कदा ।
 ईक रूप सीय कर ऊभय आसा नई अनई^२ नेम की ।
 मिल सभय बाढी चटपटी मन ऊभय खेम-अखेम की ॥११६४
 ईत राँम दीनी जुद्ध-अग्या बंदरन जिह बेर में ।
 पति लंकहु बहु सैन पेली घनी घूमर धेर में ।
 ईत राँम के जोधा अरे प्राकार^३ परखद^४ पाटन ।
 ऊत सुभट राँवन आय कै दल कीस लागे दाटन ॥११६५
 गिर-श्रंग लै ईत कीस गर्जत तोर तरवर तेख सौं ।
 कंगू गढ कोऊ ऐच करखत^५ धोम बखंत^६ घेख सौं ।
 बढ चली सैना बंदरी गढ कोट गटेह गली-गली ।
 निश्चरन सैना बढी निर्भय थंभ पाँव थली-थली ॥११६६
 जय कहत राँम घने जने जय लखन बोलत जोर सौं ।
 दिस-बिदस पूरत होय द्रढ सुग्रीव जय की सोर सौं ।
 कपि गर्जना जिम केहरी किलकार कर-कर कूद कै ।
 प्राकार गिर आकार पौरन रूपे चहुँ दिस रुध^७ कै ॥११६७
 जहाँ बीरबाहु सुनाहु जूथप पँनस नल बल पेल कै ।
 दिस-बिदिस कोट दबाय कै भुक मोर चालीय भेल कै ।
 बढ कै सकंधावार^८ लौ घेरे सुनिश्चर घूम कै ।
 भट राँम के ठाढे भये भर ओघ राखस भूम कै ॥११६८
 प्राची सुदक्षन कौन पर कपि कुमद लै दस क्रोर^{१०} सौं ।
 कपि प्रसभ ताहि सिहाय कौं महाँबाहु पँनस मरोर सौं ।
 दक्षनहू पश्चिम-कौन द्रढ सत बली जूथप सालुरे ।
 कपि बीस कोट अगोट करकस^{११} जोट बाँध भरे जुरे ॥११६९
 पछंमहू उत्तरकोन पै तारा सु पितु सतबलि तहाँ ।
 ईक कोट बंदर संग ऊमड़े जुद्ध के कारन जहाँ ।

१ अग्रणित । २ अनीति । ३ कोट । ४ खाई । ५ कर्षत = खींचते हैं । ६ वर्षत ।
 ७ रुद्ध = रोककर । ८ स्कन्धावार = राजकोट । ९ समूह । १० करोड़ । ११ कर्कश ।

ऊत्तरहू पूरव ओर के पुर-पौर पै श्रीरघुपती ।
 जहाँ बभीखन चहुँ मंत्रीयन-जुत जुरे लछमनहू जती ॥११७०
 सुग्रीव ईनहीं सहाय कौं जुध करन कौं दल जोर कै ।
 जम-जाल-सम क्रम^१ रोप गिर जिम अरे रूप अरोर कै ।
 महाँकाय जूथप जहाँ मिले गोपुछ्छ-संग गवाछ लै ।
 ठहराय पग ईक ओर ठहरे ऊपल तरवर आच लै ॥१०७१
 रिछपती धूमर संग रिछ्छन दूसरो दिस दाट कै ।
 ईक कोट लेय अनीकनी^२ बढ ठौर लंका-बाट कै ।
 गज गवय-सभंह गध-माँदन ईनहि आदन औरहू ।
 सब कटक काँ संभार साधन द्रुत लगावत दौरहू ॥११७२
 पुर लंक कौं पीड़ित करचौ घन घोर कीस घुमंड कै ।
 रुप रही सैन ऊमंड राघव मेर^३ पाँवन^४ मंड कै ।
 पति लंक सुनत ऊछंड भटपट सैन बोल निसाँचरा ।
 गत-लोल बाँधहु गोल गह मह तोल खग रन-ततपरा ॥११७३
 सुन लंकपति सासन निसाँचर दिसा-विदसा दल मिले ।
 कल-मले चल-चल जुद्ध-कारन भिलम धारत भिलमिले ।
 घनघोर सब कठोर घहरत हुरर मिधु हिलोर की ।
 आनक अवाजन वीर वाजन संख साभन सोर की ॥११७४
 हुव नाद भेखन^५ हयन-हेखन^६ गज-विसेखन गाज की ।
 पर आस जास अकास पूरत येक रूप अवाज की ।
 निर्घोक^७ होयत रथन नेमी^८ तान धनु दे टंकरा ।
 जम-जाल मानहू कटे जाजुल बडे राखस बंकुरा ॥११७५
 घानन गु संगन मिल असंखन रवेत रंग सुहावनै ।
 तन नील जिनके भर तँमोगुन धेख कर लग धाँवनै ।
 ईम लंकपति सेना ऊमंडी वान वरसन अतबली ।
 सुग-पंत^९ संसुत बीजुरी मंड मेघमाला ज्यूं मिली ॥११७६

१ संघ । २ भेता । ३ मेर = पर्वत (सुमेर) । ४ पंरों की । ५ वानर ।
 ६ भेखन । ७ निर्घोक = शोरी या हीमरी । ८ निर्घोक = धरति । ९ नेमिपद्वि
 की पुत्री । १० बहवर्षिक = बहुवर्षी की वानर ।

मुहमेज होय मजेज सौं न हिजेज कोनी निश्चरा ।
 कर नांद केहर कपि करोरन भद्^१ से हर जिम भिरा ।
 जय-जयत श्रीरघुनाथ जंपत जयत लछमन ज्याँनकी ।
 सुग्रीव जय-जय सह सुनीयत हाँक-धुन हनुमाँन की ॥११७७
 आवाज भेर अडंबरा गल गाज कपि-दल गह-गही ।
 रघुबीर-सेना रार कौं बढ बार-धारा^२ ज्युं बहीं ।
 अहिराय^३ सम कर तेख ऊर गहि राय-कपि घनघोर ज्युं ।
 बरसात भद्दर^४ गत बिसेकत लूंब बद्दर-लौर ज्युं ॥११७८
 महु वाल माँनहु मधुकरा^५ करवाल^६ परसत कै कुपे ।
 बिकराल आग बलाय बढ रन भाल मर्कट थट रूपे ।
 थित थाल जल जिम द्रंग थरहर आस परहर अंग कै ।
 गये कूँद कै कपि भाल गरहर रूप नरहर^७ रंग कै ॥११७९
 कर पाव घाव अनेक मर्कट दपट पटकत दौर कै ।
 कर रीस आयुध कर्बुरा^८ मिल कीस लेत मरोर कै ।
 जुर केक जंग अभंग जोधा चोट दै दै चटपटी ।
 ऊड़जात कीस अलंग कौं भारत फलंग^९ सु मर्कटी ॥११८०
 कोऊ ऊपल लै लै कंगुरन के पुंन्यजन^{१०} पै परहरै ।
 तन ताक सिर केऊ दसन^{११} तोरत असन^{१२} माँनहु औसरै ।
 कोऊ चरन पकरत कंधरा^{१३} कोऊ करन सौं गहि कैसे कै ।
 पुन दै चपेटन धरन पटकत खंभ-ठोरत^{१४} खेस कै ॥११८१
 कोऊ भुजा-जुद्धु करत है ऊर क्रुद्ध दुद्धर ऊफ्फनै ।
 निश्चारु अरु बँनचार निर्भय रार लागे रूपनै ।
 धमचक्क धक्कन धर धुकी दिक्करी पावन डोलनै ।
 कररक्क रीढक कँमठ की वररक्क लागी बोलनै ॥११८२
 कलहाक हाकन कर कजाकन मेल दल घमसाँन कै ।
 समसमस भ्हाकन सैल-साखन ऊमड़ लाखन आँन कै ।

१ भाद्रपद मास । २ वारि धारा । ३ सर्पराज । ४ अद्रि = पर्वत । ५ अमर ।
 ६ तलवार; धूँआ । ७ नरहरि = वृसिंह । ८ राक्षस । ९ फलंग । १० पुष्पजन =
 राक्षस । ११ दशन = दाँत । १२ मुख । १३ शीवा । १४ जाँघ ठोकना ।

कर खग खेटक^१ लयै करबुर घाव देत घने-घने ।
 कपि लै कषाटन अर्गला फट जोर तौर जने-जने ॥११८३
 उत साँग लै ईत थंभ आटन घाट घाटन घेर में ।
 सर-चाँप उत ईत ऊपल सरसत जूँभ रन ऊर भेर में ।
 पुन भयौ हाहाकार पत्तन भीर लख कपि भाल की ।
 मिल भाँसनी सब हाथ मीजत बूँबरी^२ बढ बाल की ॥११८४
 पर्वताकार प्रचंड पौरुख रिछ्छ कोस रिसाय कै ।
 सिल प्रबल बरखा करी घन-सम भेल द्रछ्छ भुकाय कै ।
 फिर दौर-दौर चपेट फेटन लै लपेटन लूम कै ।
 नख ऊदर सौँ अंतन^३ निकासत भोक दंतन भूम कै ॥११८५
 अत प्रबल जुद्ध भयौ ईहीं प्रथमै सु सहर पनाह पै ।
 निसचार अरु बनचार निज-निज रूपे अपनी राह पै ।
 हौनै सु लागौ बिजय-हित दृढ दूँद-जुद्ध दुहँन कौ ।
 खग धून कै लै श्रोत खेटक क्रमत च्यारहु कून कौ ॥११८६
 सिल मेघनाद मरोर मुख्छन आय अंगद आहुरचौ ।
 रव करत घोर रचाय कै भव^४ अंधकासुर जिम भिरचौ ।
 दुरधरु अरु संपात कपि दोऊ जुरे खल पर जंघ सौँ ।
 महँवली राक्षस जंबुमाली जुटचौ रन बजरंग सौँ ॥११८७
 खल सत्रुघन जुटे बभीखन गजतपन अवगाह कै ।
 कपि नील भिरेऊ निकुंभ सौँ सुग्रीव प्रघस समास्कै ।
 विरुपाक्ष लछमन अरे रन-बिच करन धँनुं लै बाँकुरा ।
 पति-अवध औ लंकापुरी-पति ऊभय जय के आँकुरा ॥११८८
 रस्मीय^५ केत रिसाय कै ज्युँ अग्नि केतहु जाँनीयै ।
 जिग कोप अत दुरधरु जाजुल मित्र घन परमाँनीयै ।
 श्रीरामचंद्र अरे जु संगर लाज लंगर लाय कै ।
 जय खंभ जंग असंभ जुरकै प्रबल थंभे पाय कै ॥११८९

१ शान । २ रोने की आवाज । ३ अन्तडियां, आँतें । ४ शिव । ५ रश्मि =
 किररा ।

मिल मैद^१ सौं रन बज्रमुष्टी असन-प्रभ दुबिःहू अरे ।
 अत घोर प्रतपन नल अरे कपि संग लै ऊत कर्बुरे ।
 सभ खेत कीस सुखेन सौं बड़ बिदमाली विफुरचौ ।
 रन रूठ कै कपि और राखस कदन^२ दोऊ दल करचौ ॥११६०
 बिब^३ और राखस बंदरन कौ घोर जुद्ध भयो घनौ ।
 पर गये धरनी प्रांत परहर^४ जूझ खेत जनौ-जनौ ।
 धर रजी^५ दब गई श्रौन धारा^६ मांस-कर्म^७ मांच कै ।
 सभ ऊभय संगर बीर सम-सम जोर जम-जम जाच कै ॥११६१
 घन नांद अंगद बीर के घट गदा मारी गाज कै ।
 लर थरचौ अंगद गदा लागत ऊठ्यौ करत अवाज कै ।
 लै गदा अगद लार लाग्यौ मेघनांद मिलाय कै ।
 भारी गदा जिम आग भूहरत आच^८ सौं अजमाय कै ॥११६२
 सोबर्न-रथ चूरन भयो सब सूत^९ घोरा^{१०} संघरे ।
 आकास उड़ घननाद ऊबरचौ प्रांत कौ संसय परे ।
 सपात कपि पर-जघ दै सर^{११} अरचौ सनमुख आय कै ।
 संपात लै कर गदा समल्यौ दाव घाव दिखाय कै ॥११६३
 महाँ क्रोध करकै जबुमाली हाक रथ हनमंत कै ।
 मुख बक्र कर ऊर चक्र मारचौ उक्र पोसत दंत कै ।
 हनमंत रथ चढ हेर कै बढ लात दीय जिम बीजुगी ।
 कीय ध्वंस ताकौ रथ कलेबर सूत अस मिल सर्करी^{१२} ॥११६४
 निश्चरा प्रत-पन आय नल पै बाँन सारे अत-बली ।
 नल दौर कै मिल भर नख काढ़े सु चख^{१३} कीयन कली ।
 रन रूठ कै तहाँ प्रघस राखस लीलनै^{१४} सैना लग्यौ ।
 ईक वृछछ लै सुग्रीव ऊमड़े भेंट होवत ही भग्यौ ॥११६५
 बिरुपाख कौ लछमन बिड़ारचौ घोर दर्सन घेर में ।
 कपि देख कै लछमन पराक्रम बड़े संगर बेर में ।

१ मयंद । २ युद्ध, मारकाट । ३ दोनों । ४ त्याग कर । ५ धूलि । ६ रक्तधारा ।
 ७ कीचड़ । ८ हाथ । ९ सारथी । १० घोड़े । ११ शर = बाण । १२ धूलि ।
 १३ चक्षु, आँखें । १४ निगलने ।

अग्नीहू रस्मीकेत^१ अरु जिग कोप सत्रुधनहू जिते ।
 रघुनाथ मारे रीस कै रन ऊबरे न भिरे ईते ॥११६६
 मूकान मारचौ बज्रमुष्टी कीस मेंद करार सौं ।
 रथ गिरचौ धरनी होय रज-रज मरे धीरा मार सौं ।
 मिल कै निकुंभ सुनील मर्कट रार कीन रिसाय कै ।
 घन करचौ घायल नील कौ घट बाँन सत वरसाय कै ॥११६७
 रूप रार नील रथांग^२ कौ डारचौ सुतोल डराँवनौ ।
 सिर रथी कटकै स्वारथी^३ जुग भयो जँमपुर जाँवनौ ।
 बपु बज्रसपरस दुविद बंदर असनप्रभ राकस अरचौ ।
 सर असन-प्रभ दै वज्रसम कछु दुविद कौं घायल करचौ ॥११६८
 तरु तरल साँखू^४ लेय तर्मक्यौ दुविद दौर दबाय कै ।
 कीय खंड-खंडन दै प्रकंडन मरचौ मन मुरभाय कै ।
 सोबर्न सभक्त सतांग^५ पै चढ बिदुमाली चाल कै ।
 सोबर्न भूखत चाँप धर सर भरत अयमय^६ भाल कै ॥११६९
 तहाँ दई मार सुखैन कै तन बर्ख कै बाँनावली ।
 हस भयो हर्षत पर्ख^७ हित-कौ चर्ख काल महाँछली ।
 ऊतकर्ख^८ श्रंग ऊठाय कै मारचौ सुखैन मिलाय कै ।
 रथ करचौ चूरन महाँरथी रन रुप्यौ कूद रिसाय कै ॥१२००
 तिह वच्यौ देख सुखैन तरक्यौ सिला लै कर संमुहा ।
 महाँक्रोध कर फिर बिदुमाली गदा लै द्रढ बल गहा ।
 मारी सु ऊर पग मंड कै लागत सुखैनहु ना-लट्यौ^९ ।
 मारत सिला कै बिदुमालो फेफरा कालज फट्यौ ॥१२०१
 गिर स्रङ्ग ज्यौं सोऊ धरन गिर गये गौंन कीय जमग्रेह कौं ।
 लागे सुगिद्धत चाँच लौंचन^{१०} दौर जंबुक^{११} देह कौं ।
 भय दुंद-जुद्ध भयंकरा राखसहु वंदर रूठ कै ।
 चहुं ओर भूत बिताल नाँचत केऊ कवंधहु ऊठ कै ॥१२०२

१ रश्मिकेतु । २ पहिया । ३ सारथी । ४ शाखा । ५ रथ । ६ लोहमय ।
 ७ देस कर । ८ उत्कर्ष, विशाल । ९ नहीं गिरे । १० नीचने । ११ शृगाल ।

जूभे सु दानव-देवतन जिम कीस-राखस क्रुद्ध में ।
 मुरदाँत छाई बसुमती^१ मिल जूभ जागा जुद्ध में ।
 केऊ परे तूट तुरंग परखर काय भाखर कुंजरा^२ ।
 खिर परे खर जहाँ ऊँट खच्चर रथ-रथी जूरा-जुरा ॥१२०३

दोहा

जुद्ध भयो अत प्रबल जँहाँ, राखस बंदर रूठ ।
 भट केते धायल भये, पाछी दई न पूठ ॥१२०४
 दुंव-जुद्ध होवत दुसह, सूरज गयो सुमेर ।
 लटे कीस हरखन लगे, बढ राखस जिह बेर ॥१२०५
 साँभ अंत भई सर्वरी^३, अत तम^४ गुन ईधकाय ।
 ऊमडे निसचर सभ अनीं, समर-हेत सरसाय ॥१२०६

छंद त्रोटक

दुरघो असताचल ओट दिनेस, बढघो तम च्यारहुँ ओर बिसेस ।
 सिवा^५ मुख ऊक कढी रब संग, मृगादन^६ कोकत^७ घोक ऊमड ॥१२०७
 कहुँ मृदु-लोमक^८ सह करंत, ज्युंही मृग-दंसक^९ बोलत जंतु ।
 चडी नभ पिगलका^{१०} चहकात, दिबाँधक^{११} बायस^{१२} भीत दिखात ॥१२०८
 मिले प्रतिरोधक^{१३} जारन^{१४} मोद, चुरैलन भूत जगे चहुँ कोद ।
 नल्लखत्रन-जोत मिली कहुँ नैन, बदे तिह बेर भयंकर बैन ॥१२०९
 पलादन^{१५} जोर बिभावरी^{१६} पाय, ऊमडेऊ आयुद्ध ल अनखाय ।
 गही बँनचारन की तिन गील सपक्षहु धावत माँनहु सैल ॥१२१०
 मिले फिर सकँट कल्प^{१७} महेस, भुजंगम पूँछ मरोरत भेस ।
 भिरे भट संगर रूप भयान, निसांचर कीस भये जल लौन ॥१२११
 रूपे निसचारीय मेचक^{१८} रंग, अरे रन भल्लुक कोस अभंग ।
 ईतें जय राँम पुकारत आस, ऊतें जय राँवन की अभिलास ॥१२१२

१ पृथ्वी । २ हाथी । ३ शर्वरी = रात्रि । ४ अंधकार । ५ शिवा = शृगाली ।
 ६ जरख । ७ बरगड़ा । ८ खरगोश । ९ वनबिलाव । १० भँरवी = चिड़िया ।
 ११ उल्लू । १२ कौवे । १३ चौर । १४ परस्त्रीगामी । १५ राक्षस । १६ रात्रि ।
 १७ प्रलय । १८ काले ।

उभै दल मारहि-मार ऊचार, बढै ईक-ईकन बीर बकार ।
 महाँ भयकार बर्यौ अवमह^१, सबै दिस होत कुलाहल^२-सह ॥१२१३
 न देवत पीठ निहार-निहार, रचावत रीठ मचावत रार ।
 जँभोरत कंध मरोरत जोर, करै रन दावहु घाव करोर ॥१२१४
 मड़ी निसचारन आयुध मार, डहै कर कीस तरोवर डोर ।
 ऊखारत श्रंगन पाँन अमेठ, फलादय^३ भौर लगावत फेट ॥१२१५
 वढे दल बंदर आग बलाय, पलादन जूहन-जूह^४ पलाय ।
 क्रमे केऊ कातर कूह करंत, भयातुर होय ऊसास भरंत ॥१२१६
 अरे रन नैरत सूर ऊमाह, सुबर्न के भूखन भीर सनाह^५ ।
 ऊजासत भासत बीच अंधार, प्रकासत ओसधि जाँन पहार ॥१२१७
 वढे तेऊ बंदर के दल बीच, मरोरत कंध मिलावत मीच ।
 जहाँ केऊ बंदरहू कर जोर, लगावत लातन गात लथोर ॥१२१८
 चलावत बंदर केक चपेट, फलादय कंटक की फरफेट ।
 जरे रथ हाटक^६ के जर जाल, भरे रिस धूमत भूमत भाल ॥१२१९
 मलप्पत कीस ज्युँहीं मृगराज, गयंदन कंधन ऊपर गाज ।
 हड्डत बाजन^७ की सुन हेख^८, प्रहारत पाखर की दुति पेख ॥१२२०
 लथोरत लूम लपेट लगाय, तुरंगीय जंगीय के तरकाय ।
 चढे रथ ऊपर कीस कजाक, करै धुजडंडन खड कजाक ॥१२२१
 दकूलन^९ भूल फटै नख दाँत, भूमै ऊड़ ऊपर भाँतन-भाँत ।
 जगै जर-तारन मौतिन-जाल, मिली नभ जाँन नछ्छत्रन-माल ॥१२२२
 विडारहु मारहु बोलत बाँन, मरोरत मुठुन सोत्रन-म्याँन ।
 कटै कपि चाप कलाप कलम्ब^{११}, प्रनासत तोमर^{१२} साल प्रलंब ॥१२२३
 संमेटत लेत सक्कतीय सूल, कटै पर-घातन^{१३} ह्वै प्रतकूल ।
 मड़ी कपि श्रंग ऊतंगन मार, धधुंनत मुकून धुकून धार ॥१२२४
 लगावत लातन घातन लोट, चपेटन हाथन की चल चोट ।
 विहव्वल राखस ह्वै विचलाय, परामुख भागेऊ हूर पलाय ॥१२२५

१ अवमह = महायुद्ध । २ कोलाहल । ३ वृक्ष । ४ भुंड के भुण्ड । ५ राखस ।
 ६ सनाह = वस्त्र । ७ स्वर्ण । ८ वाजी = घोड़ों । ९ ह्येपा = हिनहिनाहट ।
 १० दुकूल = दुपट्टे, वस्त्र । ११ चाण । १२ नाले । १३ लुहांगी ।

मुरे तेऊ आप बिचार प्रमीत^१, जुरे कपि भालन की लख जीत ।
 घनी फिर कीय नगारन घोर, सतावीय संख असंखन सोर ॥१२२६
 ठिले बहु राखस बाँधत ठाट, अडंबर-बाजन^२ कौ सुन आट ।
 जुरे तहाँ सैनक सैन जमाय, भरे बिख घोर भुजंगम भाय ॥१२२७
 हुई तब बाजन भेखत हेख, बड़े द्वीप गाज अवाज बिसेख ।
 भई निस रात्रीय काल भयान, मही सब छाया रही मुरदाँन ॥१२२८
 परं कपि राखस ऊपर पाँव, चले तऊ संगर कौ कर चाव ।
 रहे दल बंदर रोकत राह, पिले चल राखस बेपरवाह ॥१२२९
 भरी कीय राघव पै सर भोक, घनी कर चाँप टंकारन घोक ।
 ईतं रघुनाथहु चाँप ऊठाय, सनंकत^३ बाँन तजे सरसाय ॥१२३०
 जुरे बिब औरन बाँनन जंग, भृमैं भहरावत जाँन भुजंग ।
 बढ्यौ बहु बाँनन कौ बिसतार, अँधारीय रैन मही अँधियार ॥१२३१
 भरे तम आँखन में रज भार, डरे कपि ओट गहै तर डार ।
 बिसेखत देखत कोस बिहाल, तहाँ रघुनाथ बिचे रन ताल ॥१२३२
 गह्यौ धँनुं लस्तक^४ हस्तन गाढ, चुने सर लीन चिमंटीय चाढ ।
 लगे दल राखस जाय बलाय, सिखा^५ जँनु पावक^६ की सरसाय ॥१२३३
 मिल्यौ खल राखस को दल मीच, बढे रन-अंगन आयेऊ बीच ।
 मिली बज्रद्रष्टहु बाँनन मार, सोई दल राखस कौ सिरदार ॥१२३४
 घरचौ दुरधर्ष न नैक धरोज^७, खरे हुये नाहिन थंभेऊ खोज ।
 ज्युंही जिग-सत्रु असंभव जोध, बढावन राँवन-राँम-बिरोध ॥१२३५
 सहोदर औ सुकसारन मेल, खरे हुय नाहि करचौ रन खेल ।
 हले महाँ पारस मीजत हाथ, निहाँर कै पौरुख कौ रघुनाथ ॥१२३६
 जरे बहु राखस बाँनन-ज्वाल, मिलै जिम दीप पतंगन-माल ।
 सुवर्न के बाजन की सर सोक, ऊड़ै जिगनूँ जिम अँवर-ओक ॥१२३७
 रची अँधारीय पावस^८-रात, जुरे कपि भल्लुक राखस जात ।
 ऊठ्यौ रव दुंदभ कौ चहु ओर, घटा जिम गाज रही घनघोर ॥१२३८

१ मृत्यु । २ जुभाऊ बाजे । ३ सनसनाते हुए । ४ धनुष का मुष्टिभाग । ५ लौ ।
 ६ अग्नि । ७ धैर्य । ८ वर्षा ।

परे प्रतिसब्द पहारन पुंज, गुहारन किंदर ऊठत गुंज ।
 भई प्रज लंक महां भयभीत, गवावत नार अमंगल गीत ॥१२३६
 सोई निस ह्वै गई मांस समान, विमासत ह्वै कबहूँ न विहांन ।
 निसाँचर सेचक रंग निरेह, ईतै कपि नीलहु रिछ्छ अरेह ॥१२४०
 भयंकर दीसत है जिम भेस, करै नखमार गृहा-गृह^२ केस ।
 जहाँ बढ अंगद सौं बरजोर, मिल्यौ घननाद हू मुछ्छ मरोर ॥१२४१
 ऊभै भट वीर पराक्रम ऊद्ध, जुहारीय एक सौं एक न जुद्ध ।
 मड़ी तहाँ एक पै एक न मार, बिसेखन संजुत नाम वकार ॥१२४२
 रूप्यौ घननाद ऊतै पग रोप, करचौ ईत अंगद दारुन कोप ।
 मतौ कर मारन कौं मन-माह, चलयौ सँनीकखँ^३ जबै जय जाह ॥१२४३
 ऊतगन अंग ऊपार-ऊपार पटक्केऊ सीस प्रचार-प्रचार ।
 तुटे रथ स्वारथी और तुरंग, ऊड्यौ घननाद समेटत अंग ॥१२४४
 लुक्यौ नभ जाय गही मन लाज, सबै जय बोलत कीस-समाज ।
 बभीखन आदक औरहु वीर, सराहना अंगद कीन सधीर ॥१२४५
 जहाँ घननाद खिसाय जरूर, गरज्जीय फेर संभार गरूर ।
 वृहंमाँ^४ जास दयौ वरदाँन, अंगजित छाय हृदं अभिमान ॥१२४६
 ऊपाय कै मायक-जाल^५ अनेक, अनेकन ऊपर सज्जीय येक ।
 करी भर बाँनन की कर कोह, सबै हुव घायल कीस सँदोह^६ ॥१२४७
 करी भर आग अँगारन केर, बढी जल धार-रसा^७ जिह बेर ।
 धृवै घन-आश्रय^८ श्रोनिन-धार^९, श्रवै पल^{१०} कौंसक^{११} गोदरू^{१२} सार ॥१२४८
 परे ऊड धूर जँभोरत पाँन, पसाईय गोलक मार पखान ।
 पिसाँचनी साँकनी डाँकनी प्रेत, ऊचारत बानीय केक अहेत ॥१२४९
 न सक्हि एकन-एक निहार, ऊड्यौ दिस च्यारहु घोर अंधार ।
 भये वस मोह जबै कपि भाल, ऊचारत आरत^{१३} बाँन ऊताल^{१४} ॥१२५०
 सुकंठ की फौज लखी बिन-सुद्ध^{१५}, जबै रघुवीर वकारेऊ जुद्ध ।
 दये रघुनाथहु बाँन अदिष्ट^{१६}, सँभार के बोल मिलाय के सिष्ट ॥१२५१

१ प्रनात । २ ग्रहाग्रह = पकड़ा धकड़ी । ३ सन्निकर्ष = निकट । ४ ब्रह्मा । ५ मायिक-जाल = इन्द्रजाल । ६ समूह । ७ पृथ्वी । ८ घनाश्रय = आकाश । ९ शोणित-धारा = रक्तधारा । १० नांस । ११ हाट । १२ मजा । १३ आर्त्त । १४ उताल = ऊंचे स्वर से । १५ वेसुधि । १६ अदृष्ट ।

नहीं तन घायल भौ घननाद, बढचौ रघुनायक हीय बिखाद^१ ।
 ईहीं अवसान^२ कौ जाँन अभाग, भरे बिल-बाँन समाँन भुजंग ॥१२५२
 तजे रघुनायक पै कर तेख, बढे नभ-मारग आय बिसेख ।
 अनेकन देख बिचै असमाँन, सपक्षहु^३ तक्षक-ताग^४-समाँन ॥१२५३
 भयंकर जीह^५ दिखावत भाल, ज्युँही फिर तिखन^६ दाँतन-जाल ।
 भयंकर देखत ही कपि भाल, चलाय न जाय पलायन चाल ॥१२५४
 खरे रहे पुत्तरी जेम पखाँन, बढे तेऊ राघव पै अहि-बाँन ।
 सकोमल गात लगे सरसाय, भुजंगम भीम मनौ भहराय ॥१२५५
 भिदे तन राघव लछ्छन भाल, बिलछ्छन तिछ्छन दंत बिसाल ।
 बिलोकत राघव लछ्छन बीर, परेखत लछ्छन राघव पीर ॥१२५६
 बिचछ्छन श्रीरघुवीर बिचार, तत छिन जूथप कीन तयार ।
 सबै लख बात कही समुभाय, ऊबेल कौ कीजिये सिद्ध उपाय ॥१२५७

दोहा

कपि रिछ्छन अज्ञा करी, बेला कठन बिसेख ।
 मेघनाद आकास-मह, दुरचौ सु आबहु देख ॥१२५८
 अज्ञा सुन अवधेस की, ऊड़ चाले आकास ।
 सिल तरवर ले गुरड़-सम^६ पौहख करचौ प्रकास ॥१२५९

छंद पधरी

चाले हूँढन कौ सून्य^७ चूर, दस महाबली कपि दूर-दूर ।
 द्रढमति सुखेन के पुत्र दौय, हेरत तिन संगी नील सोय ॥१२६०
 बालि कै पुत्र अंगद बहोर, अरु सरभ दुविद आकास ओर ।
 हेरत पुन चाले हँनुमाँन, जुत साँनुप्रस्थ कपि रिखभ जाँन ॥१२६१
 नभ रिखभ सकंदहु बढे लार, सुत-राँवन कौ आपो संभार ।
 बाँनन सौ मारन लग्यौ बीर, भई सराजाल^८ आकास भीर ॥१२६२

१ विषाद = दुःख । २ अन्त । ३ पंखसहित । ४ तक्षक सर्प । ५ जिह्वा = जीभ ।
 ६ तीक्ष्ण । ७ गरुड के समान । ८ शून्य = आकाश । ९ वाण-समूह ।

कीर्ती दसहूँ दिस अंधकार, धरहरत जित हीं तित वांनघार^१ ।
 लख सके नाहि तिह अंग लेस, डुर रह्यौ जेम बादर दिनेस ॥१२६३
 घट राँम लखन के करत घात, दस दिसा नाग-सायक^२ दिखात ।
 वध परे पास में ऊमय वीर, सुध भूल गये आपन सरीर ॥१२६४
 पाँडे सर-सेज्या^३ पग पसार, बिव कमल-नयन तन मन बिसार ।
 रत श्रवत अंग में लखन राँम, सोवत तन गोरे और स्याँम ॥१२६५
 धननाद गजंजा करी घोर, बोल्यौ सु ऊच्च वाँनी बहोर ।
 मोही सौं भिर कै ईद्र मूढ, गम पाई माया नहीं गूढ ॥१२६६
 वपुरे^४ माँनव की कहा बात, भेजत जँमपुर कौं ऊभय आत ।
 ईह कहकै मारे वाँन और, दीनै रघुवर कौं दौर-दौर ॥१२६७
 तुकमारवार^५ जेतक सरीर, तहाँ ताक-ताक कै जरे तीर ।
 परवाह^६ पवन लागत प्रचंड, डिग जात धरन ज्या-धुजा-डंड ॥१२६८
 गिर परे लखन ईम राम गात, फैलाय पाँख खग फरफरात ।
 पर गये जाल में नाग-पास, संधन समेट हुय बंध स्वाँस ॥१२६९
 पिड मे खगेसर पंत-पंत, दीरघ कतंत के जेम दंत ।
 वछछ के दंत जैसे विसेस, भर रहे सल्लकी सूल भेस ॥१२७०
 भरना जिम लोहू भरभर्रात, बढ गयो रोग मनु रक्त-बात ।
 तिल-तिल बगतर के भये टूंक, ऐसे सर मारे फिर अचूक ॥१२७१
 ऊठ भई अंधारी अंत-अंत, मननाय भृङ्ग जैसे भृमंत ।
 देग कँ कीस-दल भग्यो डूर, धर हरत वाँन जिम भाँन^७ घूर ॥१२७२
 पीरल सौं केतक थंभ पाव, चित्राँम-पूतराँ^८ बने चाव ।
 रोवने लगे बहू कीस रोज, घोवने हाथ हाथन धरोज ॥१२७३
 ऊड़ गये कीस जे अंतरोग, श्रीराम लखन देसे सिरीख ।
 चेष्टा न करत पग हाथ चाल, बमुमती ऊतरे हूँ बिहाल ॥१२७४
 धननाद भयो चुप देत घाव, वाँच्यो कवि सेना कलू वचाव ।
 मुषोय बभीषन आय संग, अंगद मयंद यूथप अभंग ॥१२७५

हँनूमान आद नल नील हेर, फिरनं कौं लागे चहुँ फेर ।
 सब जतन करन लागे सुखेन दल बंदर कौं बिस्वास दैन ॥१२७६
 ईत रघुबर की गत भई येह, अवलोक कीस दुखखत अछेह ।
 निज फौज समिल कर मेघनाद बोल्यौ निसंक तज कं बिखाद ॥१२७७
 जुग भ्रात कहूँ के जती जून, खर दूखन काका करचौ खून ।
 बिद्वैख^१ निकारचौ ऊभय बीर, सो मरे परे सुंदर सरीर ॥१२७८
 द्रग सौं सब मिल कं लेहु देख, बिन स्वास परे दोऊ जती बेख^२ ।
 बरसात नदी ज्युं लंक बीच, कीनों दुखरूपी मलिन कीच ॥१२७९
 धोयो पानप^३ की दिव्य धार, पीछौ न होय जाकौ प्रचार ।
 जूथप कौ निर्वल भयो जूह^४, सर्द^५ कौ स्वेत बादर-समूह ॥१२८०
 सब राखस बंदर सुनत संग, ऊचरचो ऊच्च बांनी अभंग ।
 गंभीर बाँन कौ सुनत घोर, अवलोक डरत आकास शोर ॥१२८१
 ठाढ़चौ बंदर कौ देख ठाट, कीनों बिजुरी-सम करकराट ।
 टंकार धनव तूँजोह^६ ताँन बरसावन लाग्यौ फेर बाँन ॥१२८२
 जूथन के जूथप जाँन-जाँन, अवलोक बली सौं बली आँन ।
 दीनै सर अगनत आँख देख, अहि-पाँख लगे जैसे असेख ॥१२८३
 नव बाँन लगे कपि देह नील, दोऊ दुबिद मैद त्रय लगेऊ डील ।
 बपु जाँमवंत कं एक बाँन हेर कं दये दस हँनूमान ॥१२८४
 दीनै गवाक्ष कं बाँन दोय, जेतेहु सरभ कं जाँन जोय ।
 अगद कं दीने सर अनेक, बपु रिछ्छराज कं तन बिसेक ॥१२८५
 रवि-किरन वेग सिखी-सिखारूप^७, धर हरत जेठ की मनहु धूप ।
 ऐसी सर-धारा धर ऊमंड घर हेरऊ फेर पौरख घुमंड ॥१२८६
 डहकाय कीस-सेना डराय, पुर लंका पंहुच्यौ मोद पाय ।
 जाय कं करचौ दससिर जुहार, सब कहे समर के समाचार ॥१२८७
 ईत सोक बढचौ कपि-दल अछेह, दुख मित्यौ दसानन निसंदेह ।
 जाँनी जय अंज ईद्रजीत, पुन करी दसानन ईधक प्रोत ॥१२८८

१ विद्वेष । २ वेष । ३ धनुष । ४ यूथ = समूह । ५ शरद्वक्रतु । ६ प्रत्यंचा ।

७ अग्निज्वाला के समान ।

विष्णु भोग ही साधिका गहन, तें अमर रही तेरी कवूत' ।
 किं करी मेदनी लाग अनी, लागी मु यवाई बदन लंक ॥१२८६
 कालके हीमी लगे डोव, प्रति गुंजक बडी आकास-बोल ।
 कालके कालके के मर नीन, जय-जया बोल के हीद्रजीत ॥१२८७
 काल काल माली हें मनीन, प्रभू रामचन्द्र तीं समुक्त प्रीत ।
 कालकरी कालके लगे मोट, मध मरे भये विसाराय सोक ॥१२८८
 कालके का माल यमद हेतमनि, युवक मुनेन अरु जांमघान ।
 काल काल नीन काह प्रमद, यनियनी सतबली गज जमंड ॥१२८९
 काल कालकालके मीन नीन, ईद रीत रिवाज छापी अगोट ।
 काल काल कालके मीनकाल, प्रभु रैमासंदेह बल प्रमदथ ॥१२९०
 काल काल माली कालके काल, अम हलन जहां जायत तुरंत ।
 कालके काल काली मीनक, काटीय सोम तीं रात्री दाय ॥१२९१
 कालकाली माली काल नीन, उदरे किळ पिहुरन ठांग-ठांग ।
 काल काल काल कालके मालक, काटीय मुनेन कोळ कालकवार ॥१२९२
 काल कालके कालकालके कालक, अने केळ काळक विभाज ।
 काल काली कालकालके कालक, ईद कालक काटी हें कांन ॥१२९३
 कालके कालके के काली काळ, काल मीन मीनो हे काळक ।
 काल काल काली कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१२९४
 काल काल काली कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१२९५
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१२९६
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१२९७
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१२९८
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१२९९
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३००
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०१
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०२
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०३
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०४
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०५
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०६
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०७
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०८
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३०९
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१०
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३११
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१२
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१३
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१४
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१५
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१६
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१७
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१८
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३१९
 कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके कालके ॥१३२०

धूम्राय लंक में समर-घाट बीरासन^१ लै गई ऊद्धवाट^२ ।
 बहु मरे परे जहाँ कोस बीर, सर-साल^३ श्रवत जिनके सरीर ॥१३०२॥
 सर-सेज्या राँमहुं रहे सोय, लघु-भ्रात-सहित स्वाँसा लुकोय ।
 बगतर के बिखरे केऊ बरंग^४, सर निखर चाँप तुँत्रीर^५-संग ॥१३०३॥
 रत श्रवत घाव-मह लगी रेत, लग नाँग-पलेटा बाँन लेत ।
 देवर-जुत बर कौं सीया देख, बिलपनै लगी क्रंदत विलेख ॥१३०४॥
 हा राँम लखन कहा भयो हाल, बिच खेत परे बाहू बिलाल ।
 साँमुद्रिक-ज्ञाता विप्र सोय, जे कहा हमारी हाथ जोय ॥१३०५॥
 सुभगा^६ तुम ह्वै हौ कुंवर सीय, पतिबृता अमर अहवात^७ पीय ।
 नित करहै तो सौं नेह ताह^८, परवार पुत्र बाढहि प्रवाह ॥१३०६॥
 धर-जितै न जावहि नामधेय, पति-संग करहि जिग बाजपेय ।
 सब झूठे ह्वै गये येक-साथ, निरजीव होत श्रीअबधनाथ ॥१३०७॥
 पटराँनी रेखा पद्म पाँव-अँहावलि अनमिल^९ बक्रभाव ।
 कारे रंगवारे नरम केस, अरू देत बिरल ऊजरे असेस ॥१३०८॥
 नैन कौ अंत औ बड़े नैन, अरू घुटना मौटे हाथ ऐन ।
 नख चिकने सुन्दर रंग लाल, अँगुरी सुमाल^{११} बिन अंतराल^{१२} ॥१३०९॥
 ईक जुरे एक में दोऊ ऊरोज^{१३}, हैस्तन वृत बंठे हनोज ।
 दूबरी भई तऊ प्रभा देह, छोर कै करचौ नहीं अजौं छेह ॥१३१०॥
 रच रही पेरवा जवन-रेख^{१४}, ऊँची किनार नाभी असेख ।
 ईंद्री दस मन बुध चित्त और, ठहरे अपने सब आप ठौर ॥१३११॥
 निज कहते मंदस्मिता^{१५} नार, बाँच कै बिप्र पतरा^{१६} बिचार ।
 मिथ्याँ सब ह्वैंगये बुद्धिमान, बेद के भेदवारे बिधान ॥१३१२॥
 गत गजवं परी सुभ चिन्न^{१७} गात, मर गये पती मम अकसमात ।
 निरभाग भई हूँ राँड नार, जमवार भाँड़ बस परी जार ॥१३१३॥
 हँनूमान लगाई आय हेर, घन कपि-दल को कर धार-वेर ।
 सामुद्र ऊपरै रची सेत, खुर-गऊ^{१८} डावरे डुबे खेत ॥१३१४॥

१ युद्धस्थल । २ ऊर्ध्ववाट = आकाशमार्ग । ३ बाणों से छिन्न । ४ वरांग = शिर
 ५ तूणीर = तरकस । ६ हस्तरखादिविह्वशास्त्र । ७ सौभाग्यवती । ८ सौभाग्य ।
 ९ नाथ । १० पृथक् । ११ कोमल । १२ छिद्र । १३ स्तन । १४ यवरेखा ।
 १५ मन्दहास करने वाली । १६ पञ्चाङ्ग । १७ चिह्न । १८ गाय के खुर ।

कितते ईत आयी कितब^१-काल, जिह रघुवर बाँधे बाँन-जाल ।
 जम डरत नाँम जीहा जपंत, ईह कहा अवस्था भई अंत ॥१३१५
 हा राँम लखन हम दिमा हेर, घट आय परचौ है मृत्यू घेर ।
 अवसेख रहे कछू स्वाँस और, भय पूरे ह्वै है साँभ-भौर ॥१३१६
 ईह कहत सीया लेवत ऊसास ऊठ गई राखसी ह्वै ऊदास ।
 त्रजटा सँमीप ईक रही तीय, संबोधन करनै लगी सीय १३१७
 सुनीय ईह देवी सम सिधंत^२, अपनै स्वामी कौ होय अंत ।
 भट होय ऊदासी दीन भेस, दीसत नहि ऐसौ काल देस ॥१३१८
 फौजहू ख्खारी करत फेर, जानत कछू मुरछा^३ करे जेर^४ ।
 पुस्पक बिमान कौ ईह प्रभाव, पत-हीन त्रीया जो देत पाव ॥१३१९
 धर परत दरत^५ ह्वै धूज-धूज, ऊठत न ठौर बैठे अमूँक ।
 जिह कारन सीता लेहु जाँन, बैठार चलत पुस्पक-बिमान ॥१३२०
 मुख दीप्त-सहित सो लखहु मीठ, पाछी अब चालत फेर पीठ ।
 लक्ष्मी-सहित आँनन ललाँम, राजीव-नयन दोऊ लखन राम ॥१३२१
 माया सौँ ऊपज्यौ जाँन मोह, चौकसी फिरत बंदर चछोह ।
 जीवन की आसा आस जीत, सुग्रीव सेन कौ लखहु सोत ॥१३२२
 बाँनी त्रजटा की सुन बिसेस, सुख भयौ कछू बिस्वास सेस ।
 मोरचौ बिमान कौ त्रिय मिलाय, ऊतरी असोक बन सीया आय ॥१३२३
 ईत राँमचंद्र के आसपास, निज सैन होय बैठी निरास ।
 तिनकौ संबोधन करन तिष्ट, गहि गदा बभीखन अय गरिष्ट ॥१३२४
 फिर कै सैना के चहूँ फेर, बतराय आयगे तहीं बेर ।
 ऊधरी रघुवर की नंक आँख, भुरराय ऊठे लघु भ्रात भाँख ॥१३२५
 हा लछमन कैसौ भयौ हाल, बोले मुख ऐसै ह्वै बिहाल ।
 तुम कौ संग लीनै बिना तात, मुख जाय दिखाहू कहा मात ॥१६२६
 जैहै सु समंदर लाँघ जौन, गिर किंदर बंदर करहि गौन ।
 सीता न मिलहि निज सुंदरीय, जानत पिछताव्यै नही जीय ॥१३२७

कहि नृपत बभीखन तिलक कोन, मम पास खरौ आँनन मलीन ।
 हित सत्य प्रतज्ञा भई हान, पाछै लछमन के तजहुँ प्राँन ॥१३२८
 ईतनी कहि रघुबर ह्वँ अचेत, खिर्त^१ ऊपर सोये बीर-खेत ।
 ईह समय बभीखन निकट आय, परसे रघुबर के ऊभय पाय ॥१३२९
 निर्मल जल धोवत ऊभय नैन, बिड़रावत-रोवत कहत बैन ।
 सोवत सर-सेज्या गौर स्याँम, राजीव-नयन तुम लखन राँम ॥१३३०
 ऊर सौँ लंका की तर्जा आस परहूँ राँवन की काल-पास ।
 जानत कुपुत्र हूँ ईद्रजीत, करहै का काँमें कहा कुपीत^२ ॥१३३१
 दुख देहै केतक करहि दोख मरकै सुख पैहूँ पाय मोख ।
 ऐसै कहि कहि कै बचन आँन, ऊठत बिच छाती पय-ऊफाँन ॥१३३२
 सुग्रीव बभीखन देख सोक, रोकन कौँ लागौ अंमु रोक ।
 कहा भयौ बभीखन अहो क्लीव^३, श्रीराँम गुरुड़ मैत्री सदीव^४ ॥१३३३
 जानहि कहु अंतह-करन जोग, राँम कौ मिटावहि नाग-रोग ।
 सुग्रीव कह्यौ ये तौ सवाल, तहाँ बैनतेय लख तातकाल ॥१३३४
 मन बेग ऊड़े तनकौँ सभेट, फारत तम बाँदर बेग फेट ।
 अहि डरे भूम पाताल ओक, संननाँट पंख की बाज सोक ॥१३३५
 ऊतरे रघुबर के निकट आय, बपु टरी नांग-पाँसी बलाय ।
 ऊठाय हाथ गृह गरुड़ आप, तन-मन कौ मैट्यौ महँताप ॥१३३६
 जुग भ्रात राँम अरु लखन जोय, खल की छल-बल की पीर खोय ।
 तब दोऊ भ्रात कौँ बैनतेय^५, अंक सौँ भैंट-बल अग्रमेय^६ ॥१३३७
 कुसलात पूँछ बलवान कीन, द्रढ़ बिजय-हेत आसीस दीन ।
 कर राँम लखनहूँ नमसकार, पूँछन को लागे सहित प्यार ॥१३३८
 चंदन-अनुलेपन दिव्य चौर, सोभायमाँन आँनन सरीर ।
 अज हौ किन दसरथ पिता आप, तन मन कौ मैट्यौ महँताप ॥१३३९
 हम बिकल भये जानौ न हाल, कीजीयै भेद जाहर क्रपाल ।
 सुन रघुबर बानी परम श्रेय, बोल कै कह्यौ हम बैनतेय ॥१३४०

१ क्षिति । २ कुपित । ३ कायर, नपुंसक । ४ सदैव । ५ गरुड़ । ६ अग्रण्य, महात् ।

तुम सखा सैनातन गनहु तात, राखत द्रष्टी में दिवस-रात ।
 छल-खेत करचौ ईह वीर खेल, अहि-कष्ट जाँन श्रायी ऊबेल ॥१३४१
 दुख मिटचौ सकल अहि गये दूर, सभ्यौ संगर कौ सहाँपूर ।
 राँवन सँघार घर जाहु राँम, कर अमर क्रीत^२ कौ समर काम ॥१३४२

दोहा

बैनतेय रघुवीर की, पीर मिटाई पास^३ ।
 द कै राँम प्रदक्षना^४, ऊड़े बीच आकास ॥१३४३
 चितवत राँम प्रसन्न चित, आँनन लछमन ओर ।
 चितवत लछमन राँम चिब^५, जुगल नयन कौ जोर ॥१३४४
 जूथप देखत भ्रात जुग, पौषष प्रबल प्रचंड ।
 गाजन लागे सिध-गत, अगनत कीस ऊमंड ॥१३४५
 बाजन लागे बाजने, संख नगारन सोर ।
 परचौ लंक आतंख^६ पुन, भयौ ऊदय रवि भौर ॥१३४६

छंद भुजंगीप्रयात

हले बंदरी-सेन भाख्यौ हूरौ, परचौ लंक में फेर आतंख पूरौ ।
 गली च्यारहूँ द्वार की रोक गाढी, चँमू^७ कोट कंगूर पँ और चाढी ॥१३४७
 भयौ नगृ^८ कोलाहलं फेर भारी, पिले के बनोका अगारी पिछारी ।
 भुजा-बीस आजाँन राजाँन भौरै^९, अवाजाँन बाजाँ सुन्यौ गज औरै ॥१३४८
 भगे राजमंत्री गये राज-भानै^{१०}, प्रभाखी ईहै बीनती कौ प्रधानं ।
 चढे कीस कैसे सब सीस छाती, पराजीत ह्वै बेर होतै प्रभाती ॥१३४९
 धरा नाँद सौँ सात पाताल धूजै, ऊड़ी धूसरी आभ स्वाँसा अमूजै ।
 परी भीर जैसे भगे जात पंखी, ऊलूकाद भंखै तरै फार अंखी ॥१३५०
 हिलोरै चढ्यौ सिंधु बोलै हड्डा, बड़े तीर के वृच्छ जे नीर बूड़ा ।
 रवी ऊगते हीँ समा स्यार हँना, करी फिकरौ^{११} कूकहू च्यार कूना ॥१३५१

१ सर्प । २ कीर्ति । ३ नाग-पाश । ४ परिक्रमा । ५ छवि । ६ आतंख = भय ।
 ७ सेना । ८ नगर । ९ प्रभात में । १० भुवन । ११ स्यारनी ।

मिले बिस्वरा^१ औ खरा भूक मंडी, चकी चित्तनीं चीकुची बोल चंडी^२ ।
 गिरै पत्तन गिद्ध-माला गहक्री, भरै कारु कोलाहलं मांस-भङ्गो ॥१३५२
 सुसै^३ तोय-सोता करी-दान सुक्री, बंधे अस्त्र-साला मही अस्त्र बुक्कै^४ ।
 अचीतौ मचायौ कपी बिघ्न आई, भरे मोह डूबे परे जुगम-भाई ॥१३५३
 घुमंड्यौ किधौ चाल सौं काल घेरा, मिले हाल कै ठाल कै लंक मेरा ।
 किधौ आय कै राम बिद्वेख काजै, ईही ध्वेक^५ सुग्रीव मारै अवाज ॥१३५४
 किधौ होय बभीखन स्याहिकारी, प्रतज्ञा चहै राम की पार-पारी ।
 अरे च्यारहुँ द्वार कौं रोक ऐसै, करै सोक मैं कीस निर्धोक कैसै ॥१३५५
 महाराज जंघाल कौं गुप्त मेली, परै ठीक पाछै अनी सैत पेली ।
 डरंगे फिरंगे सिला डार डंडा, भिरं ना मुरेगे कपी होय भंडा ॥१३५६
 हमारी ईहै बीनती राज हेरौ, घरै जायगौ उठ कै कीस-धेरौ ।
 सुनी लंक-राजान मंत्री सलाहा, चढी चौकसी की बढी चित्त चाहा ॥१३५७
 हकारे घने हेर कै हेरनै कौं, चलै सैन सुग्रीव चौफेरनै कौं ।
 घनै रीछ देखे जुरे कीस घेरा, तकै अंख सौं लंक लै-लै तरेरा ॥१३५८
 धिकै होय में द्वेख के आग धूना, करै कीस कोलाहलं च्यार कूना ।
 सिला-शंग लै बृछछहू सूलवारै, फवै भौरवारै किते फूलवारै ॥१३५९
 लये राखसी फौज सौं सख लोहा, ठिले रात में लात दै मार ठोहा^६ ।
 भरे खेत मांही परे सूल भाला, सकती कती कीस के ले बिसाला ॥१३६०
 गदा डोंग लीनै सिजासार^७ गोला, दिखावै दिखाई कपी लंक दोला ।
 बिचै रामहू लछ्छन दाय बौरा, सु सोभै प्रभा स्याम गौरै सरीरा ॥१३६१
 डहै हाथ कोडंड टंकार देते, सभै आन भूतान बांन सहेते ।
 तकै लंक को ओर कौं दृष्ट तीखी सता काल की ज्वाल-माला सिरीखी ॥१३६२
 घने जूथप साथ में घेर घेरै, हलै पतरा मंद पै सैन हेरै ।
 लगे आसहू पास में कीस लारा, बड़े जोर साँ सोर देते बकारा ॥१३६३
 खरे बीर दोऊ गृहै हाथ खागै, अजोध्या-पती की बढी सैन आगै ।
 परे बंध छूटे ज्युंहीं नांग-पासी, खुली बात हेरु सुनी सोय त्रासी ॥१३६४

१ खच्चर । २ श्यामा पक्षी । ३ सूख जाता है । ४ हाथी का मद । ५ हिन-
 हिनाते हैं । ६ द्वेष । ७ ठोला । ८ लोहा ।

फिरे लंक सैना दिसी पीठ फेरी, सबै हेरकं बेर ताही सबेरी ।
 दरवार आये ज्युंहीं सैन देखी, बखानी सबै रात बात बिसेखी ॥१३६५
 सुनो लंकराजाँन मंत्री सहेता, जगे वीर जसै दोऊ जंग जेता ।
 तिहीं स्याहिकारी बनै बैनतेई, करैगे ज्युंही स्याहि कौं देव केई ॥१३६६
 चढी हीय में आय लंकेस चिंता, ईही बात कौं सोच कँ आद अंता ।
 जई राँवन में दिसापल जेता, करे दाँनवाँ देवहू जेर केता ॥१३६७
 सपुत्रं बली मेघनादं सवायौ, पती देवता जीत कँ वृंद पायौ ।
 जती बाँध सारे पती औंध जाये, ऊमै आत कौं बैनतेई ऊठाये ॥१३६८
 कपी आय घेरौ करघौ लंक केरौ, बन्यौ आय कँ फेर बीतौ बखरौ^१ ।
 बड़े बाँन जे बासुकी^२ तेज वारै, भगै ज्वाल माला ज्युंही ख्येड़ भारै ॥१३६९
 कटे बंधनं सो बली होय कँसा, ईहीं ऊपजौ चित्त माँहीं अंदेसा ।
 करे द्रोह रुठी मनौ साप काला मिली हीय में क्रुद्ध की ज्वाल-माला ॥१३७०
 बक्यौ सुद्ध कौं भूल कँ फेर वाचा. कहा काल के छोकरे पिड काचा ।
 मिले आय संगी कपी अंग छोटा. लरैगे कहा काछ बाँध लँगौटा ॥१३७१
 सिला-अंग लै लै भये अंग सूरा, भरै भाथ में वृद्ध भाखै भरुरा ।
 बने राँम के स्याहिकारी बिराँनै, घनी राखसी फौज मेरै घराँनै ॥१३७२
 धरै अस्त्र सस्त्रं धनी साँम-धनी, करै वर जासौं बड़े क्रूरकर्मी ।
 भटाली कटाली भरी भेल-भेला, मिलै राखसी फौज के भुँड मेला ॥१३७३
 घने मत्त सातंग आलान घुँमै, चरेरी भरे पोगरा आभ चूमै ।
 डहै जुद्ध की बेर खंडा दुधारा, करै व्याल^४ के पूत से फूँतकारा ॥१३७४
 डिगावै पहारं छटा चोट दैने, प्रहारै अटा कोट कौं दंत पैने ।
 भरै आठ भट्टी तला डान भंन्या, करै काल सौं चालहू सूपकना^५ ॥१३७५
 भूमै भृंग की भीर सोगंध भूली, फसी रेख सिंदूर की साँभ फूली ।
 सभँ भादवी ज्युं घटा घोर सद्दा रजै छादवी^६ त्युं फिरचौ काठ रद्दा ॥१३७६
 गुड़ा पीठ डारै पुड़ा पूर गाई, करै दाबहू धाव ना लाग कोई ।
 भपेटान हंजीर जंभीर भारै, करै गान मानौं गिरी कञ्जरारै ॥१३७७

द्वपी-ईखका-कंडना खाग-दंता, अरा भीर द्वारै भरे है अनंता ।
 खिजावै खुलै खेत में जाय खूनी, धिखै आंख की भांख में आग धूनी ॥१३७८
 अनी आंकरी बांकरी लाग ऊठै, चरखी कुरखी छटा ज्वाल छूटै ।
 भरै आस ही पास में भीर भाला, करै जुद्ध में क्रुद्ध ज्यू नांग काल ॥१३७९
 दलै दै दकालै तरु तोर डारै, नई अट्टवी बाट घाटी निकारै ।
 डिगं सैल जैसे डगै देत दौरै, करै कर्दमं मार सेना करोरै ॥१३८०
 फनी फुंकरै सूंड मारै फराका, करै बिज्जुरी आभ मांनों कराका ।
 गहै कर्नका^१ ऊंच गाढे गिरंदा, चहै चूमनै तारका^२ सूर चंदा^३ ॥१३८१
 छकै छोह सौं शंखला ऐच चालै, परं आभका धाम सातौ पतालै ।
 रुपै जुद्ध में क्रुद्ध ह्वै कुंजरोही^४, दुरंगे कहाँ बापुरे मीर द्रोही ॥१३८२
 बधे पायगा जायगा तेज बाजी, तहाँ बिस्वराहू^५ खरा भीर ताजी ।
 बड़े डील के डौल बारे वितुंडा^६ थली थोक ही थोक के थंड थंडा ॥१३८३
 गरै हेखना भेखना^७ आभ गूजै, घरा टाप की टक्करै लाग धूजै ।
 खनंका करै शंखला नाद खीजै, परं जप्पकं बप्प बोली पतीजै ॥१३८४
 ठठका भरै प्रोथ की थूंदरी कौं, कटक्का करै देखकं ऊंदरी कौं ।
 कबींडार^८ भारै कुसा के कसीसा, सु पं अंग भांकं मनी काच सीसा ॥१३८५
 पवीनै^९ मंडे ऊपरै पखरारी, सताबी मनीं सैल पाँखै सर्वाँरी ।
 लगै फेट की चोट जो लेत लाहै, ढका सौं-पका कोट सै लोट ढाहै ॥१३८६
 थरक्कं भरक्कं खुरा पाँव थंबा, लगै भाटका साटका पूँछ लंबा ।
 करै राटकी जुद्ध की बेर कैसे, तरै ऊतरै काट की बीज तैसे ॥१३८७
 बढै जोर सौं नाँस^{१०} की साँस बाजै गिरा किंदरा^{११} की मनी पोल गाजै ।
 भरे टोकरा ज्यू गिरै फैल भाँटू^{१२}, ऊड़ै कुंजराली अगै आय आँटू ॥१३८८
 धरै धोरतं चाल पाताल धूजै, ऊतेरित सौं मेघमाला अरुभै ।
 घने कर्वुरे रंग के स्याम घोरा, किते धूसरे-अंग लाखां करोरा ॥१३८९
 पटा पीत पारंद्र चर्मा पबंगा, किते रीछरे केस कूदं कुरंगा^{१३} ।
 जबै पार की सैन पै दौर जावै, धरै चक्र चक्री ज्युँहीं बक्र धावै ॥१३९०

^१ सूंड । ^२ नक्षत्र । ^३ सूर्य-चन्द्र । ^४ कुंजरारीही=हाथी के सवार । ^५ खच्चर ।
^६ वितुण्ड=हाथी । ^७ भीषण । ^८ कविका=चावुक । ^९ जीत । ^{१०} नासिका=
 नाक । ^{११} कन्वरा=गुफा । ^{१२} भाटे । ^{१३} हरिण ।

तुरंगी^१ चढै पै ऊठै लै तरारा, तुटै आभकै^२ गाभ^३ में जाँन तारा ।
 जमी खँद कै खँद कै जंग जंहे, अरी पाँव की धूसरी^४ मूँद ऐहै ॥१३६१
 बने जुद्ध के रथथहू बैन^५ केई, जुरे काठ के पाट लौहा जरेई ।
 थिरीभूत लागी मही पुष्ट थूनी, कसी है रसी मंच की च्यार कूनी ॥१३६२
 धुरी चक्रका^६ पिंडका^७ कीलधारा^८, समाजूंसरी श्रीर प्रासंग^९ सारा ।
 गढे है रढे है चढे गाढ-गाढै, चबी^{१०} छीतरा व्याघ्र की खोल चाढै ॥१३६३
 भयकार दौरै जबै जुद्ध भूमै, धुजाडंड भूमै जहीं, लोक-धूमै ।
 रथी रथथ आरोह कै रार रुठै, चलै बाँन के सत्रु के प्राँन छूटै ॥१३६४
 पयादी^{११} चमू आस-पासै परीहै, असंख्या दसूँ ही दिसा कौँ अरी है ।
 गहै ढाल खड्ग^{१२} गदा सार^{१३} गोला, अरा-भीर चौकी फिरं ओल-दोला ॥१३६५
 अजाँनै परंदा^{१४} पतँगान आवै, जहाँ सत्रु-सैना कहाँ पैठ जावै ।
 बने ईट सोबन के कोट बंका, लसै श्रीर च्यारूँ बसै बीस लंका ॥१३६६
 कंगूरा बने हीर बैहुज^{१५} केरा, फरक्कै धुजा भूर्ज^{१६} पै लै फरेरा ।
 तही पै भरी आग की लाग तोपै, कट्टका करै ज्वाल ज्यूँ काल कोपै ॥१३६७
 छुटै लोल गोला ऊठै छग-छगै, धुआ-धोर आकास लौँ धग-धगै ।
 गिलै-ऊगलै सोर कौँ धोर गाजै लटा-लूँव आकास कौँ मेघ लाजै ॥१३६८
 कलाकार लागे बलाकार काँटा, ऊतारै चढावै जुरै सीध आँटा ।
 मुकै सिष्ट^{१७} में तिष्ट कं मेल मख्खी, भलै मोरचा ओरचा सोर भख्खी ॥१३६९
 दगं दुग^{१८} पै कोट से लोट देती, करै चोट पै चोट की मार केती ।
 गढी पै चरख्खी चढी गंल गैलै, फिरं बक्र तूँडो जितै आग फैलै ॥१४००
 चलै कोट फेरो दराबीन चढी, डुलै कुँजरा के टलानक्र दढी ।
 मुखी-सूकरा कूकरा कोक मछ्छा, रजै व्याघ्र चीता-मुखी डौल रिछ्छा ॥१४०१
 फिरं सूर चंदा चहुँ ओर फेरा, नछत्राद भाँकै नहीं लाग नेरा ।
 त्रहूँ नोख^{१९} कौँ सैल नग्री त्रबंकी, अरी भाँक सकूँ कहाँ फार अंखी ॥१४०२
 भयंकार खाई चहुँघाँ भरी है, अपै नीर सोता अगाधा तरी है ।
 किलोले करे कछ्छ श्री मछ्छ केते दटं नक्रहूँ^{२०} भाटका पूँछ देते ॥१४०३

१ घुड़सवार । २ आकाश के । ३ गर्भ = बीच । ४ धूलि । ५ बरग । ६ पहिये ।

७ लाल । ८ पूठी । ९ पंजाली । १० खाल । ११ पदल । १२ लोह । १३ पक्षी ।

१४ बंहुयं = पन्ने । १५ दुर्ज । १६ दुर्ग । १७ नोक । १८ मगर ।

गिरै आय दंती^१ भरै एक ग्रासा, तहीं दौरकै लोक देखै तमांसा ।
लगे च्यारहू ओर मंचाँन लोहा, सुनेरी करचौ काँम जापै सुसोहा^२ ॥१४०४
घरी बीच संचाँन की बाट घाटी, परे ताँन खँचाँन के पाट पाटी ।
गिरी बिस्वकर्मा पुरी नीम गाड़ी, असो कोस लंबान चालोस ग्राड़ी ॥१४०५
सबै धाँम काँ काँम^३ राच्यौ सुनेरी, घटा मेघ जैसे अटा घेर घेरी ।
परदा जरी तार ऊँची पताका, रचे आतपत्रा^३ मनौ चंद राका^४ ॥१४०६
बने चौहटा हाट बाजार लीचै, निरी रत्न रेती परी बाट नीचै ।
बने बाटका घाटका^५ कूप बापी^६, निकारी गली सौँ गली भूम नापी ॥१४०७
भिरे है किला सौँ किला च्यार भांती, खुलासाँ सुनौ जाहि विख्यात ख्याती ।
नदी च्यारहू ओर नादेय नाँमी, गिरीसौँ घिरा पारवतेय^७ गाँमी ॥१४०८
किला बाँग्य भारी रखी च्यार कूनी, जुहै क्रत्रमी^८ ईंट भाटा जुराँनी ।
कमी च्यार है दुर्ग की नाँहि कोई, जमी चिक्कनी आस ही पास जोई ॥१४०९
अलंगी चरेरी घने श्रंग ऊँचे, लगै ना निसैनी सबै लाग लूँचे ।
बसै पूरबी द्वार पै बीर बंका, सहंसं दसं रात दीहा^९ निसंका ॥१४१०
रहै दक्षनी द्वार पै चातुरंगी^{१०}, जुरे लक्ष जोधा बरापूर^{११} जंगी ।
दसू लक्ष जोधा प्रतीची^{१२} दुवारै, धरै सूल भाला घने खड्ग धारै ॥१४११
घरईया कहावै जिनुँका घराना, सदाँ के निवासी भरोसा समाना ।
रहै ऊत्तरा द्वार पै कोट रछ्छा^{१३}, बली हाथ में साँग लीनै बरछ्छा ॥१४१२
सदाँ राज के काज में सावधाना, करै काल सौँ आल भालै कृपाँना^{१४} ।
पुरी लंक के बीच बीचै पडावा, अरे राखसी फौज वारे अडावा ॥१४१३
लसै कोट जुद्धार छचीस लभा, रखै राज के काज को पूर रक्षा ।
लगाती^{१५} जिनुँके असंख्यात लेखै, परै काम ती ठाँन ठाँमै परेखै ॥१४१४
हँनुँमान हाँनी करी जास हेरै, फिरै रात ही दीह में दिष्ट^{१६} फेरै ।
हनुँमान सौँ सैन सुगीव हीतै, जुरैगै जँहाँ। बेर में जुद्ध जीतै ॥१४१५

१ हाथी । २ सुसोभा । ३ आतपत्र = छत्र । ४ रात्रि । ५ वाटिका = बगीची ।
६ बावड़ी । ७ पर्वत । ८ बनावटी । ९ दिवस = दिन । १० सेना ।
११ भरपूर । १२ पश्चिम । १३ रक्षक । १४ कृपाण = तलवार । १५ साथ-लगने-
वाले सेवक । १६ दृष्टि ।

दोहा

सबही बात मेरी सुनौ, जाँन अजाँन जितेक ।
 कोरत जय हित में करे, तुम सौँ कहत तितेक ॥१४१६
 सेनापत बलवाँन सब, गनती देत गनाय ।
 आद अंत सौँ आज ली, सेना करत सहाय ॥१४१७
 प्रजा सबल लँका पुरी, निबल न जाँनत नाँम ।
 स्याहि करत निज स्याम^१ की, कठन परै जो काँम ॥१४१८

छंद मोतीदाँम

करे बस नाँगन कौँ हित क्रीत^२, जिहीं पुरि भोगवती लीय जीत ।
 जयौ फिर जिखन^३ कौ पुर जाय, कुबेरहु भ्रात गये कदराय ॥१४१९
 महेसुर^४ माँनत है जिय मित^५, करै सोई उत्तर बास ईकंत^६ ।
 प्रजा जंग जाँनत है दिस-पाल, निधीस्वर^७ जाचत होत निहाँल ॥१४२०
 लयौ हम ताहि सौँ येहु लगान^८, बिसेखन पुस्पक एक बिमाँन ।
 रखी हम राजन नीत की रीत, पिछाँनीय भ्रातहु सौँ नही प्रीत ॥१४२१
 दई मयदाँनव-पुत्रीय^९ दाँन, जँहीं पटराँनी मंदोदर जाँन ।
 सबै भृगु-सिखन^{१०} कौ सिरदार, बन्यौ बहनोईय बूझ बिचार ॥१४२२
 निरंधर जाहर है मधु नाँम, बँसाईय कुंभिनिसी जिह बाँम^{११} ।
 सोई भगनी मम जाँन सयाँन, मधु तिह कारन माँनत माँन ॥१४२३
 सदाँ मम राखत साल सनेह, अहो-निस^{१२} आवत जावत एह ।
 परै मुह^{१३} काँम तौ सासत पीठ, धुरंधर बेल महानबल धोठ ॥१४२४
 रसातल बासुकी^{१४} तक्षकराज, सुथानक वाँनक नाग-समाँज ।
 करे जय लूट लये धन-कोस, भुजावल आपही आप भरोस ॥१४२५
 जये जग जाहर दाँनव जात, बड़े बरदाँनीय^{१५} वीर बिख्यात ।
 लरे ईक हायन^{१६} ली कर लाग, लगे हम पायन बैर अलाग ॥१४२६
 लये द्रुम^{१७} ताहि पे डंड लगाय, फिरे जय दिघ^{१८} धुजा फहराय ।
 परंजन-पूत घने बलपूर, करे बहु संगर काँम करूर ॥१४२७

१ स्वामी । २ क्रीति । ३ यज्ञों । ४ महेश्वर । ५ मित्र । ६ एकान्त । ७ निधी-
 भ्रर = कुबेर । ८ कर. भेंट । ९ मयासुर की पुत्री = मन्दोदरी । १० भृगुशिष्य = दैत्य
 ११ वामा = श्री । १२ अहनिश = दिन-रात । १३ मेरे । १४ सर्प । १५ प्राप्तवर ।
 १६ वर्ष । १७ द्रव्य । १८ दीर्घ ।

जई चतुरंगीय-सेन जिन्नून, कढे नहि आजलौं बाहिर कून ।
जये जमदूतन मृत्यु सजोर, तहीं फिर काल की पासीय^१ तोर ॥१४२८
महाँ ज्वर सागर बेदना मूल, तरचौ जम लोक गऊ-खुर तूल^२ ।
अजान ही कालहु भाँकत आय, परै नहि लंकपुरी दिस पाय ॥१४२९
जमी पर छत्रीय-जात जुभार, भरे तरु जेम अठारह भार ।
प्रफूलत होय जमे दल पूर, सनातन जात गनावत सूर ॥१४३०
कटचौ अभमान कौ होय कुठार, निरंधर राँवनहूँ निरधार ।
निरंतर पुत्र बडौ घननाद, मनावत मात पिता मुरजाद^३ ॥१४३१
करचौ जग ईस रिभाँवन काज, संपूरन जाहि करचौ सुख-साज ।
बिचार कै ईस दयौ बरदान, जिताहव^४ जानत बच जहाँन ॥१४३२
जयौ मघवान^५ करचौ बँध जेर^६, फिरायेऊ लंक छुरारेऊ फेर ।
लई जय ईद्रह सौं सुत लाग, भलौ जग मोहि सौ कोन कौ भाग ॥१४३३
भयानक कुंभकरन ही आत, न जानत कोन जँहीं निसनात^७ ।
भयानक रूप जही भुजडंड विनासन समृथ है बृहमंड ॥१४३४
जगावहु जानहुंगौ जब जोग भलै कपि रीछ लगावहुँ भोग ।
कही हम बात सुनी तुम काँन, सभासद जानत बुद्धि सयाँन ॥१४३५
अबै तुम भासन कीजीयै ऊक्त, जथारथ^८ प्रवृत्^९ जुक्त-अजुक्त ।
सभा सुन राँवन-भूप-सलाह, रुके कछु सोच बिचारत राह ॥१४३६
प्रथमहीं सैनप बोल प्रहस्त, हरोलीय^{१०} होय मिलाय कै हस्त ।
दिगंतर गंधूव दानव देव भली विध जानत नांगन भेव ॥१४३७
पिसाँच हू आद जिते बलपूर, मिटाँवन समृथ है मगहर ।
कहा जुग आत है राज-कँवार सरोरुह^{११} आँनन के सुकमार ॥१४३८
मिले कपि-भुँड जुने हनुमान, गयो कुसलात सुत कर गौँन ।
हनुं सब बंदर सासन होय, जिते गिर-किंदर अंदर जोय ॥१४३९
रहौ निर्हँचित^{१२} सदाँ महाराज, कहै सोई राज करं हम काज ।
प्रहस्त की बोलन राह पिछाँन, कुप्यौ दुरमुखहू रूप कसाँन ॥१४४०

१ पाश - फाँसी । २ तुल्य = समान । ३ मर्यादा । ४ आहवजेता = युद्ध-विजेता ।

५ इन्द्र । ६ लज्जित । ७ निष्णात = प्रवीण । ८ यथार्थ । ९ प्रवृत्ति = वार्ता ।

१० अग्रणी । ११ कमल । १२ निश्चिन्त ।

कहे तिह राँवन जाव करूर, धृवी^१ हम पौरुख ऊपर धूर ।
 जराय कै लंक कौ कीस जबून, कढ्यौ कुसलात अतर-सौं कून ॥१४४१
 जेहीं नहि द्वाँध सके पसु जून, निसाँचर जाँन लये बल न्यून^२ ।
 मिलायकै लायकै बंदर मूँढ़, पुकारत मारत हाक पदूढ़^३ ॥१४४२
 करै धन-चक्कन धक्कन क्रूर, जती संग लायकै प्राय जरूर ।
 सुन्यौ नहि जावत बंदर सोर, जुहारत श्रापहु कौ कर जोर ॥१४४३
 बिदा मोहि कीजीयै राज बिचार, हँनूँ हँनूँमाँन कौ खेत हकार ।
 बिजै तुम पावहुगे ईह बेर, जवै सब बंदर होवहि जेर ॥१४४४
 सुनी दुरमुख की एह सलाह, ऊठ्यौ बज्रदंष्ट्र होयै अरवगाह ।
 बढ्यौ परघातन हाथ बढाय, छव्यौ दोऊ अहून भाल चढाय ॥१४४५
 बडे रघुनायक लछमन वीर, ऊभै रन मंडत होय अधीर ।
 सुग्रीवहु होय बभीखन संग, मिले केऊ जुथप जुद्ध-उमंग ॥१४४६
 सतौ कर मारहिगे हनुँमाँन, नहीं सिध होवहि काज निदाँन ।
 भिजावहुँ मोकह दै रन-भार, सँघारहुँ जुथपती सिरदार ॥१४४७
 भगावहुँ बंदर की सब भीर, प्रजा सब लंक की मेढहु पीर ।
 ऊठ्यौ तब पौरुख छाँय असंभ, निरंकुस कुँभ कौ पुत्र निकुँभ ॥१४४८
 बडे तुम राखस हौ बलवाँन, सबै रही आपने प्रेह सुथान ।
 निरंतर संगत भूप निवास, रूखाकूह^४ अंतह^५ कौ सुख-रास ॥१४४९
 बकारत जावतहुँ ईह बेर, हँनूँ रघुनंदन लछ्छन हेर ।
 सँघारहुँ बंदर कौ सब साथ, बुड़ोबहुँ सागर में भर बाथ ॥१४५०
 जहां ईह बज्र-हँनूँ सुन जाव, सँबोधन किन्नेऊ ऊठ सताव ।
 समेट कै खावहु बंदर सैन, ईकंदर छोटेऊ मोटेऊ ऐन ॥१४५१
 अनाँद सौं राखस खात अहार, करे हम हेत बडे करतार ।
 बड़पन नाहित है कछु बात, जिहीं सब जाँनत आपनि जात ॥१४५२

१ ध्रुव, निध्रुव । २ न्यून = कम । ३ गरम । ४ उन्मुख, रखवारे । ५ जनाना ।
 ६ बुवा दूंगा ।

दोहा

भूँज भूँज आमख^१ भखौ, मदरा-कर मत-वार।
जात अकेलौ जुद्ध कौं, धँनुख-बाँन कर धार ॥१४५३
कहा राँम लछमन कहा, कपि-दल कहा करुर।
आये जब तँ आज लौं सनमुख चढे न सूर^२ ॥१४५४

छंद पद्धरी

सुन बज्रहँनूँ की बात श्रान्त, सूरमा भये सब सावधान।
नःकुंभ रभस महांबल निसंकु, बिरुपाक्ष मरोरत भ्रूँह बंकु ॥१४५५
सुप्रधन सुर्जसत्रुक समेत, कोपे महांपारस रस्मिकेत।
जिग कोप महोदर खल जितेक, पुन अग्निकेतु दुर्धर प्रवेक ॥१४५६
दुरमुख निसाचर बज्रद्रष्ट, तस साँग परघ^३ लै तिष्ठ तिष्ठ।
घन प्रलय जेम पौरुख घुमंड, डहडहे सख गहि भुजा-डड ॥१४५७
कलमलत बोल ऊठे कठोर, चल-चलत सिंधु मनु पाज छोर।
सह-सहत बीर राखस-समाँज, गहमत बोल गंभीर गाज ॥१४५८
लागे कहनै कौं लार-लार, बिफुरे आप आपौ बिसार।
भूरे बदर जो चढे भौंन, कारे रिच्छन की बात कौंन ॥१४५९
भखजैहै जासौं हौय भेट, पापीन पचावहि बीच पेट।
दसरथ राजा के पुत्र दौय, जिनहँ कौं बंधन करहि जोय ॥१४६०
भय तजहु भजहु सिव लंक-भूप, ईह राज काज करीये अनूप।
सब सुभटन की सुन कै सलाह, राँवनहू सोचन लग्यौ राह ॥१४६१
गर्जनै लग्यौ ऊत कीस गोल, होय कै जुथ्य-जुथ्यप हरोल।
जुत अहित सबन के सुन जबाँन, बोल्यौ नृप नाँनाँ माँलबाँन ॥१४६२
सुन राजा राँवन मो सवाल, कटु ओखद^४ में गुन तातकाल।
तेरी रुख देखत कहत तात, भट पुत्र भतीजे कहा भ्रात ॥१४६३
मैं कहत बात सो माँन मंत, ऊर बीस सोच कै आद अंत।
सब बिध सौं राजा सावधान, बाँतो बित्रेक बिद्या बिघाँन ॥१४६४

भुव-राज करत ऐस्वर्ज भोग, जाँनत बिचार जोगहु अजोग ।
 बसि-करन मंत्र एकौ बिचार, बिन ही बिचार ऊठत बिकार ॥१४६५
 जहाँ उचत समय पे जोग जाँन, मेल कौ कीजिये त्याग माँन ।
 बढती आपन की चहै बात, परहर^१ घटती की पक्षपात ॥१४६६
 आपसौ अधिक लख सत्रु और, कीजं मिलाप बातें करोर ।
 लघु अपने सौ पुन सत्रु लेख, बिगृह^२ बिचार करीये बिसेख ॥१४६७
 लघु जाँन न छोरे सत्रु लार, बाँधे प्रबन्ध जैसी बिचार ।
 सब नीत रीत कौ ईह सिद्धंत मति माँनत जैसौ कहत मंत ॥१४६८
 महाराज राँम सौ कर मिलाप, ऊनकी त्रीय साँपहु उनही आप ।
 सब गंधर्व रिखि मुनि सुर सुरिद्र, चाहत जय लछ्मन राँमचंद्र ॥१४६९
 जातें मिलाप करनौ जरूर, पख कौ लख नीती न्यायपूर ।
 परमेष्ठी^३ कीने दोय पक्ष, रिभु^४ जाती दूसर देत रक्ष ॥१४७०
 सुर धर्म आसरो^५ करत श्रेय, अधूम अमुरन कौ अप्रमेय ।
 देवता सुनाई धर्म देत, अधरम सौ राखत असुर हेत ॥१४७१
 सतजुग जब आवत धर्म सेत, लग लार अधर्महि लील लेत ।
 कलजुग अधर्म कौ ईहीं कार, लीलत अधर्म लग धर्म लार ॥१४७२
 धूमत तुम निश्चर साथ घेर, जग जीव जात कौ करत जेर ।
 सुर-पख-वारे रिखी देव साध, बिन धोखे जिनकौ करे बाध ॥१४७३
 ऐसे तुम कीने अनाचर, बाँच्यौ न कबहु मन में बिचार ।
 जिग ताप करत अरु वेद जाप, पुण्यातम^६ भूसुर^७ रहित पाप ॥१४७४
 साधन-जुत राखत धर्म सीस, आराधन निस-दिन करत ईस ।
 जिन में मुख ब्रामन खत्रि-जात, बेसह सूद्र धर्महि बसात ॥१४७५
 आहूत^८ देत है बीच आग, जातें सिध होवत वेद ज्याग ।
 कारज ऊतँम के करनहार, निज थान-थान दीने निकार ॥१४७६
 यातें फिर अधरम को न और, भय देत न सोचत साँभ-भौर ।
 खट-करम^९ करत दुज^{१०} पुँन्य-खेत^{११}, दुर-दुर^{१२} आहूती अग्नि देत ॥१४७७

१ परिहर = त्यागकर । २ विग्रह = युद्ध । ३ ब्रह्मा । ४ ऋभु = देव । ५ आश्रय =
 नरोसा । ६ दुष्पात्मा । ७ ब्राह्मण । ८ आहुति । ९ पदकर्म । १० द्विज ।
 ११ पुष्पक्षेत्र । १२ छुप-छुप कर ।

जिग धूम ऊठत प्रज्वलत ज्वाल, तन दग्ध^१ होत निश्चर त्रकाल ।
 वरदाँन दयौ विध^२ जहीं बेर, कैसें तुम बिसरे जाहि केर ॥१४७८
 विध सनमुख भाखी ईती बात, जीतूँ सुर-दाँनव-जिख-जात ।
 नर बंदर बपुरे कहा नीच, बढ चढे न सनमुख खेत बीच ॥१४७९
 जाने निर्बल सो प्रबल जोर, घन जेम गर्जना करत घोर ।
 दिन पलट्यौ सूचक साख देत, चितत नहि चित सौं ह्वै सचेत ॥१४८०
 ईह लंका-पत्तन चहुँ श्रोर, घरहरत बीजुरी कठन घोर ।
 मेघावलि बरखै मंद-मंद, बहु बेर रुधर की परत बुंद ॥१४८१
 अस^३ हाथी खच्चर गधा ऊँट, छित^४ आँवन आसूँ परत छूट ।
 ऊड़ घूर पवन सौं आट-बाट, कंचन-महलन कौं भरत काट ॥१४८२
 पहिलै ज्युँ लंका नहि प्रकास, अह-निसा रूप दीसत ऊदास ।
 सर्पादिक कागा गिद्ध स्यार, भारी स्वर बोलत भंयकार ॥१४८३
 जंगल के बासी जिते जीव सब फुलबारी निवसत सदीव ।
 सुप्त में त्रीया कारी सवास, हेरत दै तारी करत हास ॥१४८४
 देत है बायसन^५ बलीदाँन, सोई जोरो^६ सौं भखजात स्वान ।
 गदही सौं ऊत्पत होत गाय, ज्युँ नौरिन^७ मूखरु^८ जनत जाय ॥१४८५
 व्याघ्री सौं करत मैथुन बिलार, सुकरी-कुकरी सौं जरख-स्यार ।
 पीरे पर राते पग कपोत^९, हिल-मिलत ग्रेह एकत्र होत ॥१४८६
 सारका^{१०} घरेलू पच्छि^{११} सोय, जंगल में बासी करत जोय ।
 जंगली घरेलू जिते जीव, सब लरत रहत निम-दिन सदीव ॥१४८७
 अरु मृग-गन पक्षी सूर श्रौर, मिल रुदन करत कंधा मरोर ।
 नकटा सिर-मुंडत पुरख-नार, देत है दिखाई द्वार-द्वार ॥१४८८
 ऐसे निमत्ता^{१२} श्रौरहु अनेक, येक पं दिखाई देत येक ।
 भूले हम यातं सुखद भोग, जानत अनर्थ कौ वन्यी जोग ॥१४८९
 बिस्तु कौ रूप रघुनाथ बीर, साह्यात स्याम सुंदर सरोर ।
 दल बंदर कौ बल लखत देह देवता अवतरे निसंदेह ॥१४९०

१ जल कर नत्म होना । २ विधि = ब्रह्मा । ३ अश्व । ४ क्षिति । ५ फीलों ।
 ६ बलपूर्वक, जबरन । ७ नेयता । ८ मूषक = चूहा । ९ कपूतर । १० मंता ।
 ११ पक्षी । १२ निमित्त = कारण, शकुन ।

सामुद्र ऊपरै रची सेत^१, द्रढ पौरुख साखी ईही देत^२।
 हँनूँमान लंक जारी हड्ड, सामुद्र लाँघ कै सहज सूढ ॥१४६१
 जुग-भ्राता बाँधे इंद्रजीत, पहिचान सनातन गरुड प्रीत।
 आये सु छुड़ाये फेर ऊठ, तेऊ घेर रहे पर्वत त्रकूट^३ ॥१४६२
 ईतनै पै सोचत नही आप, प्रगटचौ कोऊ दीरघ आय पाप।
 मन रुचै करहु सौ महाँराज, ऐहै न काल ईह समय आज ॥१४६३
 सब मालवान के सुन सवाल, कट्टु राँवन बोन्यौ गूस्त^४ काल।
 छित-जीत मोहि कौ कहत छोट, मेरे दुसमन कौ कहत मोट ॥१४६४
 मेरे साहँस कौ करत मंद, चरचरी^५ बखानत राँमचंद्र।
 वपु नाँना नातौ तुम बिसेख, द्रोही हम जानै बात देख ॥१४६५
 सीय-विरह भये दुर्बल सरोर, बाप के निकारे ऊभय बीर।
 सरनागत वंदर भये सोय, खत्रीया-धर्म मुरजाद खोय ॥१४६६
 ईत-ऊत की माँगी धाड़ आँन, जय मोसौँ चाहत कहा जाँन।
 अहँ चून लून^६ खावत अनंत, राखसी-फौज हाजर रहंत ॥१४६७
 जुध-करन ईसारे साथ जात, बल जँही बिसारे कहा बात।
 भये राँम ईधक हम न्यून भेस, देख कै कह्यौ कहा काल देस ॥१४६८
 कररे तुम वायक कहे केक, वैर सौँ सत्रु पख सौँ बिसेख।
 समज कै करी कछु वात सोच, पारनै कारनै मोहि पोच^७ ॥१४६९
 में राँवन राजा मालवान, जग-जीत क्रीत जानत जहाँन।
 भेजने चारु भट पुत्र भ्रात, जुद्ध की तयारी करत जात ॥१५००
 पचकारन^८-कारन तुम प्रवीन, निज वृद्ध वेस में ह्वै नवीन।
 अंतर कर नातौ^९ निकट आँन, वतरात अमंगल रूप वान ॥१५०१
 वयवृद्ध होय कै रचत व्वाज^{१०}, ऊर की प्रतीत^{१०} सब गई आज।
 वन सौँ सीय लायौ पकर बाँप, साँपहुँगी कैसे राँम स्याँम ॥१५०२
 कोने न आज ली स्याँम कोय, जीते दिस-पालन जोय-जोय।
 मानघ सौँ स्वाँमी कहँ भेल, राखस-पन पाँनी वही रेल ॥१५०३

१ मेलु = शत। २ विप्लव। ३ प्रस्त। ४ स्तुति, प्रशंसा। ५ लवण।
 ६ टापीन। ७ नय। ८ मन्वन्व। ९ कपट, बहाना। १० प्रतीति = विश्वास।

मैं चढन जुद्ध कौं श्रवसमेव, औभका भरत देवहु श्रदेव ।
 सनमुख नहि आवत होय सूर, देखत ही भाजत सत्रु दूर ॥१५०४
 राँवन हूँ सोई महाराज, आपै कौं कैसै तजूं आज ।
 देह के होय जो खंड दोय, सिर नहीं नमाऊँ अनम^१ सोय ॥१५०५
 ईह दोख^२ जन्म सौं लग्यौ अंग, सो छूटै कैसै येक संग ।
 सुग्रीव राँम लछमन-सहेत, सूरमाँ कहत दध^३ देख सेत ॥१५०६
 पुन बंदर है सब च्यार पाद, ईन काँम भारवाही^४ अनाद ।
 यामें कहा अचरज गन्यौ आप, पुन राँम-लखन ईधकौ प्रताप ॥१५०७
 हनुमान जराई लंक हूँत, कहा यामें जादाँ गनी कूँत^५ ।
 पूँछ के जरत अकुलाय पिंड, खित कूँद-कूँद कै चढ्यौ खंड ॥१५०८
 तव बूँद परत जो जरत तेल, पर जरे घाँस हुय रेल-पेल ।
 यामें कहा पौरुख गन्यौ ऊँच, पट्टह^६ को डंडा भयौ पूँछ ॥१५०९
 बपु-पास इंद्रजित छुट्यौ बंध, सो गरुड मंत्र-तंत्रक समंध ।
 जन और पराक्रम भयौ जोय, कछु राँम पराक्रम नहीं कोय ॥१५१०
 फिर-फिर कै आवत कीस फौज, धी^७-जावन कीनौ मैं धरोज^८ ।
 क्रम-क्रम सौं मेटहुँ जुद्ध काँन, जोय राजनीत प्रीय बात जाँन ॥१५११
 मो जाँन कायरे मतीमंद, दसहुँ दिस लागे करन दुँद ।
 बाहिरे परत ज्यूँ कपि बसेस, हीय संन्यपात^९ बाढत हँमेस ॥१५१२
 घेरे लंकापुर बाट-घाट, परखाहू दीनी कहुँ पाट ।
 कूँद कै कंगूरन चढे कोट, छल-बल सौं बंदय मोट-छोट ॥१५१३
 जावै जो पीछै जीयत जीव, कहियौ राँवन कौं महा बलीब ।
 जुत क्रुद्ध कहे राँवन जबाब, सुन मालवाँन ऊठ्यौ सताब ॥१५१४
 जय कौं मनाय निज ग्रेह जाय, पीछ्यौ नहि बाहिर दयौ पाय ।
 राँवन फिर त्यारी करी रार, काहू न श्रटोक्यौ कर करार ॥१५१५

१. अनम्य = नहीं झुकने वाला । २. दोष । ३. समुद्र । ४. बोझ उठाना ।
 ५. कुवत, शक्ति । ६. नगाड़े । ७. बुद्धि । ८. धारणा । ९. सन्निपात ।

सोरठा

गर्जत कीस गँभीर, च्याहँ फाटक कोट चढ ।
 बिठन^१ काज बरबीर, तूँ जावहु धूम्राक्ष तित ॥१५१६
 राँम लखन कर रार, मार प्रथम चढ मोरचं ।
 बंदर-फौज बिड़ार, देहु बधाई मोर द्रुत^२ ॥१५१७
 सुन लकारति सीख, रूठ चलयौ धूम्राक्ष रन ।
 तौर बढावत तीख, भुज दोऊ बृहमंड भिरे ॥१५१८

छंद अरध हरगीतका

धूम्राक्ष पौलख धारकै, बढ चलयौ बीर बकार कैं ।
 घन-घटा घोर घुमंड कैं, उठ चली फौज उमंड कैं ॥१५१९
 अतरथी चढ रथ-आँन^३ पै; के चढे गज के काँन पै ।
 खर चढे केऊ धर खँदते, रव करत मारग रूँदते ॥१५२०
 मुद्गरा आयुध मंड कैं, कर चाँप सर कोइंड कैं ।
 लै गदा फरसा लोह कैं, सभ चले अग्र सँदोह^४ कैं ॥१५२१
 औरै सु आयुध अनगने, जोधार लेय जने-जने ।
 सभ कवच^५ टोप सरीर में, भट पटा बाँधिऊ भीर में ॥१५२२
 जाँवनै कारन जंग में, अत पहर भूखँन अंग में ।
 सब जटत जंवर^६ सोवनै, पलकंत मोती पोवनै ॥१५२३
 इहकावनै कपि डर-डरी, कछु राखसी माया करी ।
 बाढे सु धारा वार^७ से, काढ़े सु दंत कुदार से ॥१५२४
 मुख नक्र जैसे मेल कैं, भख^८ सिघ-रूप भमेल कैं ।
 सभ सूकरा खर-सूरतै, मुख भेड़िया-सम सूरतै ॥१५२५
 बहु बाँन बोलत कलबली, उल्लूक जैसे अलबली ।
 हय अस्वतर^९ खर हेयरी^{१०}, फेकार जैसे फेकरी ॥१५२६
 चढ गिगन-मारग रव छयौ, भूकंप कोलाहल भयौ ।
 घहरात घन ज्युँ घोर कौँ, आतंख^{११} पर चहु और कौँ ॥१५२७

१ निडने । २ द्रोघ । ३ रथघान । ४ समूह । ५ वस्त्र । ६ जवाहर, रत्न ।
 ७ वारि = जल । ८ भय = मत्स्य । ९ सचर । १० हींसना । ११ आतङ्क ।

जुर लगे आंगे जावनै, दुंदभी बाज डरावनै ।
 खित ऊठ डंमर खेह^१ के, मनु मुद्र^२ संबर-मेह^३ के ॥१५२८
 गल गाज घहरत गयन की, हुव हेख भेखद हयन की ।
 गज-घंट लागे गूजनै, केकान पखर कूजनै ॥१५२९
 घूम्राक्ष कछु आंगे धिख्यौ, लंगूल घेरचौ पुर लख्यौ ।
 ताकत सु ईत-ऊत तोल कौं, बढ सुनेऊ हनुमत बोल कौं ॥१५३०
 ऊर धिख्यौ क्रुद्ध अपंपरा^४, प्रलीयाग्न रीत-परंपरा ।
 जब पिछम फाटक जोर कै, मोरी सु बाग नरोर कै ॥१५३१
 ये भये असकुन आय कै, गनती सु कहत गनाय कै ।
 धायौ सुरथ धर धरधरा, गिर परचौ ऊपर गिधरा ॥१५३२
 ऊपर पताकन औरहू, जुर गिद्ध-माला जोरहू ।
 आंगे कबंधहु ऊठ कै, रथ रोक गदहा रुठ कै ॥१५३३
 गहराय मेघ गरागरी, तव परी बूंद तरातरी ।
 बाज्यौ असंभव बायरी, सनमुख बेग सिवायरी ॥१५३४
 परकास रिव^५ मंदौ परचौ, अंधार चहु दिस ऊत्तरचौ ।
 जिह बीच ज्वाला जाग के, ऊंवार पसरे आग के ॥१५३५
 घूम्राक्ष सेना धाय कै, मंदी परी मुरभाय कै ।
 भय भरे लज्याँ भाव सौं, पलंटे न पीछे पाव सौं ॥१५३६
 देखी सु बंदर दूर सी, पाथोद^६-नारी-पूरसी ।
 बाजे सु आंगे बाजने, गल कीस लागे गाजने ॥१५३७
 हरखे सु आवत हेर कै, फरके सु पुछछैन फेर कै ।
 लै अंग वृछ्छ लरा-लरी, तरके सु सिघ तरातरी ॥१५३८
 मिल राखसन सौं संम्मुहा, भेटे सु बाहै मुखहा^७ ।
 प्रेरे सु पथर पेल कै, ऊत्तांग अंगऊ भेल कै ॥१५३९
 घूम्राक्ष बारी-धारका, भारे सु राखस-मारका ।
 घूम्राक्ष बारी-धारहू कीनीं सु रव किलकारहू ॥१५४०

१ घूलि । २ मेघ । ३ प्रलयमेघ । ४ अपार । ५ रवि । ६ समुद्र ।

७ मुख = वृक्ष ।

दठे सु पाँवन रोप कै, जाजुल्य जम-सम जोय कै ।
 तरवार भाला तोक कै, भारे सु फरसा भोक कै ॥१५४१
 सत्ती त्रसीरख^१ सर्वला^२, परचंड परघा पबला ।
 परचाय पछ्छंम पौरचा, मारचौ सु कपिदल घोरचा ॥१५४२
 विवधान^३ बाँन बराबरो, कोडंड सौं बरखा करी ।
 धर धूज कै डर धाँकरै, सब कोस आये साँकरै ॥१५४३
 जब समिल जूथपती जुरे, बिरदैत आतुर बाहुरे ।
 सिल-श्रंग लै मूसल सबै, तरु कंटकी तोरे तबै ॥१५४४
 भारे सु ऋटपट भेल कै, खुरली^४ सु दावन खेल कै ।
 कल^५ देख छल-दल काँम लै निज आप-आपन नाँम लै ॥१५४५
 कर गर्जना नभ कूद कै, तल लात मारत तूँद^६ कै ।
 कढ श्रांत जात करेजवा, विच ओभरी पर वेभवा ॥१५४६
 कोऊ सीस फूटत कनपटी, विथुरे सु भेजा जिम बटी ।
 कैऊ अधुर^७ तूटै कोरकै, मुख रुधर ऊगलन मोर कै ॥१५४७
 कैऊ फटी छाती कर्बुरा, फिसलात बुक्का फिफरा ।
 पासुरी तूटत पासरै, ईकतहू^८ तिल्ली आसरै ॥१५४८
 अतकटे राखस आय कै, वपु परे रेत विछाय कै ।
 गिर मत्त हाथी जिम गिरी, अस परे खेन अराअरी ॥१५४९
 मर अस्वतर खर मार सौं, पथराँन भार प्रहार सौं ।
 धुज-डंड रथ पसरे धरा, लै डंड कर कपि-दल लरा ॥१५५०
 सीवर्न-जटत तुहावने, वह भये अत अमुहावने ।
 गिर परी राखत गोलकी, हृद त्रिनाँ फीज हरोलकी ॥१५५१
 धूचाक्ष देखी धार कौं, मुहनेन कपिदल मार कौं ।
 धूचाक्ष आतुर घाँव में, चंदोल लायी चौक में ॥१५५२
 भागी नु घेरी भीर कौं, सभ कवच टोप सरौर कौं ।
 धूचाक्ष करकें घाँव कौं, भर मुभट खाली भूँम कौं ॥१५५३

१ निरीषे क विचित्र । २ मुर्त । ३ अरुमान । ४ पट्ट-याव । ५ कलि = युद्ध ।

६ दहे शि । ७ अधर = शीत । ८ महान् ।

ऊभत्यौ सु पौख आग ज्युं, निज रूप कारे नाग ज्युं ।
 कोडंड करखत कान कौ, बिखरूप बरखत बाँन कौ ॥१५५४
 मुग्दरन मंडी मार कौ, परघा सु देत प्रहार कौ ।
 तिरसूल सालन तोक कै, भुंक परचौ भालन भोक कै ॥१५५५
 ईक-एक सौ पुन आहुरे, बहु कीस ह्वै रन-बावरे ।
 परघा सु मार पछार सौ धर कटे आयुध-धार सौ ॥१५५६
 घट तुटे चक्रन घेर में, फरसा स बक्रन फेर में ।
 तन तुटे कोऊ तरवार सौ, बरछाँनवारे धार सौ ॥१५५७
 भँननाट बाँनन भाल कौ, बाँजौ सु बाँन बिसाल कौ ।
 टंकार मुर्बी^१ तान कौ, मंजीर-सब्द मिलान कौ ॥१५५८
 हुक्की सु प्राँनन हाल की, ताली सु बाजत ताल की ।
 गजंनो बीरन गाँवनौ, बहुसू-सोद बढावनौ ॥१५५९
 जुध भयौ मानहु जाल कौ, खेलनौ गंधुव ख्याल कौ ।
 धूआक्ष धनु कर धार कै, बाहे^२ सुतीत बकार कै ॥१५६०
 लागे सुकपि-दल लागनै, ज्वाला सुमानहु जागने ।
 अय-पिंड^३ जैसे अंग के, बिखरे सु रीछ सबंग^४ के ॥१५६१
 भागे सु आपौ भूल कै दस दिसा लागे डूल कै ।
 धूआक्ष अपनी धार लै, लाग्यौ सु कपि-दल लार लै ॥१५६२
 हनुमान जाँकौ हेर कै, घट करचौ घायल घेर कै ।
 सिल-लरे दौरै सामनै, भननाय लागे आँमनै ॥१५६३
 पटकी सुरथ पै पाँन^५ सौ, अतबलो भुज-आजाँन सौ ।
 सिल आवती लख सीस पै, कोप्यौ सु हनुमत कीस पै ॥१५६४
 लै गदा ऊतरचौ लोह की, दहकी सु ज्वाला द्रोह की ।
 सिल गिरो रथ ऊपर समी, जुत धुजा हय मिलगौ जमी ॥१५६५
 रथ तोर हनुमत रीस कै, पलटे सु दंतन पीस कै ।
 तरु दिग्ध^६ लीनौ तोर कै, मुट्टी सुपुष्ट मरोर कै ॥१५६६

१ मूर्वी = प्रत्यंचा, डोरी । २ चलाये । ३ लोह शरीर । ४ वानर । ५ पाणि = हाथ । ६ दीर्घ ।

राखसन मारे रोक कै, रन भाटकाड़ा^१ भोक कै ।
 फूटे सु सिर तरु फेट सौं, लर थरेऊ लाग लपेट सौं ॥१५६७
 भागे सु दस दिस भीत सौं, पलटे न जय की प्रीत सौं ।
 हनुमाँन पर्वत हेर कै, ईक लयो श्रंग ऊखेर कै ॥१५६८
 धूम्राक्ष सनमुख घाय कै, अग्राज हाथ ऊठाय कै ।
 जब देख धूम्राक्षहु जहीं, गाढी गदा कौं कर गही ॥१५६९
 हनुमाँन सिर ऊपर हँनी, घट पीर नहि बाढी घनी ।
 हनुमाँन पर्वत सिर हँन्यौ, धूम्राक्षहु माँथौ धुन्यौ ॥१५७०
 पर गयो स्रंग प्रहार सौं, निखस्यौ^२ सु प्राँन निसार सौं ।
 बल देख कपि वंजरंग की, रव करत जय-जय रंग कौं ॥१५७१
 धूम्राक्ष मिलगौ घूर में, सब सितल^३ पर गय सूरमै^४ ।
 भागे सु लंका-भौँन कौं, कर नाक नीचे काँन कौं ॥१५७२

दोहा

मरन सुन्यौ धूम्राक्ष कौ, दल-जुत पछ्छम द्वार ।
 हरख भयो हनुमाँन कौं, जान राम जयकार ॥१५७३
 भागे राखस भवन सौं, सो बुलाय दससीस ।
 वीती सो पूँछी बिगत, बात विसवा-वीस ॥१५७४
 हनुमाँन की जीत हुव, श्रवन सुनी कथ सोय ।
 घोरन लागौ दिख घनी, हथक^५ साप-सम^६ होय ॥१५७५
 व्याकुल होय बुलाय कै, वजूद्रष्ट वरवीर ।
 कह्यौ करहु कपि-दल-कदन^७, होय जुद्ध हमगीर ॥१५७६

छंद वृद्धनाराच

सुनी सु वजूद्रष्ट स्रौन वीस-पाँन^८ बात कौं ।
 प्रमाँन माँन प्रवृती समाँन बोल साथ कौं ।

१ मू० प्र० में-भाट काड़ा रन । २ निकल गया । ३ शीतल = ठंडे । ४ योद्धा ।
 ५ मरे हुए । ६ सर्पसदृश । ७ विनाश । ८ विशपाणि = रावण ।

सुनाय राज-सासना सभाय संग सैन कौं ।
 सतंग^१ श्री मतंग^२ साथ लीन जीत लैन कौं ॥१५७७
 कुरंग चाल के किते तुरंग लेय तखररा ।
 जराव-जुक्त जोन त पवीन-मंड पखररा ।
 चढ्यौ चछोह क्रुद्ध छांय बर्मव्यूढ^३ बीर लै ।
 बढ्यौ सु जुद्ध बाट कौं टंकार चाप तीर लै ॥१५७८
 सभे अनेक अख सख सांग डांग सर्वला^४ ।
 पटा कटा कुठार पघ^५ भिद्रपाल^६ लै भला ।
 प्रचंड पिंड पूरक^७ ऊमंड कै बढी अनी ।
 चढी चमक ज्यूं छटा घटा घुमंड कै घनी ॥१५७९
 लगी थगी धुजा लीयै डिगी सु द्वार दखनी ।
 प्रपात बाल-पुत्र पै डुली अत्रप्त डक्कनी ।
 विलोक सैन बंदरी अलूक भाँत आवते ।
 बजाय ढोल होल बोल गीत मौत गावते ॥१५८०
 असूचका भये अनेक काक गिद्ध कूकरा ।
 फिरंड^९ बोल फेकरी समूह आय सूकरा ।
 अनेक ऊँट आखरे पसंग छूट पखररा ।
 परे ऊलट्ट रथ-पै^{१०} जंभीर लोह चक्करा ॥१५८१
 असूच^६ काग नैन-एक घेख तेल धार में ।
 कुप्पी कराल केहरी रुप्यौ सु रुठ रार में ।
 चढाय चाप बाँन चंड छंडनै लग्यौ छती ।
 धरी न धीर धार ना मिलाय बीर सौं सती ॥१५८२
 करी भरि कलंब की प्रलंब हाथ^{१०} पूर कै ।
 भरे सु कीस भल्लुका डरे सु दूर दूर कै ।
 अगोट बाँध ना अरे करे न जुद्ध काज कौं ।
 चढै सु आय चौक में बिचार एहु व्याज कौं ॥१५८३

१ रथ । २ हाथी । ३ बखतर । ४ गुर्ज । ५ परिघ = लुहागी । ६ भाले ।
 ७ सियार । ८ रथ का पहिया । ९ अपशकुन । १० ब्राण ।

रकी सु बंदरावली निसाँचरा निहार कै ।
 चले सु बीच चौक में ऊछंग कीस वार कै ।
 समेट के समंद सैन बिट जेम बीट कै ।
 मृजाद छोर के मनौ हल्यो सुनोर हीट कै ॥१५८४
 बढी सु बंदरावली जितै-तितै जनौ-जनौ ।
 मड़ी ऊतंग श्रंग मार घेर साँकरै घनौ ।
 बिचार वृजद्रष्ट वीर वीर कौ वकार कै ।
 गिरी सुमेर पाय गाड़ ह्वै खरौ हकार कै ॥१५८५
 टंकार चाप तिछ्छ तिछ्छ गार्ध-पछ्छ^१ गेर कै ।
 बनाय लछ्छ^२ रिछ्छ^३ वीर ढाहि कीस ढेर कै ।
 कुठार खड्ग लै कितेक तोक साल तेख में ।
 रहे सु च्यार कून रोक धून पधं धेल में ॥१५८६
 यलाय सैन बंदरी फिरी सु च्यार फेर कौ ।
 प्रकंड वृछ्छ^४ पाँन लै ढहाय श्रंग ढेर कौ ।
 निसाँचरा निहार ताक ताक कै तरातरी ।
 फिराक फैल फेर भाँक भोक दै भराभरी ॥१५८७
 ऊतै हू बजृद्रष्ट आय श्रंगदा भिरची ईतै ।
 हुई सु वीर हाक मार-मार की मतै-मतै ।
 जने जने जुहार एक एक की तकै श्रनीं ।
 गहाय खेल मेहरी ठिली चमू वनी ठनी ॥१५८८
 फलंग कीस फेड तीं चपेट मारनै चहै ।
 श्रमेठ श्राच-श्राच^५ तीं लपेट निश्चरा लहै ।
 घरे सुमल्ल जुद्ध आय क्रुद्ध होय काल से ।
 कराल रूप केसरी विसल^६ वाल व्याल^७ से ॥१५८९
 घने अनेक दाव घाव एक देव एक कै ।
 मरंग मार बकटी^८ छतंग जात छेक कै ।

अटा-पटी करंत झाल खेल बीर ख्याल कौं ।
 दिखाय बक्र चक्र दै चलाक हाथ चाल कौं ॥१५६०
 भुजा प्रलंब भेट भाट आट ह्वै अटा पटी ।
 भटा पटी प्रकंड^१ भाट खाग^२ की खटा-खटी ।
 मंडी सु अख सख मार कीस और कबुरा ।
 कटे कटे कटे किते हटे न पाय हर्वरा^३ ॥१५६१
 हकार बीर हाक की बकार बाक बोलनौं ।
 टंकार चाप तांन कै तुंजीह^४ बान तोलनौं ।
 नगार संख घोर नाद भेर हू भयंकरा ।
 करंत कूक कायरा समेट पाय सकरा ॥१५६२
 दबे कितेक पाव दोट चोट मोट चीक में ।
 करची सु कीस पीस कीच राह बीच रोक में ।
 विलोक बज्रद्रष्ट^५ बीर काल जेम कोप कै ।
 खिसाय कै भयौ खरी जमाय पाय जोप कै ॥१५६३
 भपेट मार भेलकै प्रब्लंग^६ भूम पाछ टै ।
 लपेट लूम-लूम^७ कै अमेठ आच आछटै ।
 फिराय पाय^८ चीर फार डारनै लग्यौ डरा ।
 करे सु ग्रास काल के फराय ओभ फीफरा ॥१५६४
 लखी सु बज्रद्रष्ट लाग आग जेम ऊभलो ।
 धिक्ख्यौ सु बाल-पूत घेख बेख के महांबली ।
 प्रचंड लै प्रकंड पांत राकसी-चमूं रुकी ।
 कराल डंड काल ज्यूं धघूंन घू धकाघकी ॥१५६५
 बजाय रीठ पौन-बेग-दौर-दौर दाव लै ।
 कुरंग घेर कै कंठीर^९ जांत आव-जाव लै ॥
 बड़े-बड़े बिसाल सैल-माल आसरावली ।
 परी सु मार बज्रपात बाल-पूत की बली ॥१५६६

१ गोल वृक्ष । २ खड्ग । ३ हड़बड़ा कर = घबरा कर । ४ प्रत्यंचा । ५ प्लवंग =
 वानर । ६ पूंछ । ७ पाद = पैर । ८ कंठीरव = सिंह ।

परे सु रंड मुंड पिंड थंड थंड थंड कै ।
 वितुंड^१ के ऊतंड वाज^२ खेत खंड खंड खै ।
 मची सु गार मेदनी^३ रची अपार रक्त सौ ।
 गची मनौ गुलाल गैद गेहरीन गत्त^४ सौ ॥१५६७
 सतंग तूट सैरथीन भूसरी पई भरे ।
 भयंकरी दिखात भूम कूक माँच कायरे ।
 मिलाय मेघनाल ज्यू पुलाय जूट पाधरा ।
 वयार बाल बालके विखेर दीन वादरा ॥१५६८
 मरी परी धरामही त्रिसेस फौज वाज कै ।
 दिखी सु वज्रद्रष्ट दिष्ट भीर आय भाजकै ।
 टंकार चाप ताक ताक वाँन देत विष्फुरची ।
 विडार कीस वाहनी^५ जनून ज्वाल कौं जरची ॥१५६९
 रहे सु कीस पाँव रोप कोप जुद्ध काल से ।
 भरी करी पखौन^६ भार वृच्छ ले विसाल से ।
 निमूद के निसाँचरा गिराय दीन गात कौं ।
 करे सुत्रप्त फाक कंक स्यार स्वाँन साथ कौं ॥१६००
 गिरे कबंध गैन^७ सौं डरावनै दिखात है ।
 विहस्त^८ होत वीर हू फिरा फिरी फिरात है ।
 प्रपात^९ मार पाय के विखाद वैर वीसरे ।
 ऊसास लेत स्वास आस नास-नास नीसरे ॥१६०१
 विलोक वज्रद्रष्ट नष्ट वाँहनो विगार कौं ।
 भुकाय चाप वाँन भेल विफुरची विगार कौं ।
 तजे सु सोद ताक-ताक ले कजाक^{१०} लार कौं ।
 करे सु ऊँग-नीस कीस वेध एक वार कौं ॥१६०२
 करे अनेक वार कीस सैन पे कराकरी ।
 जमाय वीर जोर तेल माँड़ के मरावरी ।
 ऊतंड^{११} कीस श्रीर हू गही सु मन अंगदा ।
 सुरे सु सुथ-सुथसं जमाय पे जुदा-जुदा ॥१६०३

१. वितुंड । २. वाज = घोड़े । ३. मची । ४. गत्त = गद्दे । ५. मेता ।
 ६. पखौन = पखौन । ७. गैन = गैन । ८. विहस्त । ९. प्रपात । १०. कजाक । ११. सुथ-सुथसं ।

बकार बज्रद्रष्ट कौ सपुत्र-बाल सालुरचौ ।
 मदनमत्त ज्यू मतंग देख सिंघ विफरचौ ।
 मड़चौ सु खड्ग मारनै फलंग लै फिरा फिरी ।
 गिरै गिरा ज्युहीं गिरी सिलाँन की सरासरी ॥१६०४
 रूप्यौ सु बज्रद्रष्ट रार चाँप कौ चढाय कै ।
 मड़ी अपार बाँन मार बेग कौ बढाय कै ।
 पखाँन मार पेल बाल-पुत्र कौ बकार कै ।
 दये सु मर्म-गात^१ देख तीर तार-तार कै ॥१६०५
 भिदी सु बाल-पुत्र भाल चीँछ रत्त छूट कै ।
 परै पतंग ज्यू पनार बार मेघ बूठ कै ।
 गनी न बाल-पूत गात लाग तीर लोह की ।
 ऊखार वृद्ध ऐच कै चलयौ सुचाल चोह की ॥१६०६
 हन्चौ सपष्ट द्रष्ट हेर बज्रद्रष्ट बीर पै ।
 विलोक बज्रद्रष्ट बीर तीर दीन तीर पै ।
 खिरे प्रकंड खंड-खंड खंड भौर भुंड भूरक^२ ।
 बढ्यौ बिसाल काग बेग देख सौं धरूर^३ कै ॥१६०७
 जहाँ सुबाल-पुत्र जोय श्रंग लै समेट कै ।
 दयौ सु बज्रद्रष्ट देख आच कौ अमेठ कै ।
 लख्यौ सु बज्रद्रष्ट लौर मेघ ज्यू लगा लगी ।
 चलयौ सु रथ्य छोर कै धरै गदा घगा घगी ॥१६०८
 गिरचौ अतंग गैँन सौं सतंग तूट स्वारथी^४ ।
 परे गधा पसार पै मरचौ बच्यौ महारथी ।
 बलाय बाल-पूत बीर देख बज्रद्रष्ट कौ ।
 ऊठाय श्रंग एक और सीध ताक सिष्ट कौ ॥१६०९
 तज्यौ तराक^५ बज्र तेम बज्रद्रष्ट बीर पै ।
 परचौ सु सीस ऊपरा सिला गिरी सरीर पै ।

१ मर्मस्थल । २ भड़ कर, नष्ट होकर । ३ घेर्यं धरू कर । ४ सारथी

५ तत्काल ।

गह्रौ सु मोह^१ लै गदा रह्यौ खरी, सकाय कै ।
 वह्यौ^२ रगात^३ वार ज्युं भरचौ मुखा भुकाय कै ॥१६१०
 अचेत होय अंग सौ घुटाय स्वास द्वै घटी ।
 ऊठ्यौ गदा ऊठाय कै जु मोह की दसा मिटी ।
 बिलोक पूत-बाल कौ ससीम^४ घेर सांकरै ।
 हनी गदा हकार कै बकार बीर बांकरै ॥१६११
 परी सु बाल-पूत पै भूपेट हाथ भेलकै ।
 लई सु खोस लार लाग फंक दीन फेल कै ।
 मँडी अंग भुष्टिमार तिष्ठ-तिष्ठ तोल कै ।
 भिरे भुजा-अजाँन भेट बीर बाक बोलकै ॥१६१२
 हटे निपुद्ध हाल कै बलाय पूत-बाल कौ ।
 ऊखार वृच्छ अँच सौं करचौ सरूप काल कौ ।
 बिलोक बज्रद्रष्ट ढाल खड्ग हाथ ढाव कै ।
 चलयौ चछोह संक छोर दंत ओठ दाव कै ॥१६१३
 भिरे ऊभं भुजंग भेस घाव दाव घेर में ।
 प्रहार एक एक पै बढाहि जाहि बेर में ।
 दई प्रकंड मार डार बाल-पूत बेग सौं ।
 हिराय^५ मूँठ हाथ सौं तराक छूट तेग^६ सौं ॥१६१४
 लई ऊठाय बालनंद^७ तेग हाथ तोक कै ।
 करचौ सु वार क्रूद बज्रद्रष्ट कौ बिलोक कै ।
 तराक सीस तूट कै गिरचौ धरा गरा गिरी ।
 चलयौ सु प्राँत छूट कै प्रकार ज्युं परापरी ॥१६१५

बोहा

एति लंका सेनापती, बज्रद्रष्ट बल वृद्ध ।
 पीछी फिरची न मर परची, जुर अंगद सौं जुद्ध ॥१६१६

१ मोहना । २ चहने जग । ३ रक्त । ४ एक सीमा में, निकट । ५ हट कर ।
 ६ नमदान । ७ अंगद ।

फाटक दखन सौं फिरी, राखस सेना रोय ।
 घायल भट आये घरन, हथक^१ साप जिम होय ॥१६१७
 भूप लंक दुचती^२ भयो, वजूष्टु सुन बात ।
 घोरन लागी रोस घट, बीच मसरु^३ जिम बात ॥१६१८
 देख अकंपन हुकम दीय, सेना-सहित सकोय ।
 जाय प्रहारहु भ्रात-जुग, बंदर जूथ बिगोय ॥१६१९

छंड मीतीदाँम

अकंपन राँवन की लख शोर, जुहारीय पाय ऊभै कर जोर ।
 चलयौ तिह बेर सभा कर छेह, गयो सोई सैन पंडाव कै ग्रेह ॥१६२०
 तहाँ सब सैनक कीन तयार, सभे तन टोप बखतर सार ।
 लयो कर चाप टंकारव लेत, सराश्रय तिछ्छन बाँन सहैत ॥१६२१
 सँभार कै आयुध बैठ सतंग, मिलाय कै भुंड प्रमंग^४ मतंग ।
 पलादन^५ जूहन-जूह^६ प्रचार, लसकर लैन असखन लार ॥१६२२
 चलयौ तहाँ आहव^७ की कर चाह, पिले संग राखस बे-परवाह ।
 कपै नह काय करै जब क्रुद्ध, अकंपन नामे धरयो बल ऊद्ध ॥१६२३
 सोई चढ चालेऊ खेत सँभार, भुजंगम-सेस^८ परयो सिर भार ।
 लग्यौ दध-नीर^९ हिलोरन लैन, गुहा गिर गूजन लागेऊ गैन ॥१६२४
 कुलाहल सह भयो चहुँ कोद, बन्धौ ऊर बीरन बीर बिनोद ।
 गहकन लागेऊ ऊपर गीध, कुरालीय काक कजाकन कीध ॥१६२५
 भये ऊतपात भयंकर भेस, प्रकंपन^{१०} समुह कीन प्रवेस ।
 ऊड़ी बहु अंबर सौं ऊलकाँन, करी^{११} अस^{१२} मोरन लागेऊ काँन ॥१६२६
 फरक्कीय बाँम भुजा चख^{१३} फेर, करक्कीय बीज अबहर केर ।
 धरक्कीय सात पताल धराह, बरक्कीय आँनन ददह^{१४} बराह ॥१६२७
 घटा घन होय नगारन घोर, सुनावत संख असखन सोर ।
 ढरक्कन नेजन के पट ढील, फरक्कन लागेऊ ऊपर फील^{१५} ॥१६२८

१ घायल, मृततुल्य । २ दुश्चिन्त = चिन्तिते । ३ शक (पानी भरने की) ।
 ४ घोड़े । ५ राक्षस । ६ यूथ = भुण्ड । ७ युद्ध । ८ शेषनाग । ९ उदधि =
 समुद्र । १० वायु । ११ हाथी । १२ अश्र । १३ चक्षु । १४ दधो = दाढ़ ।
 १५ हाथी ।

पताकन^१ सिंदन^२ पाँतन-पाँत, दिखावत तिछ्छन ज्यूँ जमदाँत ।
 लख्यौ कपि आवत आहव लाग, ऊठी ऊर क्रुद्ध बलाय की आग ॥१६२६
 गरजजन लागेऊ नाद गहीर, सँभाय के श्रंग ऊतंग सधीर ।
 बड़े तरु लैकर बेर ही बेर, फलंगन मारन लागेऊ फेर ॥१६३०
 तहाँ कछू चाल अकंपन तेज, मिल्यौ दल बंदर सौँ मुहमेज^३ ।
 करी भर बाँनन की कर क्रुद्ध, अकंपन बीर पराक्रम ऊद्ध ॥१६३१
 जबौ दल बंदर हू कर जोर, अकंपन घेर चले चहु श्रौर ।
 मँडी तरु सूसल हू सिल मार, रुपी बिब श्रौर बराबर रार ॥१६३२
 अकंपन राँवन की जय आस, करचौ बल बाँहन^४ कौ परकास ।
 चले कपि राँस बिजे कर चाह, अकंपन पीरुख कौँ श्रवगाह ॥१६३३
 भयौ रन संकुल रूप भयान, ऊठी रज छाँय लयौ असमान ।
 लखावत धूसरी रंगत लाल, कढे मनु बद्दर संधक^५-काल ॥१६३४
 बन्यौ रज डंमर छाँय बितान, पिछानहु पाँन^६ न पावत पाँन ।
 गये छिप स्थंदन कुंजर गात, दसू दिस खेहन छेह दिखात ॥१६३५
 घटा घन जेम मचावत घोर, सुनावत राखस बंदर सोर ।
 प्रहारन देत बिना पहिचान, बिरानेऊ^७ आपने एक बिधान ॥१६३६
 असंखन सैन परी कट एम, जुरे रन-बावरे बावरे जेम ।
 भरे गज ऊँट तुरंगम भुंड, थटे भट ऊपर थंडन थंड ॥१६३७
 परे कट श्रामख^८ श्रोनत^९ पूर, धरातल दब्बीय-सब्बीय^{१०} धूर ।
 बढ्यौ कछू सूरज तेज विरोक, करंकन ऐचक लागेऊ कोक ॥१६३८
 मृघादन^{११} जंबुक^{१२} पायेऊ मग, कुलाहल गिद्धन माचेऊ कग ।
 भयंकर रूप भई रन-भूम, घने घट घायल मंडत धूम ॥१६३९
 भयातुर कातर केक भृमंत, अरुभक्त पावन^{१३} अंतर-अंत ।
 महाँबरवीर रहे पग मंड, अनीं निसचारन कीस ऊमंड ॥१६४०
 परवृत लोथन ऊपर पाव, घलं हथ बाहन चूकत घाव ।
 निसाँचर कास रूपे निरसंक, धनी अप-अपपन^{१४} की जय धंक ॥१६४१

१ ध्वजा । २ स्थन्दन = रथ । ३ पंक्ति, कतार । ४ भुजाओं का । ५ संख्या ।
 ६ पाणि = हाथ । ७ अन्य । ८ श्रामिव = मांस । ९ शोणित = रक्त ।
 १० मू. प्र. दबीय-सबीय । ११ जरख । १२ सिवार । १३ पैरों को ।
 १४ अपनी-अपनी ।

करककत देखत राकस कीस, सिला तरु ऊपर मारत सोस ।
 ज्यूँही लख राखस बंदर जूह, भिरै रिस^१ छांय अमेठत भ्रूँह ॥१६४२
 करै परघातन मार कुठार, त्रसूलन सूल गहै तरवार ।
 अकंपन जुद्ध भिरचौ अकुलाय, बनोकन^२ सैन हटी बिचलाय ॥१६४३
 ऊभै भट मैद कुमंद अभंग, जुरे दल राखस संम्मुह-जंग ।
 प्रहारन दीन पहारन पेल, भूपेटन-फेटन दै तरु भेल ॥१६४४
 गिरे केऊ राखस चूरन गात, भजे तन दारत ह्वै भहरात ।
 अकंपन कीस लखे बल ऊद्ध^३, कह्यौ निज स्वारथि सौँ कर क्रुद्ध ॥१६४५
 जिताहव मैँ खल राखस जात, दिती-सुत^४ देवत देख डुरात ।
 जिही कपि जात दिखावत जोर, महाँ ऊपहास भयौ ईह मोर ॥१६४६
 कहा ईह वापुरे बंदर कीट, दिखावहुँ बाँहन कौ बल दोठ ।
 खरौ रथ राख कहुँ सब ख्वार, भुकाय कै चाप कलंबन^५ भार ॥१६४७
 जहाँ रथ थपेऊ स्वारथी जान, ऊचाँन को जाग^६ कछू अर्नुँमान ।
 करी भर बाँनन की भर कोह, चिमंटीय चाढ कै चाप चछोह ॥१६४८
 परे बहु बंदर ह्वै गति-प्राँन^७, भजे केऊ संगर देख भयान ।
 कुलाहल सह भयौ कपि केर, बढ्यौ बल राखस कौ जिह बेर ॥१६४९
 सुन्यौ हर्नुँमान जहाँ कपि सोर, चले जब आपने मोरचा छोर ।
 मिले दल मकंठ फेर मिलाय, भुजंगम जेम फिरे भहराय ॥१६५०
 सबै हर्नुँमान के आय ससीम^८, नृभै हुय संगर दिन्नोय^९ नौम ।
 अकंपन मारुत-नंदन ईछ्छ^{१०}, प्रहारेऊ तिछ्छन गारध पछ्छ^{११} ॥१६५१
 भिदी सुत-मारुत कै तन भाल, जगी ऊर क्रोध हुतासन-ज्वाल ।
 अकंपन मारन कारन ऊह^{१२}, बिमाँसन लागेऊ बंदर ब्रह ॥१६५२
 हरोलीय होय बढे हर्नुँमान, सबै मिल जूथप जूथ समान ।
 पिले गिर-श्रंग गहै बल पूज, धरा धमचक्क मचक्कन धूज ॥१६५३
 हसे हर्नुँमान अकंपन हेर, बकारकै^{१३} अगृ^{१४} बढे जिह बेर ।
 अकंपन श्रंग लख्यौ कर ऊद्ध^{१५}, सनंरुत बान दये लहि सुद्ध^{१६} ॥१६५४

१ क्रोध । २ वानरों की । ३ अधिक । ४ दैत्य । ५ बाण । ६ जगह = स्थान ।
 ७ निर्जीव । ८ निकट । ९ दी । १० देखकर । ११ बाण । १२ विचार ।
 १३ ललकार कर । १४ आगे । १५ ऊपर । १६ सीध बांधकर ।

दुष्ट्यौ गिर-रङ्ग भयौ सत दूक, अनोन्नन^१ मारेऊ बाँन अचूक ।
 अकंपन देख पराकन ऊद्ध, करचौ हनूमाँनहू दाहन क्रुद्ध ॥१६५५
 तरु असकन वड़ी लीय तोर, सिफा^२ जुत आँचन^३ ऐच सजोर ।
 वहे जब वृच्छ घसीटत बाट, परे बहु राखस खाय पछाट ॥१६५६
 अकंपन देखेऊ बाँह-अजाँन, हले ईम आवत है हनूमाँन ।
 तहाँ दीय ताक चतुर्दस तीर, सबै हनूमाँन के लाग सरीर ॥१६५७
 रुदयौ हनूमाँन नहीं पग रोप, करचौ तिहू बेर भयंकर कोप ।
 हन्यौ तरु सीस अकंपन हेर, फट्यौ सिर भूस गिरचौ चख^४ फेर ॥१६५८

दोहा

परचौ खेत लंकापुरी, गिरचौ अकंपन गात ।
 हुई जीत हनूमाँन की, बात भई बिख्यात ॥१६५९
 जे कोऊ ऊबरे जुद्ध में, पहुँचे रावन पास ।
 मरचौ अकंपन खेत में, खबर कही सोई खास ॥१६६०
 मरन अकंपन सुन सँभुभ, राँवन चाल्यौ रूठ ।
 चाल्यौ देखन मोरचा, कोट पुरी त्रयकूट^५ ॥१६६१

छंद त्रोटक

चल राँवन कोट त्रकूट चढ्यौ, गढ देख सुवर्न की ईंट गढ्यौ ।
 जुरे कंगुरे लाल जवाहर के, पुन सोवृन घाँम लखे पुर के ॥१६६२
 जर तार पताकन पाँत जुरी, लग मौँतिन भालरी लूँव लरी ।
 फुलबारीय होज फुहारन के, चख^६ देखेऊ पेढ चुँहारन के ॥१६६३
 बहु वापीय कूप अतूप वने, चँमकै द्रुति सोवृन ईंट चुँने ।
 केऊ चत्वर^७ और बजार फिते, अवलोकेऊ द्वार पगार ईते ॥१६६४
 परजा बहु भीर लखी पुर में, अवलंचत^८ सोक-गृसी ऊर में ।
 पुन देखेऊ सँन पड़ाव परी, केऊ विस्वरहू^९ खर^{१०} वाज^{११} करी^{१२} ॥१६६५

१ घनेक । २ जड़ । ३ हाथों से । ४ आँख । ५ त्रिकूट । ६ आँख से । ७ चौक ।
 ८ नपनीत = घबड़ाई हुई । ९ लच्छर । १० गया । ११ घोड़ा । १२ हाथी ।

अवलोक के खास-अवास^१अमूँ, चख-बीस^२लखी फिर कीस चमूँ ।
 गल जास अवाज सुनी गहकी, दससीस के रीस हीयै दहकी ॥१६६६
 अवलोक प्रहस्त कौ बोल ऊठ्यौ, रन रोप के ऊपर राँम रुठ्यौ ।
 तिह भार परचौ हम पै तुम पै, जुत कुम्भकरंन निकुम्भ जुपै ॥१६६७
 घननाद सपुत्र भरोस घनौ, दल कीस बिनासहि भ्रात दुनी ।
 अब तौ चढ जाहु प्रहस्त ऊतै, जढ^३ कीस प्रहारहु राँम जुतै ॥१६६८
 कपि जाँनत ना कल^४ की कल कौ, सिखरो^५अरु भारत है मिल कौ ।
 संग सिक्षक^६ फौज कौ लेख सबै, ऊत सैनपती चढ जाहु अबै ॥१६६९
 कपि जात असिक्षक^७ है कुहनी, रुख जाँनत जंगल की रहनी ।
 जिनकौ कहा भार है जीतन में, रन को न पिछाँनन रीतन में ॥१६७०
 रत्नवारीय राज की सैन रही, त्रतो-अंस कौ मालक एक तुही ।
 कपि आयेऊ लायेऊ घेर कजा^८, रघुनाथ सँघारहु एह रजा ॥१६७१
 सुन राँवन सासन^९ सैनपती, कीय तयारीय सैनक सैन किती ।
 बहु सिदन^{१०} बाज गयंद बली, चढ चालेऊ राखस बीर छली ॥१६७२
 निहसे बहु नद्^{११} नगारन कौ, केऊ बीरन को किलकारन कौ ।
 गज-घंट ठनकीय जेम घरी, बिसफार^{१२} अवाज धनंख^{१३} भरी ॥१६७३
 रथ बीर प्रहस्त चल्यौ रन में, विफुरचौ मनुं सिध महाँवन में ।
 ऊत्तरचौ मुख बाँनीय^{१४} दोर अगै, भय पाय कहूँ नही कीस भगै ॥१६७४
 जम-लोक पठाबहुँ येऊ जमै, भख गृध करारवहु संग भूमै ।
 रथ हाक चल्यौ रन रोख-रतौ^{१५}, मन सौँ कपि-मारन कीन मतौ ॥१६७५
 अगुवा भट चालेऊ च्यार अगै, समुनंत नरांतक जात सगै ।
 महानाद रु कुम्भहनूँ मिलकै, चढ के रथ आय गये चलकै ॥१६७६
 जम के दल कुंजर जूथ ज्युँहीं, गढ बाँध के पूरब राह गही ।
 पहुँचे जव फाटक जाय परा, धुज-डंड ऊछंड के आय धरा ॥१६७७
 पर चाबुक स्वारथि^{१६} पाँनन सौँ^{१७}, केऊ जंबुक^{१८} दौरेऊ काँनन सौँ ।
 खिसले पग घोरन खाथ खता, कर छूट गिरे केऊ कूँत^{१९} कता ॥१६७८

१ राजमहल । २ रावण । ३ जड़ । ४ युद्ध । ५ वृक्ष । ६ सीखी हुई, शिक्षित ।
 ७ अशिक्षित । ८ मृत्यु । ९ आज्ञा । १० रथ । ११ नाद । १२ धनुष की टंकार
 की ध्वनि । १३ धनुष । १४ वाणी = बात । १५ क्रोध में रत । १६ सारथि ।
 १७ हाथों से । १८ सियार । १९ भाले ।

अनसूचक^१ देखेऊ आँख ईतै, पलट्यौ न प्रहस्तह जुद्ध प्रतै ।
 अनी राखस देखत कीस अरे, सभ शङ्ग ऊतंग भिरे सिगरे ॥१६७६
 ठिल कै मिल कै दल ठाट ठयो, भयकार ऊभै दिस सह^२ भयो ।
 शबना रघुबीरह सोर सुनौ, दल अगृ बढे कछू आत दुनौ ॥१६८०
 जहाँ देख प्रवेक^३ घने जन सौं, बतरायेऊ राँम बभीखन सौं ।
 ईह कौन बली चढ आवत है, बिसफार अवाज बढावत है ॥१६८१
 चमकावत आयुध ज्यूँ चपला^४, कर बाँन गहै मनु सूर-कला^५ ।
 गिर कन्दर ज्यूँ रथ के गुमजा, धुज-डंड फरुकत दिघ धुजा ॥१६८२
 कहनी सुन राँम बभीखन हू, समुझाय कही ईह बात सह ।
 पति-लंक^६ प्रहस्त है सैन पती, मगरूर भरचौ ऊर क्रूर मती ॥१६८३
 रघुनाथह सेनप देख रहे, बढ कै कपिहू मुहमेज बहे ।
 अत मार परी बिव^७ औरन सौं, कपि राखस बीर करोरन सौं ॥१६८४
 परघातन राखस लै पछटै, जहाँ कीस प्रकंडन^८ लेय जुटै ।
 बहु राखस भारत बाँनन कौं, पुन बंदर देत परवाँनन^९ कौं ॥१६८५
 ईत राखस लेत त्रसूल अरै, कपि लै तरु दीरघ मार करै ।
 मिल राखस आयुध मारत है, गिर कीस ऊखार गिरावत है ॥१६८६
 कपि राखस जूझत बीर कला, मँडराय घटा घन जेम मिला ।
 अटकी भट राखस कीस अनी, बिव और बराबर रार बनी ॥१६८७
 कपि राखस पै ऊररे कररे, भट च्यार प्रहस्त के आय भिरे ।
 मुहमेज^{१०} भये कपि मारन कौं, करवालन^{११} ढाल कुठारन कौं ॥१६८८
 ईन च्यारहू कौं लख कीस अनी, घन ज्यूँ ऊमँडी घहराय घनी ।
 तरु लै गिर लागेऊ तारन कौं, मिल शूसलहू सिल मारन कौं ॥१६८९
 खल देख नरांतक-खेत^{१२} खरौ, भट आय दुबिदहू कीस भिरौं ।
 गिर-शङ्ग ऊखार करचौ गररौ, छित^{१३} राखस होय परचौ चुररौ^{१४} ॥१६९०
 जुर खेत समुंनत आय जहों, तरु सौं कपि दुर्मुख मारत हीं ।
 जंबुवाँन तथा^{१५} महाँनाद जुरे, कल^{१६} देख जही सिल वार करे ॥१६९१

१ अपवाक्य । २ शब्द । ३ अगवानी । ४ विजली । ५ सूर्य-किरण । ६ रात्रण ।
 ७ दोनों । ८ वृक्ष-नीले । ९ पत्थर । १० सम्मुख । ११ तलवार । १२ युद्धक्षेत्र ।
 १३ नृमि । १४ चूर-चूर । १५ मू. प्र. त्यां । १६ युद्ध ।

परगौ^१ खल ह्वै पुरजा-पुरजा, सब रार के काँमहु सौं सुरजा^२ ।
 गहि बृछ्छ बडौं रन कौं गवन्यौ, हनुंकूम कौं तारहु कीस हन्यौ ॥१६६२
 भट च्यार प्रहस्त भरे भिर कं मरन-डर सौं पग नाँ मुरक^३ ।
 पग रोप कै च्यारहु बीर परे, जब हीय प्रहस्त कै आग जरे ॥१६६३
 गहि चाँप रथी रथ पै गवन्यौ, बिकराल बलाय कौ रूप बन्यौ ।
 पर सोवृन की सर सोक परी, बहु आग आगारीय ज्युं बिखरी ॥१६६४
 करने बहु लागेऊ जुद्ध कला, जरने कपि लागेऊ क्रुद्ध जुला^४ ।
 बल कीस चमू सब छूट बह्यौ, रन-खेत प्रहस्तहु लूठ रह्यौ ॥१६६५
 बिफुरचौ दिखरावत बीर वृती, पग माँड सके नही जूथ-पती ।
 मृघराज ज्युंहीं कर गाज मिला, गजराज ज्युंहीं कपिराज गिला ॥१६६६
 घट बाँनन लागेऊ घाव घने, बपु कीस बसंत-पलास बने ।
 वनचार^५ सरीर गिरी बरना, भरनै रत^६ लाग गये भरना ॥१६६७
 निकरै बहु श्रोनत नारन^७ सौं, धर गार मची सर धारन सौं ।
 ईम बाँनन मार प्रहस्त अटा, करने कहूँ लागेऊ कीस कटा ॥१६६८
 दल बंदर पीठ फिरी डर सौं, अकुलाय कै हार रहे अरी सौं ।
 जहाँ जूथप नील रह्यौ जम कै, भहराय कै सैन चलो भृम कै ॥१६६९
 मुहमेज^८ प्रहस्त रू नील मिला, जय राँवन राँम कौ बाँध जिला ।
 समिले बरखा-रित से हरसे, कँदली-वन के गज केहर^९ से ॥१७००
 खित ऊपर देखेऊ नील खरौ, गिर कौं कर पै ईक लेय गिरौ ।
 मलप्पी रथ नीलहु मारन कौं, सब स्वामीय काम सुधारन कौं ॥१७०१
 बढ कै खल नील कै साँमै बह्यौ, रथ सूरज तेज प्रकास रह्यौ ।
 धनुवान सुधार प्रहस्त धक्चौ, रथ संमुह दौर कै नील रुक्चौ ॥१७०२
 बरसायेऊ बाँन प्रहस्त बली, भर भादव की मनु आय भिली ।
 बपु नील कै लागेऊ साल^{१०} बड़े, गति तिछ्छन कंटक रूप गड़े ॥१७०३
 जग-मग^{११} सुबर्न की पाँख जुटी, चिनगारीय माँनहु आग छुटी ।
 भट लै तरु नीलहु जाय भिरघौ, तरु-संजुत माँनहु सैल तरचौ ॥१७०४

१ गिर पड़ा । २ सुलभ गया = निवृत्त हो गया । ३ मुँह मोड़कर । ४ ज्वाला ।
 ५ वानर । ६ रक्त । ७ नालों । ८ सामने । ९ सिंह । १० घाव । ११ जगमग
 होती हुई ।

भटके खल ऊपर भौरन कौं, ससके रथ-घोरन भौरन कौं ।
 भननेटीय लै रथ दूर भगा, तितरचौ बितरचौ रथ खाय तगा ॥१७०५
 हय सूत^१ सँभार तही हरव्यौ कपि ऊपर बीज ज्युंही करवचौ ।
 बरखा फिर किञ्चीय बाँनन की, अत भालन तिछ्छन आँनन की ॥१७०६
 सहि धाव चलयौ पग देत सनै, गज आस्वन^२ ज्युं बरखा न गनै ।
 गहि कै तरु दिग्घ ससीम^३ गिरचौ, भटक्यौ रथ घोरन सीस भरचौ ॥१७०७
 हय तूट परे पग नाहि हिले, जिह देख प्रहस्तहु क्रुद्ध जले ।
 कपि नीलहु तीसर वार करचौ, धनुँ तोर दयौ विच हाथ धरचौ ॥१७०८
 पुन सिदन^४ कौं तज सँनपती, धर मूसल कूँद परचौ धरती ।
 ईत नील प्रहस्तहु बीर ऊतै, जम-रूप भिरे मगहर जुतै ॥१७०९
 विव बैर-भरे ऊर आग बला, कर क्रुद्ध बिसारद जुद्ध-कला ।
 सिरदार ऊभै दन ऊच्च-सिरा^५, जनु कुंजर आय मदंध जुरा ॥१७१०
 चक छोह-भरे बनजात चले, मृगराज ऊभै मनु गाज मिले ।
 भिर येक सौं एक भजाँवन की, परतीत^६ ऊभै जय पावन की ॥१७११
 लख येक कौं एक कै रीस लगी, जनु लाय हुतासन^७ ज्वाल जगी ।
 कर आयुध लै कररे कररे, ईक पै ईक देखत ही ऊररे ॥१७१२
 जहाँ मूसल लेय प्रहस्त जुरचौ, कपि नील के ऊपर वार करचौ ।
 सिर चोट लगे तऊ ना सिरवचौ, तरु लै खल के ऊर में तरवचौ १७१३
 तरु चोट प्रहस्त सही तन में, रपट्यौ कपि नीलहु पै रन में ।
 खल आय लख्यौ हुय नील खरौ^८, पटक्यौ सिर ऊपर लै पथरौ^९ ॥ १७१४
 पथरा लग सीस भयौ पुरजा^{१०}, अरु मूसल हाथ रह्यौ ऊरभा ।
 धर धूज प्रहस्त गिरचौ धरनी, कपि नील प्रभूत करी करनी ॥१७१५

दोहा

जूथप मारचौ नील जुध, सेनापती प्रहस्त ।

कटे सुभट पर हय करी, सिकक्षक^{११} सेन समस्त ॥१६१६

१ सारथि । २ आश्विन = श्वार । ३ पास = निकट । ४ रथ । ५ उच्चकोटि के ।
 ६ विश्वास । ७ अग्नि । ८ खड़ा होकर । ९ पत्थर । १० सण्ड-खण्ड । ११ शिक्षित ।

राँम सुनी राँवन सुनी, बीती सो कछु बात ।
हरके^१ ईक धरके ऊवर, प्रफुल्लत^२ येक पिरात^३ ॥१७१७
मन राँवन मुरछत भयौ, तन सरसायौ तेख ।
द्रगन बलाबल देखनै, धरचौ राँम सौं धेख ॥१७१८

छंद मौतीदाँम

परचौ कपि नील के हाथ प्रहस्त, सुनी सोई राँवन बात समस्त ।
सभा विच आयेऊ ईन्द्र समान, सभासद ऊठ करचौ सनमान ॥१७१९
सिंघासन बँठ कछु सुसताय, प्रकासन^४ बात करी पिछताय ।
प्रहस्तहू बीर भयौ भवपार, सब दल राखस कौ सिरदार ॥१७२०
सुरेसुर^५ जीतन कौ समराय^६, हन्यौ कपि नील ऊठाय कँ हाथ ।
बड़े बलबाँन सब कपि बीर, धधूनत लंक पुरी रन धोर ॥१७२१
बलाबल देखन जाहि बिचार, रचावन जावहिगे हम रार ।
सब चतुरंगीय सेन सभाय, बुलाबहु मंगल बाज-बजाय ॥१७२२
करुँ कपि रीछ सँघार कँ कीच, बिजै^७ रस चाखहुगो रन बीच ।
ईतो कहि रथ मगाय अनूप, सभायकँ चालेऊ काल सरूप ॥१७२३
घनी भय संख नगारन धोर, हरुरत माँनहु सिंधु हिलोर ।
हुई चहु ओर न की बँन हाक, करी किलकारीय बीर कजाक ॥१७२४
गयंदन स्यंदन नेमीय गाज, बहे रथ जोर कँ केतक-बाज^८ ।
निखादीय^९ घंट सुनावत नद्द^{१०}, हले गज ऊपर बँठ हवद्द^{११} ॥१७२५
तुरंगीय^{१२} जंगीय होय तयार, डरावने चालेऊ पख्खर डार ।
चले भट कंकट-बूढ^{१३} चलाक, घरा चक डोल चढी पर धाक ॥१७२६
टंकारत चाप चले गहि तीर, भई नभ ऊपर भालन^{१४} भीर ।
कती परघातन साल कुठार, त्रसीरख^{१५} तिछ्छन लै तरवार ॥१७२७
बिचार कँ राँम सौं बैर बिधान, भई असवारीय रूप भयान ।
बन्यौ रज^{१६} डम्बर छाया बितान, भयौ अँधीयार न दोसत भान^{१७} ॥१७२८

१ हषित हुए । २ प्रफुल्लित । ३ पीड़ित । ४ प्रकट की । ५ देवता और दैत्य ।
६ समर्थ । ७ विजय । ८ घोड़े । ९ हाथी-सवार । १० नाद । ११ हौदा ।
१२ अश्वारोही । १३ बख्तर पहनने वाले । १४ माले । १५ त्रिशूल । १६ ध्वजी ।
१७ सूर्य ।

रसातल धूज दचकून रथ, मचकून लागेऊ सेस के मथ्य ।
 चले अगवाँन किते भट चाह. निचोलक सज्जत भोर सनाह^१ ॥१७२६
 अगारीय बाढत लंक-अधीस, करी किलकारीय भारीय कीस ।
 सुन्यौं रघुवीर जबै कपि सोर, चले दल हेरन^२ डेरन छोर^३ ॥१७३०
 वभीखन पूछन लागेऊ वात, असूचक^४ होत घने ऊतपात ।
 रुकायन^५ धावत आवत राह, ईहै खल कौन कहौ अवगाह ॥१७३१
 सुने रघुवर के वायक^६ श्रानं^७, बखानन लाग वभीखन बाँन^८ ।
 ऊभै चख दीसत जास अरुन्न^९, बिभात^{१०} के सूर प्रकास वरंन^{११} ॥१७३२
 निखादीय^{१२} बादीय जुद्ध निमंघ, कँपावत आवत है गज कंध ।
 अकंपन दूसर जानहु एह, दिखावत दिघघ सिलोचय^{१३} देह ॥१७३३
 दिखावत आभ अट्यौ धुज दंड, पताक में सिंघ लिख्यौ परचंड ।
 वन्यौ रथ वादर ज्युं वरसात, डुलावत चाप प्रभा दरसात ॥१७३४
 पराक्रम कुंजर आकृत पिंड, दिखावत सुंड ज्युंही भुज-दंड ।
 ईहै घननाद है वीर अभंग, अँनी^{१४} सभ आवत जुद्ध ऊमंग ॥१७३५
 सिलोचय दीरघ जेम सरीर, टंकारत चाप संभारत तीर ।
 रथी रथ बैठकै मांडत रार, करै जमदूनन काल करार ॥१७३६
 सोई चढ़ आवत बीच-सतंग^{१५}, ईहै अंतकाय है वीर अभंग ।
 चढ्यौ गज पीठ कीयें चख-चोल^{१६}, वकारत वीर भयंकर बोल ॥१७३७
 महोदर राखस ऐह मदंध, करचौ अगवाँन जही दसकंध ।
 ईहै ईक आवत अस्व-अरोह^{१७}, लीयै कर प्रास^{१८} प्रकासत लोह ॥१७३८
 मरीच^{१९} के आकृत भालरि मंड, दिखावत दिघघ^{२०} मही भुजदंड ।
 करै रन बीच भयंकर काँम, निसांचर जास पिसाच है नाँम ॥१७३९
 चढ्यौ ईह वल के ऊपर चंड, दिखावत सूल लयं भुजदंड ।
 निसांचर है त्रिसरा जिह नाँम, धुरंधर वीर महां बलधाम ॥१७४०
 प्रकासत मेघ के आकृत पिंड, भुजांतर दीरघ है भुज-दंड ।
 पताक में सेस लिखीं प्रतछाँह, वरावर चाप धरचौ जिह वाँह ॥१७४१

१ चकर । २ देखने । ३ छोड़ । ४ अपसकून । ५ रोकने के लिए । ६ वाक्य ।
 ७ शान्त । ८ बाण । ९ अरुण = लाल । १० प्रनात । ११ वरान । १२ हाथी-
 मण्डार । १३ पर्यंत । १४ सेना । १५ रच । १६ लाल । १७ घोड़े पर चढ़ कर ।
 १८ नाग । १९ किरण । २० दीर्घ ।

दिपै मगरूर भरचौ ऊरदंभ, कहावत है ईह राखस^१ कुंभ ।
 जरी परघातन सोवृन जाल, लगी बहु हीर-कनी बिच लाल ॥१७४२
 पताक कै आक्रत सैन प्रवाद, ऊठचौ रस बीर हीयै अहलाद ।
 सभारत आवत बीर ससुंभ, निरंकुस राखस येह निकुंभ ॥१७४३
 जगामग दीसत तेज जहूर^२, प्रकासत रथ्य चढचौ बलपूर ।
 टंकारत चाप गहै कर तीर, भजौ सोई आवत आयुध भीर ॥१७४४
 समानन^३ बीर मिलै समरथ्य, विधूनत पब्वय कौं भर वथ्य ।
 नरांतक राखस येह निसंक, लहै भुज लाज सदां गढ लंक ॥१७४५
 पंचानन आनन के परचंड, मृगादन सूकर कूकर मुंड ।
 क्रमेलक कुंजर मुंड कितेक, हयानन भेरु ऊचारत हेक^४ ॥१७४६
 दिखावत रूप ज्युंही जमदूत, भयानक संग भरे केऊ भूत ।
 भयंकर कल्प महेसुर भांत, दसांनन दीसत दीरघदांत ॥१७४७
 किरीट है सीस पै कुंडल कांन, अलंकृत अंगद^५ बाहु अजांन ।
 प्रचंडत पिंड जहीं पग पांन, सिलोचय दीरघ पिंड समान ॥१७४८
 छता सतकांबीय ऊपर छांय, दुती जिम पूरन चंद दिखाय ।
 चढचौ जय हेत असंभव छोह, अगंजत आवत रथ्य अरोह ॥१७४९
 सब दिसपालन रावन साल, बिलोकहु राधव बाहु बिसाल ।
 विभीखन बात सुनी रघुबीर, टंकारन चाप लगे गहि तीर ॥१७५०
 विभीखन रांम कही फिर बात, बली दसकंधर बीर-बिख्यात ।
 सुन्यौ हम बैरीय कांनन सोय, दसांनन देख लयौ द्रग-दोय ॥१७५१
 अचानक सीय हरी जिह आय, बिगोवत ताहो कौं कंद बसाय ।
 सीया ऊर बाढत सोक सताप, करै हम हेत अनेक कलाप ॥१७५२
 डरावत जाहीय पै दुख देत, खरौ हुय आय चढचौ रन खेत ।
 भई हम भाग सौं जाही तै भेंट, पचाएऊ दुःख ईता दिन पेट ॥१७५३
 भुजांतर^६ क्रुद्ध की आग भरीज^७, बसी जिम बादर अंतर बीज ।
 ईहै गवधार लख्यौ खल आज, गिरी अब चाहत ऊपर गाज^८ ॥१७५४

१ राक्षस । २ प्रकट । ३ आमने-सामने । ४ हींस, हिनहिनाहट ५ भुजबंध ।
 ६ छाती । ७ भरी हुई है । ८ गर्जकर ।

कहाँ अब जावहिगौ दिस कौन, सँपेखहु नैन सुन्यौ सोऊ सौन^१ ।
 ईती कहि श्री रघुबीर अशंग, निकारेऊ तिछछन बाँन निखंग^२ ॥१७५५
 सरासन साध चले गत^३ सीह^४, अगारीय जुथ्यप-जुथ्य अंबीह ।
 पछारीय लछछन राखत पीठ, धरै धनुँबाँन पराक्रम धीठ ॥१७५६
 निहारेऊ राँम कौ राँवन नैन, संबोधन^५ लागेऊ धापन सैन ।
 बड़े लघु देख लये कपि बीर, सपेखेऊ लछछन राँम सरीर ॥१७५७
 नही कोऊ मो-सम दीसत नैन, सुग्रीव की मारं बिडारहु^६ सैन ।
 सबै भट राखहु लंक सँभार, दवारन^७ च्यार तथा दरवार ॥१७५८
 सुने दसकंधर सासन^८ श्रान्त, गई सब सैन पुरी कर गान ।
 बढ्यौ रन-खेत की, राँवन बाँट, उठ्यौ रथ-नेमीय कौ अरराट ॥१७५९
 भये भयभीत सबै कपि भाल, कुप्यौ जिम कल्प अंभितर-काल ।
 जुरी कपि सैन समंदर जेम, तकी दसकंध तिमंगल^९ तेम ॥१७६०
 धर्यौ तिह डोहन कौ जलधार, हमलून बाँन ऊभल नहार ।
 चमाचम-घाप समा-सर चाल, भलकृत सोवन बाजरू भाल ॥१७६१
 दिखावत हाल भुजा दस-दूँन, कढ्यौ जम दछछन पावक कूँन ।
 भुक्व्यौ रन भीम भुजंगम भाट, डसँ सर दिग्घ बनोकन डाट ॥१७६२
 लखी निज सैन दुखी कपिनाथ, हले ईक श्रंग ऊठावत हाथ ।
 किते तरू जामह कोट कँगूर, जराव के काँम के तेज जहूर ॥१७६३
 पट्टकेऊ राँवन लायक पेल, रखी मुरजाद सौँ राज नरेख ।
 गिरी सिर आवत देखेऊ गैन, दसाँनन लागेऊ बाँनन दैन ॥१७६४
 सुबन के काँम के नाँम के साथ, हले दसकंठ के संठ के हाथ ।
 कपिस्वर सम्मुह आय करूर, दिखायेऊ डेरन कौ दसतूर ॥१७६५
 फिरायेऊ राँवन हाथ न फेर, हित्त कपिराज बराबर हेर ।
 सरासन बाँनन मार समाँन, पट्टकेऊ भूम गिरी पथराँन ॥१७६६
 सुग्रीव कौ हाथ दिखाय केँ सूर, गरज्जेऊ हीय में छाय गरूर ।
 तहाँ ईक दिग्घ^{१०} गह्यौ कर तीर, भुजंगम-रूप^{११} चिमंठीय भीर ॥१७६७

१ श्रवण । २ निपंग, तरकस । ३ गति, चाल । ४ सिंह । ५ संबोधन ।
 ६ नगा दौ । ७ द्वारों पर । ८ आदेश । ९ मछली । १० दग्ध, विष में बुझा हुआ ।
 ११ सर्प ।

सरासन साँध चलायेऊ सोय, जमाय कै दिष्ट सुग्रीव कौ जोय ।
 तज्यौ सर बज्र ज्युहीं ततकाल, कुमाँर^१ की सक्ति कै रूप कराल ॥१७६८
 कपीस कै लागेऊ घाव कठोर, लख्यौ^२ सोई पाव कौ गात लथोर ।
 मुरच्छ्रित होय गिरचौ धर माँहि, तहाँ कपि सैन मची बहु त्राहि ॥१७६९
 ऊमगेऊ राखस बीर अभीत, जिताहव^३ राँवन की लख जीत ।
 गवै नल जूथप देख गवाख, सुखेनहूँ रिछभ लै तरु साख ॥१७७०
 मिले कपि ज्योत मुखी रन मंड, पहारन हाथ गहै परचंड ।
 पट्टकेऊ, राँवन पै कर पाँन, ऊठाय कै धाय कै बाहु-अजाँन ॥१७७१
 कडे तब राँवन बीच कलाप, चलावन बाँन लग्यौ दस चाप ।
 अगंजित कीन प्रहार अचूक, तरु गिर तोर करे सत दूक ॥१७७२
 पराजित जूथ-पती भये पूर, गरज्जेऊ राँवन छाय गरूर ।
 लग्यौ दल कीस कौ मारन लार, रुप्यौ जनदूत बराबर रार ॥१७७३
 भये कपि राँवन सौँ कर भेट, मनोरथ जीतन की ऊर भेट ।
 सब मिल आयेऊ राँम सरन्न, बनोकह आँनन लाल बरन्न ॥१७७४
 बिलोक कै राँम उठे बरबीर, टंकारत चाप चढाय कै तीर ।
 लछ्छमन बोलेऊ पायन लाग, ऊपाय कै बीर होयै अनुराग ॥१७७५
 बस्यौ गृह आपन बात विगोय, दसाँनन देखेऊ नैनन दोय ।
 हीयै मह है हमरै कछु हाँम^४, करचौ सोऊ चाहत संगर^५ काम ॥१७७६
 बिलोकहु हाथ अब लघु-बीर^६, धरोज कौ राखहु धारहु धीर ।
 कही लघु-बंधव की सुन काँन, बिवार कै राखव बोलेऊ बाँन ॥१७७७
 इहै खल राँवन है बल ऊद्ध, जये दिस-पालन देवन जुद्ध ।
 अदेवहु नाँगन सौँ अनभीत^७, पराक्रम अद्भुत होत प्रतीत ॥१७७८
 जई जुर जाजुलहु जमजाल, करचौ जिह जेर भयंकर काल ।
 बकारहु आपन राख बचाय, धिराय कै संगर मारहु घाव ॥१७७९
 अगारीय चाल अरौ तुम आज, सभार कै सूरन-के-सिरताज ।
 करचौ ईह सासन^८ राँम कपाल, हितू लघु-बंधव कौ लख हाल ॥१७८०

१ कार्तिकेय । २ गिरा । ३ युद्धविजेता । ४ साहस । ५ युद्ध । ६ लक्ष्मण ।
 ७ निर्भय । ८ शासन = आज्ञा ।

चले रन लच्छन चाप चढाय, बहे संग जूथप पाव बढाय ।
 परे बहु घायल बंदर पेख, बढ्यौ ऊर अंतर क्रुद्ध बिसेख ॥१७८१
 कलाप^१ सौं लै कर तिच्छन^२ कंड^३, सँवारीय बाँह ऊभै गज-सुंड ।
 ईतै हनुमान्ह आय ऊमंग, अगारीय लच्छन चाल अभंग ॥१७८२
 मिले कढ राँवन सौं मुहमेज, तरौवर लै कर थंभेऊ तेज ।
 खच्यौ सर मारत राँवन रार, भूपेटन डारन भारन-भार ॥१७८३
 मलंगत^४ कूद परे रथ माहि, तचक्रीय मंच मचकन ताहि ।
 ऊठाय कै दच्छन बाह उदंच^५, नमाय कै दिष्टीय-मुष्टीय निच ॥१७८४
 करार के जाव कहे कर क्रुद्ध, अहो सुन लंकपती बल-ऊद्ध ।
 अवद्ध है देवन सौं असुराँन, जिहीं बिध जिक्षहु गंधूव जाँन ॥१७८५
 तथाँ नर बंदर कौ भय तोहि, मिली करसाख, लखौ ईह मोहि ।
 बस्यौ चिरकाल कौं पिंजर बास, सभार कै मुष्टि निकारहुँ साँस ॥१७८६
 सुने हनुमान के वायक श्रान, दसाँनन आग हीयै दहकाँन ।
 कह्यौ मुसकाय अहो सुन कीस, बिलोकहु मेरेहु पाँनन बीस ॥१७८७
 चलावहु तेरेई हाथ की चोट, खरौ हुय पोच^६ परौ मत खोट ।
 जबै हनुमान दयौ सुन जाव, सुनौ ईक मेरीय बात सताव ॥१७८८
 चलाय कै हाथ की येह चपेट, अखँ-सुत लीनेऊसास अमेट ।
 वहै कर मुष्टि प्रहारत आज, धरोज कौं राखहु लंकधिराज ॥१७८९
 ईहै सुन राँवन लागीय आग, जरचौ ऊर सोक हीयै रिस जाग ।
 दई हनुमान कै लात की दोट, चले पग लाग भुजांतर चोट ॥१७९०
 अरुभ कै छातीय प्राँन अपाँन, मुरच्छत होय गये हनुमान ।
 कछू सुसतायक^७ छाय कै क्रुद्ध, ऊठे हनुमान पराक्रम ऊद्ध ॥१७९१
 दई ईक लात हीयै दसकंध, विचालीय खाय गये न सबंध ।
 धुक्यौ दसकंधरह सिर धून, मुरच्छत होय लई मुख मँन^८ ॥१७९२
 भये तन व्याकुल राँवन भूप, रिखीगँन देख सबे अभिरूप ।
 अनंदत देव भये सिध श्रीर, जहाँ हनुमान कौ देख कै जोर ॥१७९३

१ तरपस । २ तीक्ष्ण । ३ बाण । ४ हनुमान । ५ ऊंची । ६ डरपोक ।
 ७ रघुप होकर । ८ मीन ।

कछु सुसतायकै राँवन क्रूर, जई हनुँमाँन सौँ बोल जरूर ।
 अहो सुत-फेसरी मोर अमित्र^१, बड़ाई के लायक बीर विचित्र ॥१७६४
 पराक्रम देख भये हम प्रसन्न^२, सुधारहु स्वाँमीय काम सहिस्तु^३ ।
 सुने हनुँमाँनहू येह सवाल, कह्यौ सुन लंकपती ततकाल ॥१७६५
 लगी हमरी तुमरे ऊर लात, करौ फिर बात रहे कुसलात ।
 पराक्रम है धिक मोर प्रहार, परे रन-खेत न पाव प्रसार ॥१७६६
 अब कछु कीजिये मोहि पै वार, रूप्यौ पग माँड़ के जाचत रार ।
 पराक्रम तोहि परै पहिचान, जुहारहु फेर बलाबल-जान ॥१७६७
 बसावहु फेर पुरी-जम^४ बीच, मिलाय कै जीरन^५ गात कौँ मीव^६ ।
 लख्यौ बलवान पती-गढ़-लंक, खिसावहु नाँहि भये हीय खंक^७ ॥१७६८

दोहा

सुने बचन हनुँमाँन श्रुत, राँवन उठ्यौ रिसाय ।
 मुक्का दीय हनुँमाँन कै, छाती में चक छाय ॥१७६९
 मुक्का लग हनुँमाँन हू, बिहबल भयो बसेस ।
 तही लंकपत छोर तहाँ, आगै बढ्यौ असेस ॥१८००

छंद त्रोटक

सजरंग सरीर लख्यौ विचल्यौ, चक छाय कै राँवन अग्र चल्यौ ।
 बिच नील मिले पति-जूथ बली, गिर श्रंग गहै रन-ताल-गली ॥१८०१
 पहिचान कै नील कौँ लंकपती, महाँक्रुद्ध धिख्यौ द्रढ़संध^८ मती ।
 कर में गहि तिछ्छन बाँन कई, तन नील कै दिन्नीय मार तई ॥१८०२
 नहीं नील लख्यौ सर लागन सौँ, तन नाँहि धट्यौ रन-त्याग न सौँ ।
 कर सौँ गिर-श्रंग तज्यौ कररौ, अंतरीख^९ सौँ राँवन पै ऊररौ ॥१८०३
 गिर श्रंग पै राँवन सात गने, चटकाएऊ तिछ्छन बाँन चुने ।
 कट श्रंग परघौ सोई ह्वै किरका, धरनी पुर धूज ऊठे धरका ॥१८०४

१ शत्रु । २ प्रसन्न । ३ सहिष्णु = सहनशील । ४ जमपुरी । ५ जीर्ण । ६ मृत्यु ।
 ७ क्षीण । ८ दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़निश्चयी । ९ आकाश, ऊपर ।

ईतनै हनुमाँनहु आय ईतै, लख राँवन नील ऊभं लरतै ।
 हस बोलेऊ राँवन सौं हटकै, कर तेरही नीलहु सौं कटकै ॥१८०५
 हम धर्म द्विचार कै छोर हलै, भरपूर लरौ तुम नील भलै ।
 हनुमाँन चने ईतनी कहिकै, बढ राँवन अगृ चलयौ बहिकै ॥१८०६
 ईतनै फिर जूथप नील अरचौ, सहकार^१ के पेढ़ लयै सँभरचौ ।
 पटकै रथ राँवन पै पिल कै, महाँ जुद्ध करचौ समुहा मिलकै ॥१८०७
 सर राँवनहु बरसे सर सै, कररे गहि चाप घने कर सै ।
 लरनं नहि नील कौ बार लग्यौ, जुझलाय कै हीय में क्रुद्ध जग्यौ ॥१८०८
 धरनी तज बैठेऊ कूद धुजा, पट फार करे पुरजा-पुरजा ।
 कर सुक्षम संचर^२ जोग-कला, ईत सौं ऊत पायन सौं ऊछला ॥१८०९
 बदलै पग चाप कै आगै बढै, कबहूक किरीट की जागै कढै ।
 रथ थूनी धधून मचाँन रूपै, कबहू चढ गुंमज काल कुपै ॥१८१०
 पग जेम चलाकीय पाँनन^३ की, बहकी मति देख दसाँनन की ।
 अबसाँन खता हुय नील अगा, जीय राँवन अप्रीय क्रुद्ध जगा ॥१८११
 अगनास्त्र^४ कौं याद करचौ ऊर में, घट बीत गड़चौ जिमही धर में ।
 सर चाप संजोजत कौन सहो, कछु राँवन नील सौं बात कही ॥१८१२
 कपि जालक^५ तेरी लखी करनी, हित सौं मति सौं चित कौं हरनी ।
 डहकाय न राँवन चित्य डरै, किह कारन मायक छिद्र करै ॥१८१३
 अगनास्त्र लयौ कहि कै ईतनी, कढनै कँह ज्वाल लगी कितनी ।
 कररौ गहि बाँन प्रहार करचौ, गत बेग भयौ कपि नील गिरचौ ॥१८१४
 पितु अग्नि लख्यौ सुत हेत पखौ, रुख सौं तन प्राँन बहाल रखौ ।
 मुरछा-गत होय बचे मृतु सौं, चल राँवन छोर बढचौ चित सौं ॥१८१५
 मग ऊपर लछ्छन बीर मिले, सर हाथ सरासन लै समले ।
 पय राँवन रोक कही प्रवृती^६, पग थंभहु खेत में लंकपती ॥१८१६
 कहा बदर सौं तुम रार करौ, मम हाथ लखौ रन-खेत मरौ ।
 कदु बायक लछ्छन एहु कहे, सुन राँवनहु श्रुत नाँहि सहे ॥१८१७

१ आत्र । २ शरीर । ३ पाणि, हाथों । ४ आग्नेयास्त्र । ५ इन्द्रजाल करने वाला ।
 ६ वार्ता ।

पुन लच्छ्छन बोलेऊ लंकपती, मृजु के बस तूं बिपरीत मती ।
 मम भाग सौं आज भयो मिलनी, द्रढ बाँनन प्राँन करु बलनी ॥१८१८
 रन में जुग पायन रोप रहौ, गुन तान के पाँनक बाँन गहौ ।
 सत त्यागहु छत्रीय-धर्म मती, जब जानहु लच्छ्छन बीर-जती ॥१८१९
 सुन लच्छ्छन राँवच बात सबै, जुत धीरज दीन जबाब जबै ।
 बकबाद सौं गाल बजाय वृथाँ, जलपै कहा बीरत^१ बात जथाँ ॥१८२०
 बल बीस-भुजा बतलावहुगे, परतीत पराक्रम पावहिगे ।
 द्रग सौं हम आयेऊ देखन कौं, बल बाँहन बीस-बिसेखन कौं ॥१८२१
 पति-लंक दिखावहु बीर-पनी, घट बीच भरचौं किहू काँम घनी ।
 सुनकै ईह राँवन बोल समा, कर तिच्छ्छन बाँनन लेय क्रमा ॥१८२२
 द्रढ लच्छ्छन गात पं सात दये, जिह आवत लच्छ्छन बीर जये ।
 सर^२ सौं सर^३ काट कै बीच सबै, तल-भूम गिरायेऊ बीर तबै ॥१८२३
 करनी लख लच्छ्छन बीर-कला, बढ लंकपती ऊर क्रुद्ध बला ।
 सर तिच्छ्छन लच्छ्छन दे समल्यौ, मनु राँवन साँवन मेघ मिल्यौ ॥१८२४
 बरसाँवन बाँन लग्यौ बरसा, पुरे लच्छ्छन येकहु ना परसा^४ ।
 अघ बीच फटे सब आवत ही, चिमठी केऊ चाप चढावत ही ॥१८२५
 लख हाथ चलाकीय लच्छ्छन की, गत बुद्ध भई रन गच्छ्छन^५ की ।
 मन राँवन-मारन कीन मती, बढ लच्छ्छन सिंघ मनी बिरतौ ॥१८२६
 कर बाँन गहे जनु आग-कला, चढ पाँख^६ बला जिम नाग चला ।
 सोई राँवन काट गिराय सबै, तक लच्छ्छन दिन्नेऊ बाँन तबै ॥१८२७
 ईक भाल में लाग के बाँन अटचौं, लगतै सम लच्छ्छन बीर लटचौं ।
 मुरझा-गत होय छिनेक महीं, ऊठ पूँछ मरौरत जेम ग्रही^७ ॥१८२८
 फिर लच्छ्छन राँवन ओर फिरा, धनुँबाँन सौं तोरकै डार धरा ।
 धनु तूटत राँवन क्रुद्ध धिख्यौ, बहु लच्छ्छन पं सर लै बरख्यौ ॥१८२९
 सर लागत लच्छ्छनहू समले, द्रढ राँवन को बपु बाँन बले ।
 रत छूट बह्यौ अत राँवन के, बपु दीख परचौं बिड़ राँवन के ॥१८३०

१ वीरत्व, वीरता । २ बाण । ३ शिर । ४ स्पर्श किया । ५ गमन । ६ पक्ष्म, पख ।
 ७ सर्प ।

मुरछा हुय जागेऊ खेत सहीं, गल गज्ज कै रावन सक्ति गही ।
 विध के बरसौं द्रढसध बनो, अगनी सम तिछ्छन जाहि अनी ॥१८३१
 सनि माँनक हीर जुँ हार मढी, चमकै बिजुरी सम हाथ चढी ।
 दसकंधर लछ्छन ताक दई, भुज अंतर^१ में तिह भेट भई ॥१८३२
 लगत हीय लछ्छन मोह लयौ, भुय पै गिर बीर अचेत भयीं ।
 मुरछागत लछ्छन देख मही, तज कै रथ राँवन आय तही ॥१८३३
 ऊमह्यौ ऊर गात ऊठाँवन कौं, जिह लेय पुरी कढ जाँवन कौं ।
 सोई राँवन जोर सरासर में, किबलास^२ ऊठाय लयौ कर में ॥१८३४
 जिह लछ्छन घ लेऊ हाथ जहाँ, तरके धरके कपि देख तहाँ ।
 पर लोथ ऊठी नही पाँनन सौं, ऊचरचौ प्रवृती दस-आँनन सौं ॥१८३५
 पहिचान बिना कीय बैर-पनौ, हठ ताही तै लाग कै तोहि हनौ ।
 लघु भ्रात ही राँम के लछ्छनहू, बड़ भ्रात है तोर बिचछ्छनहू ॥१८३६
 जिनकौं अब देखन जावत हैं, ईह कारन नाँहि ऊठावत हैं ।
 लख कै हनुँमानहु लछ्छन कौं, रपट्यौ गत चंचल रछ्छन^३ कौं ॥१८३७
 हीय राँवन कै ईक मुष्टि हनी, धर बक्षन जाय टिकी ढकनी ।
 मुरछागत होय लयौ मगकौं, पनुँहीन बिसार ऊभं पगकौं ॥१८३८
 रथ पै लथरावत जाय रूप्यौ, करनै रन कारन फेर कुप्यौ ।
 लीय मारुति^४ पीठ पै लछ्छन हू, अवलोक कै राँवन अछ्छनहू^५ ॥१८३९
 लख एह चरित्र कौं चित्त लट्यौ, हनुँमान सौं संगर-काज हट्यौ ।
 हनुँमान तौ लछ्छन लेय हले, महाराज रघूपत जाय मिले ॥१८४०
 लख राँम विहव्वल लछ्छन कौं, वपु कीन बहाल^६ बिचछ्छन कौं ।
 कपि फौज विसास कै फेर कुपे, रघुनायक राँवन जुद्ध रूपे ॥१८४१
 रथ में असवारीय राँवन की, पनही^७ बिन राघव-पावन की ।
 रघुबीर कौं पैदल देख रसा, पग मारुति हाथ ऊभं परसा ॥१८४२
 मोहि पीठ पै होय सवार मिलौ, दसकंधर के दसकंध दलौ ।
 ईह मारुति कै सुन कै अरजी, गढ लंकपती जय के गरजी ॥१८४३

१ घानी । २ फलाम । ३ रक्षक । ४ हनुमान् । ५ अक्षि, आंस । ६ स्वस्य ।
 ७ उपावह = जूते ।

चढ़ मारुति पीठ पै राँम चले, मुहमेज पती-गढ़लक मिले ।
 जुत मारुती राघव जुद्ध जुरे, अरुनानुज^१ माँनहुं बिस्तु अरे ॥१८४४
 द्रढ़ मारुती राघव देख दुनै^२, धरक्यौ दसकंधर सीस धुनै ।
 मुरक्यौ^३ दसकंधहु जुद्ध मतै, जुत राघव हू हनुँमाँन जितै ॥१८४५
 मिल राँम जबै रन खेत मही, कररी दसकंधर बात कही ।
 मम भ्रात लछंमन मारन कौ, परठीकर सक्ति प्रहारन कौ ॥१८४६
 कररी हम चाँप गह्यौ करं में, अब बाँन प्रहारत हूँ ऊर में ।
 पग माँडहु संमुह लंकपती, खर-दूखन ज्यूँ रन खेत खिती ॥१८४७
 लघु भ्रात कौ बैर लहूँ लरकै, कछु बाँनन की करनी करकै ।
 सुन राँवन बात हीयै सरस्यौ, बहु बाँनन राघव पै बरस्यौ ॥ १८४८
 सर राँवन लागेऊ राँम सबै, ज्वाल सक्ति भुजंगम रूप जबै ।
 घट पीर भई जिम रोख^४ घुटचौ, दसकंधर बाँनन देय दख्यौ ॥१८४९
 हनुँमाँन हकार कै राम हले मुहमेज पती गढ़-लक मिले ।
 सर तिछ्छन^५ चाप चढाय सबै, तक राँवन मारेऊ राँम तबै ॥१८५०
 परगे धर सिद्धन तूट पई, मिलगौ सिर छत्रहु धूर मई ।
 धुज डंड धुजाधर जाय धुके, मर स्वारी घोरन प्राँन मुके ॥१८५१
 ईक बाँन दयौ ऊर में अटक्यौ, भल वीजल ज्यूँ खटक्यौ भटक्यौ ।
 सर चाप गिरे कर बीस सबै, तन सौँ मन होय अचेत तबै ॥१८५२
 रघुनाथ दसा लख राँवन की, घट पीड़त हूँ घबराँवन की ।
 कर बाँन लयौ अर्ध चंद कला, बिजुली दृति आग भला बिपुला ॥१८५३
 कर घाव प्रहार किरोट^६ कटे, जगमग जँवाँहर काँम जटे^७ ।
 लुरवचौ दसकंध थक्यौ लरतौ, फँनि^८ ज्यूँ मनि हीन रुक्यौ फिरतौ ॥१८५४

दोहा

राँवन रन करतौ रुक्यौ, बोले श्री रघुवीर ।
 भये श्रमत जुध करत भुज, पुन सर बाढी पीर ॥१८५५
 अब लंका जानौ ऊचत, रन तज कै मन रोख ।
 छत्र मुकट बिन छत्रधर, देखत लागी दोख ॥१८५६

१ गरुड । २ दोनों । ३ मुड़ा । ४ रोष = क्रोध । ५ तीक्ष्ण । ६ मुकुट ।
 ७ जटित । ८ फण ।

साभू बदल रन के सबे, स्वारथि हयन सहेत ।
 रथ चढ आवहु रार कौं, खल तोहि मारहुं खेत ॥१८५७
 लज्जत ह्वै लंका गयो, राँवन हू तज रार ।
 आय सबर रघुपत ईतै, लछ्मन कौं लहि लार^१ ॥१८५८
 भाल साल कपि भाल के, सबै निकारे सोध ।
 सैना कीय हरखत सकल, बहुविध दैकै बोध ॥१८५९

छंद भुजंगी प्रयात

पहूच्यौ ऊतै लंक में लंकपत्नी, छिकी राँन के बाँन सौं जाहि छत्ती^२ ।
 अहंकार खीनौ^३ भयो मोह^४ आई, सबै ईंद्रीयाँ एक साथै सिराई ॥१८६०
 करी जानक केहरी कौं कुपायो, मनौ व्याल^५ कौं बैनतेई^६ मिलायो ।
 दसा लंक-राजाँन ऐसं दिखाई, बिथा राँम पै जाय जैसे बसाई ॥१८६१
 लरे तै बचे जे कोऊ बीच लंका, बुलाये सबै निश्चरा वीर-बंका ।
 हितू जानक मर्म खोल्या हीया कौ, सध्यों आय वृताँत जैसे सीया कौ ॥१८६२
 दयो वेदवती जबै श्राप टुठटा, रही ज्याँन की होय कै श्राप रुठटा ।
 नरा बाँनरा भोत ब्रह्माँ बखानी, बृथाँ होय नाही सोई सत्य बानी ॥१८६३
 कही भूप ईक्षाक वंसी कथा कौं, जहीं नाम अनरन्थ जानौ जथा कौं ।
 छिती के पराजीत तै कोन छत्री, ईकाकी करी मोय ही सौं अमित्री ॥१८६४
 अरे राँववा तूँ बन्यौ आतताई, खिती जात खत्रीन^७ मारी खपाई ।
 विधूसै^८ तुमै खेत में मोर वंसी, प्रपुत्रं सपुत्रं कोऊ ह्वै प्रसंसी ॥१८६५
 जिही वंस में भूप दसरथ जाये, ऊभै राँम औ लछ्छनं ऊठ आये ।
 विदेही वंहीं औतरी वेदवती^९, करचौ हर्न ताकौ कमाई कुमती ॥१८६६
 करी है दई गत्त^{१०} औरै करैगे, लखैगे तऊ खेत बीच लरने ।
 वचंगे अबै कुंभकर्न वचाए, जगावौ अहो भ्रात कौं मात-जाये ॥१८६७
 जिहीं नैन है रथ्य कै चक्र ज्याँही, महाँ ज्वाल माला धिकै जांस माँही ।
 अठारं अरु तीन सै हाथ ऊँचा, लखावै गिरी-श्रंग^{११} ज्याँ लाय लूँचा ॥१८६८
 जनावै सोई तीन सै हाथ जाड़ी, अगारीय छारीस^{१२} वं नाव आड़ी ।
 जिही खेत में देव कं कीस जाती, चढंगे कही कौन से आय छाती ॥१८६९

१ पीये । २ छाती । ३ क्षीण । ४ मूर्छा । ५ सर्प । ६ गड़ । ७ क्षत्रियों ।
 ८ विध्वंस करे । ९ वेदवती । १० गीत । ११ पर्वत शिखर । १२ छयालीस ।

कही लंक-कै-धीस ऐसी कहाँनी, महोद्राद जूपाख हू बात साँनी ॥
 जगाने चले कुंभकनं जबै ही, सभे निश्चरा साथ घेरे सबै ही ॥१८७०
 चछोहे घने बीर भागे चलाको, जुरे चाहिकै जायकै पौर जाको ।
 बन्यौ ऊढ धाँस चहूँ कोस व्यासा^१, तरै भोतरै सौँ गुफा ज्याँ तरासा ॥१८७१
 बढे अगु कौँ बीरहू द्वार बीचै, प्रस्वासा प्रवाहं परे पाव पीचै^२ ।
 बड़े जतन सौँ जाय पूगे बिचाला, चहूँ ओर सौँ घेर कै कोन चाला ॥१८७२
 पुकारे करै काँन कै लाग खासै, सुगंधी सुँवोवै कोऊ नासका सै ।
 टटोरै कोऊ पाँन अंध्री^३ टरावै, खिसैनाँ घने बीर आयी खितावै^४ ॥१८७३
 मड़े मूसला मारहू मुग्दरा को, सिला श्रंग डारै ऊपारै सभाकी ।
 किते मत्त हाथो अरू केलकिर्ना^५, चढाये घने चाँप कै कर्न चर्ना ॥१८७४
 बजाये किते दुँदभी ढोल बाजा, अयासा^६ रसाँ^७ छाई अवाजा ।
 तऊँ नाँहि दूरी भई तास तंद्रा^८, करै सास निर्धोकहू नाँस किद्रा ॥१८७५
 जबै जाय कै ताहि नारी जुहारी, कितो कुंभकनं बरी सो कुमारो ।
 सुरी किन्नरी गंधुबी आसुरीहू, नेगी पन्नगी दिव्यरूपा नरीहू ॥१८७६
 जही जेष्ट कौँ कष्ट कै बीच ज्याँन्यौ, पती कौँ जगावौँ मती सौँ प्रमान्यौ ।
 सबै दिव्य आभनं सोगंध^९ सीची, सभौ भौँन पोसाक बोलै सधीची^{१०} ॥१८७७
 विपंची^{११} मृदंगा लई हाथ बंसी, प्रचारचौँ जहाँ राग नाना प्रसंसी ।
 गिरा कोकला गायनी गीत गाये, जुरै भाँमनी कुंभकनं जगाये ॥१८७८
 बिभुक्षा लगी आयकै ताहि बेरी, घसी मिष्ट चीजें मगाईँ घनेरी ।
 सफाला^{१२} सुसा बर्करा क्रसन-श्रंग, करे भुँज आहार केते कुरंगा ॥१८७९
 करचौँ पाँन बारी सहंस करीरा^{१३}, सबेसा कछू ताहि त्यागौँ सरीरा ।
 मिटी नाँहि कोसीदता^{१४} नैन साँही, तऊ बात पूछी बिचारे तहाँई ॥१८८०
 जरूरी कहौँ कौँन काजें जगायौँ, अजौँ नीद सौँ मैँ न पुरौँ अघायौँ ।
 सुनी कुंभकनं कही बात स्याँनी, महोद्रं कही और जू पाँखमानी ॥१८८१
 महोद्रं कही बात जू पाख मंत्री, सदाँ लंक-कौ-धीस राजा-सुतंत्री ।
 लई बाँदरा घेर कै जास लंका, बली राम औँ लछछनं बीर बंका ॥१८८२

१ व्यास । २ पीछे । ३ पैर । ४ लज्जित होते हैं । ५ गधा । ६ आकाश ।
 ७ पृथ्वी । ८ निद्रा । ९ इत्र । १० सखियाँ । ११ वीणा । १२ मेंढा ।
 १३ कलश । १४ आलस्य ।

अक्षीतौ^१ मच्यौ आय कं विघ्न ऐसै, करं आपसौं बीनती येह कंसै ।
 परे जूभकै खेत में सैन-पत्ती, कटी राखसी सैनहू साथ कित्ती ॥१८८३
 वच्यौ जेष्ट-भ्राता^२ गनौ सो बधाई, कहैगे मिले पै करी सो कमाई ।
 सुनी कुंभकर्न ईती हेत सेती, जिहीं देर कीनी न उन्मेख^३ जेती ॥१८८४
 भलै आय भेटचौ जब जेष्ट-भ्राता, सब रीत भाखी ऊभं ओर साता ।
 लघु-भ्रात ही सौं कही लंक-राई, लंगूला परी आय लंका लराई ॥१८८५
 कही कुंभकर्न कौही कारना सौं, धरूँ ध्यानं मेहूँ जँही धारना सौं ।
 सुनी बंधु की बात कौं बीस-भ्रांती, कही आद सौं अंत बीती कहाँनी ॥१८८६
 जती दासरथ्यी पती-श्रीध-जाये, ऊभं भ्रात नारी बनोवास आये ।
 सोई स्यामलं गौर सोहै सरौरा, बड़ौ राँम नाँमै लघु लछछ बीरा ॥१८८७
 सुपन्खा सुसा^४ फाटकै नाक श्रांता, थितो^५ लोप कं आद बिद्वेख ठाँना ।
 खरदू खनं जाँन कं ताहि खूनी, सीया बैर में जाय माँगी सलूनी^६ ॥१८८८
 दई नाँहि जापै बढ्यौ फेर द्वेसा, करचौ चाहिकं जाहि ही सौं कलेसा ।
 जुतै वाँहनी मार डारे जँही सौं, सुपन्खा कही आयकं मोहि ही सौं ॥ १८८९
 तिहीं बैर में सैं हरी नार ताही, भृमंते रहे अट्टवी^७ जुगम-भाई ।
 भये मित्र सुगुँव के भेद भावै, दल्यौ जाय बाली बली बैर दावै ॥१८९०
 कपीसा भयो राँम की स्याहिकारी^८, जँही दूत आयौ तहो लंक जारो ।
 द्रुतं जाय ताही सबै भेद दीनौ, कपी सैन कौं जोर कं गौन कीनी ॥१८९१
 ऊलंधे जलाधीस कौं वार आई, लगी लक में तहि सेती लराई ।
 घने निश्चरा मार कं नगृ^९ घेरा, समदं करै नित्त संध्या-सवेरा ॥१८९२
 मिल्यौ जाय वम्भीखनं सत्रु माँही, सोई ग्रेह कौं भेद देवै सदाही ।
 तनू मोहि भ्राता भरोसौ तिहारौ, बनै सिद्ध काजं विवेकं विचारौ ॥१८९३
 सुनी जेष्ट-भ्राता कही बात सोई, सलाहा हृदै में विचारौ सकोई ।
 जया कुंभकर्न कही हाथ जोरै, अगै बात मेहूँ सुनी एक ओरै ॥१८९४
 पती शौघके दासरथ्यी पुनीता, परंमातमा पुञ्ज^{१०} ह्वै है प्रवीता ।
 सोई आयकं ओतरे राँम सार्च, कहे नारदं वाक्य ना होय कार्च^{११} ॥१८९५

१ बिना लोषा हृष्या । २ राबण । ३ क्षण । ४ बहिन । ५ मर्यादा । ६ सुंदरी
 पीता । ७ ब्रह्म । ८ सहायक । ९ नगर । १० पूज्य । ११ मिथ्या ।

तजी बैर तातें करौ मित्रताई, भयौ मित्र बभीखन आप भाई ।
 सीया कं दयें होय लंका सुधारौ, बिवेकं जुते बात मेरी बिचारौ ॥१८६६
 सूनी राँवनं कुंभकर्न सलाहा, हीयौ क्रुद्ध भीनौ कह्यौ बंधु हा हा ।
 सिखावें कहा सीख कौं होय स्यांना, अहूँ राँवनं मत्त हथ्यी अमांना ॥१८६७
 किलावें चढायौ नही कुंजरौही, लग्यौ बाँकुरी^१ आँकुरी नाँहि लोही ।
 निसा दीह डोल्यौ फिरचौ में निसंका, सहै आज कसै गहै हीय संका ॥१८६८
 कहे बोल ऐसे खिज्यौ साप काला, कहे बोल कै बोल केते कराला ।
 जबे^२ कुंभकर्न लखी भूप जी की, निदानं सुनाई सब बात नीकी ॥१८६९
 जिते कुंभकर्न लघु भ्रात जीवें, पती लंक के सत्रु-कौं श्रोन पीवें ।
 गहै ईरखा तोरसौं रीस गाँसै बचे नाँहि जो रुद्र कै जाय बाँसै ॥१८७०
 करी सत्रुता राँम नै स्याँम काया, जिही तोहि कौं काल सूता जगाया ।
 कपीसा भयौ ताहि कौं स्याहिकारी, भरी बंदरी सैन की भीर-भारी ॥१८७१
 सुते जायकं मारहूँ खेत सारा, पती-लंक के देख मेरा पवारा ।
 मरे भीच केते परे खेत माँही, तिही नार रोवें जहाँई तहाँ ही ॥१८७२
 अगोचान^३ सें पौँच^४ हूँ आय अंखी, प्रस्वासा ऊड़ाऊ अरी प्राँन पंखी ।
 जम्यौ कुंभकर्न खदासोस जौलौ, तवाई कहा लंक के धीस तीलौ ॥१८७३
 मिले राँम पें मार हूँ हाथ मुक्का, बिछोरूँ हीयें कालजा और बुक्का ।
 सगौ भ्रात है लच्छनौ ताहि संगी, चपेटाँन की पार हूँ मार चंगी ॥१८७४
 कपीसा^५ जोई पर्वताकार काया, ईती बंदरी सैन लें स्याहि आया ।
 भखूँ सो लखूँ खेत में आय भेटै, प्रनासूँ विभुक्षा रही लाग पेटै ॥१८७५
 हनूँमान जारी पुरी लंक हेरी, करेजे अगोठी धुकै आग केरी ।
 सिराँऊँ तही मारकै मोर सीना, हराँमी भगै नाँहि जो पूँछ हीना ॥१८७६
 करे स्याहि जो ईंद्रह रुद्र कोऊ, पती-लंक तेरे अरी-सु लपोऊँ ।
 निसा सिभ पें नींद लैही नचीता^६, सब सोक जावै जहाँ होय सीता ॥१८७७
 कही बात ऐसी जबे कुंभकर्न ह्यौ राँवनं हीय कौ सोक हर्न ।
 उठ्यौ आसनं छोर साँमीप आई, मनी माल मुक्तालताहूँ मगाँई ॥१८७८
 गरे डार कै श्री लगाई सुगंधा, बहूटा^७ बिहू^८ हाथ सौ हाथ बंधा ।
 जबे कुंभकर्न कही हाथ जोरै, महाराज लागी हीयें धंख मोरै ॥१८७९

१ अंकुश । २ जब तक । ३ अंगोछा । ४ पौँछकर । ५ सुप्रीव । ६ निश्चित ।
 ७ भुजबंद । ८ बोनौ ।

मिलूं राँम सँ जाय कै खेत माहीं, जुरे जुथ्यपं जुथ्य ठाढे जहाँ हीं ।
 सही जाय ना गजंना कान सेली, करी लंक पीड़ा हनी सैन केती ॥१६१०
 सबै बैर लैहँ जबै नौद सोऊँ, खरारी^१ जुतै बंदरी सैन खोऊँ ।
 बिकासी बड़े-भ्रात के पाव बंदे, ऊठ्यो लंक के नाथ हू कौ अनंदे ॥१६११
 लयो जेष्ठ-भ्राता जहाँ अंक लाई, मगाये घने मिठ मेवा मिठाई ।
 लघाये केऊ कुंभ^२ सोबन सुंडा^३, करयो चुबनं मध-संधानं^४ कुंडा ॥१६१२
 खुध्या स्वादनं खाय भेटे खुराकी, जनावं कहा लेख संख्या न जाकी ।
 पती लंग हू अख सख प्रवीना, दकूलं जरी रेसमी जोय दीना ॥१६१३
 सुनेरी सनाहं जँही अंग साज्यौ, बिचै भूम मानौ सुमेरु विराज्यौ ।
 ऊठ्यो जुद्ध कौ क्रुद्ध ह्वै बीर ऐसै, जमी नापनै बाँवना बिप्र जँसै ॥१६१४
 सिलासार^५ कौ हाथ लीनौ त्रसूला, बढ्यो उद्ध बिद्वैस माँनौ बधुला ।
 चढ्यो रथ्य पै जाय डाँकी चलाकी, कुसाग्रीव-बुद्धी समदं कला की ॥१६१५
 चलयौ जुद्ध की नीम दै चौह चक्के, मही धुज्जकै सेस साथै मचक्के ।
 सभौ सैन सथ्यो पयादीह सादी, नियंता रथी-रथ्य हथ्यो-निखादी ॥१६१६
 बकारे सबै धीर पै बीर बुलयौ, तसंय्यौ भुजा तोक कै सूल तुलयौ ।
 चसंय्यौ, सोई ऊद्ध आभा छटा ज्युँ, घनाकार कारौ लखावौ घटा ज्युँ ॥१६ ७
 चरा-कांतरा^६ है निसाचार चारौ, ईहाँ आयकै बीर मंड्यौ अखारौ ।
 धनुर्बान धारै जती वेखधारी, खरा^७ मारकै नाँम पायौ खरारी ॥१६१८
 लघु भ्रात है लछ्छनं जाहि लारी, बिरुपा^८ करी सुप्तखा हू बिचारी ।
 हीया में बिचार्यो नही होनहारा, करगं घलयौ पूँछ कौ नाग कारा ॥१६१९
 सबै जायकै देखहँ साथ सूरौ, भए एकठे लंक भाखै भरौ ।
 सुनो कुंभकर्न कही बात सोऊ, ईकाकी चले बीर ह्वैकै अगोऊ ॥१६२०
 गरै नाद कीनौ मनौ मेघ गाजै, ईभारी^९ करी^{१०} देख जँसे अग्राजै ।
 बढ्यौ मग कौ सूल लीनै बिसाला, मती ध्रुमृकेतू सिखा ज्वालमाला ॥१६२१
 बिचाले त्रपंखा जहीं गिद्ध बैठी, अगारो गिरायौ तँही माँस ऐँठी ।
 परी ऊल्लका खुल्लका नाद पूरची, घसी धूँतरी नैन आभा धरुर्यौ ॥१६२२
 मुर्यो ना तऊ जुद्ध ही जाय मंड्यौ, घटा मेघ की बाँन-धारा घुमंड्यौ ।
 लख्यौ कुंभकर्न कपी सैन लट्टी, सबै अंगदं नील पासै समट्टी^{११} ॥१६२३

१ राम । २ घड़े । ३ शराव । ४ मांस अचार आदि । ५ लोहे । ६ कौनर ।
 ७ खर । ८ कुल्पा । ९ तिह । १० हाथी । ११ सिमिट कर इकट्ठी हो गई ।

कुमंदा गवाक्षा चले सन^१ केते, लुके अंग्रय कै सांकरै^२ सास लेते ।
 कहे अंगदं बोल जासौं करारा, बड़े जात के बंदरा गीत वारा ॥१६२४
 भजे जात ही कौन के भौन^३ भाई, लग लाज नाँ बंस गारी लगाई ।
 बड़े डील के राखसी जात वारे, बली आपने ज्यून एकौ विचारे ॥१६२५
 धरौ धारना धेख धारै धरोजा, अरौ सम्पुहा खेत में बाढ़ ओजा ।
 विचारी सबै अंगदं सूर बाँनी, मड़े खेत में पाव छंडी मलाईनी ॥१६२६
 मिले मत्त हथ्यी ज्युही कीस मेला, पिले राखसी सैन पै डेल-पेला ।
 गिरी अंग लै लै दई मार गाढी, बड़े कंटकी बृछ्छ की तार बाढी ॥१६२७
 घने मूसला मार सेना संधारी, भयौ राखसी साथ में सोर भारी ।
 रह्यौ कुंभकर्न जहाँ पाव रोपै, जटाधार^४ ज्युं कल्प के काल जोपै ॥१६२८
 गहै बंदरी सैन कौं लेत ग्रासा, तिही राखसी बीर देखै तमासा ।
 दही ज्युं दहैड़ी मथै काठ डंडा, मिलै बंदरी सैन मंथान मंडा ॥१६२९
 घने घाव दै दै कपी सैन घेरी, लगे लौटनै भूम लै लै लथेरी ।
 लगै अट्टवी^५ अग ज्युं लार लारा, करै छार जैसे तरु की कतारा ॥१६३०
 रूपी सैन सुग्रीव की एह रीती, परी तूट कै प्राँन छूटी प्रतीती ।
 भिदे श्रोन में गात की सुद्ध भूले, परे ढाँक नीचै मनीं फूल-फूले ॥१६३१
 जरे के मरे के गिरे के जमी पै, भिरे के डरे भीत आखै भृमी-पै ।
 गुडी^६ ज्युं ऊड़े केक आकास गाँमी, परे कूद सामुद्र में भीच पाँमी ॥१६३२
 किते किंदरा में धसे रीछ कारे, बढे बंदरा लार लारै विचारे ।
 घने कंद कै लाँघ कै सैल घाटा, परे अट्टवी बट्ट लेते पछाटा ॥१६३३
 घने खेत की सेत कै जाय घाटै, वही सैन सुग्रीव की आठ-बाटै ।
 सबै नीत की रीत में सावधाना, जबै बाल-के-पूत^७ सिद्धांत जाँना ॥१६३४
 कही दौर कै बेर बेरी कहाँनी, पिछाँनी नही राँम सारंग-पाँनी ।
 बली-बाज मारयौ जही एक बाँना, जित्यौ दुंदभी दैत बाहू अजाँनाँ ॥१६३५
 थित्यौ कुंभकर्न लख्यौ हैथली पै, बचगौ कहाँ राँम जैसे बली पै ।
 ईत पै कोऊ भाग जेही अगारी, पती-कीस के दूत ऐहै पछारो ॥१६३६
 द्रुतं देख कै प्राँन कौ दंड दैहै, जनाई कहै पै कोऊ भाग जेहै ।
 बनोका सुनी अंगदं येह बाँनी, गये अग कौं नाँहि छंडी गिलाँनी ॥१६३७

१ शरण । २ पास । ३ भवन = घर । ४ शिवजी । ५ वन । ६ पतंग ।

७ अंगद । ८ धनुष धारण करने वाले । ९ आजानु-बाहू = घोड़ा ।

ऊतारु भये खेत में प्रावने कौं, लगे श्रंग हूँखावली लावने कौं ।
 गिराने लगे सूसला मार गोला, गिरा ली गरामार जैसे गिलोला ॥१६३८
 भिरचौ क्रुद्ध सौं जुद्ध लंकेश-भ्राता, प्रलैकाल माहेस^१ जैसे पिराता ।
 दलै बंदरी सैन कौं पाव दावै, चढे हाथ में मीज कं दंत चावै ॥१६३९
 पछारै केरु भूम पै सूल पोवै, डमाड़ोल पाथोद^२ पांती उदोवै ।
 लग्यौ एम सुग्रीव की सैन लारा, किधू वैनतेई लखे साप कारा ॥१६४०
 जिही जुथ्यपं द्वैद देख्यौ ज्वला सौं, कटकचौ करचौ बीजुरी की कला सौं ।
 चलयौ वायु के बेग ज्युं अम्रचाला^३, बड़े सैल कौं श्रंग लीने बिसाला ॥१६४१
 हनौ कुंभकर्न जही श्रंग ही पै, जहाँ जोय ठाढो भयो जंग ही पै ।
 भयो दूक दूका गिरे सैल भाटा, परचौ रथ्य-हथ्यीन पै भूम पाटा ॥१६४२
 घने घूम घोरा मरे घेर घेरी, तुरंगी परे तूट लै लै तरेरी ।
 लगे जुथ्यप द्वैद की लार लारै, कपीसा लुरे^४ तार बंधी कतारै ॥१६४३
 सिला बृछ्छ की मार दोनी सब ही, जुरे क्रुद्ध सौं जुद्ध मंड्यौ जबै ही ।
 भिरौ द्वैद जैसे हनुमान भारी, गिरी मार दोनी गिरै ज्यां गिरारी ॥१६४४
 चढ्यौ कूद आकास लै लै छलंगा, मड़ी बृछ्छ की मार दैद मलंगा ।
 करगं गह्यौ सूल हू कुंभकरनै गिरी^५ बृछ्छ तोरे लगे भूम गिरनै ॥१६४५
 पयादा परे सैन के सथ्य पांही, मरे बीर केते घरी जाहि मांही ।
 जहाँ कुभकर्न धिखी क्रुद्ध ज्वाला, बढ्यौ जुद्ध कौं सूल लीने बिसाला ॥१६४६
 दलै बंदरी सैन की लार दौरै, सिखा आग जैसे पतंगा सिकोरै ।
 प्रलैकाल के काल ज्युं बीर पिल्यौ, हिलोरा मनौ सात सामुद्र हल्यौ ॥१६४७
 गिरी श्रंग कौं भेल कं ताहि गेले, लग्यौ चोट कौं मारनै वार लै लै ।
 लट्यौ कुंभकर्न घने घाव लागै, मड़े पाव ठाढी रह्यौ जुद्ध मार्ग ॥१६४८
 कला चंचला की ज्युही सूल कारौ, भृमायौ जही ऊद्ध^६ आकास भारौ ।
 हनुमान छत्ती दमौ जोर ही तै, कढ्यौ प्रांनदा^७ कालजा कोर हीतै ॥१६४९
 हनुमान काप्यौ जही लागतै ही, ऊतारु भयो श्रंत की आग तैही ।
 लग्यौ घाव तापे नहीं घाव लागौ, भरोसौ कपी सैन की देख भागौ ॥१६५०
 भयो राखसी सैन की जोर भारी, डरी बंदरी सैन देखी दुखारी ।
 जहाँ नील देखी कपी सैन जाती, चलयौ कुंभकर्न चढ्यौ आय छाती ॥१६५१

ऊखारचौ गिरी-श्रंग मारचौ अधो कै लख्यौ संम्मुहा खेत में राह रोकै ।
 गिरी कुंभकर्न लख्यौ सौ गिरंतौ, भुकायौ मुका दं रुकायौ भरंतौ ॥१६५२
 फट्यौ टूक-टूका भयौ आग फैली, घटी-जंत्र^१ की जाँन फूटी घरैली ।
 जुतै ज्वाल तूट्यौ गिरी आग जग्गी, लखी बंदरी सैन के रोस लग्गी ॥१६५३
 मिले जुथ पंचास कीनौ मता कौं, सभ्भे श्रंग लै-लै संभारी सता कौं ।
 मिले सभ्हू रिख्खभं नील माही, ज्युही गंधसादंत्र आयौ जहाँ ही ॥१६५४
 गवाक्षं तहाँ आय कै ताहि गैलै, लता वृछ्छ लागी गिरी-श्रंग लै-लै ।
 मिले कुंभकर्न घनी मार संडी, घटा घोर आषाढ जंसे घुमंडी ॥१६५५
 दल्यौ कुंभकर्न तऊ नाँहि दट्यौ, भल्यौ रिख्खभं आच^२ ऐचै भपट्यौ ।
 सही पै पछारचौ तँही दै मुरछ्छा, गिरचौ आँननं श्रोत्र^३ औ चेत^४ गछ्छा^५ ॥१६५६
 दई मार मुक्कान की सभ्भ-देही, अरु नील कौं बक्षनं^६ मार पेही ।
 गवाखं दई लात कौं भूम गेरचौ, ज्युही गंधसादंत्रहू कौं जँभेरचौ ॥१६५७
 पराजीत ह्वै जुथ-पत्ती पिराये, गहाई मुरछ्छा जमी पै गिराये ।
 मिली बंदरी सैनहू ज्वालमाला, बड़े श्राहू वृछ्छ लीनै बिसाला ॥१६५८
 दई कुंभकर्न-घनी मार देही, जरा पीर व्यापी नही दुष्ट जेही ।
 चहँटे किते संग में दाब छाँहो, सदाभीर जैसे पसू अग माही ॥१६५९
 चपेटाँन मारै किते दाँत चाबै, दलै मार मुक्काँन धुक्काँन दाबै ।
 गनै कीस की धारनाँ बीर गाढौ थिरीभूत पाहार^७ ज्याँ खेत ठाढौ ॥१६६०
 दलै मर्कटी सैन कौं पाव दाबै, चढ़े हाथ की घातऊ दाढ़ चाबै ।
 प्रलैकाल की आग ज्युँ खेत पिल्यौ, बनोकान-थोकान^८ जाही बिचल्यौ ॥१६६१
 जबै बाल कौ पूत दौरचौ जँही पै; सिला-श्रंग की मार कीनी सही पै ।
 बली बाल-के-पूत पै सूल बायौ, बली बाल के पूत ताही बचायौ ॥१६६२
 छली कुंभकर्न दई लात छाती, मुरछ्छा सँही कुंभकर्न मिलाती ।
 मुरछ्छा छुटी अंगदं मार मुक्का, घरा पै गिरायौ तँहीं देय धक्का ॥१६६३
 डिंग्यौ अंगदं देख सुग्रीव दौरचौ, मिलायौ तँहीं मारनै सूल मोरचौ ।
 मुरचौ देख सुग्रीव लै श्रंग मोटा, अगारी खरे होय बाँधी अगोटा ॥१६६४
 कहे कुंभकर्न बचन्नं करारा, अहो बीर मेरे लखौगे ईसारा ।
 बल्लौ जुथपं जुथ कौं खेत बीचै, निहारै घरा पै गिराये सु नीचै ॥१६६५

१ अरहट्ट । २ हाथ । ३ रक्त । ४ चेतना, होश । ५ चला गया । ६ छाती ।

७ पहाड़ । ८ वानरों के भुण्ड ।

घनी बंदराली भखी घेर घेरी, फिरें जुद्ध में क्रुद्ध ह्वै फेर-फेरी ।
 पराजीत कीने सबै क्रीत^१ पाई, अजौ नीत^२ तेरी न नीकै अघाई^३ ॥१६६६
 दुखी और कौं छोर कै मोर देखो, पगां मांड कै चोट एह परेखौ ।
 कही बात सुग्रीव सौं कुंभकर्नै, लुकोय तऊ आयगे जुद्ध लरनै ॥
 त्रिधाता जँभाई लई जाहि बेरी, पिता तो ऊपज्यौ सता कर्म प्रेरी ॥१६६७
 रिखंरज्जसं नाम जाकौ रहायौ, जिहीं कीस कौ तू कपीधीस जायौ ।
 जुरी खेत में तोरह मोर जोरी, बतावौ कछू बाँह जोरी बहोरी ॥१६६८
 सुनी बात सुग्रीव दौरचौ सपाटै, भुकायौ गिरी-श्रंग छाती भुपाटै ।
 गिरचौ बज्र ज्युं लाग कं श्रंग गोला, तऊ सूल कौं सीस सुग्रीव तोला ॥१६६९
 हनुमान सुग्रीव की देख हांनि, करी नाँहि जातै कछू आँतकाँनी ।
 गह्यौ सूल कौं फूल जैसै गिरायौ, भयौ टूक-टूका जमी पै भरायौ ॥१६७०
 सिलासार^४ सौ भार कौ सूल सोई, मढ्यौ रत्न-माला सुबनँ मिलोई ।
 परचौ भूम माही सबै होय पूरौ, घुल्यौ खेत पै रेत कौ होय धूरौ ॥१६७१
 विजै^५ सोर वाढ्यौ हनुमान वीरं, पराजै भयौ कुंभकर्न सपीरं ।
 गिरी-श्रंग सुग्रीव के सीस गेरौ, लयौ मोह सुग्रीव खायौ लथेरौ ॥१६७२
 मरोरे जही-मान दीनी मुरच्छा, रहे धीर ठाढे जहाँ बीर रच्छा^६ ।
 भयौ बंदरी सैन में सोर भारी, पुलाये बनोका पिछारी-पिछारी ॥१६७३
 जहाँ कुंभकर्न बली जुद्ध जितौ लक्यौ ना रुकायौ महा रोख-रतौ^७ ।
 मुरचौ चाँर सुग्रीव दुर्मूल^८ माँही, जितै मारुती^९ देख आयौ जहाँ ही ॥१६७४
 लयै जात सुग्रीव कौं देख लिलौ भिरचौ पाय कौं रोप कं कोप भिन्नौ ।
 मित्यौ तिष्ठ कै दुष्ट कौं मुष्टि मारी, डिग्यौ पाव सौं होय लोनी दरारी ॥१६७५
 भयौ चेत सुग्रीव कौं मोह भगै, लये नासका कानँ आयास^{१०} लगै ।
 जहाँ कुंभकर्न प्रया पाय जोई, सुपन्खा सुसा^{११} ज्युं भयौ भ्रात सोई ॥१६७६
 ऊड्यौ जित्त कै सत्रु कौं कीस-ईसा, धरे कानँ नासा अगै श्रीघ-ईसा ।
 निहारी प्रभू जै तहू की निसाँनी, गही कुंभकर्न हिया में गिलाँनी^{१२} ॥१६७७
 फिरचौ लंक कौं पीठ दै दीठ फेरै, कपी सैन कं आय लाग्यौ जु केरै ।
 गरं मेघ आषाड़ कौ घोर गज्जे, महाकाल हठी मनी कल्प^{१३} मर्भे ॥१६७८

१ क्रीत । २ नीयत । ३ वृत्त हुई । ४ लोह । ५ विजय । ६ राक्षस ।
 ७ प्रोषरत । ८ बगल, कौल । ९ हनुमात् । १० दूर होने पर । ११ बहिन ।
 १२ गतानि । १३ प्रलय ।

दई मर्न^१ की नीम बेपछ्छ दनें, कहा बर्न वरनें जही कुंभकर्ने ।
 मलै मर्कटी सैन खेही^२ मिलावै, चढे हाथ में देत दह्वा^३ चबावै ॥१६७६
 अरुभै कितै अन्नन-खाय आँटी, घुलै कै डुलै कै विचे जोह घाँटी ।
 सोई नासका स्वास लगै निसारा, प्रही सौं पतंगा मनौ मग्न पारा ॥१६८०
 करे द्योस^४ ऊलूक भलूक कीसा, रह्यो छांय कै लाय ऊलमूक^५ रीसा ।
 कही राँम सोमित्र सुग्रीव काजा, संभारौ सबै सैन कीसं समाजा ॥१६८१
 कली देखहुँगौ बली कुंभकर्ने मंड्यौ आय प्राघात-आघात मनै ।
 ईती बात भाखी सीयानाथ ऊठे, रमाँनाथ मानौ मधु सीस हूठे ॥१६८२
 जटाजूट बंधान बांधे जँभीरा, सभे श्रानि^६ भुथान^७ नामै सरीरा ।
 चिला ऐच ऊच्चान सिजा चढ़ाई, डहै लस्तक बाँम हस्तं दिढाई ॥१६८३
 करे क्रुद्ध कोडंड टंकार कीनौ, हीयो जातधाना कीयो मानहीनौ ।
 हले रामचंद्रं जहाँ दुष्ट हेरै, फनी तिष्ठ चाल्यो मनौ दिष्ट फेरै ॥१६८४
 बिलोके घटा नाग^८ रूख्यौ बिरुती, सटा^९ धून ऊठ्यौ मनौ सिघ सूतौ ।
 अरे सम्मुहे जाय बाहु-अजाँना, जहाँ खेत ठाढे सबै जानुधाना ॥१६८५
 प्रवाह बढ्यौ राँम कौ करु-पत्रं, करै कुंभकर्न चमू जत्र-कत्रं ।
 दसू ही दिसा बाँनही बाँन दीसै, रहे छांय आयास ज्युँ ऊर्ग^{१०} रीसै ॥१६८६
 कटै सत्रु-सेना मचै श्रोत^{११} कादा, ज्युँही राँम राजा बढे जोर जादा ।
 हुलै है दलं पैदलं मत्त हथ्यी, रूलै बाँन के वेग सौं रथ्य-रथ्यी ॥१६८७
 कित घाव लागै दुरै मासकारी^{१२}, परै तोय की धार जैसै पँनारी ।
 तुटे तुंड मुडा मनौ तुंब-डच्चा, मही लोट मडे बिना नीर मछ्छा ॥१६८८
 कटं सन^{१३} निर्गन^{१४} पैजूख^{१५} कंधा, कहूँ सीस निर्भूल नाचै कबंधा ।
 सभे बाँन संधान सार्भे सनंका खुटं कंकट व्यूढ बाजे खनंका ॥१६८९
 रची चंचला ज्युँभला बाँन रुरै, प्रलै काल के मेघ ज्युँ वेग पूरै ।
 कला कौसलं कौसलाधीस कुपे, रमै नाग पारिद्र ज्युँ रार हूपे ॥१६९०
 छुटै बाँन पै बाँन सौं भौन छावै, ऊलट्टे सबै बीच भूथान आवै ।
 महाँबीर रछ्छा रहे पाव मंडे, खरारी करै मार कै खंड-खंड ॥१६९१

१ मरण । २ घुलि । ३ दंष्ट्रा=दाढ़ । ४ दिवस । ५ उल्का, जलती लकड़ी ।
 ६ श्रोणी=कमर । ७ तरकस । ८ हाथी । ९ गर्दन के केश । १० उरग=सर्प ।
 ११ शोणित=रक्त । १२ रक्त । १३ बाण । १४ गर्दन । १५ कान ।

घटी सैन कौ देख जाही घटी पै, चलयौ त्रास सौं घ्रास स्वासा छुटी पै ।
 गरै नाद कीनौ भरै गल्ल गाढौ, जनावै गिरी-श्रंग के तुल्ल जाडौ ॥१६६२
 संड्यौ आय कै मर्कटी सैन माँही, घुमंड्यौ प्रलै काल के मेघ घाँही ।
 चलाकी घनै अस्त्र-सस्त्र चलावै, दलै कौंसलाधीस आपौ दिखावै ॥१६६३
 जुरे कुंभकर्न जहाँ राँम जुद्ध, बढै आहि^१ तुंडीक^२ जैसे विरुद्ध ।
 भरै चाप आवाज विस्फार भारी खिलावै मनौ दीर्घजिम्भा^३ खिलारी ॥१६६४
 करी जुद्ध क्रीडा मिलै कुंभकर्न, प्रचारे दये वान सोदन पन ।
 रहे लीन ह्वै राखसी पिंजरा में, धसै कंचुकी^३ जेम बंबी धरा में ॥१६६५
 श्रवै घाव स्नेनी घनी श्रॉन संग, परै श्रंग सौं रंग मानौ पतंग ।
 हुक्यौ बंदरी सैनहू कौं ढहोरै, दलै येक कौं येक कै लार दौरै ॥१६६६
 बनोका भगे मगग लगै विलेखै, डरै हुडु^४ के भुंड ज्यौं कोक^५ देखै ।
 गये राँम की सर्न कौं सारग्राही, मिलै संग जावास ज्युं सुंत्य माँही ॥१६६७
 विलोके कपी सैनहू कौं बिसासी, अमी द्रष्टि सौं देख सेटी ऊदासी ।
 अनी पिठु लिन्नी बढे राँम अगै, जुरे कुंभकर्न जहाँ खेध जगै ॥१६६८
 करे रोख कै मोख पाने कलंबा^६, प्रलै-फूँक आलूक जैसे प्रलंबा ।
 गने सोय नाँहीं लगे गात माँही, चलयौ राँम की ओर ज्युं अन्न छाँही ॥१६६९
 ईकै हाथ में श्रंग लीनौ अतंग, ऊठायौ सोई मारनै ऊत्तमंग ।
 जितै राँम पत्री दयो सिष्ट जोरी, तकै तिष्ट ताही भुजा पुष्ट तोरी ॥२०००
 भुजा लै गिरी दूसरी बेर भारी, खरौ होय कै फेर तवके खरारी ।
 ईतै राँम नाराच छूटौ अभंगा, सुपै हाथ तूटौ वही श्रंग-संग ॥२००१
 कटे कान नासा ऊभै पान कट्टे, दुतीदीप्त सौं लीप्त लै बान दट्टे ।
 तँहीं जीवनी जाँन धिक्कारता कौ, करचौ घोर चिक्कार साथी कजा कौ ॥२००२
 तिही फार पासार कै बक्रतुंडा, प्रभू धार चाल्यौ पहारं प्रचंडा ।
 डराने सबे देव देखे दसा कौं, जही रछ्छ कीनौ तकै लछ्छ जाकौं ॥२००३
 किते मार मू-फार माँही कलंबा, जिहीं तोर डारे सबे दांत जंभा ।
 भिदे तालु जिम्भा परचौ नाँहि भूसै, धुरै रीस बीरासन^७ बीच घूसै ॥२००४
 ईखूँ राँम लै अर्ध चंद्रा अकारा, महाँवेग सौं कंधरा बीच मारा ।
 ऊडायौ जँही मुंड काया ऊछंडा, परचौ जाय लंकेस अगै प्रचंडा ॥२००५

१ सर्प । २ सर्प को मारने वाला । ३ सर्प । ४ भेड़ । ५ भेड़िया । ६ वाण ।

७ युद्ध क्षेत्र । ८ वाण ।

दलै पाव सौं बंदरी सैन दौरै, ससंकै एकै खंड काया सकोरै ।
 खरारी करघौ खंड कौं खंड-खंडा, परघौ कुंभकर्न जबै धर्न पिंडा ॥२००६
 जही की कला निक्कसी ठौर जाही, मिली जोत में जोत श्रीराम माँही ।
 ईहीं देख कै देवता ही अचंभा, सबै ही मुनी साथ पायौ संसुभा^१ ॥२००७
 बजे दुंदभी भेर आनंद बाजा, रच्यौ ख्याल ऐसी जहाँ राम राजा ।
 करी फूल-बृष्टी ज्या-सब्द कीनौ, हुयौ निश्चरा-जात कौ साथ हीनौ ॥२००८
 फिरे राम डेरा दिसी साँभ फूली, भये बंदरा संग में पीर भूली ।
 थिती देह में स्वेद पाँनी थट्यौ है, ऊमा फूल पै ओस माँनौ अट्यौ है ॥ ००९
 लसै श्रीनि^२ भूताँन कोडंड लीनै, भ्रमावै तही बीरता रंग भीनै ।
 प्रभा कोट-कंदर्प राजै पुनीता, संभारे सबै सैन कौं नाथ-सीता ॥२०१०
 निवाजे प्रभू कट्ट-पट्टा^३ निवारे, सुसोभै बिचै आप डेरा सँवारै ।
 भयौ कुंभकर्न सुन्यौ मर्न भ्राता, अँधारौ भयौ लंक बाढी असाता ॥२०११

दोहा

कुंभकरन के सरन कौ, सोक बढ्यौ ईक सथथ ।
 देखत सिर भ्राता द्रगन, सन व्याकुल दसमथथ ॥२०१२
 अंतहपुर अकुनाय कै, क्रंदत कर-कर कूक ।
 ग्रह राँवन लघु-भ्रात ग्रह, ऊर तीय बाढी ऊक ॥२०१३

छंद त्रोटक

मिल राम सौं कुंभकरन मरच्यौ, पति-लंक हीयै अत-सोक परघौ ।
 प्रतिघातन जास सुन्यौ पुर में, अत सोक बढ्यौ जन के ऊर में ॥२०१४
 घिर राँवन भूप के आय घरै, सुत भ्रात मिले भटह सिगरै ।
 त्रसरा सुत बोलेऊ तात तुहीं, सुर-दाँनव जीतन वार सही ॥२०१५
 कदरावत रोय बिलाप करौ, हठ कै दिगपालन मान हरौ ।
 विध कौ बरदान कहा बिसरे, पन पांतर मोह के कूप परे ॥२०१६
 सुवसै रथ ग्रेह में साज सिलै, चिरमेही^४ सहश्रक^५ लाग चलै ।
 सकती बिधह दीय सो अबला, कहाँ जात रही चंद्रहास^६-कला ॥२०१७
 प्रतना^७ घर है घर लंकपुरी, घट में कहा सोक बलाय घुरी ।
 सुख-दुःख नही कछु संमृत्य कौं, भुति^८ और विचारहु सुंमृति कौं ॥२०१८

१ विश्राम । २ कयर । ३ कामदेव । ४ खच्चर । ५ हजारों । ६ तलवार ।
 ७ सेना । ८ वेद ।

सहाँराज नचिंत रहौ मन सौं, तज ताप बिलाप सबै तन सौं ।
 जुग तापस है कहा देख जती, कपिहू बपुरेन^१ की बात किती ॥२०१६
 कल कौं हम जात बिदा करीये, उहकावनि कीस नहीं डरीये ।
 मिल पित्रब्र नोद में खेत मरचौ, अलसावत धावत रार अरचौ ॥२०२०
 सत सोच करौ जिह मारन कौं, कल मृतु गनौ सुभ कारन कौं ।
 त्रसरा^२ ईह बोल कहे तब ही, सुन राँवन सोक मिटचौ सब ही ॥२०२१
 जुध भार दयौ कोष सैन जुमै, अभिमान बढचौ सुत कौ ऊर में ।
 त्रसरा लख मेल सुरांतकहू, तमबयौ मिल आय नरांतकहू ॥२०२२
 अतकायहु संग भयौ ईनकै, जुध की हीय चाह बढी जिन कै ।
 बहि चालेऊ बाप सौं होय बिदा, सग राखसी सैन चलो समुदा ॥२०२३
 माहापारस और महोदरहू ईह आय मिले फिर आसुरहू ।
 गज-पीठ महोदर बैठ गयौ, बहु आयुध लै जुधकाज बह्यौ ॥२०२४
 त्रसरा रथ बैठ चल्यौ तुल कै, जुग धोराजु पै मिल कै-जुल कै ।
 सिर तीन में तीन किरीट सजै, रमनीय सुवर्न जराव रजै ॥२०२५
 अंतकाय^३ चढ्यौ रथ ऊपर कै, धर धूजत और चढी धरकै ।
 जुर चाले नरांतक संग जही, उजरे अस^४ पै असवार ईही ॥२०२६
 कर कूत^५ गह्यौ मनु आग-कला, चमकै बिच बादर ज्युं चपला ।
 पुन देवनअंतक लै परघाँ, सबला^६ महापारस लै सिरघाँ^७ ॥२०२७
 बढ कै खटहू रन बाट बहे, सभहै दल पैदल संग सहे ।
 अनीं बाँध चले ज्युंही जाय अरे, कररी कपि सैन पै मार करे ॥२०२८
 कपि अंग ऊतंगन लै कररे, धरकै बल-बाँहन सौं धररे ।
 बिब^८ और बढी ईम रार बली थरकै भरकै रन-खेत थली ॥२०२९
 जुध बीच नरांतक बेर जही, गिरनै कपि सैन पै बाग गही ।
 हय हंक निसंकु मिल्यौ हलकै, लग पंख चल्यौ कनकाचल कै ॥२०३०
 कर कूत गह्यौ सु बह्यौ कररी, भरकै कपिसैन भयौ भररी^९ ।
 हलचल्लीय नीर तरंग हिलै, प्रवस्यौ जिम मच्छुछ समुद्र पिलै ॥२०३१
 जित ही तित दौरत जाय जुरै, कपि मार असंखन कीच करै ।
 कपि वृच्छु गहै तिह काटन कौं, ब्रह कूत मिलावत दाटन कौं ॥२०३२

१ बेचारे । २ त्रिशिरा नाम का राक्षस । ३ परेशान होकर । ४ अश्व । ५ माला ।
 ६ गुर्ज । ७ ऊँची । ८ दो । ९ नराहट पड़ गई ।

गिर-श्रंग कौं जो कोऊ हाथ गहै, बिखरै कपि सो जम-लोक बहै ।
 कपि केक^१ मिलै दल कदरीया^२, बरसात मिलै जिम बहरीया ॥२०३३
 दखनी^३ जिम बाव डुलावत है, प्रवसै जित कीस पुलावत है ।
 चमकावत कूंत अनीत छटा, अस ऊपर सौं असमान अटा ॥२०३४
 समल्यो मनु सेहर साँवन कौ, रन राजकुवारहू राँवन कौ ।
 गहै बाग जितै कपि सैन गिरै, फननेटीय लेत तुरंग फिरै ॥२०३५
 बहु घाव करै जिस बाव बहै, गति बक्रीय चक्रीय दाव गहै ।
 अहि फूँकसी हूकसी सेल अनी. बिचलावत बंदर सैन बनी ॥२६३६
 रहे पाय कौं मंडन खेत रुके, लथरावत पीठ सुंकठ^४ लुके ।
 चल आय जबै कपि साथ छुप्यौ, कपिराज नरांतक^५ देख कुप्यौ ॥२०३७
 चित सौं जिन तै नहीं रार चही, अपनी न बराबर जान ईही ।
 जुगराज बुलाय कह्यौ जिह तै, तुम जाहु नरांतक जाँय तितै ॥२०३८
 भहरावत कीस की फौज भ्रमै, सुत राँवन मारहु येह समै ।
 कपिराज कह्यौ जुगराज करचौ भुज आय भरोस सौं जाय भिरचौ ॥२०३९
 बजुला^६ मनी बाँहन बाँधन कौं, समिलै कर सिष्टहु साँधन कौं ।
 जहाँ जाय नरांतक जुद्ध जुरे, केऊ बोल बकार कहे कररे ॥२०४०
 अहो राँवन-राजकुवार ईतौ, मत क्रोध करौ अरु क्रूर मतौ ।
 हम सौं लरीयै कर हौंस हीयै, लपकावत सेल कौं हाथ लीयै ॥२०४१
 ऊभकावत खेत फिरौ अस कौं, डहकावत कीस दसाँ-दिस कौं ।
 पग रोप गहौं मजबूत-पनी, जुरनै हम आवत एक जनी ॥२०४२
 सुन अंगद बात ईती श्रवता, गहि सेल नरांतकहू गवता ।
 हय हक कै अंक में सेल हन्यौ, तिह अंगद तोरेऊ जेम वनी ॥२०४३
 हय कै फिर अंगद लात हनी, धर तूट परचौ ऊबरचौ सु धनी ।
 मरगौ अस खेत में फार सुँहा, गिर मानहु संजुत दिष्ट गुहा ॥२०४४
 निज अस्व कौं देख नरांतकहू, ऊर क्रोध धिख्यौ जिम अंतकहू ।
 सिर अंगद मारीय मुष्टि समी, जुगराज परचौ लथराय जमी ॥२०४५
 ऊठ अंगद वार अ युक्कीय ती, मभ छातीय दिन्नीय मुक्कीय की ।
 परगौ धर चूर्न भई पँसुरी, वपु सास बजाय गयौ बँसुरी ॥२०४६

१ कई । २ कायर । ३ दक्षिणी । ४ सुग्रीव । ५ रावण का एक पुत्र । ६ बाजूबंद ।

मृतु देख नरांतक खेत सही, तहाँ आय देवांतक दौर तही ।
 तह आय कै आत मिल्यौ तिसरा, नजदीक सहोदरहू निसरा^१ ॥२०४७
 सुन राखसी सैन मिली सहवा, तन तूट नरांत परचौ तहवा ।
 कीय अंगद ऊपर कोप कलै, पग आगै धरै केऊ पाछे पिलै ॥२०४८
 रथ बैठ सहोदर बीर-रथी, थिर चित्त करचौ रन-खेत थिती ।
 पुन देवहू अंतक लै परघा, खल केतक लेय चले खरगा ॥२०४९
 त्रसरा रथ बैठ हल्यौ^२ तित ही, जुरनै रन अंगद पं जित ही ।
 तेऊ जाय मिले जुगराज त्रहूँ, ईक बीर बकारीय धार अहूँ ॥२०५०
 समल्यौ फिर अंगद साखन लै, लरनै कह वारन लाखन लै ।
 ईक वृछ्छ देवांतक पं ऊछ्छ्यौ, केऊ बाँनन सौं त्रसराहू कट्यौ ॥२०५१
 ऊछ्छ्यौ नभ अंगद ऊपर कौं भटभेर सचाईय भूपर कौं ।
 सिल तोरत है त्रसरा सर सौं, कररौ धनु ताँन जहाँ कर सौं ॥२०५२
 परघातन लै तरु पै पछटै, ईत बीर सहोदरहू ऊछटै ।
 तरु पथथर अंगद ढेर तुटे, जुर तीनहु राखस जुद्ध-जुटे ॥२०५३
 त्रसरा कर चाप लै बाँन तजे. गज बैठ सहोदरहू गरजे ।
 भरमार सचाईय भालन की, बहुरै छर बाँस बिसालन की ॥२०५४
 परघाहू देवांतक दं पलट्यौ, सुत-बाल कौ नाहिन नैक सिट्यौ ।
 नभ कूद कै वंदर-वारी नई, दिपराज सहोदर लात दई ॥२०५५
 ग फट्यौ दध ज्यूँ गगरी, डग नाँहि दई चलकै डगरी ।
 गिर-श्रंग ज्यँही धरनी गिरगौ, पिछराहू सहोदरहू परगौ ॥२०५६
 तहाँ अंगद दाँत ऊखार तहीं, द्रढ जाय देवांतक मार दई ।
 ऊगल्यौ बहु श्रोतत आँनन सौं, पुन गाँठ परी निज प्राँनन सौं ॥२०५७
 छिन में मुरछा तिह आय छुटी, परघातन अंगद पै पछटी ।
 गम भूल कै अंगद बैठ गये, भर रीस^३ हीर्य फिर ठाढे भये ॥२०५८
 त्रसरा त्रय बाँन दये तिन पै, जेऊ जाग लिलाट लगे जिन पै ।
 त्रय राखस अंगद येक तहाँ, जुर कीनेऊ जाजुल जुद्ध जहाँ ॥२०५९
 लख अंगद येक जनौ लरतौ, बिफुरचौ मनु सिघ धिरचौ विरतौ ।
 हनूमान मिल्यौ अरु नील हल्यौ, जुरे तीनहु बंदर बाँध जिलौ ।

त्रसरा सिर ऊपर नील तक्क्यौ, भटक्क्यौ ईक भार पहार भुक्क्यौ ।
 त्रसरा नही लागन दीन तँही, मंड बाँन-भरौ गिर डार सही ॥२०६१
 रटक्क्यौ सुत दूसर राँवन कौ, हनुमान चले रन हाँमन कौ ।
 जंभुआत^१ मिले हनुँमाँन जही, तहाँ देख दिवांतक भूम तही ॥२०६२
 सिर मुक्कीय की दीय बाँध समी, जुरकै गिरगौ मृतु होय जमी ।
 ऊत नील महोदर खेत अरे, केऊ नील कै बाँन दये कररे ॥२०६३
 गिर श्रंग दयौ सिर नील गहे, रूप रार महोदर खेत रहे ।
 कढ़ दाँत तहाँ त्रसरा-कौकका^२, फट सीस भयौ महाँकाल फका^३ ॥२०६४
 त्रसरा हनुँमाँन गौ तारन कौ, निज बंधव बैर निकारन कौ ।
 हनुँमान पै बाँन दये हरख्यौ, बरसात के मेघ ज्युही बरख्यौ ॥२०६५
 हनुँमाँन गहे गिर श्रंगहतौ, त्रसरा सर दिन्नेऊ होय ततौ ।
 गिरश्रंग गयौ धरनी गिरकै, केऊ होय पखाँन^४ की किरकै^५ ॥२०६६
 हनुँमाँन की बृछछन मार हुई, त्रसरा तेऊ बाँनन काट तई ।
 हनुँमाँन जग्यौ जब क्रुद्ध होयै, नख सौँ रथ के हय मार लीयै ॥२०६७
 त्रसरा हनुँमाँन पै सक्ति तजी, गहरी धुन मेघ ज्युँही गरजी ।
 हनुँमाँन गही तिह आवत ही, त्रन जेम प्रहारीय तावतही ॥२०६८
 त्रसरा कर खगग लयै टटक्क्यौ, भुक कै हनुँमाँन हयै भटक्क्यौ ।
 हनुँमाँन तहीं ऊर लात हनो, फुँनहा^६ की लगी मनुँ भाट फनी^७ ॥२०६९
 गस आय कै ऊपर भूम गिरचौ, खग खोस कै राखस कौँ खररचौ ।
 सिर काटेऊ तीन किरोट सभे, भहराय कं राखस और भजे ॥२०७०
 त्रसरा मरनौ सुन बीर तप्यौ कल^८ कौँ महाँ-पारस काल कुप्यौ ।
 सोई राँवन कौ निज आत सगौ, लरनै दल बंदर लार-लगौ ॥२०७१
 गहि हाथ गदा सिर गोल गटा, चरबी में चबोरीय^९ रूप-छटा ।
 मँभ खेत लग्यौ कपि मारन कौँ, प्रबला श्रबला के प्रहारन सौँ ॥२०७२
 कपि-सैन कुलाहल सोर करचौ, जहाँ जूथपि रिखलभ आय जुरचौ ।
 सोई पूत-बल्लन बल्लन-समा, कोय आय मिलाय कौँ रोप क्रमा ॥२०७३
 महाँ-पारस जुथप देख मिल्यौ, प्रल-आग^{१०} ज्युँही हीय में प्रभल्यौ ।
 जहाँ मार गदा ऊर जूथप कै, अपने जुग हाथन ऊथप कै ॥२०७४

१ जंभाई लेते हुए । २ महोदर । ३ घास । ४ पाषाण । ५ टुकड़े ।
 ६ फण । ७ सर्प । ८ युद्ध । ९ डूबी हुई । १० प्रलयान्नि ।

ऊर ऋखभ चोट लगी ऊभका, महाँ-पारस के ऊर दीय मुका ।
 गिरगौ महाँपारस चेत गयो, पुन जूथपहू निज वार पयो ॥२०७५
 लीय खोस गदा कर सौ लरकै कर-साख^१ मरोर भुजा करकै ।
 कर रीस कौ कीस महाँ कररी, महाँपारस के हीय में मुररी ॥२०७६
 लग चोट गदा लथराय लटचौ, पग रोपकै रिखवः पै पलटचौ ।
 जुर रिखभहू रन-खेत जई, करनै कह लागेऊ वार कई ॥२०७७

दोहा

महाँपारस अरु रिखभ मिल, जुद्ध करचौ अतजोर ।
 ताक-ताक तन ताहि कौ, सारी गदा मरोर ॥२०७८
 महाँपारस रन में मरचौ, ऋखभ जीत दीय राँम ।
 जय-जय बोले कीस जुर, मिल रन-खेत मुकाँम ॥२०७९

छंद पद्धरी

त्रसरा सुन मारचौ तातकाल, सुन मरचौ नरांतक सुरन-साल ।
 देवांतक स्वाँसा तजी देह, सुन मरचौ महोदर निसंदेह ॥२०८०
 महाँपारसहू की सुनी मीच, बेला^२ तिह ताही समर बीच ।
 अतकाय पुत्र राँवन अभीत^३, करनै कौ आयौ समर क्रीत ॥२०८१
 रबि जेम प्रकासक चढ्यौ रथ, ताते हय जोरत तरल तथ ।
 दौरचौ बंदर की भीर देख, बैर कौ लैन कारन बिसेख ॥२०८२
 काँनन में कुंडल सिर किरोट, दगदगत^४ नैन जनु काल-दीठ^५ ।
 टंकार धनुष स्वर ऊच्चताँम, निज जीह सुनायो आप-नाम ॥२०८३
 जहाँ करी गर्जना सिंह जेम, अरु संख बजायो फेर येम ।
 बंदर दल देख्यौ महाँवीर, सब कु भकरन जैसौ सरीर ॥२०८४
 ऊठ-ऊठ कै देखन लगे शोर, चोटेहु बड़े पग छोर-छोर^६ ।
 वाँमन धर नापन करचौ वेख, द्रग जाँन्यौ ताही साँग देख ॥२०८५
 करते आँनन सौ बिखम कूह^७, जूथप मिल भागे जूह-जूह ।
 श्रीराँमचंद्र के गये सन, तन सभय होय तनबितन ॥२०८६

१ अंगुली । २ समय । ३ निर्भय । ४ चमकता है । ५ कालदृष्टि । ६ छोटे ।
 ७ किलकारी ।

वंदर बिबर्न आक्रत बिलोक, थंभे सुमर्न कर थोक-थोक ।
 खल ऊठ लख्यौ तहाँ समरखेत, श्रीरामचंद्र लछमन-सहेत ॥२०८७
 पर्वताकार काया प्रचंड, दीरघ तिह दोसत भुजा-डंड ।
 आरूढ रथ्य हीय भरी आग, मनु ज्वल-जुत चाल्यौ सिखरभाग ॥२०८८
 जिम मेघ गर्जना करत जोर, घरराट बढचौ दस दिसा घोर ।
 हमगीर^१ होय रघुबीर हेर, बोले सु बभीखन तही बेर ॥२०८९
 मंजर-लोचन कौ सयल^२ माँन, बढ आवत रथ बैठी बिमान ।
 जुप रहे पाँचसै, हयन जोर, धुजदंड-घुजा को लगी घार ॥२०९०
 संनाह^३ सजत गहि गदा सूल, डोल में पहर राते दकूल^४ ।
 सोवनी पीठ कोडंड साज, विसफार अवाजन रही बाज ॥२०९१
 तुंघीर^५ बाँन तिछ्छन तमाँम, कर गहत सहत संग्राम काँम ।
 भुज-डंड ऊभय गज सुंड भेस, बजुला^६ जराव सोवन बसेस ॥२०९२
 बाँनक नैनन की अत विचित्र, नभ ऊदत पुनर्बसु मनु नछत्र ।
 विच चंद जेम पूरन बिसेख, द्रग आँनन जाकौ परत देख ॥२०९३
 दगदगत काँन कुंडल दुरूह, भिर रही ऊच्च में मुच्च^७ अँह ।
 भँडत किरोट ऊतमंग^८ माँहि, चमकै जराव की छटा छाँहि ॥२०९४
 भयभीत दिखावत जहीं भेस, मनु भूतन में राजत महेस ।
 सब मुने बभीखन राँम स्वाल, कर जोर कह्यौ सुनीयै रूपाल ॥२०९५
 जासौ तुम आये करन जुद्ध, पति लंकपुरी राँवन प्रसिद्ध ।
 राँवनही जैसौ महाराज, आवत सुत जाकौ लरन आज ॥२०९६
 सोई बृद्धन की बहु करत सेव, भलि बात सुनत तिह लहत भेव ।
 गहि लेत बिचारत सारजाँन, बिसरै न कबहु ताकौ बिधाँन ॥२०९७
 असवारी कुंजर हय अर्नूप, चतुराई राखत सदा चूँप^९ ।
 अतकम-कुसल अरु करनकार,^{१०} परवीन^{११} नीत में सब प्रकार ॥२०९८
 तरवार-चलावन तथा तीर, बीरत^{१२}-विधाँन में महावीर ।
 बसकरन सत्रुकौ ऊर विवेक, पथ धर्म राखसी महा प्रवेक ॥२०९९
 बर लीय रिजाय ब्रह्मा बिसेस, दिसपालन जीते दनुज देस ।
 बिधही^{१३} रथ दीनी तिही बैठ, पंछी जिम जावत समर पैठ ॥२१००

१ अग्रणी । २ शैल = पर्वत । ३ बख्तर । ४ दुकूल = वस्त्र । ५ तुंगीर = तरकस ।
 ६ भुजवन्ध । ७ मूँछ । ८ उत्तमाङ्ग = शिर । ९ चुप = मौन । १० कार्यकर्ता ।
 ११ प्रवीण । १२ वीरता । १३ ब्रह्मा ।

बस भवन पतीगढ़-लंक बाँस, निज धान्य मालती जिहीं नाँस ।
 जिह जन्थौ ईहै जाजुल्य जोध, कर रह्यौ बंदरन सीस क्रोध ॥२१०१
 द्वै खड्ग दुवाजू जिह दिखात, है लंबे दस-दस माँन^१ हात ।
 कबजा तिह लागे स्वर्न केर, है च्यार हात के लेहु हेर ॥२१०२
 अठ तीस धनुष है आसपास, तरफस है तेते लखहु तास ।
 बाँहन^२ के बल सौं ईहीं बीर, सुरराज बजू रोक्यौ सधीर ॥२१०३
 कीय वृथा बरुन की पास केर, है अंतकाय चख^३ लेहु हेर ।
 बाँस कौ लड़तौ^४ अत बसेख, द्रढ भात मृत्यु कौं हीयै द्वेख ॥२१०४
 जिह आतुर करीयै जतन जुद्ध, नहीं पूग सकै जौलौं सनिद्ध^५ ।
 ईत कही बभीखन राँस एह, अतकाय ऊतै कोप्यौ अछेह ॥२१०५
 महाँरथी लयौ धनु हाथ माँभ, सम इंद्र धनुष नभ भीर-साँभ ।
 तूजीह^६ बन रंग पीत ताय, टंकार करचौ तिह टमटमाय ॥२१०६
 दस दिस अवाज कौ बढौ दौर, घरराट चढै मनु घटा घोर ।
 थल-थल पै बंदर देख थोक, सननंकत बाँसन दई सोक ॥२१०७
 बन तहाँ बनोकन ब्रूँह-ब्रूँह, जुरने कौं दौरे जूह-जूह ।
 बढ दुविद कुमद अरु मैद बीर, सक्षु नोल सरभ मोटे सरीर ॥२१०८
 सब एक-एक के होय संग, तरवर गहि मारे गिर अतंग ।
 अतकाय बाँस दै-दै अनेक, अंग पै न लागन दये येक ॥२१०९
 भिर गये कीस दीने भगाय, लोह के बाँस तिछ्छन लगाय ।
 सब भये पराजित कीस संग, अतकाय हीयै बाढी अमंग ॥२११०
 ज्यूँ मृगन करत मृगराज जेर, घट कपि-दल पीड़त करे घेर ।
 बंदर-मारन की तजी बात, आंगे बढ चाल्यौ अकसमात ॥२१११
 चल गयौ निकट श्रीरामचंद्र, सरराय तिमंगल^७ ज्यूँ समंद्र ।
 सनमुख ह्वै बोल्यौ ईह सबाल, सुत राँवन में दिगपाल-साल ॥२११२
 अतकाय सुन्यौ तौ लखहु येह, देखन तुम आयौ निसंदेह ।
 कहा करै कपिन सौं समर काँस, ठहरे बन-बासी ठाँस-ठाँस ॥२११३
 हमरै धनु जैसौ तुमही हाथ, निज काँस दिखावहु अवधनाथ ।
 जाचंन्या^८ मेरी ईह जरुर, सनमुख चढ आयौ महाँसूर ॥२११४

१ नाप । २ भुजा । ३ क्षु । ४ माइला = प्यारा । ५ सन्निधि = निकट ।
 ६ प्रत्यंचा । ७ बड़ा मत्स्य । ८ याचना ।

अतकाय सुनत बाँनी अभंग, निज बाँध्यौ लछमन कटि निखंग^१ ।
 संभार धनुष सर धरचौ साँध, बोले फिर तासौं सिष्ट बाँध ॥२११५
 राँम सौं कहा तुम करहु रार, हमकोँ तौ पहल देहु हार ।
 पीछै रघुवर कौ लखहु प्राँन, अतकाय अहो बाहू-अजाँन ॥२११६
 सुन लछमन के ऐसे सवाल, तिहं ऊत्तर दीनौ तातकाल ।
 बालक बय^२ लछमन बाल बुद्ध, जाचंन्या मोसौं करत जुद्ध ॥२११७
 पैहौ न जीत जैहौ पुलाय, जाँन कै काल सूतौ जगाय ।
 कुंजर में पिजर दये काट, भेलै हिमबाँनन बाँन भाट ॥
 सो सहिहै कैसें तूँ सरीर, बपु बेस तिहाँरी बाल बीर ।
 ईह धनुष मेल कै जाहु अंत, माता मिलनं कौं माँन-मंत ॥२११८
 जो माँनत नहि मेरे जबाब, हठ पकर तोहि लरनौ हिसाब ।
 अतकाय बचन सुनकै अभीत, लछमन तब बोले नीत-रीत ॥२११९
 बिक्रांत^३ ईती नहि करत बात, जग पौरख ही सौं जाँन जात ।
 मै पौरख देखन पाय मंड, कोडंड प्रतंछा धरचौ कंड^४ ॥२१२०
 महि-तल पे कैसें करुँ मोख, राँवन के बेटा धरहु रोख ।
 पहिचान्यौ चाहत प्रथम पोत, तेरौ सब पौरख भरचौ तोत^५ ॥२१२१
 माया कल राखसि पिड नाँहि, जुध बेला छल-बल करत जाहि ।
 बिक्रांत सनातन छत्रि बीर, धारना बिचारत सुमति धीर ॥२१२२
 अतकाय बिजय केँ हेत आय, डहकावत जावत डर डराय ।
 कुसलात जाय मिलहै कुटंब, द्वै हाथ देख कै मोहि डिभ^६ ॥२१२३
 पने सर तेरौ भखँहि प्राँन, जैसौ हूँ तैसौ लेहु जाँन ।
 विद्याधर गुज्यक बुनत बात, जँहाँ हरख ऊठे रिखि-देवजात ॥२१२४
 सूरमाँ जाँन लछमन सकोय, जय होहु कहत जहाँ जोय-जोय ।
 अतकाय लगी अत रीस अंग, निज हाथ संभारचौ सर निखंग ॥२१२५
 कोडंड तानकै तज्यौ क्रूर, दिक्करन आवतौ जेम दूर ।
 अर्धचंद्र बाँन लछमन उडाय, गिर जेम पाव रोपे गडाय ॥२१२६
 रन खेत खरौ लख आत राँम, कीनौ सोई भीनौ देख काँम ।
 सर पाँच चुने लीने संभार, तेऊ तजे लखन पे येक तार ॥२१२७

जिह लछमन देख्यौ जाहि जोर, तेऊ ताक-ताक कै देय तोर ।
 ईक बाँन गह्यौ लछमन अचूक, फँनिराज^१ प्रलय की मनहु फूँक ॥२१२८
 भोव्यौ सुचाप सम्मुह भुकाय, जोई लग्यौ भाल के बीच जाय ।
 भयलीन राखसी साँभ भाल, बाँबी^२ में जैसे धसै व्याल^३ ॥२१२९
 अतकाय बाँन लागत ऊछंड, पिंजरा काँपनै लग्यौ पिंड ।
 निज दीनी लछमन बिजय नीम,^४ भेदे त्रपुरासुर जेम भीम ॥२१३०
 सुसताय^५ कछू राँवन-सपूत, अवगाह लखन पौख अमूत ।
 अतकाय कह्यौ रजपूत आह, बैरी तऊ भाखत वाह-वाह ॥२१३१
 अतकाय कहत ईम बढ्यौ अग, महाँ क्रुद्ध छाया कै खेत मग ।
 पेरे^६ लछमन पै बाँन-पूर, काल की भाल जैसे करूर ॥२१३२
 ईक द्वै त्रय दीने पाँच और, जिह सात दये सर सिष्ट जोर ।
 पंखारन बाढ्यौ नभ प्रकास, स्वर्न पै किर्न^७ लग सावकास ॥२१३३
 आवत जब लछमन लखे ऊढ, जम-जम करनै कौ लगे जुढ ॥
 बाँनन सौं काटे बाँन बीच, नभ सौं सर धर पै गिरे नीच ॥२१३४
 अतकाय देख लछमन अभंग, जुर सनमुख लागौ करन जंग ।
 चाप पै बाँन तिछ्छँन चढाय, बपु लछ्छँन दीनौ कर बढ़ाय ॥२१३५
 छाती में ताही करचौ छेद, भरपूर वर्म^८ तै चर्म-भेद ।
 नद भरत जेम कुंजर-मदंध, बहनै रत पिंजर लगी बूंद ॥२१३६
 निज छाती लछमन सर निकार, निरसल्प^९ भये लोहू नितार ।
 अतकाय पराक्रम देख ऊढ, जहाँ लछमन लागे करन जुढ ॥२१३७
 सर स्वर्न-पर्न कौ गह्यौ सोय, जोजत^{१०} अग्नाखुह करचौ जोय ।
 अभिमंत्रत देख्यौ बाँन आत, कीनी अतकायहू करामात ॥२१३८
 सूर्जाख तज्यौ सौँद्राख संग, भिरकै अकास में भये भग ।
 पर गये जमीं पै भये पार, ज्वाला सौँ एक न एक जार ॥२१३९
 अतकाय होय रन में अधीर, त्वष्टा^{११} अभिमंत्रत लयौ तीर ।
 येखिक^{१२} लछमन की तज्यौ और, जही कौं सिष्टी बाँध जोर ॥२१४०
 येद्राख लखन छोरचौ अभंग, सो हूँकै निस्फल गिरचौ संग ।
 येखिक पुन निस्फल गयो ईच्छ, ^{१३} तव राँवन-सुत लीय बाँन तिछ्छ ॥२१४१

१ सर्पराज । २ विल । ३ सर्प । ४ नीव = बुनियाद । ५ स्वस्थ होकर ।
 ६ प्रेरे । ७ किरण । ८ कवच, बस्तर । ९ निश्चाल्य = साल रहित । १० योजित ।
 ११ ब्रह्मा । १२ लोहमय । १३ देखकर ।

जमराज मंत्र के भरचौ जाप, त्यागौ लछमन कौं दैन ताप ।
 जहाँ बायवात्र कौं लखन जोर, तीर कौं तीर सौं द्यौं तोर ॥२१४२
 साहस कर लछमन एक संग, अतकाय लगाये वान अंग ।
 अतकाय कवच पहरत अभेद, भालन के साल न सके भेद ॥२१४३
 अतकाय लखी माया अनंत^१, चित लछमन बाढी महाँ चित ।
 दरसाव द्यौं तहाँ पवन देव, भाख्यौ लछमन कौं गूढ़ भेव ॥२१४४
 अतकाय वीर पौरुख ऊदंच, वरदान द्यौं याकौं बिरंच^२ ।
 अंग में कवच पहरचौ अभेद, खल कौं नहि कल की होय खेद ॥२१४५
 उपदेस पवन कौ सुन्यौ येह, निर्भीत लखन हुय निसंदेह ।
 जान कै मरन अतकाय जोग, पुन ब्रह्म अख कीनों प्रीयोग ॥२१४६
 कट गयौ सीस संजुत किरोट, मुनि सुरन असुर मिल लख्यौ मोट ।
 मर गयौ सुतन-राँवन मदंध, सिर लछमन वानन छूट संघ ॥२१४७
 घर गिरचौ पर्वताकार धर्न^३, निछ्छेद होय कंधर^४ निगर्न ।
 भागी निश्चरनन बची भीर, सब खंड-वंड ह्वै कै सरीर ॥२१४८

दोहा

जीत भई लछमन जहाँ, कीस करचौ जयकार ।
 परी खबर लकापुरी, कीनों हाहाकार ॥२१४९
 राँवन हुयौ ऊदास रुख, भिरे मरे सुत-भ्रात ।
 मेघनाद समभाय मन, ताप मिटायौ तात ॥२१५०

छंद पद्धरी

मरनी सुन भ्रातन मेघनाद, बाह्यौ ऊर अंतर अत दिखाद ।
 जहाँ अरज करी ईह इंद्रजीत, पितु बचन मोर करीयै प्रतीत ॥२१५१
 जोत्यौ सुरिंद्र सुर करे जेर, फहराय धुजा रन जात फेर ।
 बिद्वेख निकारहु कका बीर, संघार राँम लछमन सधीर ॥२१५२
 सेना बंदर कौ कर संघार, जब आय करहुं तुमसौं जुहार ।
 ईह कहिकं चाल्यौ कर ऊमंग, सेना बिडराँवनि लेय संग ॥२१५३

राखसि आयावी जिते रूप, कीने खर-सूकर केऊ कुत्प ।
 परघातन^१ हाथन लेय प्रास^२, कोडंड बाँन लै सावकास ॥२१५४
 लै साँग सर्बला^३ डाँग^४ लीन, परचंड डंड अय^५ लये पीन ।
 सूरज प्रकास रथ कौं सभाय, असवार भयो तिह बीच आय २१५५
 गदहा तिह जोते दिघ^६ गात, बहनैवारे जे वेग-वात ।
 चढ़ चाले राखस क्रुद्ध छा़य, गज बाज ऊपरै गहगहाय ॥२१५६
 केऊ गदहा खच्चर चढे कोक^७, रीछन सिघन की पीठ रोक ।
 बैठे सो पीठ केतक बिलार, सपंत जरखन पै हुय सवार ॥२१५७
 अरु सूकर-कूकर कौं अरोह, सल्लकी स्यार रचकै सँदोह^८ ।
 कीनी तिन बाँनी भयंकार, पुन गूँज ऊठे तिनसौं पहार ॥२१५८
 डगमगत होय गिर डाँव-डोल, धमधमे दुंदभी^९ और ढोल ।
 धसमसत धरा पाताल धाँम, तल-बितल भये चल-बिचल ताँम ॥२१५९
 ऊड़ चढ्यौ खेह डम्भर अकास, पर मंद चहूँधाँ रवि प्रकास ।
 रथ मेघनाद लख द्वैप^{१०} रूप, भय विजय भरोसौ प्रजा-भूप ॥२१६०
 रन-खेत बीच रथ दयो रोक, ठहराई सेना थोक-थोक ।
 ऐसौ प्रबंध कीय आसपास, पहुचै न जहाँ रवि की प्रकास ॥२१६१
 जहाँ देख्यौ जैसौ परंचौ जोग, पुन करचौ होष आहुत प्रीयोग ।
 अभिमंत्रत कीने सख-अख, बपु बगतर भूखन जिते वख ॥ २१६२
 ब्रह्माँख लेय कै महाँवीर, गर्जना करी घन ज्यूँ गहीर ।
 ह्वँ परगट सैना कह्यौ हाल, बपु सबहि रीत कीनी बहाल ॥२१६३
 आकास ऊपरै जात ऊद्ध, जय राँम लखन सौं लैन जुद्ध ।
 बंदर की सैना तुम बिड़ार, लहि बिजय चलहि सब लार-लार ॥२१६४
 येती कहि पहुच्यौ अंतरीख, बाँसन जनु दीनी पाव बीख ।
 जहाँ राखस सेना बढी जोय, रिछछन बंदर सौं रार-रोप ॥२१६५
 ईत मेघनाद ऊपर अकास, पौख बाँहन कौ कीय प्रकास ।
 नाली कवाँन लै मेघनाद, विरचन कौं लागी कीस वाद ॥२१६६
 सभ सैन राखसीह समूह, जुरनै कौं लागी जूह-जूह ।
 जहाँ वाढचौ चहूँधा सराजाल, कोप्यौ करूर मनु प्रलय-काल ॥२१६७

१ बरछी । २ भाला । ३ गुर्ज । ४ लाठी । ५ लोह । ६ दीर्घ । ७ भेड़िये ।
 ८ समूह । ९ नगाड़े । १० सिंह-चीते की खाल से मढ़ा हुआ ।

सब मरने लाग्यौ कीस साथ, हेरत पै नाहिन चलत हाथ ।
 भय व्याकुल ह्वै गये कीस भाल, तरफरत गिरत खावत तँवाँल ॥२१६८
 जूथप मिल कीनौ कछु जोर, अवलोक तहाँ घननाद श्रोर ।
 जहाँ मेघनादहू देख जास, सरस्वर्त-पर्त लहि साबकास ॥२१६९
 जुथप-जुथप कौँ जाँन-जाँन, तीखे सर मोर ताँन-ताँन ।
 सर दये गंदमाँदन सरीर, अठारह वारह ह्वै अधीर ॥२१७०
 पुन मँद सात गज दये पाँच, खल जाँबवाँन दस दये खाँच ।
 नील कँ तीस हीने निहार, तिछ्छन भालन के येक तार ॥२१७१
 सुग्रीव रिखभ अंगद सँपेख, दुबिद कौँ खरौ लीय तहाँ देख ।
 ईन च्यारहु पै सर दीय अमंत, पर स्वर्गभरे जे पंत पंत ॥२१७२
 निर्जीव भये जैसे निहार, चल बढचौँ अगारी दुराचार ।
 कपि-मुखी^१ जाँन कँ श्रौर केक, अँलेक दये सर येक-येक ॥२१७३
 घायल कीय सेना कीस घूम, भिर परी भरी रन-खेत भूम ।
 रनबीच जहाँ घननाद रीस, केसू बंसंत कीय काय कोस ॥२१७४
 बसुधा^२ पै ह्वै कँ खंड-बंड, भर परे बनोकन भुंड-भुंड ।
 बरख्यौ जल-धारा जेम बाँन, टंकार चाप गुन^३ काँन ताँन ॥२१७५
 घननाद नाँम घन ज्यूँ घुमंड, थल पं कपि-दल भर थंड-थंड^४ ।
 ऊपर कौँ भाँखन करी आँख, पत्री^५ भर दीने स्वर्नपाँख ॥२१७६
 अरु कीनी काऊ भुजा ऊँच, लीनी कंधर तँ ताहि लूँच^६ ।
 गिर गये जिते हुय मृत्यु गात, जिह प्राँन ऊबारे^७ जीव-जात ॥२१७७
 कारे रंगवारे सरल काय, गिर परे रिछ्छ धर गुरगुराय ।
 दल मेघनाद कौ पाय वार, सैन कौँ करचौँ सेना सँधार ॥२१७८
 बंदरी सैन संजुत बिखाद, निज नैनन देखी मेघनाद ।
 धरहरत गर्जना करी घोर अरहरत रिछ्छ कपि ठौर-ठौर ॥२१७९
 जूथप केऊ ठाढे लखे जाग, भयभीत भये नहि सके भाग ।
 सुग्रीव श्रौर हनूँसाँन संग, अंगद सुखेन दधमुख अभंग ॥२१८०
 केसरी गंधसादन कुमंद, मिल जाँमवाँन नीलहु मयंद ।
 गज श्रौर गवय जूथप गवाक्ष, सूर्जानिन नल अरु पावकाक्ष ॥२१८१

१ मुख्य । २ पृथ्वी । ३ प्रत्यंचा, डोरी । ४ समूह । ५ बाण । ६ नोंच ली, काट ली । ७ वचाये ।

देखे हरिलोमा त्रिवृद्ध, वपु जोतमुखी बंदर वलिष्ठ ।
 जिन देख कुप्यौ घननाद जुद्ध, अभिमंत्रत आयुध तजे ऊद्ध ॥२१८२
 मूसल परघा तन दई मार, सर्वला सांग डांगन सँभार ।
 कर घायल ईन कौं रन करार, पुन धिख्यौ राँम पै वाँन-पूर ॥२१८३
 कर हरयो वाँन जिम आग शार, कीनी लछमन पै अंधकार ।
 जिनवत मुख लछमन राँमचन्द्र, गहरी करखा में ज्युं गिरंद्र ॥२१८४
 बोले लछमन सौं राँम वात, कीय ब्रह्म-अख की करामात ।
 ऊतपत्त करयो मनु-वंस आद, ब्रह्मा ही कारन निबिखाद^१ ॥२१८५
 मनु-वंसी तुम हम ऊभय मित्त, चितना करहु मुरजाद^२ चित्त ।
 वृहस्पि सहहु पीडा-बिकार, लग अख-सख गिर जाहि लार ॥२१८६
 खल मृतफु जाँन कै तजहि खेत, चल जँहै तबही ह्वँ सचेत ।
 ईह लखन सुती रघुवर-ऊदंत,^३ मन मान्यौ सोई सिद्ध मंत ॥२१८७
 जेने सर दीने-ईंद्रजीत, ऊर लागन दीने ह्वँ अभीत ।
 गिर परे बीच रन-खेत गात, धारन सौं लोहू धरधरात ॥२१८८
 जुग भ्रात देख ईम ईंद्रजीत, पहिचान लये आसत प्रमीत^४ ।
 धन ज्युं पुन कीनी घरघराट, बाहनी^५ लेय लीय लंक वाट^६ ॥२१८९
 तगनट करौड़ बंदर संघार, जाय कै करौ वससिर जुहार ।
 पादलै^७ बीह खट उंट-प्रंत, येती-सेना को करयो अंत ॥२१९०
 दिव राँम लखन की कही वात, कीनी गत जैसी करामात ।
 तुम कै चरित्र घननाद सोय, हीय राँवन कौं जय-मान^८ होय ॥२१९१
 ईत राँमचन्द्र गत भई येह, सो देख वभीखन निसंदेह ।
 बोले बुलाय हनुमान वीर पुन वृहस्पि-सख तुम सही वीर ॥२१९२
 जिन राँम लखन कौं लेहु आँन, पन वृहस्पि-अथ पारयो प्रमान^९ ।
 कनीकांतुमार हौं सापचेत खल की बलबलहै वीर-खेत ॥२१९३
 बहु सोच करहु नाहिन पदाप, कब तौ संभारहु खेत आप ।
 सुधीय कहां है कहां सैन, मारुं तुम हम ह्वँ चलहु जैन ॥२१९४
 दन रौं जिनै बंदर बुलाय, ऊतवारो करहु कर जयाय ।
 हनुमान वभीखन शान हास, सहताव^{१०} सँजोई अरु मयाय ॥२१९५

१ मेरुद्विप । २ कनका । ३ काला । ४ वृह । ५ सेना । ६ मार्ग ।
 ७ पीले । ८ काला । ९ काला । १० काला जेकरा ।

सुग्रीव आद देखे सकोय, जूथप-जूथप कौ जोय-जोय ।
 सब गिर परे सुरदा समान, पग नाँहि हिलावत पूँछ पाँन^१ ॥२१६६
 निध तनय बिचारे जाँसवाँन, है जीवत तौ कछु नाँहि हाँन ।
 बय-बृद्ध तथाँ धीय-बृद्ध बीर, संभार करै ताही सरीर ॥२१६७
 मिल भूप बभीखन हनुमाँन, जोय कै खुसी भये जाँसवाँन ।
 वतराय बभीखन वारवार, टंठोर पाँन पग टार-टार ॥२१६८
 बोली पहिचाँनी जाँसवाँन, सभुभ कै बभीखन संनिधान ।
 कलरावत बोले कर-करार, सुन रूप बभीखन समाँचार ॥२१६९
 ऊधरत नहि मेरी नैक आँख, भूपनी सौँ नाँहिन सकूँ भाँक ।
 हनुमाँन कुसल तौ कहहु ढाल, वपु होय खुसी मेरी बहाल^२ ॥२२००
 जब कही बभीखन जाँसवाँन, श्रीरामचन्द्र मैत्री समान ।
 सुग्रीव लखन अंगद सनेह, आये न याद कहा बात येह ॥२२०१
 संदेह निटावहु समुभ सोय, हीय तँ जब विस्मय विगत^३ होय ।
 अंजनी-लडँती पवन-अंस, परकास करहि पौरुख प्रसंस ॥२२०२
 जब पीरा जावहि जूथ-जूथ, वपु हँ बलिष्ठ ऊठहि बरूथ^४ ।
 ईह हेत करयो हनुमाँन याद, बच गयो कही छूटै बिबाद ॥२२०३
 सुन जाँसवाँन ऐसै सवाल, धीय हात ईसारी तातकाल ।
 मारुती गहे पग जाँसवाँन, हाजर हूँ तेरै हनुमाँन ॥२२०४
 करहुँ सिवभाई^५ कहहु काम, राख के भरोसौ सोधाराम ।
 जब हनुमाँन के सुन जबाब, सुघ जाँसवाँन व्यापी सताव ॥२२०५
 ज्युँ गजव गिराई इंद्रजीत, पहिचाँनत मेरी हीय प्रतीत ।
 तुम जतन करहु हम कहत तात, बेरा^६ ईह बिसवा-बोस बात ॥२२०६
 जावहु ऊतार में जरी^७ जोय, लाबहु हिम-गिर तँ बचै लोय ।
 सब ऊल्लीकाँनी रिखभ अंग अष्टापद आगै गिर ऊतंग ॥२२०७
 ईन दोऊ पर्वत के आद-अंत, भर रही ओसदी^८ भंत-भंत^९ ।
 मृतसंजीवनि है जरी भित, तेऊ मृतक जिवावत है तुरंत ॥२२०८
 बिस्सल्या करनी सुनह बात, गहि सूँघत निकसत साल गात ।
 सोबनकनि है जरी सोय, घर घाव-बिथा^{१०} कौँ देत धोय ॥२२०९

१ पाणि = हाथ । २ स्वस्थ । ३ दूर । ४ सेना । ५ सेवा । ६ बेला = समय ।
 ७ जड़ी बूटी । ८ औषधि । ९ भक्ति-भाति । १० व्यथा ।

संधानी द्रव्य बपु करत संध, संध तै गंध ही के समंध ।
 सो पवन-तनय लावहु सँभार, चल चपल बेग ये जरी च्यार ॥२२१०
 सब जीव ऊठै बंदर सरीर, बल बाँह तूँझ हनुमान वीर ।
 वायु के तनय तुम बेग-वाय, १ ईहीं परी बखत करीयँ अपाय ॥२२११
 सीता रघुवर को मिटै सोच, पर जाय राखसी जात पोच २ ।
 सुग्रीव जाँन अवसाँन सिद्ध, पूजहै बाँह पौरुख प्रसिद्ध ॥२२१२
 अरु इंद्रजीत जय घटहि आस, अरु राँवन हूँ है ऊर उदास ।
 ईह लंका जाँनहु विजय आज, राजाँन बभीखन भयौ राज ॥२२१३
 कारन है येते सुनहु काँन, हीय सोच बिचारहु हनुमान ।
 सुन जाँमवाँन की बात आँन, मन-बेग चलयौ ऊड़ हनुमान ॥२२१४
 सुरपथ ३ की वाढ्यौ बीच सन, तन तेज चढ्यौ मनु किर्न ४ तर्न ५ ।
 मनु गरुड़ ऊढ्यौ आकास माँहि, छित बहर की जनु चली छाँहि ॥२२१५
 किधु चक्र सुदर्शन बिस्तु कूर, प्रेरचौ दैतन पै हाथ पूर ।
 ऊतरचौ ईस हिम-गिर सीस आय, पहिचाँन न ओखद क्रमे पाय ॥२२१६
 च्यार सै कोस में फिरचौ चक्र, सोधनै जरी कारन सबक्र ।
 पहिचाँन जरी की परी नाँहि, त्रन-बेली देखी दिव्य तयाँहि ॥२२१७
 ऐच कै श्रंग लीनौ ऊचाय, कूँदे नभ मारग दिछव ६ काय ।
 सोभायमाँन दीसत सरीर, बिच हाथ प्रकासत सैल वीर ॥२२१८
 घट दानव-जाती करन घात, हरि चले सनहु गहि चक्र हात ।
 ऊतरे लंक निरसंक आय, बीरासन बिच में बेग-वाय ॥२२१९
 गिर पवन लगी सोगंध गात, मिल बंदर ऊठे अकसमात ।
 सुग्रीव राँम लछसन सहेत, हीय हनुमान सौँ बढ्यौ हेत ॥२२२०
 सब वीर करन लागे सराह, वाह रे वाह हनुमान वाह ।
 हनुमान सबन सौँ जोर हाथ, नम कै पग लागे अवधनाथ ॥२२२१
 आज्ञा लै ताही गिर अमेट, थप्यौ हेमालय जाय थेट ।
 संका ईक यामें सुनहु सोय, वयू राखस नाही जोयत कोय ॥२२२२
 पहिल सौँ राँवन ईह प्रबंध, मर जाय जँहीं वोरै समंद ।
 रन-खेत न राखस रहन दैत, खित ७ परे ऊठावत वीर-खेत ॥२२२३

१ वायु के समान बेग वाले । २ नीची । ३ आकाश । ४ किरण । ५ तरण =
 सुर्य । ६ दीर्घ । ७ क्षिति = भूमि ।

सक डोरीवारे रहत संग, पातकी^१ न जीवै ईह प्रसंग ।
संका को ऐसौ समाधान, बलसीक-भुती भाख्यौ बिधान ॥२२२४

दोहा

जाँमवाँन को जाँनपन,^२ माँन करचौ हनुमान ।
बृद्धन को माँनत बड़े, याहो कारन आँन ॥२२२५
सब ही सैन कर कै समिल, करचौ हुकूम कपिराज ।
सुनौ सुजन हनुमान सब, अरथ-जुक्त कथ आज ॥२२२६
राँवन-भ्राता सुत मरे, दीयै न अंजुली-दाँन ।
ऐसौ करहु प्रबंध अब, जाँनै सकल जहाँन ॥२२२७
मोटे छोटे कीस मिल, जोय मसाल जगाय ।
रोकहु फाटक राज के, सहर पना-समुदाग्र ॥२२२८

छंद मीतीदाँम

भई अधरात चले कपि भाल, सिलाय कै लाय जलाय मसाल ।
रहे केऊ दाटक फाटक रोक, भुलामिल कीनेऊ गौख^३ भुरोक ॥२२२९
बड़े बहु राजन-मंदर बाट, कपाटन आटन छाजन काट ।
लगाय कै लाय बलाय निकेत,^४ संभारत जारत बख-समेत ॥२२३०
सँजोवत सिंदल तेल सुगंध, घुकावत जावत धूपह धुंध ।
कढै किसतूरीय और कपूर, जरावत केसर तेज जहूर ॥२२३१
पटंबर^५ अंबर लेय जलाय, गधंबर कंबर^६ कोन गिनाय ।
अनूपम स्वाद अन्नोन्न^७ अंन, रखौरीय होरीय कीन रतंन ॥२२३२
सुवन के चाँदीय के अय^८-साज, करचौ बहु सिंदन^९ केर अकाज ।
बचे हनुमान की लाय की बेर, ढँढोर के कीन बराबर ढेर ॥२२३३
जिहीं लख रोवत राखस-जात, अचाँनक होय गयो ऊतपात ।
बिना कोऊ साटीय^{१०} चोलीय दाँम, कढी केऊ नंग-धरंग सकाँम ॥२२३४

१ पापी, दानव । २ ज्ञान । ३ गवाक्ष । ४ स्थान । ५ रेशमी वस्त्र । ६ कंबल ।
७ अन्यान्य = अनेक प्रकार । ८ लोहा । ९ स्यन्दन = रथ । १० साड़ियाँ ।

चले केऊ बालक पालक छोर, बकै पितु मात के नाँव बहोर ।
 ऊठे बहु राखस हीय ऊछंड, तपे तल देख दुखंड त्रखंड ॥२२३५
 अजा केऊ खच्चर छोरत ऊँठ, ज्युँही हय हाथीय बँधन जूँठ ।
 भुकोरन-भारन सौं भुलसाय, जरै केऊ बीच अँगारन जाय ॥२२३६
 कुलाहल लंकपुरी सुन काँन, उठ्यौ दसकंध खता अवसाँन ।
 लखी चख लंकपुरी दव^१ लाग, बसत सैं जेय पलास कौ बाग ॥२२३७
 निहाँर कै कौतुक श्रीरघुनाँथ, हजारन बाँनन छुँडेऊ हाथ ।
 गिरे ऊलका जिस जाय कै गोम, भरी जन लागीय पत्तन-भोम^२ ॥२२३८
 जहाँ केऊ राखस बंदर-जात, बिडारन लागेऊ राखन वात ।
 सुकंठहु आपनी सैन सभाय, खुलासय सासन दीन खिजाय ॥२२३९
 पराजय जो कोऊ बंदर पाय, ईहाँ मुख मोहि दिखावहि आय ।
 दिखावहु प्राँन कौ ताहीय दंड, बचै नहि जाय चढै बृहमंड ॥२२४०
 सँभारहु मोरचा-मोरचा सोय, कढै नही राखस बाहर कोय ।
 सुग्रीव कौ सासन सीस चढाय, बढे सब बंदर पाव बढाय ॥२२४१
 धिराय कै पत्तन वाटन घाट, करोरन तोरन और कपाट ।
 ठिले दल भीतर-बाहिर ठौर, प्रतलीय^३ रोक चहुँ दिस पौर ॥२२४२
 तर्पी तन राँवन ताप तखँल, कहुँ तब अंगज^४ कुंभकरंज ।
 विचारहु कुंभ निकुंभ बचाव, ईहै ऊतपात कौ होय अभाव ॥२२४३
 निदेसन^५ पाय कै कुंभ निकुंभ, सबै भट लै चले संग समुंभ^६ ।
 जुवाखरु श्रीनत-अक्ष प्रजंध, सभचौ फिर कंपन पौख सिंध ॥२२४४
 गरज्जन लागेऊ नाद गहोर विधूनन^७ बंदर होय बहोर ।
 ऊँवारन देख बितेलन आच, तहाँ वनचारीय सिंधन ताच ॥२२४५
 पराक्रम एक न येकन पेल, भँमाभूम मूसल भालन भेल ।
 चली अय-गोलन अंगन चोट, कँगूरन छाजन ऊपर कोट ॥२२४६
 जहाँ तहाँ होवन लागेऊ जुद्ध, अगारन द्वार पगारन ऊद्ध^८ ।
 चर्मालम मूलन हूल चंदोल, वेमाधम मुक्कन दज्जीय धोल ॥२२४७
 निगाँचर जूटत कोस नियुद्ध, करै नख मारीय दाँतन रुद्ध ।
 हरीलीय वेग सरी हमगीर, वकारेऊ कंपन अंगद वीर ॥२२४८

१ जगामिन पन चरित । २ नगर-भूमि । ३ प्रवेशद्वार, गलियाँ । ४ तपण = उग्र ।
 ५ पुत्र । ६ जला । ७ जमान मत्त रगने वाले । ८ विध्वंस के लिये । ९ ऊँधव =
 उग्र ।

गदा गहि कंपन अंगद गात, दई सिल सारनई^१ अवदात^२ ।
 लयौ कछु मोह ऊठ्यौ ललकार, पटक्केऊ ऊपर येक पहार ॥२२४६
 मरचौ खल कंपन लागत मथ्य, सभे जुध अंगद सौं समरथ्य ।
 जहां लख अंगद कौं रन जीत, चढ्यौ रन श्रोनत-अक्ष सचीत ॥२२५०
 बिडारेऊ अंगद कै तन बाँन, भयौ तन घायल रूप भयान ।
 अरचौ रन ताहुसौं संन्मुह आय, बड़े तरु पथ्यर कौं बरसाय ॥२२५१
 कटे सर चाप निखंग करूर, सँभारीय खेटकहू^३ खग^४ सूर ।
 मित्यौ सोई अंगद सौं रन-मग्ग, उठाय कै ढाल कौं खग ऊदग्ग^५ ॥२२५२
 गह्यौ तिह अंगद कूद गुसैल,^६ बिलग्गीय भानहुँ व्याल बिसैल ।
 लयौ खग खोस^७ दयौ ललकार, ढरचौ तिह कंध जनेऊ व ढार ॥२२५३
 गिरचौ बिब दूक जुदौ हुय गात, ऊभै चख फेरत ही अररात ।
 ईहां खल सार कै अंगद और, मिले खल जाही के फारेऊ सौर ॥२२५४
 जुपाखहू आय प्रजंघ जुरंत, दई फिर भार दुहूँन दुरंत^८ ।
 ऊभै भट राखस अंगद येक, दुबिद रू मैद मिले ईत देख ॥२२५५
 जहां परजंघ बढ्यौ कर जोर, अंगजित आयेऊ अंगद और ।
 करचौ तिह धारन खग करग्ग, प्रहारन कारन थभेऊ पग ॥२२५६
 महौबल अंगद सुक्कन मार, तँही धर डार दई तरवार ।
 दई खल मुक्कीय अंगद दाट, लगी सोई बीच में जाय ललाट ॥२२५७
 परी तरवार कौं अंगद पेख, बकारत लिन्नीय दिन्न^९ बिसेख ।
 तुट्यौ सिर तुंब्बीय^{१०} उज्युँ तरकाय,^{११} गिरचौ तन रुंड धरा गुरकाय ॥२२५८
 जुपाखहू देख मरचौ परजंघ, सँभारेऊ पाँनप केतरि सिध ।
 लयौ तिह खापन^{१२} खग निकार, लई तिह अंगद की फिर लार ॥२२५९
 परचौ बिब दौर महौभुज पीन दुबिदय मुह्यीय की ऊर दीन ।
 महौबल आय मयंद मिलाय, पट्टकेऊ भूम भट्टकेऊ पाय ॥२२६०
 घसीटत मारेऊ धूर में धूर, बह्यौ तिह स्वास ऊसास बधूर ।
 सबै फिर चालीय राखसि-सैन, निहार कै कुंभ निकुंभ कौं नैन ॥२२६१
 बढ्यौ रन कुंभ सहाँ बरबीर, तहाँ दीय खेच दुबिद कै तीर ।
 गिरचौ कपि लागत हीं गरराय, थँभे नह पांव हियौ थरराय ॥२२६२

१ लोहमय । २ उज्वल, तीक्ष्ण । ३ ढाल । ४ खड्ग । ५ उदग्र, तीक्ष्ण । ६ क्रोधी ।
 ७ छीन कर । ८ कठोर । ९ दी । १० तूवा । ११ तड़क कर, हट कर । १२
 म्यान ।

दुर्बिंद कौं देख मयंदह दौर, ऊपार कै कुंभ दई सिल और ।
 दये सर पाँच सिला तिह देख, बिखेर कै कीनेऊ टूक बिसेख ॥२२६३
 हने फिर कुंभ मयंद हकार, सबै सर दिग्धमई^१ सिलसार^२ ।
 मयंद कै लागेऊ थाँन-सरंम, छिके तेऊ बीच वरंम^३ चरंम^४ ॥२२६४
 दुर्बिंद कौं घायल किन्नीय देह, ईतै फिर देखेऊ मैद अरेह ।
 शुरछ्छत लैंद करचौ सर सार, बढचौ खल पाँनप^५ कौं विस्तार ॥२२६५
 लखी गत मैद दुर्बिंद की लार, हुई हुई भ्रातन की रन हार ।
 ऊभै भट अंगद साँमाय येह सँभारेऊ अंगद पाय सनेह ॥२२६६
 ऊबारन कारन अंग उठाय, बढे खल सम्मुह चाल बढाय ।
 जहाँ लख कुंभ महाँ वरजोर, दये सर अंगद कै तन दौर ॥२२६७
 सिला तरु मारेऊ अंगद अंग, भयो नह घायल कुंभ अभाग ।
 बिलोकेऊ अंगद क्रूर बयंड, चरखीय बाँन वरखत चंड ॥२२६८
 बिड़ारेऊ भाल में ब्रूहन^६ बीच, खुच्यो^७ तऊ ताहि निकारेऊ खींच ।
 छुट्यो चख ऊपर कूरच बिच, निचोवन लाग निमेखन^८ निच ॥२२६९
 परे खग^९ जेम कटी मनु पंख, ऊधार न सक्केऊ अंगद अंख ।
 ईतै लख अंगद की गत येह, कथा कपि राँम सौं जाय कएह ॥२२७०
 जबै रघुवीर कही जँमुवाँन, अहो तुम जावहु ह्वै अगवाँन ।
 सँभारहु अंगद होय सहाय, जहाँ खल कुंभ बिड़ारहु जाय ॥२२७१
 सुखेनहु आदक जावहु संग, जुह रहु वेग दरस्पीय जंग ।
 सबै बिध जूथप बुद्धि सयाँन,^{१०} परहुहु आतुर जुद्ध प्रयाँन ॥२२७२
 रजा रघुवीर दई ईम रार, हले त्रहु जूथप सैन हकार ।
 चले कपि कुंभ पै बीर चलाक, हरोलन बोलन की सुन हाक ॥२२७३
 तज्यो रन अंगद सौं ततकाल, बढचौ कपि सैन दिला विकराल ।
 तजे सर कुंभ घने रन तिष्ठ, सँभारत मारत धारत सिष्ठ ॥२२७४
 रुके त्रहु जूथपती बिच रार, बढे नहीं अग्र समग्र बिचार ।
 थुभं जल बाँधत पालीय थूल, ढबे ईम बंदर हूलन-हूल ॥२२७५
 समंदर बार बढै कर सोर, छिलै मुरजाद कौं नाँहिन छोर ।
 हटी ईम देखीय सैन हलंत, बढचौ कपि-राज महाँ बलवंत ॥२२७६

१ बुके हुए । २ लोहा । ३ चर्म = बख्तर । ४ चर्म = चमड़ी । ५ धनुष ।
 ६ भौंहें । ७ चुभ गया । ८ पलक । ९ पक्षी । १० चतुर ।

मिल्यो त्रहुं जूथप सौं कर मेल, बराबर कारन अंगद बेल ।
 बढे ईन जूथप सौं बतराय, किनारीय कुंभहु सौं कतराय ॥२२७७
 जितै चल अंगद की ढिग जाय, करी तिह पीठ पछारीय काय ।
 चले फिर कुंभही पै रन-चाह, पराक्रम देखन बेपरवाह ॥२२७८
 मलप्पेऊ आय मनौ मृघराज, गिरी पर देख खरौ^१ गजराज ।
 दए असकर्ण तरोवर दाट, भ्रमेल कै भौरन-भौरन-भाट ॥२२७९
 रह्यौ रूप राखस कुंभ रिसाय, सुग्रीव कौ देखत ही सुसताय ।
 लये सर चाप कोयै चख लाल, घुटी रिस बाँहन^२ ऊपर घाल ॥२२८०
 प्रकंडन बृछछन किन्नोऊ पात, सतघनीय^३ जेम गिरे सरसात ।
 दए सर बंदर-राज की देह, सुग्रीव की दीख परे जिम सेह ॥२२८१
 नहीं घबराएऊ कीस-नरेस, भयानक कुंभ कौ देखत भेस ।
 गए सनिकर्ष जहाँ कर गौन, पराक्रम आप दिखावन पान^४ ॥२२८२
 शरोर कै चाप लयौ गहि मुष्ट, करे त्रय दूक निधारेऊ कष्ट ।
 कपीस्वर दीरघ पिंजर कंध, दिखावत कुंजर जेम मदंध ॥२२८३
 कहे फिर बोल अहो सुन कुंभ, निरंकुस तेरीई आत निकुंभ ।
 सिरोमन जेष्ट तुहीं सिरताज, सुन्यौ सोई देखेऊ बीर-समाज ॥२२८४
 पिता तुंहि कुंभकरंन प्रचंड, पराक्रम जैसौई है तुम पिंड^५ ।
 दिखावहु बाँहन कौ बल दिष्ट, ऊपाय कै वार बराबर ईष्ट^६ ॥२२८५
 जिते रन अंगद जाँमहवाँन^७, सुखैनुहु बेग दरसि समाँन ।
 करचौ श्रम जुद्ध घनी करतूत, बहे सुसताय भए मजबूत ॥२२८६
 हमारेई देखत हौ श्रब हात, खरे हम देख बखानत ख्यात ।
 सुनै कपिराज के बिग-सवाल,^८ जगी ऊर कुंभ हुतासन-ज्वाल ॥२२८७
 मिल्यौ कपिराज सौं मार मलंग, करै जिम पंछीय वार कुलंग ।
 भ्रपेटन-फेटन दै कर भेल, खिलावन लागेऊ मल्लन खेल ॥२२८८
 समेटत स्वास-ऊसासन संग, अरचौ कपिराज सौं कुंभ-अभंग ।
 प्रसाप्रस दोवन^९ मंड गरूर, धसामस होवत पाहन-धूर ॥२२८९
 अटापट छोर ऊभै भः ओट, चटापट मारन लागेऊ चोट ।
 भयो बहु-बेर नियुद्ध^{१०} भयान, पराक्रम पाँनन सौं पहिचान ॥२२९०

१ खड़ा हुआ । २ भौंहों । ३ तोपों, बंदूकों । ४ हाथ । ५ शरीर । ६ इच्छित ।
 ७ मवंत । ८ व्यंग-वचन । ९ दोनों । १० भुजा-युद्ध ।

बढ्यौ कपिराज सहाँ बरबीर, समेट कै कुंभ अमेट^१ सरीर ।
 पट्टकेऊ सागर में गहि पाव, दिखाय कै एह ऊजागर दाव ॥२२६१
 चलयौ फिर नीर निचोवत चंज^२, गही कपिराजहु की तिह गैल ।
 दई ईक मुक्कीय की हीय दोट, बखःत्तर फाट गयौ अध बोट ॥२२६२
 करक्केऊ हाड़ कि मारीय काय, भरक्केऊ रीस हीयौ भहराय ।
 ऊठे फिर सीचत पै घृत आग, बंधे कर मुक्कीय ज्यूँ बजराग^३ ॥२२६३
 भुजंतर मारीय बाँह भ्रमाय, ऊगल्लत श्रोन भरचौ अरराय ।
 गिरचौ लहि सीच धरातल गात, सनौ गृह मंगल गोदीय-माँत ॥२२६४
 छुटघौ रन प्राँन करचौ तन छेह, डुलावत बाँहन हालत देह ।
 निहार कै ताहि कौ भ्रात निकुंभ, दिखावन आयेऊ पौरख दंभ ॥२२६५
 खरे कपिराज लखे रनखेत, सबै कपि जूथप बीर-सहेत ।
 निहार कै आएऊ दौर नजीक^४, अटी पर-घातनहू अंतरीक ॥२२६६
 जराव के काँम जरी बिच जाल, मढी पंच-अंगुल कंचनमाल ।
 लगे केऊ बंधन-संधन लार, जगामग दीसत जोत जुँहार ॥२२६७
 कपाट के ठाट पंचानन^५ कंध, बंधे बिहु-बाँहन में भुजबंध ।
 फिरीटहू सस्तक कुंडल काँन, लगी बहु भूखन^६ की लहराँन ॥२२६८
 करी अय-कंकट सोवृन-काँम, लुकाएऊ तामह गात ललाँम ।
 लुहाँगीय ज्यूँ जम-डंड लखात, छटा मनु बद्दर में चमकात ॥२२६९
 जगै बिन धूम हुतासन-ज्वाल, कुमार की सक्तिहु तै विकराल ।
 घुमाईय ऊरध ताकह घेर, फिरे कपि भालहु आँखन फेर ॥२३००
 डरे रिखी गंधुव दाँनव देव, भिरचौ कपिराज पै वर सभेव ।
 ईतें हनुँमाँन विचालीय आय, पराक्रम देखन मंडेऊ पाय ॥२३०१
 सहाँवल देख खरे हनुँमाँन, दई परघातन मार निदाँन ।
 टुटी लग छातीय ऊपर टल्ल, अठ्यौ हनुँमाँनहू क्रोध उभल्ल ॥२३०२
 भ्रमाय कै हाथ की साखन^७ भींच, विडारीय^८ मुक्कीय की ऊर बीच ।
 वल्लतर तूट गये अय-बंध, सबै हीय हाड़न की खुल संध ॥२३०३
 ऊठी हीय आग अंगारीय आँच, खरे हनुँमाँन लए कर खाँच ।
 चलयौ अतलवत पावन चाल, बढ्यौ हनुँमाँन कै क्रुद्ध विसाल ॥२३०४

१ घूरे । २ बख, केस । ३ बच्चगुल्य । ४ पात-निकट । ५ सिंह । ६ आभूषण ।
 ७ अंगुलियाँ । ८ प्रहार की ।

दई फिर मुक्कीय की मुख दोट^१, हिले मुख दंत खुले दोऊ होट ।
पट्टकेऊ भूम भट्टकेऊ पिंड, बह्यौ-ऊड़^२ सास गयौ ब्रह्मंड ॥२३०५

दोहा

कपिराजा हन कुंभ कौं, पाई जीत प्रमाँन ।
जैसी रीत निकुभ जहाँ, मार लयौ हनुमान ॥२३०६
कुंभकरन के सुत कटे, खर कौ सुत मकराख ।
बैर लैन बंधव वरग, ऊर धारी अभिलाख ॥२३०७

छंद उधौर

घन तबही कंकट-व्यूढ^३, मकराक्ष बोल्यौ मूढ ।
सुन बढे पितु मोहि स्वाल, कर सासना^४ ततकाल ॥२३०८
रन करत बाजी रोप, कर राँम ऊपर कोप ।
मोहि पिता कौ रन मार, बढ बैर प्रथम बिकार ॥२३०९
जिह कारनै तुम जाय, कीय हर्न सीय बलकाय ।
तिह लैन सीता तीय, बल^५ सभे भ्रातात्रीय ॥२३१०
आये सु कर ऊदमाद, बढ पुरी लंक बिखाद ।
कट गई सैन कितीक, सोई भये लून^६ सिरीक^७ ॥२३११
मिल गये संगर-भाग, ऊर बैर की नहीं आग ।
ऊर बैर भेरै अंत, धधकंत आग धुकंत ॥२३१२
खर बैर लेवन खाँत, अकुलाय मेरी आँत ।
कट परे कुंभकरंभ, तिह तीद आलस तंभ ॥२३१३
निज बैर कुंभ निकुंभ, खिर परे दोऊ जय-खंभ ।
पितु मोहि काज प्रवेक^८, अब भये बैर अनेक ॥२३१४
देखे सो मैं हूँ दीठ, ऊर जरत आग अँगोठ ।
घसरा परे भर त्याँहि, मर जाहुँ संगर माँहि ॥२३१५

१ चोट = प्रहार । २ उड़ गया । ३ बखतर-बंद । ४ शासन = आज्ञा । ५ सेना ।
६ तमक । ७ समान । ८ मुख्य ।

अथवाँ की राँम अरुंग, जु र करहि मोसौँ जंग ।
 खर हन्यौ त्योंही खेत, हन लैहु सैन-सहेत ॥२३१६
 पितु होय ऊरन^१ पाप, ईह मुख दिखावहु आप ।
 सैना भिजावहु साथ, हित कहत जोरत हाथ ॥२३१७
 मकराक्ष सुनत बसंत^२, तहाँ लंकधीस तुरंत ।
 सभ सैन दोनी साथ, रन मारनै रघुनाथ ॥२३१८
 रथ बैठ चाल्यौ रार, हय जोत भट हलकार ।
 बहु संख दुंदभ बाज, अरु भई भेर अवाज ॥२३१९
 चढ़ चल्यौ आतुर चाल, सब अख-सख सँभाल ।
 बोल्यौ सु सुभटन बाँन, बरबीर तुम बलवाँन ॥२३२०
 दल कीस मारहु देख, सुग्रीव लौ सबिसेख^३ ।
 मैं राँम लछमन मार, पितु बैर लेहुँ प्रचार^४ ॥२३२१
 जो भई अपनी जीत, कल अमर ह्वै है कीत ।
 दुख मिटहि लंका द्रंग, सुख होय परजा संग ॥२३२२
 ईह बात राखहु याद, सुख मिलहि फेर सवाद ।
 ईह सुनत सैन ऊमंग, सब चली आतुर संग ॥२३२३
 भिर परो बंबर भाल, जाजुल्य ज्यूँ जमजाल ।
 जब हीन लागौ जुद्ध, बढ बैर-भाव बिरुद्ध ॥२३२४
 मकराक्ष लीनौ माग^५, जहाँ राँम लछमन जाग ।
 केऊ मार बाँन कठोर, जहाँ कीय प्रकासत जोर ॥२३२५
 मुग्दरा भाला मार, धरत्तेसु कपि खग-धार ।
 सुग्रीव-वारी सैन, लागी ऊसासन लैन ॥२३२६
 देखी सु रघुवर दीठ, कपि भये कुंजर कीट ।
 जब राँम आगै जाय, पथ गाड़ ऊभे^६ पाय ॥२३२७
 कर चाप की टंकार, संघाँन बाँन सँवार ।
 मकराक्ष देख मिलाय, पुन वचन कहेऊ विराय ॥२३२८
 सुन राँम मोहि सवाल, होय हेर पूरव^७ हाल ।
 खर-पुत्र मैं मकराख, सब सुभट पूछहु साख^८ ॥२३२९

१ उदार = ऋण-मुक्त । २ बात । ३ विशेष रूप से । ४ ललकार कर । ५ माग ।
 ६ दोनों । ७ पहले का । ८ साक्षी ।

तै हथ्यो मेरौ तात, अंन्याय कर ऊतपात ।
 खर हन्यौ जब तै खेत, नहीं जाय अजहु^१ निकेत ॥२३३०
 रन करत कर-कर रोख, दिन-दिन बढ़ावत दोख ।
 बिपरीत तेरी बुद्ध, पहिचान परत प्रबुद्ध ॥२३३१
 तुम करत जैसे तेख,^२ दिल हमही बाढत द्वेख ।
 मृग-माल^३ ज्युं बन माहि, पलभक्ष भूखौ पाहि ॥२३३२
 ईम मिले मोकह आज, धिन^४ भाग अवध-धिराज ।
 जम-लोक करनै जात,^५ भल जाहु संजुत आत ॥२३३३
 बहु सुने रघुवीर बोल, घट भीतरै रिस घोल ।
 हस कही प्रबत हेर, फनि जेम आंखन फेर ॥२३३४
 खर और दूखन खेल, पुन लख्यौ त्रसरा पेल ।
 खल वँही देखहु ख्याल, बिच खेत खर के बाल ॥२३३५
 बकबाद सौं बिद्वेख, बारचौ सु चहत बिसेख ।
 सुध भूल नावत सम,^६ धिक बीर तेरे धर्म ॥२३३६
 जब सुने राँम जबाब, सर लए हाथ सताब ।
 दीने सु रघुबर देख, बपु^७ ताक-ताक बिसेख ॥२३३७
 सर मार राँम सरीर, तोरे हजारन तीर ।
 ईत राँम जुटेऊ असंभ, खर-पूत ऊत जय-खंभ ॥२३३८
 जम जुरे सम-सम-जुद्ध, कम^८ रोप कर-कर क्रुद्ध ।
 घट एक दै ईक घाव, पथ अग्र पर ठत पाव ॥२३३९
 नही हटत एक निहार, हीय जाँन अपनी हार ।
 जहाँ राँम खर-सुत जुद्ध, सुर-असुर देखत सिद्ध ॥२३४०
 रिन बढ़े राँम रिसाय, बहु बाँन दीय बरसाय ।
 कोडंड खर-सुत काट, अरु बाँन मारे आठ ॥२३४१
 हय स्वारथी कर हान, पीलयौ^९ बाँनन प्राँन ।
 मकराक्ष रथ कौं मेल, भट ऊतर सूल भमेल ॥२३४२
 चमकत चपला चाल, जँनु कल्प^{१०} पावक-ज्वाल ।
 घूमाय हाथन घेर, बोल्यौ सु ताही बेर ॥२३४३

१ अब भी । २ क्रोध । ३ हिरनों का भुण्ड । ४ धन्य । ५ तीर्थ-यात्रा ।
 ६ लज्जा । ७ शरीर । ८ पग । ९ नष्ट कर दिया । १० प्रलय ।

महादेव दीनो मोहि, तन सूल मारत तोहि ।
 सो लेहु राँम सँभार, त्वै जुद्ध कौ हुसीयार ॥२३४४
 जमपुरी भेजत जीव, पग साँड सीय के पीव ।
 ईह कहत छोरचौ आच,^१ तप-तपत बिजुरी तात ॥२३४५
 देख्यौ सु रघुवर दीठ, आवंत तेज अँगीठ ।
 दीय च्यार^२ सर तिह देख, तक सीध कौ कर तेख ॥२३४६
 तिह सूल कीने दूक, ऊलकाँनवारी ऊक^३ ।
 जगमगत फैली ज्वाल, कढ ऊपरा करवाल^४ ॥२३४७
 धर परी मिल कँ धूर, बह गई ऊठब धूर ।
 रन देख पौरुख राँम, कीय बड़ी अद्भुत काँम ॥२३४८
 बोले सु जय-जय-वाँन,^५ सब कीस भाल समान ।
 खर-सुतन सुन खिसआय, ऊररचौ सु हाथ ऊठाय ॥२३४९
 मुक्का जु बाँधी सूठ, खल गये आयुध खूट ।
 द्रग राँम आवत देख, अगनाख लीन असेख ॥२३५०
 मारचौ सु खल ऊर माँहि, तूट्यौ सु पिजर ताहि ।
 मकराक्ष लीनी सीच,^६ खर पिता जैसे खींच ॥२३५१

दोहा

मारचौ रन मकराक्ष कौ, राँमचंद्र राजान ।
 खर कौ अंगज खिर गयो, पितु कौ बैर पिछान ॥२३५२
 मरन सुन्यौ मकराक्ष कौ, राँवन दीनो रोय ।
 ईंद्रजीत आयौ ईतै, गहि पानप रिस गोय ॥२३५३

छंद त्रोटक

घननाद लख्यौ पितु सोक धिरचौ, कछु सोच मिटावन बोध करचौ ।
 पुन बोलेऊ राँवन पूत प्रतै, हीय की निज बात सुनौ हम तै ॥२३५४

खर-कौ-सुतह खर जेम खुट्यौ, पितु बैर निकार नही पलट्यौ ।
 हम साच कहै सुन लेहु हित्त, मकराक्ष भयौ अनकाज मृत ॥२३५५
 धुर दासरथी दोऊ भ्रात ध्रमी, भगनी पति जाचेऊ बुद्धि भ्रमी ।
 ऊररोकृत^१ नाँहि करी ऊन तौ, अन सौं सीय-भक्षण कीन सतौ ॥२३५६
 नकटी कीय लछछन^२ सूपनखा, पहिचान कै नार अबद्ध पखा ।
 कुल-भूषन हान लखी कुल की, बिन नाक रु काँन सुसा^३ विलखी ॥२३५७
 भलकी खर कै हीय आग भला, बभकी^४ कुल-लाज की बैर-बला ।
 जब जोर जमाय चलयौ जुर कै, भिजबाएऊ दूत तऊ भिर कै ॥२३५८
 नय-बात कही रघुनाथ नरा, बहनी कौ करचौ उपहास बुरा ।
 तीय बैर में देहु हमें तुम ही, कुस लात रहौ बनबास कही ॥२३५९
 खर-बात न माँनीय एक खरी, कर कौतुक ही फिर रार करी ।
 परवाह न राख दयौ पलटौ, वह मार लयौ लरकै ऊलटौ ॥२३६०
 भहराय गिरचौ हम पै भगरौ, सीय-काज बिगार भयौ सिगरौ ।
 खर बात सुनी लम आँत खिजी, ऊर में सीय-लावन की उपजी ॥२३६१
 रमनी^५ न बनी^६ मम रावन पै, कहा राँम करे तिहकाँ मन पै ।
 खर-आद बिखाद की रेख खिची, जोई बात न छूटत घात जची ॥२३६२
 निज भ्रात कौ बैर निकारहुँगौ, धक संगर की ऊर धारहुँगौ ।
 हटकै^७ खर कौ जिह प्राँन हरी, मकराक्ष दिखावत राँम मरौ ॥२३६३
 खर बैर कौ सोही पै भार खरौ, कुल-राखस जास लिहाज करौ ।
 खर कौ सुतह परगौ खिरकै^८, बमुधा पै परै फल ज्युँ बर कै ॥२३६४
 कछु आप नहीं मुख जात कही, रन की ऊर में अभिलाख रही ।
 अब राँम कौ मारन जात ऊतै, पर कौन दिखावहुँ बैर प्रतै ॥२३६५
 ईह कारन होत ऊदास ईतौ, खर के सुत सौं सुन खेत खतौ^९ ।
 घननाद घनी घवरावन की, पितु बात सुनी पिछतावन की ॥२३६६
 सब रीत पिता समुभावन की, जहाँ बात कही रन-जावन की ।
 घननाद जितै सुत या घर में, पितु होय नचीत^{१०} वसौ पुर में ॥२३६७
 पुन जाँन संबोधन कीन पिता, कहि कै ईतीहास अनेक कथा ।
 कीय ईष्ट-अराधन में करनी, बिध जुक्त न बात अजौ वरनी ॥२३६८

१ अंगीकृत । २ लक्ष्मण । ३ वहिन-शूर्पनखा । ४ भनक उठी । ५ रमणी-सीता ।
 ६ वश में आई । ७ हठ करके । ८ मरकर । ९ क्षत या नष्ट हो गया । १० निश्चिन्त ।

दसकंधर ख्याल दिखावहुगौ, जबही लरनै रन जावहुगौ ।
 किहू काज पिता तुम जुद्ध क्रमै, जय राँम कळूँ मम काँम जुमै^१ ॥२३६६
 घननाद के बोल कढे घन से, वरखै घन लाय लगै वन^२ से ।
 कर कै पन या बिध बात कही, जय आस भई दसकंध जँही ॥२३७०
 घननाद कँ दौन असीस घनी, अगवाँनीय राखस जात अनी ।
 बहु राँम बिडारीय बाँनन सौं, पलटै तिहू सोखहु प्राँनन काँ ॥२३७१
 पहिचानहुँ तोर सपुत्र पनी^३, घननाद है मोहि भरोस घनी ।
 ईह राँवन बात सुनी ऊमग्यौ, लरनै की तयारी कै काज लग्यौ ॥२३७२
 कीय संत्रत अखरू सखरू कई, लरनै प्रतना^४ बहु संग लई ।
 चढ कै रथ चालेऊ बीर छली, थित ढाल जहाँ रन-ताल-थली ॥२३७३
 कीय सैन बिदा कपि-काटन काँ, बढ आप लई नभ वाटन^५ काँ ।
 जुत लछछन राँम सौं जाय जुरचौ, धरके नहीं राँम धरोज^६ धरचौ ॥२३७४
 लख बोलेऊ राँम लछंमन सौं, घननाद ईहै गख्यौ घन सौं ।
 सर ब्रह्म बिनाँ न मरै सुपनै अब याद कळूँ मन में अपनै ॥२३७५
 तुम नाँ घबरावहु बार तिती, जुध सैन सँभारहु संग जिती ।
 कहि राँम प्रीयोग लगे करनै, धर धीरज ध्यान लगे धरनै ॥२३७६
 द्रग देख लई घननाद दसा, रघुबीर न छोरहि बीच रसा^७ ।
 पथ लीन गयो सोई लंकपुरी, बिच हीय बिचार कै बात बुरी ॥२३७७
 प्रतिकाय^८ सोया कर कै पुतरो, क्रतमी ईह मायक जाल करी ।
 फिर चालेऊ पछछम फाटक काँ, इह कावन मारुती दाटक काँ ॥२३७८
 क्रतमी^९ सीय काँ संग मैकु हनी, रुच मायक-जाल ही की रहनी ।
 हनूमान लखे तिहू आवत ही, समुहा चले सैन सभावत ही ॥२३७९
 भट लै संग जाय समीप भिरे, पुन ज्याँनकी ऊपर द्रिष्ट परे ।
 पथरा पहिचान नहीं पटकै, हनूमान सबै भट काँ हटकै ॥२३८०
 तरु-श्रंग गहे सु रहे तस^{१०} में, बिलखी सीय दुष्ट लखी बस में ।
 घननाद लख्यौ बल कीस घट्यौ, क्रतमी सीय काँ गहि सीस कट्यौ ॥२३८१
 भयभीत जहाँ हनूमान भये, कपटी घननाद कुबोल कहे ।
 लखीयै ईह सीय बिरोध लता, पुन पाछै रहे नहीं पेढ-पता^{११} ॥२३८२

१ जिम्में । २ जल । ३ सुपुत्र-पन । ४ सेना । ५ वाट = मार्ग । धैर्य ।
 ७ पृथ्वी । ८ प्रतिमूर्ति । ९ वनावटी । १० उसी प्रकार हाथ में । ११ पेड़-पत्ता ।

कुल राखस जाहि अकाज कीया, सिर काट लयौ हम आज सीया ।
 कहीयें रघुनाथ कौ जाय कथा, जहाँ पैहीं बघाई कौ लाभ जथा ॥२३८३
 भयभीत भयौ कपि साथ भज्यौ, गज केहर ज्यौ घननाद गज्यौ ।
 सद^१ उत्तर फा क रांम सुन्यौ, हनूमांन जयौ किधु खेत हन्यौ ॥२३८४
 ऊर में हुय संसय रांम ईतैं, जम्बान कही सब सैन जुतैं ।
 हनूमांन सहाय कौ जाहु हलैं, गरजै घन ज्युं घननाद गलैं ॥२३८५
 रघुवीर रजा कीय रिछछन कौ, बय बृद्ध बिचार विचछ्छन कौ ।
 मग पछ्छम फाटक के ऊमड़े, बन के तरु अंग ऊवार बड़े ॥२३८६
 मग में हनूमांनहु आय मिले, बपु चित्त की आकृत सौं विचले^२ ।
 जंमुवांन मिले अरु संन जितो, पग लागेऊ आय के औधपती ॥२३८७
 हनूमांन कौ देख ऊदास हिया, सुख पूछन लागेऊ नाथ सीया ।
 हनूमांन कही हम हार हुई, कछु नाथ सौं बात न जात कही ॥२३८८
 सिय के हित ऊद्यम कोन सबे, वैह सीय सँघारोय दुष्ट अबे ।
 घननाद लखी ईन घातन सौं, बिलखाय फिरे हम बातन सौं ॥२३८९
 हम तूट गयो बल बांहन कौ, ईह बँर कौ फेर ऊगाहन कौ ।
 करनी करनीय सो आप कही, लरकै घननाद सौं बँर लहौ ॥२३९०
 हनूमांन की बात सुनीह हरे, रघुवीर सीया सीय नांम ररे^३ ।
 मुरदागत होय के सोय मही, रमनी हित आँखन रोय रही ॥२३९१
 मभ खेत जहाँ हनूमांन मिले, सुन जूथप-जूथ जहाँ समिले ।
 रघुवीर उदासीय की रचना, बिलखायन जाय कहे वचना ॥२३९२
 चख-वार^४ कोऊ छिरकावत है, सुचि केक सुगंध सुंघावत है ।
 कोऊ ताड़ीपत्र^५ बयार^६ करै, पुन हात मलै कोऊ पाय परै ॥२३९३
 लघु बधव नै सिर गोद लीया, समुझाँवन लागेऊ नाथ सीया ।
 रघुवीर सधीर सु धर्मरता, खल राँवन अधूम कोन खता ॥२३९४
 फिर धर्म लहै धरमी फल कौ, कबहूँ न तजै बल की कल कौ ।
 अधूमी फल पावहि अधूम कौ, करता निरनौ^७ गनीयै क्रम कौ २३९५
 सुकृती^८ तुम अकृती फल साधन सौं, ऊपजै ततकाल अर.घन सौं ।
 सुकृती तुम धर्म के सेवन में, दुज-भक्ति सहायक देवन में ॥२३९६

१ शब्द । २ विचलित हुए । ३ रटने लगे । ४ चक्षुवारि=नेत्रजल आंसू । ५ ताड़-
 पत्र=पंखा । ६ पवन । ७ निर्णय । ८ पुण्यवान् ।

मिलहै सुख आखर^१ सुद्धमती, सिट जायगौ रांवन क्रूरमती ।
 धूम धार ना नैक धरोज^२ धरी, किह कारन रांम विलाप करी ॥२३६७
 कररे^३ केऊ लछ्छन जाव कहे, रघुवीर जहाँ समुभाय रहे ।
 सुरचान^४ संभार कै सुद्धमती, वहि आए बभीखन ऊद्धवती ॥२३६८
 चहु संत्रीय साथ मिले चलकै, बिच ले रघुवीर सीया विलकै^५ ।
 लख एह बभीखन ख्याल नयौ, भ्रम कै क्रम सौं ईह हाल भयौ ॥२३६९
 हनूंमान हकीकत पूछ हित्त, जर^६ सौं घननाद की बात जित्त ।
 कपटी छल जाँन लई करनी, बिनती सब राघव सौं बरनी ॥२४००
 रूच जाँनत है हम रांवन की, सीय पै हीय कौं सरसाँवन की ।
 सीय कौं घननाद न मार सकै, जिह कारन क्यों रघुवीर जकै^७ ॥२४०१
 मध खेत लखी सो मरी तौ मरी, क्रतमी^८ कोऊ सीय करी तौ करी ।
 हनूंमान गयौ डहकाय हीया, सपनै न मरी अबधेस सीया ॥२४०२
 डहकाबहु नाथ नही डरकै, कल की अब जीत लहौ करकै ।
 कपटी घननाद करी करनी, भय दायक जाल कहै भरनी ॥२४०३
 हनूंमान लखी सोई सत्य हुई, मन जाँनहु जाल असत्य-मई ।
 ईक बात कहै हम और अबै, सुनीय रघुवीर बिचार सब ॥२४०४
 घननाद है जालक^९ वीर घनौ, हटकें भटकें तिह प्राँन हनौ ।
 पहुच्यौ सु निकुंभला-थाँनक^{१०} पै, जहाँ होम करै बिध जाँनक पै ॥२४०५
 कर देवीय पूजन कर्म क्रीया, लरनै कहुँ अखहू सख लीया ।
 जुध मारचौ मरै नहीं वीर जई, ब्रह्म संगर को जिह नीम दई ॥२४०६
 अब भेजीयै लछ्छन वीर ऊतै, जुर जावहिगे हम सैन जुतै ।
 सुन बात बभीखन राम सकौ, मनकौ सब ससय सोक मुकौ^{११} ॥२४०७
 छल छिद्र पिछाँन कै जाँन छतौ, मधवाजित^{१२} मारन कीन मतौ ।
 कछू सोच सलाह की बात कही, समराय सदा रघुनाथ सही ॥२४०८

दोहा

निकट बोल सुप्रीव नृप, आंजनेय जमुदान ।

अंगद जूथप-जूथ अरु, पूछी बात पिछाँन ॥२४०९

१ अन्त में । २ धर्य । ३ कठोर । ४ मोर्चा । ५ विलखे = विलाप करे, रोवे ।

६ जड़ से, मूल से । ७ व्याकुल होते हो । ८ कृत्त्रिम = बनावटी । ९ मायावी ।

१० देवी का स्थान । ११ दूर हुआ । १२ इन्द्रजित्त ।

कह्यो बभीखन हम करघौ, सोक दूर ईक साथ ।
 बोले नीत विचार कं, राजा श्री रघुनाथ ॥२४१०
 प्यारी लछमन कठन पथ, जाँनौ हम बिन जुद्ध ।
 मेघनाद कौ मारनौ, समुझहु विषम सनिद्ध ॥२४११

छंद वृद्धनाराच

बभीषन सुन्यौ विचार राँमचंद्र राह कौ ।
 निहार अंजनेय हू सुकंठ की सलाह कौ ।
 अभीत अंगनादहू जुरे सु जुथ्य जुथ्यपं ।
 जहाँ सु जाँमवाँन जान बेस वृद्ध कौ वपं ॥२४१२
 विचार कीन बीनती प्रबीन जोर पाँन^२ कौ ।
 बनी सु एहु बार मेघनाद के मिलाँन कौ ।
 करे सु हौम की क्रीया नचीत^३ होय नेम सौं ।
 बिगार कीस बाँहनी^४ खिजाय आय खेम सौं ॥२४१३
 जुरे बकार जुद्ध कौ सनिद्ध जाय कै सही ।
 लय सु सग लछछन जुले मिले चलै जहीं ।
 जितिक देर कीजीयै जितिहु हान जाँनीयै ।
 कनिष्ट भ्रात कारन अदेस नाहि अाँनीयै ॥२४१४
 ऊवार जाँमवाँन आद वात कौ विचार कै ।
 कनिष्ट भ्रात कष्ट में बिदा करे बकार कै ।
 निहार बायुनंद कौ कपीस सौं कही कथा ।
 विचार कै बिसेख बीर जुथ्यपं जथा जथा ॥२४१५
 बभीखन प्रवेक वात मान कै मिलाईयै ।
 लिवाय संग लछछन बिजे बडी बसाईयै ।
 विचार राँमचंद्र वात साथ कीस सालु रे ।
 असंख सैन ऊभली गजाय सोर गाल रे ॥२४१६
 चले सुभ्रात राँमचंद्र सैन कीस संग में ।
 जिते सु ईद्रजीत कौ ऊसंग धार अंग में ।

टंकार चाप बाँन तिच्छ^१ ईच्छ^२ लीन आच^३ कौं ।
 बकार कीस रिच्छ^४ बीर बोल एहु नाच कौं ॥२४१७
 प्रलब ये कलंब^४ पाँन सिवि ज्वाल के समा ।
 जराथ इंद्रजीत जेम गेरहू गमा-गमा ।
 अनीन भाल अज्जरीन लाल शोन^५ लागहै ।
 निकार प्राँन मेघनाद भीत दूर भागहै ॥२४१८
 बभीखनं बताय देहु दुष्ट है कहाँ दुरचौ^६ ।
 निकुंभला-निकेत^७ धार-धूम सौं भरचौ घिरचौ ।
 जितै-तितै चमू^६ जमाय आप ह्वै ईकंत कौं ।
 अपास होम आँ मनाय तंत्र-मंत्र-तंत कौं ॥२४१९
 बचै न कोट बात सौं छुपै-बुपै जुपै छली ।
 बढाय सैन बंदरी थपै रूप थली-थली ।
 बभीखनं बिसेस बाट घाट पै घुमाय कै ।
 रजा सु दीन रार की ऊआह सौं ऊमाहि कै ॥२४२०
 लगी सु फौज लूम कै सुग्रीव की सरासरी ।
 ऊतैहु इंद्रजीत की भिरी चमू भराभरी ।
 अतंग अंग आच सौं ऊखार कै अनी-अनी ।
 प्रकड कीस प्रेर कै भिरे कपी भनी-भनी ॥२४२१
 जहाँ बभीखनं जनाय बात राम बीर कौं ।
 घिरी सुसेन धार-घेर-धार लेहु धीरकौं ।
 प्रहार सैन आस-पास जास देख लीजीयै ।
 जितैक इंद्रजीत पैख राख रीन^६ खीजीयै ॥२४२२
 बभीखनं बिसेस बाँन^{१०} जाँन लच्छनं जही ।
 टंकार चाप वाँन तान लार सैन की लही ।
 घही सु बंदरावली रुकाय फौज रोक में ।
 लगाय मार लच्छनं भराय चाप भोक में ॥२४२३
 सुनंत इंद्रजीत सोर घोर मार घात कौं ।
 ऊठ्यौ सु रीस छाय अंग पेखनं प्रपात कौं ।

१ तीक्ष्ण । २ देखकर । ३ हाथ । ४ बाण । ५ रक्त । ६ छिपा । ७ देवी-
 स्थान । ८ सेना । ९ रण, युद्ध । १० वाणी ।

बिलोक फौज बंदरी समंदरी हिलोर सी ।
जिते-तितै जहाँ-जहाँ लगी सु अत्र लौर सी ॥२४२४
भुलाय होम भावना चलाय रथ्य पै चढ्यौ ।
भुजंग^२ भीम भेस कोन-भौन^३ तै ज्युही कढ्यौ ।
निहार नैन लछ्छन कहै सु बैन कोप कै ।
खरे रहे बिचार खेध जाय जंग जोप कै ॥२४२५
लुकाय कै निलाज^४ आज जंत्र-मंत्र जाल में ।
करै जु ब्याज^५ काज कौं करुअ अंत-काल में ।
धरै न धीर धारना करै न बीर काँम कौं ।
बच्यौ चहै बसाय बैर रोक जुद्ध राम कौं ॥२४२६
बिलोक मोहि खेत बीच सम्मुहान सालुरै ।
धिकार तोहि धर्म कौं कुकर्म होम क्युं करै ।
सुनी सु मेघनाद श्रान बात राम भ्रात की ।
पत्रव्य^६ देख पास कौं प्रकोप कोन पातकी ॥२४२७
कह्यौ कका करचौ कहा ऊलंघ बंस श्रामना ।
मित्यौ सु जाय सत्रु माहि काज-राज काँमना ।
भतीज पुत्र भाव मैम रावनै गही मती ।
दुराध ग्रह भेद देत पाय लोभ प्रकृती ॥२४२८
लिबाय संग लछ्छन बिगार दीन बात कौं ।
रुलाय जात राखसो घुलाय बैर घात कौं ।
करार बोल कौं कहै जती ईहै जुरचौ-जुरचौ ।
सहेत भ्रात साँकरै मित्यौ बच्यौ मरचौ-मरचौ ॥२४२९
परंतु तू करंत पाप काँम ये अहो कका ।
मिलाय देत मीच में धँधुन चाप दे धका ।
बभीखन भतीज भेट बुल्ल्यौ बराबरी ।
पिता तिहार पातकी कहै न क्यौं कराकरी ॥२४३०
अधर्म कौं ऊपाय तीय पार की सीया तिनै ।
बसाय बीच बाग में संकष्ट दे सनै-सनै ।

विदेह-जाय^१ तीक्ष्णता स्की सु सत्य राह में ।
 कही सु दैन कारनै सबंधु कौ सलाह में ॥२४३१
 मिटाय कै मृजाद भान भंग कीन मोहि कौ ।
 ऊराहना^२ कहंत आज तोलना^३ हितोहि कौ ।
 संतीगुनी सुभाव मोहि तात तो तमोगुनी ।
 ईहै विरोध आदसौं सही ऊदंत कौ सुनी ॥२४३२
 पिता धरोज पुत्र कौ कही न जाय कायरे^४ ।
 सुधार रामचंद्र संध नैक हान नाहि रे ।
 कलंक मोहि नाहि कोय लोभ नाहि लंक कौ ।
 बिनास कीन बंस कौ बिकार बंधु बंक कौ ॥२४३३
 धरोज सत्य धर्म कौ सदा हम सुभाव सौं ।
 धरोज राम धारना भयो सरंज भाव सौं ।
 खिसाय ईंद्रजीत खोज बात पे बभीखनं ।
 चढाय चाप कौ चछोह लाग कीन लछ्छनं ॥२४३४
 जहाँ सु अंजनेय जान लेय पीठ लछ्छनं ।
 अरे सु संभुहां अभंग बीरता विचछ्छनं ।
 बिलोक बज्रकंकट^५ करूर वारता कही ।
 नजीक मेघनाद कौ निहार कै टरै नही ॥२४३५
 पिराय नागपास सौं जराय पूछ ज्वाल में ।
 चढाय पीठ लछ्छनं चलंत बक्र चाल में ।
 सबंधु लेय सांकरै गिराय खेत गाज्जयौ ।
 जई सु ईंद्रजीत सौं संग्राम आय समझ्यौ ॥२४३६
 कनिष्ठ राम कोपकै करै कहा लरै कही ।
 जुरै न जेष्ट जुद्ध में निसंक में डरौ नही ।
 जितेक ईंद्रजीत नै कठोर बोल के कहे ।
 विचार लछ्छनं विवेक करूर बात ना कहे ॥२४३७
 कनिष्ठ राम कोप कै वदे सु मिष्ट बात कौ ।
 कहंत आप कीरती हलाय द्यौ न हात कौ ।

१ जानकी ।

२ उलाहना, उपालम्भ ।

३ ठोलना, व्यंगवाक्य ।

४ क्यों ।

५ हनुमान् ।

कठोर बोल के कहैं जई न होय जुद्ध कौ ।
 वृथा कथा बिचारना बिगार देत बुद्ध कौ ॥२४३८
 लगे सु बोल लछ्छन अंगार जेम आगकै ।
 प्रहार बाँन पाँन सौं जटीस^१ रीस जागकै ।
 कनिष्ठ-राम^२ काय बायन^३ दले बचायकै ।
 दिखाय दाव दूर पै रहे खरे रूपाय कैं ॥२४३९
 कनिष्ठ-राम कोप मेघनाद कौं मिलाय कैं ।
 दये सु पांच बाँन देख हीय पै हलाय कैं ।
 जरे सु तन-किर्न^४ जेम पनं स्वर्न पूरता ।
 धरी धरोज धारना संभाय अंग सूरता ॥२४४०
 तहाँ कलंब तीन ताक लछ्छन लगाय कैं ।
 खरौ भयो बिचाल खेत रथ्य पै रूपाय कैं ।
 कनिष्ठराम ज्यूं कुपे जुपे सु ईद्रंजीत ज्यूं ।
 रुपे मनौ मृधंद्र रार अंग सौं अभीत ज्यूं ॥२४४१
 सँमान मेघ सालुरे बढ़ाय धार बाँन सौं ।
 ऊभेल एक-एक पै प्रहार देत पाँन सौं ।
 कनिष्ठराम सिष्टकौं मिलाय बाँन मुक्क्यौ ।
 जवयौ^५ सु ईद्रंजीत धून सीस रीस धुक्क्यौ ॥२४४२
 विवर्न होय बक्र तुंड^६ धूज अंग धेख सौं ।
 सलीम आय सम्मुहा भुजंग काल भेस सौं ।
 घुलाय रीस घूमक ऊधार लाल आँख ज्यूं ।
 दिखायकैं डरावनी प्रसून केल पाँख ज्यूं ॥२४४३
 लख्यौ न मोहि लछ्छना संग्राम बीच सबरी^७ ।
 गन्धौ न नैक गौर बंक रुर जात कर्बरी^८ ।
 चलाय आप चौक मै मिलाय बाँन मारना ।
 खरे भये रही खरे धरोज राख धारना ॥२४४४
 भिजाय कैं क्रतत-भौन^९ फेर पीठ फेरहैं ।
 चढ्यौ चछोह तोह छोह हीय दीठ हेरहैं ।

१ महादेव । २ राम से छोटे, लक्ष्मण । ३ वायुवाण । ४ तरणि किरण = सूर्य-
 किरण । ५ विकल हो गया । ६ मुख । ७ रात्रि । ८ राक्षस । ९ धमलोक ।

बढ़ाय बात बेर-बेर बोल कै बरावरी ।
 बहाय सात बाँन भेट लछ्छनं भराभरी ॥२४४५
 सिलाय सिष्टु मारुती निकार तीर नावकं^१ ।
 दये सु पंच-दून^२ ते प्रकास जेम पावकं^३ ।
 बभीखनं बिसेस बाँन सौ दये बकार कं ।
 परे नजीक आसपास लाग कै लिगार कं ॥२४४६
 कनिष्ट राम कोप कै जबाब ए कहे जही ।
 जनाह जेम बाँन तुछ्छु सूर-मान दे सही ।
 बिलोक मोहि बाँन वेग सीख लेहु सूरता ।
 कहै कुबोल नाहि कौय^४ धर्म नाहि धूरता^५ ॥२४४७
 ईतीक बात ऊज्वरी प्रकंड देय पिंड कं ।
 सनाह तोर दीन संग अंग सौं ऊछंड कं ।
 गिरघौ रगत गात सौं दकूल भीज देह के ।
 समान प्रात सूर कै लखाय लाग लेय कै ॥२४४८
 तजे कलंब ताक-ताक लछ्छनं लगाय कै ।
 बरंम्म तोर वेग सौं चरंम्म^६ लौ चुभाय कै ।
 अनीन के मुखी^७ ऊभै-ऊभै भिरे ऊछाह सौं ।
 बिजै हितू ऊभै बली चले सु चित्त-चाह सौं ॥२४४९
 ऊभै भुजंग आकती ऊभै जनून आनकं ।
 मिले ऊभै सदोनमत्त व्याल^८ हूँ बिघाँन कै ।
 ऊभै चलाक आच के ऊभै कजाक अग के ।
 ऊभै कंठीर^९ ज्यूं अरे रगे सु बीर रंग के २४५०
 ऊभै कलंब औसरे^{१०} भरी तरी भुकाय कै ।
 ऊभै भरोस आपने रहे खरे रुकाय कै ।
 ऊभै करंत वार कंऊभैत कै ईकै-ईकै ।
 ऊभै हटै न एक सौं थिराय^{११} ना जकै-थकै ॥२४५१
 जितै हू मेघनाद जाय मारुती तितै मिलै ।
 चलाय मेघनाद चोट देख लछ्छनं दलै ।

१ छोटे तीर । २ दश । ३ अग्नि । ४ किसी को । ५ घूर्त्ता । ६ चमड़ी
 ७ मुखिया । ८ मस्त हाथी । ९ सिंह । १० अवसर पाकर । ११ ठहरते ।

ऊड़े चहै अकास प्रेर बाज सूत पैद ज्युं ।
 लगाय अजनेय लात गेर देत गेंद ज्युं ॥२४५२
 रचंत मेघनाद रार लछ्छनं ज्युंही लरै ।
 ईलात^१ चक्र आक्रती फलंग मारुती फिरै ।
 ऊभन जुद्ध आहुटे फिरे न पीठ फेर कै ।
 लरे अरे लगालगी घुमंड घेर-घेर कै ॥२४५३
 ऊते^२ ज बंदरावली इते ज राखसी-अनी ।
 तमासबीन ज्युं तकं घिराय सांकरै^३ घनी ।
 बिलोकु कै बभीखनं बदे^४ सु बीच बाहनी ।
 चमूं मिलाय निश्ररी ढंढोर मार ढाहनी ॥२४५४
 करे बिदा अनेक कीस आप चाप आच लै ।
 तजे अनेक ताक कै निखंग सौं तराच लै ।
 भजाय दीन भीरु कौं लगाय बाँन लाग कै ।
 अनेक कीस ऊपटे अंगार जेम आग कै ॥२४५५
 जने-जने जितै-तितै रूपे अभंग रार कौं ।
 निहार निस्चरावली मड़ी ऊमंग मार कौं ।
 निसंक मेघनाद कौं कका कहर कोप कै ।
 कहे सवाल कोप कै रुकाय पाय रोप कै ॥२४५६
 भतीज मोहि मंदभाग आज लछ्छनं अरघौ ।
 बचै नहीं विचार लेहु मौत के बिना सरघौ ।
 सुभट्ट सैन-सैनपं कटे कटे सर्व कटे ।
 इहै निखोध^५ ऊबरघौ लरंत पै लटे-लटे ॥२४५७
 बिडार देहु बाहनी नजीक मेघनाद की ।
 बिखाद जाय बाट कौं बुन्याद येह बाद^६ की ।
 बभीखनं सुनत बात जांमवाँन जान कै ।
 हकार रिच्छ हल्लयो अगोट लंक आँन कै ॥२४५८
 रहे सु कीस राह रोक घाट-घाट घेर कै ।
 जमात जातघाँनु की फसाय बीच फेर कै ।

लगे लराक^१ लार लै कजाक कीस क्रुद्ध मै ।
 हड्ड^२ बीर हाक की जराक मार जुद्ध में ॥२४५६
 तराक ताक-ताक कै फिराक देत फेट कै ।
 धराक धास धूम की भराक^३ सेनु भेट कै ।
 अरे अराक आय कै सराक छोर संक कौं ।
 लगा लगी न जाँन लीन लाख कोस लंक कौं ॥२४६०
 मिलाय रिछछ मालवाँन राखसी अनी रुकी ।
 रूपे करुर कीस रार सार कै धकामुकी ।
 बिसाल सैल बृद्ध छ की भुकी जहाँ भराभरी ।
 लसीम ईन्द्रजीत-सैन बाहुरी^४ बराबरी ॥२४६१
 लंभार डाँग सर्वला ईभार जेम आहुरे ।
 निकुंभला-निकेत^५ सौं बिसेख बीर बाहुरे ।
 प्रलंब हाथ प्रेर कै कलंब की भरी करी ।
 मनौ घुमंड मेघमाल आय धार औसरी ॥२४६२
 भये सु कीस भालह बिहाल^६ जाहि बेरमें ।
 लखे सु नैन लछछन ईखू^७ धिरे अंधेर में ।
 मलंग पाय मंड कै जुरे सु ईन्द्रजीत सौं ।
 जमीत पै जमे जहाँ रचाय रार रीत सौं ॥२४६३
 सहाय जाँमवाँन संग मारुती चले मिले ।
 बभीखन जुते बिसेस राखसी चमू रले ।
 संभाय साँग सर्वला त्रसूल डाँग तोल कै ।
 मड़ी प्रकंड डंड मार वाक बोल-बोल कै ॥२४६४
 खनंक बाढ खग की भनंक बर्म^८ भेजनी ।
 दिखावनं लगे दहूँ खिलार^९ बीर खेलनी ।
 जितै-तितै जुरे जिते मतै-मतै मिलाय कै ।
 प्रहार येक-येक पै जुहार लेत जायकै ॥२४६५
 जुरे सु अघ-धुंध जुद्ध आस छोर अंग की ।
 लराक लुथ्य-बथ्य लाग आस जै उमंग की ।

१ योद्धा । २ तत्काल । ३ वापिस लौटी । ४ देवी का मंदिर । ५ विह्वल ।

६ एगु = रागा । ७ चरित्र । ८ खिलाड़ी ।

भिरे सु कीस भालह कराल क्रुद्ध कर्बुरा^१ ।
 गुसैल बीर गर्गराय भीक देत भर्भेरा ॥२४६६
 ज्युहीं मिलाय ईन्द्रजीत लछ्छन ऊतै लरै ।
 परे प्रहार कंकपत्र^३ अत्र जेम ऊल्लरै ।
 ऊठे अकास ज्वाल-आग भाले भाट भेट की ।
 चमक बीज ज्युं छुटे ज्वला कला-क जेठ की ॥२४६७
 गिरत बाँन गन^३ सौं अरुभ क ईतै-ऊतै ।
 भराय भूम भार सौं प्रहार के प्रतै-प्रतै ।
 जनाय सिष्ट जोरनी न छोरनी न चाप सौं ।
 चिहूँट जेह चाढनी न काढनी कलाप सौं ॥२४६८
 भनक पंख अंग की सनक बाँन सोक की ।
 तमक ज्युं तुंजीह^४ की घमक बाज धोक की ।
 ईला^५ रु आसमान दीठ येक रूप देखीये
 चलत दीप्त चाल बाँन-बाँन पै बिसेखीये ॥२४६९
 लखाय मेघनाद नाँहि लछ्छन लखाय^६ ना ।
 करुर अंधकार में दिनेसह दिखाय ना ।
 मचाय माँस मेदनी^७ रचाय श्रोन रंग सौं ।
 गचाय गूद गार आसरान^७ कीस अंग सौं ॥२४७०
 कनिष्ठराम कोप मेघनाद पै करचौ मती ।
 मृगिद खीज क मनौ चलयो गजिद्र पै छती ।
 ज्युहीं मिलाय जाय बाँन भोक रथ्य बाज^८ की ।
 संघार कीन स्वारथी गरुर नाद गाज क ॥२४७१
 निहार मेघनाद रथ्य स्वारथी गिरचौ रसा^९ ।
 बंधाय हाथ बाग दूर देखनौ दिसा-दिसा ।
 चलाय बाँन चाल-बाज चाल के विधान सौं ।
 लगाय बाँन लछ्छन अटचौ सु आसमान सौं ॥२४७२
 लखे जु नैन लछ्छन ऊभैह काँम येक सौं ।
 कनिष्ठराम लाग काँम बीरता विवेक सौं ।

१ राक्षस । २ बाण । ३ गगन । ४ प्रत्यंचा । ५-६ पृथ्वी । ७ राक्षस ।
 ८ घोड़ा । ९ पृथ्वी ।

जबे सु बाग तान जात ईन्द्रजीत आच^१ सौं ।
 मिलाय कं महारथी वकार लेत वाच सौं ॥२४७३
 चलाय बाँन कौं चलै घलै तुरंग घात कौं ।
 चलाक वीर लछ्छनं हलाय येम हाथ कौं ।
 जहाँ सु ईन्द्रजीतहू बिहाल होय विफुरची ।
 कितीक बेर क्रुद्ध सौं लगाय पैज कौं लरची ॥२४७४
 जक्यौ कछ्छूक ईन्द्रजीत जान जुथ्य-जुथ्यपं ।
 लगाय मार घेर लीन कूद कै घनैदपं^३ ।
 चपेट कै तुरंग च्यार मार क मलामली ।
 कुडंग रथ्य कौं करची चले नपै चला-चली ॥२४७५
 चलयौ सु मेघनाद छिप्र^३ लंक रथ्य लैन कौं ।
 परी न जान आसपास सर्व कीस सैन कौं ।
 सुबर्न कौ जटची सतंग^४ नूत^५ सूत^६ है नये ।
 अरोह फेर आयगौ जुरंत कीस के जये ॥२४७६
 सजोर घोर होय सोर आठ ओर येक सौं ।
 मंदोदरी-तनै मढची भुजंग काल भेख सौं ।
 खरे लखे बभीखनं लगाय बाँन लछ्छनं ।
 जितैक देख जुथ्यपं बढ्यौ अगै विचछ्छनं ॥२४७७
 अनेक कंकपत्र आच ऐच चाप ऊभले ।
 बनाय लछ्छ बदरा मिले जही दले मले ।
 ढबे न पाव ढाब कै सताब भाग कै सबै ।
 लुकाय पीठ लछ्छनं जके कछ्छू रुके जबै ॥२४७८
 कनिष्ठरांस कीस कौं लये सु पीठ लार कै ।
 अगै-अगै बढे अनी घनंक बाँन धार कै ।
 निहार मेघनाद कौं प्रहार दीन पूर कै ।
 बढाय दीन बाँन धाम-धूम सौं धरूर कै ॥२४७९
 कलंब^७ चाप काढ कै दये गिराय दूर कौं ।
 घनंक और धार कै गह्यौ महाँ गरूर कौं ।

दयो सु काट दूसरौ लगाय बाँन लछ्छनं ।
 दये सु पाँच बाँन देह ताक-ताक तिछ्छन ॥२४८०
 बरंम^१ तूट बोखरचो चरंम^२ हाड़ चूर कै ।
 निसार श्रोन नीसरचौ प्रवाह पूर-पूर कै ।
 तहाँ धनंक तीसरौ लयो सु मेघनाद नै ।
 लगा-लगीय लछ्छनं बह्यौ समूह बादनै ॥२४८१
 अनेक बाँन ऊभले कनिष्टराँस काय कौं ।
 लई न श्रोत लौट कं प्रचंड मड पाय कौं ।
 सहे कलंब साल कौं बहे न बीर बिम्मुहा^३ ।
 जुटे सु ईन्द्रजीत सौं संभार चाप संम्मुहा ॥२४८२
 सुभट्ट लीन सौं करै जितेक इन्द्रजीत कै ।
 प्रलंब के कलंब प्रेर चोट दीन चीत कै ।
 प्रहार सैन आसपास मेघनाद मेल कै ।
 अनेक बाँन ऊभले भुकाय चाप भेल कै ॥२४८३
 नजीक^४ मेघनाद कौं बिलोक बाँन बाहि कै ।
 ईभार^५ ज्यूँ अग्राज कै खरे भये खिजाय कै ।
 असक्ति होय ईंद्रजीत फेर ऊठ बिफुरचौ ।
 प्रहार कीन कंकपत्र लछ्छनं घनी लरचौ ॥२४८४
 लगाय बाँन लछ्छनं संघार लीन स्वारथी ।
 तुरंग भाग रथ्य तान मोर कै महाँरथी ।
 दये कलंब पंचदून बंधु राँम बर्म पै ।
 करी भिरी न काट-काट छेद कीन चर्म पै ॥२४८५
 तुरंत बाँन तीन सीस मार कं सरासरी ।
 दिखाय दीन दौर-दौर बीरता बराबरी ।
 जितैक राँमभ्रात जोष कोष कै क्रंतत^६ ज्यूँ ।
 तजे सु वक्र तुंड^७ पै दिहाय व्याल-दंत^८ ज्यूँ ॥२४८६
 ऊभैहू बीर येक से लरे-भिरे लगालगी ।
 कराल भाल क्रुद्ध की जगी हीयै जगाजगी ।

१ बख्तर । २ चर्म = चमड़ी । ३ विमुख । ४ पास । ५ इभारि = सिंह ।
 ६ यमराज । ७ मुख । ८ सर्पदन्त ।

लरंत देख लछ्छनं बभीखनं परचौ विचा ।
 भतीज कौ वकार कै चलाय कै अरचौ चचा ॥२४८७
 भतीज औ चचा भिरे कहर पूर क्रुद्ध में ।
 रिसाय^१ कै खरे रहे जसाय पाय जुद्ध में ।
 बभीखनं विलोक तीन बाँन दै तरा-तरी ।
 जुठ्यौ सु जाय जुथपं सँभार कै सरासरी ॥२४८८
 बभीखनं अगौ बह्यौ गहै गदा गहर सौं ।
 तुरंग अंग ताक कै दई मिलाय दूर सौं ।
 मुरे तुरंग मार सौं गदा प्रहार सौं गिरे ।
 निहार मेघनादहू अभीत रथ्य ऊतरे ॥२४८९
 गहाय सक्ति गेर नै चलाय ऊपरै चचा ।
 बलाय केव धूरसी विलोक लछ्छनं विचा^२ ।
 अघुक बाँन दै अनेक तोर कीन दूक के ।
 गिराय भूम गोम सौं ऊबार जाग ऊक के ॥२४९०
 चचा लये चुने-चुने दये भतीज देख कै ।
 जुरे हीयै कलंब^३ जाय छेद कीन छेक कै ।
 रिसाय पुत्र-राँवनं कतंत-बाँन^४ काढ़ कै ।
 बभीखनं दयौ वकार चाप बीच चाढ़ कै ॥२४९१
 लख्यौ कलंब लछ्छनं कतंत-मंत्र कारनं ।
 कलब लै कुवेर कौ वहाय कीन वारनं^५ ।
 अरुभ बाँन ऊपरा धरा परे धकाधकी ।
 जहाँ सु इंद्रजोत कै परी हीयै सकापकी^६ ॥२४९२
 अराध रुद्र-अख मेघनाद बाँन मुक्यौ ।
 लख्यौ वलाय लछ्छनं भरंत द्रंग भुक्यौ ।
 निकार वारनाख^७ लेय लछ्छनं लगाय कै ।
 अरुभ कै गिरै ऊभं अये सुनष्ट भाय कै ॥२४९३
 ऊठाय अग्नि-अख कौ मंदोदरी-तनै मुक्यौ ।
 जहाँ सु सूरजाख जोर राँम वंधु नै लख्यौ ।

१ ओषधित होकर । २ बीच में । ३ बाण । ४ वम-अनिमंत्रित बाण । ५ रोकना
 ६ उषम-पुषत । ७ वरण-अस्त्र ।

जहाँ सु ईद्रजीत आसुराख पेल आच सौं ।
 महेश्वराख लछ्छनं जही हन्यौ सुजाच सौं ॥२४६४
 निसंक^१ बोर मेघनाद बंधु-रांम ज्युं बली ।
 रूपे सु पैज^२ रोप कै थपे अनी थली-थली ।
 जुरे सु जुद्ध जीवन^३ अदेव-देव आय कै ।
 मिलाय आसमान में विमान कौ बढाय कै ॥२४६५
 सुरिंद्रह मुनिद्र स्याहि रांमभ्रात संजुरे ।
 गिरीस देख गौरह असीस बाच ऊचरै ।
 बढाय आज^४ बीरता सधीरता संभाय कै ।
 तनीर काढ तिछ्छनं चुन्यौ कलब चाहि कै ॥२४६६
 बँधे सुबनं बंध संध-संध में समो-समा ।
 सुबनं बाज-संजुता अनूप-रूप ओपमा ।
 बिसैल ब्याल बेख ज्वाल-माल ज्युं जरांवनौ ।
 बियक्ष लक्ष बेध दीठ देख तै डरावनौ ॥२४६७
 चढाय चाप चाँप कै कलंब तांन कांन लौं ।
 निगर्न^५ कौ निछेद कै पीयौ सुपष्ट प्रांन लौं ।
 ऊढाय सीस ऊपरा गिराय दीन गात कौं ।
 लई सु जीत लछ्छनं^६ बिख्यात राख बात कौं ॥२४६८

दोहा

ईद्रजीत ईद्राख सौं, लछ्छन मारघौ लाग ।
 सुर मुनिद्र बरखे^७ सुमन, रांम लखन अनुराग ॥२४६९
 साल मिट्यौ सुरराज कौ, सब दिसपाल सहित ।
 भये खुसी कपि भालहू, खल बिडार रन-खेत ॥२५००
 सकल कीस लछ्छन सहित, डरे न आये देख ।
 बढ्यौ हरख रघुवीर कै, पाँनपे भ्रात परेख ॥२५०१
 खबर कही रन-खेत की, रांम बभीखन राज ।
 मोद पाय लछ्छन मिले, सुध ले कीस-समाज ॥२५०२

१ निःशंक । २ पग = पैर । ३ बेखने । ४ आज = बल, तेज । ५ गरदन ।

६ मू० प्र० लछ्छ । ७ वर्षा की ।

भज निकुंभला-भवन^१ सौ, राखस जाती रोय ।
 लंक गधे फल अजय लै, करत कूक सह कोय ॥२५०३
 सोच राँस कौ समट कै, गयी लंकपति ग्रेह ।
 हा-हा-रव^२ होवन लग्यौ, आठू दिसा अछेह ॥२५०४
 मंत्री पुरजन सब मिले, पहुचे राँवन पास ।
 मेघनाद सुन मरन कौ, अत चित भये ऊदास ॥२५०५
 पुरजन अरु मंत्री प्रतै, बोल्यौ राँवन बात ।
 भोर ग्रेह बिच में थली, ईह कीनौ ऊतपात ॥२५०६
 आज मँथली मार अब राँम करहुगौ रार^३ ।
 राँम देखत राँम कौ, आता भूँजहु भार ॥२५०७
 खल ऊठ्यौ लै खड़ग कौ, सीता करन संधार ।
 औरन बोल्यौ येक हु, देख क्रद्ध दरवार ॥२५०८
 महाँपारस मंत्री महाँ सतबादी रु सयान ।
 बोल्यौ नीत बिचार कै, प्रथम जोर जुग पाँन^४ ॥२५०९
 वेद भेद जानत बिबध, राजा राँवन राज ।
 कहनी ऊचत न आप कौ, अनुचित बाँनी आज ॥२५१०
 राँम लखन कौ मारनी, उचित बात है येहु ।
 आज चतुर्दसि तिथ अबै, लरनी हम लख लेहु ॥२५११
 काल अँमावस कौ करहु, प्रहरन काज प्रयान ।
 राँम लखन कौ हनहु रन, येह सिद्ध अबसान ॥२५१२

छंद त्रोटक

सीय-मारन-कारन रोख सज्यौ, महाँपारस बात सुनी मुरभयौ ।
 सीय-मारन बात तजी सब ही, जीय आग बलाय जगी जब ही ॥२५१३
 मरने सौ बचे केऊ वलीवमती^५, परचाय बुलायेऊ सैनपती ।
 जिन कौ दीय सासन^६ जोर जहीं, रनवास त्रिया हम रोय रही ॥२५१४
 सुसताय सबै समुभावहुगौ, जुध कौ करनै कल जावहुगौ ।
 जुध कौ करनै कपि साथ जती, प्रतनाजुत^७ जावहु सैनपती ॥२५१५

१ देवी के मंदिर । २ हाहाकार-शब्द । ३ युद्ध । ४ दोनों हाथ । ५ कायर ।
 ६ आज्ञा । ७ पृतनाजुत = सेना के साथ ।

सुन सासन लंकपती सबही, जुध काज तयार भये जबही ।
 समझै कँऊ लागेऊ सिंदन^१ कौं, गड़ डारन पीठ गयंदन कौं ॥२५१६
 पुन बाज पवीन मड़े पखरा^२, तन-त्राँन सभे भटहू तखरा ।
 श्रबला ग्रह अंधुस सालन की, कर कूंत लहे कर बालन की ॥२५१७
 सर चाप निखग सभे सगरै, दल संगर-खेत लई डगरै^३ ।
 बिडरावन^४ दुंदभी ढोल बजे, गजघंट ठनंकन नाद गजे ॥२५१८
 जुग चालेऊ सैनप-सैन जहीं, रथ-नेमोय सौं धर धूज रही ।
 कपि सैन सौं जाय मिले कल कौं, दल के पति हाक मिले दल कौं ॥२५१९
 जिन कूंत कता लीय जूभन कौं, सुत-राँवन बैर सखभन कौं ।
 तिन मार दई परघातन की, कढ ज्वाल हुतासन की कनकी^५ ॥२५२०
 केऊ वाँन तजे कररे-कररे, भर भाद्रव मेघ ज्युंही भररे ।
 त्रयसोरख श्री तरवारन की, कर भालन मार कुठारन की ॥२५२१
 कपि-सैन असंखन देख कुपे, रन कौं करनै सब आय रूपे ।
 सिखरी^६ गहि श्रंग^७ जुरे सिगरे, कररी पथराँन की मार करे ॥२५२२
 बहु बृछ्छन की कर कै बरसा, समिले कपि साथ जहाँ सरसा ।
 चढ खेत अरे समुहा चल कै, मनु देव-अदेव जुरे मिल कै ॥२५२३
 अत सोर भयौ बिव औरन सौं, हुररै मनु सिधु हिलोरन सौं ।
 चढ डंमर खेह^८ बितान छयौ, भुय^९ अंबर लौं ईक रूप भयौ ॥२५२४
 मिल बंदर राखस खेत मँही, जल ज्युं पय में बिलगाय जँही ।
 मंड मार ऊभै दल रार मची, गहरी रत^{१०} धारन गार गची ॥२५२५
 निकसी मिल नालन निभ्रभरनी, भय कातर कौं हीय में भरनी ।
 जुग सैन करारन रूप जही, कट कुंजर पंजर बाज कही ॥२५२६
 केऊ हाड़ भये किरका-किरका, धर छाय रही सोई धूसरका ।
 बिच जावत बार सिवार बहे, रचना रथ फेन दिखाय रहे ॥२५२७
 तिर चालेऊ पाव तुरंगन के, मिल बिस्वर ऊँट मतंगन के ।
 भख नक्र तथा अवहार ज्युहीं, तहाँ ढालन कछ्छप रूप त्युहीं ॥२५२८
 भुज जावत केक भुजंगम कै, सरसीरूह पानन संगम कै ।
 मिल जंबुक साद^{११} मृगादन कौ, बन टक्कर ककर बादन कौं ॥२५२९

१ स्यंदन = रथ । २ ऊपर डालने का कपड़ा । ३ मार्ग । ४ भयानक ।
 ५ चिनगारी । ६ पर्वत । ७ चोटी । ८ धूल = मिट्टी । ९ भूमि ।
 १० रक्त, खून । ११ शब्द । १२ कमल ।

चहकावत चिल्लन व्यौस चडै, श्रवली मनु ऊद्ध बकोट उडै ।
 भख आँसख^१ कारन भीर भई, जहाँ काक जुरे जल काक ज्युँही ॥२५३०
 भुय पै भयौ कर्दम भेजन कौ, केऊ बुक्कन मेल करेजन कौ ।
 तन कोनप^२ गिद्ध टटोरत है, लग चाँचन सौं चख लोरत है ॥२५३१
 केऊ पाँतन पाँत जुरी किलकै, मुकता जनु हंस चुगं मिलकै ।
 जहाँ जुगँन^३ भूत विताल जुरे, भरपूर प्रवासीय जेम भिरे ॥२५३२
 रन राँवन कै दल ऐम रच्यौ, सहि जाँनक^४ चातुरमास मच्यौ ।
 जहाँ कीस अँनी मिल रार जुरी, तन भीज गये रत धार तरी ॥२५३३
 जहाँ कूदन लागेऊ बीर जई, नटहू के बटा^५ जिम रीत नई ।
 धुज-डंड मरोरत फार धुजा, समिलै केऊ घोरन देत सजा ॥२५३४
 खल आयुध भेल खसोटत है, लग लातन कीतन^६ लोटत है ।
 केऊ भूम कै दाँतन सौं कररै, भुकभोर भुजा नख सौं भररै ॥२५३५
 कपि आँनन काटत क्राँनन कौ, पग तौरत केतक पाँनन कौ ।
 ईक राकस देखत सौं ऊररै, धक धून पहारन कौ धररै ॥२५३६
 कर बृछूछन मार प्रकंडन की, भुकभोरन भीरन भुंडन की ।
 कपिहू बरजोर रुपे कल^७ कौ, द्रढ मार दई खल के दल कौ ॥२५३७
 जुर राखसहू मिल जुद्ध जहाँ, तितरी-बितरी खल सैन तहाँ ।
 केऊ मारन लागेऊ कूत कती, श्रबला तिरसूल ग्रह सकती ॥२५३८
 केऊ बाँनन वार लगे करनै, दल कीसन भाल लगे दरनै ।
 जुर कीस गये सब राँम जितै, श्रवलोक ऊठे रबुवीर ईतै ॥२५३९
 लरनै रन लागेऊ चाप लीयै, क्रतहस्त^८ भयंकर रूप कोयै ।
 सरसाय जहाँ सर पै सर दै, भुक मेघ मनौ भर पै भर दै ॥२५४०
 दल राखस देख दसू दिस में, विच कीस अनी लख कै बस में ।
 जहाँ गंधर्व श्रख करी जुकती^९, ऊपजाय कै बीरकला ऊकती ॥२५४१
 कर रोष जवै तिहू मोख^{१०} करचौ, गन राखस ऊपर जाय गिरचौ ।
 खननाहट वज्रीय खगगन की, वननाहट चक्र नरगगन की ॥२५४२
 सननाहट वाँनन संगम की, भननाहट भीम भुजंगम की ।
 धननाहट धूम घघकन की, छननाहट आग चछूछकन की ॥२५४३

१ आमिय = मांस । २ नृतकों के शरीर । ३ योगिनी । ४ मानौ । ५ वेटा = नटपुत्र ।
 ६ कितने ही । ७ युद्ध । ८ निपुण । ९ युक्ति । १० छोड़ा, मुक्त किया ।

गननाहट मंडीय गोलन की, उमंडी बरखा मनु ओलन की ।
 तेऊ राखस जाय लगे तन में, बिलग्यौ मनु दाव^१ महाँ बन में ॥२५४४
 चकचूरन होय चलाचल में, प्रतना खल तूट परी पल में ।
 पंचदून सहस्र सतांग परे, गजहू नव दून हजार गिरे ॥२५४५
 चवदाहु हजार तुरग छुटे, दुई लाख पयादीय सैन दटे ।
 ईक गंधुवअख सौ सैन ईती, परचंड प्रहारीय श्रौधपती^२ ॥२५४६
 बल सौ रन राँम करचौ बहुरै^३, जिनकी गनती कहतै न जुरै ।
 घुमड़े रन राघव च्यार घरी^४, भयदायक दीसत भूस भरी ॥२५४७
 घट घायल घूमत साथ घनौ, मद छाक पीयै मतवारे मनौ ।
 ध्रुव तूट परे जिन के धर कौ, सोई मारहि मार करै सुर कौ ॥२५४८
 दसही दिस रुंड दिखावत है, धर^५ पै दस ही दिस धावत है ।
 तलफै केऊ अंग तुषार तुटे, फरराट करै मुख नाक फटे ॥२५४९
 खर ऊष्टर^६ विस्वर अंग खुले, दुपि^७ चक्कर खावत पाव डुले ।
 ऊरभे केऊ तांतन-श्रांतन कौ, दम लेत टिकाय कौ दांतन कौ ॥२५५०
 रथ केक^८ रथी बिन छूट रहे, बिन सूत तुरंगम जात बहे ।
 रन देख चलाकीय राघव की, जनु आंच लगी दल जाग्रव की ॥२५५१
 दव लागत ही बन देख दसा, सबही मृग भागत सिध सुसा ।
 खल भागेऊँ एम पुरी खिसकै, दल सैनप दौर दसा दिस कै ॥२५५२
 रघुबीर कौ जीत भई रन में, मुद भालन कोस भयौ मन में ।
 रिखी गंधुव देव लखे रचना, बिरदाय^९ प्रसंस कहे बचना ॥२५५३
 कपिराज सौ श्रीरघुबीर कही, सुनीयै जमुवाँनहू आद सही ।
 सिव जानत अख ईहै सकती, श्रवगाहन में हूँ करचौ ऊकती ॥२५५४
 सुन कै कपि होय प्रसंत सबै, जयैबाँन कौ बोलन लागे जबै ।
 ईत राघव के रन सौ ऊबरी, प्रतना^{१०} पहुँची कछु लंक पुरी ॥२५५५
 तन खड बिहंड भये तिनके, जीय की न-सँभार-रही जिन के ।
 लख कै पुरवासीय घाव लगे, सुत-मात पिता-तीय भ्रात सगे ॥२५५६
 घर लागेऊँ घावन धोवन कौ, रिन-खेत^{११} रहे जिन रोवन कौ ।
 घर^{१२} ही घर सोक बह्यौ घुलकै, जुध बात कहै मिलकै-जुलकै ॥२५५७

१ दावानि । २ राम । ३ फिर । ४ घड़ी । ५ घरा = पृथ्वी । ६ ऊँट ।
 ७ हाथी । ८ कई । ९ गुणगान । १० सेना । ११ रण ।

निरलाज अभागीन सूपनखा, खर दूखन कौं कीय जास खखा ।
 पुन आय मिली गढ लंकपती, कलहंतरता^१ कर कै कुमती ॥२५५८
 कलही नृपहू छल कौं करता, बन सौं सीय आंन पतीवरता ।
 करनै तीय जाहि चहै कपटी, हुव बृद्ध घनौ जिम बुद्धि हटी ॥२५५९
 सुत भ्रात मराय सगे सबही, अविवेक न त्यागत है अबही ।
 प्रतना सरगी मर सैनपती, भट भीर रही न कछू भरती ॥२५६०
 बिधवा तीय कोऊक वृध^२ बचे, केऊ घायल काहिल वीर कचे^३ ।
 जुध काज चहै सोऊ जावनहू, रन-खेत मरौ ईह रावनहू ॥२५६१
 चक्रचूर^४ भई जिनकी छतीयाँ, बिललाय करै बिधवा बतीयाँ ।
 परजा नर नार जिते पुर कं, कललाहट हाय रहे कर कै ॥२५६२

दोहा

पुरी लंक-निस दिन प्रतै, राग-रंग की रास^५ ।
 हाय-हाय होवन लगी, खल राँवन-ग्रह खास^६ ॥२५६३
 राँनी सुत-तीय राँवनौ, खल सुन रह्यौ खिसाय ।
 ऊँधी^७ सासा^८ लेत ऊर, राँवन भूप रिसाय ॥२५६४
 सचव महोदर अत सुघर, महाँ पारस भट मेल ।
 बिरुपाक्ष राखस बिकट, बोल्यौ लहि कै बेल ॥२५६५
 सैन करावहु तयार सब, बची लंकपुर बीच ।
 राम-लखन-जुत मार रन, कपि-इल-करहूँ कीच ॥२५६६

छंद वृद्धनाराच

सुन्यौ निदेस सालुरी निसंक निस्चरावली ।
 मिली गरुर मंड ग्रेह छंड कै गली-गली ।
 बिलोक वीर बाहनी क्रतंत जेम कोप कं ।
 वकार वीर बुल्लयो रिसाय पैर रोप कं ॥ २५६७

१ कलहप्रिया । २ वृद्ध । ३ कच्चे = अचूरे । ४ चूर-चूर । ५ लीला ।
 ६ स्वयं । ७ उल्टी । ८ श्वासा = सांस ।

जुगांत^१ मारतंड जेम चंड कंड^२ छंड कै ।
 चपेट रांमचंद्र मार लैहुँ जुद्ध मंड कै ।
 भतीज पुत्र भ्रात कै निकार बैर निश्चरा ।
 प्रजा प्रमोद पाय कं बसायहुँ बसुंधरा ॥२५६८
 घटा-समान घूम-घूम चाप बाँन छूटहै ।
 अकास भूम वारपार वृष्टि मंड बूठ है ।
 जितेक जर्न^३ लर्न^४ जाँन मर्न कीस मंडहुँ ।
 सुबर्न पर्न संजुत चछोह तीर छंडहुँ ॥२५६९
 बिपछ्छ रिछ्छ बाँनरा बिधाँन लछ्छ बेध कै ।
 श्रंगाल गिद्ध भछ्छ सोख रार तछ्छ खेध कै ।
 भरे परे धरा-मँही निसूँभ ह्वै निसाचरा ।
 रवंत^५ नार रोय कं विलाय सोक बिस्तरा ॥२५७०
 अँगोछ पौंच^६ ऊद्धरू अनेक आँख आँसुआ ।
 जितेक जुथ्य-जुथ्यपं जनाय कं जु-आजु-आ ।
 मिटाय सैन मर्कटो जटीस कौँ जुहारहुँ ।
 छक्यौँ सु छोह चाक सौँ धिक्यौँ सु धेक धारहुँ ॥२५७१
 मरोर बीस पाँन मुछ्छ^७ तास खड्ग तोल कै ।
 निहार दंडनायका^८ बकार बाँन बोल कै ।
 निदेस सैन निश्चरी सुनाय देहु साथ कौँ ।
 हलै हँमार हाजरी प्रचार कं प्रपात कौँ ॥२५७२
 सुनत सैनधिक्ख^९ सूर बीर संग संजुरे ।
 जहाँ तहाँ जिते तितै घुमंड सौँ भरे घिरे ।
 सतंग^{१०} कौँ सभाय कं तुरंग जोर तखररा ।
 भुक्काय कंध भूसरीन पीठ डार पखररा ॥२५७३
 बजाय कै अडंबरा^{११} चलयौँ सु बीर छोह कै ।
 प्रमत्त गत्त पौरसेय रथ्य कौँ अरोह कं ।
 अनेक ह्वै असूचका^{१२} दिखाय भीत-दायका ।
 गुंजार काक गिद्धनी मंजार भूरमायका^{१३} ॥२५७४

१ युगान्त = प्रलय । २ वारण । ३ वृक्ष । ४ लड़ना । ५ विलखती है ।

६ पोंछ कर । ७ मूछे । ८ सेनापति । ९ सेनाध्यक्ष । १० रथ । ११ जुभाऊ बाजे ।

१२ अपशकुन । १३ स्यार ।

पताक तूट पाँन^१ सौं तुरंगहू तरेर कै ।
 धसे वही वसुंधरा फसाय चक्र फेर कै ।
 परे सु अख-सस्त्र म्याँन वस्त्र मंगली ।
 ठये निकेत^२ ठौर-ठौर जंतु आय जंगली ॥२५७५
 अनेक नाहि आवरे प्रयाँन विघ्न पेल कै ।
 जक्यौ न चित्त ज्यौय कै धिदयौ ऊफाँन देख कै ।
 रथी अरोह रथ्य कौं समथ्य संग स्वारथी^३ ।
 अतीरथी^४ सधीर अंग मेल कै महारथी ॥२५७६
 धुजाँन डंड घोर भुंड केत यौम भूम कै ।
 गृहावहू नद्यत्र गेह चेह होत चूम कै ।
 बिराव^५ घोर बिथुर्यौ चढाव चक्र चाल सौं ।
 भृमाय कै वसुंधरा घुमाय घेर घाल सौं ॥२५७७
 कराल व्यालकाल^६-रूप मंद चाल मंडता ।
 समान सैल-माल सोह पिंड की प्रचंडता ।
 पवन औ हवहू^७ पीठ बैठ जुद्ध-वावरे ।
 बिरुद्ध काज बिप्फुरे अरोह कै ऊतावरे ॥२५७८
 अनेक अस्ववार अस्व तत्तरे अरोह कै ।
 पजाय जीन पखरा लगाँम डार लोह कै ।
 हड्ड कै पड्ड होय बर्मव्यूढ^८ बीरहू ।
 ऊडे सु बाग ऐच कै धरो न नंक धीरहू ॥२५७९
 पताल लौं प्रहार पाव धाव भोम धूज कै ।
 अमूक पीन औ हटे गहीर व्योम गूँज कै ।
 करूर नाद केहरी रवंत सैन-रक्षका^९ ।
 धिकी सु आग ध्वेख^{१०} की अंगार-रूप अक्षका^{११} ॥२५८०
 कठी न कीव हाक केक जाक रोख काय कै ।
 वढी रजी वसुंधरा चढी अयास^{१२} छाया कै ।
 प्रभा रुकी पतंग दीह धूंधरी दिखाय कै ।
 डिगाय पाय दिक्करी^{१३} खिसाय चक्र-खाय कै ॥२५८१

१ पवन । २ घर । ३ सारथि । ४ अतिरथी । ५ वैरभाव । ६ कालसर्प = यम ।
 ७ होवा । ८ वस्त्र युक्त । ९ सेनापति । १० द्वेष । ११ आँव । १२ आकाश ।
 १३ दिग्गज ।

हजारसीस^१ हाल कै फनाँल भार फल कै ।
 परे विचाल बंध पेल संध छूट सैल कै ।
 समुद्र-पाथ साथहू छिले मृजाद छोर कै ।
 ऊमंड आसपास कौं घुमंड सोर घोर कै ॥२५८२
 कहै कितेक बात कीस साथ कौं सँघारहौं ।
 जती ऊभै जुहार कै प्रचार पार पारहौं ।
 कहै कितेक भाल कीस बीर ना बराबरी ।
 मरोर मीज मारहौं भूपेट कै भराभरी ॥२५८३
 कहै कितेक क्रुद्ध सौ निहार जात निश्चरा ।
 जरुर भाग जाँहिगे चलाक कंतरा-चरा^२ ।
 अधीस लंक ऊच्चरचौ बकार जाहि बेर में ।
 वच न सैन बंदरी ऊजासहू अँधेर में ॥२५८४
 सँभार होय सावधान तान चाँप तत्परा ।
 दिखाय हाथ मोद देहु कीस साथ कर्बुरा^३ ।
 ऊभै जती अभीत आज मारहूँ सलामली ।
 संमीक^४ रोक स्वास भीक वान दे भलाभली । २५८५
 ईतैहू सेन आसरी ऊमंड श्रीध-ईस पै ।
 अनीक श्रीध-ईसहू धकाय लंकधीस पै ।
 ठयो सु ठौर-ठौर पै मिलाप आप मेल सौं ।
 पखान^५ वृच्छ ह्वै प्रहार छूट वान चाप सौं ॥२५८६
 बिजे विराव बिष्पुत्रचौ ईतैहू श्रीध-ईद्र^६ कौ ।
 अराव ज्यूं बिजे ऊतै रचाय राकसिद्र कौ ।
 महान घोर मार मंड जोर कौं जमाय कै ।
 प्रहार पै प्रहार होत घाय कौं घुमाय कै ॥२५८७
 मुखा ऊचार मारमार रार पाव रोप कै ।
 अनंत^७ बीर आहुरे क्रतंत-रूप कोप कै ।
 कपी सराहि कर्बुरा ऊभै करै ऊछाह सौं ।
 अटै सु एक एक सौं दटै न द्वेष दाह सौं ॥२५८८

१ शेषनाग । २ कान्तारचर = वन में विचरण करने वाले, वानर । ३ राक्षस ।

४ सम्यक् = अच्छी तरह से, निरन्तर । ५ पाषाण । ६ राम । ७ लक्ष्मण ।

पछार मार पीस-पीस काट सीस कंधरा ।
 करचौ दुरूह मार कीच बीच में वसुंधरा ।
 कपाल^१ गाल भाल कूख^२ फोर-तोर फेर कै ।
 तरास अंत तंत^३ कौ खसोट दंत खेर कै ॥२५८६
 ककाल कालखंज^४ केक बुक्क गुल्म विखरै ।
 फटे कलोम^५ फिफरा निसार फेन निकरै ।
 कराल नाद केहरी रबंत भाल रोख सौं ।
 अटे कपी ऊमंड कै थटे सु थोक-थोक सौं ॥२५९०
 अमेठ अंग आसरा^६ भपेट भाट भेर कौं ।
 लपेट बाज लेत ज्याँ चपेट चाटकेर^७ कौं ।
 बिहाल सैन बेख कै लंकेस ध्वेस लाय कै ।
 अरचौ समीक^८ सैन आय बाहुरचौ बलाय कै ॥२५९१
 करी भरी कलंब की घटा-समान धूम कै ।
 रुकाय बंदरावली लगी ससीम लूम कै ।
 प्रहार कीन प्रस्तरा कराल का प्रकंड की ।
 गनै कहा पहार-गात दिघघ मार दंड की ॥२५९२
 बिसेस बीसहाथ बीच पंच दून चापलै ।
 रहंस पंचदून रोप काढ कै कलाप कै ।
 अरोह बाँन - आसन^९ चछोह ताँन छूटनौ ।
 लजाय मेघ - लौरहू बढ़ाय बूँद बूँठनौ ॥२५९३
 जई सु जंग जोर सौं भिरंत कीस भाल सौं ।
 घुलाय रीस^{१०} घेर में भुलाय काल भाल सौं ।
 समूह राँमचंद्र सैन मेघमाल ज्यूँ मिल्यौ ।
 ऊमंड लंकईसहू प्रचंड पौन ह्वै पिल्यौ ॥२५९४
 प्रहार कंकपत्र कौं लहै न कीस लाग कौं ।
 सहै न अंग सल्लभा^{११} असाध दीप्त आग कौं ।
 दुँआर धुंधकार देख सैल और सीव लै ।
 मदोनमत्तहू मतंग जात भाग जीव लै ॥२५९५

१ सिर । २ पेट । ३ अंतड़ी । ४ कलेजा । ५ तिल्ली । ६
 ७ चिड़िया । ८ समर = युद्ध । ९ धनुष । १० क्रोध । ११ शलभ = पतङ्ग ।

परी गृहीत^१ आसपास आस सौं तपाय कै ।
 उसास लेय सास आस^२ घाव सौं अघाय कै ।
 भजाय सैन कीस भाल लंकधीस लाग कै ।
 ससीम रामचंद्र सौं पहुँच रीस पाग कै ॥२५६६
 मुर्घीव जू सुखैन कौं मुकाम सौंप मोरचा ।
 रुकाय लंकराय कौं बलाय काल कौं बचा ।
 बिसाल हाथ वृद्ध लै कराल काल ज्याँ कुपे ।
 अनेक कीस आस पास रोष रंग ह्वै रूपे ॥२५६७
 दई सु मार दंड की प्रचंड सैल लै पिले ।
 रिसाय कीसराय^३ कं चमू नदीस ज्युं छिले ।
 करूर नाद केहरी हरूर ह्वै हिलोर की ।
 रुकाय आसरावली^४ भपेट लाग भौर की ॥२५६८
 प्रकंड ले अरीन पिंड दंड कीस यूँ दहै ।
 सिफा^५ ऊखार साल पै बयार चंड ज्युं बहै ।
 अरीन सीस ऊपरा परी भरि परवान की ।
 गरार गैत^६ सौं गिरै पतंग हान प्रांत की ॥२५६९
 बिखंड ह्वै विसैस बीर पिंड पार पाथरा ।
 मनीक ईंद्रबजू मार सैल कीन साथरा ।
 अभंग कीस-ईस अंग जोर जंग ह्वै जई ।
 भजाय जातुधान भीर लार लाग कै लई ॥२६००
 बिरूप-अक्ष बीर पक्ष लंकधीस पाय कै ।
 सतंग^७ छोर संग कौं मतंग कौं मगाय कै ।
 अरोह कै चछोह आप चाप कौं चढाय कै ।
 सुनाय नाम सालुरघौं विरोध कौं बढाय कै ॥२६०१
 निघोक^८ कीन सिघनाद देख भीतदायका ।
 समेत सैन संम्मुहा निहार कीस नायका ।

१. भंगदड़ । २ आशु = शीघ्र, तत्काल । ३ वातरराज = सुग्रीव । ४. असुरावली =
 राक्षसगण । ५ शिफा = जड़ । ६ गगन । ७ रथा । ८ निघोष ।

करी भरी कलंब^१ कोप रोप पाव रार में ।
 प्रमोद सौं विनोद पाय वीर जाहि वार में ॥२६०२
 मिलाय पाय मंडकै ऊमंड आसरावली ।
 घुमंड घूम घेर में ऊछकै अतावली ।
 सहे सुकंठ^२ दानसाल ज्वाल क्रुद्ध जागकै ।
 निघोक कीन सिघनाद लार लाग लागकै ॥२६०३
 बिसाल हाथ वृच्छ लं ससीम जाय सिधुरा^३ ।
 कपोल पै प्रहार कीन कर्न-मूल कंधरा ।
 धुक्थौ सु सीस धूनकै रुकाय पाव रोपकै ।
 लख्यौ विरूपलोचना^४ जदयी गयंद जोपकै ॥२६०४
 अलंग पीठ अतरचौ मलंग मार मेदनी^५ ।
 गहाय हाथ चर्म^६ गाढ चंद्रहास^७-छेदनी ।
 बकारकै सुग्रीव वीर चाहि जुद्ध कौं चलयौ ।
 सुग्रीवजू सिला संभार घाव ताहि पै घलयौ ॥२६०५
 बचाय चोट बीरबेस कूदकै कपीस की ।
 कपीस पै प्रहार कीन राच आंच रीस की ।
 महांबलिष्ट पाय मोह छोह ह्वै छिनेक में ।
 मंडी सु मार मुष्टका दुरंत^८ छाये द्वेष कै ॥२६०६
 हीयै प्रहार सौं हठ्यौ तिन तैक पाव निश्चरा ।
 क्रपांन भार क्रुद्ध ह्वै भिरचौ महाभयंकरा ।
 कट्यौ सुग्रीव बर्म कौं गिरचौ बिल्लूट^९ गात कौं ।
 पछार भूम पार कै लगाय मार लात कौं ॥२६०७
 कपीस ऊठ होय क्रुद्ध जूट जुद्ध जोर सौं ।
 समान बजू सौं धकै घुमंड सोर घोर सौं ।
 प्रहार लात कीन पै बचाय चोट कबुरा ।
 हनी सु मुष्टका हीयै दबाय दौर दबरा ॥२६०८

१ वाण । २ सुग्रीव । ३ हाथी । ४ विरूपाक्ष । ५ पृन्वी । ६ डाल ।
 ७ तलवार । ८ दुष्ट, अतिकठोर । ९ अलग होकर । १० राक्षस ।

खिसाय कीसनाथ खोज लात की ललाट में ।
 प्रकोप कीन प्रेर पाव घेर बज्र घाट में ।
 परचौ धरा पसार पाव नैन कौं निकार कै ।
 कढ्यौ प्रवाह माँसकारि^१ फेफ नाक फार कै ॥२६०६
 बिरूप-अक्ष ह्वै बिरूप फेन^२ आस फँल कै ।
 दिखात सो डरावनौ सभान अग सैल कै ।
 रूकाय कीस पांव रोप जाहि बीर जोवनै ।
 निहार सैन निश्चरी रही सु लाग रोवनै ॥२६१०
 बिजै अराव बिथ्युरचौ निसंक कीस नाथ कौ ।
 ससंक हाय सब्द हौय सौहि लंक साथ कौ ।
 कपोस औघईस कौं प्रमोद दै प्रभाव कौं ।
 ससोक लंकधीश कौं ऊपाय जै अभाव कौं ॥२६११

दोहा

कदिपति मारचौ क्रुद्ध कर, बिरूपाक्ष बरबीर ।
 बिलखत निसचर सोक बस, ऊर जस खोय अधीर ॥२६१२
 जिह अवसर घहरात जुर, सोर करत बिव^३ सैन ।
 ऊभै ऊदध माँनहु अथग, लेग हिलोरन लैन ॥२६१३
 बिरूपाक्ष कौं सोक बपु, दाहत जेम निदाघ^४ ।
 हौय दसकंधर ह्वैगयो, तैसै सुसक तड़ाग^५ ॥२६१४

छंद त्रोटक

अत सोक पुलस्त^६ बढ्यौ ऊरकौं, दरसाय कै बोल महोदर कौं ।
 कपिराज ईहै मम सैन कटी, अह जाँनीयै रीत भई ऊलटी ॥२६१५
 जय आस तिहारेई हाथ जई, तुम रोख^७ कै मारहु सैन तई ।
 परचंड दिखाबहु पौरुष कौं, दलकीस मिटावहु मो दुख कौं ॥२

१ रक्त । २ भाग, बुदबुद । ३ द्वय=दोनों । ४ ग्रीष्मकाल । ५ तालाव ।
 ६ रावण । ७ क्रुद्ध हो ।

बरबीर उजालहु बक्षर^१ कौं, ईधके कहा भाखहुं अक्षर कौं ।
 समीयौ^२ ऊपकार ईहीं समुझौ, संग घोर बरुथनो^३ बीर सभौ ॥२६१७
 तन त्रासत श्रांच लगै ततीयाँ^४, चिरकाल सिरावहु मो छतीयाँ ।
 हित बात ऊचार हरोलीय सौं, बिरदाय^५ अमोलीय बोलीय सौं ॥२६१८
 सुन कथ्य महोदर श्रांनन सौं, द्रग देख ऊचार दसांनन सौं ।
 जुरकौ^६ रन जेर कहुं जंम कौं, पुन देखहु भोर पराक्रम कौं ॥२६१९
 जुर मांरहुगौ रघुनाथ जती, कपिराज कहा ईह फौज कितौ ।
 पग मांड कहुं प्रबिदारमकौं, सभ आवत सत्रु संघारन कौं ॥३६२०
 कहिकै ईह आतुर गौन करचौ, धनुबांन उठायकै हाथ धरचौं ।
 धर ध्वेख^७ धस्यौ ऊर रीस धिखी, सलभा^८ जनुं जावत बीच सिखी^९ ॥२६२१
 सभ संगर^६ सांमीय सासन सौं, सर सौंध चलाय सरासन सौं ।
 दल बंदर कै बहु मार दई, भुव अंबर में सर भीर भई ॥२६२२
 तरु कीस लये ईम हाथ तरै, भुक ताप निदाघहु पात भरै ।
 पग मांड रहै तन पांनप सौं, बरीआई^{१०} की रीत गही बपु सौं ॥२६२३
 समिले कपि लंकर हाथ सिला, मुहमेज निसाचर साथ मिला ।
 घन जेम घुमंडीय जास घटी, कर कोह^{११} विरोधीय फौज कटी ॥२६२४
 जब देख महोदर क्रोध जग्यौ, अरी साभन काज हीयें ऊमग्यौ ।
 सर स्वर्न पंखारन^{१२} के सबही, तक मारन कीस लग्यौ तबही ॥२६२५
 पग जंघहु संग कटी पिडुरी, अरी हाथ कटे रू कटी अंगुरी ।
 कपि सैन कौं पींडित मार करी, ध्रुव धीरज कोऊ न बीर धरी ॥२६२६
 दसह दिस भाग गये डरकै, लहि भीत सुग्रीव के पोठ लुकै ।
 कपिराज पलायन देख कपी, थिर पायन रोप कै सैन थपी ॥२६२७
 समिले कर लिनीय हाथ सिला, घट दुज्जन ऊपर घाव घला ।
 तिह देख महोदर आवत ही, सर मार विखंड करी सबही ॥२६२८
 पुहमी पै परी पुरजा-पुरजा, ऊतरी लख चिल्लीनी मृतु अजा ।
 कपिराज लखी क्रतहस्त कला, विथुरी जीय में हीय क्रोह बला ॥२६२९
 तरु दिघघ ऊखार महां तमव्यौ, मन मोद महोदर सीस मुदयौ ।
 कीय खंड विहंडहु कंडन सौं पुहमी पर पूर प्रकंडन^{१३} सौं ॥२६३०

१ बक्षर । २ सामयिक । ३ सेना । ४ गर्म, उष्ण । ५ यशगाकर । ६ द्वेष । ७ चित्त-
 गारी । ८ अग्नि । ९ युद्ध । १० जवर्दस्ती । ११ क्रोध । १२ पंख वाले । १३ वाण ।

खल मारन कौं कपिराज खरे, पर येक ऊपाय न पार परे ।
सरसाल महोदर अंग सहे, रन में तहाँ पाय न रोप रहे ॥२६३१
परघा कर लिन्नोय भूम परी, कर ताहि ऊठाय कै मार करी ।
तन लूट तुरंगन लागत ही, गिर जाय परे जहाँ मृतु गही ॥२६३२
रथ त्याग महोदर खेत रुण्यौ, कल^१ कारन जाँन भुजंग कुण्यौ ।
गहि कै सिलसार गढंत गदा, बरजोर सुग्रीव दिसी बगदा^२ ॥२६३३
ऊर कोप प्रचंड हु बीर अरे, जुग तंडत माँनहु संड^३ जुरे ।
ईत पर्घ^४ ऊतै हु गदा ऊजरी, बीय बारध^५ ज्याँ चमकै बिजुरी ॥२६३४
बढकै हीय माँनहु क्रोध बला, जगमग प्रगट्टीय आग ज्वला ।
ईक पं ईक ताकत दाव ऊभै, चित कटक बैर कौ भाव चुभै ॥२६३५
गरज्यौ निसचार चलाय गदा, तहाँ देख कपीस प्रहार तदा ।
परघा कर भालत हाँप छटी, चकचूर भई दहुँ हाथ छुटी ॥२६३६
परघारु गदा जब दूट परी, जुग बीरन कै ऊर आग जरी ।
कपिराज परचौ लख कै करमें, ईक मूसल लै भटक्यौ ऊर में ॥२६३७
गहि हाथ महोदर और गदा, पर फेर चलाईय मृत्युप्रदा ।
दहुँ की भटभेर^६ भई दूसरी, ऊड़ दूंग भरी नभ सौं ऊसरी ॥२६३८
जुग आयुध खूट परे जहवाँ, तमक्यौ तन खेत भिरे तंहवाँ ।
मिल मुष्ट अभीक्षण^७ मार मची, रत रोख जुतै जुग रार रची ॥२६३९
भुक भूमत भूमत लै भटकै, नृत बीर जयंत मँड्यौ नट कै ।
रट कै मनु सिंघ बराह रूपे, जुटकं किधु भीस भुजग जुपे ॥२६४०
जुग जेठीय की मनु जोर जुरी, करदंत अरे किधु दोष करी ।
लग मार अपारहु लातन की, हुय भेट चपेटन हाथन की ॥२६४१
केऊ बार करार^८ नियुद्ध करे गहि एक कौं एकही भूम गिरे ।
ऊठ फेर खरे हुय आतुरता, किनहूँ न लही हीय कातरता ॥२६४२
पुन देख महोदर पास परी, सभ हाथ कपाँन गही सफुरी^९ ।
असि^{१०} खेटक^{११} लै कपिराज ईतै, मिल सग रमै फिर आप मतै ॥२६४३
विव बीर सधीर प्रबीन बली, खग खेडक खेल रच्यौ खुरली ।
केऊ घाव प्रहारत दाव करै, ऊभरै ऊर मंडल बाँध अरै ॥२६४३

१ कलह, कलि = पप, युद्ध । २ वापस आया । ३ सांड । ४ लुहांगी । ५ वारिधि = समुद्र । ६ मुठभेड़ । ७ अभीक्षण = बार-बार । ८ कठोर । ९ ढाल । १० तलवार । ११ एक प्रकार का शस्त्र अथवा युद्ध का खेल ।

छित^१ चंचच पाव छुएँ न छुएँ, दरसातई लात के चक्र दुएँ ।
 भट भूम ऊलंघ मलंग^२ भरै, केऊ दाव सिखाँन बिहंग करै ॥२६४५
 ढिंग श्रोठ^३ रचावत ढालन सौं, कर चोट करै करवालन^४ सौं ।
 भट और भरै ऊर भेखन कौं, दहुँ वीर लगे रन देखन कौं ॥ २६४६
 अरवसान महोदर कीन ईतै, कपिराज कौं घाव अचाय कितै ।
 भटकी खग फूल सु बाढ़ भरी, खटकी सोई कंकट^५ सीस खरी ॥२६४७
 ऋटकी कटकायल^६ में ऊरभी, समल्यौ तऊ फेर नही सुरभी ।
 नम लागेऊ ताहि निकारन कौं, मन कीसपती कीय मारन कौं ॥२६४८
 खग पै खग आर कटी खग कौं, पुहमी घिर साँड रहे पग कौं ।
 करवार कौं दूसर वार करचौ, सिरश्चाँन^७ जुतै कट सीस परचौ ॥२६४९
 धर जास गिरचौ धुककै धरनी, कापिराज की उगृ लखी करनी ।
 रन होय पराजय राँवन की, अरवधेस कौं मोद ऊपावन की ॥२६५०
 पतिलंक पलायन^८ देख परी, घट छौंभ ऊपज्जीय जाहि घरी ।
 महाँपारस भेजीय नाहि मतै, परचायकै चाहिकं जुद्ध प्रतै ॥२६५१
 वरखा फिर किञ्चीय वाँनन की, द्रढ लाय के भीर इसाँनन की ।
 भट क्रोध भयंकर भेस भयो, दल अंगद कौं बिचलाय दयो ॥२६५२
 सरसाय के मार घनै सर सौं, कीय मुंडन दूर फलेवर^९ सौं ।
 धर तूट परे सोई ढेरन सौं, सिखरी फल^{१०} जेम समोरन^{११} सौं ॥२६५३
 भुज कीस कटी सर भालन सौं, केऊ कंधर दै करवालन सौं ।
 भुजकोटर^{१२} जेम निखंग^{१३} भरी, पसवारन ऊपर मार परी ॥२६५४
 महाँपारस की सर मार गिली, चकराय वलीमुख^{१४}-सैन चली ।
 लख कं जोय अंगद जान लई, भय सौ मम सैन विहाल भई ॥२६५५
 होय-सागर एहु उमंग हुई, तिथ पूंनम तोय^{१५} तरंग त्युहौं ।
 परघातन लै जुवराज पिला, कर माँनहु सूरजदेव-कला ॥२६५६
 गहिकं सोई मारीय सार^{१६} गठी, हमगीर सधीरहु वीर हठी ।
 पसरे रघो स्वारयो भूम परे, मुरछागत ह्वै तिह चेत मुरे ॥२६५७

१ शक्ति = भूमि । २ दलंग, दानर । ३ रक्षा । ४ तलवार । ५ वस्त्र ।
 ६ कटी-जोड़ । ७ तिरकारण = टोप, पगड़ । ८ नगड़ । ९ शरीर । १० वृक्ष-
 फल । ११ यामु । १२ बगल, फाँस । निखंग = तरकस । १४ दानर । १५ जल
 १६ शीत ।

घन जेम घुमंडीय रिच्छ-घटा, चमकै भुज-कंवृक^१ जान छटा ।
 बयवृद्ध बिचार कै अगृ बह्यौ गरज्यौ पतिरिच्छ छहु पच्छ गह्यौ ॥२६५८
 जुवराज संभारीय पीठ जही, द्रढजाय विपच्छहि^२ मार दई ।
 सिल डार सतंग तुरंग समा, चकचूर करे मिल धूर छिमा^३ ॥२६५९
 जितनै महापारस भोह जग्यौ, लख अंगद बाँनन दैन लग्यौ ।
 पुन बाँन दये त्रय रिच्छरतो, भुजअंतर ताक करी भरती ॥२६६०
 द्रढ सायक मार गवाक्ष दई, रिस अंगद कै हीय छा्य रही ।
 ऊमड्यौ परघा कर लै अरि पै, द्रुत-विद्वत^४ बारध जेम दियै ॥२६६१
 दहुँ हाथ सँभाय भृमाय दई, जुत जोर जमाय सभाय जई ।
 धनु तूट परे सर हू धरनो, ऊछ्यौ सिरअँनहू ऊवरनो ॥२६६२
 गवन्यौ सुत-बाल समीप गयो, भर रीस पंचानन^५ रूप भयो ।
 पग लात दई कनपाटीय पै, अत जोर सौँ घोर ऊछाटीय पै ॥२६६३
 तऊ ऊठ खरी हुप्र कोह तण्यौ, सिल सार कुठार लीयै सरण्यौ ।
 द्रुत दाव सौँ कधर वाँम दटा, चमक्यौ मनु बहर बीच छटा ॥२६६४
 लख अंगद घाव बचाय लयो, प्रितु बाल बली बल बाल पयो ।
 ईक मुष्टक बाँध दई ऊर में, पर पार क्रतंत^६ गयो पुर में ॥२६६५
 महाँपारस अंगद हाथ मरे, पग छोर निसाचर भाज परे ।
 कपि साथ कंठीरव^७ गाज करचौ, भयदायक पतन दुग्ग भरचौ ॥२६६६

सोरठा

बिरूपाक्ष बर बीर, बीर महोदर कीन बध ।
 सुत जमजनक सधीर, जय पाई सुगुँव जुग ॥२६६७
 जाही विध जुवराज, महाँपारस कीनी सुगत ।
 रामचंद्र महाराज, ऊपजायौ आनंद ऊर ॥२६६८
 त्रय बीरन ततकाल, मृत्यु देख रन-ताल मह ।
 भय जुत लंक-भुआल^८, ऊर बिहाल रिस ऊफनी ॥२६६९
 सुभट सचव संघार, बिसतारचौ दुख लंक बिच ।
 राँम लखँन रच रार, मारहुगौ दहुँ बीर में ॥२६७०

१ भुजा-भूषण । २ शत्रु । ३ क्षमा = भूमि । ४ विद्वद् द्युति = विजली की चमक ।
 ५ सिंह । ६ क्रतान्त = यम । ७ सिंह । ८ भूपाल ।

ईह कहि रांवन आप, मैटे सकल बिलाप मन ।

चंड गह्यौ भुज चाप, कर सर लये कलाप कढ़ ॥२६७१

छंद हरगीतका .

कर बंक भृकुट निसक करकस^१ लंकपति रिस लायकं ।

पर जरचौ मानहु पौन पावक ऊचचरचौ अनखाय कं ।

तरु हरत रघुवर फूल तामहु सीया फल ईक सुंदरी ।

सुग्रीव अंगद केसरी-सुत बिबध साखा बंदरी ॥२६७२

जुत जामवंत अनंत जूथप दुबिद और मयंदहू ।

नल नील फेर सुखेन बलनिध गयमयंद गयंद हू ।

बहु लाल बदन अनेक बनचर छदन^२ पल्लव सम छेय ।

पाँनप पभाव प्रवाह सौं निरवाह भर सिर धर नये ॥२६७३

भुज चाप लै सर बृछ्छ-भेदी काष्ट-तट^३ मैं काटहू ।

कर टूक कर करकीन कौ पुहमीन^४ ऊपर पाटहू ।

बलकार सूत बकार कं लीय बग^५ हय ललकार कं ।

रनधीर खल रघुवीर पै हमगीर रथ हलकार कं ॥२६७४

निरघोष नेमी चक्र नभ सब नदी पबंत संजुरा ।

मृघ कोल^६ कुंजर चकत मति बढ तोल डोल वसुंधरा^७ ।

मुहमेज जाय मिलाय मुहरा अख राहु उभेल कं ।

जम जोर घोर कठोर जाजुल ठौर-ठौरन ठेल कं ॥२६७५

बनचरन लागे जरन वपु कल करन लागे कूह कौं ।

पर धरन^८ ऊपर चरन पटकत मरन मंडू समूह कौं ।

जित तितहु दोरत फिरत जावत धिरत घूमर घेर में ।

अखरत ऊपर एक एकन ऊड़त धूर अंधेर में ॥२६७६

वाँनक वनायी अस्त्रवेधा खलहु खेधा खेत में ।

मेघा^९ विना कपि मरन लागे राख मिल मिल रेत में ।

भटकीस भीर भजाय कं, गहराय रांवन गज्जयी ।

फस कंमर सर कोडंड लै तोई समर अद्भुत सभ्भयी ॥२६७७

राजीव-लोचन रांम कौं सुभ संग देखे सेस कं ।

मनुं गुरड़-गांमी^{१०} मिले मघवा^{११} धार दनुजन^{१२} ध्वेस कं ।

१ बरुंग । २ पत्ते । ३ साती । ४ पृथ्वी । ५ बलग = लगान । ६ सूअर ।
७ मृगि । ८ मृगि । ९ बुद्धि । १० विष्णु । ११ इन्द्र । १२ दैत्य ।

कोडंड लै भुजदंड कल बृहमंड -चुंबत बाँकुरा ।
 टंकार कीय भंकार तव अरि कदन कौ मनु आँकुरा ॥२६७८
 बिब छेद राँवन बाँन कौ ज्यासह^१ छायाँ जोर कै ।
 घहराय जनु घनघोर गर्जत होय सिंधु हिलोर कै ।
 पाहार बीच दरार पर पर धरा लगीय धूजनै ।
 धरहरत माँनहुँ धोम धुज^२ ध्रुव गैन लगीय गूजनै ॥२६७९
 सीस सुर श्री रघुबीर लछमन सबिध सरनहु^३ सरन में ।
 दसकंठ सोहत समर द्रग गृह राहुँ माँनहु गृहन में ।
 वँह समय लछमन देख अवसर ऊदत भयेऊ ऊतावरे ।
 जाजुल्य पावक ज्वाल जिम सर दैन लगेऊ संतावरे ॥२६८०
 क्रतहस्त^४ कर कोडंड लै सर तजेऊ राँवन सामनै ।
 मिल ऊद दुद्धर^५ व्योम मारग भेट लगीय भुँमनै ।
 व्यवछेद भेद बिधान सौँ द्रढ दक्षता दरसाय कै ।
 ईक एक सौँ द्वै दोय सौँ सर रोक लीय सरसाय कै ॥२६८१
 द्रग देख लछमन दक्षता राँवन अचंभत ह्वै रह्यौ ।
 तज जंग चत्वर ताहि कौँ गहि चाप रघुवर पै गयौ ।
 महि पाव जाहि सुमेर मंडीय बाँन छंडीय बेग सौँ ।
 आसार धार ऊमंड कै मनु वृष्ट थडीय मेघ सौँ ॥२६८२
 धनु छुटे सायक देख ध्रुव रघुबीर लागे रोकनै ।
 प्रासक^६ प्रभाव बताय पौरुख भटत लगे शोकनै ।
 केऊ बाँन कट्टीय क्रूँत सौँ फुँकरन फेर फँनीन^७ से ।
 मुरझाय पर गये धरन मह ऊरझाय अंगु अंनीन^८ से ॥२६८३
 हमगीर लस्तक हाथ लै धनुबाँन तज अवधेसह ।
 लकेश लगे लरन कौँ मनु कल्प^९ सेस महेसह ।
 बाँनाचली बिद्या बिनै द्रग परसपर दिखरात है ।
 मगरुरता^{१०} जुत भृमत मंडल सूरता सरसात है ॥२६८४
 सम सम हू लागे करन समहर रोप क्रम जम रूप सौँ ।
 ऊदरन लागे अपुनपौ ईष्वाक^{११} सरन अनूप सौँ ।

१ प्रत्यंचा शब्द । २ अग्नि । ३ वाण भी । ४ निपुण । ५ दुद्धर, कठिन ।
 ६ माले । ७ सर्प । ८ अग्रभाग । ९ प्रलय । १० घमण्ड । ११ इष्वाकु ।

ऊलाकान पात अनेक आकृत होन लागे हेर कै ।
 मत चकित निसचर भये मरकट फिरत लोचन फेर कै ॥२६८५
 बढ सोक बाँनन बेग सौं आकास भरगये ओघ सौं ।
 मनु मेघ मंड घमंड मिल जलबालका^१ दुति जोग सौं ।
 पवमान^२ थक्रीय प्रेरता ब्रग रुकीय जोत दिनेश की ।
 अंधारकारी घटा ऊठ भारी भयानक भेस की ॥२६८६
 राँवन प्रहारत राँस पै राँसहु प्रहारत राँवनै ।
 पर मार गारडपछ्छ^३ की दहु लगीय भेस डरावनै ।
 बढ वृत्तहा^४ अरु वृत्तकै^५ भयकार सहचर जिम भयौ ।
 परबीन विव रन धीर पनकै^६ छोह जिनकै हीय छयौ ॥२६८७
 रनखेत अमित्त अगाध अर्नव बढत विव हथ बाह सौं ।
 तन ऊभय तीव्र तरंड^७ से पाँनप^८ हु पाँन^९ प्रवाह सौं ।
 सोई मग बिचरत तजत सर ऊसका मानहु ऊभ्रुहली ।
 लंकैस ताक ललाट लछ्छहि^{१०} घात रघुवर कौं घली ॥२६८८
 सिर भेल लीय तिन सायकन जे अरे मुगट जटाँन में ।
 सम नीलनीरज संजुरे सल सूल सिघ सटान में ।
 रौद्राख पढ रघुबीर हू भोक्थौ सु चाप भुकाय कै ।
 सर लगै कंकट पै सबै रनधीर निश्चरराय^{११} कै ॥२६८९
 घट नहिन दमसिर भयौ घायल पती अवध परेख कै ।
 रथ चढचौ देख रिताय कै सर भाल दीय अवसेख कै ।
 लागे तऊ तिह कीय निवारन परे पुहमी पंठ कै ।
 दिल माँहि जावत ज्युँ विलेसय^{१२} आड़ दौढहु एँठ कै ॥२६९०
 कर अख निरुफल राँम के पर जरेऊ रिस लंकापती ।
 असुराख पढ प्रेरचौ सु अद्भुत महाँचंडहु दुरमती ।
 पुन बाँन तामह भए परगट सिघ व्याघ्र मुखा सही ।
 मुख घोर-बासी^{१३} अरु मृघादन^{१४} आस^{१५} वृखदंसक^{१६} अही ॥२६९१

१ विजली । २ पवन । ३ बाण । ४ इन्द्र । ५ वृत्रासुर । ६ प्रण ।
 ७ नाव । ८ धनुष , ९ वायु । १० लक्ष्य । ११ रावण । १२ सर्प ।
 १३ त्पार । १४ जरस । १५ मुख । १६ वनविलाव ।

मुख गृहमृघ^१ अरु केऊ ईहाँमृघ^२ घृष्टमुख^३ गर्दभ घने ।
 सींचान मुख दाक्षाय^४ वाँयस बदन चिल्लन बक बबे ।
 उल्लूक भृंगकलंग^५ आक्रत कंक आँनन भयकरा ।
 द्रग राँम रचना देखकै कीय क्रोध ऊपर कर्बुरा^६ ॥२६६२
 अग्नाख प्रैरत करचौ अद्भुत बाँन अग्नि बिसाल के ।
 बिकराल द्रंग बिचाल वर्षत जरत जाजुल ज्वाल के ।
 मुख तरन बरन अनूप तामें किरन आभा कल कली ।
 अर्ध इंदु आनन केऊक ऊलका वेख चंचल बीजली ॥२६६३
 तम-तारका^७ गृह बदन केतक मिले नभ मारग मही ।
 असुराख राँवन नष्ट कीय वँह लूट जय रघुवर लही ।
 ऊरजस्व लख अवधेस कौ कपि भाल^८ जय जय रव करचौ ।
 सुग्रीव अंगद जूथपत सब चरन बंदन अनुसरचौ ॥२६६४
 कर क्रुद्ध राँवन जुद्ध कारन मुद्ध मन गहि मोह कै ।
 मय दनुज कत लै अख मोख्यौ समुख राँम सँदोह कै ।
 सिल मुसल अबला सूल^९ परसुध^{१०} भिदपाल^{११} भयंकरा ।
 अस पत्रका करवाल अंकुस वार अय मय मुदगरा ॥२६६५
 चल सुसन^{१२} चंड ऊमंड चहुदिस असन^{१३} बरखा औसरी ।
 ऊलकाँन पात अँनेक आक्रत धुवन लागी धूसरी ।
 परबीन श्री रघुबीर पौरुख जाहि अवसर जाँन कै ।
 गंधर्व अख चलाय द्रुत गति सेट विघ्न महाँन कै ॥२६६६
 पर जरेऊ राँवन आग पर द्रग देख छाँयौ द्वेख कै ।
 द्रढ़ अख कीन प्रयोग दूसर भूर-भेखन^{१४} भेष कै ।
 सिर धरचौ धन्वा सिजनी बलकार बीर बिधान सौं ।
 प्रज्वलत चक्र प्रचंड पावक ओघ भर ऊलकाँन सौं ॥२६६७
 तरराय तूठत तारका अरण्य ऊपर आय कै ।
 गरराय सूरज चंद्र गृह भरराय ताप भुकाय कै ।
 अनभाँत के केऊ अमित आयुध गिरन लागै गँन सौं ।
 मरकटी सैना मोह लै अकुलाय पाय अचैन सौं ॥२६६८

१ कुत्ता । २ बरगड़ा । ३ सूकर । ४ गिद्ध । ५ गुलंगपक्षी । ६ राक्षस ।
 ७ राहु । ८ नीड़ । ९ त्रिशूल । १० फरसा । ११ भाला । १२ वायु ।
 वज्र । १४ भयंकर ।

तिह अख कौ कीय हरन तिह छिन सरन असरन स्याँम जू ।
 दीय जुद्ध की फिर नींव द्रढ राजीवलोचन राँम जू ।
 कर कोप कै दसकंधरा रन रह्यौ पायन रोप कै ।
 पाथोद माँनहु ऊफन्यौ जल ऊँमिका गीत जोप कै ॥२६६६
 दसबाँन दीय तन स्याँम सुंदर राँम देख रिसाय कै ।
 कोडंड निकसे कठन सौँ जोई लगे सबही जाय कै ।
 भय नहिन^१ घायल अवध-भूपत समर विजई साँवरे ।
 कर क्रुद्ध मार कलंबकौँ^२ जाजुल्य जोधा रन जुरे ॥२७००
 सर्वांग घायल कीयौ दससिर अँनी तिछछन दै ईतै ।
 लख अनुज राँमहु लगे लरनै पेख अवसर रन प्रतै ।
 हीय कुप्त^३ सप्त हकार कै दीय दीप्त सर दरसाय कै ।
 धुज मनुस सिर धृत धारनी गुन ताँन लयेऊ गिराय कै ॥२७०१
 सिर काट डारथी सारथी ऊतमंग जुत कुँडल ईतै ।
 पूरन प्रभाव जताय पौरख मंड रन आपुन मतै ।
 गज सुँड सम कोडंड गुन जुत कंड^४ छंडे करार कै ।
 कीय खंड खंडन काटके सोमित्र सिष्ट संवार कै ॥२७
 कूदे बभीखन गदा लै कर देख अवसर दौर कै ।
 तोरे तुरंगन अष्ट तन जे लगे स्यंदन जोर कै ।
 तब विरथ राँवन होय तत्पर सक्ति लीन संभाव कै ।
 कीय बभीखन पै कोप कर कस दौर दीन दबाय कै ॥२७०३
 लख नज सम जाजुल्य नछमन तीन सर लीय ताहि कौँ ।
 तब टूक कीनी ताक कै जब परी धरनहु जाय कै ।
 सावर्न^५ भूखन संजुता कट पर मर्कट देख कै ।
 जय शब्द कीनौ जोर सौँ विसतार मोद विसेख कै ॥२७०४
 ऊलकाँन पात समेत अगनत विस्फुलंग हु वीखरे ।
 अद्भुत पराक्रम राँम-अनुजहि जोय राँवन पर जरे ।
 ईक सक्त घंटा आठ जुत मय दनुज माया मंडता ।
 चमकंत आभा चंचला प्रलयागन तेज प्रचंडता ॥२७०५

वह लई हाथ ऊठाय कै मारन बभीखन कर मतौ ।
 दसकंध उछित देख द्रग सोमिन्न पाँनप कीय छतौ ।
 धनु ताँन मोर बाँन ध्रुव दसकंठ लागे देह कै ।
 लकेस ईह सोभा लई सम सूल संचर सेह कै ॥२७०६
 ऊछछंड व्याकुल होय कै ऊर सक्ति छंडन हो तवयौ ।
 दुरबाद लक्ष्मन देख कै बाचाल आँनन सौँ बक्यौ ।
 मम भ्रात बंसकलंक^२ मारन करी धारन सक्त कौँ ।
 आवत ईहै तुम ऊपरा रुच लाग पीवन रक्त कौँ ॥२७०७
 कर क्रोध मोघ अमोघ कीनी ताक राँवन तत्परा ।
 चाली स^३ बजू समान चंचल भयेऊ सब्द भयंकरा ।
 तिह अधिष्ट त्रह देवता^४ तब राँम ऐसै कहि रहै ।
 महादुष्ट उद्यम होय मिथ्या छेम^५ मम बंधव चहै ॥२७०८
 ईह कहत रघुवर रहे ईतनै जाय लागी जोर सौँ ।
 दिक्करन विषधर सम दिखाई घंट रव धनघोर सौँ ।
 कीय भेब हृदय भयंकरी छत^६ कीन फिर कीय छेह कौँ ।
 निभ्र दंत कार्लीनागनी डस त्याग जावत देह कौँ ॥२७०९
 अत तरल वासुकी जीह आक्रत सरल धर पर संचरी ।
 ईत गिरेऊ लखन अचेन ह्वै घट घाव लग ताही घरी ।
 लघु-भ्रात कौँ अवधेस लख हीय ऊदासीन दसा हुई ।
 अखिर्याँत अँमुवा धार ऊँमड़ी सोक व्याकुल सरसई ॥२७१०
 भये मोह लीन मूर्हत भर बहलाय दुख गह बीरता ।
 जाजुल्य अंतक-कल्प^७ ज्यौँ धिक धार हीय में धीरता ।
 रन समय कुल रजपूत कौँ कचना न कातरता कही ।
 बंसानुरीत बिचारकै जुत सूरता कोपै जँही ॥२७११
 रन लगे करनै ऊठ राघव वैर अवरज^८ वारनै ।
 ईत टौर मरकट ऊँमड़े सोमिन्न काज सँभारनै ।
 सर भार दीय राँवन सबे समले न कोय समीप कौँ ।
 पर जात ऊड़ जैसे पतंगा देख पावक दीप कौँ ॥२७१२

१ दुर्वचन । २ वंश का कलंक = विभीषण । ३ वह । ४ तीनों देवता = ब्रह्मा,
 विष्णु, महेश । ५ क्षेत्र = कुशल । ६ क्षत । ७ प्रलयकाल । ८ छोटासाई ।

असमर्थ राँम लखी अनी-वनचर^१ बनी नहि बीरता ।
 धाये सु जब कौसलधनी धर हिद साहँस धीरता ।
 कर ऊलट पलट कनिष्ठ^२ काया सक्ति ऐंच सजोर कै ।
 कढ सूल हीय सौँ दूर कीनी ठूक ठूकन तोरकै ॥२७१३
 दसकंध अत्रसर देखकै सुकमार राँम सरीर कौँ ।
 कर चाप चाँप कजाक कल ही ताक दीने तीर कौँ ।
 सर पीर सहि रघुवीर संचर^३ ऊर सधीर अपंपरा^४ ।
 कहि वजूककट^५ अरु सुकंठहि^६ धर्म-रीत धुरंधरा ॥२७१४
 विक्रांत वनचर ब्रँह^७ वन सब घेर राखहु सेस कौँ ।
 रनताल बीच संभाल रहीयै देख काल रू देस कौँ ।
 विललात चातक रहै बारध बूँद पवि न वार की ।
 तिह रीत दसतिर प्राँन त्रसना रही ऊर विच रार की ॥२७१५
 खल खरौ^८ सोई रनखेत में द्रग सामनै दिखरात है ।
 मद अंध ईह दसकंध मारन अधिक चित अकुलात है ।
 मति चकित ह्वै नहीं थकत मेरी बखत पोखुख बिसंतरी ।
 कर कै प्रतज्ञा कहत हूँ द्रग देख विपता दुस्तरी ॥२७१६
 बिन राँम होय वसुंधरा अथवा क राँवन बिन ईही ।
 मम सत्य वाचा माँनीयै कछु वात मिथ्याँ नहि कही ।
 वन बीच वास विनास वैईभव गृह तरुफल गृहन कौँ ।
 कीनास^९ की फिर त्रास करकस घास छावत घरन कौँ ॥२७१७
 वोते सु विपत विलास में सब दिवस मास समास^{१०} ह्वै ।
 विसवाम वंधव सोया विहरत आस छाँड़ उदास ह्वै ।
 तऊ कष्ट तन मन त्याग हु महादुष्ट राँवन मार कै ।
 जिह फारनै कपि सैन जोरी ऊदव वाँध ऊतार कै ॥२७१८
 पद दै बभीषन लंकपत सभ समर मारे निश्चरा ।
 सहचार^{११} कर आयुध सभ मल खेत में आगे खरा ।
 पर द्रष्ट गण्ड भुजंग पं नुनीयै न ऊवरे श्रान्त सौँ ।
 अथवा न द्रष्ट भुजंग आगे जीयत कोऊ न जान सौँ ॥२७१९

१ कौसलधनी । २ कौसल । ३ संचर । ४ अपंपरा । ५ वज्रुमान । ६ सुकंठ ।
 ७ ब्रह्म । ८ खरौ । ९ कीनास । १० द्रष्ट । ११ पद ।

ईम गनहु लकअधीस की कुसलात मो आगौ कहाँ ।
 लघु भ्रात कौ सब बैर लैहूँ दोष जुत दुसमन दहूँ ।
 मम बात सुन सब साथ मर्कट गिरी बैठ गुहान में ।
 गंधर्व आदक सिद्धगन बढ देव छाँय बिवान^१ में ॥२७२०
 पुन राँम के सब राँमपन कौँ लखहु नैनन लाय कै ।
 बिख्यात होय बसुंधरा जग आद अंत जताय कै ।
 हकार जुत खल हेर कै टंकार कीय धनु ताँन कै ।
 सर तजेऊ शृष्ट सँवार कै मनु दृष्ट मुदर^२ महान कै ॥२७२१
 सन परसपर हथ वाह सरसत बीर रस बरखत बिहूँ ।
 कोडंड गुन भुजडंड करखत चंड रव भर दिस चहूँ ।
 मिल ऊभय ओरन जोर जोरन मोर तोरन मंड कै ।
 घर गिरन लागी मनहु धारा मेघ बार घुमंड कै ॥२७२२
 मुहंमेज राँवन मारदैं अन-पार पीड़त कर वही ।
 समुभाय कीस सुखन कौँ कछु राँम बतीयाँ पुन कही ।
 महौँदुष्ट राँवन सक्त मारेऊ भ्रात लखन भुजंग ज्यौँ ।
 अकुलाय पीड़ ऊछंड ह्वै जाहर अमेठत^३ अंग ज्यौँ ॥२७२३
 कलधोत^४ थंभ अनूप आक्रत रुधर भोजे अरु रजी ।
 ऊर बीच मेरै आय कं अत सोक पीड़ा उपजी ।
 गिर धरन लागे धनुष गुन जुत बिगत बिसरत बाँन की ।
 अत बढी चिंता आय कै हीय बीररस कै हान की ॥२७२४
 दुःस्वप्न देख डरावनै जग जीव ज्यूँ डरजात है ।
 दुख भ्रात के मम जीव डरपत अमित गत अकुलात है ।
 तज अवधपुर चालै तही बनवास हम पाछे बहे ।
 सुख पाय जाहि सनेह सौँ रमतीत^५ ह्वै बिचरत रहे ॥२७२५
 सो लखन चाले स्वर्ग कौँ पथ हमहु पीछे पाँयगे ।
 द्रुत ताहि बदलौँ दैन कौँ जमलोक में मिल जाँहिगे ।
 हीय लालसा जय हेत की द्रढ़ दुष्ट राँवन दैहगे ।
 नहि ईधक यातै और निरनय कहा रसना कैहगे ॥२७२६

मन मात कोसित्पा मुमंत्रा और पुरजन आद कै ।
 मम सहित जाँह भाल भकट परी घोर प्रमाद कै ।
 जो टरै टारी जीव सौं कीज न वीर विलंब को ।
 कछु भ्रात लछमन जतन करीयै और नहि अवलंब को ॥२७२७
 सुन बात राँम सुखैन हू बोले सु चित्त विचार कै ।
 ईह समय नाँहिन सोक की अब धीर रहीयै धार कै ।
 सोपित्र आँनन ईंदु सम जुत प्रभा दीसत जोईयै ।
 सम पत्र पंकज पंचसाखा द्रगहु सुंदर दो ईयै ॥२७२८
 हीय सभर^३ स्वास सहेत है धरधरत छाती धूज कै ।
 अत गाढ मुच्छा आयगी ऊस्वाँस मग्न अरुभू कै ।
 प्रभु अरज सुनीयै प्रजापालक तत्रुघातक साँवरे ।
 ऊपचार करत विचार कै अब ऊठहै लखन ऊतावरे ॥२७२९
 सुन अर्ज कीस सुखैन की विसवास राँम बसाय कै ।
 ईत देख फेर सुखैन अबसर पवन-मुत परचाय कै ।
 कथ^४ कही पूरव काल में जिम जाँमवंत सुजाँनीयै ।
 जिह निरी कौं फिर जाईयै श्रीसधी यातुर आँनीयै ॥२७३०
 चहु लखहु दछद्यन^५ अंग पै विःसल्प करनी बल्लरी ।
 मुँघाव सौं ह्य घाव सब सुध सहज निकरं सल्लरी^६ ।
 सावन करनी जिह समीपहि घाव भरहि मुँघाव सौं ।
 संजीव करनी तिह समीप ही पुन मुँघाव प्रभाव सौं ॥२७३१
 जीव ऊठत मृतक सरीर जंगम जाहि गुन ईह जाँनीयै ।
 महोद्योगयो संवाँनी नाँमक विध मुँघाव बणाँनीयै ।
 बनवत होयत प्रथम तें चट समन^७ जासौं सो गुनी ।
 ईत करत कारज अंजनेई सोप अत^८ मेरी गुनी ॥२७३२
 पुन सोप कीस मुनेग की कृपे मु नंदन-केमरी^९ ।
 पुन अंग नाहो पटुव के जुन जोर द्रग टूटो जरी ।
 पट्टिवाँत जासो नीह प्रतीनी ऐन अंग अपार कै ।
 पाखेट मर्यादीन^{१०} वीरन विषय रीत विचार कै ॥२७३३

१ देव । २ मन्त्र । ३ शत्रु । ४ इच्छित । ५ पीड़ा । ६ मयत । ७ काम ।

८ प्रसन्न । ९ कृपित । १० विद्वान् ।

गवने सु सुरपथ^१ गौल कौं आये अफूटे ऊठ कै ।
 सब अंग पाव समेट कै कर ग्रहन कीनै कूट कै ।
 सोई मेल अगृ^२ सुखेन कै हनमत दिखाई हाजरी ।
 तुम जोय लौ ईह होय तत्पर जो जरूरी ह्वै जरी ॥२७३४
 करकै प्रसंसा बज्रकंकट जरी लीनी जोय कै ।
 कर चूर्न ताहि सुखेन कपि सूंघाय नाक समोय कै ।
 जागे सु लछमन नोंद ज्युं मिट पीर अंग मभार की ।
 अवधेस भेटे अंक सौं सब बनी बात सुधार की ॥२७३५
 सुभ मिली क्रीत^३ सुखेन कौं हनमत कै बलहेत की ।
 जय राँम लछ्छन ज्याँन की खल अजय त्यूं रनखेत की ।
 ईतनै पदारथ भये ऊद्यत जगे लछमन जाहि सौं ।
 सुग्रीव अंगद बभीखन सब तुरत छूटे त्राहि सौं ॥२७३६
 बृदारका^४ सब फूल बरखत मोद करखत हीय मँहीं ।
 बनचरन जय जय धुन बढी गिर व्योम भूतल गहगही ।
 अवधेस ऊर आँनंद सौं ह्वै गये पूरन हेत में ।
 लघुबीर हू रघुबीर कौं लख खेम जुत मिल खेत में ॥२७३७

दोहा

बोले लछमन सौं विहस, सजल नैन घनस्याम ।
 खेम ऊठे रनखेत सौं, मुरछा छोर मुकाँम ॥२७३८
 तुम बिन सीय जय सब तजी, अरु जीवन की आस ।
 दीखन लागौ जुगन^५ द्रग, ईह जग सकल ऊदास ॥२७३९
 सिथल-बाँन^६ बोले समुझ, लछमन राँम निहार ।
 सत्य पराक्रम साँवरे, बोलहु नैक बिचार ॥२७४०
 करी प्रतज्ञा बध करन, राँवन निसचर राज ।
 जाकौ प्राकृत^७ मनुज ज्युं, ऊर बीसर गये घाज ॥२७४१
 प्यारी जानहु प्राँन सौं, सत्य प्रतज्ञा सोय ।
 प्राँन तजै जिह पालनै, जो नर ऊत्तम जोय ॥२७४२

१ आकाश । २ आगे । ३ क्रीत्ति । ४ देवता । ५ दोनों । ६ शिथिल वाणी ।
 ७ सामान्य ।

छंद मोतीदाम

सुनी लघु-बंधव बात सकोय, गयी दुख सो कहीये रिस गौय ।
 कही फिर लछ्छन सीं ईह कथ्य, अहो वरवीर भये असमथ्य ॥२७४३
 बढ्यो तुम सोक होये प्रतिबंध, सनात । मातन आतन संध ।
 पराक्रम देखहु मोर . प्रभाव, कहा कहुं आनन आप कहाव ॥२७४४
 पचानन तिछ्छन दंत प्रचार, बचै कोऊ बार न मत्त बिचार ।
 ततो गुन बाँनन कौ कर त्याज, इहै खल राँवन बंचहै^१ आज ॥२७४५
 जितै असताचल लौं रबी जाय, कहुं खल दुष्ट निकंदन काय ।
 ईती ना कहि पाँनन^२ चाप ऊचाय, भरी कोय बाँनन ताप भुकाय ॥२७४६
 चढ्यो रथ राँवन हू रथचाह, रबो सिस^३ देख बढ्यो मनु राह^४ ।
 मड़ी रघुवीर पै बाँनन भार, ऊमंडीय बारध धार असार ॥२७४७
 ऊतै खल सिदन पै असवार, ईतं रघुनायक भूम अधार ।
 वरावर जुद्ध नही^५ ईह बेर, कही सुन दानव देवन केर ॥२७४८
 पुकारीय मातुल कौं पुरहूत, सवारीय राँम करावहु सूत ।
 चलयो रथ मातुल लै कर चाह, बढे तहां जोर हरे रंग वाह^६ ॥२७४९
 मढी प्रति अंगन किंकनी माल, सतांग^७ के अंगन कील सँभाल ।
 बनी जर तार किनार बरुय,^८ गही छिव्र मोतिन भल्लरि गूय ॥२७५०
 धरं सिर-आँन^९ मई कलधोत, जग मनि मानक हीरन जोत ।
 भरे तिह अंतर आयुध भार, निखंग हू आदक चाप निहार ॥२७५१
 प्रकासन सूरज जेम प्रहास, परची ईक ककट हू तिह पास ।
 जरुरत जुद्ध के काज जिनीक तहां धर मातुल वस्तु तितिक ॥२७५२
 सतावीय मातुल लेय सतंग, ईहां रघुवीर पै आय ऊमंग ।
 भुकाय के चायुक कौं कर भाल, नमायक सोरख^{१०} होय निहाल ॥२७५३
 कनी तिह बोनती राघव केर, बिराजहु सिदन में ईह बेर ।
 सदां तुहि दास हूँ मातुल सूत, पठायेऊ मोहोय कौ पुरहूत ॥२७५४
 कहं नियकाईय^{११} नाय कपाल, संघारहु राँवन देवन-साल^{१२} ।
 जिही रथ बंट पुरंदर जात, प्रहारन दानव जात प्रयात^{१३} ॥२७५५

१ जोरित रहेगा । २ हाथों में । ३ दति । ४ राट्ट । ५ सू०प्र० न्ही । ६ घोड़े ।
 ७ रथ । ८ खोली । ९ कपटी । १० मन्त्रक । ११ मेवा । १२ देवताओं को
 पीत देवे वाता । १३ मधुराय = मंता ।

सोई ईह सिदन सो हम सूत, मिटाथन सत्रुन कौं मजबूत ।
 ईती अरदास करी ढिग आय, प्रभू सुन भ्रानन थंभीय पाय ॥२७५६
 गन्धौ तन मानुख आपन गान, मृजाद कौं राख नमाय कं माथ ।
 प्रदछछन दै रथ कौं गति पाय अरोह कैं ऊपर बैठेऊ आय ॥२७५७
 बकारकैं राँवन लिन्नीय बग, ऊड़े हय मारग आय ऊदग ।
 ऊतै रथ राँवन कौ अरराय, धरा नभ सह रह्यौ धरराय ॥२७५८
 ऊतै खल देवन कौ रन आय, सदा रघुनायक देव सहाय ।
 चलाकीय राँवन की अत चंड, ऊछट्टीय राक्षस अख ऊहंड ॥२७५९
 बिलेसय होय कढे बहु बाँन, निकासत आँनन ज्वाल निदाँन ।
 तके तन-राघव चंदन तेम, ऊड़े मनु पंखन लागन ऐम ॥२७६०
 भरे नभ मारग भीम भुजंग, निकारीय गारूड अख निखंग ।
 सुवर्न के पर्न लगे सरसाय, चठठीय राघव चाप चढाय ॥२७६१
 लगे आह बाँनन कैं सोई लार, बिडाराय अखन अख बिचार ।
 कीयौ तब राँवन दारुन क्रुद्ध, जुट्यौ रघुनायक सौं फिर जुद्ध ॥२७६२
 करी भर और सकतीय^१ कूंत^२ दिखावत रूप मनौ जमदूत ।
 सहश्रन^३ बाँन तजे ईक साथ, निरंतर पीर बढ़ी रघुनाथ ॥२७६३
 मँडी तन मानुल कैं सर मार परी रथ घोरँन सीस प्रहार ।
 तहाँ ईक दिघधुजा दीय तीर, सिखा तरु तोरीय जाँन समीर ॥२७६४
 गिरी ईम अंदर सौं गरराय, भुक्थौ घन-संबर^४ ज्याँ भरराय ।
 सबे गंन गंधुब चारन सिद्ध, बृंदारक दाँनव देख विरुद्ध ॥२७६५
 महाँ मुनिराज भये बस मोह, संभार न सबकीय कीस-संदोह^५ ।
 भुजा जिह बीस प्रलंबत भेस, धरें घनु बाँन भरै ऊर ध्वेस ॥२७६६
 अटै दस सीरख चंबत आभ, सिलोचय दीरघ जाँन सुनाभ ।
 सहे रघुनायक बाँनन साल, जगी हीय बीच हुतासन ज्वाल ॥२७६७
 भृगुट्टीय^६ बंक अमेठत ब्रंह, जरावत क्रुद्ध पलादन^७ ज्यूह ।
 की चखयै रोहित रंग करूर, प्रभा रबि गृषिम ज्याँ भरपूर ॥२७६८
 हीयै कर संगर-खेत हुलास, पहंचीया राँवन कैं जहाँ पास ।
 भयौ रघुनायक देख सभैत, बनी मुख आकत हू बिपरीत ॥२७६९

१ शक्ति । २ भाला । ३ सहस्रौं । ४ प्रलय मेघ । ५ समुदाय । ६ मैनाक पर्वत ।
 ७ मृकुटी । ८ राक्षस । ९ चक्षु = आंख ।

डिगे गिर लीनीय भूम दरार, ऊर्ध्वी जग अंतर घोर अंधार ।
 लग्यी दध^१ नीर हिलोरन लैन, गरज्जत बहुर विद्वत^२ गैन^३ ॥२७७०
 करी फिर कूकर जंबुक कूक, ईते खर विस्वर^४ हुक ऊलूक ।
 तरेरन तारन की तरकाँन, उड़े चहु ओरन सौँ ऊलकान^५ ॥२७७१
 रच्यौ रन राँवन श्री रघुनाथ, समी समसुप्त^६ बन्यौ जनु साथ ।
 डरे नर नार असंभव देख, सब रिखी देवन आद विसेख ॥२७७२
 तथाँ गृह आद नछत्र तमाँम, बढ्यौ ऊर अन्तर आय विराम ।
 भयंकर सस्त्र अनेकन भाँत, परै केऊ अस्त्रहू पाँतन पाँत ॥२७७३
 सुरासुर वैर अनाद सँभार, रहे दहु देख बराबर रार ।
 वकारत एकन एक विसेस, सुधाभुख^७ आदक और सुरेस ॥२७७४
 ईहै जय चाहत श्रीध-अधीस, चहै जय आसुर हू दससीस ।
 पराक्रम पाँनन बीस प्रसिद्ध, सदाँ अवसाँनन जाँनन सिद्ध ॥२७७५
 प्रहारन आयुध लीन प्रचंड, दुरंतर सूल गही भुज डंड ।
 समा सतकोटीय^८ ज्याँ द्रढ संघ, विराजत अष्टन घंटन बंध ॥२७७६
 जगै जिम जोत हुतासन ज्वाल, कढै विच दाह निकेतन काल ।
 किते गिर ऊपर माँनहु कूट^९, खरे तिह तिछ्छन दीसत खूँट ॥२७७७
 जुगांत के अन्तक ज्यूँ ऊठ ज्वाल, लई तिह हाथ कीये चख लाल ।
 प्रकंपीय सागर श्री पुहमीन^{१०}, परेखीय देखीय लै भुज पीन ॥२७७८
 ऊठायकं ताहि लही अजमाय, जुरायकं लायकं जोर जमाय ।
 भृमायकं ऊठ सँभारीय भार, चमकीय दामन ज्यूँ दिसच्यार ॥२७७९
 लसे दल कीस भये भय-लीन, पलादन साथ बढ्यौ सुख पीन ।
 यवघी प्रत राघव गल्ल वजाय, सर्व ईहो वात कहूँ समुभाय ॥२७८०
 रचं तुहि मृत्यु सँपेखवहु राँम, मही पग मंडहु वीर-मुकाँम^{११} ।
 कर्यौ मम-बंधव^{१२} को अनुकूल, सँभारकं भेट लही ईह सूल ॥२७८१
 मरे केऊ वीर परे घर^{१३} माहि, जिही विच आयुन सोवहु जाहि ।
 गहै तुहि ऐदन भेदन गात, ईहै रन खेद मिटे ऊतपात ॥२७८२
 ईतो कहि सूल प्रहारीय ऐव, गरी ह्य राघव ऊपर खँच ।
 सखी नभ मारग आवत नैन, दुरंतर बाँनन लागेऊ दैन ॥२७८३

१ मण्ड । २ विद्वत । ३ एकन । ४ विस्वर । ५ ऊलूक । ६ प्रलय । ७ देवता ।
 ८ दल । ९ कूट = टुकड़ा । १० पृथ्वी । ११ पुंड्रभेग । १२ विनीयण ।
 १३ धरा = पृथ्वी ।

तुखानल-कल्प^१ मिटावन तेम, ऊलटृत बार पुरंदर ऐम ।
सुसोभत राघव ज्युं धनश्यांम, रहे पग रोप महा बिसरांम ॥२७८४
संभार कै बाँन दये केऊ सूल, भरे सब दाहन भारन सूल ।
पतंगहु आग दबंगन^२ पेख, बरै जिम दौर कै अंग बिसेख ॥२७८५
भये सर राघव के बस भेट, हुतासन ताप गिरे सब हेट ।
करयो तब राँम अर्सभव क्रुद्ध, जुरे दसकंध बकारत जुद्ध ॥२७७६
सगतीय हथ्य पुरंदर सोय, जिही रथ ऊपर देखीय जोय ।
उठायकै ताहि लखी अध ऊद्ध, सबै प्रति अंग बिराजत सुद्ध ॥२७८७
विलोकत तेज महाँबिकराल, जुगंत^३ की मानहु जग्गीय ज्वाल ।
प्रहारीय सिष्ट मिलायकै पाँन, भई नभ मारग भेट भयाँन^४ ॥२७८८
लगी तिह फेट गिरी सोई लार छुट्यौ जिह गाढ मिल्यौ सब छार ।
लगे रथ तोरन घोरन लार, बिचछछन तिछछन बाँन बिडार ॥२७८९
परे तन तूट भये गन प्राँन, अगंजित राघव बाहु अजाँन^५ ।
बकस्थल^६ बीच दये खल बाँन, त्युही मुर^७ सीस दये धनु ताँन ॥२७९०
भिदे सर अंग बरंम्मन^८ भेद, चुभे सोई जाय चरंम्मन^९ छेद ।
रँगी रत धार निसारन रेल, पनारन नीर रही जिम पेल ॥२७९१
थट्यौ सोई बीच निसाचर थोक, ऊठ्यौ मनु फूल कै नील असोक ।
रूप्यौ रन तीरन ताक तुरंत, कुप्यौ मनु कल्प के काल क्रतंत ॥२७९२
लखावत लोचन रंगत लाल, बढ्यौ अभिअन्तर बैर बिसाल ।
चल्यौ सोई पायन चाल चढ्योह, भयौ मुहजेज मरोरत ब्रौह ॥२७९३
बिचछछन तिछछन दिन्नैऊ बाँन, लगे तन जायकै राँम निदाँन ।
सब रघुवीर लगे सरसाय, सरोवर जेम भरै धन छाया ॥२७९४
लखे अवधेस गये तन लाग, जताय न खालीय कोनहु जाग ।
प्रकंपोय नाहिन पीरुख पीन अखंडत मंडत जुद्ध अहीन^{१६} ॥२७९५
सिलोचय^{११} पायन रोप सधीर, रहे रनखेत खरे रघुवीर ।
प्रहारन लागेऊ राँवन पेख, बराबर गारधपछ्छ बिसेख ॥२७९६
जिही सर राँवन रोकत जाय, संभारकै चाँप बढ्यौ सरसाय ।
हीयै रघुवीर कै दीन हजार, सबै सर सिष्ट सुवार-सुवार^{१२} ॥२७९७

१- प्रलयकाल की अग्नि । २ दीपक । ३ प्रलय । ४ भयानक । ५ आजानु ।
६ छाती । ७ तीन । ८ बहतर । ९ चमड़ी । १० यथावत = पूर्वपराक्रम से ।
११ पर्वत । १२ सम्मलाकर ।

तहाँ सर लाग कळ्यो रसतेज^१, रसांयन माट फुटी रंगरेग ।
 सुसोभत स्याम सरोर सुवास, प्रफुल्लत मांनहु बृछ्छ पलास ॥२७६८
 लखे सब गात भिदे खल लोह कीयो तब राघव दाखून कोह ।
 ऊतें गढ-लंक पति अनखाय, अरयो रन दाखून चाप ऊठाय ॥२७६९
 ऊभें कर मारत तोर असंख, ऊठी जहाँ छाय अंधारीय अंख ।
 छिपे बिव बीर कलंबन^२ छौंह, बकारत बोल ऊठावत बांह ॥२८००
 कीयो रघुनायक क्रुद्ध कराल, हसे तब रांवन को लख हाल ।
 बिलछ्छन नीत करूं कहा बोध, बिना हम जांनेऊ कीन बिरोध ॥२८०१
 प्रीया मम वास ईकंतमें पाय, छिपायकें आपुन लीन चुराय ।
 पराक्रम तोहि परी पहिचांन, भग्यो परिपंथीय^३ लै निज भौन ॥२८०२
 कुकर्मन कारक तूं मति क्रूर, सुगृह कों आय बन्यो अब सूर ।
 करयो गुरू कुक्कर कों ईह काज, लगै नहि तोन्हीय कों हीय लाज ॥२८०३
 बिना पति स्याहिक^४ और की बांम^५, टँटोरत केस भंभोरत ताम ।
 ईही पुरसारथ मांनत आप पराक्रम तोर लख्यो परताप ॥२८०४
 ऊपज्जीय तीहि ईतो अहंकार, अनच्युत^६ कांम लहै अधिकार ।
 लग्यो फल ताहीय को ईह लेहु, गहो अब एकपदी^७ जम गेह ॥२८०५
 जहाँ खर आद जुहारहु जाय, सबें सुत बंधव कों समुभाय ।
 मिलो अबलंबत^८ होय मुकाम, कछू ईहां नाहिन तोसन कांम ॥२८०६
 दसू सिर कुंडल जुक्त दिखात, निरंधर^९ होवहि आज निपात ।
 फिरं चहु औरन ऐव फिरंड^{१०}, जँभोरहि आंतन गिद्धन भुंड ॥२८०७
 ईती कहि बांनन चाप ऊभेल, पराक्रम रांवन को दीय पेल ।
 मनोरथ मारन कारन मंड, प्रगट्टीय आय पराक्रम पिंड ॥२८०८
 ज्युहो बढ अखन सखन जोर, उदें सुभ-सूचक वाढेऊ और ।
 मंडी रघुनायक तोरन मार, सलंगम^{११} हाथन लीन पहार ॥२८०९
 करो खलपं मिल बृष्ट करूर, पखानन चांनन की भरपूर ।
 घटा घन मंडीय घायन धूम, धरा असमांन ऊमंडीय धूम ॥२८१०
 मुक्यो मद छांह परी जनु नीच, बिहव्वल होय गयो रन बीच ।
 गहै कर लस्तक मुष्टीय गात, चिमंडीय वांन सक्यो नहि चाढ ॥२८११

१ रक्त । २ बाण । ३ चोरी से । ४ सहायक । ५ स्त्री । ६ अनुचित ।
 ७ मागं । ८ शीघ्र । ९ निराधार । १० स्यार । ११ वानर ।

दोहा

रघुबर देख्यौ राँवनहु, महां थकत मत मोह ।
 कीयो धरम पहिचान कर, अवसर जाँन ऊपोह^१ ॥२८१२
 लख्यौ सूत लकेस कौ, मुरछागत मन मुद्ध ।
 कीयो निकारौ रथ क्रमन, जिह टारौ दै जुद्ध ॥२८१३

छंद द्वै-अखरी

जब मुरछागत जानेऊ जाकौं, ताकौं सूत गयो लै ताकौं ।
 बाहर जाय लंकपत बोल्यौ, खल ह्वै क्रुद्ध मरम हीय खोल्यौ ॥२८१४
 ऊरजस हीन गन्यौ मुह^२ ऐसौ, जीव छुद्र असमर्थ हो जैसौ ।
 सत्यहीन अथवा नारी सम, हीय डरपोक न जाँन लयेऊ हम ॥२८१५
 अख छाँड नहि भयौ ऊदासी, तज पुरषारथ कहा मति त्रासी ।
 अरि सनमुख सौं टारघौ ऐसौ, जाँन बिकल कातर जन जैसै ॥२८१६
 बहुत दिनन सौं सुजस बटोरा, मेट करघौ जबही रथ मोरा^३ ।
 ईधक बात कहा कहूँ अनारी, खेत बीर तज करी खवारी^४ ॥२८१७
 मिल्यौ मोह लख बैरी मेरी, तिन सतकार करघौ कछु तेरी ।
 भयौ सूत तू दुसमन भाई, सुहिदपनै की तजी सगाई ॥२८१८
 खायो लून बहुत दिन खोये, बीज कुकर्म अंतपे बोये ।
 बैरी सनमुख खरौ बकारे, तू मेरी जहाँ तै रथ टारै ॥२८१९
 ईह तेरी मति देख अघायौ, ले जावहु जहाँ तै रथ लायौ ।
 निज कानन कथ सुनी नियंता, ऊर बिचार सब आदहु अंता ॥२८२०
 करी अरज दसकंधर काजा, मै अजाँन नाहिन महाराजा ।
 मत कछु बिगत भई नहि मेरी, घट में भीत लही कहा घेरी ॥२८२१
 सूढ भयो नहि नहि मतवारौ, वृद्ध भयो नहि नहि मै वारौ^५ ।
 कीय सतकार सत्रु मोहि कंस, अनुचित बात ऊचारत ऐसै ॥२८२२

काय पवित्र आचमन कीनौ, लरन हेल कोडंड कर लीनौ ।
 ईत मुनिराज सिधाये आगै, लखन राँम लरनै फिर लागै ॥२८५१
 ऊत दसकंधर बीर-अखारै, आयौ समरख^१ छाय अपारै ।
 श्री सूरजनाराँयन स्नाथी, हेर कह्यौ लंकेस हराँमी ॥२८५२
 राँम प्रहारहु याकौ रन में, मत बिलंब कीजे कछु मन में ।
 देवन कौ निसदिन दुखदाई, त्रास देत सीता अतलाई ॥२८५३

दोहा

मुनि अगस्त अनुकूल मति, साधन कीय श्रीराँम ।
 सूरज कौ बर तिह समय, भयौ साहाँ अभिराँम ॥२८५४
 ईह पावन ईतीहास कौं, काँन सुनै जौ कीय ।
 सूरज नाराँयन सुलभ, जाहि निवाजै जोय ॥२८५५

छंद त्रोटक

रथ फेर फिरयो लख राँवन कौं, समल्यो घन माँनहुँ साँमन^२ कौ ।
 फिर ऊपर दिग्घ ध्वजा फरकै, धुन नेमीय सौं पुहमी धरकै ॥२८५६
 केऊ किकनी बीच मढी करीया, भनकार बजे रव भल्लरिया ।
 मिल दीपत कंचन मालन की, लड़ बीच लगी मनि लालन की ॥२८५७
 जिह मेचक^३ रंग तुरंग जुपे, चल चंचल देख कुरग छुपे ।
 भय दायक आयुध भार भरे, जिह ऊपर नग्न अमोल जरे ॥२८५८
 द्रुत व्यदुतयाँ^४ तिनकी दमकै, चपला जनु वहर में चमकै ।
 लग लस्तक मुष्टीय चाप लीया, दुजराज^५ दिपै तिथ ज्यौं दुतीया ॥२८५९
 सर स्वर्न पँखारन हाथ सभै, तेऊ सिजनी सीस चढाय तजे ।
 लग धेक चले ईक लारन कौं, धुरवा^६ जनु छोरत धारन कौं ॥२८६०
 रघुनाथ लह्यो खल के रथ कौं, समुभाय कह्यौ हरि-स्वारथ^७ कौं ।
 केऊ बुद्ध पुरंदर संग करे, अरि पूरब देवन न लाग अरे ॥२८६१

१ शीघ्र । २ भायस्य । ३ स्वाम । ४ सू. प्र. = अस्पष्ट, विजली । ५ चन्द्र ।
 ६ मंत्र । ७ रथ के नागिन । ८ दैत्य ।

गुनवंत प्रवीन वरिष्ठ गनौ, परचाय कहै कहा सूतपनौ ।
 मग बाँसी-कोर^१ मिलावत है, अत आतुर सौं खल आवत है ॥२८६२
 तुमकोँ हमकोँ लहि हाथ तरै^२, केऊ दाव विचार कै घात करै ।
 ईह बात कौ जाँनहु सार ईही, निरभै हुय बैठहु साथ नही ॥२८६३
 अब लै चलीयै रन अंगन कौं, तुम तेज सौं हाक तुरंगन कौं ।
 रथ सौं रथ जोर मिलाय रमै जय और पराजय तोहि जुमै ॥२८६४
 रसमी^३ थिर चित्त सँभाय रहौ, गत ढील करौ कहु ताँन गहौ ।
 मग ऊरध अद्ध विचार मही, सम अस्म^४ ऊतार चढ़ाव सही ॥२८६५
 द्रग दै कर लेखन देखन में, बरताव प्रभाव बिसेखन में ।
 ईतने तुम काम धरौ ऊर में, करता रन चाप गहूँ कर में ॥२८६६
 घहराय घटा चढकै घन की, सरसाय कै आवत साँमन की ।
 परवाह प्रचंड वहै पवना, गहि बद्धर गैल करै गवना ॥२८६७
 ईन येक ही साथ ऊड़ावहुगौ, जब ही रन में जुरजाबहुगौ ।
 रथ और तुरंगम फेर रथी, पुर^५ होय बरंगन^६ लंकपती ॥२८६८
 परहै धर^७ सीस परेखहुगे, लरनौं हमरौ सिध लेखहुगे ।
 सुन चालेऊ हाक सतंगन कौं, पुरहूत कौं सूत पमंगन कौं ॥२८६९
 रघुनायक बायक^८ ऐम रुची, खल खेलन खगन गग खिची ।
 रथ राँवन बाँस करचौ रुख में, परबीन सबै बिध पौरुष में ॥२८७०
 पवमाँन गही रुख याँन पई, रज ताहि कै ऊपर छाय रही ।
 क्रतु^९ मातुल राँम लखी करनी, ऊर ऊक^{१०} मथाँन भयो अरनी ॥२८७१
 करकै रिस चाप गह्यौ कररौ, गुन ताँन कै बान करचौ गररौ ।
 रघुनाथ लखगौ खल रोस-रतौ, मन राँवन मारन कीन मतौ ॥२८७२
 लख चाप पुरदर हाथ लीयो, हट क्रुद्ध भूलाभूल होय हीयो ।
 जय की बिब आस करै जुरकै, मनु भीन भुजंग जुरे मुरकै ॥२८७३
 सर येक पै येक सँभारत है, भूहरात मनौ विष भारत है ।
 किधु सिध जुरे किधु दौय करी, पुरहूत मनौ दनु रार परी ॥२८७४
 बढ देवन सिद्ध बिसेखन कौं, रिखी चारन हू अवरेखन कौं ।
 अचराँन के अंबर याँन अरै, कुसलाधिप की जय चाह करै ॥२८७५

१ बायें किनारे । २ नीचे । ३ बागडोर । ४ असम=विषम । ५ शरीर । ६ विचर्या
 ७ धड़ । ८ वाक्य । ९ कार्य-कुशलता । १० अग्नि ।

हित की करत अहित मत हेरहु, फँती समान निजर नहि फेरहु ।
 आद प्रभाव सुभाव अही कै, उसै पिवावत दूध दही कै ॥२८२३
 ईहै बिसय मुँह गनत अनारी, हीन दसा कछु भई हमारी ।
 घोर जुद्ध कौ जोर घनेरी, भये अमित आयुध भटभेरी ॥२८२४
 भए अमत घोरन^२ तन भीनी, प्रबल बह्यौ परवाह पसीनी ।
 विगत भई सुरभी^३ जनु बलसौं, ज्युँ दुरभिक में भीजै जलसौं ॥२८२५
 ऐसी गत में देखी आँखन, पंखी हीन भयो ज्युँ पाँखन ।
 ईन सिवाय कछु लखे अमंगल, जाव निवासी जेतें जंगल ॥२८२६
 बोल असूचक रहे जु बाँनी, जब में घटी असुभ जीय जाँनी ।
 स्वारथ^४ के ईक करम सयानै, जीय सौं बात विचारहु जानै ॥२८२७
 देस काल रथरोही देखै, बेला लक्षण आद बिसेखै ।
 हरख खेद बल निबल हेर कै, निज कारज बिघनन निबेर कै ॥२८२८
 मारग ऊँच नीच अनुमानै, पुन सम बिसम गरत पहिचानै ।
 अवसर देख सत्रु दिग आबै लख बिपरीत दूर लै जावै ॥२८२९
 पीछे आगे कहु पसवारै, बेला देख लहै बिचवारै ।
 स्वारथी कारज सबै सयानौ, जो ऊपदेस गरु मुख जानौ ॥२८३०
 कीयौ काम में हेत क्रतारथ, सबही राज बिचारै स्वारथ ।
 मुरछागत लख कोऊ रिपु मारै, आय अचानक बीर-अखारै ॥२८३१
 टारचौ रथ तातें दै टारी, स्वाँमी कारज कीयौ सुधारौ ।
 भयो चेत अब मुरछा भागी, लरन हेत अभिलाखा लागी ॥२८३२
 अज्ञा होय सोय अनुसरहुँ, कहहु नाथ कारज पुन करहुँ ।
 सुन स्वारथि के वचन सयानै, जीय ऊपकारक सब बिध जानै ॥२८३३
 भये प्रसन्न राँवन ईम भाखी, ऊर चिता समहर^५ अभलाखी ।
 रन में बहुर दिखावहु रघुवर, पुन बल जाय लखहु सब परकर ॥२८३४
 ईतनी कहि ईक हाथ अलंकरत, बगसे रीभ ताहि बहुरें बित ।
 बिबध सुनत लंकेसुर बोली, हय हंके हुय सूत हरोली^६ ॥२८३५
 आयेऊ राँमचंद्र जहाँ आतुर, चपल चलाय पवन गति चातुर ।
 राँवन देख खरी रघुराया, ऊदित भये रन चाप ऊठाया ॥२८३६

देवन राँम भेव दरसाये, अवसर जिह अगस्त मुनि आये ।
 महाँबाहु रघुबीर सुगठमनि, सुन धारहु धीरज कर साधनि ॥२८३७
 आदितहृदयसतोत्र ऊजागर, ईहै पाठ कीजै गुन आगर ।
 जीतहुगे सब सत्रुन जासै ईही समर में जाहि ऊपासै ॥२८३८
 पुंन्यदाय सोई नास रहित पुन, सिव सरूप जयदायक जन सन ।
 सत्रु विनासक करन सु धारी, ऊर बिसवास जगत ऊजयारौ ॥२८३९
 जाप करहु त्रय-तापन^२ जीत हु, अखल जगत मँह होहु अभोत हु ।
 हरन असंगल मंगल हेतू, साधन सकल धरम द्रढ-सेतू ॥२८४०
 चिंता सोक मिटावन चित कौं, वरधक आयु बढावन बित कौं ।
 ऊतंस रूप सदाँ अनुसरहीं, भुवनन बीच जोत नित भरहीं ॥२८४१
 भास्कर विवस्वाँन नाँसन भज, रघुवर भेटहु दुख अगाध रुज ।
 किरन ऊदोत प्रकासन करता, हेत जगत सो तम-गुन^३ हरता ॥२८४२
 सुर आसुर गन मनुज सहायक, नमसकार करनै के लायक ।
 पूजा करतन ताप प्रहारौ, निगम अगम प्रत ईह निरधारौ ॥२८४३
 किरन प्रकासन करकै केते, जढ जंगम रक्षक जग जेते ।
 पोखत निसदिन सबही प्राँनन, आदहु अंत सिद्ध अवसाँसन ॥२८४४
 ब्रह्माँ बिसन प्रजापत बासव, बहन कुबेर सकंद चंद्र भव^४ ।
 पित्र पती बड़वासुत पावक, दैत्य देव बसु साद्य मनुदक ॥२८४५
 पाँन प्रजा क्रम काल परेखौ, द्रगन ज्ञान सूरज मय देखौ ।
 करता खट रितू कारज कारन, वरष मास दिन माँन विचारन ॥२८४६
 जग के ऊतंस क्रम^५ है जेते, येक सूर आखत है एते ।
 जनन हेत ईह नाम जनावत, गहहु ध्यान धारन में गावत ॥२८४७
 सुन रघुबीर कह्यौ मुनि सेती, सो सतोत्र बिध पूर्वक सेती ।
 करकै कृपा अनुक्रम कहीयै, लाभ समर जय ज्याँनकी लहीयै ॥२८४८
 ईह मुनकै मुनि कीय ऊपदेसा, नीत निपुन श्री अवध नरेसा ।
 धीरज कर सतोत्र उर धार्यौ, आद अंत बिध जुक्त ऊचार्यौ ॥२८४९
 ठाडे भये समुख ईक ठौरै, जुगल पाँन अंजुली पुन जोरं ।
 तीन बार जप करैऊ तहाँ ही, मुनि की मत अंकूल महाँ ही ॥२८५०

१ आराधना कर के । २ तीन ताप—दैहिक, दैविक, भौतिक । ३ अंधकार=अज्ञान ।

४ महादेव । ५ काम=कर्म ।

भुक् राँम कै ऊपर फूल भरी, करसौँ सब देवन साथ करी ।
 रसतेज^१ गिरावत राँवन पै, धरपै पुरपै खल धाँमन पै ॥२८७६
 ऊलकाँन गिरी केऊ अम्बर सौँ, कढ सख परे केऊ कम्मर सौँ ।
 बढ वाँईय और बधूरन के, ध्रुव ढेर परे ऊड़ धूरन के ॥२८७७
 द्रुत राँवन को रथ दौरत है, भुक् गिद्धनीयै भुक्भोरत है ।
 फिर बोलत अगृ फिरंडनीयाँ^२, मुख ज्वाल का रालन मंडनीयाँ ॥२८७८
 दिग दाह भयो फिर लक दिसा, रव घोर रचावत धूज रसा ।
 ऊतपात लखे निसचार अनी, बढकै हथ ब्राहन जाहि बनी ॥२८७९
 गत वाँह सौँ रथ्य करै गवना, प्रतकूल प्रवाह बढै पवना ।
 जुत स्वेद तुरंगन जंघन में, दरसावत आग दवंगन^३ में ॥२८८०
 ऊमड़े पुन आँखन आँसुरवा, कढ कोयन नाल मनौ करवा ।
 सुभ सूचक राँम भये सब ही, जुध कारन गौँन करचौँ जबही ॥२८८१
 परतीत भई जय पावन की, निसचं खल खेत नसाँवन की ।
 मन घोरन मातुल मोद मई, जिह रीत प्रसन्नहु राँम जई ॥२८८२
 भयदायक संगर फेरे भिरे, द्रग देखत सैनक साथ डरे ।
 निसचार तथाँ वनचारन की, हुव वाकन हाक हजारन की ॥२८८३
 ऊड़ खेह छई चढ अंधर कै, समल्यौँ घन माँनहु संवर कै ।
 फरखै घनु सिजनी काँनन लौँ, वरखै बहु आयुध वाँनन लौँ ॥२८८४
 अंधियारी भई चहुधोरन में, भर वाँनन की भुक्भोरन में ।
 भट केक भुजांतर^४ भेट भिरे, कपि और पलावन जुट करै ॥२८८५
 बिललावत फातर मग्न वहे, रनधीर किते पग माँड रहे ।
 कल^५ देख रहे केऊ कौतुक को, घमचङ्गन भेटे हीयै धक कौँ ॥२८८६
 सुभ राँम लखे चख सूचक कौँ, ऊत राँवन देख असूचक कौँ ।
 जीय में ईक आस बढी जय की, पर येऊन हाँन पराजय की ॥२८८७
 भये येक तजे ईक भीत भरे, पुर^६ तेज बढचौँ ईक मंद परे ।
 चिर आयु लखी ईक आयु छुटी, मुद चाह बढी ईक चाह मिटी ॥२८८८
 अततासीय^७ राँम रहे अरकै, निरगृयंन काज निसाचर कै ।
 कोय राँम मती वयकी करनी, मन राँवन जान लयो मरनी ॥२८८९

१ रस । २ अम्बर की भाँसे । ३ आवाज । ४ टाँती । ५ युद्ध । ६ गरीर ।
 ७ अततासीय ।

दोऊ पाँव आप दिखावन कौं, दोऊ ओर करै केऊ दावन कौं ।
 तहाँ राँवन रोख हीयै तमक्यौ, भहरावत चाप कलंब भुक्क्यौ ॥२८६०
 धुज काटन ऊपर धंख धरी, क्रतहस्त^१ असंखन मार करी ।
 द्रढ संध पुरंदर सिदन की, बरजोर करोरन बंधन की ॥२८६१
 सर मारन सौं नही तूट सकी, जिह देखत राँवन बुद्ध जकी ।
 बदलौ तिह लेवन राँम बढे, केऊ तिछ्छन बाँन कलाप^२ कहे ॥२८६२
 अहि-आकृत^३ लै अवलंबत^४ कैं, गुन ताँन जहाँ कररी गत कैं ।
 सर येक दीयौ दसकंधर कैं, निभ सिष्टु मिलाय निरंधर कैं ॥२८६३
 धुज दूट परी रथ बीच धरा, पुन राँवन देख हीयै प्रजरा ।
 तन ताक कजाक तुरंगन कैं, गहि चाप कजंब दये गनकैं ॥२८६४
 अटकी जिह पख्खर^५ बीच अनी, घट नाँहिन बाढीय पोर घनी ।
 निख्याध लखे हय नैनन सौं, बतराय अभीक्षन बैनन सौं ॥२८६५
 घहराय घटा जिम ताहि धरी, भहराय कलंबन कीन भरी ।
 केऊ जालक^६ काँम लगौ करनै, नहि जाहिकौ होय सकैं निरनै ॥२८६६
 परघातन^७ और गदा फरसा, बहु मूसल की सिल की बरसा ।
 उहु और तै सुलन चक्रन की, बढ मार कुटार स बक्रन की ॥२८६७
 भयकार समर्द^८ अपार भयौ, रघुनाथ संभारत साथ रहौ ।
 कछु राँवन अगू गयौ कढकैं, बहु बंदरी सैन दिसा बढकैं ॥२८६८
 बहु मार करी तहाँ बाँनन की, पर त्राहि परी कपि प्राँनन की ।
 जितही तित बाँनन ज्वाल जुरै, पुहमी नभ आग दबग परं ॥२८६९
 रथ हाक तुरंगन राँम रूपै, करी ऊपर ज्यूँ मृघराज कुपै ।
 अपनी गन फौज ऊबारन कौं, मन धंक धरी खल मारन कौं ॥२९००
 तन ताक हजारन बाँन तजे, ईक येकन आपुस में अरभे ।
 अवकास रह्यौ न अकास ईतौ, पवमान न लागत गौंन पतौ ॥२९०१
 बरबीर ईतै रघुनाथबली, चढ खेत ऊतै दसकंध छली ।
 सभ हाथन बीच सरासन कौं, बरसावत जावत बाँनन कौं ॥२९०२
 ईक नाँह हटे ईकसौं अरकैं, क्रतहस्त समर्द-कला करकैं ।
 मन मोद जुतै रनखेत मँही, रुख येक बरोबह बाँ तरही^९ ॥२९०३

१ निपुण । २ तरकस । ३ सर्प की आकृति के । ४ शीघ्रता । ५ ऊपर डालने का
 बन्ध = पाखर । ६ माया का जाल । ७ लुहानी । ८ समर = युद्ध । ९ उसी प्रकार ।

केऊ राँवन के सर राँम कटे, द्रुह राँवन राँमहु रान दटे ।
 पुहमी पर छायाकै जाय परे, जहाँ राघव कै ऊर क्रोध जरे ॥२६०४
 तहाँ राँवन ताक तुरंगन कौं, अत बाँन प्रहारीय अंगन कौं ।
 बदलौ तिह राँवन वारन कौ, वह लागीय^१ बाह बिड़ारन कौ ॥२६०५
 भयकार महरथ येक भयौ, रन बीच बराबर हाथ रह्यौ ।
 द्रग देखत ताहि करेज दहै, कर ता रन की कहा बात कहै ॥२६०६
 दहु ओरन बीरन दावन की, जुरजावन औ फिरजावन की ।
 रथ बाँमहु दछ्छन रोकन की, बढ सीध रु बंक बिलोकन की ॥२६०७
 विध स्यंदन मंडल बंधन की, सरसै धनु बाँनन सधन की ।
 रथ सूत रथी रचना रचकै, जय आपन आपन की जचकै^२ ॥२६०८
 बढ येकन येक बिचारन में, मन येक की येकन मारन में ।
 रघुनाथ प्रहारत राँवन कौं, निसचार हू राँम नसावन कौं ॥२६०९
 ईक पै ईक मार करै ईधकी, बरजारन घोर घमे बिधकी ।
 बिन गारधपद्छ करै बरसा, दुई रूप बलाहक कै दरसा ॥२६१०
 ईक सौं ईक जाय^३ समीप अरे, भरपूर ऊभें दिस चाहि भिरै ।
 हय प्रोथन प्रोथन भेट हुवा, मिल स्यंदन सिंदन काग-मुहा^३ ॥२६११
 पट जूट पताक पताकन सौं, अवलोकन आँखन आँखन सौं ।
 अवधेस समीप लख्यौ अरि कैं, सभ रोख चढाय लये सर कैं ॥२६१२
 घट ताक दये चहु घोरन कौं, धर चाल गये सोई धोरन कौं ।
 फिरकै रथ लै फननेटीय कौं, चढ चाक सभारीय चैटीय कौं ॥२६१३
 अत राँवन क्रूढ़ भयौ ऊर में, मगरूर सौं बाँन दये मरमै ।
 रघुनायक नाहि गने रन में, मुद वीरता छाया रही मन में ॥२६१४
 द्रिह मातुल कैं तन मार दई, कर बज्र प्रहार प्रकार कई ।
 वपु मातुल हू अतसाह बढ्यौ, चलकै खल छातीय जाय चढ्यौ ॥२६१५
 तहाँ राँवन कौं लहि हाथ तरैं, केऊ धात जहाँ रघुनाथ करै ।
 बरसाय हजरन बाँनन कौं, अत दाव करै अवसाँनन^४ कौं ॥२६१६

अपने रथ ऊपर क्रुद्ध अट्यौ, जब राघव सौ खल जुद्ध जुट्यौ ।
 गहि मारेऊ मूसल औ गदा, परघातन^१ घातन मृत्युप्रदा ॥२६१७
 भरपूर भयानक जुद्ध भयो, रव मारहु मारहु छाये रह्यौ ।
 बरखात भयंकर बाँनन की, पर हाँन करी केऊ प्राँनन को ॥२६१८
 हल चत्तीय सात^२ हिलोरन सौं, बढ सागर की जल बोरन सौं ।
 पुन सात पतालहु हूक परी, केऊ जंगल जीवन कूक करी ॥२६१९
 अरु कप ऊठी बहुधाँ अचला, क्रमसाखीय^३ की भई मंद कला ।
 थिर होय प्रभंजन गौंन थके, ध्रुव पन्नगराज सहस्र धुके ॥२६२०
 रन गंधूव किन्नर देख रहे, सुर सिद्धह नागन आद सहे^४ ।
 द्वज स्वस्ति ऊचारत आसिष दे, रघुनाथ कौ आसिष हू रिख दे ॥२६२१
 जय चाह करै सोई व्योम जुरै, निसचार-पती जय कौ निदरै ।
 हुय नाँहिन नाहिन होवहिगे, गुनि कीरत कौ पुन गोवहिगे ॥२६२२
 सम सागर जाँनहु सागर है, अरु व्योम व्योम सौं-ऊजागर है ।
 रन राँम ज्युँही ईक राँमहि कौ, हठ राँवन लंक के स्याँमहि^५ कौ ॥२६२३
 लख देव नदेवन की ललना, किन हूँ न परी पलहू कलना ।
 ईह बात कहै सब आपुम में, समुदाय के भाय की नाहि समै^६ ॥२६२४
 बर कीरत हू रघुबंसिन की, परताप सौं राँम प्रसंसन की ।
 जिह चाप गह्यौ कर क्रोध जुतै, अहि स्पीय बाँन संधाँन ईतै ॥२६२५
 क्रतहस्त सँवार ॥ प्रहार करयो, पर राँवन कौ सिर तूट परचौ ।
 जुत कुंडल हू सिरश्राँन जही, त्रहु लोक निवासीय देखतही ॥२६२६
 भय^७ दूर जुँही सिर फेर भयो, निरख्यौ सबही ईह ख्याल^८ नयो ।
 अत आतुर सौं रघुवीर ईतै, पुन कीन प्रहारहु सोस प्रतै ॥२६२७
 कट^९ दूसरी बार कलेवर सौं, जोई पार ऊपार भयो जरसौं ।
 भटक कटक सोई फेर जन्धौ, कर तारन राँवन ताँम क्रमौ ॥२६२८
 अतपाटत^{१०} हूँ सिर ऊगत है, पुन राँम कौ दाव न पूगत^{११} है ।
 दसरथ के नंदन देख दसा, गत अद्भुत संसय चित गृसा ॥२६२९
 खर दुखन आद हने खल कौं, दीय दंड निसाचर के दल कौं ।
 त्रिय-लंपट राँवन तारन सौं निसतेज भये किहू कारन सौं ॥२६३०

१ जुहागी । २ साथ । ३ सूर्य । ४ सहित । ५ स्वामी । ६ चैन । ७ हुआ ।
 ८ खेल । ९ मू. अ. कर । १० अलग होते ही । ११ पूर्ण ।

ऊर सोच भयी अवसासन में, रघुनाथ तऊ न हटे रन में ।
 धर धीर सरासन कौं धरकै, भुजअंतर वान दये भरकै ॥२६३१
 पुन राँवन क्रुद्ध बढ्यौ प्रबला, सभ मूसल सूल जुतै श्रबला ।
 निज घात करै रघुनायक कौं, सरसायक^१ घायक सायक कौं ॥२६३२
 कवहूँ पृहमीन अकाश कहूँ, सभ कानन पढवय सीस सहूँ ।
 दिन सात भयी अत दारुन कौं, निसद्योस^२ सदा निगधारन कौं ॥२६३३
 ऊनमेख रह्यौ नहीं बंध ईतै, परभातहु फेरहु साँभ प्रतै ।
 द्रग पूर लख्यौ सब देवन हू, अरु नाग पिसाच अदेवन हू ॥२६३४
 मघवा रथ प्रेरक मातुल कौं, कछु नाहि परी पलहु कलकौं ।
 अवसान दयो अवधेसुर कौं, अव क्याँन^३ प्रहारत आसर^३ कौं ॥२६३५
 दरसाव सुन्यौ हम देवन सौं, भजमाँन विचारहु भेवन सौं ।
 वरतावहु काल विसेसन कौं, खल आय गयो रन खेसन कौं ॥२६३६
 सर वृह्य को साँध सरासन पै, अतसै द्रढ होवहु आसन पै ।
 करीयै न विलंब क्रपाल हू, अगवाँन खरी ईह आसर हू ॥२६३७
 सुन मातुल श्राँन सिखावन कौं, प्रभू वाँन गह्यौ कर पावन कौं ।
 महाराज अगस्त लयो मिल कौं, भहरावत तेज मई भलकौं ॥२६३८
 विध^४ इंद्र कौं हेत दनावट कौं, सबही गत खेल सभावट कौं ।
 मुनि के सिर ऊपर कीन मया, तिनकौं सुभ कारन दीन तथा ॥२६३९
 रिखीराज^५ दयो रघुराजहु कौं, सवता-कुल^६ के सिरताजहु कौं ।
 वनवास मिले जब घाँम विचै, खल प्राँन कौं हारक वाँन खिचै ॥२६४०
 पवमाँन कौं थप्पीय पंखन कौं, अरु पावक हू जग-अंखन^७ कौं ।
 गहिक पव^८ थप्पेऊ गाँसीय पै, वर अंबर कौं गुन वाँसीय पै ॥२६४१
 मंदराचल भेर गराईय पै, गरपापन कौं लहि गोईय^९ पै ।
 यह तेज मई जिह गाज^{१०} बने, सब तार सँवार सुवन सने ॥२६४२
 जट जंगम तेज जितौ जग कौं, नद और नदीस तथाँ नग कौं ।
 गहि के निभ सार तथा गुन कौं, घुर धोर कठोर कर धुन कौं ॥२६४३
 पदनामन^{११} स्वाम गहेत पनी, गत जाहि भयंकर रूप गनी ।
 शरपाप जुने जिम ज्यान कटै, विकरान अपूरव चाल बढै ॥२६४४

१ सरसायक । २ नद्योस । ३ अमुद = रायक । ४ अह्य । ५ अगस्त्य ऋषि ।
 ६ कृष्णस्य । ७ अंखन । ८ पव । ९ गृह । १० पंख । ११ सप ।

सतकोटीय^१ ज्याँ द्रढ संध सदा, गढ पब्बय^२ काट करै गिरदा ।
 गनती कहा कुंजर घोरन की, बल सिंदन साज बिथोरन की ॥२६४५
 चरबी रुच कौसक^३ चखन^४ की, पुन प्रांनन पौन विपखन^५ की ।
 भख^६ काकन गिद्धन कौ भरता, दल दुज्जन के बल कौ दरता ॥२६४६
 जम ज्याँ भयदायक जीवन कौ, पर बीरत^७ की रत^८ पीवन कौ ।
 चित मोद करै बनचारीय^९ कौ, रघुबंसिन के रखवारीय कौ ॥२६४७
 गुन चाप चढाय भुकाय गह्यौ, रसमी^{१०} रब^{११} तेज प्रकास रह्यौ ।
 पव पब्बय तोरन पछछन^{१२} कै, तपतछछ^{१३} लह्यौ गहि तिछछन कै ॥२६४८
 विध वेद के मंत्र विचारन सौं, सुध सिष्ट मिलाय सु मारन सौं ।
 तन राँवन ताक कै राँम तज्यौ, गहरी धुन मेघ ज्युही गरज्यौ ॥२६४९
 हीय लंकपती सोई पार हुवौ, महा राकस^{१४} राँवन खेत मुवौ ।
 महाराजक फेर कलाप^{१५} मँही, तितहू प्रबस्थौ सर बार तँही ॥२६५०
 धर राँवन आय परचौ धर हू, केऊ आयुध छूट गिरे करहू ।
 पुन राँवन देख परासन^{१६} कौ, निसचार लगे केऊ नासन कौ ॥२६५१
 लखकै बनचारन^{१७} लार लई, द्रढ^{१८} मूसल हू सिल मार दई ।
 पहुँचे सोई जायकै लंकपुरी, कल-रावत^{१९} क्रंदत^{२०} बूँबकरी ॥२६५२
 कुसलात ऊचारत भाल^{२१} कपी, जय राघव देवन साथ जपी ।
 बहु फूलन कौ बरसावत है, गुन राघव के पुन^{२२} गावत है ॥२६५३
 सुब लंक निसाचर स्वाँमीय कौ, निरगुंथन^{२३} राँवन नामीय^{२४} कौ ।
 दिल अंतर चारन देवन कौ, भल मोद प्रचारीय भेवन कौ ॥२६५४

दोहा

रघुबर राँवन मार रिपु, भूम ऊतारचौ भार ।
 सुर नर मुनि हरखे सकल, नैन निहार निहार ॥२६५५
 सीया सुन्यौ हीय लाग सर, समर मरचौ दससीस ।
 बिजय सुनो रघुबीर की, विध जुत बिसवाबीस^{२५} ॥२६५६

१ वज्र । २ पर्वत । ३ हाड़ । ४ चाखने की । ५ विपक्षी । ६ मोजन ।
 ७ बैरियों । ८ रक्त । ९ वानर । १० रश्मि = किरण । ११ सूर्य । १२ पंख
 १३ इन्द्र । १४ राक्षस रावण । १५ तरकस । १६ मृत्यु । १७ वानर ।
 १८ दृढ़ । १९ बिलखती है । २० रोती है । २१ भालू । २२ मुनि । २३ मरण ।
 २४ नामी । २५ पूर्ण ।

छंद त्रोटक

वध राँवन कौ कीय राँम बली, मुद^१ पाय सबै कपि सैन मिली ।
 हित लायकै चाहि प्रजा हरखी, सुर भूसुर^२ चारन होय सुखी ॥२६५७
 गुन किन्नर गंधर्व^३ गावत है, वर दुंदभ^४ बीन बजावत है ।
 बहु अछछर^५ छाया बिमानन में, तरथेई रचावत तानन में ॥२६५८
 वरखै कर फूलन की बरखां, कल राँवन राँम कहै करखा^६ ।
 वरवीर विराजत राँम बिचै, रमनीय^७ अनूपम रूप रचै ॥२६५९
 रथ में इंद्र अनूप जराव जरचौ, धुज डंड प्रचंडत ऊद्ध धरचौ ।
 हय जूप^८ रहे तिह रंग हरी, कररी गत मातुल बाग करी ॥२६६०
 रथ में रघुनाथ विराज रहे, गुन ताँन सरासन बाँन गहे ।
 जट जूट सुसोभत^९ सीस जटै, अरबिद^{१०} पै माँनहु भौर अटै ॥२६६१
 त्रय भाल में राजत रेख तनी, सत राजस तामस सक्ति सनी ।
 चख^{११} दियोन तै रसवीर^{१२} छुट्यौ, अधराँन^{१३} पै माँनहु आँन अट्यौ ॥२६६२
 विच सोहत दंतन पंत^{१४} बनी, कुलो दाडम की किधु हीरकनी ।
 जय की रुख की मुख जोत जगी, परभा^{१५} रवि पंकज जाँन पगी ॥२६६३
 छिव^{१६} केहर कंधर छाजत है, विच फूलन भाल विराजत है ।
 भुजडंड मनौ गजसुंड भरे, धनुवाँन ऊदंचत हाथ धरे ॥२६६४
 कट खोम^{१७} रज पट तून^{१८} कसै, विच स्वर्न पँखारन बाँन वसै ।
 जय खंभ^{१९} ज्युही^{२०} जुग जंघ जुरी, परपूर समान प्रभा पिडरी ॥२६६५
 रज पाँवन^{२१} में कछु लाग रही, जलजन्म^{२२} विलाग पराग^{२३} जँही ।
 तलवा विच ऊरध रेख तनी, सुल भूम मनौ जय संवलनी^{२४} ॥२६६६
 वपु^{२५} स्याँमल स्वेद की बूँद बनी किधु नील सरोज पै नीरकनी^{२६} ।
 चिव^{२७} राँम की देखन सैन चहै लहरी रव^{२८} जाँन हिलोर लहै ॥२६६७
 प्रनू देवत फिरै ऊलटा पलटा, घन घूम रही जुन लूम घटा ।
 पुन देवत राँवन खेत परचौ, भटमार जिही रन-ताल भरचौ ॥२६६८

१ मोर = प्रमदता । २ वायुण । ३ गंधर्व । ४ नगाड़े । ५ अप्सरा । ६ मार-
 शिपा । ७ रमणीय = सुन्दर । ८ जुते हुए । ९ सुशोभित । १० कमल ।
 ११ काँचो । १२ धीरस । १३ अधरो पर । १४ पंक्ति । १५ प्रभा । १६ छवि ।
 १७ कर्णो शी श्याम । १८ नरकस । १९ जय स्तम्भ । २० समान । २१ पैरों में ।
 २२ शम्भ । २३ पुनरज । २४ नदी । २५ मरीर । २६ श्रोत की बूँदें ।
 २७ मुररस । २८ समुद्र ।

लघु भ्रात बभोखन जाहि लख्यौ, धर धीर रह्यौ तेऊ सोक धिक्ख्यौ ।
परचाय लग्यौ-पिछतावन कौं, रच देत ऊराहता राँवन कौं ॥२६६६
अहो बंधव सूर सुनीत ईला^१, कल कौसल रीत प्रनीत कला ।
दससीस किरौट^२ लगे दस कै, बहुटा^३ भुज बीस रहे बसकै ॥२६७०
मखतूल^४ की सेभ कौं त्याग मही, गम^५ भूलकै दीरघ नोद गही ।
हित बात कही तुमकौं हमनै, सहारौनी मंदोदरि कीन मनै ॥२६७१
कीय राँम सौं जुद्ध अकारन सौं, मृतु होय गये सर मारन सौं ।
घननाद प्रहस्त^६ घमंड धिरे, अतकाय अकंपन बीर अरे ॥२६७२
अहंकार लखौ परनाम^७ ईही, भवतबब^८ दसा ईह भ्रात भई ।
रचना रन आयुध खेल रता, गरुकर्म^९ बिसारद पारगता^{१०} ॥२६७३
नय^{१०} बेद बिचार ऊचारन में, पुन धर्म की रीत प्रचारन में ।
गरुवाई^{११} की सत्य मृजाद^{१२} गई, कछु बंधव तो सन जात कही ॥२६७४
रवि चंद्र गिरे मनु आय रसा^{१३}, दमुना^{१४} भूल सीतल होय दसा ।
गहबीरन कौ ऊतछाह^{१५} गयौ, भर लंकपुरी अंधीयार भयौ ॥२६७५
पथ छोर चले सबही पल में, तुम सोय रहे धरनीतल में ।
नव-पल्लव^{१६} धीरज रूप निरा, सहनार्दय-सोल^{१७} प्रफुल्ल सिरा ॥२६७६
तप धारन सक्ति जिही तन की, जर सूरता पूर रही जिनकी ।
भुव जाहर राखस राज भयौ, द्रुम^{१८} राँम-बयार^{१९} गिराय दयौ ॥२६७७
ब्रहता अरु तेज सदंत^{२०} दुनौ, गरुवाई पिता परीआई^{२१} गनौ ।
वह रति समूह की पीठ वही, जुग कोप प्रसन्नता अंग जही ॥२६७८
दसकंध मयंद-मदंध दसा, रघुबीर पछारेऊ सिंध रसा ।
रसबीर पराक्रम ज्वाल रही, मिल धूम ऊसासह क्रुद्ध मई ॥२६७९
बलकै ज्वल सक्ति छतै बहुरै, जग जाहि हुतासन^{२२} ताप जरै ।
महाँ राकस राँवन तेजमई, जलबाह^{२३} बुभायेऊ राँम जही ॥२६८०
कहनी सुन राँम बभोखन की, जीय की सब जाँन लई जनकी ।
केऊ रीत सौं बोध लगे करनै, निज आँनन राँम जुतै निरनै^{२४} ॥२६८१

१ पृथ्वी । २ मुकुट । ३ बाजूबंद । ४ रेशम । ५ चिन्ता । ६ परिणाम ।
७ भवितव्य = होनहार । ८ विद्या । ९ पारंगत । १० न्याय नीति । ११ बड़प्पन ।
१२ मर्यादा । १३ पृथ्वी । १४ दामिनि । १५ उत्साह । १६ सू० प्र० पलय ।
१७ सहनशीलता । १८ वृक्ष । १९ राँम रूपी वायु । २० सदैव । २१ परंपरा ।
२२ अग्नि । २३ मेघ । २४ निर्णय ।

परचंड^१ भरचौ रसवीर पनौ, घट विक्रम राँवन दिघ^२ घनौ ।
 धर धंख लरचौ ध्रुव धर्म धृती पुन होय निसंखहु^३ लंकपती ॥२६८२
 भवतव्व^४ कौ पाय निचेष्ट भयौ, गरुवाई^५ हु कौ पन^६ श्रेष्ट गह्यौ ।
 सब छत्रीय रीत सनातन कौ, बसु^७ राखत कीरत वातन कौ ॥२६८३
 तिह हेत समद^८ में देह तजै, बिच खेत लहै अथवा क बिजै ।
 दोऊ वात गनौ जसदायक है, बिध नीत परायन वायक^९ है ॥२६८४
 गुनि लोग पवारह गावहिगे, जुध राँवन नाँम न जावहिगे ।
 जिह लोकप सक्रहु^{१०} आद जये, बिजयी त्रयलोकन बोच बहे ॥२६८५
 परसंस^{११} के लायक लंकपती, मृतु^{१२} सोक करै कोऊ मंदमती ।
 ननु आदिक छात्रन नीत मही, करकै निरनौ जिह कथ्य कही ॥२६८६
 महाँ ऊत्तम जुद्ध गनौ मरनौ, कछु सोक नहीं हीय में करनौ ।
 जबही रनअंगन^{१३} जावत है, ईक मृतु लहै ईक आवत है ॥२६८७
 कुसलात रहै दोऊ ओर कही, ऊर सोच बिचारहुं वात ईही ।
 जुध में कोऊ छत्रीय जूझत है, परीआई^{१४} की रीत सौं पूजत है ॥२६८८
 जिह कारन सोक तजौ जीय कौ, हित जाँन बिखाइ तजौ हीय कौ ।
 करनीय जथारथ^{१५} काज करौ, धर धीरज और न चित्त धरौ ॥२६८९
 रघुवीर दई जव येहु रजा^{१६}, तब भूत बभीखन सोक तजा ।
 अरजी रघुवीर कौं कीन ईही, अब तौ करनीय है काज ईही ॥२६९०
 जिह आद पुरंदर^{१७} खेत जये, रन में सोई आपके हाथ रहे ।
 बहु आतिथ दाँन दीये वित कौ, भरपूरन चित्त भरे भृत^{१८} कौ २६९१
 बहु भोग विलास करे विनता^{१९}, हट लाग क दुज्जन कौ हनता ।
 सुखदायक मित्र समाजन कौ, समधी सनमान के साभन कौ ॥२६९२
 कीय होम तथा^{२०} तपसा करनी, त्रिध^{२१} संकर^{२२} हेत कथा वरनौ ।
 कामकांड^{२३} वेदांत विचार करे, परचंड वली रन खेत परे ॥२६९३
 करनी हम चाहत प्रेतक्रीया, द्विद सोच विचारहु नाथ दया ।
 मुरजी^{२४} लख सासन^{२५} माँगत है, पितु मात समंघ^{२६} परांगत है ॥२६९४

१ प्रचंड । २ शीघ्र । ३ निसंखक । ४ नवितव्य । ५ बड़प्पन । ६ प्रण । ७ पृथ्वी ।
 ८ समर = युद्ध । ९ वायव्य । १० इन्द्र । ११ प्रमांसा । १२ मृत्यु । १३ युद्ध क्षेत्र ।
 १४ परंगत । १५ यथाथ । १६ राजा । १७ इन्द्र । १८ नौकर । १९ स्त्रियां । २० सू.प्र.त्या
 २१ मत्स्य । २२ संकर । २३ कर्मसाध । २४ इच्छा । २५ आजा । २६ संबंध ।

विधजुक्त^१ बभीखन की बिनती, समरथ्य^२ सुभाज सदां सुकृती^३ ।
 कहनावत कीन बभीखन कौं, जीय जाँन निरंतर हू जन कौं ॥२६६५
 जबलाई^४ जग बैरीय^५ जीवत है, मन होत विरोध मई मत है ।
 जब जूझ परचौ रन बीच जमी, कीऊ बैर बिचारत क्रूरकमी^६ ॥२६६६
 कुमती अतताई^७ कौ काँम करचौ, हट लाग जिही हम प्राँन हरचौ ।
 पुन तोर हमार सखापन^८ सौं, मम भूत बिचारत हूँ मन सौं ॥२६६७
 सुधरावहु आखर-कौ समीयां^९, करहू बिधवेद सौं प्रेत-क्रीया ।
 जन नगृ^{१०} बुँलावहु जा तन कौं, भट और बचे जिह भूतन कौं ॥२६६८

दोहा

महाँबाहु राँवन मरचौं, रघुवर सौं कर रार ।
 सुनी खबर राँनीय श्रुत^{११}, अंतहपुर आगार^{१२} ॥२६६९

छंद मौतीदाँम

सुनी रनवास में बात सकोय, रही तीय राँवन की जिय रोय ।
 दुरावत लोचन सौं जलधार, भँदोदरि^{१३} आईय गृह मभार ॥३०००
 मिली तीय भुंडन भुंडन मेल, भुकाय कै घूँघट^{१४} के पट भेल ।
 दुखी हुय चालीय ऊत्तर द्वार, परासन^{१५} पीर पुकार पुकार ॥३००१
 खरी^{१६} सब आय भई रनखेत, छिके तन पीव^{१७} लखे बिन चेत ।
 जझोरत नैनन नीर भुरात, कुरंकुर^{१८} नार ज्युही कुररात ॥३००२
 पलोडत चुंबत पाँनन^{१९} पाय, लगावत अंक^{२०} रही लपटाय ।
 लखै कोऊ आँनन की चित्र^{२१} नैन, बिमासत बोलत आरत^{२२} बैन ॥३००३
 कोऊ लख कुंडल और किरौट, पुकारत रोय भुजंतर^{२३} पीट ।
 गरै बिच डारत बाँह गहंत, करौ हित दात ऊठौ किन कथ^{२४} ॥३००४

१ विधियुक्त । २ समर्थ । ३ अच्छे कार्य करने वाले । ४ जब तक । ५ बैरी । ६ हृदय हीन व्यक्ति । ७ आततायी । ८ मंत्री । ९ अंतसमय । १० नगर । ११ कानों से । १२ रनवास । १३ भँदोदरी । १४ घूँघट । १५ मृत्यु । १६ खड़ी । १७ प्रिय पति । १८ सारस । १९ हाथों से । २० छाती । २१ सुन्दरता । २२ आर्त । २३ छाती । २४ स्वामी ।

ईहै कहि लेत है सीस ऊठाय, धरै बिच गोद धुकाय धुकाय ।
 परै जल नैन पनारन पूर, धुवावत^१ आँनन लागीय धूर ॥३००५
 दिधोविध^२ रोय रही बिललाय, हनै हीय मुक्कन बोलत हाय ।
 सीया सम श्रीर तीया न सरूप^३, भयो तन भंग तिही हित भूप ॥३००६
 घली ईक नार कै कारन घात, अनेकन लेय चले अहवात^४ ।
 भई निरभागनि^५ रावर^६ भाँम, पराईय^७ नार पीया परनाँम^८ ॥३००७
 ईतै बिच पट्टपराँनीय^९ आय सदोदरि^{१०} देख कझौ मुरभाय^{११} ।
 अहो लघुभूत कुवेर के आज, रसातल^{१२} पौढ रहे महाराज ॥३००८
 डरावत इंद्र ही आदक देव, सब दिसपाल सुधारत सेव ।
 महारिखी गंधूव चारन माग, भयातुर होय गये सब भाग ॥३००९
 मरे तुम माँनव हात^{१३} मदंध, कहा कहु पीव^{१४} अहो दसकंध ।
 लुकावत^{१५} नैन न आवत लाज^{१६}, विचारकै येहु कीयो कहा व्याज^{१७} ॥३०१०
 जती बनवासीय सौँ कर जंग, भये पीय कौँन क्रीया तन भंग ।
 प्रतीत न आवत मोकह^{१८} पूर, धरा पर सोय रहे बिच धूर ॥३०११
 अहो पतिलंक पुरी उजीयाल, करै नही अंखन^{१९} भूखन काल ।
 इंद्रादिक वापुरे^{२०} लोकप आय, करै करतून रहे कदराय ॥३०१२
 तथा बधकारक भीपति तोहि, हीर्य मोहि आवत होय-न-होय^{२१} ।
 मरे खरदूखन हू विन मीत, सुनो हम बात कही बिच सीत ॥३०१३
 लखायन^{२२} राघव प्राकृत लीय, कला अवतारीय है ईह कोय ।
 ईकाईक^{२३} बंदर मारुति^{२४} आय, ज्वला बिच डीनीय लंक जराय ॥३०१४
 गयो कुसलात सोऊ नभ गैल, फिरची^{२५} दिन जाँन लयी बस फैल ।
 अरुंधति रोहिनी आदक श्रीर, सीया कह पृञ्जत^{२६} है सिरमौर ॥३०१५
 पतीवृत^{२७} चोरो सौँ लाय पलाय^{२८}, बसाईय लंक में आँन बलाय ।
 भयो कुल नास निसाचर रूप, केऊ तीय डार चले दुख कूप ॥३०१६
 तुमानल^{२९} सीनवनी मन ताप, प्रजारेऊ ताहि पराक्रम पाप ।
 फलू विन कारन होय न काज, सुभाखत आपत^{३०} रूप समाज ॥३०१७

१ पीयो है । २ अनेक प्रकार । ३ सुन्दर । ४ सोनाग्य । ५ भाग्यहीन । ६ आपकी ।
 ७ अन्वही । ८ परिणाम । ९ पटरानी । १० मंदोदरी । ११ उवास । १२ नूमि । १३ हाथा ।
 १४ विप पति । १५ दिवाने हो । १६ सज्जा । १७ कपट । १८ मुझे । १९ आँसों ।
 २० धेनारे । २१ मंभव है ऐसा हो । २२ चाट्ट रूप में । २३ यकायक = अचानक । २४ हनुमान ।
 २५ बलाय पलाय । २६ पृञ्जत है । २७ पतिव्रता । २८ नगाकर । २९ अग्नि । ३० आप्तपुरुष ।

सुभांमन^१ राँम की नाम की सीय, परेखहु मृत्यु कौं कारन पीय ।
 सीया सुख साजहि राँम के साथ, ईती तीय होगई आज अनाथ ॥३०१८
 सुवासत चंदन बर्न^२ सरीर, नहावत छीज गुलाब के नीर ।
 मनोहर भोग लगे सब माग, अहो पीय छोर चले अनुराग^३ ॥३०१९
 सुसोभत सीरख^४ क्रीट^५ सहेत, रमी बिच गूद निसा रन रेत ।
 बिराजत सुंदर ब्रूहन^६ बंक, अनूंगम चंचल ईछछन^७ अंख ॥ ३०२०
 कपोल हू गोल सुहावन काँन सु धारत कुंडल लोल समान ।
 ऊदचत^८ नासका दीपक ऐम, प्रभा अधुराँन रचे मद पेम ॥ ॥३०२१
 अमोलक^९ हास बिलास कं ऐन, दसुसुख नारिन कौं सुख दैन ।
 रथांग^{१०} की धूर रही जिह रुँद, मही बिच सोय रहे चख^{११} मूँद^{१२} ॥३०२२
 बिनोद की तर्क बितर्क सुबात, रचावत खेल रहै दिन रात ।
 मनोहर हास बिलास मुकाँम, ईहै मुख पंकज सौ अभिराँम^{१३} ॥३०२३
 प्रभा तिह चंद हरीक पतंग^{१४}, प्रकासहु पीद^{१५} जँही पर संग ।
 भिदी तन राघव की सर भाल, लखावत जावत श्रोनत^{१६} लाल ॥३०२४
 अनूंगम नीलमनी^{१७} सम अंग, भयो सोई माँनव कं कर भंग ।
 ईहै सुगन्तर^{१८} है कछु आज, सुनौ कथ सूरन^{१९} के सिरताज ॥३०२५
 वभीखन आद कही नय^{२०} बात, नच्यौ^{२१} सोऊ पाव दई तऊ^{२२} लात ।
 लग्यौ फल ताहीय कौं ईह लीन, पसारकै पाव परे भुज पीन^{२३} ॥३०२६
 ईही परघातन बज्र अनून, धुकावत सत्रुन कै सिर धून ।
 जरी सोई हाटक^{२४} भाटक जाल, सँभारत क्यौं नहीं लोकप-साल^{२५} ॥३०२७
 बढी हीय पीर करंत बिलाप. ऊचारत सीकत^{२६} कुष्ट^{२७} ईलाप^{२८} ।
 भई मुरछागत^{२९} राँवन-भाँम^{३०}, मदोदरि राँनीय बीर-मुकाँम^{३१} ॥३०२८
 परी पत^{३२} देह कं ऊपर पेख, बिचार कं सौतन आद बिवेक ।
 ऊठाकै फेर दयो ऊपदेस, बिचारहु देवीय जाँन बिसेस ॥३०२९

१ स्त्री । २ वर्ण = रंग । ३ प्रेम । ४ मस्तक । ५ किरोट । ६ भौं । ७ देखना । ८ उठी हुई । ९ अमूल्य । १० पहिया । ११ आंख । १२ बंद । १३ सुन्दर । १४ सूर्य । १५ प्रिय पति । १६ रक्त । १७ मणि । १८ स्वप्न । १९ शूरवीर । २० नीति । २१ सिर नवाया । २२ तब भी । २३ पुष्ट । २४ सौना । २५ लोकपालों को पीड़ा देने वाले । २६ सिसकारी मरके । २७ कष्ट । २८ विलाप । २९ मुद्धित । ३० पत्नी । ३१ युद्ध क्षेत्र । ३२ पति ।

ईतौ जग पाप रू पुंन्य अधार, निहारहु राज बिभौ^१ निरधार ।
 ईहै थिर जाँनत बात अलीक^२, थिती ठह राँवन माँनत ठीक ॥३०३०
 अजाँन सौँ जाँनत और की और^३, जिही गत काल सौँ नाहिन जौर ।
 ऊठायकँ लिन्नीय^४ लेत ऊसास, निचोवत^५ नैनन-नीर-निरास ॥३०१३१
 बिभीखन राँम कही जब बात, बिसासहु^६ नारिन कौँ बिललात ।
 करौ मिल बंधव प्रेतकीयाह, दिबाबहु कोनप बिगृह दाह ॥३०३३
 बभीखन राँम रजा^७ लहि बीर, हल्यौ जब आतुर ह्वै हमगीर ।
 लग्यौ सोई लंकपुरी मग लेह, गयौ अग्नोत्र हु राँवन गृह ॥३०३३
 प्रजारीय ऊत्तम^८ आग पुनीत, पढाय कँ वेद के मंत्र प्रनीत^९ ।
 सबै जिग^{१०} पात्र सँभार सँभार, भरे बहु चंदन आदक भार ॥३०३४
 सुगंधत काठ लये बहु साथ, जिते मनि मोतीय ऊत्तम जात ।
 सबै निसचारन कौँ लहि संग, भयौ जहाँ राँवन कौ तन भंग ॥३०३५
 गये रनखेत^{११} जब कर गाँन, सबै पुरवासीय लोग सयाँन ।
 सुबर्न की ऊत्तम लै सिवकाहि^{१२}, मरचौ तन राँवन कौ धर माँहि ॥३०३६
 बढे दिस दछ्छन^{१३}की तव बाट^{१४}, ठयौ असवारीय^{१५} अंतक^{१६} ठाट ।
 बजावत पेटह^{१७} पट्टह^{१८} वाज^{१९}, सबं मिल चालेऊ संग समाज ॥३०३७
 पछारीय नार गह्यौ तिह पंथ, करंतीय^{२०} कूक पुकारत कंथ ।
 जमी समसाँन^{२१}की ऊत्तम^{२२} जाँन, थपे जहाँ राँवन कौ तन थाँन ॥३०३८
 सुगंधत चंदन पद्म ऊसीर, कपूर हू आदक औ कसमीर^{२३} ।
 चिता बहु काठ बनाईय छाय, बिधोबिध राँकवचर्म^{२४} बिछाय ॥३०३९
 करे पढ वेद के मंत्रन काज, रखे तिह ऊपर राँवनराज ।
 मिले दुज^{२५} मंडँन कौँ पित्रमेध, भली बिध वेद ही कौ लहि भेद ॥३०४०
 करी तव पूरव दछ्छन कोन, तयारीय वेदीय ऊत्तम तोन ।
 सथापन कीन हुतासन^{२६} सुद्ध ऊठायकँ कोनप^{२७} मेलेऊ ऊद्ध ॥३०४१

१ वंभव । २ मिथ्या । ३ कुछ की कुछ = अन्यथा । ४ लो । ५ बहारही थी ।
 ६ सांत्वना दो । ७ आज्ञा । ८ उत्तम । ९ प्रणीत । १० यज्ञ । ११ युद्ध क्षेत्र ।
 १२ पालकी । १३ दक्षिण । १४ मार्ग । १५ सू.प्र. असवावारीय : १६ समय की । १७ ढोल ।
 १८ नगाड़े । १९ वाजे । २० करती हुई । २१ इमसान । २२ उत्तम । २३ केशर ।
 २४ मृगदाल । २५ द्विज = ब्राह्मण । २६ अग्नि । २७ शव ।

दही घृत और सुग्रात्रहु देख, विधान सौ कधर मेल बिसेख ।
 जहाँ अन पाय उलूखल^१ जंघ, सँभारकै दोय पदारथ सग ॥३०४२
 धरे केऊ काष्ठ के पात्रन धोय, जहाँ अरनी ऊतरारनी जोय ।
 पदारथ मूसल आद परेख, विधोगत वेद की देख बिसेख ॥३०४३
 महारिखी आदन कौ सुन मंत, परायन^२ नीत की रीत प्रजंत ।
 थपे सब जो जिह चाहत ठौर, अनोअन^३ केक पदारथ और ॥३०४४
 करचौ बध ऊतम^४ हू पसु कोय जहाँ कहु चाहत ताहि कौ जोय ।
 बभीखन आद मिले जनबृंद, अनूपम फूल तथा अरविद^५ ॥३०४५
 जहाँ सब रोवत डारत जाय, निरंतर सीस नमाय नमाय ।
 विचारकै अगृ^६ कौ पाव बढ़ाय, बभीखन दीनीय आग बताय ॥३०४६
 भयो जर भस्म निसाचर भूप, सबै ऊठ चाले उदास^७ सरूप ।
 गये नद नालन पै कर गाँन, सबासन कीनेऊ नीर-सिनाँत^८ ॥३०४७
 तिलांजल दीनीय ऊतम तोय, सबै मृतु रीत सौ जानत सोय ।
 गये जब नगृ^९ में राजन गृह, सबै नर नार बिरक्त सनेह ॥३०४८
 बभीखन बोल संबोधन बात, सबै समुभास करी ईकसात^{१०} ।
 हले सोई राघव आय हजूर, दहूँ कर जोर खरे भये दूर ॥३०४९
 निहारत राँम सबै कपि नैन, सुगुँव हू आदक जूथप सैन ।
 बतासुर मारकं दानव वृंद, अनंदत होय खरौ मनु ईद^{११} ॥३०५०
 सुसोभत^{१२} स्यामल रूप सरौर, भई भट भल्लुक बंदर भीर ।
 भयानक बीर तज्यौ रस भाव, सुहावन दीसत^{१३} सोम^{१४} सुभाव^{१५} ॥३०५१
 दुरंतर राँवन कौ बध देख, बिजे रघुवीर की नैन बिसेख ।
 बिर्मानन बेठ सबै सुरबृंद, ऊपायकं चालेऊ हीय अनंद ॥३०५२
 पराक्रम राघव कौ भरपूर, समद^{१६} हु भल्लुक^{१७} बंदर सूर ।
 सुगुँव की नित्रता और समाग, ईही बिध मारुति^{१८} कौ अनुराग ॥३०५३
 बली कल लछ्छन बीर विधान, ऊचारत बात हीय अनुमान ।
 सिधायगे स्वर्ग दिसा सुरगीय^{१९}, हरखत^{२०} होय घने बिच हीय ॥३०५४

१ ऊखली । २ परायण । ३ अनेक । ४ उत्तम । ५ मू०प्र० = अरविद = कमल ।
 ६ आगे । ७ उदास । ८ स्नान । ९ नगर । १० एक साथ । ११ इन्द्र ।
 १२ सुगोभित । १३ दिखाई देते हैं । १४ सौम्य । १५ स्वभाव । १६ समर =
 युद्ध । १७ रीछ । १८ हनुमान । १९ देवता । २० हर्षित ।

दयौ तब सासन^१ मातुल देख, बिचारकै राघव बुद्ध बिसेख ।
 पुरंदर^२ सिंदन लै निज पंथ, सिधावहु सूत निरंतर संत ॥३०५५
 गयौ तब सातुल हू निज गृह, सराहत राँम प्रभाव सनेह^३ ।
 सुगुँव सौँ राँम मिले सरसाय, लगायकै अंग हीयै लपटाय ॥३०५६
 मिले फिर लछछन सौँ भर मोद, जुहारीय जुथ्यप^४ पायन जोध ।
 हितेसीय^५ अंगद औँ अनुमान, परे पद पंकज जोरत पाँन^६ ॥३०५७

दोहा

मार निसाचर मुगटमनि^७, राँवन कौँ रन राँम ।
 श्राये सूरज^८ अवध के, सवर^९ बीच घनस्याँम ॥३०५८
 धरम सत्त^{१०} बृत्त धारना, पुन निभ निकट परेख ।
 बोले लघु-भृता बिहस, द्रगन बभीखन देख ॥३०५९
 संत सनातन लीय सरन, अरु कीनौ ऊपकार ।
 देहु बभीखन राजपद, न्याय रीत निरधार^{११} ॥३०६०

छंद मोतीदाँम

दीयौ जब राँम निदेस दिहाय^{१२}, चले तब लछछन सीस चढाय ।
 बभीखन संग लयै कपि-बृद्ध, ऊहासत चालेऊ पाय अनंद ॥३०६१
 अनुपम जायकै राज-अगार^{१३}, बुलायकै मंत्रिन कौँ दरबार ।
 महरथ^{१४} मंगलदायक मिलाय, सिधासन थापेऊ^{१५} आँन सुभाय ॥३०६२
 सुसोभत कीन बभीखन सीस, ऊचारत मागध विप्र असीस ।
 करचौ कर लछछन सौँ अभिषेक^{१६}, बिचारकै वेद की रीत बिसेक ॥३०६३
 नमे पग श्राय निसाँचर लोग, जथारथ^{१७} पायकै आदर जोग^{१८} ।
 करी तिन भेट निछावर केक, अनुक्रम आद भृजाद असेख^{१९} ॥३०६४
 सर्व जन मंत्रीय लै भट साथ, रहे जहाँ श्राय गये रघुनाथ ।
 बभीखन भेट करी अवघेस, बिचारकै मंत्रीय आद^{२०} बिसेस^{२१} ॥३०६५

१ आजा । २ इन्द्र । ३ स्नेह । ४ युथपति । ५ हितंषी । ६ हाथ । ७ मुकुट-
 मणि । ८ सूर्य । ९ शिविर । १० सत्य । ११ निर्धार । १२ दृढ़ होकर ।
 १३ राजभवन । १४ मुहूर्त । १५ मू० प्र० थपेऊ । १६ राजतिलक । १७ यथार्थ ।
 १८ योग्य । १९ अग्रेष । २० आदि । २१ विशेष ।

बभीखन बोलेऊ लंकवरीस^१, अनाथ के नाथ रघुकुल ईस ।
 बभीखन स्नान^२ सुनी ईह बाँन^३, पसाव^४ कै ऊठ मिले गहि पाँन^५ ॥३०६६॥
 कहे फिर राघव येह कथन^६, सखा हम आज भये सुप्रसन्न^७ ।
 जयौ हस जाँनकी कारन जुद्ध, संभारीय नाँहिन ताही की सुद्ध^८ ॥३०६७॥
 कहीं हम लंकपती तुहि काज, ईहै अभिलाख मिटी मम आज ।
 प्रतज्ञा लीन परी सोई पार^९, सँपेखक नैरत^{१०} की सिरदार ॥३०६८॥
 सुगुँव हू आव करचौ जय सोर, दया रघुबीर की बाढेऊ दौर ।
 कहीं हनुमान सौं फेर कृपाल, बिलंब न कीजिय बुद्धिबिसाल ॥४०६९॥
 विजोग^{११} सौं सीय रही बिललात, कहीं हम जाय तही कुसलात^{१२} ।
 चले हनुमान ततछिन^{१३} चाहि, बिचछिन^{१४} जयानकी बास बसाय ॥३०७०॥
 खरे कर जोर भये जय खंभ, बिलोक कै जयानकी^{१५} पाय विश्रंभ^{१६} ।
 निहारत नैनन चालेऊ नीर, सुभागम सात्वक^{१७} होय सरीर ॥३०७१॥
 लखी सीय चित्र लिखी सीय नैन, बिचारकै मारुति^{१८} बोलेऊ बैन ।
 कहीं रघुनायक येह कहान, सुनी सुखदायक बायक^{१९} स्नान ॥३०७२॥
 संघारेऊ राँवन बंस सहेत, हन्यौ खल खेत सीया तुहि हेत ।
 सबे विध है कुसलात सरीर, प्रीया ईक देखन की हीय पीर ॥३०७३॥
 कहीं सोई जाय कहँ कुसलात, बिचार न जाँनत दूसर बात ।
 सुनी प्रीय-बाँनीय कौं सीय श्रान, दीयो जीय जाँनकै उत्तर-दाँन ॥३०७४॥
 बिचारत हँ मन ही मन बात, कहीं रघुनायक की कुसलात ।
 बघाई देवन कौं कोऊ बस्त, संभारत होय गयो मन स्वस्त ॥३०७५॥
 अलोकीय राज नही सम तूल, भूमावत बुद्ध रही गत भूल ।
 ईहै प्रीय-बाँनीय कौं उपकार, कहुँ कहा नाँहि घरचौ करतार ॥३०७६॥
 बिचारकै भाखत बारंबार^{२०}, रही तुम जीवत पाँनकुमार^{२१} ।
 सदाँ रघुनायक पाय सनेह, अखी हीय बाढ ही आसिख एह ॥३०७७॥
 जई रघुबीर बिजे सुन जंग, सबे दुख भूल गई ईक संग ।
 ईहै जीय राँम कौं नाँम अधार, बिसारत^{२२} नाहिन येकहु बार ॥३०७८॥

१ लंका को प्रदान करने वाले । २ कानों से । ३ वाणी । ४ कृपा करके । ५ हाथ = पाणि । ६ बात । ७ सुप्रसन्न । ८ सुधि । ९ पूर्ण हुई । १० राक्षसों का । ११ वियोग । १२ कुशल समाचार । १३ तत्क्षण । १४ विचक्षण । १५ सीता । १६ आश्वस्त होकर । १७ सात्विक । १८ हनुमान । १९ वाक्य । २० बारंबार । २१ पवनपुत्र । २२ भूलतार ।

बिलोकन राँम बिना विसदास^१, तथा ईह नैनन कौं मम त्रास ।
 सुभाखहु पीव^२ कौं जाय संदेश, अनाथ के नाथ सदाँ श्रवधेस ॥३०७६
 नमायकें सीरख^३ केसरीनंद^४, ऊठे अति आतुर पाय आनंद ।
 मिले रघुनायक सौं कर मंत, विचारकें सीय कह्यौ बरतंत^५ ॥३०८०
 बभीखन देख कह्यौ रघुवीर, धरौज^६ न नैक सखा हीय धीर ।
 सुधारकें ज्याँनकी^७ अंग अंगार, बुलावहु बेग न लावहु बार^८ ॥३०८१
 बभीखन ऊठ चले निज भौंन^९, गये पुरअंतह^{१०} में कर गौंन ।
 कह्यौ निरु^{११} नारन^{१२} सौं ईह काज, मिले सीय चाहत है महाराज ॥३०८२
 चलौ तीय बाग मिलौ छल छोर, अलंकृत^{१३} देख सभावहु और ।
 बभीखन राँनीय आब^{१४} विचार, निसाचरि सग लई बहु नार ॥३०८३
 सीया पँह जाय नमाएऊ सीस, ऊचारीय नारन और असीस ।
 लखी चिव^{१५} सीय रही ललचाय, भई क्रसगात^{१६} बिजोग^{१७} कें भाय ॥३०८४
 ऊचंद्रहु^{१८} बीतत ज्याँ अरविद^{१९}, छिपामुख मानहु दोज कौ चंद ।
 दिपे दुत^{२०} दीपसिखा सम देह, त्रिलोकीय नंदनी येम बिदेह ॥३०८५
 बभीखन तीयन नै बिनतीय^{२१}, सकोच कैं हीय करी तब सीय ।
 कही पत^{२२} मोर सौं रावरे कथ, सनातन पावन कौं गन संत ॥३०८६
 सीया कह लावहु साभ्र अंगार, बिजोग कौं त्याग करे बिवहार^{२३} ।
 दवायति दीन्नीय रावरे^{२४} दास, ईहै चित चाह करी अरदास^{२५} ॥३०८७
 हले हम रावरें साथ हजूर, दुरंतर जाय सबे दुख दूर ।
 निदेसन राँम कौ मान निदान, सीया जल ऊत्तम कीन सिनान^{२६} ॥३०८८
 सुबासन^{२७} धारेऊ सुद्ध सरूप, अलंकृत कंचन हीर अनूप ।
 बभीखन सूप खरे जहाँ बार, सहेलन^{२८} दीन्नीय ठीक सुधार ॥३०८९
 जबे सिवका^{२९} ईक ऊत्तम जाँन, अनूपम हाजर किन्नीय आँन ।
 चढी मिथिलेस-कुमारीय चाहि, बभीखन मंगल बाज बजाय ॥३०९०
 वढे असवारीय बीच बजार, निहारत लंक पुरी नरनार ।
 द्रगंचल^{३०} बीरबभू कह देख, ऊचारत जे जय सब्ब असेख ॥३०९१

१ विश्वास । २ प्रिय पति । ३ मस्तक । ४ हनुमान । ५ वृतांत । ६ धैर्य । ७ जानकी ।
 ८ विलंब । ९ भवन । १० अंतःपुर = रत्नवास । ११ निज = अपनी । १२ स्त्रियों ।
 १३ अलंकृत = आभूषण युक्त । १४ आदि । १५ सुन्दरता । १६ कृश शरीर । १७ वियोग ।
 १८ पिछली रात । १९ कमल । २० द्युति । २१ बिनती की । २२ पति । २३ व्यवहार ।
 २४ आपके । २५ विनय । २६ स्नान । २७ वस्त्र । २८ सहेलियों । २९ पालकी । ३० आँख ।

पहुँचीय पत्तन^१ के जब पार, बभीखन अंगु बढचौ सुबिचार ।
 करो बिनती रघुनायक काज, बिदेहीय आवत याँन बिराज ॥३०६२
 विचार के राँस कही पुन बात, खत्री^२ कुल जाँनत है सब ख्यात^३ ।
 विख्यात है सूरज देव कौ वंस, पिछ्यानत श्रौघपुरी परसंस^४ ॥३०६३
 बसायेऊ मोहि पिता बनबास, अरंन^५ में डोलत होय ऊदास ।
 पती संग नार कौ बास पुनीत^६, सदा निरवाह^७ करे तेह सीत ॥३०६४
 इँहीं मुरजाद^८ सदाँ अनुकूल, महाँ सुखदायक है जस^९ मूल ।
 ईही ईक जाँनहु दीरघ^{१०} आड़, बिचारहु चित्त कनातन बाड़ ॥३०६५
 बिपत्त^{११} में जुद्ध सुयंबर^{१२} बीच, मृजाद न तीरथ कारन मोच^{१३} ।
 विवाह में जिग्य^{१४} में श्री बनबास, जरुरत लाज की नाँहन जास ॥३०६६
 सबे बनबासीय^{१५} बासीय सैल, गनी लघु-बंधव ज्यूँ कपि गैल ।
 सोया पग चाल^{१६} त्रियामन साथ, निहारक बंदर होय सनाथ ॥३०६७
 बभीखन जाँनके राँस वृत्तंत, ऊतारके सीय कौ सैन के अंत ।
 सुभाँमन^{१७} पंदल लायेऊ साथ, रहे जहाँ डेरन में रघुनाथ ॥३०६८
 पतीवृत चंदमुखी जुत प्यार, जती रघुबीर कौ कीन जुहार ।
 पलोटक पकज पावन पाँन^{१८}, सीया रघुनाथ मिली सुखदाँन ॥३०६९
 गयो धन पावत ज्याँ बिच गृह, डुल्यो जीय आवत त्याँ^{१९} पुन देह ।
 मिली मछरी^{२०} बिछुरी जल माँहि, कुरंकुरी^{२१} पाय कुरकर^{२२} काँहि ॥३०७१
 छिपा^{२३} प्रतिबिब प्रभागत चंद, समांगम कोकीय^{२४} कोक^{२५} समंध ।
 भई रघुनाथ सीया ईम भेट, महाँ दुखसागर की थिति^{२६} मेट ॥३१०१
 सबे कपि सैन करचौ जय सह^{२७}, निसाचर सैन नगारन नद्ध^{२८} ।
 बिराजीय बाँमीय श्रौर कौ बाँम, रमाँ^{२९} हरी^{३०} जेम सुसोभत राँस ॥३१०२
 जई रघुनाथ कही कथ जंग, अनूपम सीय बढचौ ऊच रग ।
 करचौ अभिबदन सैन कपिद, बभीखन आद सबे जनवृद ॥३१०३

१ नगर । २ क्षत्री । ३ प्रसिद्ध । ४ प्रशंसा करके । ५ बन । ६ पवित्र । ७ निर्वाह ।
 ८ मर्यादा । ९ यज्ञ । १० दीर्घ । ११ विपत्ति । १२ स्वयंवर । १३ मृत्यु । १४ यज्ञ ।
 १५ बनवासी । १६ पंदल चले । १७ स्त्रियों को । १८ हाथों से । १९ उसी प्रकार ।
 २० मछली । २१ सारस की स्त्री । २२ सारस । २३ रात्रि । २४ चकवी । २५ चक्रवा ।
 २६ मर्यादा । २७ शब्द । २८ नाद = ध्वनि । २९ लक्ष्मी । ३० विष्णु ।

दोहा

बोले सीता सों बहुर, सकल रीत समुझाय ।
 संमृय^१ हूँ तौह सरल, निघहै लोकक^२ न्याय ॥३१०४
 हित तेरै राँवन हन्यौ, भूम ऊतारचौ भार ।
 ईक संज्ञा मेरे ऊवर^३, कहत विदेहकुमार ॥३१०५
 हरी दसाँनन हाथ सों, बैठारी गृह बाँह ।
 लायो तोकह लंक में, कोरा में घर काहि^४ ॥३१०६
 करचौ दसाँनन चोर क्रम, लायो तोकह लंक ।
 ध्वंस भयी छत्रीधरम, कुल कौ लाग कलंक ॥३१०७
 सैन जोर अरि तिघरचौ^५, परी प्रतज्ञा^६ पार ।
 लंकपती सों बैर लै, आपुन कीय ऊद्धार ॥३१०८
 पर-घर पर-वस^७ होय पुन, बहु दिन करे बितीत^८ ।
 नहि आवत मेरी निजर^९, पूरी घरम^{१०} प्रतीत ॥३१०९
 तातें में तुमकौं तजत, जहाँ रुचै जहाँ जाय ।
 अवध बितावहु आपनी, सबही कहत सुनाय ॥३११०

छंद मीतीदान

सीया सुन अप्रीय^{११} वांनीय श्रौन, कही रघुनायक सों तज काँन^{१२} ।
 पठायेऊ मारुति^{१३} कौं हम पान, पराद्यत^{१४} क्यौं^{१५} नही कीन प्रकास ॥३१११
 जिही दिन त्याग कै जावत जीव, पतीवृत धर्म पिछ्यान कै पीव^{१६} ।
 बिसास कै^{१७} रावरे पास बुलाय, दयो सुख नैनन कौं दरसाय ॥३११२
 दया ईह किशोय दीनदयाल, हीयै अवगाह कै पूरव हाल ।
 ईहै फहि लच्छन^{१८} कौं भुक शोर, निहार कै बोलीय नैक निहोर ॥३११३
 भली कीय सावरे रावरे^{१९} भूत, अखी^{२०} अव मोहि भयी अहवात ।
 निराकृत^{२१} नाम कीयो हीय नेह, दुराकृत त्याग करु ईह देह ॥३११४

१ ममय । २ लोकिक । ३ ऊपर टुई । ४ शरीर । ५ मंहार किया । ६ प्रतिज्ञा ।
 ७ दगरे के दग में । ८ व्यतीत । ९ नजर = दृष्टि । १० धर्म । ११ अप्रिय ।
 १२ लज्जा । १३ अनुमान । १४ प्रायश्चित्त । १५ क्यौं । १६ प्रिय । १७ विश्वास
 रखने । १८ लक्षणा । १९ तुम्हारे । २० अन्त । २१ समाप्त ।

मंगावहू काठ चिता ईक मंड, प्रजारकं छार करु ईह पिंड^१ ।
लखे जब राँम की ओरहु लछछ, अंगारन धोम भरो हुई अछछ^२ ॥३११५
करी अरजी न जब कछु कोय, हीयें सह जानीय होय सु होय^३ ।
कहौ जिम सोय करचौ सोऊ काज, मुरजीय^४ जाँन लई महाराज ॥३११६
चिता जब दोनीय लछछन छा़य, बिदेहीय ऊठ चली बिलखाय ।
हुतासन^५ लेय कै आपने हाथ, नमाय कै सीरख^६ श्री रघुनाथ ॥३११७
प्रजारकं आग प्रदख्छन^७ पाय, दर्ई तत्र ज्यौंनकी^८ देख दिखाय ।
द्वजन्मन^९ और जुहार कै देव भली बिध हीय प्रकास कै भेच ॥३११८
हुतासन जोर कै बोलीय हाथ, निरंतर नाथ गेन रघुनाथ ।
भयौ पतिवृत्त कदाचन^{१०} भग, ऊबारहु एह हुतासन अंग ॥३११९
ईतौ कहि बंठ गई बिच आग, सबासन^{११} राँनीय सीय समाग ।
मिली भल धूम घटा चहुमेर, कुलाहल सोर भयौ जनकेर ॥३१२०
ईहीं अवसाँन पं ओरहु आय, निहारीय नैनन देव निकाय^{१२} ।
क्रतंत^{१३} हू बजीय^{१४} और कुवेर, हितेसीय आद परंजन हेर ॥३१२१
बिरंचन^{१५} धूरजटी^{१६} रिख^{१७} वृंद, छल्यौ हीय आय लख्यौ ईह छद^{१८} ।
पितामह आद करे परनाँम^{१९}, रहे सब घेर नरेसुर^{२०} राँम ॥३१२२
बिरंचन बोल ऊठे जिह बेर, ईहै गृह सूरज को न अंधेर ।
अहौ जग कारन आद^{२१} अनंत, बिचारकं कीन कहा बरतंत^{२२} ॥३१२३
सनातन रूप बिभू घनस्याँम, कला अवतारीय पूरन काँम ।
बसू रित धाँमा भये रघुवीर, प्रजापत^{२३} मेट करी जग पीर ॥३१२४
भये तुम अष्टम रुद्रभ बेस, बने तुम पंचम साध्य बसेस^{२४} ।
बिराट कौ रूप ईहै बृहमंड, पसारौ है जक्त^{२५} ईही तुम पिंड ॥३१२५
क्रपानिध नासक^{२६} नासका काँन, बिभा जुत अंबक^{२७} है ससी भाँन ।
महाँप्रभू आवहू अंतहू मद्ध^{२८}, परा पुरसोतम^{२९} रूप प्रसिद्ध ॥३१२६
चतुर्दस लोरुहु के तुम स्याँम^{३०}, रघूपत बित्त के आतम^{३१} राँम ।
कहौ ईह राघव सौ करतार, बिसेकत बोलेऊ राँम बिचार ॥३१२७

१ शरीर । २ आँखें । ३ होना है सी हो । ४ मर्जी = इच्छा । ५ अग्नि । ६ मस्तक ।
७ प्रदक्षिणा । ८ सीता । ९ ब्राह्मणों । १० कदाचित् । ११ चिता । १२ समुदाय ।
१३ यमराज । १४ इन्द्र । १५ ब्रह्मा । १६ महादेव । १७ ऋषि । १८ छन ।
१९ प्रणाम । २० नरेश्वर । २१ आदि । २२ वृत्तान्त = बात । २३ प्रजापति ।
२४ विशेष । २५ जगत । २६ अश्विनीकुमार । २७ आँखें । २८ मध्य । २९ पुरुषोत्तम ।
३० स्वामी । ३१ आत्मा ।

पिता दसरथ्य नरेस के पूत^१, करं, तन मानव की करतूत^२ ।
 ईही हम मानत है मति येक, बिचार न जानत और बिसेक ॥३१२८
 कहां हम आए है है हम कौन, समंघ^३ की बात सुनावहु खान ।
 विरंचन दोलेऊ सोच बहोर, मधुजित^४ देवन के सिरमौर ॥३१२९
 गदा चक्र धारनहार गोविंद, मक्राकृत कुंडल कान मुकंद ।
 बने तुम कछ्छ रु मछ्छ वराह, प्रलै^५ बिच थापेऊ नीर-प्रवाह ॥३१३०
 सदा सत अछ्छर^६ वृह्ण स्वरूप अधोक्षज पावन रूप अनूप ।
 सुधर्म हु जीवन कौ सरजंत^७, चतुर्भुज आतम तत्व अचित ॥३१३१
 धरं खग नंदक सारंगधार, ईहै जग विस्वक सेन अधार ।
 त्रिविक्रम व्यापक बिस्तु तमाम, नरायन गृामनी आदिक नाम ॥३१३२
 पदारथ एक सौ एक पुनीत मिली हुत^८ म्यासत है जग मीत ।
 छिमा अरु सुमृति^९ रावरी छांहि, मती थितो दीसत जीवन मांहि ॥३१३३
 महेंद्र हु इंद्र के कर्म मभार, साहा^{१०} मुनि भाखत एह मुरार ।
 माहातम वेद पुरान मृजाद^{११}, अही सत सीरख आद अनाद ॥३१३४
 प्रकासत पंचहु इंद्रीय प्रांन^{१२}, बनावत तीनहु लोक बिधान ।
 माहासिध साधक आलय^{१३} मूल, थपे जड^{१४} जंगम सुक्ष्म^{१५} थूल^{१६} ॥३१३५
 करं ऊर ध्यान कहै खटकार, ऊपासत रूप तदा ओऊंकार^{१७} ।
 तिहारेई^{१८} नाम सर्व जग तात, मुकाम न धाम नही पितु मात ॥३१३६
 गऊ^{१९} दुज^{२०} ग्यातन^{२१} में तुम गेय, अगाध^{२२} अवाद अनंत अजेय ।
 धरा नभ आगम पव्वय^{२३} धाम, कला जग कारन पूरन काम ॥३१३७
 सदा जल साईय-सेस^{२४} सरूप, भयापह^{२५} देवन के तुम भूप ।
 सरीर है रावरी एहु संसार, हीयो हम जानत जाननहार ॥३१३८
 सरस्वती देवीय जीह^{२६} समान, सबै सुरगीय^{२७} हु रोम सुथान ।
 असंभव कोप ईहै हरी आग, निसापत^{२८} प्रस्न-दसा^{२९} अनुराग ॥३१३९

१ पुत्र । २ कार्य । ३ सम्बन्ध । ४ मधु को जीतने वाले । ५ प्रलय । ६ अक्षर ।
 ७ मृज्जत करते हो । ८ धृति । ९ स्मृति । १० महा । ११ मर्यादा । १२ प्राण ।
 १३ आलय । १४ जड़ । १५ सूक्ष्म । १६ स्थूल । १७ ओंकार । १८ तुम्हारे ही ।
 १९ गो । २० बाह्य । २१ जानियों में । २२ अगाध । २३ पर्वत । २४ शेष, शेषा ।
 २५ भयभीत । २६ जिह्वा = जीभ । २७ देवता । २८ चन्द्रमा । २९ प्रसन्नता ।

थिरा थिरता जह^१ जंगम थित्त, निरंतर वेद सुभावना नित्त^२ ।
 निसा^३ उन्मेखन^४ है तुव नैन, ऊदै ऊन्मीलन^५ बासर^६ ऐन ॥३१४०
 सुरेंद्र कौं राज दयौ सरसाय, बली दनु-बिद्र^७ पताल बसाय ।
 रमा श्रवतार सीया रमनीय, ईद्रानुज सागर के श्रयनीय ॥३१४१
 मरचौ रन लंकपती माहाराज^८, करचौ तुम देवन कौ सिध^९ काज ।
 पराक्रम पूरन तेज प्रताप, उदै जग कीन विसंभर^{१०} श्राप ॥३१४२
 निहारहु श्रौधपुरी रघुनाथ, सबे जन कीजीये जाय सनाथ ।
 ईहै कथ गावहि संत अनेक, परायन^{११} पावहि मुक्ति प्रवेक ॥३१४३
 ईहै विध राँम संवाद की बात, करै कौऊ पाठ कहै कहनात ।
 पदारथ च्यारहु^{१२} कौ फल पाय, सुखी सोऊ होवहि संत सुभाय ॥३१४४

दोहा

कही बिधाता ईह कथा, सुरन समाज समेत ।
 सांत भये रघुनाथ सुन, हीय सीय बाढ्यौ हेत^{१३} ॥३१४५

छंद भुजंगी प्रयात

बिधाता कही राँम सौं येह बानी सब रीत सौं चित्त वृती सिराँनी^{१४} ।
 ऊदबी^{१५} हीर्य राँम आलोचना कौं, समा देख स्वर्गीय सारी सभा कौं ॥३१४६
 लई गोद में राँम की लाडली कौं, लसै जेम^{१६} बैदेह लीन लली^{१७} कौं ।
 दई राँम कौं श्राय कै सत्य दाँनी, पिताह्वै पुनभूत^{१८} साखी^{१९} प्रमाँनी^{२०} ॥३१४७
 सुधारी मनी सांति की सूरती सी, तपाई मनी स्वर्न की मूरती सी ।
 पसारी सिरोभाग सौं केस पासी, रही नागनी भूल ज्यौं स्याँपरासी ॥३१४८
 भरी माँग सिद्धर आरक्त^{२१} भ्यासै, किधौ क्वार कै मग संध्या प्रकासै ।
 सुसोभै समी केस पाटी सँवारी, किधौ हेम कै श्रंग पै बेल कारी ॥३१४९
 कढी ताहि कै अद्र सौं ककराला, बिराजै मनी पन्नगी काय बाला ।
 रजै भाल में चर्चका घोर रोरी, करै कर्न में कर्नभनें किसोरी ॥३१५०
 निकाई जुते बालका नासका में, जग जोत मुक्तालता गीव जामें ।
 बिराजै भुजा बीच कयूर बये, सुहावै बलै कंकना हाथ संधे ॥३१५१

१ जड़ । २ नित्य । ३ रात । ४ खुलना । ५ खुलना । ६ दिन । ७ दैत्यराज । ८ महाराज ।
 ९ सिद्ध । १० विश्वंभर । ११ पारायण । १२ चारों—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । १३ प्रेम ।
 १४ शान्त हुई । १५ अग्नि । १६ जैसे । १७ पुत्री । १८ फिर उत्पन्न होकर । १९ साक्षी ।
 २० प्रमाणिक । २१ लाल

जुरी ऊर्मिका^१ अंगुली है जटो पै, कसो मेखला^२ जाल दोसं कटो पे ।
 तुलाकोट^३ श्री किकनी^४ पाव त्याँही, भ्रुगं सिजतं^५ भ्रुंन भंकार ज्युंहीं ॥३१५२
 मुही^६ रग को पाट^७ पौसाक सज्जे, रची गंध धूलोय^८ सो गंध रज्जे ।
 सिखा दीप कीसो प्रभा अंग सोहै, कलाकेल^९ कै चांप सी बंक भौहै ॥३१५३
 निकई जुन नैन नीकं निहारै, पती राँम के चित्त कौं फंद पारै ।
 दिपं ग्रास^{१०} प्रानंद को कंद जाकौं, पतीरोहनो^{११} है मनौ पूर्नमा कौं ॥३१५४
 निहारी जब सीय के पीय नैना, विचारै कही हीय सौं वीय बैना ।
 अगाधा प्रवाधा नही कोय ऐसी, जलाकार छायाँ चहूँ श्रोर जैसौं ॥३१५५
 धितां में समाजं मनी नीर थारी, अकू पार^{१२} जावै न जैसं अगारी ।
 गहं वेद की रीत कौं आत्म ज्ञानी, ब्रिहं कीरती कौं तजै नाँहि दाँनी ॥३१५६
 प्रकासीय-गो^{१३} ज्याँन त्यागं प्रभाकौं, तजं ज्याँनकी नाहि जो सत्य ताकौं ।
 सिखी^{१४} की सिखा की सदा तेज साथी, तकै कोन जाकी गहै आच ताती ॥३१५७
 त्युही ज्याँनकी आपके तेज ही सौं, फरं आप रक्षा न चाहै कही सौं ।
 नही मैथली^{१५} कं कोऊ दोस नैरौ, मुख्वा^{१६} राँम नाँमै हीयं ध्याँन मेरी ॥३१५८
 पतीजं^{१७} विना साँच ना श्रौर प्राँनी, विदेही बिलोके कही क्रूर^{१८} वाँनी ।
 सोषा की बढी सोह^{१९} ताते सवाई, निहारी सर्व जक्त^{२०} नैना निकई ॥३१५९
 प्रसंता करी राँम बंठाय पासं, प्रभा पूर्नमा चंद जैसं प्रकासं ।
 नीया राँम भृजं दुती^{२१} गौर ह्याँमै, वसै इंदरा^{२२} ज्याँ हरी भाग वाँमै ॥३१६०
 वरांगी सोषा कीस नैना बिलोके, धुजा धर्म श्री राँम के पाव धोखं ।
 मिले बंद बृंदारका^{२३} भीर मडी, घटा जानकं मेघ माला घुमंडी ॥३१६१
 पधारै जधं अगृ कौं मूल पाँनी, विचारै कही राँम सौं येहु वाँनी ।
 यगू पूर ह्याँयो पती लंक वारी, ईहै राँम ध्वांतर^{२४} मेट्यौ अघारी ॥३१६२
 विना रावरे रामनय पधारै, धनी श्रीधके स्वर्ग सौं पावधारै ।
 पद तीर्थ ह्यौ तुमोर मुयाता, मिली जायकं राँम जूं नाय माया ॥३१६३
 प्रभु निभ वाँनी मुनी नाप प्राँती, परं-दुज्य^{२५} पूरे मुधर्म प्रनीती ।
 लसे रसंन^{२६} कोनर्म पाप^{२७} नागे, सुपारी पिता पुत्र हूँ सानुरागे ॥३१६४
 शिगरे रते रामरघो^{२८} विमाना, प्रबोध कीयो राँम नीती प्रधाना ।

१ अंगुली । २ मेखला । ३ तुला । ४ किकनी । ५ अंगुली । ६ अंगुली । ७ पाव । ८ अंगुली । ९ अंगुली । १० अंगुली । ११ अंगुली । १२ अंगुली । १३ अंगुली । १४ अंगुली । १५ अंगुली । १६ अंगुली । १७ अंगुली । १८ अंगुली । १९ अंगुली । २० अंगुली । २१ अंगुली । २२ अंगुली । २३ अंगुली । २४ अंगुली । २५ अंगुली । २६ अंगुली । २७ अंगुली । २८ अंगुली ।

लघू पुत्रहू लच्छन्न^१ मंथली^२ कौं, तिहीं रीत सौं बोध दीनीं तिनीकौं ॥३१६५
 पतीलक कौं जीत कीनीं पवारौं, तरे दुंद^३ सिंधु ईला^४ भार टारचौ ।
 सबै स्वर्ग के देव कीने सुखारी, भई हस बंसीन^५ की क्रीत^६ भारी ॥३१६६
 अहौ पुत्र है तोर मेरी असीसै, बढै बंस बृद्धी प्रजाहू बसीसै ।
 सिधाये जबै स्वर्ग कौं दासरथं, पधारे तिही वार में देव पत्तं^७ ॥३१६७
 करी बर्नना जोर कं हाथ क्रीती, प्रकासी हीयै ग्रंथ^८ कौं खोल प्रीतो ।
 माहाबाहु^९ लंकापती खेत मारचौ, त्रहू लोक भूमाद^{१०} कौ भार टारचौ ॥३१६८
 हित्तु इष्ट मेरे सदा दुष्ट हंता, अगाधा अबाधा अरूपा अनता ।
 कलू काज है सो हमैहूँ कहीजै, प्रभू प्रेम सौं चित्त मेरौ पतीजै ॥३१६९
 बिड़ोजा बिलोके कही राँम बाचा, सबै मर्कटी बीर बिक्रांत^{११} साचा ।
 परे जूभकै खेत में त्याग प्राँना, अरे येक सौं एक बाहू अजाँना^{१२} ॥३१७०
 अबाधा सबै होय कं जीव ऊठै, बसै देस जाँही घनौ बार बूठै ।
 करीजै ऊभै काँम मेरै कहे तै, सिधायै अजोध्या सीता कं सहेतै^{१३} ॥३१७१
 जबै इंद्र नै कीस सेना जगाई, मरी जो परी देखकै भूम माहीं ।
 निहारी सबै फौज राजीव नैना^{१४}, बिड़ोजा कहे राँम सौं फेर बंनौं ॥३१७२
 भरथं^{१५} मिलौ जाय सत्रुघ्न आता, मनावौ सबै माय^{१६} कौं नाय साथी ।
 कह्यौ इंद्र कौं राँम ऐसै करंगे, अजोध्या पुरी सोक सौं ऊद्धरंगे ॥३१७३
 सुनै तै सबै देव ह्वैकै सुखारी, चले आपने आपने लोकचारी ।
 सोया राँमहू बीच डेरा सिधारे, पतीऔध सीता सती प्राँन प्यारे ॥३१७४
 यसे रात बासौ भई प्रात बेरी, ऊग्यौ गैन^{१७} पै भाँन^{१८} बीती अँधेरी ।
 बिजै राँम लीनी ईकै अब्द^{१९} बीतै, नमे ईस^{२०} कं पाय ह्वैकै नचीतै^{२१} ॥३१७५
 लगे पाय बभीखनं लंकधीसा, करी बिनती संग लीनै कपीसा ।
 बनौबास की औध^{२२} सारी बिताई, पतीलक कौं जीत कं सीय पाई ॥३१७६
 करे मार्जना^{२३} अंग पौसाक कीजै, सुगंधी अलंकार नीकै सजीभै ।
 निहारं सबै रावरे^{२४} दास नैना, सुखारी जबै होय है कीस सेना ॥३१७७

१ लक्ष्मण । २ सीता । ३ युद्ध । ४ पृथ्वी । ५ सूर्यवंश । ६ कीर्ति । ७ इंद्र । ८ गाँठ ।
 ९ महा । १० भूमि आदि । ११ वीर । १२ आजानु भुजा । १३ सहित । १४ कमल नयन ।
 १५ भरत । १६ माताओं । १७ गगन । १८ मानु = सूर्य । १९ वर्ष । २० शिवजी ।
 २१ निश्चित । २२ अवधि । २३ स्नान । २४ आपके ।

दोहा

बिहस बभोखन सौं बचन, कहे राँम सुखकार ।
 कीसपती^१ आदक कपन^२, सवन करहु सतकार^३ ॥३१७८
 सतवादी^४ सुकुमार^५ तन, धरम धुरधर धीर ।
 भरत करत तप भेटहुँ, बय किसोर लघु बीर ॥३१७९
 सुभग बेख^६ लघु भ्रात सब, पेखहु निजर^७ पसार ।
 सखा मनोहर समुभोयै, सकल रूप श्रंगार ॥३१८०
 अलवत^८ पहुँचै वहाँ, अगम पयानौ अंत ।
 घाट विषम अरु बन घने, पुरी अजोध्या पंथ ॥३१८१
 करहु जतन^९ ताका कछू समुभहु सखा सिधंत^{१०} ।
 मात भ्रात मिल मोद मय, होय प्रजा हरखंत^{११} ॥३१८२

छंद पद्धरी

विध जुक्त बभोखन सुनी बात, हित बिहत^{१२} जानं दहुँ^{१३} जोर हाथ ।
 रघुनाथ सुनहु राजाधिराज, कीजै सोई गनीय उचत^{१४} काज ॥३१८३
 बलवानं भ्रात मम हाथ बीस, ईकपिग^{१५} जीत अलका^{१६} अघीस ।
 पुस्पक^{१७} विमान लीय तिहीं पास, सो धरचौ लंक मह सावकास^{१८} ॥३१८४
 आरोह पधारहु औध^{१९} ईस, बिच दिवस एक लंका बरीस ।
 सुन विनय बभोखन राँम श्राँन आतुर मगाय पुस्पक बिवाँन ॥३१८५
 आरोहन लागे औध ईंद्र, रच पाय कह्यौ जब राखसिंद्र^{२०} ।
 कपि संना अद्भुत करचौ काँम, हित पूजा मेरै ह्रिदय हाँम ॥३१८६
 ईह अज्ञा^{२१} दोज समय आज, रघुवंस तिलक राजाधिराज ।
 रच जानं बभोखन कह्यौ राँम, कीजीयै सखा मन उचत काँम ॥३१८७
 वनचारन दोने तँही वार,^{२२} अनगनत^{२३} पटंवर अलंकार ।
 सब भई दसहु दिस विदा सैन, आपने आपने देस ऐन^{२४} ॥३१८८
 पुन जूषप राजा रहे पास, अनुकंपा रघुवर दरस आस ।
 रच देख सवन की राकसिंद्र, करजोर जदही बोले कपिंद्र^{२५} ॥३१८९

१ सुप्रोव । २ कपियों = वानरों । ३ सत्कार । ४ सत्यवादी । ५ सुकुमार = कोमल ।
 ६ नेत्र । ७ तजर = दृष्टि । ८ शीघ्र । ९ पल । १० सिद्धान्त । ११ हर्षित । १२ विहित
 १३ दोनों । १४ उचित । १५ कुवेर । १६ कुवेरपुरी । १७ पुष्पक । १८ खाली ।
 १९ अथ । २० विभीषण । २१ अज्ञा । २२ उसी समय । २३ अगणित । २४ घर ।
 २५ सुवीर ।

पद पंकज हमरी हृदय^१ प्रीत, नहि तजत संग ईह सुनहु नीत ।
 भरथ कौ मिलन अरु मात भेट, स्थिरता^२ कौ देखहि चाल थेट ॥३१६०॥
 पुरजन मंत्रिन सौ बढहि प्यार, लै चलीये हमकौ आप लार^३ ।
 अज्ञा तब दीनी अवधईस, केऊ जुथ्यप लंकापति कपीस ॥३१६१॥
 बिच बैठे सब पुस्पक बिवाँन, श्री राँम संग हूँ सावधान ।
 ऊँड़ चलयौ ऊँड़^४ मारग^५ अकास, पुहमी न गिगन^६ बाढ्यौ प्रकास ॥३१६२॥
 कुनकुनत भीन गत किंकनीय, भलमलत जलज^७ कल^८ भल्लरीय ।
 रगमगत होरमनी पद्मराग^९, लगथगत पताका ध्वजा लाग ॥३१६३॥
 सावन^{१०} रजत^{११} प्रित दीप्त संग, एबास सिखर जनु गिरै ऊतंग ।
 मिल ईंद्र भवन से भवन माहि, जुर खंभ हेम कंदल जमाय ॥३१६४॥
 वातायन^{१२} पट्टल^{१३} अटल वृंद, अरु कोटी कोठी जुर अलिद^{१४} ।
 बिच बैठे राघव जिही बेर, किंनर गन लीने मनु कुवेर ॥३१६५॥
 सीता अरधंगो^{१५} लसत संग, अभिराँम ऊभय मनु रति^{१६} अर्नग^{१७} ।
 बोले श्री राघव सोय बिलोक, नग^{१८} दिछ^{१९} अडग तिह तीन नौख ॥३१६६॥
 सिर सिखर^{२०} पुरी लंका सुधार, तिह करी बिस्वकर्मा तयार ।
 चोचनन बरानन^{२१} देख लेह, आधीन बभीखन राज येह ॥३१६७॥
 बीरासन^{२२} देखहु ताहि बीच, कीनास^{२३} तरस कपि करचौ कीच ।
 ईह लखहु बरानन ठौर और, जूटे हम राँवन जुद्ध जोर ॥३१६८॥
 खल मारचौ ईह थल बीर खेत, हे पंकजनयनी तोर हेत ।
 बध कुंभभरन कीय मार बाँन, भ्राता राँवन कौ अत भयान ॥३१६९॥
 प्रतिघातन कीनों फिर प्रहस्त, धूम्राक्ष करचौ हनूँमान धूस्त^{२४} ।
 बिधुनमाली कौ रन बिहंड, पुन कपि सुखेत वाहू प्रचंड ॥३२००॥
 मारचौ लछमन पुन मेघनाद, अरु अंगद मोर बिकट आद ।
 माहापारस कौ फिर गरद^{२५} मेल, जुदराज लयौ रन भार भेल ॥३२०१॥
 बिल्पाख महोदर महाबीर, सुग्रीव मार लीने सधीर ।
 अतकाय अकंपन असर और, देवांतन रोतहु मरे दौर ॥३२०२॥

१ हृदय । २ स्थिरता । ३ पीछे । ४ ऊपर । ५ मार्ग । ६ गगन । ७ मोती । ८ सुन्दर ।
 ९ आनिक । १० सोना । ११ चाँदी । १२ खिड़की । १३ पटल । १४ बरामदा ।
 १५ अर्धांगिनी । १६ कामदेवी । १७ कामदेव । १८ पर्वत । १९ दीर्घ । २० शिखर ।
 २१ सुन्दर मुखवाली । २२ युद्ध क्षेत्र । २३ राक्षस । २४ ध्वस्त । २५ धूलि ।

युधोनमत्त अरु मत्त आद, विव पुत्र कुंभकन^१ परे बाद ।
 निःकुंभ कुंभ जिह प्रगट नांम, कीने तिह अद्भुत समर कांम ॥३२०३
 वज्राद वज्र दंष्टकहु वीर, सभ समर तीर्थ त्यागे सरीर ।
 मकराक्ष माहा^२ दुर्धर्ष मेल, जूझे सौऊ हमरे बाँन भेल ॥३२०४
 तन त्याग अकंपन श्रोन ताछ^४, अत बली प्रजंघहु अरु युपाछ ।
 जिग^५ सत्रु निसाचर विपु^६ जीह, सत्रुघ्न पराक्रम समर सीह ॥३२०५
 सूरजहू सत्रु अरु ब्रह्म सत्र^७, अरु किते मरे राकस अमित्र ।
 सौतन मंदोदर सुंदरीय, पुन ईहँ पुकारी पीय-पीय ॥३२०६
 सामुद्र घाट ईह लखहु सीय, कल^८ काज ऊतर हम सवर^९ कीय ।
 सागर पर बाँधी ईहँ सेत, हे पंक्रजननी तोर हेत ॥३२०७
 ईह ऊदध परंजन लखहुँ ऐन, निन्नगा-पती^{१०} ईह कमल नैन ।
 नग हिरन नाभ मैनाक नांम, कीय माहति^{११} की विश्राम कांन ॥३२०८
 ऊतरचौ तट सागर कटक आय, पूजे ईहँ संकर^{१२} प्रथम पाय ।
 ईह सेत बंध तीरथ ऊदार, पूजन सौं भव-दुध^{१३} तिरहि^{१४} पार ॥३२०९
 ईहँ मिले बभीखन हमहि आय, पद लंकपति कीनी पसाय^{१५} ।
 वाली कीं मारचौ ईहँ बहोर^{१६}, मित्रता भई सुर्गोव मोर ॥३२१०
 पत्तन^{१७} किसकंधा ईह पुनीत, निरवाह करत सुर्गोव नीत ।
 महि गिरी प्रवर्षन च्यार^{१८} मास, ईहँ बैठे तेरे हित ऊदास ॥३२११
 पुन कटक जोर कीनी प्रयाँन, अनगनित^{१९} बंदरी सैन श्रॉन ।
 सीय देख फहे जब समाचार, निभ संग बंदरन^{२०} लेहु नार ॥३२१२
 सब तारा आदक मिलहि संग, अवधपुर देखहै जुत ऊमंग ।
 सुर्गोव कल्याँ जब रांम सीत^{२१}, पहिचान आपनी परम प्रीत ॥३२१३
 वसुधा^{२२} ऊतार पुस्पक विमान, सुर्गोव, त्रोयन लीय संग सयाँन ।
 चढक विमान दीनी चलाय, द्रग मूक गिरी दीनी दिखाय ॥३२१४
 सीय सौं फिर बोले रांम स्याँम, ध्रुव पंपापुर ईह वालधाम ।
 बड अग्र फही रघुनाथ वात, सवरोय दपायी ह्वै सनाथ ॥३२१५

१ रोगी । २ कुंभकरण । ३ महा । ४ उसके । ५ जगत । ६ वृंद । ७ शत्रु ।
 ८ पुंड । ९ गिरि । १० समुद्र । ११ हनुमान । १२ शंकर । १३ नव सागर ।
 १४ नव आश्रय । १५ अत्रुपत्तने = द्रवी नून होकर । १६ फिर । १७ नगरी । १८ चार ।
 १९ अगनित । २० मू० प्र० बंदन । २१ ने । २२ नृमि ।

मारचौ कबंध कौ दीन मोख^१, रूप रह्यौ दुष्ट सोई गैल रोक ।
 बरगद तरु दोसत जहाँ बिसेस, दाक्षाय^२ जटायू ईही देस ॥३२१६
 राँवन सौं ता हित कोन रार, पहुच्यौ भव सागर सोई पार ।
 द्रग^३ पर्न-कुटी अबहूँ दिखात, बर पंचवटी थाँनक बिख्यात ॥३२१७
 वसकंध करचौ तुम हरन दुष्ट, निभ पाप आप कुल करचौ नष्ट ।
 नद गोदावरि^४ जिह बिमल नीर, तरु^५ दोसत ताके^६ तीर-तीर ॥३२१८
 मुन^७कीय अगस्त ईह ठाँ^८मिलान, बध राँवन हित जिह दयौ बाँन ।
 जरभंग ईहै आँश्रम जगाह^९, निभ आये ईहीं ठाँ सचीनाह^{१०} ॥३२१९
 सब रिखन^{११} बीच सूरज सरूप, अत्री रिख आँश्रम ईह अनूप ।
 अनुसुया करचौ ऊपेदस आप, पतिव्रत धरम जो रहित पाप ॥३२२०
 मारचौ बिराध हम ईह मुकाँम, नग^{१२} चित्रकूट बिख्यात नाम ।
 भेटन कौ आये भरत आत, मंत्रीजन आदक^{१३} सहित मात ॥३२२१
 नद जमना^{१४} दोसत स्याम नीर, तिरबैनी^{१५} सरसुत^{१६} गंग तीर ।
 बट अक्षय आगै हरत^{१७} बेस, मुनि भरद्वाज आँश्रम हमेस ॥३२२२
 गुह भिल्ल^{१८} सखा कौ ईही ग्राम, निभ अंगवेरपुर जिही नाम ।
 वह सरजू नद दोसत अनूप, भल रजधानी दसरथ^{१९} भूप ॥३२२३
 प्रिय देख करहु जाकौं प्रनाँम^{२०}, ध्रुव सूरज बंसो आद^{२१} धाम ।
 सुग्रीव बभीखन आद संग, अवधपुर देख वाढी ऊमंग ॥३२२४

दोहा

अवध दरस कर ऊतरे, तुरत त्रबैनी तीर ।
 पाँन स्नान कीने प्रथम, निरमल^{२२} संगम नीर ॥३२२५
 बीते जब चवदह बरख पंचम क्रम^{२३} पाटीय ।
 भरद्वाज सौं भेट कीय, श्री रघुबर जुत तीय ॥३२२६
 पूछी भारद्वाज प्रत, खबर अवधपुर खेम^{२४} ।
 सुभख देस कैसो समय, जनवहु^{२५} मुनवर जेम ॥३२२७

१ मुक्ति = छुटकारा । २ गिद्ध । ३ दृग । ४ गोदावरी । ५ वृक्ष । ६ तट = किनारे ।
 ७ मुनि । ८ स्थान । ९ जगह । १० इन्द्र । ११ ऋषियों । १२ पर्वत । १३ आदिक ।
 १४ यमुना । १५ त्रिबैनी । १६ सरस्वती । १७ हरा । १८ मील । १९ दशरथ ।
 २० प्रणाम । २१ आदि । २२ निर्मल । २३ तिथि । २४ क्षेम । २५ बताइये ।

मात भ्रात है कुसल मम, गुरजन मंत्री गेह ।
करग जोर रघुवर कही, सबकी सीहत सनेह ॥३२२८

छंद पद्धती

सुन राम वचन मुनिवर सनेह, ऊर हरख^१ भरथ^२ कथ कही येह ।
भ्राता लघु तुनरे परम भक्त, जप ताप करत नित जोग जुक्त ॥३२२९
सिर जटाजूट बलकल मुवास, ईक तुमहि मिलन की दरस आस ।
पादुका करत सेवा पुनीत, नित राज-काज निखाह^३ नीत ॥३२३०
सुख श्रवधपुरी राजी सकोय, सिख^४ आवत जावत कहत सोय ।
महि भार टार आये मुकांम, राजीव नयन सोय सहित राम ॥३२३१
सब सुखी करे मुनिवर समाज, रांवन कौ कीनी नष्ट राज ।
आतिथ्य^५ गृहऊ पूजा ऊदार, दिन आज विराजहु हमहुँ द्वार ॥३२३२
अज्ञा^६ मुनि पालक श्रीघईन्द्र, चिव-धाम^७ विराजे रामचंद्र ।
मुनि फहे फेर ईह समाचार, वरदांन लेहु रघुवर विचार ॥३२३३
करजोर कह्यो पुन सीयाकंथ, पय श्रवधपुरी दहुधौं^८ प्रजंत ।
बन फूल-फलन गुत होय वृद्धछ, रुच पाय रहै सब कीस रिच्छछ^९ ॥३२३४
मुन^{१०} तथा अस्तु^{११} कहि भयो मोद, कुट^{१२} फूल ऊठे जब चहुँ कोद ।
श्री रामचंद्र मुनिवर सराह, रमनीक^{१३} अजोध्या देख राह ॥३२३५
बोले हनमत^{१४} सौ जिही बेर, हीय भरत भ्रात की दसा हेर ।
पन^{१५} श्रीघ^{१६} करी सोई भई पार, सुभ जाय कही सब समाचार ॥३२३६
कल मिलन करहि हम प्रात फाल, हित सहित कहहु तुम कुसल हाल ।
गुह भोल रहत ईक बीच गेल, मुहि सखापनी^{१७} राखत सुमेल ॥३२३७
जिह कहहु कुसल मेरो जहर, पूछे सोऊ वृत्त^{१८} पेन^{१९} पूर ।
ईहो कही जब रघुवर ऊदार, पहुंचे हनुमोनहु ग. पार ॥३२३८
पुर भगबेर पय घोच पेय, वर राम साखा जाने वसेख^{२०} ।
गुह प्रनं करी हनमंत जात, बिध जुक्त राम को कुसल बात ॥३२३९

१ श्रयं । २ मलय । ३ निर्वाण । ४ निष्ठा । ५ आतिथ्य । ६ भ्राता । ७ मुनिव्रता के स्थान =
सुखधाम । ८ शोको कोर । ९ गौड । १० मुनि । ११ अस्त्वु । १२ वृक्ष । १३ रमणीक ।
१४ हनुमान । १५ प्रण । १६ शरणागि । १७ मैत्री । १८ वृत्त । १९ प्रेम । २० विशेष ।

गये तहाँतै हनमत नदिगाँम, धरमग्य^१ धुरंधर भरथ घाँम ।
 वपु^२ दुर्बल^३ धारै जतो बेख, लघु भ्रात राँम के भक्त लेख ॥३२४०
 करजोर बधाई राँम केर, हनमंत दई जब भरथ हेर ।
 माहा^४ राखस^५ राँवन खेत^६ मार, भूम कौ ऊतारघौ राँम भार ॥३२४१
 सब मित्र वरग^७ लीने समाज, आश्रम मुनि भारद्वाज आज ।
 रहिहै सब बासुर^८ जहाँ रात, पद कमल ईहाँ धारहि प्रभात ॥३२४२
 सुख दाँनी बाँनी सुनी श्रौन, मुख भयौ प्रफुल्लत गही मौन ।
 भानंद के असुवा^९ ऊमड़ आय, भर छाती सात्वक^{१०} प्रगट भाय^{११} ॥३२४३
 भेटे हनमत सौँ भुजा भाग, सुख पाय सुभागम साँनुराग ।
 माँगीर्य बधाई अहो मित्त, ^{१२}चाहै कछु बंछत^{१३} सोय चित्त ॥३२४४
 बोले नही हनमत कछू बात, हाजरी खरे^{१४} रहे जोर हाथ ।
 जब करी भरथ बगसीस जाँन, दीनी सुरभी^{१५} ईक लक्ष दाँन ॥३२४५
 सात^{१६} ग्राम ऊर्वरा^{१७} ईधक सीम, सइ श्रौघपुरी बाहर ससीम^{१८} ।
 बिधु बदन कुमारी त्रीया बेस, कमलाक्षी^{१९} गूधरवार^{२०} केस ॥३२४६
 ऊन्नत ऊरोज जघा अरोम^{२१}, सुच अंगी सोरह सहस सोम^{२२} ।
 ईहीं देत बधाई मत ऊदार, सुख दायक सुनकै समाचार ॥३२४७
 पूछी हनमत सौँ सहित प्रीत, श्रीराँम लखन अरु खबर सीत ।
 बोले जब हनमत बिमल वाँन, सुन लेहु हकोकत भरथ श्रौन^{२३} ॥३२४८
 निज पिता दयौ दसरथ नरेस, बनवास चतुर्दस बरख बेस^{२४} ।
 दसरथ नृप त्यागी फेर देह, सोकाकुल^{२५} ह्वैक सुत सनेह^{२६} ॥३२४९
 जिह दिनन रहे ननिहार^{२७} जाय, वहतै तुम पहुचे ईहाँ आय ।
 मत्रिन मिल माता कीय मिलाँन, सब चित्रकूट पहुचे सुथान ॥३२५०
 साँपन^{२८} तुम लोग राजश्रीय^{२९}, कछु अंगीकृत^{३०} नही राँम कीह ।
 पादुका सीस धर ऊभय^{३१} पाय, अज्ञा लै तुम तौ ईहाँ आय ॥३२५१
 सीय राँम लखन त्रहु^{३२} जने साथ, नग^{३३} चित्रकूट तज चले नाथ ।
 डंडकारन^{३४} मग लयी देख, बतरात^{३५} चले बातन बसेख ॥३२५२

१ धर्मज्ञ । २ शरीर । ३ दुर्बल । ४ महा । ५ राक्षस । ६ युद्ध क्षेत्र । ७ मित्र वर्ग ।
 ८ दिन । ९ आसू । १० सात्विक । ११ भाव । १२ मित्र । १३ वाञ्छित । १४ खड़े ।
 १५ गायें । १६ सौ । १७ उपजाऊ । १८ पास । १९ कमल नयनी । २० घूँघर वाले ।
 २१ रोम रहित । २२ सौम्य । २३ कान । २४ वर्ष । २५ शोकाकुल । २६ स्नेह ।
 २७ ननिहाल । २८ सोपने । २९ राजगद्दी । ३० अंगीकृत = स्वीकार । ३१ दोनों ।
 ३२ तीनों । ३३ पर्वत । ३४ डंडकारण्य । ३५ बातें करते हुए ।

पारंद्र^१ जंतु अरू पंडरीक,^२ दस-दिसा जूथ गज परत दीख ।
 तरु तरल सरल गिरवर तसाम, ठट मृघगन^३ बिचरत ठाम-ठाम ॥३२५३
 बन सघन घोर कुंजत बिहंग, ईक लख्यौ निसाचर दिघघ^४ अंग ।
 अघबदन ऊठायै उद्ध^५ बाह, अघरूप भयंकर बल अथाह ॥३२५४
 मारचौ तिह रघुवर बाँन मार, पापी बिराध भव^६ भयौ पार ।
 सरभंग गये आश्रम सिधाय, पुन मुनिवर भेटे मीदपाय ॥३२५५
 राजीव नयन कर दरस राँम, धर ध्यान गये मुनि परमधाम ।
 श्रीराँम गये फिर जन स्थान, अह^७ केऊ कर हे बाहू-अजाँन^८ ॥३२५६
 भगनी राँवन की अत भयान, कल्पन^९ कीय लछमन नाक काँन ।
 आये जु निसाचार सुन अहेत, खरदूखन मारे त्रसर खेत ॥३२५७
 विलखाय कुकर्मा गई बहोर, सुरपनखा^{१०} कीनौ लंक सोर ।
 मारीच संग दससिर^{११} मदंध, छल सौ मृघ सोबृन^{१२} करचौ छंद ॥३२५८
 रच कपट दिखाई दई राँम, भाबी^{१३} बस बोली सीया भाम ।
 मृघ अद्भुत लावहु महाराज^{१४} अवलोकन चाहत जिही आज ॥३२५९
 लोग धनु लैकै राँम लार,^{१५} मृघ भागे त्याही बन मभार ।
 अत दूर गये नाये अपूठ, पुन लखन सीया पहुचाय पूठ^{१६} ॥३२६०
 वँह अवसर राँवन गयी आय, सीता कौं लेगौ बिन सहाय ।
 बैठारी रथ में पकर बाँह, रथ हाक चल्यौ पुन लंक राह ॥३२६१
 रपट्यौ तिह देखे गिहृदराज, बहु भपट्यौ ताही मार बाज^{१७} ।
 मारचौ तिह राँवन बाँन मार, धरनी पै गिरगये मोहधार^{१८} ॥३२६२
 लैग्यौ सीया कौं लक बीच, नय^{१९} त्याग अघृमो^{२०} महानीच ।
 ललचाई सीता बहु निलाज,^{२१} सीता न तज्यौ पतिव्रत सुकाज ॥३२६३
 आश्रम तिह दीनी बन असोक, थपे^{२२} त्रीध राखसि थोक-थोक ।
 मृघ^{२३} मार राँम आये मुकाम, वेदेही नाहिन लखी वाम ॥३२६४
 पुन खोजन लागे आसपास, अत^{२४} सीया बिरह हूँकै ऊदास ।
 प्रभु कंतर^{२५} अंतर लयो पंथ, सु बिलोक जटायू रत^{२६} श्रवत^{२७} ॥३२६५

१ तिह । २ छोटी राक्षसों की स्त्रियां । ३ मृग = हिरन । ४ दीर्घ । ५ ऊपर । ६ संसार ।
 सागर । ७ दिन । ८ आजानु भुजा । ९ काट डाली । १० सूपनखा । ११ रावण । १२ सीता ।
 १३ होनहार । १४ महा । १५ पीछे । १६ पीछे । १७ पंखों । १८ मूर्च्छित । १९ नीति ।
 २० अघृमो । २१ निलज्ज । २२ मू.प्र. थपे । २३ मृग-हिरन । २४ अति । २५ बन ।
 २६ रत । २७ अत रहता था ।

तब पूछी रघुवर कही ताहि, बिरतत^१ दयी राँवन बताय ।
 ग्रीध^२ की मोक्ष कर करची गाँन^३, भेट्यौ कबंध राखस^४ भयान ॥३२६६
 बिच अटवी^५ मारचौ ऊभय बीर, तीखी^६ बहु भालन मार तीर ।
 आगे कछु चाले औध-ईस, पहुचे गिर सूकहि^७ मिल कपीस ॥३२६७
 मित्रता भयी तासौं समंध^८, सीता की पाई फेर संध^९ ।
 हित पाय कछ्यौ सुग्रीव हाल, बाढ्यौ बिरोध जिह रीत बाल ॥३२६८
 मारचौ वाली कौ महाराज, राजा सुकंठ^{१०} कौ दयी राज ।
 सुग्रीव सखापन^{११} के समंध, पुन खोजन सीय कीनौ प्रबंध ॥३२६९
 दूतन कौ भेजे चहुँ देस, बलवंत कीस अगनत^{१२} बसेस ।
 दखन^{१३} दिस हमहु गये दौर, अत निरभय साथे कीस और ॥३२७०
 बिध्याचल पहुचे जिही बेर, दिग भूल गये तब लगी देर ।
 द्राक्षाय^{१४} जटायू आत देख, बिस्मयत^{१५} भये तिह छिन बसेख ॥३२७३
 संपात नाम पहिचान साथ, बिध-बिध-सौं लागे करन बात ।
 राँम की कथा सुन गिद्धराज^{१६}, सीता की दोनी खबर साज ॥३२७२
 पुर लंक बीच दध^{१७} भरचौ पाथ^{१८}, सब कसे पहुचै जहाँ साथ ।
 पुन भये अकेले हमहि पार, ज्याँकी^{१९} मिले पुर लंक जार ॥३२७३
 आयकै पास फिर औधईंद्र, ^{२०} करजोर बिनय कीनी कपिंद्र ।
 कीय राँमचंद्र जब माहा^{२१} क्रुद्ध अहि रूप बाँन गहि धनुष ऊद्ध ॥३२७४
 आहव^{२२} कै कारन जुत ऊछाह, रघुनायक लीनी लंक राह ।
 नल-नील कीस मति के निकेत, सागर पै बाँधी जाय सेत ॥३२७५
 ईतनहु बभीखन मिले आय, आता राँवन कौ भेद पाय ।
 कपि कटक ऊतारचौ अकू^{२३} पार, राँवन सौं माड़ी जाय रार ॥३२७४
 पुन नील मार लीनौ प्रहस्त, गढ लंकपती ह्वै सोक प्रस्त ।
 भट कुंभकरन दै संग आत, बिच सगर आयी बल विख्यात ॥३२७७
 खल मार पछारचौ बीर खेत, हट लाग सीयाबर^{२४} विजय हेत ।
 घननादहु कौ लीय लखन घेर, द्रुत मार लयी बहु बाँन देर ॥३२७८

१ वृतांत । २ गिद्ध = जटायू । ३ गमन । ४ राक्षस । ५ बन । ६ तीक्ष्ण ।
 ७ ऋषि सूक पर्वत । ८ संबंध । ९ समाचार । १० सुग्रीव । ११ मैत्री । १२ अगणित ।
 १३ दक्षिण । १४ गिद्ध । १५ विस्मित १६ संपाती । १७ समुद्र । १८ जल । १९ सीता ।
 २० राम । २१ महा । २२ युद्ध । २३ समुद्र । २४ सीता पति राम ।

राँवन रघुवर कै भई रार, तव सात दिवस लग येक तार^१ ।
 माहा^२ दुष्ट-तिष्ट^३ दीनौ मिटाय, सकुटंब राँम राजा सुभाष ॥३२७६
 ईत ईंद्र बहन जमराज आय, पमरेष्टी^४ सिव बरदाँन पाय ।
 पितु दसरथ दरसन लै पुनीत, कीनी जग ऊपर अमर क्रीत^५ ॥३२८०
 रघुवीर बभीखन दयौ राज, ध्रुव लगग अङ्ग^६ राजाधिराज ।
 वृद^७ पाय बिसद लंका बरीस,^८ आये तुम मिलनं अवघईस ॥३२८१
 पुस्पक^९ विमान आरोह^{१०} प्रात, सज्जन गन लीने सबहि साथ ।
 मुनि भरद्वाज सौं कर मिलान, पुर श्रीध^{११} करहि निश्चय^{१२} प्रयाँन ॥३२८२

दोहा

समाचार आगम^{१३} सुने, भरथ राँम लघु आत ।
 दई बधाई दूत प्रत, सह अवरोधन^{१४} साथ ॥३२८३
 गुर मंत्री पुर ग्रेह में, गली-गली सुभ गाथ ।
 आवत लंका जीत ईत, राजा श्री रघुनाथ ॥३२८४

छंद पद्धती

सत्रुघ्न भरथ सासन^{१५} सुनाय, जुर करहु तयारी सहर^{१६} जाय ।
 सुधराय देव-मंदर^{१७} सकोय, सोगंध^{१८} पुस्पमाला समीय ॥३२८५
 बाजंत्री बंदी जन बसेस, पोरानक आदक आय पेस^{१९} ।
 गनका सुच अंवर^{२०} पहर गात, पथ राँम दरस चालह प्रभात ॥३२८६
 सेना चतुरंगी भट सभाय, मंत्रीगन चालै गन मिलाय ।
 रघुवर अगवाँनी लखै रूप, भल्लुक कपि औरहु लंक-भूप ॥३२८७
 सत्रुघ्न जाय कीनी सँभार, लाखन मजूर कौं लीयै लार ।
 घंटापथ^{२१} चौहट वाट घाट, ऊन्नती करी पुन हाट-आट ॥३२८८
 धीराय धवर हर दाव धूर,^{२२} पुन छीज^{२३} सुगंधत नीर-पूर ।
 रचना फिर कीनी चित्र रंग, सितरंजन पिगल^{२४} सित सुरंग ॥३२८९

१ तगातार । २ महा । ३ दुष्ट । ४ ब्रह्मा । ५ कीर्ति । ६ अङ्गि = अविचलित ।
 ७ विरद = यश । ८ लकेश्वर बनाने वाले श्रीर उसके अधिपति । ९ पुष्पक । १० सवार-
 भोजर । ११ अयोध्यापुरी । १२ निश्चय । १३ आगमन । १४ स्त्रियों । १५ आज्ञा ।
 १६ नगर । १७ मन्दिर । १८ सुगंधित । १९ उपस्थित होकर । २० वस्त्र । २१ राजपथ ।
 २२ धृति । २३ छिड़काव । २४ पीला ।

बहु बंदन माला बार-बार, माला फूलन की तिह मभार ।
 ध्रुव धजा^१ पताका घाँम-घाँम, लंगथगत पौन^२ लागत ललाम ॥३२६०
 दसहू-दिस पत्तन^३ निकट दूर, जगमगत जोत दीसत जहूर^४ ।
 पुन राज-पंथ में पौर-पौर, जर तार किनारी जोर-जोर^५ ॥३२६१
 गुच्छा^६ मोतिन के गोय-गोय, पत्ता मनि लालन^७ पोय-पोय ।
 सोबर्न^८ तार जामें सँवार, दहुधाँ^९ मग^{१०} बाँधे द्वार-द्वार ॥३२६२
 बापी तड़ाग अरु बाग बृच्छ, ^{११}सब बीथी^{१२}थाना करे स्वच्छ^{१३} ।
 जहाँ तहाँ निसीथनि^{१४}बीत जात, प्राची^{१५}दिस आगम लख्यौ प्रात ॥३२६३
 जुर मंत्रीगन घृष्टहु जयंत, सिधार्थ बिजय साधक सिधंत ।
 अरु मिले अर्थ साधक असोक^{१६}, थिर चित्त मंत्र पालक सथोक ॥३२६४
 चढ चले सुमंत्रहु जुत-ऊछाह^{१७}, रघुवर अगवाँनी काज राह ।
 ओरहु प्रघाँन कुंजर^{१८} अरोह, सभ धुजा पताका निभ संदोह ॥३२६५
 हयसादी^{१९} चाले हयन^{२०} हाक, चहुँ ओर मेदनी चढी चाक ।
 आरोह चले रथ-रथी आद, निस्सरन^{२१} होत घरराय नाद^{२२} ॥३२६६
 पैदल मिल चाले पंत-पंत,^{२३} अंत देत दिखाई अंत-अंत ।
 अनगनत रतन मनि ऊल्लरीय, झलमलत कुंजरन झुल्लरीय ॥३२६७
 जर तारी सिदन^{२४} जगी जोत, आभा रवि किरनन मनु ऊदोत ।
 जगमगत जँवाहर हयन जीन, सोबर्न तार मंडत सबीन ॥३२६८
 माता सब बंतीतक मभार, लसकर कर आगै चली लार ।
 प्रोहित गुर आदक सबे पास, सौबिदल प्रत्तयत सावकास ॥३२६९
 अरु भुंड-भुंड दासी अनेक, बपु मंगल रूपी करै देख ।
 माला अरु मोदक मंगलीक, कर लीयै धुनै थारन कितीक ॥३३००
 सहनाय नगारे बजत संख, डाँडीये भेरीयन लगत डंक ।
 गायन मिल गायक रचत गाँन, बज बीन पखावज सुभग बाँन ॥३३०१
 पादुका सीस धर चले पाव, आता रघुवर के भरथ भाव ।
 सोबर्न डंड का चमर सेत, सुभ छत्र लीयै माला सहेत ॥३३०२

१ ध्वजा । २ पवन । ३ नगर । ४ रौनक । ५ जोड़ । ६ गुच्छा । ७ लाल । ८ सोना ।
 ९ दोनों ओर । १० मार्ग । ११ वृक्ष । १२ गली । १३ स्वच्छ । १४ रात्रि । १५ पूरब ।
 १६ शोक रहित । १७ उत्साह सहित । १८ हाथी । १९ अश्वारोही । २० घोड़ों ।
 २१ मार्ग । २२ ध्वनि । २३ पंक्तियों में । २४ रथ ।

वपु खीन सुधारै जती वेख, रघुवीर भ्रात-लघु धर्म-रेख ।
 मुच वाँमदेव वासष्ट संग, ऊर राँम दरस धारै ऊमंग ॥ ३३०३
 सभ नंदिग्राम सौं चली संन, ललकंत राँम अगवाँनि लेन ।
 रथ कुंजर पावन पंथ लूँघ, खुर तारन घोरन भुँम्म खूँद ॥ ३३०४
 बढ आगै चाले दूर वाट, धुन वाढी चँहुथाँ धरधराट ।
 फहरह निसाँन नभ चहूँ फेर, घहरत अवाज घन बाज घेर ॥ ३३०५
 दल हैदल गैदल मिल दिखात, सालुरे मनहु सामंद्र सात ।
 सब अवधपुरी वासी समाज, दिस देखत आश्रम भरद्वाज ॥ ३३०६
 चित्र^१ सरदचन्द आवत चछोह, याँन^२ काँ देख कीनी ऊपोह^३ ।
 सब भये पयादे येऊ-संग^४, अवधेस दरस वाढी ऊमंग ॥ ३३०७
 परनाम^५ करत दहु^६ जोर पाँन,^७ भव हेत क्रतारथ^८ ऊदय भाँन ।
 ईतने में राघव निकट आय, पुरजन अवलोकै मोद पाय ॥ ३३०८
 सीय राँम लखन सब सखा संग, अवलोक भरथ वाढी ऊमंग ।
 अवनकीं^९ ऊतारची याँन आय, भरथ सौं मिले सात्वक^{१०} सुभाय ॥ ३३०९
 बँठार गोद में लयी वीर, भेटकै अंक सौं अंक भीर ।
 पुन लखन भरथ कीने प्रनाँम, भरथह दरस कीय राँम-भाँम^{११} ॥ ३३१०
 सुग्रीव मिले फिर भरथ संग, पुन, जाँमवँत प्रीती प्रसंग ।
 अंगद मयंद कपि दुविद और, नल-नील रिखभ नीकै निहोर ॥ ३३११
 गज और गंधमादन गवाळ, अरु सरभ पनस सौं पकर आच^{१२} ।
 पुन संख्यावीन^{१३} सुसेन पेख, वतराय कुसल वाँनी वसेख ॥ ३३१२
 पतिलंक वभीषन मिल सप्रीत, राजन की जिह विध आद रीत ।
 सद्रुधन राँम पद साँनुराग,^{१४} ललचाय लखन जुत पाय लाग ॥ ३३१३
 ज्वाँनकी पाय कीनी जुहार, पूँद्रक^{१५} कुसल कय सहित प्यार ।
 श्रीसिन्धु साता प्रनत कीन, अवधेम नुमंत्रा पद अघीन ॥ ३३१४
 बेयई दरम कर कुसल साय, मन मुदत^{१६} तीन सँ साठ मात ।
 तीरन कर रघुवर वाट-वाट, निभ पुर वसष्ट^{१७} 'दुजवर'^{१८} निहार ॥ ३३१५

१ चित्र । २ विमान । ३ विषय । ४ एक साथ । ५ प्रणाम । ६ दीर्घ । ७ हाथ ।
 ८ कर्म । ९ सुनिश्चय । १० सन्निहित । ११ सीमा । १२ हाथ । १३ बुद्धिमान । १४ मन्त्र ।
 १५ अन्धकार । १६ सुनिश्चय । १७ वसिष्ठ । १८ दिग्बर ।

जन भ्रवधपुरी सध करग जोर, ठाढे भये अगनत^१ ठौर-ठौर ।
 भरपूर निछावर करी भेट, मन बर्ष चतुर्दस सोच भेट ॥ ३३१६
 पाटुका राँम की राँम पाँव^२, पहराय भरथ कीनी पसाव ।
 आपकी राज बाहू अजाँन^३, मो पास धरोहर धरचौ माँन ॥ ३३१७
 कीजीयै गृहन^४ रघुवर क्रपाल, प्रभु मोर अरज^५ ईह प्रजापाल ।
 बन चले गये ईक दिवस बीच, कल^६ गई अजोध्यापुरी कीच ॥ ३३१८
 ऊधार^७ कीयौ पुन^८ आप आय, सुख मोद हमहु बाढचौ सबाय^९ ।
 ईह क्रपा करी रघुवर अपार, विनती सुभ मेरी बार-बार ॥ ३३१९
 सब देख भरथ रघुवर सनेह^{१०}, लोचन दुख मोचन लाभ लेह ।
 अत भये अनंदत^{११} जुत ऊछाह, रघुवीर भरथ गृह^{१२} लई राह ॥ ३३२०
 गुनधाम^{१३} ऊतरे नदिग्राम, सुख पाय सलोने भ्रवध स्याँम ।^{१४}
 सेना सब ऊतरी राँम साथ, पुस्पक^{१५} बिमान सौँ समय प्रात ॥ ३३२१
 पुस्पक विमान सौँ सहित प्रेम, निज राँम बचन बोले सनेम ।
 ऊड़ जावहु अलका पुरी आद, सब कहीयो लंकापुर सँबाद^{१६} ॥ ३३२२
 पति तोहि कुबेरहि लोकपाल, बैठावहु करकं चित बहाल^{१७} ।
 पुस्पक बिमान दिस ऊतर-पंथ,^{१८} तब गयो पुरी अलका तुरंत ॥ ३३२३
 सबहिन^{१९} कुबेर निध देत साज, कीनौ रघुवर तिह अभय काज ।
 बसु^{२०} रघुवर की रचना विचित्र^{२१}, चित सुद्ध करे पावन चरित्र ॥ ३३२४

दोहा

बिहस राँम बासपृ^{२२} गरु, पाव पलोटत पाँन^{२३} ।
 सोहत माँनहु सुर सभा, बृहसपती मघवाँन ॥ ३३२५
 महाँबाहु रघुबंस मन, सखा देव गरु साथ ।
 राँम बिनय कीनी भरथ, हरख जोर बिन हाथ ॥ ३३२६

छंद अर्थ हरगीतका

पथ धर्म रीत प्रमाँनीयै, माहाराज अरजी माँनीयै ।
 रघुवीर बंधव रावरी, अनजाँन बुद्धि ऊतावरी ॥ ३३२७

१ अगणित । २ पैरों में । ३ आजानु भुजा । ४ ग्रहण । ५ विनती । ६ सुन्दरता ।
 ७ उद्धार । ८ पुनि । ९ सबाया । १० स्नेह । ११ अनंदित । १२ घर ।
 १३ गुणधाम । १४ स्वामी । १५ पुष्पक । १६ संदेश । १७ स्वस्थ । १८ उत्तर-दिशा
 का मार्ग । १९ सभी को । २० पृथ्वी । २१ विचित्र । वशिष्ठ : २३ हाथों में ।

अथ एषा मेव जनार कं, धीरेव बोधा धारकं ।
 एषा मेव दामर जाहि कौ, पय केम धने पाय कौ ॥३३२२॥
 ईव सीतली एव धारीये, ध्रुव राज भारहि धारीये ।
 एषा एषा वासहू मी, विरवाह नय का नीत सी ॥३३२३॥
 अथीव ही एव धारके, परवाह पुंस प्रताप के ।
 मीव सीतली निज नेम मी, गुप्त रहिहि कंस रोम सी ॥३३२४॥
 एवमेव एव वितापके, ईहां दरस दीनी पायके ।
 एवमेव एव एवमेव के, एव सकल करहे देव के ॥३३२५॥
 एव एवमेव एव के मोद कौ, अभजाप पूरह शोध कौ ।
 एवमेव एवमेव सीत के, अनकार नूपर भीन के ॥३३२६॥
 एव एवमेव करीये गावरे, ध्रुव धवरहुर निव धाम रे ।
 एवमेव एवमेव मीर कौ, एव कामीये प्रभु भोर कौ ॥३३२७॥
 एव एवमेव एव एवमेव कौ, एव खाद मातन मेह कौ ।
 एवमेव एवमेव एव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ॥३३२८॥
 एव एवमेव एवमेव एव के, एवमेव मी अनंतरत होय के ।
 एव एवमेव एव कौ एवमेव, एवमेव एव अनुरागीये ॥३३२९॥
 एव एवमेव एवमेव एव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ।
 एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ॥३३३०॥
 एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ।
 एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ॥३३३१॥
 एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ।
 एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ॥३३३२॥
 एवमेव एवमेव एवमेव एवमेव के, एवमेव एवमेव एवमेव के ॥३३३३॥

...
 ...
 ...

बगसे अलंकृत^१ वीर कौं, सब सखा आद सधीर कौं ।
 सोगंध^२ फूल सनेह^३ की, दुत^४ बढी तासौं देह की ॥३३४१
 सुभ सिध-आसन स्वर्न कौ, जगमगत रत्नन जरन कौ ।
 थिर भरथ थप्पे थान कौं, अवधेस भुज-आजाँन^५ कौं ॥३३४२
 बँठार गृहकै बाह^६ कौं, ऊर लाय अमित ऊछाह कौं ।
 लघु भ्रात लछमन लेख कै, पुन भरथ प्रति परेख कै ॥३३४३
 सतकार^७ कीनी सौगुनौ, घट लायक आँद घनौ ।
 सब मातहू ईक साथ सौं, हीय हरख अपने हाथ सौं ॥३३४४
 सीय बधू-सुत^८ श्रङ्गार कै, सुच बेस अंग सँवार कै ।
 कीय संस्कार^९ कितेकहू, जसदाय सुभग जितेकहू ॥३३४५
 मुदपाय कौसल मात^{१०} हू, श्री बंदरन की साथ हू ।
 पवसाक^{११} पट पहराय कै, श्रङ्गार तन सरसाय कै ॥३३४६
 सत्रुघ्न बोल सुमंत्र कौं, तिथ महरत लै तंत्र कौं ।
 सत्तंग^{१२} साभ संवार कै, बुलवाय लीन बिचार कै ॥३३४७
 द्रग दिव्य रथ कौं देख कै, बिनती सु कीन बसेख कै ।
 चढ अवधपुर कौं चालीयै, बाजार पथ बिचालीयै^{१३} ॥३३४८
 जन देख है द्रग जोरकै^{१४}, भज भाव दिनमनि^{१५} भौर कै ।
 ऊठ चले राँम ऊतावरे, सिर मुकट धारे साँवरे ॥३३४९
 कुंडलहू सोहत कान में, मीन^{१६} माल गल मुक्तान^{१७} में ।
 बहुटा^{१८} कटक^{१९} भुज बीय^{२०} में, अरु ऊर्मका^{२१} अंगुलीय में ॥३३५०
 पुन श्रङ्गला जुग पाव के, जगमगत स्वर्न जराव के ।
 आरोह रथ में आय कै, भूतान सौन भिराय कै ॥३३५१
 कोडंड^{२२} लै भुजडंड कै, मध^{२३} बैठ आसन मंड कै ।
 सीय बँठ रथ में सुंदरी, बहु नार लै संग बंदरी ॥३३५२
 द्रग नगर सोभा देखनै, बर हृदय मोद बिसेखनै ।
 मंत्री पुरोहित मेल कै, ठट सुभट चाले ठेल कै ॥३३५३

१ अलंकार = आभूषण । २ सुगंधित । ३ तेल । ४ द्युति । ५ घोंद तक लम्बी
 भुजाओं वाले । ६ भुजा । ७ सत्कार । ८ पुत्र-वधू । ९ संस्कार । १० कौशल्या माता ।
 ११ पोशाक । १२ रथ । १३ बीच-से । १४ आँख जोड़कर । १५ सूर्य । १६ मणि ।
 १७ मोतियों । १८ भुजबंद । १९ कड़े । २० दोनों । २१ अंगूठी । २२ धनुष । २३ मध्य ।

महाराज^१ बैठे रथमही, जगमगत अत^२ सोभा जहीं ।
 स्वारथी^३ बाग सँभाय कं ईत भरत बैठे आय कं ॥३३५४
 ध्रुव छत्र रघुवर धार कं, सत्रुघ्न पाँन^४ सँभार कं ।
 बर लछन^५ करत बयार^६ कौं, सोगध^७ संद सुधार कौं ॥३३५५
 धर करग लंकाधीसहू, सित चमर ढोरं सीसहू ।
 द्रग राँम सोभा देखनै, बढ प्रेम नेम बिसेखनं ॥३३५६
 ऊप बाभय दसरथ ईस कं, चढ सत्रुँजय गज सीस कं ।
 संग करचौ मग संचार हू कपि इंद्र^८ पवनकुमार^९ हू ॥३३५७
 चढ बिमानन नभ छाद्य कं, अनगिनत^{१०} सुर घुनि आयकै ।
 कर स्तुत^{११} जय जय कहत है, लख लाभ लोचन लहत है ॥३३५८
 गज चले माँन गिरंद^{१२} के, नव सँहस राँम नरिंद के ।
 भट चढे आवध^{१३} भीर कं, सभ सिलह^{१४} बेल सधीर कं ॥३३५९
 गनती^{१५} न है दलगात की, संख्या न पैदल साथ की ।
 रथ-रथी चाले राह सौं, अतरथी^{१६} राँम ऊछाह सौं ॥३३६०
 अतचली सैन ऊमंड कं, मनु घटा भादब मंड कं ।
 बुक^{१७} पंत सम बहुलात^{१८} है, फीलन^{१९} धुजा फहरात है ॥३३६१
 कर हेत दमकत रिब^{२०} कला, चमकंत माँनहु चंचला^{२१} ।
 घन जेम नभ घरराय कं, आवाज दुंदभ आयकै ॥३३६२
 धुन मिली धू-धू धूक जयां, कर नाल मोर कुहूक जयां ।
 विथुरी पपीयन^{२२} बाँन की, गुन गायकन के गाँन की ॥३३६३
 बरतंत बाजत बीन की, भनकार भिल्ली भीनकी ।
 हाकनन की बन होल कं, बढ सोर ददुर^{२३} बोल कं ॥३३६४
 चिब^{२४} रंग कुंकम^{२५} चल^{२६} कं, फूली सु संध्या फूल कं ।
 भुक मुदर^{२७} चहु दिस लग भरी, आनद धारा औसरी ॥३३६५
 चित अवधवासी चाव सौं, भीजे सु रघुवर भाव सौं ।
 आयौ मनौ सुर इंद्र कं, निज नग्र^{२८} अवध नरिंद्र कं ॥३३६६

१ मू. प्र. माहाराज । २ अति । ३ सारथी । ४ हाथ । ५ लक्ष्मण । ६ वायु = हवा ।
 ७ सुगंधित । ८ सुग्रीव । ९ हनुमान । १० अगणित । ११ स्तुति । १२ पर्वत ।
 १३ अयोध्या । १४ वस्त्र । १५ गिनती । १६ अतिरथी । १७ बंगुलों की पंक्ति ।
 १८ वाहल्य । १९ हाथी । २० सूर्य । २१ विजली । २२ पपीहा । २३ मेंढक । २४ सुन्दर ।
 २५ केसर । २६ वस्त्र । २७ वादल । २८ नगर ।

चढ अटा ऊपर चाँदनी, मुद पायकै मोती मनी ।
 वारं सु कर-कर आरती, प्रज^१ देखकै कोसलपती ॥३३६७
 केसर, कुलीनसु^२ कुमकुमा, भर करत पुरजन भूमभूमा ।
 गावत बधाई गीत कौं, पहिचौं रघुवर प्रीत^३ कौं ॥३३६८
 करजोर प्रभू दरसन करचौ बनवास कौं दुख बोसरचौ^४ ।
 हरखे अनंदत^५ होय कौं, जनु कमल दिनकर^६ जोय कौं ॥३३६९
 वतरात आपस बात कौं, संबोध कर-कर साथ^७ कौं ।
 प्रभु लक्ष्मन^८ कौं प्रेम की, निज भरथ आता नेम की ॥३३७०
 सत्रुघ्न साधक साच की, जन संत्रिग्न के जाच की ।
 सीय पतीव्रत^९ की साधना, अरु पवनसुत^{१०} आराधना ॥३३७१
 पुन वानरिद्व^{११} सखानौ,^{१२} जुगराज^{१३} अंगद समुझनौ^{१४} ।
 जुरनौ सु जूथप-जूथ कौं, बाख्यान कीस बरुथ कौं ॥३३७२
 अरु बभीखन कौं आवनौ, पद लंकपत कौं पावनौ^{१५} ।
 सागरहू बाँधन सेत कौं, सिव परम पुज्य^{१६} सहेत कौं ॥३३७३
 रन^{१७} लंकगढ कौं रोपनौ, कल^{१८} सीयाबर^{१९} कौं कोपनौ ।
 जिम निसाचर कौं जूझनौ, ईत कीस सैन अरुझनौ^{२०} ॥३३७४
 अतकाय आदक आवनौ, जमलोक के पथ जावनी ।
 घननाद लछमन घेरनौ, चढ कीस दल कौं छेरनौ^{२१} ॥३३७५
 अरु कुंभकरन अहेत में, खल राँस मारचौ खेत^{२२} में ।
 दसकंध मारचौ दाव सौं, घट ब्रह्मासर^{२३} के धाव सौं ॥३३७६
 जय पाय रघुवरे जंग की, समुदाय बंदर संग की ।
 लंका बभीखन दैलई, जग कीरती^{२४} रघुबर जई ॥३३७७
 ऊर सीया सौं अनुरागनौ^{२५}, तहाँ सेटकै फिर त्यागनौ ।
 ऊठ सीया प्रवसी^{२६} आथ में, महौं^{२७} ज्वाल-माला आग में ॥३३७८
 बिघ^{२८} आदसुर तिह बेर पै, आये न कोन अवे^{२९} पै ।
 अवधेस कीन ऊराहना, सीय करी बहुत सराहना ॥३३७९

१ प्रजा । २ जल । ३ प्रीति । ४ भूल गया । ५ आनन्दित । ६ सूर्य । ७ साथियों ।
 ८ लक्ष्मण । ९ पतिव्रत । १० हनुमान । ११ सुग्रीव । १२ मैत्री । १३ युवराज ।
 १४ समझ । १५ प्राप्त करना । १६ परमपूज्य । १७ रण = युद्ध । १८ युद्ध में । १९ राम ।
 २० उलझना । २१ छेड़ना । २२ युद्ध क्षेत्र । २३ ब्रह्मास्त्र । २४ कीर्ति । २५ प्रेम करना ।
 २६ प्रवेश किया । २७ सू. प्र. माँहा । २८ ब्रह्मा । २९ विलम्ब ।

दीय अगन^१ साखी देवहू, भल जाँन रघुवर भेवहू^२ ।
 पुन ग्रहन कीनी पतिव्रती, सुख पायक^३ सीता-सती ॥३३८०
 पितु दरस लै पग पूजक^४, बाहुरे^५ रघुवर बूभक^६ ।
 पुस्पक विमान प्रयाँन की, दत सितोदर सख^७ दाँन की ॥३३८१
 कोऊ सुनत कोऊ कथ कहत है, बाजार रघुवर बहत^८ है ।
 अवधेत देखत औध की, सोभा भरोकन सौध^९ की ॥३३८२
 परजा^{१०} सु निजर^{११} पसात्र^{१२} सौं भर मोद कै हीय भाव सौं ।
 पहुंच सु राजन पौर कौं, घन दं नगारन घोर कौं ॥३३८३

दोहा

कुल राजा ईश्याक^{१३} के, भये दसरथ लौं भूप ।
 जोवत चाले जायगा, राज भवन के रूप ॥३३८४

छंद त्रोटक

चल राँम गये जब चत्वर^{१४} में, घन आँनद सौं पितु के घर में ।
 ललना बहु भद्रकरीर^{१५} लीये, सब ही अवरोध^{१६} मिली सखीयै ॥३३८५
 गुन-गीत बधाईय गावत है, सुख नैनन कौं सरसावत है ।
 नग कंचन तार^{१७} निछावर कै भर साँमन-भाद्रव^{१८} ज्याँ भरकै ॥३३८६
 सीय देखत पै सब होय सुखी महल^{१९} विच लैगई चंदमुखी ।
 मिलकै मुद पावत है महला, कमनीय मनी विधू^{२०} दूज कला ॥३३८७
 तुर सासु के पायन लागत है, अहवात असीसऊ^{२१} पावत है ।
 अत सोह^{२२} बढी राय^{२३} अगन की, मधुरी धुन बाज मृदंगन की ॥३३८८
 धवरोहर^{२४} घाँमन-घाँमन में, मुलकै मिल काँमिन^{२५} काँमिन में ।
 निभ दासि गवासान नायनीय^{२६}, गहरै सुर गावत गायनीय^{२७} ॥३३८९
 धिनना^{२८} कहि यात विसेकत है, द्रग सौं कोऊ आँनन देखत है ।
 कोऊ पूदन है कुसनात कहै, ललना मिल लाइली मोद लहै ॥३३९०

१ अगिदेश । २ भेर । ३ गणिम लीठे । ४ कुबेर । ५ चने जाते हैं । ६ महल । ७ प्रजा ।
 ८ सौध । ९ इना, अनुकूल । १० ईश्याक । ११ आँगन । १२ कनक । १३ रनिवास ।
 १४ बाँदी । १५ सावत-नारों । १६ चन्द्रमा । १७ नी । १८ मोना । १९ राज ।
 २० अमर कसरत । २१ कासिनी । २२ नाइकों की मियरी । २३ गाने वाली ।
 २४ अशिका = सती ।

सब सीय सखी लखकं सीय कौं, हरकावत^१ आय मिली हीय कौं ।
 कोऊ बिभन^२ भेल बयार^३ करै, धुरबीरीय भाजन केक धरै ॥३३६१
 सित चौर ऊड़ावत भौर सही^४, रुख देखत के मुख रीभ रही ।
 पुन पंकज पाव पलोदत है, धनसारहू^५ चंदन घोटत है ॥३३६२
 बंसुरी कोऊ बीन बजावत है, दुति^६ दर्पन लै दिखरावत है ।
 सुद पाय रही सब ही मिलकै, पुतरी-चख^७ ढांकत ना पलकै ॥३३६३
 अवरोध^८ भयौ सीय आवन कौ, परवाह^९ बढ्यौ सुख पावन कौ ।
 महाराजहू^{१०} इंद्रक भौन^{११} मही, जन संजुत^{१२} ठौर बिराज जँही ॥३३६४
 भईया लघु देखकै भारत^{१३} कौं, कपिराज सराह^{१४} कही कथ कौं ।
 चहुँ भ्रात ज्युँही ईह पंचम है, सब मात के अंगज^{१५} के सम है ॥३३६५
 परनाम^{१६} करावहु मात प्रतै, जुगराज^{१७} तथा हनुमंत जुतै ।
 महिलायत^{१८} भोर निवास मही, तुम जाय उत्तारहु भ्रात तँही ॥३३६६
 गहि हाथ सौं हाथ जबै गवने, सुगरीव^{१९} भरथ्य सनेह सने ।
 सब मात जुहारकै होय सुखी, रचना अवलोक के प्रेम रुखी ॥३३६७
 बहुरै बिव^{२०} आयकै बाहर में, कहरै रघुवीर के ठाहर में ।
 सुभ जोग^{२१} महरथ^{२२} देख सही, कपिराज सौं बात भरथ्य कही ॥३३६८
 करीयं रघुवीर सु कारीय^{२३} कौं, अभिसेख^{२४} दिवाकर^{२५} आरीय^{२६} कौं ।
 द्रढ़ बंदर भेजहु च्यार^{२७} दिसा, जल सागर लावहि कुँभ जिसा ॥३३६९
 कपिराज सुनी सुभ येह कथा, जल सागर सौं मगवाय जथा ।
 नद और निवानन नालन सौं, तट तोय^{२८} अनेकहु तालन सौं ॥३४००
 कपि लायेऊ स्वर्न करीरन^{२९} कौं, निज उत्तम उत्तम^{३०} नीरन कौं ।
 कपिराज भरथ्य सौं जाय कही, सब हाजर है जल कुँभ सही ॥३४०१

बोहा

कही भरथ्य सत्रुघ्न कौं, बुलवावहु गरु बिप्र ।

करहु राम अभिषेक क्रत^{३१}, छित मंडल कौं छिप्र^{३२} ॥३४०२

१ हषित होती है । २ बीजना = पंखा । ३ वायु = हवा । ४ सहेली । ५ कपूर ।
 ६ द्युति । ७ आँख की पुतली । ८ रनवास । ९ प्रवाह । १० मू. प्र महाराज ।
 ११ राजमहल । १२ संयुक्त = सहित । १३ भरत । १४ प्रशंसा करके । १५ पुत्र । १६ प्रणाम ।
 १७ अंगद । १८ महलों । १९ सुग्रीव । २० दोनों । २१ योग । २२ मुहूर्त । २३ कार्य ।
 २४ अभिषेक । २५ सूर्य । २६ आर्य । २७ चार । २८ जल । २९ कलश । ३० उत्तम ।
 ३१ कृत्य = कार्य । ३२ शीघ्र ।

छंद अरघ हरगीतका

सुन भरथ बात सुकाज की, रघुबीर चर्चा राज की ।
 सत्रुघ्न मंत्रि समाज कौं, रचना सु कहि गरुराज कौं ॥३४०३
 वसिष्ठ^१ विप्र बुलाय कै, वेदी अनुप^२ बनाय कै ।
 धर छत्र कौं कौसल धनी, वामांग श्रीसीता बनो ॥३४०४
 वामिष्ठ^३ कश्यप^४ अरु विजै, रिखी^५ पुनर्वसु गोतम रजै ।
 जहाँ मिले बहु दुज^६ जायकै, अरु वामदेव हू आयकै ॥३४०५
 जल कुंभ उत्तम जोर कै, घनसार^७ केसर घोर कै ।
 अभिसेख^८ विप्रन आद कै, वचनात आसीर्वाद कै ॥३४०६
 धुन^९ वेद करकै धारणा, कीय राँम मँगल कारना ।
 जहाँ मुनी रित्वज^{१०} जोरकै, अभिषेक कीनी औरकै ॥३४०७
 कन्या कुवारी पुन करचौ, अभिसेख रघुवर अनुसरचौ ।
 अरु मंत्रि वर्ग असेखहू^{११}, कीय राँम कै अभिषेकहू ॥३४०८
 सब सुभट आदक संग कै, अभिषेक कीन ऊमंग कै ।
 पुरजनन गन सुख पाय कै, अभिषेक कीनी आयकै ॥३४०९
 सुर आय सुरपथ^{१२} संजुरे,^{१३} कल^{१४} गान धुन जय जय करे ।
 अभिषेक कीन अरंभ सौं, आकास-गंगा^{१५} अंबु^{१६} सौं ॥३४१०
 चहु लोक पालन चाहि कै, अभिषेक कीय ऊमगाय कै ।
 अभिषेक जैसे ईंद्र की, निरवाह^{१७} राँम नरिंद की ॥३४११
 वसु आठ कीनी जिह बिधी, सरसाय कै सुख संमृथी^{१८} ।
 ईम राँम की अभिषेकहू, प्रज हेत कीय नय पेखहू ॥३४१२
 अभिसेख पीछे आरती, पुन करी जन कौसलयती ।
 धुर दयी विप्र मनु धारन, सोई गह मुगट सँवारन ॥३४१३
 मनु बंस राजा मउता, ईष्वक आद अखंडता ।
 सोई धरणी रघुवर सोन कै, अत गह बोल असीस कै ॥३४१४

१ वसिष्ठ । २ कश्यप । ३ वसिष्ठ । ४ कश्यप । ५ श्रुति । ६ द्विज = ब्राह्मण । ७ कपूर ।
 ८ अभिषेक । ९ अक्षयि । १० कश्यप । ११ कश्यप । १२ आशय । १३ इन्द्रो दृष्ट ।
 १४ सुवर । १५ आकास गंगा । १६ अंबु । १७ निर्व्याज । १८ मनुदि ।

बासष्ट के पग बंद कै, अवधेस पाय अनंद कै ।
 हीय सत्रघन प्रीय हेत कौं, सिर छत्र धारचौं स्वेत कौं ॥३४१५
 कर चँवर लेय कपीसहू, ढोरै सु लंकाधोसहू ।
 उभे दुवाजू आयकै, गुन राँम के पुन गायकै ॥३४१६
 सुरपती सासन संघ सौं, नीयराय राँम नरिंद सौं ।
 मनिजुक्त मुक्तामाल कौं, पवमान दाय प्रजपाल कौं ॥३४१७
 द्रुत देवता दरदार कै, आये सुक्रोत ऊचार कै ।
 गंधर्व लागे गावनै, प्रभु दरस सौं सुख पावनै ॥३४१८
 धंगार कर कर स्वच्छरी, अरु नटन लागी अछछरी ।
 जाचकन^१ विप्रन^२ जोर कै, वित^३ दौन दीन बहोर^४ कै ॥३४१९
 अनगनत^५ सूखन^६ आद सौं, मनि बसन^७ राज मृजाद सौं ।
 बगसे अलंकृत^८ वेख कै अवधेस कै अभिषेक कै ॥३४२०
 सतकार^९ कर सुप्रीव कौ, हनुमान की हित हीय कौ ।
 जिह रीत जूथप-जूथ कौ, बहु विदा दीन बरुथ कौ ॥३४२१
 पुन लंकपत सुख पायगे, सब धाँम-धाँम सिधायगे ।
 रघुनाथ अपने राज की, मंभार कीन समाज की ॥३४२२
 चित्त येक^{१०} भ्राता च्यार^{११} कौं, बर राज काज विचार कौ ।
 अनभीत^{१२} जय सारी ईला,^{१३} कीय राज बहु कौसल^{१४} कला ॥३४२३
 कीय निकंटक प्रज^{१५} कारन ध्रुव^{१६} राज पदवी धारनै ।
 जन और मंत्री जात कौं, भजमान^{१७} बोले भ्रात कौं ॥३४२४
 भये किते पूरब भूपती, मंडलीक पालक बसुमती ।
 प्रज पालना कीय प्रीत सौं, निखाह नय^{१८} की नीत सौं ॥३४२५
 छित^{१९} राज भारहि चाहि कै, प्रज हेत दीय सुख पाय कै ।
 कुल रीत अंगीकृत करचौ, सुबिचार सासन^{२०} अनुसरचौ ॥३४२६
 हम नीत नय के हाल की, पहिचान मति प्रजपाल की ।
 हम करत जैस हेर कै, पुहनीन^{२१} सासन प्रेर^{२२} कै ॥३४२७

१ याचकों । २ ब्राह्मणों । ३ वित्त = धान । ४ बदले में । ५ अगणित । ६ भूषण ।
 ७ वस्त्र । ८ मर्यादा । ९ सत्कार । १० एक । ११ चार । १२ निर्भय । १३ पृथ्वी ।
 १४ कुशलता । १५ प्रजा । १६ अटल । १७ सर्व समर्थ । १८ न्याय नीति । १९ पृथ्वी ।
 २० शासन । २१ पृथ्वी पर । २२ प्रेरणा देकर ।

ईह राज भार ऊपारीयै, ध्रुव हुकम^१ मेरौ धारीये ।
 सब भ्रात बोले साथ सौं, रुच जाँनकै रघुनाथ सौं ॥३४२८
 करनीय जंसौ काज है, लघु भ्रात की प्रभु लाज है ।
 पुन करहि जैसी प्रेरना^२, हित चाहि कर है हेरना ॥३४२९
 सुन भ्रात बात सयान की, गृहमंत्रि जुत गुरु जाँन की ।
 जुगराज^३ पदवी जाँन कै, दीय भरथ निज सुखदाँन कै ॥३४३०
 अरु भ्रात मंत्री आद कौं, महि भार राज अजाद कौं ।
 कीय सब कायम^४ काँम पै, महाराज^५ अवध मुकाँम पै ॥३४३१
 परजा बढी दिन-दिन प्रतै, जय कीरती संपत^६ जुतै ।
 कीय अस्वमेध कितेकहू, जिग^७ पांडुरीक जितेकहू ॥३४३२
 पुहमीन सागर पार कै, ध्रुव सीम^८ कीय छत्रधार कै ।
 हजार ग्यारह वर्षहू, कीय राज जग उतकर्षहू^९ ॥३४३३
 आजानभुज^{१०} अवधेस कौ, सब बरतमान^{११} सुरेस कौ ।
 भईया सु लछमन भाव सौं, अरु भरथ राज ऊपाव^{१२} सौं ॥३४३४
 सत्रुघ्न साधक साच सौं, बरबीर रघुबर बाच सौं ।
 कल्याँन^{१३} कारक कारना, धर रही अवचल^{१४} धारना ॥३४३५
 अन्याय^{१५} चौर न येकहू^{१६}, बरताव न्याव^{१७} बसेखहू ।
 कपटी न बंचक क्रूरता, सरसाय सुभय न सूरता^{१८} ॥३४३६
 नारी पतीव्रत नेम सौं, पति सहित भीनीं प्रेम सौं ।
 ईती^{१९} न दुख अहि^{२०} आद कौ, बाचालता जुत बाद कौ ॥३४३७
 विसनी^{२१} न दुज्जन^{२२} वारता, सठता न लंपट सारता ।
 संतान बृद्धी सौगुनी, गरुकर्म^{२३} साधक अरु गुनी^{२४} ॥३४३८
 पितु मात पुत्र प्रसाद सौं, अपक्रीया^{२५} विगत असाध सौं ।
 दुरभख^{२६} कौ दुख देस में, बरत्यों न काल विसेस में ॥३४३९
 जन धर्म निज निज जात कौं^{२७}, निरवाह स्वक्रीय^{२८} न्यात कौ ।
 कृषो^{२९} कम विक्रीय काँम कौं, सुविचार सासन स्याँम^{३०} कौ ॥३४४०

१ आज्ञा । २ प्रेरणा । ३ युवराज । ४ स्थिर । ५ सू. प्र. महाराज । ६ संपत्ति । ७ यज्ञ ।
 ८ सीमा । ९ उत्कर्ष = वृद्धि, उन्नति । १० घोंटू तक लम्बी भुजा वाले । ११ वर्तमान =
 उपस्थित । १२ राज्यकाल । १३ कल्याण । १४ अविचल । १५ अन्याय । १६ एक मी ।
 १७ न्याय । १८ दूरवीरता । १९ क्षतिवृष्टि = अनावृष्टि । २० सर्प । २१ व्यसनी ।
 २२ दुर्जन । २३ विद्या । २४ गुणी । २५ दुष्कर्म । २६ दुर्मिथ । २७ जाति । २८ स्वकर्म ।
 २९ कृषि । ३० राम ।

अवनी बढी अत ऊन्नती^१, मिल राज परजा^२ सम्मती^३ ।

श्री रामचंद्र सुभाव सौं, भुं^४ प्रजा बाढी भाव सौं ॥३४४१

दोहा

नवरात्री पूजा नीयम^५, वाहन पूजन वीर ।

रावन मारन जेम^६ रन, विजय दसम रघुवीर ॥३४४२

देवी विजई दंनवन^७, राखस^८ विजई राम ।

छत्रो पूजत चाहिकै, कलह विजह के कांस ॥३४४३

कछू ऊक्त तुलसी कही, व्यास ऊक्त कछू बात ।

जुद्ध कथा वरनी जिती, बालमीक बचनात ॥३४४४

कथा राम सुभकारना, जानत सकल जहाँन ।

बुद्ध सुकव^९ वरनन करी, करन हेत कल्याँन ॥३४४५

^१ उन्नति । ^२ प्रजा । ^३ सम्मति । ^४ पृथ्वी । ^५ नियम । ^६ जिस प्रकार । ^७ दानवों पर । ^८ राक्षस । ^९ सुकवि ।

बुधसिंह चारण रचित

देवीचरित

चतुर्थ स्कंध

दीहा

सुनके त्रतीय स्कंध की, कथा अनुपम^१ कौन ।
जनमेजय नृप कीय जहाँ, प्रश्न व्यास परमान ॥६
सूरसेन नृप के सुतन, दुज^२ पुज्जक^३ बसुदेव ।
कशनचंद जाके कुवर, देवन हू के देव ॥२

छंद त्रोटक

परमात्म^४ कशन के मात पिता, बसुदेव हू देवकी लै विपता^५ ।
वेंधुवा^६ हुय कंस के कैसे वसे, ग्रह कंद के खेद^७ में अंग ग्रसे ॥६
जिनके खट^८ पुत्र भये जिनकों, तन^९ नासत कंस करे तिनकों ।
धूमहीन^{१०} कहा अपराध धरचौ, कुल भूप जजात^{११} कौ नास करचौ ॥४
अपजे पुन कशन^{१२} ईही अरसे, विच गोकुल जायके कैसे वसे ।
प्रगटे कुल छत्रीय^{१३} में पहिले, मभ^{१४} गोपन^{१५} वंसीय जाय मिले ॥५
गृह नंद घने दिन बीत गया, दुखीया पितु मात न कीन दया ।
जनमे जिह कूख^{१६} में कशन जई, भयतव्य कहा ईह खेद^{१७} भई ॥६
कररे जिन कोनसे कर्म करे, वंह कशन पसाव^{१८} नहीं ऊघरे^{१९} ।
भगनी ईक कसन के घोर भई, दुकती^{२०} जिह कंस पछाट दई ॥७
सट^{२१} आतहु कसन की येक मुसा^{२२}, महाँदुष्टहू कंस ने प्राँन मुसा^{२३} ।
कहा कीन जहाँ विपरीत क्रीया, जनमे पे नहीं दीरघायु^{२४} जीया ॥८

१ अनुपम । २ ब्राह्मण, द्विज । ३ पूजा करने वाले । ४ परमात्मा । ५ विपत्ति
६ बंधन में । ७ दुःख । ८ छह । ९ शरीर । १० धूमहीन । ११ यथात । १२ कृष्ण ।
१३ क्षत्री । १४ मध्य । १५ गोपालक—स्वातियों । १६ गर्भ से । १७ दुःख ।
१८ कृपा । १९ उदात्त हुआ । २० दुष्ट कर्म करने वाला । २१ छोटी । २२ छोटी बहिन ।
२३ मार दिया । २४ दीर्घायु ।

ईह पूरब जन्म के कोन ईते, वय^१ बालपन में सरीर बिते^२ ।
 कहीये फिर क्रश्न बिभौ^३ कितनौ, जुवतीगन आद भयौ जितनौ ॥९
 नर और नौरायन रूप नृभं^४, ईह अर्जुन क्रश्न भये सु ऊभं ।
 प्रगटे जिह रीत कहौ प्रवृती^५, चित्त जाँनन की अभिलाख छती^६ ॥१०
 बदरी^७ में बने रहे रूप वहाँ, अथवा तन त्याग कै आये ईहाँ ।
 दिव^८ चाँमन^९ होय के खत्री बने, हित कोन बिचारकै सत्रु हने ॥११
 ऊलटा-पलटी कौ बिचार ईही, जर पेढ़^{१०} सौं पूछत वात जँही ।
 हरि-पूत प्रद्युम्न^{११} तही हरनौ^{१२}, कहा कारन व्याज^{१३} भयौ करनौ ॥१२
 जदुबंस बढ्यौ अत जाहीय कौ, ततकाल भयौ खय^{१४} ताहीय कौ ।
 भरपूर जहाँ ऊतपात भये, गऊलोक^{१५} कौं क्रश्न सिधाय गये ॥१३
 हरी^{१६} के रनवास^{१७} कौं लेय हले, मग आवत अर्जुन चोर मिले ।
 कुमती मिलकं घन लूट करी, घवराय गये नर^{१८} ताहि घरी^{१९} ॥१४
 नही स्याहि^{२०} बनी हरिनारन^{२१} की, रनवासहु कौं रखवारन^{२२} की ।
 अवतार भौ^{२३} बिश्नु कौ क्रम्न ईहीं, जगती^{२४} कौं ऊतारन भार जँही ॥१५
 द्रढता बिन सत्रुन के डरतै, मथुरा तज द्वारका चाल मतै^{२५} ।
 नजदीक^{२६} बने रहे चोर लुका, पहिचाँन लये नही सत्रु पका ॥१६
 जिनकौं न संघारेऊ कोन जथा, कहीये बिध संजुत ऐहु कथा ।
 सतवादीय^{२७} भीसम^{२८} द्रोण^{२९} सही, जुध^{३०} आपुस में करवाय जही ॥१७
 कुल छत्रिन कौ हरि नास करचौ, तिह मारनतै भुव^{३१} भार टरचौ ।
 खल चोरन मारेऊ भार खिती, कहा जाँन बंचाय लये कुमती ॥१८
 पंच पंडव सौं पहिचाँन पखा, सोई अर्जुन के भये क्रस्न सखा ।
 जिग राजसू फेर कराय जँही, बनवास भयौ दुख फेर वही ॥१९
 नही क्रस्न लखी ईह घात नई, हरि की मतिहू कहा ऊँनी हुई ।
 द्रुपदा अवतार रमा दुसरी, बिपता भुगती सुख कौ बिसरी ॥२०

१ आयु । २ नष्ट हुए । ३ वैभव । ४ निर्भय । ५ वार्ता । ६ छाती = हृदय । ७ बद्री-
 काश्रम । ८ दोनों । ९ ब्राह्मण । १० पूर्णतया । ११ प्रद्युम्न । १२ हरण होना ।
 १३ कपट । १४ क्षय । १५ गोलोक । १६ कृष्ण । १७ स्त्रियों । १८ अर्जुन । १९ समय
 = घड़ी । २० सहायता । २१ कृष्ण की स्त्रियों । २२ रक्षा । २३ हुआ । २४ पृथ्वी ।
 २५ विचार । २६ पास । २७ सत्यवादी । २८ भीष्म । २९ द्रोणाचार्य । ३० युद्ध ।
 ३१ भूमि = पृथ्वी ।

हीय संसय येहु बड़ौ हमरै, कहियै निरनै भ्रम दूर करै ।
 सुकृती सब पंडव येक समा, जुधमें कीय छत्रीय जात जमा ॥२१
 कुलनास भयौ किह कारन सौं, निज बात कहौ निरधारन सौ ।
 पुनवाँन परीक्षत मेहि पिता, रहनी करनी दुज भक्ति रता ॥२२
 ऊपहास करचौ गल डार अही, तन श्रापत होयकै खोय तही ।
 ईतने सब संसय है उरमें, भय व्याकुल चित्त सदा भरमै ॥२३
 सुन व्यास निवारहु होय सुखी, ऊर में ऊपजै मोहि ज्ञान-श्रखी ।
 जितने हम प्रश्न करे जिनकौ, ततकाल प्रबोध करौ तिनकौ ॥२४
 श्रवनां नृप बाहक व्यास सुने, क्रम की गति गूढ लगे कहनै ।
 गिरवाँन न जानत कर्मगती, मनुजाद लखै कहा मंदमती ॥२५
 क्रम ही ईह ईह ईह कटाह करै, परपंच जतौ जग जाँन परै ।
 कछु जीव की रीत न जात कही, नही आद न अंतहु मध्य नही ॥२६
 क्रम बीज सरूप में बेद कहै, ऊपजै विनसै नित जीव श्रहै ।
 क्रम-जोग तै देह संजोग करै, भ्रम भूल सुभासुभ भाव भरै ॥२७
 प्रारब्ध तथा क्रीयमाँन पखै, लहि संचत^१ तीन प्रकार लखै ।
 ध्रुव संगही संचर^२ धारन कै, क्रम जीव सदा तिह कारन कै ॥२८
 विध^३ आदक देव जिते बहुरै, क्रम^४ सौ सुखह दुख भोग करै ।
 हरखै^५ कहु सोक गृहै हीयरा^६, जिह देह के सग लहै जीयरा^७ ॥२९
 ऊरमी^८ ऊरपंच प्रकार ईहै, गुन देह के संग ही जीव गहै ।
 पसु पक्षिहु माँनस के पुतला, केऊ, देव बनावत ऊढ कला ॥३०
 क्रमतै भ्रमना रवि व्योम^९ करै, धुर रोग कुर्चावली^{१०} ईदु^{११} धरै ।
 गवरीपति^{१२} मुंड की माल गलै, पुन मागत भीख सदा प्रचलै ॥३१
 लक्ष्मीपति^{१३} हू श्रवतार लहै, सोऊ संकट जोनीय^{१४} नित्त^{१५} सहै ।
 जग जंगम थावर जीव जिते, रचना क्रम बंधन बीच रते ॥३२
 पुन नित्य अनित्य विचार प्रतै, मुनि बूढत तेरत बुद्धि मतै ।
 ऊर नित्यता माँनत पक्ष श्रजा, परतीत प्रकासत ईस प्रजा ॥३३

१ मंचित । २ जगत् । ३ आत्मा । ४ कर्म । ५ हृषित होता है । ६ हृदय । ७ जीव ।
 ८ शाम, उष, मद, लोन, मोह । ९ आकाश । १० कफ । ११ चन्द्रमा । १२ महादेव ।
 १३ विष्णु । १४ मोनि । १५ नित्य ।

जितने नित कारन^१ जाँन जही, निज कारज^२ ताहि अभाव नही ।
 ईहतै जग जाँनहु नित्य अहै, क्रम ही वंह बीज-बिचार कहै ॥३४
 भव कर्म के बंधन माँहि भ्रमै, जीय जोतीय-जोनीय में जनमै ।
 तिह कारनतै मुनि भोग तजै, जय जाँन अराधन जोग^३ जजै ॥३५
 दुख ना गृभवास^४ तै और दुए^५, मुरझात रहै जनमै रु मुए^६ ।
 जनमे जग अंतर जीव जिते, रचना बस प्रेरत कर्म रते ॥३६
 सुकृती तप कै मख^७ साधन तै, अथवा कहु ईस अराधन तै ।
 कहू मानव तै पुरहूत^८ करै, पुन छीन^९ भये दुख कूप परं ॥३७
 अवतार सीयापत भौ ईतनै, बर अंम्भर^{१०} बंदर-रूप बनै ।
 जनमै फिर जादव कइन जबै, स्वरगीय भये फिर जाय सब ॥३८
 जिम प्रेरत ब्रह्म जनार्दनहूँ, किसना^{११} अवतार भयौ सु कहूँ ।
 क्रतु कारज कै मुनि कस्यप नै, बित चोरन कौ परपंथी बनै ॥३९
 जिह लायकै गाय परंजन की, मख कारन सिद्ध करी मनकी ।
 सुरभीन परंजन बात सुनी, मग खोजत आयकै पास मुनी ॥४०
 सुरभी तिह माँगीय कस्यप सौ, बित दैन नटे ममता बस सौ ।
 घट क्षोभ ऊपज्जीय ताहि घरी, कमलासन जाय पुकार करी ॥४१
 कमलासन^{१२} बोलकै कस्यप कौ, रिसकै बस श्राप दयी रिस कौ ।
 सठता कर चोर लई सुरभी^{१३}, ईह मागत पै नहीं देत अभी ॥४२
 खीय संजुत^{१४} जाय बिपत्त सही, कुल बल्लव जादव होहु कही ।
 बिध श्राप दीयी जिम बाखनहू^{१५}, ध्रुव कस्यप कीन सु धारनहू ॥४३
 अदिती दिती श्राप दयी ईम हूँ करकै बिसतार मुनी सु कहूँ ।
 दुहिता^{१६} परजापत^{१७} दछ^{१८} ही की, कमनीय दहू^{१९} त्रिय कछ्छ^{२०} ही की ॥४४
 अदती सुत इंद्र जबै ऊपजा, रिख सौ दिती माँगीय पुत्र रजा ।
 दिती नार रजा^{२१} मुनिराज दई, सुत हेत पयोवृत कीन सई ॥४५
 वृत साधत केतक श्रीध^{२२} बिती, ब्रह्म धारन गर्भहु कीन दिती ।
 अदिती हीय क्षोभ सुनै ऊपजी, तिह पुत्र के हेत सौ सूक^{२३} तजी ॥४६

१ कारण । २ कार्य । ३ योग । ४ गर्भवास । ५ दूसरा । ६ मरता है । ७ यज्ञ ।
 ८ इन्द्र । ९ क्षीण । १० देवता । ११ कृष्ण । १२ ब्रह्मा । १३ गाय । १४ युक्त,
 सहित । १५ वरुण मू० प्र० वारन । १६ पुत्री । १७ प्रजापति । १८ दक्ष । १९ दोनों ।
 २० कस्यप । २१ आज्ञा । २२ अविधि । २३ दया ।

सुत इंद्र कह्यौ मम मंत्र सुनौ, हर-येक^१ ऊपायतै गर्भ हनौ ।
 सोई वासव^२ मात सलाह सुनी, कर ब्याज^३ चलाय गयौ कुहनी^४ ॥४७
 वृत क्षीन^५ भई फिर गर्भवती, सुनीयै अरजी^६ दिती मात सती ।
 हम भ्रात तथा भगनी हुयहै, लख कै तव आनंद कौ लहिहै ॥४८
 सुत हेत सदा सिवकाईय^७ तै, जंननी ढिग चाहीय जाहीय तै ।
 कहिकै ईह जाय दबावन कौ, पुरहूत लग्यौ जिती पावन^८ कौ ॥४९
 सुत जाँन कोयौ बिसदास^९ सुतै, अत सुप्त^{१०} भई तम घेर ईतै ।
 सोई गुबिनी^{११} वृत लहै समकौ, गुरबो तन भूल गई गम कौ ॥५०
 तनकौ कर सुक्ष्म^{१२} रूप तही सतकोटीय^{१३} कौ गहि इंद्र सही ।
 चुपकै गृभ काटन काज चह्यौ, बन सुक्ष्म रूप पिचंड^{१४} बह्यौ ॥५१
 कीय सात टुका^{१५} सतकोटीय सौं, खल रूप बन्यौ मत खोटीय सौं ।
 सोई लेस^{१६} कलेस^{१७} कौ पाय सबै, जुत भीत^{१८} कै रोवन लाग जबै ॥५२
 करना तज वासव कीन कटा, बट^{१९} येकहु के फिर सात बटा^{२०} ।
 ऊनचास भये गृभ^{२१} येकही तै, पवमान^{२२} सरूप तै भिन्न प्रतै ॥५२
 पुरहूत सौं बोल ऊठे पवना, गृह रावरे^{२३} ब्या^{२४} न करौ गवना^{२५} ।
 कबहूँ तुम द्वेष करै न कहूँ, सुनीयै^{२६} हम रावरे भ्रात सहू ॥५४
 कर इंद्र चल्यौ निज काजही कौं, समल्यौ सोई देव समाज ही कौं ।
 दिती जाग ऊठी ईतनै दुख सौं, रचना अदिती की लखी रख सौं ॥५५
 कर क्रोध दिती अदिती सौं कह्यौ, सुत^{२७} राज के कारन पाप सह्यौ ।
 पुन राज कै वंभव हीन पनी, सुत तोर सहै मम श्राप सुनौ ॥५६
 तुम वंधन में परहै अरती, पिछतावहुगो^{२८} लहि संग पती ।
 मम श्राप अभीक्षन^{२९} पुत्र मरै, करना कर नित्त^{३०} विलाप करै ॥५७
 सुत सोक कौ दुःख घनी^{३१} सहिही, लगए तरु के फल कौ लहि ही ।
 गुनकै दिती इंद्र कही सुनीयै, गुनकौ तज श्रीगुन^{३३} ना गुनीयै ॥५८
 ऊनचास प्रभंजन^{३४} होय ईहै, बलवंत महां मम भ्रात वही ।
 तव श्राप मृषा^{३५} नहि होय तहूँ, अठविसत^{३६} द्वापुर^{३७} में ऊतहू ॥५९

१ प्रत्येक । २ इंद्र । ३ कपट । ४ घृत । ५ क्षीण । ६ प्रार्थना । ७ सेवा । ८ पैर ।
 ९ विद्यास । १० सोई । ११ गर्भवती । १२ सूक्ष्म । १३ वज्र । १४ पेट ।
 १५ टुकड़ा । १६ टुकड़ा । १७ क्लेश = कष्ट । १८ नय । १९ खंड । २० टुकड़े ।
 २१ गर्भ । २२ मरतगण । २३ अपने । २४ ब्याँ । २५ गमन । २६ मू.प्र. त्वाँ ।
 २७ पुत्र । २८ अनाय । २९ परचात्ताप करोगी । ३० बार-बार । ३१ नित्य ।
 ३२ पयिक । ३३ अद्यगुण । ३४ वापु = मात । ३५ मू.प्र. माहां । ३६ मिय्या ।
 ३७ मू.प्र. माहं । ३८ द्वापुर ।

जननी मम मांनुखी जोन^१ जही, सुत कौ दुख देखहिंगी सबही ।
दुसरी तिह बारून^२ श्राप^३ दीयौं, अनभोग नही मिटहै ऊभयौं^४ ॥६०
मिटहै दुख अल्प ही काल मही, सुन लीजीयं मान ऊदत^५ सही ।
ईतनै मुनि कस्यप आय ईनै, समभाय बुभाय कही सबनै ॥६१
अदती सोई देवकी रूप ईही, निरसंसय श्राप लीयं निबही ।
ईह पूरब जन्म की बात ईती, ईतीहास कह्यौ अदतीहू दिती ६२

दोहा

कही नृपत सौं व्यास कथ, समरथ बुद्धि सयांन ।
कीयौ प्ररु दह जोर कर, ईहधू कवन अयांन ॥६३
कस्यप सुत कीय पापक्रम, पतित लोक पुरहूत ।
सेवा मिस कर मात के पाव छेदे परसूत ॥६४
नृपत जुधष्टर धर्म-निध, करन भीस्म तज कांन ।
द्रोनाचारीय आद द्वज, प्रहरन बिनसे प्रांन ॥६५
करासंध बध हेत जहाँ, बने क्रस्न तहाँ बिप्र ।
बिजई ऐसे बीर कौं, छल कर मारचौ छिप्र ॥६६
करी ढिटाई बिजय क्रतु, कीयौ क्रूर तिह कर्म ।
फल पायो बिपरीत फिर, धर्मराज पथ धर्म ॥६७
सत्य प्रथम पद धर्म सो, सऊच दुतीय पद सोय ।
दया त्रतीय चौथौ सुदत, कोविद कहत सकोय ॥६८
पाद^६ हीन किस धर्म पथ, चाल सके नही चार ।
जांनैगं कंस जिनिहि, को ठग साहूकार ॥६९
बल^७ राजा दांनी बहुर, छल बावन^८ कर चाह ।
सुतल पठायौ क्रतु^९ समय, रही कहाँ ध्रम-राह^{१०} ॥७०

कवित छपय

सुन ऊदत^{११} नृप अवन, व्यास कहि तास बिचारे ।
त्रयलोकीपत^{१२} तऊ, हरी^{१३} सोई बल सौं हारे ॥

१ योनि । २ वरुण । ३ शाप । ४ दोनों । ५ वार्ता, समाचार । ६ चरण । ७ राजा बलि
८ भगवान वामन । ९ यज्ञ । १० धर्मपथ । ११ वार्ता । १२ त्रिलोकीपति = विष्णु ।
१३ विष्णु ।

सुतल जाय तिह संग, द्वार-पालक भये देखौ ।
 लघुतापन^१ तन लहिहु, बनोपक^२ बने विसेखौ ॥
 त्रिबिक्रम नाम तिनहि, भार^३ दाँन भेल्यौ सुभुव^४ ।
 नोकै बिचार लीजै नृपत, धर्म सत्य कौ जाँन ध्रुव ॥७१
 माया प्रबल महान, जाहि निर्मत^५ जग जाँनौ ।
 विध आदक बिस्तरै, मिले त्रहु-गुन^६ मय माँनौ ॥
 काम क्रोध मद मोह, लोभ ऊरमी^७ ललचावत ।
 अहंकार आरूढ, प्रमापन^८ संचर^९ पावत ।
 जिह हेत जाहि लीनौ जनम, कारज जैसौ करन कौ ।
 चल^{१०} बल उपाय तैसो चहत, ^{११}जोत जुक्त^{१२} पदु नरनकौ ॥७२

छंद पद्धरी

व्यास पुन कहन लागे वृतांत,^{१३} ऊर समुझ लेहु नृप आद अंत ।
 बारता कहा हम कह बिसेस, पर द्रोह बुद्धि जाकै प्रबेस ॥७२
 जग थावर जंगम भरे जीव, सब राग-द्वेष संजुत^{१४} सदीव^{१५} ।
 देवता कपट छल रचत द्रोह, मानबी^{१६} कहा बस सदा मोह ॥७४
 द्रोही साँ जो कोऊ करत द्रोह, सम-धर्म^{१७} ताहि जानहु समोह^{१८} ।
 बिन द्रोह-द्रोह की करै बात, खलता^{१९} की जाँनहु ईही ख्यात ॥७५
 रिख^{२०} ध्यान करत केऊ ज्ञान रंग, बिद्वेष करत तप जाय भंग ।
 जब देवराज^{२१} ईह रचत जाल,^{२२} हर येक सुरन के कहा हाल ॥७६
 थिर^{२३} गनहु बासना धर्म थान, ह्वै मलिन ताहि ते धर्म हान ।
 बासना-मलिन मूलही विनास, जाँनहु निरसंसय सदा जास ॥७७
 ईतिहास कहत नृप सुनहु एक, विध-जुक्त^{२४} बिचारहु लहि विवेक ।
 परमेष्ठी^{२५} हीय सौँ उपज पूत, ईक धर्म नाम जानहु अभूत ॥७८
 धरमात्म^{२६} सत्यबादी सधीर, निरमल^{२७} तप मानहु गंग नीर ।
 दस सुता प्रजापत^{२८} दक्ष दीन, पति धर्म प्रीया जाँनहु प्रवीन^{२९} ॥७९

१ छोटापन । २ भिक्षुक, मिखारी । ३ बोझ । ४ पृथ्वी । ५ निर्मित । ६ तीनों-गुण
 सत, रज तम, । ७ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह । ८ मृत्यु । ९ शरीर । १० छल ।
 ११ चाहता है । १२ चतुर । १३ वृतांत । १४ संयुक्त । १५ सदैव । १६ मनुष्य ।
 १७ समानधर्मो । १८ मोह-सहित । १९ दुष्टता । २० ऋषि । २१ इंद्र । २२ छल, कपट ।
 २३ स्थिर । २४ विधियुक्त । २५ ब्रह्मा । २६ धर्मात्मा । २७ निर्मल = पवित्र ।
 २८ प्रजापति । २९ प्रवीण ।

नर नारायण जनमे निदान, ऊनले^१ हरी क्रस्तहू भये आँन ।
 तप करन बद्रकासृम^२ सहेत, नर नारायण^३ रच वन-निकेत ॥८०
 परब्रह्म^४ चित्त चितत सप्रेम, निरवहत^५ जोग-अभ्यास नेम ।
 अनुबद्धछर^६ बीते सहस्र एक, वपु^७ तेज-पुंज-मय भये बिसेख ॥८१
 आखंडल^८ ऊपजी संक आँन, मम थाँन^९ स्वर्ग लंहै महान ।
 जिह हेत जतन कीजै जरूर, दुस्साध^{१०} तपस्या होय दूर ॥८२
 गज ऐरावत चढ कीयौ गौन, थित^{११} जास लखे रिख बिपन-थाँन ।
 लवलीन भये परबृह्य लाग, रिखराज^{१२} लखे द्रग बिगत राग ॥८३
 धग्धगततेज थिर^{१३} जोग ध्याँन, भृजत तन दीपत^{१४} मनहु भाँन^{१५} ।
 बोले तब वासव कर बिचार. सुनीयै ईह हमरे समाचार ॥८४
 वंचत^{१६} मन लेवहु ऊभय बीर, पुर कवन हेत तप सहँत^{१७} पीर^{१८} ।
 बासव कीय बिनती वार-वार, नारायण बोले नही निहार ॥८५
 तब बिघन करन लागे तुरंत, ऊलकाँन पांत नाना अनंत ।
 वृक सिध^{१९} मृधावन^{२०} बर्नबलाव, बिकराल घोरबासी^{२१} बिराव^{२२} ॥८६
 न्याघृनिस^{२३} भल्लुक अरू बराह ऊल्लुक हूक बजंत ऊछाह ।
 चलचंड^{२४} प्रभंजन^{२५} दिसा च्यार, बिन बहर^{२६} गजंत वार-वार ॥८७
 भूकप डार तरु होत भंग, सकपकत सिलोचय^{२७} डुलत श्रंग ।
 अनेक भयानक कीय ऊपाय, द्रढ जोग-वृत्तका^{२८} साँ डराय ॥८८
 गवने सु हार पुरहूत^{२९} ग्रहे, ऊर संसय बाढ्यौ तब अछेह ।
 माया निज साधत बीज-मत्र, तप भंग करन कहा करै तंत्र ॥८९
 अब और ऊपाय न बनै येक, बासव बिचार सोचेऊ बिसेक ।
 बिषमायुद्ध^{३०} बोले अरू बसंत, मम कारज सिध कीजै महंत ॥९०
 नर नारायण हत^{३१} करहु नेम, ऊरबसी आद संग लेहु एम ।
 तप ऊभय करावहु जाय त्याज, राखहु तुम मेरौ अचल राज ॥९१
 सुरराज श्रवन कारज सुनाय, मधुदीपन^{३२} मधु^{३३} चाले मिलाय ।
 रितुराज चलयौ बढ प्रथम राह, अतसप्र^{३४} ऊर धारं चित ऊछाह ॥९२

१ छोटे । २ बद्रिकाश्रम । ३ नारायण । ४ परब्रह्मा । ५ निर्वाह करते थे । ६ वर्ष ।
 ७ शरीर । ८ इन्द्र । ९ स्थान । १० दुःसाध्य । ११ स्थित । ऋषिराज । १३ स्थिर ।
 १४ बीस । १५ मानु । १६ वाञ्छित । १७ सहते हो । १८ पीड़ा । १९ सिंह । २० जरख ।
 २१ सियार । २२ शब्द । २३ गेंडी । २४ अयंकर = प्रचण्ड । २५ वायु । २६ बादल ।
 २७ पर्वत । २८ योगवृत्ति । २९ इन्द्र । ३० कामदेव । ३१ नष्ट । ३२ कामदेव ।
 ३३ वसन्त । ३४ अशिष्य ।

अन अंतर कंतर^१ जाय आद, त्रिसतारी माया हित विवाद ।
 अंकुरत भये आगम अनंत, विध-विध बहार बाढी बसंत ॥६३
 कोमल नव पल्लव^२-गुच्छ केर, लहलहत प्रभंजन^३ संग लेर ।
 परछाँह परत तापै पतंग,^४ रक्तांक^५ भरत जनु लाल रंग ॥६४
 अनीयारी कोमल-कली और, काँमी हीय वेधन काँ कठोर ।
 अतफुल्ल^६ प्रभा ईम अद्वरीय, संजोगन^७ आनन सुंदरीय ॥६५
 निद्रान-पुस्प^८ कोऊक लखाय, विरहीन भुजांतर^९ गनहु भाय ।
 लपटाय रही तरु लता लाग, पीय कांतीय भेटत प्रीत पाग ॥६६
 वर तरवर पर मंजर बिसाल, किधू सेखर^{१०} सोहत पुस्पकाल ।
 बिस्तार बढी बेली बिसेख, येक साँ समिल^{११} पुन रही येक ॥६७
 ऊरभाथ रहे गत तंतु एह, सुकीया तीय मानहु पीय सनेह ।
 कहू ह्रस्व^{१२} साख आनंद-कंद, वृष नार सहेली मनहु वृंद ॥६८
 द्रुत गुंज भरत रोलंब^{१३} दाँम,^{१४} कर गौन जगावत मनहु काँम ।
 सोगंध मंद सीतल समीर,^{१५} भट विजई माँनहु जराभीर ॥६९
 सुन परत मंजु कलकंठ^{१६} सोर, बिरदावत रितुराजा बहोर ।
 चटकत गुलाब कलिका चमेल, खटकत खग खुरली^{१७} समर खेल ॥१००
 पुन पुहप मुकल फलत पराग, फागुन रितुराजा खिलत फाग ।
 सोगंध-संग सरसत समीर, ऊड़ रह्यौ मनहु चहुधाँ अबोर ॥१०१
 मधु^{१८}पाँन करत मधुकर^{१९} मदंध, मधुवार^{२०} लेत परकर समंध ।
 कहू मृदुल बीजकोसी^{२१} अँकूर, मुग्धा मनु पीय हीय प्रेम मूर ॥१०२
 किधु बिरही पिजा^{२२} करन कर, रितुराजा आयौ सरारूर ।
 मनु सिसरकाल सिधुर^{२३} मदंध, कंठीर^{२४} मरोरन जास कंध ॥१०३
 पैने नख मनिवक^{२५} तरु पलास, हीय पुस्पकाल धारै हुलास ।
 बिसतारी माया ईह बसंत, जुर^{२६} काँम चढी सब जीव जंत ॥१०४
 नर नारायन जागे निदान, मिट गई जोग-निद्रा महान ।
 नारायन ऊधरे जुगज नैन, बोले नर सेती ईही बैन ॥१०५

१ वन । २ नये कोमल पत्ते । ३ पवन । ४ सूर्य । ५ मूंगा । ६ प्रफुल्लित । ७ संयोगिनी ।
 ८ अघखिले अथवा संकुचित फूल । ९ छाती, हृदय । १० आभूषण । ११ मिली हुई ।
 १२ ह्रस्व = छोटी शाखा । १३ भ्रमर, भौरे । १४ समूह । १५ वायु । १६ कोमल ।
 १७ एक खेल । १८ पुष्परस । १९ भ्रमर, भौरा । २० मनोहारी करना । २१ फली ।
 २२ पीडित करने, मारने । २३ हाथी । २४ कंठीरव = सिंह । २५ फूल । २६ ज्वर ।

बृत्त भंग करन आयौ बसंत, लक्ष्मी बिपन^१ सोभा लंत^२ ।
 साखी^३ असोक पल्लव^४ सुरंग, चिब^५-धौस पंचसाखा^६ सुचंग ॥१०६
 बर-चरन अरुन किसुक बिनद्ध, अरु नील असोकहु नार^७ ऊद्ध ।
 अतमंजु कंज-अनन अनुप, सुच लोचन इंदीबर^८-रवरूप ॥१०७
 कली कुंद दसन^९-चिब हसन केर, पुन ओष्ट दुपहरी पुस्प फेर ।
 तुलसी मंजर तिह करन^{१०} तेम, जिह करज^{११} बजू-तरु^{१२} तिछछ तेम ॥१०८
 अंबर^{१३} कदंब तिह लसत अंग, स्वर मधुर कोकला मोर संग ।
 घुघरु छुद्रघटा जु घोर, सारस बिहंग चलचंचु^{१४} सोर ॥१०९
 मदमत्त अनूपम पद सराल,^{१५} चित चोर लेत सोई मंद चाल ।
 इहीं इंद्र कीधौ ऐसौ ऊपाय, भेजौ बसंत ब्रत भंग भाय^{१६} ॥११०
 बतरावत आपुस ऊभय^{१७} वात, सब आय गद्यौ कंदर्प^{१८} साथ ।
 मैनाका^{१९}-हास मुख मंद-मंद, चित चोरत रंभा^{२०} बदन-चंद ॥१११
 सरसात पुस्पगंधा^{२१} सुगंध, सुंदरी सुसीके^{२२} प्रेम-संध ।
 अतरमा^{२३} महास्वेता^{२४} अनुप, सोमा^{२५} रुचरांगी जुत स्वरूप ॥११२
 गीतज्ञा^{२६} मोहत चित्त गाँत, अरु मनोरमा^{२७} मन-हरन आँत ।
 पुन प्रमदबरा^{२८} ऊर सहित प्रीत, सुच सोमा^{२९} रस राचत सुचीत ॥११३
 बपु चंद्रप्रभा^{३०} जिम प्रभाबृंद कंचनामाल^{३१} आँत कंद ।
 कोकल-इलाप^{३२} मंडता कंठ, गत मंद घृताची^{३३} गुनन-गंठ ॥११४
 बर बिद्युनमाला^{३४} दुति बिसेक, अंबजाअक्ष^{३५} सोभा असेख ।
 मुख चारुहासनी^{३६} पांस^{३७} मोह, द्रग देखत मंजुल हृदय द्रोह^{३८} ॥११५
 सोड़स सहस्र सत-पंच^{३९} संग, अनुराग ऊदत जोवन^{४०} ऊसंग ।
 अभिबंदन कीनौ आय पास, हीय जुगल सूति धारें हुलास ॥११६
 कीय आदरपूर्वक ससकार, अभ्यागत^{४१} पूजा-बिध अपार ।
 इंद्र कौ लख्यौ परपंच^{४२} येह, अहंकार हीयै बाढ्यौ अछेह ॥११७

१ वन । २ सुशोभित होतो थो । ३ वृक्ष । ४ पत्ते । ५ छवि । ६ अंगुली । ७ केश ।
 ८ कमल । ९ दाँत । १० कान । ११ नख । १२ धूहर का वृक्ष । १३ वस्त्र । १४ चकोर ।
 १५ हंस । १६ भावना से । १७ दोनों । १८ कामदेव । १९ से ३६ तक असुराओं के नाम हैं ।
 ३७ पाश । ३८ क्षोभ, उथल-पुथल । ३९ पाँच लो । ४० यौवन । ४१ अतिथि ।
 ४२ प्रपंच, षड्यंत्र ।

हम मोहित होवहि इनही हेर, ऐसौ तप अंतर कहा अंधेर ।
 इन तें हम सुंदर करहि आँन,^१ नर नारायन समभे निदाँन ॥११८
 थित जंघदेस^२ पै हनी थाप,^३ पुन प्रगट भई ताही प्रताप ।
 अछ्छरी^४ प्रथम आई इतीक, जंघ तें भई उत्पत्त^५ जितिक ॥११९
 श्रीनारायन परताप सोय,^६ कर सकै न समता अवर^७ कोय ।
 ऊरबसी^८ नार ता में अनूप, रचना गुन भूधन^९ रग रूप ॥१२०
 सेवार्थ और सब सुंदरोय, षोडस सहस्र सतपंच कोय ।
 श्रीनारायन परसंस^{१०} साथ, हाजर^{११} हजूर^{१२} पुन जोर हाथ ॥१२१
 बोले नारायन बिमल बाँन,^{१३} तूतन नारन^{१४} कौं तव निदाँन ।
 बरदाँन लहहु सो कहहु बात, सब जावहु तुम ऊर्बसी साथ ॥१२२
 ईंद्र कौं रमावहु जुत अनंग,^{१५} सुख पाय रहहु तुम जिहीं संग ।
 नारायन सेती कही नार, आँनन सौं सुन कै समाचार ॥१२३
 तुमकौं हम कैसै जाय त्याग, रमनी न राजपद साँनुराग^{१६} ।
 ऊरबसी जाय सुर-लोक और, जाचत हम तुम कौं हाथ जोर ॥१२४
 सोडस हजार हम चहै संग, पाँचसत^{१७} इधक^{१८} समुझहु प्रसंग ।
 पति होय भजहु हम सहित प्यार, इह त्याग करहु जन^{१९} अनाचार ॥१२५
 पुरष सौं चहै रति-सीहत पेम,^{२०} नारी कौं त्यागन नही नेम^{२१} ।
 नय-परपाटी^{२२} देखहु निहार, आद सौं अंतु प्रवृत्त^{२३} अवार ॥१२६
 बस रहहु सुरालय^{२४} बिपन बास, पर रहिहै हम तौ तुमहि पास ।
 अछ्छरी^{२५} सुधारस^{२६} सत अमोल, बिनती-जुत बोली मधुर बोल ॥१२७
 सोई अंतरजाँमी सुने आँन, प्रीत की रीत हीय की पिछाँन ।
 नारायन समुभे ऊर निदाँन, इह अहंकार बाढचौं अज्ञाँन ॥१२८
 संसार-वृक्ष कौं मूल सोय, कल^{२७} अहंकार बिन नहिन कोय ।
 तरु-धर्म^{२८} काटवे काज तेम, जाकौं वृक्षादन^{२९} गनहु जेम ॥१२९
 उत्पत्त करी नारन अनेक, इह अहंकार ही काँम येक ।
 हमही सौं चाहत रति-हुलास, बनहै पुन कैसै सुख-विलास ॥१३०

१ अंग । २ जाँघ । ३ दापड़ । ४ अप्सरादे । ५ उत्पन्न । ६ प्रताप । ७ और ।
 ८ ऊर्बसी । ९ शरीर । १० प्रशंसा । ११ उपस्थित । १२ सेवा में । १३ वारणी ।
 १४ नारियों । १५ कामदेव । १६ साँनुराग । १७ पाँच सौ । १८ अधिक । १९ नहीं ।
 २० प्रेम । २१ नियम । २२ नीति की परम्परा । २३ वार्ता । २४ देवपुरी । २५ अप्सरा ।
 २६ मधुर । २७ कलि = संसार । २८ धर्म लगी वृक्ष । २९ कुल्हाड़ा ।

निज आननतै तंतव निकाल, जंतव फिर बांधत जेम जाल ।
 आपहि बिच बंधत जेम आन, नहि निरसन कौं सूझत निदान ॥१३१
 हम कुसुम कीट के होय हाल, जान कै आप सौं फसे जाल ।
 इह अहंकार फल भयो येस, जापै फिर करहै क्रोध जेम ॥१३२
 कर क्रोध छाँड़ जावहि कहूँक, आप कौं देहगी त्याग सूक ।
 अब अहंकार फल लहे एम, जाहि पै क्रोध फल मिलहि जेम ॥१३३
 काम अरु लोभ फिर बढहि क्रूर, धर्म औ कर्म सब मिलहि धूर^१ ।
 धाँनुख^२ पुन ह्वैहै त्याग धीर, पर नरक-सध्य तन सहहि पीर^३ ॥१३४
 नर बोले नारायन निहार, अब तौ तुम जीतहु अहंकार ।
 सुर अरु^४ सहस^५ तप कीयो सोय बस क्रोध प्रथम बैठे बिगोय^६ ॥१३५
 प्रह्लाद लरे जब क्रोध पाय, बहुरं बाढहिगी वंह बलाय ।
 अहंकार जीत कै ह्वै अभीत^७, बिचरहु नारायन दंभ बीत ॥१३६

कवित्त

नर नारायन निकट बारता कही सु बीती ।
 जनमेजय नृप जाहि प्रश्न^८ कीय लाय प्रतीती ॥
 प्रथम जुद्ध प्रह्लाद भयो सो कैसै भाखहु ।
 व्यास देव मति बिमल रंज जन हीय में राखहु ॥
 चित सांत ऊभय^९ पंडित चतुर भये क्रोधबस सोऊ भलै ।
 निरमन धर्म पाँवर^{१०} नरन चित बिचार कैसै चलै ॥१३७

छंद मौतीदांम

कही नृप व्यास सुनो सोई काँन, बखानन लागेऊ जान बिधान ।
 भलै कहु कारैज^{११} कारन^{१२} भेद, निहारहु भाव लहै निरबेद ॥१३८
 कहै कोऊ कंकन कंचन केर, बिलाय^{१३} न कंचन^{१४} ता कहु बेर ।
 बिचारहु या बिध^{१५} सौं बृहमंड, ^{१६} मंडी अहंकारहु सौं ईह मंड ॥१३९

१ घूलि = मिट्टी । २ हिसक । ३ पीड़ा । ४ देवताओं के वर्ष । ५ सहस्र । ६ खोकर ।
 ७ निर्भय । ८ प्रश्न । ९ दोनों । १० नीच । ११ कार्य । १२ कारण । १३ नष्ट ।
 १४ सोना । १५ तरह । १६ ब्रह्मांड ।

अजा^१ गुन^२ तीन जुत अहंकार, स्वयंभू आदक येह संसार ।
 वसष्टु नारद आद विसैख, अहंकरत-वीत^३ न जाँनहु येक ॥१४०
 जिते जग संवर^४-धारक जीव, सबै बस^५ काँम रू क्रोध सदीव ।
 ज्युंही फिर लोभ रू मोह जँजाल, बढै मद मछ्छर^६ होय विहाल ॥१४१
 सँपेखहु मोह बिना कोऊ संत, महाँ मद मछ्छर^७ हीन महंत ।
 सुनौ प्रह्लाद-कथा कहु सोय, जथा इतीहास विचारहु जोय ॥१४२
 तवै नरसंघ भयौ अवतार, सँडे रन हाटक-कस्यप मार ।
 सिंघासन राज दीयौ निज संत, अखी प्रह्लाद ऊधार अनंत ॥१४३
 सँडे अधलोकही राज मुकाँम, करचौ मन-बंचत पूरन काम ।
 बसै द्वज भक्त निरंतर बास, हरी-पद ध्यावत जुक्त हुलास ॥१४४
 जबै कथ येक भई विधजोग,^८ विसंभर^९ आश्रत^{१०} जोग-विजोग ।
 भृगू-सुत चिम्सन^{११} हू मुनि भेस, अराधन तीर्थ गयौ ऊपदेस ॥१४५
 गये तट तीरथ पूरब गंग, अराध के लागेऊ मंजन अंग ।
 धसे जब मेकलजा^{१२} बिच-धार, बिलेसय^{१३} बंध परे तिह बार ॥१४६
 लपट्टीय देह कपट्टीय^{१४} लाग, महाँद्रह अद्ध सपट्टीय माग ।
 पताल कौ ब्याल लह्यौ जिह पंथ, करे मुनि याद जब श्रीयकंथ^{१५} ॥१४७
 रसातल बीच गये मुनिराज, बिना बिष संचर^{१६} ह्वै निख्याज ।
 भई प्रह्लादहु सौं मुनि भेट, मिले सुख पाय के संसय भेट ॥१४८
 कह्यौ मुनि आगम-भौ^{१७} किह काँम, मिले अधलोक^{१८} के आय मुकाँम ।
 कही मुनिराज भई जिम कथ्य, तहाँ प्रह्लाद-बिचारीय तथ्य^{१९} ॥१४९
 मिले हरीभक्त लह्यौ मन मोद, बढचौ ऊर आय ऊदंत^{२०} बिनोद ।
 महाँतम^{२१} तीरथ पूछ मुनिद्र, दगारस सांत जवै दनुर्विद्र^{२२} ॥१५०
 सुके प्रह्लाद के बायक^{२३} सान, ^{२४} दयौ प्रति ऊत्तर संत निदाँत ।
 सदाँ मन बाँतीय^{२५} संचर सुद्ध, ^{२६} पिछाँनहु पैड़^{२७} ही पैड़ प्रसिद्ध ॥१५१
 लहै नित तीरथ कौ सोई लम्भ, ^{२८} सदाँ हीय ज्ञान पिछानहु सम्भ^{२९} ।
 बसै तट गंग मलेछ^{३०} हु बास, दिपै खल हँन^{३१} अभीरहु दास ॥१५२

१ माया, प्रकृति । २ गुण । ३ अहंकार-रहित । ४ शरीर । ५ वश । ६ मत्सर ।
 ७ सदेव । ८ देवयोग से । ९ विश्वम्भर - परब्रह्मा । १० आश्रित । ११ च्यवन ।
 १२ नर्मदा । १३ सर्प । १४ कपटी । १५ विष्णु भगवान् । १६ शरीर । १७ आगमन
 हुआ । १८ पाताल । १९ तथ्य । २० वार्ता । २१ साहात्म्य । २२ प्रह्लाद । २३ वाक्य ।
 २४ कान । २५ वारी । २६ शुद्ध । २७ पग । २८ लाभा । २९ पण्डित । ३० म्लेच्छ ।
 ३१ हूण ।

नहावत लावत पीवत नीर, सुधात्म^१ नाँहिन होत सरीर ।
 सुधात्म लाभ लहै मन सुद्ध, इही थित-तीरथ जाँनहु ऊद्ध ॥१५३
 तथा भुव^२ मंडल तीरथ तौन, जथारथ होहु क्रतारथ जाँन ।
 सबै जग तीरथ कौ सिरताज, रसा-मध^३ ऊत्तम पुस्कर-राज^४ ॥१५४
 ज्युंही निमखारन^५ तीरथ जाँन, सबै अध नासन जास सिनान^६ ।
 ऊजागर तीरथ है इह आद, बिनासन अक्रम^७ और विषाद ॥१५५
 सुनी मुनि भासन तीर्थ सराह,^८ रसातल ऊद्ध लई धर^९ राह ।
 पहुँचीय आय जबै प्रह्लाद, इहाँ निमखारन तीरथ, आद ॥१५६
 जहाँ बिध पूर्वक पुज्जीय जान, गह्यौ सुख साँत अपूरब^{१०} गात ।
 सरस्वती तीरथ कीन सिनान, गये प्रह्लाद सु पूरन जाँन ॥१५७
 अराधकै ब्रह्मसुता^{११} पुन अग, महाँ गिर ऊद्ध लखौ तिह मग ।
 हिमांचल बद्रीयनाथ कं हेत, सबै दनुजातन सथ्य समेत ॥१५८
 जहाँ हरी मूरत पूज्जीय जाय, ऊपज्जीय मोद अनंद-अघाय ।
 लखे बहु-पात^{१२} करालक^{१३} नैन, अनूपम दाँन^{१४} धरे बिच ऐन^{१५} ॥१५९
 भये तिह देख अचंभत^{१६} भाव, इहै इखु^{१७} राखत कोन ऊपाव ।
 कहा मुनि आश्रम आयुध काँम, बिलोकत बाढत चित्त बिराँम ॥१६०
 बिधोबिध^{१८} सोचत औ बतरात, नरायन^{१९} आय गये नर साथ ।
 बिलोकीय सीस जटा मुनि बेस, असंभव बाढेऊ हीय अँदेस^{२०} ॥१६१
 बसे बन त्यागीय बेस बनाय, रखे इखु अक्षय दंभ रचाय ।
 बिलोकत धर्म बिरोधीय वात, इनंतस^{२१} देख हीयै अकुलात ॥१६२
 प्रकासीय येह कथा प्रह्लाद, बढची उर आयकै घोर विषाद ।
 नारायन बोलेऊ ताहि निहार, संबोधन भासन में कहा सार ॥१६३
 करै चित^{२२} नीक^{२३} लगं सोई काज अिचारहु कोन इहै हम व्याज^{२४} ।
 जनावत आप हमै कछु जोर, चले तुम जावहु आश्रम छोर^{२५} ॥१६४
 चहै हित जीव इहै चित-चाह, रहै बिच धर्म चलावत राह ।
 अधर्पन^{२६} देखकै दंड ऊपाय, करै हठ लाग सदा बल काय ॥१६५

१ शुद्धात्मा । २ भूमि । ३ पृथ्वी के मध्य । ४ पुष्करराज । ५ नैमिषारण्य । ६ स्नान ।
 ७ दुष्कर्म । ८ सराहना । ९ तीर्थ यात्रा । १० अपूर्व । ११ सरस्वती । १२ वटवृक्ष ।
 १३ बाण । १४ स्थान = अयन । १५ आश्चर्य, चकित । १६ बाण । १७ अनेक प्रकार से ।
 १८ नारायण । १९ सुरक्षित । २० धूर्तता । २१ चित्त, मन । २२ अच्छा । २३ कपट ।
 २४ छोड़कर । २५ अधर्मियों ।

भये बच^१ केतक संकुल^२ भाव, चढे रस बीर बढचौ रन^३ चाव ।
 इतै प्रह्लाद ऊठ्यौ अनखाय, बिचारकै येह कही जब बात ॥१६६
 इतै प्रह्लाद बली असुरेस,^४ भिरे नर आय भयानक भेस ।
 हटै नहि पाँव जुटै हमगीर,^५ भई दहु ओर कलंबन^६ भीर ॥१६७
 अनेकन होन लगे ऊतपात, परै मनु पबबय^७ बिद्वत^८ पात ।
 मँडै धमचक्क मिते जग माँम, धरा अकबक पतालन धाँम ॥१६८
 बढी त्रहु^९ लोकन में इह बात, सुरासुर मानव लौ इक साथ ।
 कही तब नारदहू इह कथ्य, परेखहु जुद्ध मुनी परबत्त^{१०} ॥१६९
 भयौ मधु कैटभ जुद्ध भयान, मँडै रन ब्रत्ता^{११} तथा मघवाँन^{१२} ।
 जुरे प्रह्लाद ज्युहीं नर जेम, बढै रन वाँन ज्युहीं पटवेम ॥१७०
 पराक्रम येह लखौ प्रह्लाद, बढै हरी अंस के तुल्य बिवाद ।
 जुरे स्वर^{१३} देखन कौ सोई जुद्ध, अलोकिक देख पराक्रम ऊद्ध ॥१७१
 मँडै भर फूलन अंबर^{१४} मगग, इतै भर^{१५} बाँनन होत ऊदगग ।
 रचै रव^{१६} गंधुव सिधव राग, इतै विसफार अवाज अथाग ॥१७२
 बिवाँनन^{१७} अछछर^{१८} गाँन बिसेख, इतै सननंकत बाँन^{१९} असेख ।
 नृभै^{२०} नर अक्षय बाँन निखंग,^{२१} भये प्रह्लाद किते धनु भंग ॥१७३
 इतै नर जोग-बली अप्रमान,^{२२} ऊतै दनुविद्रहू^{२३} बाहूअजाँन^{२४} ।
 पहुँ नही दोऊन कौ बल पार, रूपे बिब^{२५} ओर बरोबर रार ॥१७४
 इतै नर धोर सुतै हरी-अंस,^{२६} पतीदनु भक्त हरी परसंस^{२७} ।
 चढे इक येकहु सौँ बिबछेद^{२८} भलै बिध लछछत^{२९} दीपत^{३०} भेद ॥१७५
 भुकै सर दिग्ध सौँ दिग्धन भेल मुकै^{३१} कहु तद्वल-तद्वल मेल ।
 छुरप्रन हूँत छुरप्रन हेर, खिचै गुन तीरन-तीरन खेद ॥१७६
 महाँ क्रतहस्त^{३२} हीयै मगररूर, चलावत वाँन करै चकचूर ।
 करै चख^{३३} लाल जुरै अत कुप्त,^{३४} समा मनु^{३५} आय गयो समसुप्त^{३६} ॥१७७

१ वचनों के । २ परिपूर्णा । ३ रण । ४ दैत्यराज । ५ अग्रणी । ६ वाण । ७ पर्वत ।
 ८ विजली । ९ तीनों । १० पर्वत । ११ वज्रासुर । १२ इन्द्र । १३ देवता । १४ आकाश ।
 १५ भङ्गी । १६ शब्द । १७ विधियों में । १८ वाण । २० निर्भय । २१ तर्कश ।
 २२ अप्रमाण = अपरिमित । २३ प्रह्लाद । २४ आजानुवाहु । २५ दोनों । २६ विष्णु
 नगवान का अंश । २७ प्रशंसित । २८ प्रहार करने में । २९ निशाना लगाते ।
 ३० शीघ्रता से नेद करते । ३१ छोड़ते थे । ३२ हस्त कौशल युक्त । ३३ आंख ।
 ३४ गीधित । ३५ समय । ३६ प्रलय ।

बढ़ी अत चित असंभव बात, हरी^१ चक्र संख गदा लीय हाय ।
 प्रभू प्रह्लाद के आयक पास, बिलोकीय द्रष्टु-अमी^२ बिसवास^३ ॥१७८
 बली दनु बिद्रहु बुद्ध बिसाल, कीयौ अभिबंदन बिस्तु क्रपाल ।
 करी हरि सौं बिनती कर जोर, मिट्यौ किह रीत पराक्रम मोर ॥१७९
 जये सत-बल्लछर^४ देव जितेक, इहाँ भिर जुद्ध करै नर येक ।
 समापत ह्वंगये अंबद^५ सहंस, तपस्वन बीर लखे अवतंस ॥१८०
 हटै नहौं वाज लां मानत हार, कहौ गत कान^६ भई करतार ।
 जनार्दन कथ-कही जन^७ जाँन, अहो प्रह्लाद बली अप्रमाँन ॥१८१
 करचौ जुध-तुल्य^८ बढ़ी करतूत, असंभव बात इहै अदभूत^९ ।
 इहै मम-अंस सरूप^{१०} अनाद, पराक्रम ऊद्ध लखौ प्रह्लाद ॥१८२
 सुनी प्रह्लाद इहै कथ आँन^{११}, ऊदै निरबेद ह्निदै भय आँन ।
 गयो प्रह्लाद तबै निज ग्रेह, अहंकरत^{१२} निदत भाव अछेह ॥१८३
 नारायन फेर गह्यौ नर-नेम, अराधन जोग लगे रिख^{१३} येम ।
 पतीदनु संत महौं परबीन^{१४}, लखी अहंकार ऊतै फल लीन ॥१८४
 सुनी इह राजन कथ सयाँन, विना अहंकार न तंत व बाँन ।
 सतोगुन ओर रजोगुण संग, अहंकरत^{१५} जाँनत मो गुन अंग ॥१८५
 लगे सोई आयक जीव की लार^{१६}, ऊदै जग येह करै अहंकार ।
 कीयौ अहंकार ही के इह काज, तिही मुनिराज करै किम त्याज^{१७} ॥१८६
 मुनी मृगु आपत देव मुरार, अनेकन आप लेय अवतार ।
 बिबस्वत जास मुनंतर^{१८} बेर, हकीकत^{१९} आँन^{२०} सुनी हीय-हेर ॥१८७
 बने बपु कछ्छ रु मछ्छ बिसेस, धरै ऊर दाँनव जात सौं छवेस ।
 सुनी जनमेजय ब्यास सौं आँन, असंभव संक^{२१} हीय अनुमाँन ॥१८८
 जनार्दन^{२२} स्यापक^{२३} बिप्रन^{२४} जोन कहौ अपराध कीयौ मुनि कोन ।
 बिचारक ब्यास कहौ इह बात, भयो नृप भू हिरनाँख^{२५} को आत ॥१८९

१ विष्णु भगवान । २ अमृतदृष्टि । ३ विश्वास । ४ सौ वर्ष । ५ वर्ष । ६ कौनसी = क्या ।
 ७ भक्त । ८ बराबरी का युद्ध । ९ अदभूत । १० स्वरूप । ११ कान । १२ अहंकार ।
 १३ ऋषि । १४ प्रवीण । १५ अहंकारयुक्त व्यक्ति । १६ पीछे । १७ त्याग ।
 १८ मनवन्तर । १९ वास्तविक घटना या बात । २० कानों । २१ शंका । २२ विष्णु ।
 २३ शापदाता । २४ ब्राह्मणों । २५ हरिष्यास ।

अनेकन जाहि करे ऊतपात, सुधाभुक^१ विप्रन हू मुनिनाथ ।
 मुनी द्वज^२ देवन काज मुरार, इतै नरसिघ^३ भयो अवतार ॥१६०
 प्रहारीय हाटक कस्यप^४ प्राँन, दीयो प्रह्लाद को राज निदाँन ।
 जिही प्रह्लाद गह्यौ बल जोर, मँडे रन बासव^५ मुछ्छ-मरोर^६ ॥१६१
 भयो सत बछ्छर^७ जुद्ध भवाँन^८, मिली जय संगर में मघवाँन^९ ।
 पराजय देवन लै प्रह्लाद, बढी ऊर अंतर आय विषाद ॥१६२
 तज्यौ पद-राज बली कह तत्र, प्रभूपन^{१०} दीनेऊ आप पऊत्र^{११} ।
 गही तब आश्रम बढीय गैल, सोऊ तप हेत ऊतंग ही सैल ॥१६३
 बली प्रथमी-पत^{१२} होय बलिष्ट तिबिष्टप-वासिन सौँ रन तिष्ट ।
 सिहायक^{१३} पाय हरी सुरगीथ, दले दनुजात^{१४} पराजय दीय ॥१६४
 दिती-सुत दंत गरू^{१५} अरदास^{१६}, भये सरनागत^{१७} वेदना-भास ।
 अर्भे पद^{१८} दीन मघाभव एम, जितौ दनुबिद्र भरोस ही जेम ॥१६५
 सदेसन-हारक^{१९} सौँ सुन आँन, महाँ ऊर सोच गयो मघवाँन ।
 बिचारीय इंद्र सलाह की बात, निरंतर बिस्तु अनाथ के नाथ ॥१६६
 जुहार कै कथ्य कही कर-जोर, ऊपद्रव बाढहिगी द्रढ और ।
 गये भृगू-सिख्ख सबै भृगू ग्रेह, अर्भे पद दीन सुनी हम येह ॥१६७
 सबै स्वर्गीयन सथ्य समेत, हरी कीय संमत्त^{२०} संगर हेत ।
 लगे दनुजादन के कुल लार^{२१}, प्रहारीय^{२२} ठौर ही ठौर प्रचार ॥१६८
 भगे दनु फेर किते भयभीत, परे कुज पावन^{२३} प्राँनन प्रीत ।
 जबै दनुजात घट्यौ लख जोर, चले सुर संगर की तथ^{२४} छोर ॥१६९
 कही भृगू-सिख्खन सौँ कुज कथ्य, सिहायक देवन बिस्तु समथ्य^{२५} ।
 हमे हरनाक्ष कौँ होय बराह, ऊधारीय प्रथीय सिंधु अथाह ॥२००
 सदा हरी देवन^{२६} काज सहाय, करे नही जतन कहूँ किह काय ।
 नही हम मंत्रन सक्ति निदाँन, बचाव^{२७} कौँ बिस्तु के अगृ विधाँन ॥२०१
 समै^{२८} लख बैरिन सौँ कर संघ, बचाव के कारन बाँधहि बंध ।
 विचारहि मंत्र कछू हम बेस, मिलायकै जायकै पास महेस ॥२०२

१ देवता । २ ब्राह्मण । ३ नृसिंह । ४ हरिष्यकसिप । ५ इंद्र । ६ मूछे मरोड़कर ।
 ७ वर्ध । ८ मयानक । ९ इंद्र । १० राज्यपद । ११ पौत्र=नाती । १२ राजा, भूमिपति ।
 १३ सहायक । १४ दंत्य । १५ शुक्राचार्य । १६ विनती । १७ शरणागत । १८ समयपद ।
 १९ दूत । २० मंत्रणा । २१ पीछे । २२ मारा, बध किया । २३ पैरों, चरणों । २४ पृथ्वी ।
 २५ समर्थ । २६ विष्टु । २७ रक्षा । २८ समय, अवसर ।

मिले रही देवन सौं तुम मित्त^१, तितै लहि आवहिगे हम तत्त ।
 कहे इह सुक्र गये कयलास^२, बिचारन कारन मंत्र बिसास ॥२०३
 सबै प्रह्लादिक दानव संग, प्रकासीय^३ देवन सौं परसंग ।
 करी सुर देव ज्युहीं तप कर्म, धरै हम सख गहै तुम धर्म ॥२०४
 कही प्रह्लादक आदन कथ्य^४, सही सोई माँनीय देवन सथ्य ।
 लगे स्वयं^५ कारज में स्वर^६ लेख, बिश्रंभ^७ कौं पाय कं राह बिसेख ॥२०५
 दईतन^८ सथ्यहु पूर्वक दंभ, सबै तप साधन कीन ससुंभ^९ ।
 सबै सरनागत जाँन सहेत, द्यौं ऊपदेस ज्यूही गरू देत ॥२०६

बोहा

सुक्र^{१०} गये कयलास कौं, मिले जाय माहेस^{११} ।
 आगम पूछौ सिंभु अरू, मतलब कहाँ मुनेस ॥२०७
 सुराचार्य^{१२} तै इधक^{१३} सोई, मंत्र बतावहु मोहि ।
 मम सिखन^{१४} कौं जय मिलै हथ देवन जय होय ॥२०८
 सोचे मन में सिंभु सुन, कथ्य मघाभव केर ।
 मंत्र दीयै दनु जय मिलहि, जिग्यभुक्त ह्वै जेर^{१५} ॥२०९
 सरनागत^{१६} हू सलाह कौं, जो कछू पूछै जाब ।
 बाकौं हित कैबौ^{१७} ऊचत, है परीआय^{१८} हिसाब ॥२१०

छंद भुजंग प्रीयात

बिचारै कही सिंभु कैलासबासी, अहो सुक्र मेटी होयै को ऊदासी ।
 करै तै तपस्या सरै^{१९} सबै काजा, सुपर्वा-गरू^{२०} स्याहि^{२१} राखै समाजा ॥२११
 बताबै तपस्या अनूप बिधानं, परं बछ्छरं लौं करी धूमृ पांनं ।
 सतं बछ्छरं होयगो पूर्ण संख्या, अखी सिद्ध मंत्र मिलैगे असंख्या ॥२१२
 हमी दहगै और कौं काँम हैना^{२२}, इही हाथ देना जिहो हाथ लहैना ।
 सुनी सुक्र नै सिंभु की बात सारी, पीयै धूमृ^{२३} आगं तपस्या प्रचारी ॥२१३

१ मित्त । २ कैलास । ३ प्रकट की । ४ कथा = बात । ५ अपने । ६ देवता ।
 ७ बिदवास । ८ दैत्य । ९ अंगीकृत । १० शुक्राचार्य । ११ महादेव । १२ बृहस्पति ।
 १३ अधिक । १४ शिष्यों । १५ नीचा-दिखाना, पराजित करना । १६ शरणागत ।
 १७ कहना । १८ परम्परा । १९ पूर्ण हो । २० बृहस्पति । २१ सहायता । २२ नहीं है ।
 २३ धूँवा ।

सुपर्व^१ सुनी सुक्र की बात सोई, हीयै द्वेष बाढ्यौ महां क्रुद्ध^२ होई ।
 धरै अस्त्र-सस्त्रं सबे ऊठ धाये, अदेवं^३ छली जाँनकें रूठ^४ आये ॥२१४
 अदेवं जबै कथ्य ऐसी ऊचारी हथ^५ कीजीयै ना तपस्या हमारी ।
 हनौ देख कैसै हमै सस्त्र-हीनं, प्रपाटी^६ कहूँ नीत लेखी प्रवीनं ॥२१५
 जथा बोल ऊठे सुपर्व जहाँ ही, कथा सुक्र^७ कैलास साँची कहाँ ही ।
 सुनी पूर्वदेवं^८ जहाँ बात सारी, चले भाजकै व्याज^९ छंज्यौ विचारी ॥२१६
 सुपर्व लगे पीठकौ दौर सारै, मिले आसुरं जाहि कौँ चाहि मारै ।
 चले सुक्र की मात की सर्न^{१०} चाही, सुरं-आसुरं बैर बाप्यौ^{११} सबाँहीं ॥२१७
 कही सुक्र की माय सौँ स्याहि^{१२} कीजै छतै^{१३} रावरे आसुरं बंस छोजै^{१४} ।
 धरै सस्त्र-अस्त्रं सबे देव धावे, दलै दानवी जात कौँ बैर-दावै^{१५} ॥२१८
 सुनी सुक्र की मातने बात सोऊ, कह्यौ दानवी जात त्रासौ^{१६} न कोऊ ।
 भली-भाँत कै दीन बिलभ^{१७} भारी, सबे वेदना छेद डारी सुरारी^{१८} ॥२१९
 निपाई जबै सुक्र की मात निद्रा, सुपर्व मिटे चेत आदं सुरंद्रा^{१९} ।
 गही बिस्नु की चर्न^{२०} की सर्न जाता, महानीद बित्तं करी सुक्र नात ॥२२०
 सुनी बिस्नु नै जिस्नु की बात सारी, महा मंत्र कौ जतन कीनौ सुरारी^{२१} ।
 हित्तु जाँन कै सर्न आये हमारै, सुपर्वा करौ देह परवेस^{२२} सारै ॥२२१
 सुपर्व भली-भाँत बिस्नु सरीरं, धरी पीर मेटे सुनासीर धीरं ।
 जहाँ सुक्र की मात ने बात जाँनी, परी दौरकं भक्षणं चक्रपाँनी^{२३} ॥२२२
 लखी आवती सुक्र की मात की लेखा, बढ्यौ सोक बिस्नु पुकारे विसेखा ।
 हरी कष्ट में स्याहि^{२४} कीजै हमारी, सुरारी^{२५} सुरारी सुरारी सुरारी ॥२२३
 कीयो चक्र कौँ याद लै मुज्जकेसी, कट्यौ ताहि सौँ सीस दृष्टा कलेसी ।
 भृगूनार कौँ मारकं मेट भीती^{२६}, प्रकासौ सबे देव बिस्नु प्रतीती ॥२२४
 भृगू वात ऐसी भाँमनी^{२७} की, हीयं क्रुद्ध ह्वै ओर चाले हरी की ।
 द्रगं देखतै ही सुनी श्राप दीनी, लगी ब्रह्म-हथ्या^{२८} महां पाप लीनी ॥२२५

१ देवता । २ क्रोधित । ३ दंत्य । ४ रूठ : ५ मारो । ६ परंपरा । ७ शुक्राचार्य ।
 ८ दंत्य । ९ कपट । १० शरण । ११ व्यापगया । १२ सहायता । १३ जीवित-
 रूठे । १४ नष्ट हो रहा है । १५ बैर-भाव । १६ मयनीत न हो । १७ विश्वास ।
 १८ दंत्य । १९ इन्द्र । २० चरण । २१ विष्णु । २२ प्रवेस । २३ विष्णु ।
 २४ सहायता । २५ विष्णु । २६ मय । २७ स्त्री, मार्या । २८ ब्रह्महत्या ।

तज्यो सातुको^१ धर्म मारी श्रीया कौं, हरी ज्ञान कैसे न आयौ हीया कौं ।
 बसू^२ जन्म लंही सही बार-बारं, सदां गर्भ कौ दुःख पंही संसार ॥२२६
 हरी कौं भृगू श्राप दीनौ जंही तै, कमो धर्म की ह्वै जमी पै तही तै ।
 लखै तै सदा विस्तु औतार^३ लेवै, भली-रीत जाँनौ पुनि श्राप भैवै ॥२२७
 भृगू श्राप दंके चले आप भानं^४, मरी देख स्त्री सोक बाढ्यौ महानं ।
 जिते पुंन्य^५ के काज कीने जहाँ ही, त्रीया^६ हेत संकल्प दीने तहाँ ही ॥२२८
 मुनी भारजा जीव ऊठी मिलाई, प्रमीला^७ मनौ नैन छूटी पलाई^८ ।
 भृगू कौं इहो काम कै देख भारी, अँदेसौ^९ परचौ आयकँ आसुरारो^{१०} ॥२२९
 पिता सुक्र की मात क्रामात^{११} पेखी, द्रुतं^{१२} आय है ताहि कौ पुत्र द्वेषी ।
 कहा हाल गिर्बान^{१३} जाती करैगे, इहै दुःख सौं कोन तै ऊढरैगे ॥२३०
 सुनासीर^{१४} ऐसी सुनी बात साची, जयंती-सुता^{१५} इंद्र को इंद्र जाची ।
 अहो अंगजा सुर्ग मेटौ असाता, गहौ सुक्र^{१६} की सेव कौं जाय जाता ॥२३१
 जबै सुक्र की आगन्या लै जयंती, चली सुक्र कै पास ह्वैकँ नचिती^{१७} ।
 मुनी जाय देखी तपस्यां महानं, पीयै नासका^{१८} आँननं^{१९} धुमृपानं ॥२३२
 करं पत्र^{२०} लीनौ हरी तत्र केली, करै सुक्र कौं पौन^{२१} ऊभो अकेली ।
 महाँ मिष्ट लावै फलं कंद-मूलं, त्रनातल्प^{२२} राचं इल^{२३} तुल्य तूलं^{२४} ॥२३३
 मुनी आश्रमं सच्छ^{२५} रखै मही कौं, जिही रीत सौं सुःख ह्वै देख जी कौं ।
 करै भावना-भाव सौं काँमना कौं इकँ सेव रूपी लीयै आमना कौं ॥२३४
 सतं^{२६} बषं बीते जबै सुक्र सारे, पती पार्वती अष्टमूर्ती^{२७} पधारे ।
 द्रढं देखकँ सुक्र वरदानं दीनौ, पदार्थ जिते-जक्त^{२८} जाँनौ प्रबानौ ॥२३५
 रहैगे बसीभूत^{२९} तेरी रजा^{३०} में, परंपुज्ज ह्वै ईस हू की प्रजा में ।
 दये सुक्र बाचा गये सिभु दांनी, जयंती कहू सुक्र पूछौ जबांनी ॥२३६
 कहा चाहती ही कहौ तोहि काँमं भली-भाँत सेवा करी सोहि भाँमं ।
 जबै चित्त वृत्तं भख्यौ जयंती सुनासीर कौ हेत जामँ सिद्धती ॥२३७
 सुनँ सुक्र बोले जयंती सभागी, सही काँम की काँमना सानुरागी ।
 कछू काल तोसौं बिहारं करैगे, हीयै काँम-की-काँमना^{३१} कौं हरैगे ॥२३८

१ सात्विक २ पृथ्वी । ३ अवतार । ४ भवन, घर । ५ पुण्य । ६ स्त्री, भार्या । ७ निद्रा ।
 ८ भागकर । ९ शंका । १० देवताओं ११ करामात, चमत्कार । १२ शीघ्र । १३ देवता ।
 १४ इंद्र । १५ पुत्री । १६ शुक्राचार्य । १७ निश्चित । १८ नाक । १९ मुख । २० पत्ता ।
 २१ पवन, हवा । २२ सेज । २३ पृथ्वी । २४ रुई । २५ स्वच्छ । २६ सौ । २७ महादेव ।
 २८ जगत । २९ बशीभूत । ३० आज्ञा । ३१ कामवासना ।

गहो मन ज्ञान लहै गीत गूढ, मनाँ^१ पिच्छतावहुगे मति सूढ ।
 गरु^२ तुम है हम सुक्र गभीर, सदा दिती-पूतन काज सधीर ॥२६३
 लखे इक रूप ऊभै^३ धितलाय भये दितीपूत अचभत^४ भाय ।
 गरु तब खोलीय गूढ गिराह^५, अमोलीय बोलीय सौँ अवगाह ॥२६४
 अरे इह देवन कौँ गरु आद, बढावत दैतन सौँ नित बाद ।
 सुनी हम जावन की कयलास^६, इहाँ फिर आवन की अभिलास ॥२६५
 लग्यो सोई आवत मोपह लार^७, सिधंत कौ देखन कौ ततसार ।
 तुमारेई अर्थ लीये हम तंत्र, महाँ केऊ ओसध^८ हू फिर मंत्र ॥२६६
 तजौ तुम देवन कौ भय तात, बिचारत ज्ञान ऊचारत वात ।
 सुनी इह दानव ज्ञान सकोय, हमै गरु येही जु होय तौँ होय ॥२६७
 न माँनीय सुक्र की वात निदान, सराप^९ कौँ दै चले ऊठ सुथान^{१०} ।
 पराजय देवन सौँ तुम पाय, निरादर होवहुगे इह न्याय ॥२६८
 जत्र पहिचानहुगे कवि^{११} जीव^{१२}, कहै हम कथ्य कही दनु क्लीव^{१३} ।
 इहै कहू वात न माँनीय अग^{१४}, मघाभव^{१५} रूठ^{१६} गये निभ मग ॥२६९
 रही थिर चित्रसिखंडज राह, अदेवन^{१७} ज्ञान गह्यौ अवगाह ।
 लगे स्वय कारज में लवलीन, अनूपम ज्ञान के ज्ञान अधीन ॥२७०
 गये तब देवगुरु कर गान^{१८}, प्रकासीय^{१९} आपन रूप प्रधान ।
 जवे सुरराज^{२०} मिले गरु जाय, सबे कथ ज्ञान कही समुभाय ॥२७१
 विना भय जान कं दानव वृंद्र, इतै बल जोर चढ्यौ जहाँ इंद्र ।
 पहुँचीय देवन लाग प्रपात^{२१}, घनी दनु जातन सौँ बनी घात ॥२७२
 जहाँ तहाँ हूँडत मारत जाय, परे तब दानव हार पलाय^{२२} ।
 जय गरु-देवहु कौ लीय जान, भगे सोई भागव के गये भान ॥२७३
 कही प्रह्लादन आदन कथ्य, परी पहिचान हमै वृसपत्त ।
 निरादर आप कोयो लख नैन, ऊपज्जीय आय कं एहु अचन^{२३} ॥२७४
 मंपेन कं मुक्र कही कय सार, लगे तुम धूरत^{२४} की सठ लार^{२५} ।
 जहाँ वृसपत्त तहाँ तुम जाहु, संबोधन कारन लेहु सलाह ॥२७५

१ मनाये । २ गूढ । ३ दोनो । ४ आदर्य कर्त्तव्य । ५ आली । ६ कलाप । ७ पीछे ।
 ८ कोष । ९ शर । १० अपने स्थान । ११ मुक्र (बने हुए) । १२ कृत्स्नपति । १३ कायर ।
 १४ आते । १५ सुभाषण । १६ बह होकर । १७ बंध्य । १८ ममन । १९ प्रकट किया ।
 २० इन्द्र । २१ सेना । २२ आदर । २३ केचनो । २४ धूर्त । २५ पीछे ।

जबै प्रह्लाद कही कर जोर, अहो गरू^१ जानत और की और ।
 निहारकै रूप तथा तुम नाँम, गहे पद जाँन गरू गुन-ग्राम^२ ॥२७६
 पिछाँन न पाईय भूल पसाय, इहै हम चूक परचौ कछु आय ।
 क्षमापन^३ लायकै चाहिकै खेम^४, निभावहु आद मघाभव नेम ॥२७७
 त्रिकालग^५ जाँनत बीतीय तथ्य^६, बनायकै और कहै कहा बत्त^७ ।
 बसै थिर होयकै बंस बचाय, पताल की जावहि राहि पलाय^८ ॥२७८
 सुने प्रह्लाद के सुक सवाल, बिसासकै किन्नेऊ चित्त बहाल^९ ।
 नही घबरावहु दानव-नाथ^{१०}, बिचारहु एक कहै हम बात ॥२७९
 हुवै सोई जो कछु होवनहार, सुभासुभ नाँहि बिचार कै सार ।
 मिटाय न सक्किहि^{११} बिस्नु महेस^{१२}, इतै पर कोन करै उपदेस ॥२८०
 भये इह बेर कहू हथभाग^{१३}, लरौ जन देवन सौँ हट-लाग^{१४} ।
 बसौ अधलौक^{१५} लहाँ विसरौम^{१६}, समै लख जीतहुगे संगराम^{१७} ॥२८१
 कीयौ पंचदून अहो जुग काज, रसा पर देवन ऊपर राज ।
 मुँनंतर साबरनीक महान, इहै सक्र आसन लेवहु आँन ॥२८२
 बली बर दीनेऊ बाँवनदेव^{१८}, भली बिध ताहि बिचारहु भेव ।
 मनू-नवमे^{१९} महँ बुद्ध महान, बली सुख देखहुगे बलवान ॥२८३
 सबे विध नीत की रीत सलाह, जहाँ प्रह्लाद करी कहि जाहि ।
 गही प्रह्लादहु धीरज गात, बली सन येक भई नइ बात ॥२८४
 बली निभ^{२०} पालट^{२१} रूप बिधाँन, चले कहु होयकै चक्रोय^{२२} बाँन ।
 मिले कहू सून्य^{२३} के सुथाँन के माँहि, पिछाँनकै^{२४} इंद्र कही परचाय ॥२८५
 कहौ इह रूप कीयौ किह काज, बड़े हुय राचत हौ छल ब्याज^{२५} ।
 बली तहाँ बोल बिवेक बिचार, महौप्रभू जाँनन नाँहि मुरार^{२६} ॥२८६
 भये सोई मछुछू रू कछुछू के भेस, बराह के रूप कहूँक बिसेस ।
 जहाँ विध^{२७} पाप लग्यौ कहु जौर, दुरे^{२८} तुम पंकजनालीय^{२९} गौर ॥२८७
 बढचौ दोऊ और तै बान बिनोद, बिचारकै इंद्र गह्यौ हीय बोध ।
 गये दोऊ आपनै आपनै गृह, अहो परमाँतम^{३०} की गत येह ॥२८८

१ गुरू । २ गुण = निधान । ३ क्षमाभाव । ४ क्षेम । ५ त्रिकालज्ञ । ६ तथ्य । ७ बात ।
 ८ भागकर । ९ स्वस्थ । १० प्रह्लाद । ११ सक्ते । १२ महादेव । १३ भाग्यहीन ।
 १४ हठ करके । १५ पाताल । १६ विश्राम । १७ संग्राम । १८ वामन भगवान । १९
 सर्वांगिक, मनवंतर । २० बदलकर । २१ अपने । २२ गधा । २३ शून्य = एकांतघर ।
 २४ पहिचानकर । २५ कपट । २६ विष्णु । २७ प्रकार । २८ छिपे रहे । २९ कमलनाल ।
 ३० परमात्मा ।

चले सग लैकै जयंती छलाये^१, लखै ठौर येकंत^२ आगार लाये ।
जयंती बिहारं रच्यौ सुक्र जाई, रूची लायकै कांस-क्रीड़ा रचाई ॥२३६
लगी सुक्र की ठोक^३ पाताल-लोका, अभै^४ सिभु बरदान दीनौ अदोखा ।
ऊमाहे सबै सुक्र के द्वार आये परी ठोक नांही कहूँ दस^५ पाये ॥२४०
लगे सोचनै सब पाताल-लोका, धरचौ चित्त की चाहि में आय धोखा ।
जबं सक्र नै सुक्र^६ की बात जानी, गरु^७ कौ कह्यौ काज-कीज सुजांती ॥२४१
गरु सुक्र की रूप कीनौ सुजाता, दिती-पुत्र^८ कौ जाय ह्व दस^९ दाता ।
सबै आयकै पाय लागे सुरारी, करी बर्नना^{१०} चाहिकै स्याहिकारी^{११} ॥२४२
गरु सिख^{१२} सथं कही कथ्य इयानी, नवीनी लई ईस^{१३} बिद्या-निधानी ।
करैगे सुखी ताहि सौं सिद्ध काजा, सबै बोध दैकै सुरारी-समाजा ॥२४३
गरु की सुनी सिख कैं साथ गाढी, चह्यौ क्षेम नेमं रजा^{१४} सोस चाढी ।
परंपुज^{१५} मांन्यौ गरु कौ प्रभावं, भृगू-सिस्य^{१६} जांन्यौ गरु-सुक्र^{१७} भात्र ॥२४४

दोहा

श्रवन कथा जबही सुनी, गरु-इंद्र की गाथ ।
जनमेजय पूछी जबही, बिहस व्यास सौं बात ॥२४५
साख बेद स्तुति सुमृती^{१८}, पढे जु सकल पुरांन^{१९} ।
कपट बेख^{२०} तिह गरु कीयौ, ऐसे भये अप्रान^{२१} ॥२४६
अमर-गरु सुत अंगरा, पूरन कला प्रवीन ।
कीनौ जिह ऐसौ कपट, निज तत कहहु नवीन ॥२४७
बांस देव वासण्ट वर, मुनी गरु बिसवामित्र^{२२} ।
धर्म बिसय^{२३} में बचन ध्रुव^{२४}, मानहिगे किह मंत्र ॥२४८
जगत पिता विध^{२५} जांनीयै, अग्न ईंदु^{२६} अरु इंद्र ।
परदार^{२७} रति^{२८} जिनहु पुन चाहि करै छल-छंद्र^{२९} ॥२४९
हंसग औरै हर^{३०} हरी, धरी जथा ऊर ध्यान ।
व्यास कथा बहु बिसतरी, परी न धरम पिछांन^{३१} ॥२५०

१ ठगेजाकर । २ एकान्त । ३ पता । ४ निर्भय । ५ दर्शन । ६ शुक्राचार्य । ७ वृहस्पति ।
८ देत्यों । ९ दर्शन । १० स्तुति । ११ सहायक । १२ शिष्य । १३ शिव । १४ आज्ञा ।
१५ परमपूज्य । १६ वैश्यगण । १७ गुरु शुक्राचार्य । १८ स्मृति । १९ पुराण । २० वैश ।
२१ सूर्य, अज्ञानी । २२ विश्वामित्र । २३ विषय । २४ अटल । २५ ब्रह्मा । २६ चंद्रमा ।
२७ दूसरे की स्त्री । २८ प्रेम । २९ कपट-द्वेष । ३० शिव । ३१ विष्णु । ३२ पहचान ।

व्यास नृपत इह सत बचन, सरल कही समुभाय ।
 देह धरं देखहु द्रगन^१, जानहु रागी जाहि ॥२५१
 पुन ये सकल प्रबीन पन, पंडत परम-पुनीत ।
 ऊधरन^२ दैत है ऐब^३ कां, जग में पाव न जीत ॥२५२
 कथा सुरगरू कहत हू, इक सुनीयै इह और ।
 त्रीया हरन कर ताहि सौं, चंद लेगयौ चोर ॥२५३
 लघु आता आ नर्तकी, लई त्रीया ललचाय ।
 गृहन करी ताकौं गरू, इह कीनौ अन्धाय ॥२५४
 जनमे जेते जगत मै, मरहै सोऊ मुरभाय^४ ।
 वय^५ दीरघ^६ कोऊ अल्प^७ वय, लखहु भेद चितलाय ॥२५५
 सबही रागी समुभीयै, नही बिरागी नेम ।
 द्वेखी^८ सबहो दुखन कै, पुन सुख चाहत पेम ॥२५६
 ऊर धारहु पद ईस्वरी, जग में जाकी जोत^९ ।
 ताको इच्छा^{१०} तै तिही, इह जग कीयौ ऊद्योत^{११} ॥२५७

छंद मौतीदांम

सुने जनमेजय बायक^{१२} खान, ^{१३}गह्यौ ऊर सौं तजी मन ग्लान ।
 बने गरू^{१४} चित्र सिखंडज बेत, दयौ कहा दंतन^{१५} कौं ऊपदेस ॥२५८
 जब सुन व्यास दीयौ नृप जाब^{१६}, सब बस दानव कीन सताय ।
 बिते दस वर्ष बिहार बिधान, जयंतीय सुक्र तोया निभ^{१७} जान ॥२५९
 कह्यौ हम जावहिगे हित काज, सँभारन कारन दैत समाज ।
 जयंतीय बोल ऊठी कर जोर, भलै तुम बेर सिधावहु भार^{१८} ॥२६०
 मघाभव^{१९} ऊठ चले जुत मोद, बिचारत दंतन बात-बिनोद ।
 सँपेखीय आयकै दानव सथ, बने सुक्र वेख लखे वृसपत्त ॥२६१
 बदे^{२०} जहाँ व्याज^{२१} सरूप बखान, गहै सब दानव केवली^{२२} जान ।
 कही जब दंतन सौं कबी^{२३} कथ्य, बन्यौ मम रूप इहै वृसपत्त ॥२६२

१ आँखों । २ उदाहरण । ३ दोष । ४ जीर्ण होकर । ५ आयु । ६ दीर्घ, बड़ी । ७ थोड़ी ।
 ८ द्वेषी । ९ ज्योति । १० इच्छा । ११ प्रकाशित । १२ वाक्य । १३ कान । १४ गुरु-
 बृहस्पति । १५ दैत्य । १६ उत्तर । १७ अपनी । १८ प्रभात । १९ शुक्राचार्य । २० कहते-
 थे । २१ कपट । २२ केवल्य, मोक्ष । २३ शुक्राचार्य ।

इहाँ प्रह्लाद सत्रै असुराँन^१, कही जिम सुक्र की सत्य कहाँन^२ ।
 बनै जुध देवन सौं इहबार, हलै तऊ पावहिगे मिल हार ॥२८६
 बसै अधलोक^३ जहाँ कर बास, हृद^४ बिसवास^५ कौं पाय हुलास ।
 नमूंचीय^६ आदक बोल निहार, रचै नही देवन सौं फिर रार ॥२८७
 कहै सब बीरहु आदक लकोव^७, जबै सुख कोन लहै हम जीव^८ ।
 इहै कहि लै प्रह्लाद कौं अग^९, ऊठे दनु आयुध धार ऊदग ॥२८८
 बकारीय आसुर देवन वृंद, दसूँ दिस मार मचाईय दुंद^{१०} ।
 प्रपातहु^{११} दानव की भरपूर, सँघारन लग्गीय देवन सूर ॥२८९
 कुलाहल सद्^{१२} भयो चहुँ कोद जहाँ तहाँ दानव जुटत^{१३} जोध ।
 पल्लट्टीय दीह ऊछ्छट्टीय पाव दुघट्टीय घट्टीय लट्टीय दाव ॥२९०
 भयो सत बल्लछर^{१४} जुद्ध भयाँन, न-पुज्जीय^{१५} देवन घाव निदान ।
 हुई रन देवन की जब हार, पहुँचीय श्री जगतंब^{१६} पुकार ॥२९१
 चढी अरुनानुज^{१७} आयकै चाल, निहार कै देवन कीन निहाल ।
 संबोधन दै बिसत्रास सिवाय, चली फिर दानव के दल चाह ॥२९२
 तहाँ प्रह्लाद लख्यौ जगतंब, दहू^{१८} कर जोर कह्यौ तज दंभ ।
 ऊभै^{१९} हम देव अदेवहु येक, बिचारहु रावरौ^{२०} भाव बिसंख ॥२९३
 जबै जगतंब^{२१} कह्यौ तज जुद्ध, पताल कौं दानव^{२२} जाहु प्रबुद्ध^{२३} ।
 समी^{२४} तुम आवहगौ ततसार, बिचारकौं पावहुगे तिह बार ॥२९४
 इहै कथ बैसनबी^{२५} की सुन आद, पताल कौं जाय बस्यौ^{२६} प्रह्लाद ।
 सबै दनुजात गये तिह सथ्य, अभै^{२७} सब देव भये असमथ्य^{२८} ॥२९५

कवित्त

जनमेजय नृप जहाँ, श्रवन प्रह्लाद चरित सुन ।
 व्यास करी फिर बिनय, अहो कछु कथा कहहु अन^{२९} ।
 मुनी भृगू श्राप मुरार^{३०}, भये अवतार किते भुव^{३१} ।
 सख्या तिनकी सुनन हृदै अभिलाख^{३२} अधिक हुब ।

१ दैत्यगण । २ कथन, बात । ३ पाताल । ४ हृदय । ५ विश्वास । ६ दैत्य ७ कायर ।
 ८ आत्मा । ९ आगे । १० दंड । ११ सेना । १२ शब्द । १३ जुटते, ये । १४ वर्ष १५ पूर्ण
 नहीं हुई । १६ जगदंबा । १७ गरुड़ । १८ दोनों । १९ दोनों । २० आपका । २१ जगदंबा ।
 २२ दैत्य । २३ बुद्धिमान । २४ समय । २५ वैष्णवी । २६ बस गये । २७ निर्भय ।
 २८ असमर्थ । २९ अन्य । ३० विष्णु भगवान । ३१ भूमि, पृथ्वी । ३२ अभिलाषा ।

कर कृपा व्यास लागेऊ कहन, सुनत सभासद श्रवन सब ।
 विष्णु के भये अवतार बर, येते सुनीयै नृपत अब ॥२६६
 मन्वंतर चाक्षक^१ महान, सुत धस भये सुन ।
 नर नारायण^२ नाम, महा तप तेज ऊभय मुन^३ ।
 सुत अत्री दत्त विष्णु^४, मुनंतर^५ वैश्वस्वत^६ मह ।
 इंद्रु बिरंचन अखल, उगृ^७ दुरवासा आपह ।
 अनसुया ऊदर सोइ ऊपजे, त्रहू देव जानहु तँही ।
 अवतार सोइ गुनजुक्त ये, कथा पुरानन सै कही ॥३००
 जुग चौथे मह जान, हिरनकस्यप^८ मारन हित ।
 श्री अवतार नृसंघ^९, महान बलवंत क्रूर मति ।
 बल^{१०} छलन कौ बने, जहाँ बाँवन^{११} त्रता जुग ।
 कस्यप अदती निकाय, दनुज भय-दाय लखेऊ द्रग ।
 उन ईस^{१२} फेर त्रेता अखल, क्षत्रीय कुल कौ करन खय^{१३} ।
 भये परसराम अवतार भुव, जांमदग्न गृहजुद्ध जय ॥३०१
 रघुकुल दसरथ राज, सुवन^{१४} तिह परम सयानौ ।
 रामचंद्र महाराज, जिही पावन जस जानौ ।
 अष्टाविसत^{१५} इही, जिही जुग द्वापुर जानौ ।
 नर नारायण कसन, विजय अवतार बखानौ ।
 त्वै धरम हान जबही हरी, आय आय जग अवतरै ।
 इच्छा प्रभाव सोइ आपन, कर बिहार लीला करै ॥३०२

दोहा।

पूछी कथा सु व्यास प्रत, जनमेजय राजान ।
 नर नारायण तेज निध, करन सदाँ कल्याण^{१६} ॥३०३
 इंद्र पटाई^{१७} अफछरा^{१८}, जुगल मूर्ति ढिग जास ।
 कांमातुर लख कांमनी, अत चित भये ऊदास ॥३०४
 अहंकार ऊतपत हुव, नारायण लख नैन ।
 आप निवारन कीन सुन, बिमल कहे नर बैन ॥३०५

१ चाक्षुष । २ नारायण । ३ मुनि । ४ दत्तात्रेय । ५ मन्वंतर । ६ वैश्वस्वत ।
 ७ उग्र । ८ हिरण्य कशिपु । ९ नृसिंह । १० बलि । ११ वामन । १२ ईश ।
 १३ क्षय । १४ पुत्र । १५ अष्टाविसर्व । १६ कल्याण । १७ भेजी । १८ अप्सरा ।

कीयौक तिनसौं द्वारक्रम^१, बेमुख^२ करी क^३ बाँम ।
 बासव^४ की बारंगना^५, कीयौ कहा तिन काँम ॥३०६
 विदा करी बारंगना^६, नारायन तज नेह ।
 तजकै बिसय^७ जु करत तप, अब हमरौ पन येहु ॥३०७
 अठ-बिसत^८ द्वापुर^९ अबै. विधवत समय बसाय ।
 वँह जुग में हम अवतरहि^{१०}, जदुवंसिन^{११} में जाय ॥३०८
 जब तुमही लैहौ जनम, हम त्रीय तबही होय ।
 सिद्ध मनोरथ करहु सब, मिथ्या^{१२} पन^{१३} नहि सोहि ॥३०९
 स्वर्गलोक कौं अप्सरा, गई पुरंदर गृह ।
 सकल कह्यौ वृतांत सुन, अचरच^{१४} भयौ अछेह ॥३१०
 नारायन अरु धन्य नर, जिह तप साधन जोग^{१५} ।
 ऊखसी आदक अछछरा. प्रगटी ताहि प्रीयोग ॥३११
 वँह नारायन नर वँही, अरजुन^{१६} हरि^{१७} अवतार ।
 भृगु श्राप सौं ऊभय भये, नृप समुझहु निरधार ॥३१२

छंद त्रोटक

अरजी^{१८} नृप हू जुत^{१९} आतुरता, चित कीन विचारक चातुरता ।
 क्रसना अवतार चरित्र कहौ, अध-हारक^{२०} तारक^{२१} मंत्र अहो ॥३१३
 मिट जाय सदेह सब मन कौं, तिन सौं सुख लाभ मिलै तन कौं ।
 वसुदेव तै देवकी गर्भ वसे, तिनकौं बहु रीत सौं कंस त्रसे^{२२} ॥३१४
 कही क्रसन प्रभाव गयौ किनकौं, तिह भ्रात मरे जितकौं तितकौं ।
 गवेन मथुरा तज गोकुल कौं, कीय पावन गोपन^{२३} के कुल कौं ॥३१५
 कंस मातुल^{२४} मारकै कीन कहा, मधुपद्मपुरी^{२५} सुख रूप महा ।
 गृह छोरकं पछ^{२६} छिम^{२६} लीन गली, थित कीन इकंत^{२७} कुसस्थ थली^{२८} ॥३१६
 अरु विप्रन श्राप लगाय इतौ, कुल आपनी गारत^{२९} कीन कितौ ।
 हट लागकं भूम कौं भार हरचौ, कुल छत्रिन जात संघार करचौ ॥३१७

१ विवाह । २ विमुख । ३ क्या । ४ इन्द्र । ५ वैश्या = अप्सरा । ६ मू० प्र० वरांगना ।
 ७ दिपय । ८ अट्टाइसवें । ९ द्वापर । १० अवतार लेंगे । ११ जदुवंश । १२ भूठ ।
 १३ प्रण । १४ आश्रय । १५ योग । १६ अर्जुन । १७ कृष्ण । १८ प्रार्थना । १९ युक्त ।
 २० पापनाशक । २१ ऊद्धार करने वाला । २२ दुःख दिया । २३ ग्वालियों । २४ मामा ।
 २५ मथुरा । २६ पश्चिम । २७ एकांत । २८ टाण्का । २९ नष्ट ।

परलोक गये वयकुंठ-पती,^१ केऊ जात पुंलद^२ मिले कुमती ।
हरके अवरोध^३ कौं बित्त हरचौ, कही ताही कौ नास हू क्यांन^४ करचौ ॥३१८
द्रुपदा अवतार रमाँ^५ दुख सौं, सपन^६ नहि भेट भई सुख सौं ।
सुभद्रा वहिनी-लघु^७ के सुत^८ कौं, जुध में न बचाय सके जिन कौं ॥३१९
इन आद सँदेह घने ऊरकें, तिह व्यास मिटावहु आतुर कैं ।
जब व्यास कही जनमेजय कौं, इह चित्त विचारहु आसय^९ कौं ॥३२०
जब दुष्ट नृपाल भये जगती, महा पाप रता अरु मंदमती ।
धर धनु^{१०} कौ रूप गई धरनी^{११}, बिच लोक तिबिष्ट^{१२} पवै बरनी ॥३२१
तब इंद्र कही कहा कष्ट तुमैं, भहरावत पाप के भार भूम^{१३} ।
धुर बोल ऊठी तिह बेर धरा, भरपूरत पाप नरेस भरा ॥३२२
सिसपाल ज्युही मगधेस सही, दुख कासीयराज कैं फेर उही ।
रुक्मी रुच फेर गृही जु रसा, नरकास्वर साल्व कृहू की-निसा^{१४} ॥३२३
कहुं केसीय^{१५} धेनुक वल्लख^{१६} किते, रचना क्रम निदंत पाप रते ।
स्वय कर्म न जानत धर्म सही, निस द्योस^{१७} विरोध अघात नही ॥३२४
मगरु^{१८} में सूर मदंध महा, पुतला बस ओगुन के सुपहा^{१९} ।
नृप दुष्टन भार नही^{२०} निवहै, रजनी दिन में अकुलात रहै ॥३२५
बिच वार रसातल डूब वही, कीय रूप वराह ऊधारक^{२१} ही ।
अब तो हम निदंत है ऊन कौं, कर और पुकार कहै किन कौं ॥३२६
जब तँ न्हो लावत तौ जल में, तब तँ गलजात रसातल में ।
नृप दुष्टन कौं दुख देखत ना, बढकें वहुं भार बिसेकत ता ॥३२७
कलि^{२२} अबतौ कालहु आवत है, भय सौं मम बुद्धि भृमावत है ।
सुरराज^{२३} सहाय करौ सुनकैं, परभाव^{२४} गही तुमरे पन कैं ॥३२८
सुन इंद्र कही अवनी सुनीयैं, भल भेद विरंचन^{२५} सौं भनीयैं^{२६} ।
संग लीन चले जब बृद्धश्रवा, अवनी हित चाह वने अगुवा^{२७} ॥३२९

१ कृष्ण । २ भील । ३ जनाना = स्त्रियाँ । ४ क्यों । ५ लक्ष्मी । ६ स्वप्न में । ७ छोटी-
बहिन । ८ अभिमन्यु । ९ आशय । १० गाय । ११ पृथ्वी । १२ काशिराज । १३ राजा-
नरक । १४ अमावस्या की रात्रि । १५ केशी । १६ वत्सक । १७ दिन । १८ घमंड ।
१९ सरदार । २० मू० प्र० नहीं । २१ उद्धार करने वाले । २२ कलियुग । २३ इंद्र ।
२४ प्रभाव । २५ ब्रह्मा । २६ कही । २७ अग्रणी ।

सुरजेष्ट^१ के लोक गये सबहो, सुरराज^२ कहाँ इह भेद सही ।
 अचला^३ विचला^४ कीय नाथ अबै, तिसपाल हु कंस के आद सबै ॥३३०॥
 महि कौ कहु जाविध^५ भार मिटै, दुखदायक भूप घटै रू दटै ।
 कामलासन हू कहि कारन कै, असमर्थ भार उतारन कै ॥३३१॥
 मिलकै चल बिस्नु^६ के लोक मही, बिपुला^७ बरतंत कहै सबही ।
 गवने सुर बिस्नु के लोक गये, प्रभू पूरन ब्रह्म^८ के दर्स^९ पये ॥३३२॥
 नुत^{१०} कीनीय श्रीजगनाथ हु की, रचना धरनी दरनी रूख की ।
 सुरजेष्ट कही हरो आँन^{११} सुनी, नृप भूम कौ भार दयौ निगुनी ॥३३३॥
 अब द्वापुर^{१२} अंत सु आय गयौ- कलिकाल हू चाहत फल कीयौ ।
 अवतार चहै हीर कौ अचला कम भार कौ कीजीयै पूर्णकला^{१३} ॥३३४॥
 सुनकै बिधसौं हरी बात सबै, तिन उत्तर येहु दीयौ सु तबै ।
 तुम हू हम हू सिव आद तितै, जम श्रीद^{१४} परंजन जिस्नु^{१५} जितै ॥३३५॥
 परब्रह्म सनातन औ प्रकृती, सब ताहि अधोन गनौं सुकृती ।
 सुरराज बिरंचन बात सुनी, प्रकृती परभाव^{१६} गह्यौ निपुनी ॥३३६॥
 गुन ताहीके गावन लोग गिरा^{१७}, पुन बिस्नु प्रसंसाय कीन परा^{१८} ।
 भगवंतीय देख प्रसंन^{१९} भई, करुना सुन देवन बात कही ॥३३७॥
 मगधाधिप आदक मंदमती, जिह भार दयौ कतसै^{२०} जगती ।
 तिह मारन कारन देव तितै, अवतार लहौ तुम जाय इतै ॥३३८॥
 सगती^{२१} हम जुक्त चलौ सबही, मिल भार उतारहि जाय मही ।
 अदती जुत सस्यप जाय वहाँ; जदुवंस लहै अवतार जहाँ ॥३३९॥
 वसुदेव रू देवकी होय बसै, दिती आप निवारन त्याँ दरसै ।
 हुय है भृगु आप सौं पुत्र हरो, पुन होबहु मै जसुदा पुतरी^{२२} ॥३४०॥
 करहू हित देवन काज हू सौं, इल^{२३} भार उतारव आजहुसौं ।
 गृह गुप्त निकारहु गोविंद कौं, वसुदेव त्रीयाहु तजै बंध^{२४} कौं ॥३४१॥
 गृभ देवकी सेस^{२५} हू काँ गहिकं, विच रोहनी गर्भ धरु बहिकं ।
 कुल गोपन गोकुल दिव्य कला, ऊर आनद गोपीय लै अबला ॥३४२॥

१ ब्रह्मा । २ इन्द्र । ३ पृथ्वी । ४ विचलित । ५ जिस प्रकार । ६ विष्णु नगवान ।
 ७ विस्वृत्त । ८ पूर्ण । ९ दर्शन । १० स्तुति । ११ कान । १२ द्वापर । १३ पूर्ण ।
 १४ भृषेर । १५ इन्द्र । १६ प्रभाव । १७ वाणी । १८ परा-प्रकृति = जगदंबा । १९ प्रसन्न
 २० घनिष्ठ । २१ शक्ति । २२ पुत्री । २३ पृथ्वी । २४ बंधन । २५ शेष नाम ।

बलदेव रु क्रस्न^१ कौ नाम बढै, महिमा जगती बिच जाहि मढै ।
 नृप दुष्टन भार निवारहिगे, अवनो दुख ताहि ऊधारहियगे^२ ॥३४३
 अरु इंद्र किरीटीय^३ होय इहै, दल दुष्टन कौ सर^४ मार दहै ।
 जमराज^५ जुजष्टर^६ ह्वै जनमै, किरमीर-निसूदन^७ वायु^८ क्रमै ॥३४४
 नकुलौ सहदेव बडे निपुना^९, सुरबैद^{१०} के अंसहु तै सगुना ।
 बसु अंस सौं भीसम^{११} देव बनै, सुत सांतन गंग अभंग सनै ॥३४५
 महिमाय^{१२} कही जब वात मुखी^{१३}, सब देव चले सुन होय सुखी ।
 गवनी अवनो^{१४} निभ बिब^{१५} गह्यौ, लवलीन भई बिसवास^{१६} लह्यौ ॥३४६
 अवती मम भार उतारन कौ, कहि दीन सब सुरकारन कौ ।
 कुरूक्षेत्र में कैरव^{१७} बंस कटै, जदुवंस प्रभास^{१८} में जुद्ध जुटै ॥३४७
 ऊर कौ सब झोक गयौ अचला, कीय सक्तिहु धारन आप कला ।
 गृह^{१९} कौ सब ही गिरबाँन^{२०} गये, सुन सासन^{२१} सीस चढाय लये ॥३४८
 भगवंतीय^{२२} अंतर ध्यान भई, सब देवन कारज कीन सही ।
 द्रढ ह्वै बिसवास हु देवन कौ, उपज्यौ अनकाज^{२३} अदेवन^{२४} कौ ॥३४९

दोहा

भार उतारन भूम कौ, कथा सुनहु दे कान ।
 क्रस्नचंद्र^{२५} अवतार की, माया कारन^{२६} मान ॥३५०
 अमर नाम निरजर^{२७} अवर, कहत जु देव कहान ।
 जुरा^{२८} पायकै मरत जोई, माया क्रत अनुमान ॥३५१
 करता वेदहु जगकमन^{२९}, होनहार बस होय ।
 भये विकल लख भारथी^{३०}, माया संजुत मोहि ॥३५२
 सती जरी मख^{३१} दक्ष मह, करे बियत^{३२} कंदर्प^{३३} ।
 दिगवासा जल में दुरे, दूह छाँड़ मन दर्प ॥३५३
 अघ मेटत जग आप सौं, पावन क्रस्न प्रसंग ।
 कारौ जल जमना कीयी, अजाँ^{३४} न पलत्र्यौ^{३५} अंग ॥३५४

१ कृष्ण । २ उद्धार करेंगे । ३ अर्जुन । ४ वाण । ५ यमराज । ६ युधिष्ठिर । ७ भीम ।
 ८ पवन । ९ निपुण । १० अश्विनी कुमार । ११ भीष्म । १२ महामाया । १३ मुख से ।
 १४ पृथ्वी । १५ स्वरूप । १६ विश्वास । १७ कौरव । १८ युद्ध क्षेत्र । १९ गृह = घर ।
 २० देवता । २१ शासन । २२ भगवती, जगदंबा । २३ अहित । २४ दुष्ट, दानवगण ।
 २५ कृष्णचंद्र । २६ कारण । २७ वृद्धावस्था रहित । २८ वृद्धावस्था । २९ ब्रह्मा ।
 ३० सरस्वती । ३१ यज्ञ । ३२ व्यथित । ३३ महादेव । ३४ आज तक भी । ३५ बदला ।

भृगु वन में आये भृमत, फिरत रहे चहु फेर ।
 विकल भये सोइ काँम वस, हरहू त्रीया रिख^१ हेर ॥३५५
 भृगु रिख दोनौ श्राप भव, तवही सेय^२ गये तुट ।
 जथा पुराँनन कहीय ज्यू इह इक कथा अनूठ ॥३५६
 प्रेरक जाया है परा, जाहि ऊपाये जीव ।
 सुर नर मानव असुर सब, शृष्ट^३ हु आद सदीव^४ ॥३५७
 प्रथम वनावत पुत्तरी^५, निरख नचावत नाथ ।
 सैलूखी^६ माया सुनहु, रही जगत सोइ राच ॥३५८

छंद ऊघोर

अवतार क्रस्त^७ अनूप, भल चिरत^८ सुनीर्य भूप ।
 तट सूर्यजा^९ नद ताँम. तभदीक^{१०} मधुवन नाँम ॥३५९
 मधु देत^{११} सुत वृज माँहि, तिह लवन नाँम तथाँहि ।
 द्वज^{१२} जात कौं दुख दात, रत^{१३} पाप अत दिन रात ॥३६०
 दिग विजय परम^{१४} दयाल, सत्रुघ्न दुष्टन साल ।
 वँह ठौर^{१५} निकरे आय, तहाँ दइत मारचौ ताहि ॥३६१
 दनु मार मधुरा द्रंग^{१६}, आवाद कीन अभंग ।
 सुत राज दै सरसाय, स्वस्थान गयेऊ सिधाय ॥३६२
 रघुवंसीयन^{१७} कौं राज, केऊ दिवस रहेऊ सकाज ।
 भये नष्ट सोऊ किह भाय^{१८}, जदुवंसीयन^{१९} लीय जाय ॥३६३
 कुल जास में तिह काल, भये सूरसेन भूआल ।
 अवतार कश्यप देव, द्रढ पुत्र भये वसुदेव ॥३६४
 उग्रसेन नृप के श्रीर, जिह कंस भये सुत जोर ।
 कंग्या सु देवकी केर, हुव अदति^{२०} जिह घर घेर ॥३६५
 निभ देवकी तिह नाम, सोइ मात हुव घनस्याम ।
 वसुदेव संग विवाह, कीय देवकी कंग्याह ॥३६६

१ श्रुति । २ लिंग । ३ मृष्टि । ४ सदेव । ५ पुतली । ६ नदिनी । ७ कृष्ण । ८ चरित्र ।
 ९ यमुना । १० निरुद्ध, पास । ११ वंश । १२ द्विज, ब्राह्मण । १३ तीन । १४ परम ।
 १५ स्थान । १६ मधुरा नगर । १७ रघुवंशी । १८ यदुवंशी । १९ भाव. कारण ।
 २० अदिति ।

परनाय^१ हरन-पसाय^२ दीय, सीख ताहि दिवाय ।
 पत-बहन^३ बहनी^४ प्यार, संग कंस चलेऊ सिधार ॥३६७
 रथ बंठ लीनी राह, अस^५ हाँक सहत^६ ऊछाह^७ ।
 हित अहित होवनहार, नभ गिरा भईय निहार ॥३६८
 मिल कंस तू मतिमंद, संग बहन जात समंध ।
 इह गर्भ अष्टम अंत, कर व्यथत^८ मारहि कंस ॥३६९
 इह सुनत भयेऊ ऊदास, बढ वयर^९ तज विसवास ।
 संकल्प विकल्प साथ, अत बढचौ जहाँ उतपात ॥३७०
 देवकी-मारन दुष्ट, कीय मती^{१०} कंस कलिष्ट^{११} ।
 वसुदेव दक्ष^{१२} विचार, तिह पकर^{१३} लीय तरवार ॥३७१
 कर तुमहि बहनी^{१४} कौन, ^{१५} मम वचन लेवहु माँन ।
 इह प्रसव^{१६} अपजहि आय, तुम लाय सौंपहुँ ताहि ॥३७२
 वसुदेव की सुन वात, विसवास^{१७} हृदय वसात ।
 माँनी सु कंस मलिष्ट, दहूँ^{१८} छाँड़ चलेऊ दविष्ट^{१९} ॥३७३
 वसुदेवह तिह वार गवने सु गयेऊ अगार ।
 बिहु संग वसत बसेर, ^{२०} केऊ दिवस बीतत केर ॥३७४
 सुख दंपती रति साद, आपन्नसत्वा^{२१} आद ।
 निभ देवकी तिह नाँम, बसुदेव जाँनी बाँम ॥३७५
 सुख अवध जात सिधाय, अपज्यौ सु अगज^{२२} आय ।
 मुख देख देवकी मात, ऊर हेत साँ न अघात^{२३} ॥३७६
 वसुदेव कौ तिहवार, अकुलाय बोल अगार^{२४} ।
 तुम पुत्र देखहु ताहि दुत^{२५} कहा मुख दरसाय ॥३७७
 सुत देख कं वसुदेव, भल कंस जानत भेव^{२६} ।
 सुत देहुँ आवहु सौंप, ^{२७} क्यूँ मोह डारत कूप^{२८} ॥३७८

१. विवाह करके । २. दहेज । ३. बहिन के पति = वसुदेव । ४. भगिनी, देवकी । ५. घोड़ा ।
 ६. सहित । ७. उत्साह । ८. व्यथित । ९. वर । १०. विचार । ११. क्रूर । १२. चतुर ।
 १३. पकड़ । १४. बहिन, देवकी । १५. सम्मान । १६. गर्भ । १७. विश्वास । १८. दोनों ।
 १९. दूर । २०. घर । २१. गर्भवती । २२. पुत्र । २३. तृप्त । २४. घर । २५. द्युति ।
 २६. भेद, भाव । २७. सौंप । २८. कुँआ ।

जो लिखी त्रिध कै जोग, सुख-दुःख हरखहु^१ सोग^२ ।
 वसुदेव की सुन बात, वस दुःख कै बिललात ॥३७६
 दीय सौंप सुत वसुदेव, चाले सु गृह कर चैव ।
 गये कंस कै सोइ ग्रेह, अह पुत्र लेवहु येह ॥३८०
 वसुदेव कंस बिलोक, सुध साच-वाच^३ स-सोक ।
 सुत तोहि अष्टम सोय, हम ताहि सौं भय होय ॥३८१
 इह कंस सुनीय ऊदंत,^४ चाले सु लै तज चित ।
 सुत देवकी दीय सूप, अत बढीय हरख अनूप ॥३८२
 इत कालकारक^५ आय, सिद्धांत कंस सुनाय ।
 जब आठ मिलहै जोग, अरी^६ वनहि कर ऊद्योग^७ ॥३८३
 सब होए जाय समाँन, आगै न पाछै आँन ।
 मम कही माँन मगाय तुम सत्रु मारहु ताहि^८ ॥३८४
 सुन कालकारक^६ सीख, तिह कंस समुझी तीख^{१०} ।
 मगवाय तिह सिसु^{११} मार, निहचिंत^{१२} भयेऊ निहार ॥३८५
 नृप व्यास पूछीय व्याय, इह पिसुन कीय अंन्याय ।
 मुनिराज होय महान, इहाँ वनै क्याँ अज्ञान^{१३} ॥३८६
 सुन व्यास बोलेऊ सत्य, पुन नृपत हू के प्रत्य^{१४} ।
 पुन कलह तै मुनि पेम^{१५}, नारद ही जानौ नेम^{१६} ॥३८७
 होय देव कारज हेत, सो करत प्रन^{१७} ही समेत ।
 सो पूर्व जन्म ही आप, पुन मरे अपने पाप ॥३८८
 सुत मरीची के सोय, जिह बालपन वय^{१८} जोय ॥
 वस काँम होय विरंच,^{१९} ब्राँह्मी सु-कन्या वंच^{२०} ।
 बढ चले देख विचार, येह सँ छहहु अपार ॥३८९
 सुन दीयौ ब्रह्मा आप, तन भोगही तुम पाप ।
 दनु-जाय^{२१} पावहु देह, इह हास^{२२} कौ फल लेहु ॥३९०

१ हयं । २ शोक । ३ सत्य, वचन । ४ वार्ता, बात । ५ नारद । ६ वरी । ७ उपाय ।
 ८ उसको । ९ नारद । १० तीखे, तीक्ष्ण । ११ शिशु । १२ निश्चित । १३ अज्ञानी ।
 १४ प्रति । १५ प्रेम । १६ नियम । १७ प्रण । १८ अवस्था । १९ ब्रह्मा । २० इच्छा की ।
 २१ दैत्य । २२ हँसी करने का ।

सो कालनेम सुतंन^१, इक जन्म भये ऊतपंन^२ ।
 भये हिरन कश्यप भान, सुत ताहि के सुग्यौन ॥३६१
 वँह जन्म दूसर आय, तप करेऊ विध हित ताह ।
 विध दीन तिह वरदाँन, सब रीत सौँ सुखदाँन ॥३६२
 द्वे जन्म भुगतहु दोख, मिलही तुमहु फिर मोख^३ ।
 सुन ब्रह्मबाँनी सोय, सरसात हरख सकोय ॥३६३
 गवने सु पितु के ग्रह, दुख मेट आपत देह ।
 सुन हिरन कश्यप आँन,^४ वस क्रोध भये बलवाँन ॥३६४
 मम पुत्र होय मृजाद^५, तुम मेट कीय उत्पाद^६ ।
 विन हुकम^७ तप कीय वेह, द्रढ दमन कीनी देह ॥३६५
 पाताल छहहु पलाय,^८ जहाँ वसहु केऊ दिन जाय ।
 पितु प्रथम जन्म प्रधाँन, निज कालनेमी नाँम ॥३६६
 जोई कंस ह्वै है जाय, पुन वँही अवसर पाय ।
 सुत देवकी इक साथ, हथ^९ होहु ताके हाथ ॥३६७
 जिहो पाय उपज्यौ जोग, सोऊ मरे श्राप^{१०} सँजोग ।
 वरदाँन विध^{११} ही विचत्र, नभ जाय भयेऊ नछत्र^{१२} ॥३६८
 सोइ वसे अवस सुतंत्र, कहु मिटहि नहि कल्पंत्र^{१३} ।
 सिस^{१४} मरे छह श्राप, पुन प्रथम जन्म ही पाप ॥३६९
 भई देवकी निभ भान,^{१५} आपन्नसत्वा^{१६} आँन ।
 सप्तमहु गर्भ संपेख, सो आय स्थिती^{१७} भये सेख^{१८} ॥४००
 जब जोगनिद्रा^{१९} जाहि, आकर्ष^{२०} कीने आय ।
 गहि रोहिनी के गर्भ, वँह जाय मेल्यौ अर्भ ॥४०१
 कहि चले जन^{२१} सब कोय, हथ^{२२} देवकी गृभ^{२३} होय ।
 जान्यौ न ताकोँ जात, इह भयो कहा ऊतपात ॥४०२
 सुन कंस वानी सोर, ऊर भयो विस्मय और ।
 अरु आठमै अर्भ आय, श्रीकृस्त आप समाय ॥४०३

१ पुत्र । २ उत्पन्न । ३ मोक्ष । ४ कानों से । ५ मर्यादा । ६ उत्पात । ७ आज्ञा ।
 ८ भागकर । ९ नष्ट । १० श्राप । ११ ब्रह्मा । १२ नक्षत्र । १३ कल्पान्त ।
 १४ शिशु । १५ भवन । १६ गर्भवती । १७ स्थित । १८ शेष = अनंत । १९ योगनिद्रा ।
 २० निकाला । २१ लोगों में । २२ नष्ट । २३ गर्भ ।

सोई निगुन^१ ब्रह्म स्वरूप, भये सगुन जानहु भूप ।
 कही व्यास ऐसी कथ्य, सोई सुनी भूप समर्थ^२ ॥४०४
 विध-जुक्त पूछी बात, सुर अवतरे हरी साथ ।
 किह अंस इहाँ भये कौन, तुम कहहु संख्या तौन ॥४०५
 वाले सु व्यास विचार, नृप सुनहु इह निरधार ।
 सुर-असुर जनमे साथ, खल साधु जानहु ख्यात^३ ॥४०६
 वसुदेव क्षत्री विचार, इह कश्यपा^४ अवतार ।
 अदिती सु देवकी आप, सो भई दिती वस श्राप ॥४०७
 बलदेव सेख^५ बलिष्ट, जे भ्रात हरी^६ के जेष्ट ।
 नारायनाय^७ सुनाँम, श्रीकृष्ण^८ भये घनस्याँम ॥४०८
 अर्जुन हु नर अवतार, धूम जुधष्टर^९ निरधार ।
 अरु भीम मारुत^{१०} अंस, पुन भुजा बल परसंस^{११} ॥४०९
 दुइ नकुल अरु सहदेव, सुखंद^{१२} लखहु सभेव ।
 भये कर्न^{१३} अंस जु भान, ^{१४} ऊहीन^{१४} बल अप्रमान^{१६} ॥४१०
 जम अंस विदुर जनाय, गुन नीयत कुसल गनाय ।
 गरु^{१७} द्रोण भयेऊ गरिष्ट, सिव^{१८} अस्वथाँमा श्रेष्ट ॥४११
 साँतनु^{१९} समुद्रहु सोय, जिह गंग त्रीय भई जोय ।
 गंधर्व पति गुन ग्राम निभ चित्ररथ तिह नाँम ॥४१२
 वसू^{२०} भस्मि^{२१} भये बलवाँन, वैराट^{२२} पवन^{२३} बखान ।
 नेमी-अरिष्ट^{२४} सु नाँम, सोई दनुज जित संग्राम ॥४१३
 हुव ताहि अंगज^{२५} हंस, वँह भयेऊ ताके अंस ।
 क्रतवर्म क्रप धर काय, सोऊ पवन अंस सिवाय ॥४१४
 नृप सुजोधव^{२६} निरधार, इहाँ कलू की अवतार ।
 सकुनी सु वचंह^{२७} सोय, जादव हु जैसे जोय ॥४१५
 प्रद्युम्न^{२८} वीर प्रसंस, उपजे सु अग्न ही अंस ।
 निभ तन सिखडी नाँम, कऊमार-सनत^{२९} सक म । १६

१ निर्गुण । २ समर्थ । ३ ख्याति । ४ कश्यप । ५ शेष । ६ कृष्ण । ७ नारायण ।
 ८ धर्म । ९ युधिष्ठिर । १० वायु । ११ प्रशंसित । १२ अश्विनी कुमार । १३ कर्ण ।
 १४ सूर्य । १५ उदार । १६ अप्रमाण । १७ बृहस्पति । १८ रुद्र । १९ साँतनु ।
 २० वसु । २१ नीम । २२ विराट । २३ मरुत । २४ अरिष्टनेमि । २५ पुत्र ।
 २६ कुषीपुत्र । २७ द्रापद । २८ धृष्टद्युम्न । २९ सनतकुमार

नृप द्रुपद लेहु निहार, इह बरुन^१ कौ अवतार ।
 अरु द्रुपदजा अनुरेह, इंदरा^२ जाँनहु येह ॥४१७
 सुत पाँच द्रोपदी सोय, हितु बिस्वदेवो^३ होय ।
 कुन्ती सु सिद्धी^४ काय, माद्री सु धृती^५ महमाय ॥४१८
 गंधारजा मती^६ गूढ, विधी-जुक्त पतिवृत व्यूढ ।
 अक्रस्न तीयहु सुवेस, वारांगना मु बिसेस ॥४१९
 अरु दुष्ट केतक आँन, भये असुर अंस भयाँन ।
 सिसपाल^७ आद बिसेस, भये हिरनकश्यप^८ भेस ॥४२०
 अरु जरासंध अभीत, इह विप्र-चित्त^९ अनीत ।
 पुन साल्व^{१०} भये प्रह्लाद, अरु धृष्ट-ध्वज^{११} अनु-आद^{१२} ॥४२१
 पुन कालनेमी पेख, केसी हु आदक केक ।
 भगदंत भेस भयाँन, अवतरे बास्कल आँन ॥४२२
 हयग्रीव दानव हृष्ट, अघ पूर गनहू अरिष्ट ।
 ये गनहु याही अंस, बढ दानवन के वंस ॥४२३
 अरु लंब और प्रलंब, खर धेनु^{१३} पातक खंभ ।
 वाराह अत बल बंड, चानूर^{१४} मुख कर चंड ॥४२४
 कुवलया^{१५} पीड़ कितेक, बपु दुरद^{१६} पुष्ट बिसेख ।
 दनु^{१७} बकासुर अत दूष्ट, अस्वस्थथाँमा इष्ट ॥४२५
 बल-सुता^{१८} उपजी वाँम, निज पूतना जिह नाँम ।
 इह दनुज^{१९} अंस^{२०} अभंग, सब भये परगट^{२१} संग ॥४२६
 विध देव गये वयकुंठ^{२२}, अचला^{२३} हु साथेहु उठ ।
 जब करी बिनती जाय, श्री रमापत^{२४} तारसाय ॥४२७
 वरदान ह्वै तय वार, सित^{२५} क्रस्न^{२६} रंग सु धार ।
 श्रीक्रस्न भये तन स्याँम, रंग गौर सोई बलराम ॥४२८
 पुन क्रस्न^{२७} जन्म प्रसंग, उत्तपत्त पालन अंग ।
 सब सुनहु श्रोता आँन^{२८}, वर व्यास कीय व्याख्याँन^{२९} ॥४२९

१ वरुण । २ लक्ष्मी । ३ विश्वेदेवा । ४ सिद्धि । ५ धृति । ६ मति । ७ शिशुपाल ।
 ८ हिरण्यकशिपु । ९ विप्रचित्ति । १० शल्य । ११ धृष्टकेतु । १२ अनुह्लाद । १३ धेनुक ।
 १४ चाणूर । १५ कुवल्य नामक कंस का हाथी । १६ अरिष्ट । १७ दैत्य । १८ बलि
 की पुत्री । १९ दैत्य । २० अंश । २१ प्रकट । २२ वैकुंठ । २३ पृथ्वी । २४ विष्णु ।
 २५ श्वेत । २६ काला । २७ कृष्ण । २८ कानों । २९ बखान, वर्णन ।

सुत देवकी के सोय, जिह कंस मारे जोय ।
 बलराँम कौं गृभ^१ बीच, खल भीत^२ सौं लीय खींच ॥४३०
 जब जोग-निद्रा^३ जाय, रोहिनी गर्भ रचाय ।
 अब क्रस्न गृभ ऊत्तपत्त, सोई ऊदर देवकी सत्त ॥४३१
 गृह नंद गोकुल गाँम, नारी सु जसुमत नाँम ।
 देवकी वचन सु दीन, इह ईस कै आधीन ॥४३२
 तुव पुत्र ह्वै तौ ताहि वँहाँ मोहि सौँपहु^४ आय ।
 पुन पालकै जुत प्रेम^५, तुम गेवगी हम तेम ॥४३३
 जीय जोगमाया^६ जाँन, वँह ऊदर थित भई आँन ।
 गत देवकी भई ग्रह, अब सुनहु प्रवृत्त^७ येह ॥४३४
 आकासवाँनी^८ आद, सुन कंस भये सविषाद ।
 हीय अष्टमौ गृभ हेर, बहु जतन कीय तिह बेर ॥४३५
 देवकी पग^९ वसुदेव, बेरी^{१०} सु डार सभेव ।
 गृह देख कारागार, विन लाग ताही वार ॥४३६
 बैठाय दीने बीच, मन समुझ कारक मोच^{११} ।
 पहलुआ^{१२} आसुर पास, खल जाँन अपने खास^{१३} ॥४३७
 मेले सु चहुधाँ मगग, आयुधन भेल ऊदगग ।
 मिल हाक मारत मूढ, गीत नहिन जाँनत गूढ ॥४३८
 दिन रैन^{१४} बहुधा दुष्ट, पुन फिरत पापी पुष्ट ।
 सभ दिवस रहे केऊ सेस^{१५}, सुर आद आय सुरेस^{१६} ॥४३९
 कीय वर्नना^{१७} श्रीक्रस्न, पुन चले सोऊ ह्वै प्रस्न^{१८} ।
 दस मास गयेऊ दुरंत^{१९}, अब भयौ दुख की अंत ॥४४०
 मिस-प्रोष्ट-पद^{२०} लग मास, अष्टमी छंद ऊजास^{२१} ।
 ब्राँह्मी^{२२} नक्षत्र^{२३} विसेस, सुभ घरी वरतत सेस ॥४४१
 देवकी बोली देख, वसुदेव वात विवेक ।
 अब प्रसव^{२४} वेला आय, रुख दूर जाय रहाय ॥४४२

१ गर्भ । २ नय । ३ योगनिद्रा । ४ सौँप/देना । ५ प्रेम । ६ योगमाया । ७ वृत्तांत ।
 ८ आकाशवाणी । ९ पैर । १० बेड़ी । ११ मृत्यु । १२ पहरेदार । १३ विशेष । १४ रात्रि ।
 १५ शेष । १६ इन्द्र । १७ स्तुति । १८ प्रसन्न । १९ कठिन, कष्ट के । २० भादों का
 शुष्ण पक्ष । २१ उजाला । २२ रोहिणी । २३ नक्षत्र । २४ वच्चा होने का ।

मुख फेर रहि गहि मूँन^१, धर कांपकै सिर धून ।
 द्रुत^२ दूर गये वसुदेव, भाँमनी^३ लखकै भेव ॥४४३
 ऊतपंन्न^४ भयेऊ अनूप, श्री क्रस्न^५ स्याँम सरूप^६ ।
 मुख देख बोली मात, तुम प्रसव आवहु. तात ॥४४४
 इह वचै करहु ऊनाय, जसुदाह^७ सौँ पहुचाय ।
 कीय जाहि हमसौँ कौल^८, बिध^९ नीत-रीत सु बोल ॥४४५
 वचै सु जीवत बाल, लख लैहगी सुख लाल ।
 वसुदेव कहि तव वात, सुन देवकी सिसु^{१०} मात ॥४४६
 परचरी^{११} घेर प्रचंड, भिल रहे भुंडन-भुंड ।
 केऊ खड्ग लीनै क्रूर, गहि भिडपाल^{१२} गरूर ॥४४७
 केऊ सर कोडंड^{१३}, द्रढ दंड लहै भुजडंड ।
 फरसा सु धारै फेर, घनसूल^{१४} लीनै घेर ॥४४८
 करपालका^{१५} धर केक, धर परघ^{१६} धारै ध्वेक ।
 धर सर्वला^{१७} गहि धूप, सब दुष्ट काल सरूप^{१८} ॥४४९
 फिर रहे सोई चहु फेर, अवसर्प^{१९} बीच अघेर^{२०} ।
 गृह बीच चावहि^{२१} गौँन^{२२}, पंछी न पावहि पौँन^{२३} ॥४५०
 पुन लहै नाँहि परेख, इहाँ आय चीटी येक ।
 कीय द्वार बंध कपाट, थित रहे आटन थाट ॥४५१
 पहराय वेरी^{२४} पाय, बहु कष्ट-दुष्ट बसाय ।
 वसुदेव बोले बाँन^{२५}, सोई देवकी सुन स्रान ॥४५२
 भई सुस्क-तरू^{२६} दल^{२७} भेस, ऊर कष्ट आय अँदेस ।
 जब भई अवसर जाँन, आकासवाँनी आँन ॥४५३
 सब सुनी दंपत^{२८} सोय, हीय अभय हरखत होय ।
 इही कही कथ^{२९} ऊचार, कढ जाहु खोल किवार^{३०} ॥४५४

१ मौन । २ शीघ्र । ३ स्त्री । ४ उत्पन्न । ५ कृष्ण । ६ स्वरूप । ७ यशोदा । ८ प्रतिज्ञा ।
 ९ विधि । १० शिशु । ११ पहरेदार । १२ भाला । १३ धनुष । १४ त्रिशूल । १५ छुरी ।
 १६ लुहानी, चरछी । १७ गुर्ज । १८ स्वरूप । १९ संदेश वाहक । २० अँघेरा । २१ चाहें ।
 २२ गमन जाना । २३ पवन । २४ वेड़ी । २५ वाणी । २६ सूखे वृक्ष । २७ पत्ता ।
 २८ पति, पति-वसुदेव-देवकी । २९ कथा, वाणी । ३० किवाड़ ।

पर सवही पातक-पीन,^१ लखहौ प्रमीला^२ लीन ।
 श्रीकृष्ण जसुमत^३ सूप^४, इह ग्रेह आप अनूप ॥४५५
 वस रहहु निर्भय वास, ऊर भरहु नहिन ऊसास^५ ।
 इह सुनत वानि^६ ऊचार, बेरी^७ भरी तिह वार ॥४५६
 लीय मांग देवकी लाल, वसुदेव चित्त वहाल^८ ।
 गवने सु तज निभ^९ ग्रेह, लालहु^{१०} ऊछंग^{११} ही लेह ॥४५७
 खुल अरर^{१२} पाये खेम, जब बढे अग्रहु^{१३} जेम ।
 सब लखे दनुज सवेस^{१४}, अनचेत जुक्त असेस ॥४५८
 वसुदेव लीनी वाट^{१५}, अतवेग सहित ऊचाट ।
 जमुना सु तट लीय जाय, पर ठयी जल में पाय^{१६} ॥४५९
 बढ जाँनु^{१७} वक्षन वार^{१८}, नही परचौ ऊद्ध निहार ।
 जब पार अतरे जाय, हीय हरख^{१९} मन हुलसाय ॥४६०
 गही गली-गोकुल-गाम, त्वर^{२०} जाय पहुंचे ताम ।
 तब भगवती श्रवतार, वर ऊपज ताही वार^{२१} ॥४६१
 वन जोग माया^{२२} वीय^{२३}, कुटहारका^{२४} कमनीय ।
 ले मुता जसुमत^{२५} लाय, वसुदेव हाथ वसाय ॥४६२
 नजनाथ^{२६} कौ तिह वार, निभ हाथ लीय निरधार ।
 जनुनतहि आगे जाय, कमनीय सयन कराय ॥४६३
 वत किन्यका^{२७} वसुदेव, देवकी दीनी देव ।
 जानी न काहूँ जान, इह ईस सिध अवसान ॥४६४
 किन्या नू रोदन कीन, पहरुवा पापी-पीन ।
 जब काम कौ कहि जाय, अरी^{२८} ऊठयो अत-प्रकुलाय ॥४६५
 पूर-मूतका कीय गीन, जनम्यौ नु अंगज^{२९} जान ।
 पूर बंध अरर^{३०} गरिष्ट, दूत देल बोल्थी दुष्ट ॥४६६
 वसुदेव नावहु बाल, कर देहु हम ततकाल ।
 गन शत यानी मोर, दीय कन्यका लीय दौर ॥४६७

१ पाप में दुष्ट पापी । २ मित्र । ३ पत्नी । ४ मीठकर । ५ दुःख में ऊपरवाँस । ६ वाणी
 उचर । ७ बरकद । ८ गिर, धरने । ९ तिसु कण्ठ । १० ऊपार । ११ शिवाट ।
 १२ काले । १३ शिवाकार । १४ काल । १५ बंध । १६ अंग । १७ पत्नी । १८ हथ ।
 १९ शीतल । २० अरर । २१ अतिमाला । २२ बरी । २३ मेदिना । २४ यतील ।
 २५ कण्ठ । २६ कण्ठ । २७ बेरी । २८ गुन । २९ शिवाट ।

भटकी^१ सुमन मुरझान, पटकी सु सीस पखान ।
 कटकी^२ सु विद्वत^३ कीन, छुटकी^४ सु नभ गई वीन ॥४६८
 भटकी^५ सु आग भयान, हटकी न पाई हान ।
 कछु भयी विसमत^६ कंस, धर धीर के मति ध्वंस ॥४६९
 जब -जोगमाया^७ जास, बोली सुबाक विलास ।
 मतिमंद मोकह^८ मार, नही कुसल तोहि निहार ॥४७०
 तन कदन-करता^९ तोर, अवतरेऊ ठौरहि और ।
 जिह मारहै कहु जोय, तव कुसल जानहु तोहि ॥४७१
 कहि वचन कर करतूत^{१०}, वह चालगइय^{११} अभूत ।
 जब कंस जीय में जान, हम करी दंपत^{१२} हान ॥४७२
 पुन देवकी गये पास, वसुदेव दै विसवास ।
 निरु भवन गवनी नीच, बैठ्यौ सु दुष्टन बीच ॥४७३
 बक मिले केसी बछछ, रहि धेनुकासुर रछछ^{१३} ।
 पूतना बंठी पास, अत होय चित्त ऊदास ॥४७४
 हित कंस समझहु हीय, क्रम^{१४} है इहै करनीय^{१५} ।
 दिस बिदिस जावहै दौर, मारै सु बाल^{१६} मरोर ॥४७५
 केऊ गये किस दिस क्रूर, पूतना पापनी^{१७} पूर ।
 गवनी सु गोकुल गाँम, मध^{१८} करे जाय मुकाँम ॥४७६
 सिसु^{१९} हथन काज सलाह, ऊर करत इह अवगाह ।
 जनम्यौ सु अंगज^{२०} जान, ग्रह नंद मंगल-गाँन^{२१} ॥४७७
 सु सुनी कंस सपष्ट, कछु ऊपज^{२२} हीय में कष्ट ।
 वसुदेव मित्त^{२३} विचार, संदेह सोक सुमार^{२४} ॥४७८
 बह वात कर कर याद, बढ कंस ऊवर बिषाद ।
 नारद^{२५} कहीय निहार, इह गोप सुर-अवतार^{२६} ॥४७९

१ भड़क दी । २ कड़की । ३ बिजली । ४ छूट गई । ५ भड़क उठी । ६ आश्चर्य चकित ।
 ७ योगमाया । ८ मुझे । ९ मारने वाला । १० चमत्कार । ११ चली गई । १२ दंपती,
 वासुदेव-देवकी । १३ राक्षस । १४ कर्म । १५ करने योग्य । १६ बालकों को ।
 १७ पापिन । १८ मध्य, बीच में । १९ शिशु । २० पुत्र । २१ मंगल-गीत । २२ उत्पन्न ।
 २३ मित्र । २४ विचार कर । २५ नारद । २६ देवावतार ।

हीय कंस निश्चय होय, सुत-नंद^१ वैरी सोय^२ ।
 कर कंस क्रोध करु, जीय रुठ ऊठ जरु ॥४८०॥
 बोले बकासुर बीर, धर धेनुकासुर धीर ।
 बच्छाहु सुरस विषाद, अरु प्रलंबासुर आद ॥४८१॥
 कहि दानवन सौं कंस, वमुदेव उपजे वंसा ।
 नही नंद के इह नंद^३, ऊर लखहु मोहि अरंद^४ ॥४८२॥
 जिह तिह ऊपाय सु जाय, तुम करहु प्रसमन^५ ताहि ।
 जब सुनी दुष्टन जाल^६, कर धाव दाव कराल ॥४८३॥
 नित फिरत रहत सु नीच, बढ सीम^७ गोकुल बीच ।
 पुन करत सिसु^८ पय^९ पाँन^{१०}, पूतना सोख्यौ^{११} प्राँन ॥४८४॥
 वपु^{१२} पुष्ट भये बलराँम, श्री क्रस्त सुंदर स्याँम ।
 सिसु भये पुष्ट सरीर, बछरा^{१३} चरावत बीर ॥४८५॥
 मिल बकासुर कौं मार, वपु बछछ रछछ^{१४} विडार ।
 धेनुक मिलायो धूर, परलंब पापी पूर ॥४८६॥
 परवत^{१५} ऊठायौ पाँन^{१६}, इह आद परचय आँन^{१७} ।
 सु सुनी कंस सभित, पर^{१८} बढी होय परतीत^{१९} ॥४८७॥
 अरु मरन केसी येह, ऊर सोक ग्रस्त अछेह ।
 कर व्याज^{२०} सौं करतूत, धनु ज्याग^{२१} कीनौ धूत^{२२} ॥४८८॥
 विहँ क्रस्त अरु बलराँम, क्रतु हित बुलावन काँम ।
 सिदन^{२३} सुधार सवार, अकूर भेज अगार ॥४८९॥
 संग जाय लायेऊ सोय, आये सु निर्भय होय ।
 सोइ स्याँम गौर सरीर, विच जज्ञ आये धीर ॥४९०॥
 अत कंस कीय ऊतपात, धनस्याँम ऊपर घात ।
 कुवलयी पीड़क केक, पेल्यी सु कुंजर^{२४} पेख ॥४९१॥

१ नंद का पुत्र । २ वही । ३ पुत्र । ४ मुख्य वैरी । ५ मारो । ६ कपट, षट्यन्त्र ।
 ७ सीमा । ८ शिशु । ९ दूध । १० पीना, स्तनपान । ११ सोख लिया । १२ शरीर ।
 १३ बगड़े । १४ राजस । १५ पर्वत । १६ हाथों पर । १७ अन्व । १८ वैरी ।
 १९ बिरवात । २० कपट । २१ यज्ञ । २२ घूत । २३ रय । २४ हाथी ।

बहू हन्यौ दंत ऊखार, चाँनूर^१ दयेऊ पछार ।
 मारे सु आदक सुष्ट, द्रढ हाथ गहि गहि दुष्ट ॥४९२
 तोरघौ सु धनुष तुरंत, अरू कस कीनौ अंत ।
 पितु मात दुखत^२ पेख, बंधनहु काट विसेख ॥४९३
 उग्रसेन बैभव अप्प^३, थिर राजगादी^४ थप्प^५ ।
 बसुदेव ग्रह गये वीर, सुभ स्याँम गौर सरोर ॥४९४
 सुत राँम^६ क्रस्न सुभाय, मिल देवकी निभ^७ माय ।
 सुत देख आँनन^८ सोय, हीय लाय हरखत^९ होय ॥४९५
 बसुदेव करेऊ बसाय, जग्योपवीत सु जाहि ।
 कीय और हू सुभकार^{१०}, विध-जुक्ति^{११} कुल विवहार^{१२} ॥४९६
 कासी सु गवन ही कीन, पढ भये अत परबीन^{१३} ।
 चय^{१४} भयेऊ द्वादस वर्ष, क्रम^{१५} छत्रि-धूम^{१६} अतकर्ष ॥४९७
 नृप जरासंध निदाँन, जामातु-हंता^{१७} जाँन ।
 अछोहनी^{१८} दल आय, तेईस संख्या ताहि ॥४९८
 जिह कीय भयानक जुद्ध, अरी दाव कर कर ऊद्ध ।
 इहाँ राँम^{१९} क्रस्न^{२०} अभंग, जीत्यों न कोऊ जंग ॥४९९
 विढ^{२१} सोय सत्रह वार, हट गयो फिर फिर हार ।
 पुन कालजवन पठाय, आयौ सोई अकुलाय ॥५००
 मुनि लार सौँ मुरभाय^{२२}, जदुवसीयन कोऊ जाय ।
 नही जुद्ध दीनी नीम^{२३}, सब हार रहे बल-सीम^{२४} ॥५०१
 जब क्रस्न जीय में जाँन, थित छोर मथुरा थान ।
 गये द्वारका रच ग्रेह, छित-विरज^{२५} सौँ कर छेह ॥५०२
 चस रहे सुवस वसाव, पुरी दुवारका^{२६} सुख पाय ।
 थिर करे जन सब थाप, आये सु मथुरा आप ॥५०३
 जहाँ कालजवन ही जाय, द्रग आय रूप दिखाय ।
 आगे सु भागे आप, पर लग्यौ पाछै पाप^{२७} ॥५०४

१ चाणूर मल्ल । २ दुःखी । ३ अर्पण कर । ४ राजगद्दी । ५ स्थापित कर । ६ बलराम ।
 ७ निज, अपना । ८ मुख । ९ हर्षित । १० शुभकार्य । ११ विधियुक्त । १२ व्यवहार ।
 १३ प्रवीण । १४ आयु । १५ कर्म । १६ क्षत्रिय-धर्म । १७ दामाद का मारने वाला ।
 १८ अक्षीहिणी । १९ बलराम । २० कृष्ण । २१ भिडकर । २२ उदास होकर ।
 २३ बुनियाद, प्रारम्भ । २४ अत्यंत बली । २५ वज-भूमि । २६ द्वारिका । २७ पापी ।

पत श्रवणपुर सुख पाय, मुचकुंद सूती^१ माहि ।
 जिह किदरा^२ जीय जांन, पहुंचे सु सारंगपांन^३ ॥५०५
 वंहां जाय दीयेऊ ऊढाय, तन पीत-अंबर^४ ताहि ।
 घुर भये अंतरध्यान, जहां जवन^५ पहुच्यो जांन ॥५०६
 वृजनाय^६ जांन बलिष्ट, तिह लात मारी तिष्ट ।
 लय रिष्ट द्रष्ट नरिद, वंह नष्ट भयऊ अरिद ॥५०७
 हरी काज अपनो हेर^७, वपु प्रगट ह्वै तिह वेर ।
 गिरधरन देव गोविद, कीय वर्नना^८ मुचकुंद ॥५०८
 दारावती निभ द्रंग^९, सुभ वास कीय सुख संग ।
 सितपाल एकमनी साय, वसुदेव-सुत सुन वात ॥५०९
 एतने हु अंतर आय, पातीहु एकमनी पाय ।
 जब कसन जहवा^{१०} जाय, कंग्या हरी^{११} बलकाय ॥५१०
 विध-युक्त^{१२} कोनेऊ व्याह, दीय चेदपति^{१३} ऊर दाह ।
 यम जामवंती आंन, पुन करेऊ पीडन-पांन^{१४} ॥५११
 पर सत्यभांमा वांन, सुभ करेऊ व्याह सकांन ।
 निज मित्र-विदा नार, व्याही सु ताहि विचार ॥५१२
 लक्ष्मणा भद्रा लाय, परने^{१५} मु तिह मुल पाय ।
 यम नगलजिनी अभिरांन, भज व्याह जाहि मुभांन ॥५१३
 ए पट्टरानी^{१६} अदो^{१७}, थो कसन येह सपष्ट ।
 अदो^{१८} एकमनी पुन, अवनार काम^{१९} अहून ॥५१४
 कीद यम लालिक-कर्म^{२०}, अदो नीत मो निज धर्म ।
 पुन कृ अवनार पाय, इहां मघरागुर आय ॥५१५
 सोई सुनवा-सुह लाय, मिमु^{२१} नं मयो सरमाय ।
 इह कसन मुन अहूनाय, मल पाय कीय महमाय ॥५१६
 इहो मु अवनार^{२२} रिद^{२३}, भोअन हूय मु अमंती^{२४} ।
 कीद यम^{२५} देवीन केर, सुनवाय^{२६} हु जिह घेर ॥५१७

१. सूती २. किदरा ३. सारंगपांन ४. अंबर ५. जवन ६. वृजनाय ७. हेर ८. वर्नना ९. द्रंग १०. जहवा ११. हरी १२. युक्त १३. चेदपति १४. पीडन-पांन १५. परने १६. पट्टरानी १७. अदो १८. अदो १९. काम २०. लालिक-कर्म २१. मिमु २२. अवनार २३. रिद २४. अमंती २५. यम २६. सुनवाय

बृजनाथ पूछी बात, घट भई सुत कहा घात ।
 प्रदुमन्न ह्य उतपन्न^१, छित भयौ कहाँ अप्रच्छन्न^२ ॥५१८
 सुन अंबका निज स्तान, सुत रावरौ सुखदाँन ।
 मत करहु सोच मुरार, वँह काँम की अवतार ॥५१९
 हर संवरासुर हाथ, सो लंगयी निज साथ ।
 सब रीत कुसल सुभाय, सो सुता हित सरसाय ॥५२०
 मायावती पति मान, इह कीयौ तिह अवसान ।
 सोइ अरुद सोरह संग, वँह करहि व्याह अनंग ॥५२१
 पहुचाय है तुम पास, ऊर नहिन होहु ऊदास ।
 सुख पाय सुनीय सु बात, हीय क्रस्न कीय हरखात ॥५२२
 कर इही रीत कहाय, मध-लोक गइ महमाय ।
 गोविंद पुलकत गात, महमाय कीय जगमात ॥५२३
 नृप कहीय व्यास निदाँन, इहाँ क्रस्न भये अनजाँन ।
 इह ईस सुनीयत आद^३, सो बने क्यों सविषाद ॥५२४
 सो करहु मेट संदेह, गति गूढ मति के गेह ।
 श्री सुनीय व्यास सुजाँन^४, नृप कहीय बात निदाँन ॥५२५
 ईश्वरी माया आद, जो प्रबल जाँनहु ज्याद^५ ।
 सोई बीच इह संसार, नही मोह करत निहार ॥५२६
 इह मानुखी^६ तन^७ आय, बढ तीन गुन^८ विलगाय^९ ।
 सुर आद असुराराद, सब मोह वस सविषाद ॥५२७
 जुत सुधा त्रस्ताँ^{१०} जाँन, निद्रा सु भयहु निदाँन ।
 है सोक संशय^{११} हर्ष, अमिमान मद उतकर्ष ॥५२८
 अरु वृद्धता अज्ञान, इम मरतहू अनुमान ।
 असुया^{१२} स्तानी और, अप्रीत प्रीत अथोर ॥५२९

१ उत्पन्न । २ अदृष्ट । ३ आदि । ४ चतुर, जानी । ५ अधिक । ६ मनुष्य का । ७ शरीर ।

८ गुण । ९ अलग-अलग हो जाते हैं । १० वृष्णा । ११ संशय । १२ असूया, निन्दा ।

ये होत ऊदय अनेक, सब जानीये सविवेक ।
 श्रवतार राम अनूप, भये श्रवधपुर के भूप ॥५३०
 सीय हरन भयेऊ सुभाय, जहाँ मरन आद जटायु ।
 अंनेक^१ भये ऊतपात,^२ सब देह मानव साथ ॥५३१
 सब पूत्र^३ और सुकर्भ, परठे सु कारज परम ।
 श्रीकृष्णह तन साथ, हित-काम^४ कीने हाथ ॥५३२
 सो सत्यभामा सीख, तीय वात राखी तीख^५ ।
 दुश्चवन^६ सौं कर द्वेख^७, लीय पारजातहु^८ लेख ॥५३३
 जोय जामवंती जान, सो पुत्र-हित सुखदाँन ।
 मन-वंचना^९ महाराज, करीये सु पूरन काज ॥५३४
 सुन चले पर्वत सीस^{१०}, गहि ऊवर हित गवरीस^{११} ।
 कीय मंत्र ग्रहन सकाँम, नित जपत सिव के नाम ॥५३५
 करने लगे तप काय, खिर^{१२} पेर वनफल खाय ।
 इक मास बीत्यों येम, जलपान दूसर जेम ॥५३६
 तीसरे मासह तौन, पुन करेऊ भक्षण पौन^{१३} ।
 अगुष्ट^{१४} पाव अडोल, तन रहे ताप तोल ॥५३७
 छह मास कीय सुत छाह, तप सिंधु हेत अथाह ।
 सब संग लै सुरगीय^{१५}, द्रुत आय दरसन^{१६} दीय ॥५३८
 कीय ऊगृ तप तुम कृष्ण^{१७}, पै भये हम बहु^{१८} प्रसन्न^{१९} ।
 ज्यू मनोवंचत^{२०} जान, वंह लीजीये वरदाँन ॥५३९
 पदवंद^{२१} कृष्ण प्रवीन, कर जोर विनती कीन ।
 धुर मूल गृही धर्म, करनीय^{२२} कारक कर्म ॥५४०
 स्त्री प्रथम जात सुभाव, चित आपने हित चाव ।
 ईरखा^{२३} सौतन^{२४} आद, वस रहत वाद विखाद ॥५४१

१ अनेक । २ उत्पात । ३ नीच । ४ हित-कार्य । ५ तीक्ष्ण, तीखी । ६ इन्द्र ।
 ७ द्वेष । ८ कल्पवृक्ष । ९ इच्छा । १० शिखर । ११ महादेव । १२ मड़क कर-
 गिरे हुए । १३ पवन । १४ अँगूठा । १५ देवता । १६ दर्शन । १७ कृष्ण ।
 १८ वहुत । १९ प्रसन्न । २० मनोवाञ्छित । २१ चरणों की वंदना । २२ करने-
 योग्य । २३ ईर्ष्या । २४ सौतों, सपत्नियों ।

हम रहे व्याकुल होय, गृह-काज में चित गोय ।
 भय^१ रुखमनी^२ वस भाग, वह करत सुत अनुराग ॥५४२
 जिह जांमवंती जोय^३, मन विकल इह कहि मोहि ।
 सुत होय मोहि सुहाय, इह करहु सीत्र^४ ऊपाय ॥५४३
 अब कीयी तप हित आप, जज^५ आपही कौ जाप ।
 मन मुदत^६ होय महेस^७, बरदान दीयेऊ बिसेस ॥५४४
 निज गनहु इक इक नार, दस दस हु पुत्र दवार ।
 अब होयगे ऊतपात, मम वाच सुनहु महात^८ ॥५४५
 सुन गवर^९ बोली संग, धर ध्यान सिव अरधंग^{१०} ।
 परवार बाढहि पूर, जदुवंसीयनहु जरूर ॥५४६
 सत वरख^{११} पाछे सोय, हथ^{१२} स्त्राप विप्रन होय ।
 पश्चात कर कुल प्यार, नहि सोक करहु निहार ॥५४७
 निज लोक जावहु नाथ, भज रूप निज जुग भ्रात ।
 कहि गये सिव कयलास^{१३}, ऊर क्रस्न पुज्जीय^{१४} आस ॥५४८
 गवने सु हरि निज गृह, लीय द्वारका वर सेह ।
 माया सु वस जग मोह, हित रहे पर-वस होय ॥५४९
 सोइ रचत इह संसार, विसमता रहित विकार ।
 सोइ पूर्व जन्म प्रसंग, सुख देख देही संग ॥५५०
 सब देत जीवन साथ, है निमत न्याय स्वहाथ ।
 जुत प्रेरना नित जीव, संसार रचत सदीव ॥५५१
 ऊतपत्त पालन आद, मिल अंतलों मरजाद ।
 वृहमाद^{१५} देव बिसेस, ऊर गनहु नहिन अदेश^{१६} ॥५५२
 आधीन माया येह, द्रग लखहु धारै देह ।
 सो नाहि गनहु सुतंत्र, ^{१७} परीयाय^{१८} सौ परतंत्र ॥५५३

१ होकर । २ रुक्मिणी । ३ देखकर । ४ शीत्र । ५ यज्ञ । ६ मुदित । ७ महादेव ।
 ८ महान् बड़े । ९ गौरी, पार्वती । १० अर्धांगिनी । ११ वर्ष । १२ नष्ट । १३ कलाश ।
 १४ पूर्ण हुई । १५ ब्रह्मादिक । १६ शंका । १७ स्वतंत्र । १८ परम्परा ।

अथो सुनायं तु मेघ, सस्त्री-पराजिते मेघे ।
 इत्यस्य नामक विर, सोड सुनाय सहित मनेह ॥२५४
 अति कदवा विर लीय, वय रहत होय वितोर ।
 सो लीय वनाय सुनाय, सोड वीरविद सुनाय ॥२५५
 अथ सुय लीय लीय, सुय सोनरादिज सत ।
 अथ इत्यस्य सुय भाय, भुयनेसुरी सुत भाय ॥२५६
 लीय लीय लीय होय, सुय वरुं वेकी सोय ।
 सुय वरुं सुय विर, इतीहाम एह मयिराज ॥२५७

इति श्री लक्ष्मी-विराट-संग्रहः

॥२५७॥

